Page 1:

परम पूज्य तपश्चर्याचक्रवर्ती पदाधीणाचायशर

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

0 सुविधिपरिवार के द्वारा आयोजित १९७

महोत्यव थ

ॐ जिनवागी महो हे

द्य ००००० 262००००० भ

ॐ जन्मदिवस 90397 ॐ मुनिदीक्षा05989 आचार्यपद 20062004

पट्टाधीशपद 242200 20062004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार

ध हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं। रः

के र अंकलीकर वाणी जुलाई 2004 अक्षयज्योतिअक्तूबर 2004 भ

न ६४

Page 2:

भाग 4

ग्रन्थकार

आचार्यश्री वीरसेन जी महाराज

सप्पादक

पण्डित फूलचन्द्र जी शास्त्री

पण्डित महेन्द्रकुमार जी जैन

पण्डित कैलासचन्द्र शास्त्री

7 शक जा

4 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ ग्रन्थमाला

र चौरासी मथुरा उत्तरप्रदेश र

22 4 स अ

४ ८ छ ।

2 म

2770

८४7२८ ८८2९२ के

छा 7

Page 3:

परम्परानायक

९

द्वितीय पट्ठाधीश ह । तृतीय पद्टाधीश

९ ऋ ६

2५ बे ॥ ॐ

ह ॥ क च

परम पूज्य चारित्रचक्रवत्ती ०९ ॥

६ अक आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज त

का छ अंकलीकर ६

ऋऋ शी बर्थ पद्ठाधीश छ आई

ध

कै क ।

परम पूज्य तीर्थभक्तशिरोमणि 2 परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवरती

आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज 2 आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

परम पूज्य तपश्चर्याचक्रवर्ती आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः

उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में

किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता अनुवादक सम्पादक प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त

नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधिपरिवार

Page 4:

प्रकाशक की ओरसे

श्री कसायपाहुड जयघवलाजी के चोथे भाग स्थितिविभक्ति और पाँचवें माग अनुभाग

विभक्तिका प्रकाशन एक साथ द्वो रहा है। इसका कारण यह है कि जिस प्रेसमें चौथा भाग

छापनेके लिए दिया था उस प्रेसने उसे छापनेमें आवश्यकतास अधिक विलम्ब किया।

साथ ही शुरूके पाँच फर्मो दीम चाट गई । तव वहाँ से काम उठाकर दूसरे प्रेसको दिया

गया । किन्तु झुरूके पाँच फर्मोको छापकर देनेमें पहले प्रेंसने पुनः अनावश्यक विलम्ब किया।

इतनेमें तीसरे प्रेसने पाँचवाँ भाग छापकर दे दिया । इस तरह ये दोनों भाग एक साथ प्रकाशित

हो रहे हैं। दीपावछीके पश्चात् छठा और सातबाँ भाग भी प्रसमं दिये जानेके लिये प्रायः

तैयार हैं ।

इन सब भागोंका प्रकाशन संघके वर्तमान सभापति दानवीर सेठ भागचन्द जी डोंगर

गढ़की ओरसे हो रहा है । सेठ साहब तथा उनको घमेपत्नी सेठानी नवेदाबाईजी बहुत ही

घर्मंम्मी और उदार हैं। आपके साहाय्यसे यह कार्यं शीघ्र हौ निर्विघ्न पूर्ण होगा ऐसी

आशा द आपकी उदारता और धर्मप्रेमकी सराहना करते हुए मैं आपको बहुत २ धन्यवाद

देता हूँ ।

इस भागके सम्पादन आदिका भार श्री पं० फूछचन्द्रजी सिद्धान्तशाखत्रीने बहन किया

है मेरा भी यथाशक्य सहयोग रहा है । मैं पंडितजीको भी एतदथे धन्यवाद देता हूँ ।

अपने जन्मकालसे ही जयधवला कायौछय काशीके स्व बा० छेदीलालजीके जिनमन्द्रिके

नीचेके मागमे स्थित ड । और यह सब स्व० बाबू साहबके सुपुत्र बा० गनेसदासजी और

सुपौत्र बा० सालिगरामजी तथा बा० ऋषभदासजीके सौजन्य और धर्मप्रेमका परिचायक दै।

अतः मैं आप सबका भी आभारी हूँ।

इस भागका बहुभाग बम्बई प्रिन्टिंग प्रेस तथा अन्तके कुछ फर्म कैछाश प्रेस में छपे

हैं । दोनोंके स्वामी तथा कर्मचारी भी इस सहयोगके लिए धन्यवादके पात्र हैं ।

जयधबला कार्योलय कैलाशचन्द्र शास्त्री

भदैनी काशी मंत्री साहित्य विभाग

दीपावली २४८३ भा० दि० जैनसंघ मथुरा

Page 5:

विषयपरिचय

प्रस्तुत अधिकारका नाम स्थितिविभक्ति है । कर्मका बन्ध दोनेपर जितने काठ्तक उसका कर्मरूपसे

अवस्थान रहता है उसे स्थिति कहते हैं। स्थिति दो प्रकार की होती हैएक बन्धके समय प्राप्त होनेवाली

स्थिति और दूसरी संक्रमण स्थितिकाण्डकघात और अधस्थितिगलना आदि होकर ग्रास्त होनेबाली स्थिति ।

केबल ब॑न्धसे प्रात्त होनेवाली स्थितिका विचार महाबन्धमें किया है। मात्र उसका यहाँपर विचार नहीं किया

यया है ॥ यहाँ तो बन्धके समय जो स्थिति प्राप्त होती है उसका भी विचार किया गया है और बन्धकरे बाद

अन्य कारणोंसे जो स्थिति प्राप्त होती है या शेष रहती है उसका भी विचार किया गया है। मोहनीय कर्मको

उत्तर प्रकृतियाँ अद्धाईस हैं। एक बार इन मेदोंका आश्रय छिए बिना और दूसरी बार इन मेदोंका आश्रय

लेकर गस्तत अधिकारमें विविध अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर स्थितिका सांगोपाँय विचार किया गया है ।

वे अनुयोगद्वार ये हैंअद्ाच्छेद सबंविभक्ति नोसबंविभक्ति उत्कृष्टविभक्ति अनुत्कृष्टविभक्ति जघन्य

विभक्ति अजघन्यविभक्ति सादिविभक्ति अमादिविभक्ति आुवविमक्ति अप्रुवविभक्ति एक लीवकी अपेक्षा

स्वामित्व काछ अन्तर नाना जीवोकी अपेक्षा भज्ञविचय परिमाणः क्षेत्र स्पर्शन काल अन्तर सभिकषं

माव और अल्पबहुत्व । मूलप्रकृति स्थितिविभक्ति एक है इसलिए उसमें सल्निकर्ष अनुयोगद्वार सम्भव नहीं

है इसलिए इस अधिकारको उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा ही जानना चाहिए ।

अद्भाच्छेदअद्धा शब्द स्थितिके आर्थमें काछ्वाची है। तदनुसार अद्धाच्छेदका अर्थ कालविभाग

होता है । यह जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे दो प्रकारका है। मोहनीय सामान्यका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सत्तर

कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण होता है यह विदित है इसलिए मोहनीय सामान्यका उत्कृष्ट अद्धाच्छेद उक्तप्रमाण

कहा दै इसमें सात हजार वर्ष आबाधाकालके भी सम्मिलित हैं क्योंकि ऐसा नियम है कि कर्मका बन्ध होते

समय स्थितिबन्धके अनुसार उसकी आबाघा पड़ती है । यदि अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरके भीतर स्थितिनन्ध

होता है तो अन्तमुंहूर्त प्रमाण आबाघा पड़ती हे और सौ कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिबन्ध होता हे तो

सौ वर्षप्रमाण आबाधा पड़ती है। आगे इसी अनुपातसे आजाधाकार बढ़ता जाता है इसलिए सत्तर

कोड़ाकोड़ी सागरग्रमाण स्थितिबन्धके होने पर उसका आबाधाकाछ सात हजार वर्षप्रमाण बतलाया है । विशेष

खुलासा इस प्रकार हैकिसी भी कर्मका बन्ध होने पर वह अपनी स्थितिके सब समयोंमें विभाजित हो जाता

है। मात्र बन्ध समयसे लेकर प्रास्म्मके कुछ समय ऐसे होते है जिनमें कर्मपुब्ज नहीं प्रास होता । जिन

समयोंमें कर्मपुंज नहीं प्राप्त होता उन्हें आधाघा काल कहते ई । इस आधाधाकालको छोड़कर स्थितिके शेष

समभोंमें उत्तरोत्तर विशेष हीन क्रमसे कर्मपुञ्ज विभाजित होकर मिलता है। उदाहरणार्थं मोहनीयकर्मका

सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिबन्च होने पर बन्ध समयसे लेकर सात हजार वर्ष तक सब समय खाली

रहते हैं। उसके बाद अगले समयसे लेकर सत्तर कोड़ाकीड़ो सागर तकके कारके जितने समय होते हैं

विवक्षित मोहनीयकर्मके उतने विभाग होकर सात हजार वर्षके बाद प्रथम समयके बटवारेमें जो भाग आता

है वह सबसे बड़ा होता है उससे अगले समयके बट्वारेमें जो भाग आता है वह उससे कुछ हीन होता है।

इसी प्रकार सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरके अन्तिम समय क जानना चाहिए । यहाँ इतना बिशेष जानना चाहिए

कि यहाँ ५र मोहनीयको जो उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर कही है वह सत्तर कोडाकोड़ी सागरके

अन्तिम समयके बयवारेमें प्रात्त होनेवाले द्वव्यको अपेक्षासे कही है । वस्तुतः आबाधाकालके बाद जिस

समयके मवरं जो द्रव्य आता है उसकी उतनी ही स्थिति जाननी चाहिए । स्थितिके अनुसार बटवारेका

यह क्रम सबंत्र जानना चाहिए । इस प्रकार मोहनीय कर्मके उत्कृष्ट अद्च्छेदका विचार किया । मोहनीय

कर्मका जन्य अद्धान्छेद एक समयप्रमाण है। यह क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिक जीवके अन्तिम समयमे सूक्ष्म

लोमकी उदयस्थितिके समय प्रात होता है। मोहनीयको उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्वका उत्कृष्ट

अद्वाच्छेद मोहनीय सामान्यके समान सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर हे। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

Page 6:

८२

उत्कृष्ट अद्धाच्छेद अन्तमुंहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर है क्योकि ये दोनों बन्ध

मृतिं न होकर संक्रम प्रकृतियाँ हैं इसलिए जिस जीवने मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध करके

उसका काण्डकथात किये निना अन्तमुहूर्त काछके भीतर वेदकसम्यक्त्वको प्रात किया है

उसके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त करनेके प्रथम समयमे अन््तमुंहूर्त कम मिथ्यात्वके सब्॒निषेकोंका कुछ द्रव्य

संक्रमणके नियमानुसार सम्यक्त और सम्यग्मिथ्यात्व रूपसे संक्रमित हो जाता है इसलिए इन दो प्रकृतियोंका

उत्कृष्ट अद्धाच्छेद अन्तमुंहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण प्रात होता है। सोलह कषायोंका उत्कृष्ट

अद्वच्छेद चालीस कोडाकोड़ी सागरप्रमाण है क्योंकि संश पञ्ेन्द्रिय पर्यात जीवके इन क्मौका इतना उत्कृष्ट

स्थितिबन्ध होता है । नौ नोकषायोंका उत्कृष्ट अद्धाच्छेद एक आवलि कम चाडीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण

दै । यद्यपि नौ नोकषाय बन्ध गरकृतिां हैं पर बन्धसे इनकी उक्त प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति नहीं प्रात्त होती।

किन्तु यह उत्कृष्ट अद्घाच्छेद संक्रमणसे प्राप्त होता है । यहां इतना विशेष जानना चाहिए कि जव सोलह

कषायोंका उत्कृष्ट स्थितितन्ध होता है तब नपुंसकवेद अरति शोक भय और जुगुप्साका नियमसे बन्ध होता

है। उस समय स््रीवेद पुरुषवेद हास्य और रतिका बन्ध नहीं होता । इसलिए नपुंसकवेद आद् पाँच

प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अद्घाच्छेद सोलह कषायोंके उत्कृष्ट स्थितिबनन्धके समय भी सम्भव है क्योंकि मान लीजिए

किसी जीवने सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध प्रारम्भ किया ओर उस समय वह नपुंसकवेद आदिका भी

बन्ध कर रहा है इसलिए वह जीव एक आवलिके बाद सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिको नपुंसकवेद आदिमे

संक्रमित भी करने छगेगा । अतः सोलह कषायोंके बन्धकालके भीतर ही नपुंसकवेद आदिका उत्कृष्ट अद्धा

च्छेद चन जायगा पर ख्ीवेद् मादिका उस समय तो न्ध होता ही नहीं इसलिए सोल कपायोका उत्कृष्ट

स्थितिबन्ध कराकर और उससे निदत्त होकर स्त्रीवेद आदि चारका वन्ध करावे और एक आवलि कम सोलह

कषार्योकी उत्कृष्ट स्थितिका संक्रमण कराके इनका उत्कृष्ट अद्धाच्छेद् आवलि कम चालीस कोड़ाकोड़ी सागर

प्रमाण प्रास करे । ख्रीवेद् आदि चार प्रकृतियोंकी कहीं कहीं पुण्य प्रकृतियोंके साथ परिगणना की जाती है ।

इसका बीज यही दै । यह उत्कृष्ट अदच्छेद है । इन प्रकृ तियोंके जघन्य अद्धाच्छेदका विचार करने पर

मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व और बारह काय ये स्वोदयसे क्षय होनेबाली प्रकृतियां नदीं इसलिए जब इनको

अपनी अपनी क्षपणाके अन्तिम समयमे दो समय कालवाली एक निषेकस्थिति शेष रहती है तब इनका जघन्य

अडाच्छेद होता है । सभ्य व ओर छोमसंज्वलन इन गरा तो नियमसे स्थोद्यसे ही क्षय होता है । तथा ख्रीवेद

और नपुंसकवेद ये भी स्वोदयसे क्षयको प्रास हो सकती हैं अतः जत्र इनकी क्षपणाके अन्तिम समयमें एक

समय कालवाली एक निषेकस्थिति शेष रहती हे तम इनका अधन्य अद्ध च्छेद होता है। एक तो क्रोधसंज्वलन

मानसंज्वछन मायासंज्वलन और पुरुषबेद इनका क्षपकश्रेणिमें अपनी अपनी उद््व्युच्छित्तके अन्तिम

समबमें पूरा सत्वनाश नहीं होता। दूसरे वहाँ इनके अपने अपने वेदनकालके अन्तिम समयमे

नवकबन्धके निषेकोंके साथ प्रथम स्थितिके निषेक भी शेष रहते हैं इसलिए इनकी जघन्य स्थिति

अपने अपने वेदनकालके अन्तिम समयमे न कहकर अन्तम जो नूतन बन्ध होता है उसके एक समय कम

दो आवष्िप्रमाण गला देने पर अन्तमें इन कर्मो की जघन्य स्थिति कदी है । जो क्रोघसंज्वछनकी अन्तमुंहू्त

कम दो मदीना मानसंज्वलन की अन्तमुहूर्त कम एक महीना मायासंज्वलनकी अन््तर्महृत कम पन्द्रह दिन

और पुरुषवेदकी अन्तमुहूतं कम आठ वध््रमाण होती हे । यही इनका जघन्य अडाच्छेद् है । छह नोकषायोके

अन्तिम काण्डककी अन्तिम फाडि संख्यात वर्षप्रमाण होती है इसलिए इसका जघन्य अद्धाच्छेद् संख्यात

वर्षप्रमाण कषा है ।

सर्वेनोसबंबिभक्तिसर्वस्थितिविभक्तिमें सब स्थितियाँ और नोखर्चस्थितिविभक्तिमें उनसे न्यून

स्थितियाँ विवक्षित द । मूल और उत्तर प्रकृतियोंमें यह यथायोग्य घटित कर लेना चाहिए ।

उत्कृष्टअनुल्कृष्टचरिभक्तिसबसे उत्क्ृष्टस्थिति डक्ृष्ट स्थितिबिमक्ति है और उससे न्यून स्थिति

अमुल्कृष्ट स्थितिविभक्ति हे। ओघ और आदेशसे जहाँ यह भिसप्रकार सम्भव हो उस प्रकारसे उसे जान

लेना चाहिए ।

Page 7:

३

जघन्यअजघन्यविभक्तिसव्रसे जघन्य स्थिति जघन्य स्थितिविमक्ति है और उससे अधिक स्थिति

अजघन्य स्थितिविभक्ति है । मूल और उत्तर ग्रकृतियोंमें इस बीजपदके अनुसार घटित कर लेना चाहिए।

सादिअनादिधुवअप्लुवविभक्तिसामान्यसे मोहनीयकी जघन्य स्थिति क्षपक सूक्ष्ससाम्परायिक

जीवके अन्तिम समयमें होती है अतः जघन्य स्थितिविभक्ति सादि और अप्लुव है । इसके पूर्व अजघन्य

स्थितिविभक्ति होती है इसलिए वह अनादि तो है ही साथ ही वह अभव्यों की अपेक्षा श्रुव और भव्योंकी

अपेक्षा अभरुव भी है। तथा उत्कृष्ट और अनुल्कृष्ट स्थितिविभक्ति कादाचित्क होती है इसलिए वे सादि

और अश्रुव हैं। उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कपाय और नौ नोकषायोंके विषयमे इसीप्रकार

जानना चाहिए अर्थात् इनकी उत्कृष्ट अनुत्कश्ट और जघन्य स्थितिविभक्ति सादि और अध्रुव होती है ।

तथा अजघन्य स्थितिविभक्ति रादि विकल्पक छोड़कर तीन प्रकारकी होती है। कारण स्पष्ट है। सम्यक्त्व

और सम्यम्मिथ्यात्व ये दो प्रकृतेयाँ ही सादि हैं इसलिए इनकी उत्कृष्ट अनुकृष्ट जघन्य और अजघन्य ये

चारों स्थितिविभक्तियाँ सादि और अधु द्वोती हैं। अब रही अनन्तानुबन्धीचतुष्क सो इसकी उत्कृष्ट और

अनुल्कृष्ट स्थितिविभक्तियाँ कादाचित्क होनेसे सादि और अध्रुव हैं। तथा जघन्य स्थितिविभक्ति विसंयोजनाके

बाद इसकी संयोजना होनेके प्रथम समय ही होती है इसलिए बह भी सादि और

अध्रुव है । किन्तु अजघन्य स्थितिविभक्ति विसंयोजनाके पूर्व अनादिसे रहती है तथा विसंयोजना के बाद

पुनः संयोजना होनेपर भी होती है इसलिए तो वह अनादि और सादि है । तथा अभव्योंकी अपेक्षा भ्रुव

और मभव्योंकी अपेक्षा अध्रुव भी है इसप्रकार अनन्तानुबन्धीचदष्ककी अजघन्य स्थितिविभक्ति सादि आदिके

भेदसे चारों प्रकारकी है। यह ओघ ग्ररूपणा है। मार्गणाओंमें अपनी अपनी विशेषताको जानकर योजना

करनी चाहिए

स्वामिस्वसामान्यसे मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करनेवाला जीव उत्कृष्ट स्थितिधिभक्तिका

स्वामी है। अवान्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्त और सोलह कषा्योके विषयमे इसी प्रकार स्वामित्व

जानना चाहिए । यद्यपि यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि उत्कृष्ट स्थितिका चन्ध करके द्वितीयादि समयोंमें

अनुक्कृष्ट स्थितिका वन्ध करनेवालेके उत्कृष्ट स्थितिका एक भौ निषेक नहीं गछता इसङिए केबल बन्धके

समय उत्कृष्ट स्थिति न मानकर अन्य समयोंमें मौ उत्कृष्ट स्थिति मानी जानी चाहिए पर यह कहना ठीक

नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट स्थिति कालप्रधान होती है और द्वितीयादि समयोंमें अघःस्थिति गल्नाके द्वारा

एक एक समय कम होता जाता है इसलिए उत्कृष्ट स्थितित्रन्थके समय ही उत्कृष्ट स्थितिविभक्ति मानी गई

है। सम्थक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्तिका ऐसा प्रथम समयवतती वेदकसम्यग्हष्टि जीव

स्वामी दै जिसने मिथ्यात्व गुणस्थानमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका वन्ध कर अस्तमुहूर्तमें वेदकसम्पक्त्व

प्राप्त किया है। तथा कषायोंकी उत्कृड स्थिति बाँधकर जो एक आवलिकालके बाद उसे नौ नोकषायोंमें

संक्रान्त कर रहा है वह नौ नोकषायोकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्तिका स्वामी है। सामान्यसे मोहनीयकी

जघन्य स्थितिविभक्ति क्षपक सूक्ष्मसाम्परायके अन्तिम समयमे होती है इसलिए वह इसका स्वामी हे । उत्तर

प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्वकी क्षपणा करनेवाला जीव उसकी क्षपणाके अन्तिम समयमे उसकी जघन्य स्थिति

विभक्तिका स्वामी है। इसी प्रकार सम्यक्त्व सभ्यग्मिध्यात्व सोरह कषाय और छह नोकषायकी

जघन्य स्थितिविमक्तिका स्वामी अपनीअपनी क्षपणाके अन्तिम समयवतीं जीवको जानना चाहिए । मात्र

सम्यग्िथ्यात्वका यह जघन्य स्वामित्व अपनी उद्देलनाके अन्तिम समयमे भी बन जाता है। तथा

तीन वेदकी जघन्य स्थितिविभक्तिका स्वामी स्वोदयसे क्षपकश्नेणि पर चढ़ा हुआ अन्तिम समयवर्ती जीव

है। यह ओघसे स्वामित्व कहा है । मार्गणाओंमें अपनी अपनी विशेषता जानकर यह स्वामित्व घटित

कर लेना चाहिए । जहाँ जिन प्रकृतियोंको क्षपणा सम्भव हो वहाँ उसका विचार कर और जहाँ क्षपणा सम्भव

न हो वहाँ अन्य प्रकारसे जघन्य स्वामित्व घटित करना चादिष्ट । तथा उत्कृष्ट स्वामित्वमें भी अपन्ती अपनी

विशेषताकी जानकर वह ले आना चाहिए ।

Page 8:

४

काछउत्कृष्ट स्थितिका बन्ध कमते कम एक समय तक और अधिकसे अधिक अन्तमुंहूर्त काल

तक होता है इसलिए सामान्यसे मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्तिका जघन्य कार एक समय और

उत्कृष्ट काल अन्तमहूर्त है । एक बार उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होकर पुनः उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होनेमें कमसे

कम अन्तुहूतं का लगता है और यदि कोई जीव उत्कृष्ट स्थितिका बन्च करके एकेन्द्रियादि पर्यायोंमें परि

भ्रमण करने ररे तो उसके अनन्त काल तक उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध नहीं होगा इसलिए यहां अनुत्कृष्ट

स्थितिविभक्तिका जघन्य और उत्कृष्ट काछ उक्तप्रमाण जानना चाहिए । नौ नोकषायोंमें नपुंसकवेद अरति शोक

मय और जुग़ुप्साका बन्ध सोलह कषायोंके उत्कृष्ट स्थितिबन्धके साथ भी सम्भव है और इसलिए इनकी उत्कृष्ट

स्थितिविभक्तिका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त बन जाता है पर शेष चार नोकषायोंका

बन्ध सोलह कषायोके उत्कृष्ट स्थितिबन्बके समय सम्भव नहीं है इसलिए इनकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्तिका

जघन्य काल एक समव और उत्कृष्ट काल एक आवलिप्रमाण है तथा इन नौ नोकषायोंकी अनुल्कृष्ट स्थिति

विभक्तिका जघन्य काल एक समय है क्योंकि क्रोधादि कधायोंकी एक समयके अन्तरसे एक समय आदि कम

अनुकृष्ट स्थितिका बन्ध कर एक आवलिके बाद उसका उसी क्रमसे नौ नोकषायोंमें संक्रमण करने पर इनकी

अनुल्कृष्ट स्थितिका जघन्य काल एक समय उपलब्ध होता है। तथा उत्कृष्ट काठ सोलह कषायोके समान

अनन्त काल है यह स्पष्ट ही है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्ति जो मोइनोयकी उत्कृष्ट

स्थितिका यन्ध करनेवाला जीव अन्तमुंहूर्तमें वेदकसम्यक्त्यको प्रास होता है उसके प्रथम समयमे होती हे

इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट काठ एक समय कहा है। तथा जो जीव उपशमसम्पक्त्वके साथ इन

दोनों प्रकृतियोंकी सत्ता प्राप्त कर अन्तमुंहूर्तमें क्षायिक सम्पन्दष्टि हो जाता है उसके इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति

विभक्तिका जघन्य कार अन्तमुहूर्त देखा जाता है और जो बीचमें सम्यग्मिध्यात्वके साथ दो छबासठ सागर

कार्तक वेदकसम्यक्त्वके साथ रहता हे उसके साधिक दो छथासठ सागर कार्तक इनकी अनुल्क्ृष्ट स्थिति

विभक्ति देखी जाती है इसलिए इनकी अनु्कृष्टस्थितिका जघन्य और उत्कृष्ट काल उक्तप्रमाण कहा है ।

सामान्यसे मोहनीयको जधन्य स्थिति क्षपक सूक्ष्मसाग्परायके अन्तिम समयमें होती हे इसलिए इसका जघन्य

भौर उत्कृष्ट काल एक समय है । तथा अजघन्य स्थितिविभक्ति अभव्योंकी अपेक्षा अनादि

अनन्त और भव्योंकी अपेक्षा अनादिसान्त है। उत्तर ग्रकृतियोंकी अपेक्षा छद नोकषायोंके

सिवा शेष सब॒॒प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिविभक्तिका जघन्य और उत्कृष्ट कार एक समय है। मिथ्यात्व

बारइ कभाय और तीन वेदकी अजघन्य स्थितिविभक्तिका काल अनादिअनन्त और अनादिसान्त है क्योंकि

इनकी जघन्य स्थिति क्षपणाके अन्तिम समयमे होती है इसलिए यह काल बन जाता है। सम्यक्त्व और

सम्यम्मिध्यात्वकी जघन्य स्थिति भी अपनी अपनी क्षपणाके अन्तिम समयमे होती है इसलिए इनकी

अजघन्य स्थितिका जघन्य काल अन््तमुंहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक दो छबासढ सागर प्रमाण है । कारण

का निर्देश पहले कर ही आये हैं। अनन्तानुबन्धी विसंयोजना प्रकृति है इसलिए इसकी अश्घन्य स्थितिके

अनादिभनन्त अनादिसान्त और सादिसान्त ये तीन विकल्प बन नाते हैं । उनमें सादिसान््त अजघन्य

स्थितिका जघन्य काल अन्तयुहू्त हे क्योंकि संयोजना होने पर पुनः अन्तर्मुहूर्तमें इसकी विसंयोजना हो सकती

है और उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्धपुद्ल परिवर्तनप्रमाण है क्योंकि विसंयोजनाके बाद संयोजना होने पर इतने

काल तक जीव इसकी विसंयोजना न करे यह सम्भव है । छद नोकषायोंकी जघन्य स्थिति अन्तिम स्थिति

काण्डकके पत ने समय होती है और उसमें अन्तर्मूहू्त काल छगता है इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट

कारू अन्तमुंहूर्त कहा है । तथा अजञवन्य स्थिति इसके पहले सवदा बनी रहती है और अभव्योंके इनका कभी

अभाव नहीं होता इसलिएइनकी अजघन्य स्थितिका काल अनादिअनन्त और अनादिसान्त कहा है। गति

आदि मार्गणाओंमें इसी प्रकार अपनी अपनी विशेषता जानकर यह काल घटित कर लेना चाहिए ।

अन्तरसामान्यसे मोहनीयका एक बार उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होकर पुनः वह अन्तमुहूतंके बाद हो

सकता है और एकेन्द्रियादि पर्यायोंमें परिभ्रमण करता रहे तो अनन्तकालके अन्तरे होता हे इसलिए इसकी

Page 9:

५

उत्कृष्ट स्थितिका जघन्य अन्तर अन्तयुहूतं और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है । तथा इसको अनुल्कृष्ट स्थिति

कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिके अभिक अन्तयुहू तके अन्तरसे होती है क्योंकि इसकी उत्कृष्ट

स्थितिबन्धका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमंहू्त है इसलिए इसकी अनुल्कृष्ट स्थितिका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त कहा है। उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्व और

बारह कषायोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितिका इसी प्रकार अन्तर काक जानना चाहिए । सम्यक्त्व और

सम्यग्मष्यालकी उत्कृष्ट स्थिति अन्त्ुहूतके अन्तरसे भी हो सकती है और उपार्ध पुद्दल परिवर्तनके अन्तरे

भी हो सकती है इसलिए इनकी उत्कृष्ट स्थितिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर उपाध

पुद्धर परिवर्तनप्रमाण कडा है । तथा इनकी उत्कृष्ट स्थितिका काठ एक समय होनेसे इनकी अनुकृष्ट

स्थितिका अन्तर एक समय होता दै और जा जीव अर्धपुद्धछ परिवर्तनके प्रारम्भे और अन्तम इनकी स्ता

प्राप्त कर मध्यके उपार्॑पुदरल्परिवतंन कार तक इनकी सत्तासे रहित होता है उसके उपार्थपुद्रल्परिवतंन

प्रमाण अन्तर हो सकता है इसलिए अनुत्कृष्ट स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर उक्तप्रमाण कहा हे । अनन्तानु

बन्धीचतुष्ककी उत्कृष्ट स्थितिका जघन्य जर उत्कृष्ट अन्तर तथा अनुकृष्ट स्थितिका जन्य अन्तर एक

समय मिथ्यात्वके समान घटित कर लेना चाहिए। तथा जो वेदकसम्यग्ट छ इनकी विसंयोजना कर मध्यमें

सम्बग्मिथ्यात्वको प्रात होकर कुछ कम दो छबासठ सागर काल तक इनके बिना रहता है उसके इनकी

अनुल्कृष्ट स्थितिका उक्त अन्तर देखा जाता है इसलिए इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिका कुछ कम दो छथासठ

सागरपरमाण उत्कृष्ट अन्तर कहा दै । नौ नोकधायोकी उत्कृष्ट स्थितिका जधन्य और उत्कृष्ट अन्तर तथा

अनुल्कृष्ट स्थितिका जघन्य अन्तर मिथ्यात्वके समान ही है। मात्र इनकी अनुल्कृष्ट स्थितिके उत्कृष्ट अन्तरमें

भेद है। बात यह है कि पाँच नोकषा्योका स्थितिबन्ध सोलह कषारयोके उत्कृष्ट रिथतिन्धके समय भी

सम्भव है इसलिए इ नकी अनुकृष्ट स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर तो अन्त्मुहूर्त बन जाता है पर चार नोकषायोंका

बन्ध सोलह कषायोंके उत्कृष्ट स्थितित्रन्धके समय सम्भव नहीं है इसलिए इनकी अनुत्क्ृष्ट स्थितिका

उत्कृष्ट अन्तर एक आवलि प्रास होता है। जघन्यकी अपेक्षा मोहनीय सामान्यकों जघन्य स्थिति क्षपकभेणिके

अन्तिम समयमें प्रास होती है इसलिए इसकी जघन्य और अजघन्य स्थितिका अन्तर का नहीं है। इसी

प्रकार मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य और अजघन्य स्थितिका अन्तर काक नहीं है।

सम्यक्त्वकी जघन्य स्थितिका भी अन्तर काल नहीं है । इसकी अजघन्य स्थितिका अन्तर अनुस्कृष्ट के समान

है। सम्यग्मिथयात्वकी जघन्य स्थिति उद्देलनाके समय और क्षपणाके समय होती है इसलिए इसकी

जघन्य स्थितिका जघन्य अन्तर अनततं कहा है क्योंकि जो जीव इसकी उद्देलना करके और दूसरे

समयमें सम्क्त्वके साथ पुनः इसकी सत्ता प्राप्त कर अन्तम इसकी क्षपणा करता है उसके यह अन्तर्

काल बन जाता है तथा इसका उत्कृष्ट अन्तर उपार्धपुद्रलः परिवर्तन प्रमाण है क्योंकि जो

ह उपार्धं॒॑पुद्रल परिवर्तनके प्रासम्भमें इसकी सत्ता ग्रास करके म्य कारम

इसकी सासे रहित रहता है और उपार्थ पुद्धछ परिवतेनके अन्तम पुनः इसकी सत्ता ग्रास

कर क्षपणा करता दै उसके इसकी जयन्य स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर उपार्धपुदूगल परिवतंनभरमाण देखा जाता

है इसकी अजघन्य स्थितिका अन्तर अनुल्कृष्के समान है यह स्पष्ट ही है । अनन्तानुबन्धी विसंयोजना प्रकृति

है इसक्तिए इसकी जघन्य स्थितिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त और उत्कृष्ट अन्तर उपार्घ घुद्गलूपरिवर्तन प्रमाण

ग्राप्त हो जाता है इसलिए वह उक्त प्रमाण कदा हे तथा इसकी विसंयोजना होकर कम से कम अन्तमंहूर्त

काल तक और अधिकसे अधिक कुछ कम दो छयासठ सागर कार तकं इसका अभाव रहता है इसलिए

इसकी अजघन्य स्थितिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो छबासठ सागरप्रमाण

कहा दै । गति आदि मार्गणाओंमें अपने अपने स्वामित्वको जानकर इसी प्रकार यह अन्तरकाछ घटित कर

लेना चादि

भंगविचयजो उत्कृष्ट स्थितिवाले होते हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिवाले नहीं होते और जो अलुत्कृष्ट

स्थितिबाले होते हैं वे उत्कृष्ट स्थितिबाछे नहीं होते । इसी प्रकार जघन्य और अजघन्य स्थितिकी अपेक्षा

Page 10:

8

भी यह सर्थपद् जानना चादिष्ट इस अर्थपदके अनुसार १ कदाचित् सव जीव मोहनीयकी उत्कृष्ट

स्थितिसे रदित हैं २ कदाचित् बहुत जीव मोहनीयकी उत्कृष्ट र्थितिसे रदित ई और एक

जीव उत्कृष्ट स्थितिवात्म है ३ कदाचित् बहुत जीव मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिसे रहित हैं और बहुत

जीव उत्कृष्ट स्थितिवाले हैं ये तीन भङ्ग होते हैं। अनुत्कृश्ट स्थितिकी अपेक्षा कदाचित् सब्र जोव मोहनीय

की अनुत्कृष्ट स्थितिवाले हैं २ कदाचित् बहुत जीव मोहनीयकी अनुत्क स्थितिवाले हैं और एक जीव

अनुल्कृष्ट स्थितिसे रहित है ३ कदाचित् बहुत जीव मोइनीयकी अनुत्कृष्ट स्थितिवाले दै और बहुत जोव

अनुल्कृष्ट स्थितिसे रहित हैं ये तीन भंग होते हैं । उत्तर २८ प्रकृतियोंकी अपेक्षा ये ही भङ्ग जानने चाहिए ।

मोहनीय सामान्य की अधन्य और अजघन्य स्थितिकी अपेक्षा भी जो उत्कृष्ट और अनुकर स्थितिकी अपेक्षा

तीन तीन भङ्ग कदे हैं उसी प्रकार तीन तीन भंग जानने चाहिए । २८ उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा भी इसी

प्रकार भङ्ग घटित कर लेने चाहिए तासर्यं यदह है कि जो उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा तीन भङ्ग कहे हैं वे

सर्वत्र जघन्य स्थितिकी अपेक्षा तीन भङ्ग जानने चाहिए और जो अनुत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा तीन भङ्ग कदे हैं

वे सर्वत्र अजन्य स्थितिकी अपेक्षा तीन भज्ञ जानने चाहिए । गति आदि मार्गणाओंमें भी अपनी अपनी

विशेषताको जानकर ये भङ्ग ले आने चाहिए ।

भागाभागमोहनीय सामन्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिवाले जीव अनन्ते भागप्रमाण हैं और

अनुल्कृष्ट स्थितिवाले जीव अनन्त बहुमागप्रमाण हैं । इसी प्रकार मोहनीयकी छब्बीस उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा

भागामाग जानना चादिष्ट । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिवाले जीव असंख्यातं

भागप्रमाण हैं और अनुल्कृष्ट स्थितिवाले जीव असंख्यात बहुमागप्रमाण हैं। मोहनीय सामान्य और उत्तर

प्रकृतियोंकी अपेक्षा जघन्य और अजघन्य स्थितिवालॉंका इसी प्रकार भागाभाग है। अर्थात् जधन्य स्थिति

वाले अनन्तवें भागप्रमाण दै ओर अजघन्य स्थितिवाले अनन्त बहुमागप्रमाण हैं तथा सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जघन्थ स्थितिवाले जीव असंख्यातबें भागप्रमाण हैं और अजघन्य स्थितिवाले जीव

असंख्यात बहुमागप्रमाण हैं। गति आदि मार्गणाओंमें अपनी अपनी संख्या आदिको जानकर यह भागामाग

घटित कर लेना चाहिए ।

परिमाण मोहनीय सामान्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिवाले जीव असंख्यात हैं और अनुत्कृष्

स्थितिवाले जीव अनन्त हैं । इसी प्रकार छब्बीस उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षासें यह परिमाण जानना चाहिए ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुल्क्ृष्ट स्थितिवाले जीव असंख्यात हैं। मोहनीय सामान्यकी

अपेक्षा जघन्य स्थितिवाले जीव संख्यात ओर अजघन्य स्थितिवाले जीव अनन्त हैं । छन्बीस उत्तर प्रकृतियोंकी

अपेक्षा इसी प्रकार परिमाण जानना चाहिए । सम्पक्त्वकी अपेक्षा जघन्य स्थितिवाले जीव संख्यात है ओर

अजघन्य स्थितिवाले जीव असंख्यात द । तथा सम्यग्पिथ्यात्वकी जघन्य और अजघन्य स्थितिवाले जीव

असंख्यात हैं । गति आदि मार्गणाओंमें अपने अपने परिमाणको और स्वामित्वको जानकर यह घटित कर

लेना चाहिए ।

क्षेत्रमोहनीयकी उत्कृष्ट और जन्य स्थितिवाछोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें मागप्रमाण है और

अनुत्कृष्ट अजयन्य स्थितिवालोंका क्षेत्र सर्व छोकप्रमाण है । मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी

अपेक्षा इसी प्रकार क्षेत्र जानना चाहिए। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट अनुल्कृष्ट जघन्य

और अजघन्य स्थितिवालोंका क्षेत्र छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। गति आदि मार्गणाओंमें अपने अपने

स्वामित्वको व क्षेत्रको जानकर यह घटित कर लेना चाहिए ।

स्पशेनमोहनीय सामान्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिवा्मेका वर्तमान स्पर्शन छोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण विहारादिकी अपेक्षा अतीत स्पर्शन असनारीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और

मारणान्तिक पदकी अपेक्षा असनालीके कुछ कम तेरह बटे चौदह मागप्रमाण है । तथा अनुल्क्ृष्ट स्थितिवालोंका

सर्व छोकप्रमाण स्पर्शन है । उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट

और अलुक स्थितिवालॉंका यदी स्पर्शन है । इतनी विशेषता है कि स्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थिति

Page 11:

७

वालॉका यह स्यशंन असनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण है तथा अन्य आचार्योंके अमिप्रायसे

यह त्रसनालीके कुछ कम बारह बरे चौदह भागप्रमाण है। कारणका निर्देश ध ३६८ के विशेषार्थमें किया

है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको उत्कृष्ट स्थिति वेदकसम्यक्त्वको प्रासिके प्रथम समयमे सम्भव है और

ऐसे जीवोका स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बरे चौदह मागप्रमाण है इसलिए यह स्पर्शन उक्त

प्रमाण कहा है। इस अपेक्षासे वतमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण दै यह स्पष्ट ही है। इनकी

अनुल्कृष्ट स्थितिवालोंका उत्कृष्ट के समान स्पर्शन तो बन ही जाता है। साथ ही मारणान्तिक और उपपादकी

अपेक्षा स्वंलोक प्रमाण स्पर्शन भी बन जाता है इसलिए यह उक्तप्रमाण कह्या है। मोहनीयकी जघन्य स्थिति

क्षपकश्रेणिमें प्रात होती है इसलिए इसकी जघन्य स्थितिवालोंका लेकके असंख्यातवें भागप्रमाण स्पशन हे

और मोहनीयकी सत्तावाले जीव सर्व छोकमें पाये जाते हैं इसलिए इसकी अजघन्य स्थितिवार्लोका सर्वलोक

प्रमाण स्पर्शन कडा है। उत्तर प्रकृतियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय ओर नौ नोकषायोकी अपेक्षा इसी प्रकार

स्पशन घटित कर लेना चाहिए सम्यक्त्वकी जघन्य स्थितिवालोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान और अजघन्य

स्थितिवालोंका स्पशन अपने अनुत्कृषश्के समान है यह स्पष्ट ही है। तथा सम्यग्पिध्यात्वके जघन्य और

अजघन्य स्थितिवालोंका स्पर्शन अनुत्कृशके समान है यह भी स्पष्ट है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य स्थिति

देवोंके विहारादिके समय भी सम्भव है इसलिए इसवाले जीवोंका स्पर्शन वतंमानकी अपेक्षा छोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण और अतीतकी अपेक्षा असनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह मागम्रमाण कहा है। इसके

अजघन्य स्थितिवालोंका स्पर्शन सर्वछोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। गति आदि मार्गणाओंमें अपनी अपनी

विशेषताको जानकर इसी प्रकार स्पर्शन घटित कर लेना चादिए ।

काछनाना जीव मोइनोयकी उत्कृष्ट स्थतिका एक समय बन्ध करके दूसरे समयमे न करें यह

सम्भव है और अधिकसे अधिक पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक करते रहें यह भी सम्भव हे

इसलिए मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका जघन्य काल एक समय और उस्कृष्ट कार पल्यके असंख्यातवें माग

प्रमाण कहा है । तथा इसकी अनुल्कृष्ट स्थितिका कार स्वेदा है यह स्पष्ट ही है । मोहनीयकी छब्ब्रीस उत्तर

प्रकर तिरयोकी अपेक्षा यह काल इसी प्रकार जानना चाहिए। मात्र सम्यक्त्व और सम्यग्पिश्यात्को उत्कृष्ट

स्थितिका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है क्योंकि मोहनीय

की छत्कृष्ट स्थितिवाले जीव कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

काल तक वेदकसम्यक्त्वको प्रास होते ई । तथा इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिवाडोंका काल स्वंदा है यह स्पष्ट ही

है । मोहनीयकी जघन्य स्थितिवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है क्योंकि

क्षपकश्नेणिकी प्रातिका जघन्य का एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय है। तथा इसकी अजघन्य

स्थितिवार्लोका कार स्वंदा है। मिथ्यात्व सम्यक्त्व बारह कषाय और तीन वेदवाले जीवोंका यह कार इसी

प्रकार है। सम्यग्मिध्यात्व ओर अनन्तानुबन्धी चतुष्क को जघन्य स्थितिवालोंका जघन्य कार एक समय और

उत्कृष्ट काठ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । कारण स्पष्ट है। इनकी अजघन्य स्थितिवालोंका काल

सबंदा है छइ नोकषायोंकी जघन्य स्थितिवालोंका जघन्य और उत्कृष्ट कार अन्तमुहूतं हे क्योकि एक

स्थितिकाण्डकघातमें इतना काठ लगता है और उत्कृष्ट काल सवंदा है । गति आदि मार्गणाओंमें अपनीअपनी

विशेषता जानकर यह काल घटित कर लेना चाहिए ।

अन्तरमोहनीय सामान्य और अदास उत्तर प्रकृतियोकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिवाछोंका जघन्य

अन्तर एक समय है क्योंकि एक समयके अन्तरसे उत्कृष्ट स्थितिकी प्राति सम्भव है और उत्कृष्ट अन्तर

अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है क्योंकि उत्कृष्ट स्थितिबन्धके बाद उसका पुनः बन्ध होनेमें अधिकसे

अधिक इतना अन्तरकार प्रास होता है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिवालोंका अन्तरकाल नहीं है यह स्पष्ट ही है ।

मोहनीयकी जघन्य स्थितिवालोंका जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । अजघन्य

स्थितिवालोंका अन्तरकाल नहीं है। मिथ्यात्व सम्यक्स आठ कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा यह

अन्तरकाल इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचत॒ष्ककी जघन्य स्थिति

Page 12:

८

बालोंका नघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात दै क्योकि सम्यक्तवको

प्रात होनेवालोंका और सम्पक्त्वसे मिथ्यात्वमें जानेवाले जीवोका उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात हे

इसलिए यह उत्कृष्ट अन्तर उक्त कालप्रमाण कहा है । तीन संज्वलन और पुरुषवेदकी जघन्य स्थितिवालेंका

जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक वर्ष है क्योंकि इन प्रकृतियोंके उदयसे इतने

कालके अन्तरसे क्षपकश्रेणिपर आरोहण करना सम्भव ह । लोभसंज्वलनकी जघन्य स्थितिवालोंका जधन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है क्योंकि क्षपकभरेणिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर छह महीना है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी जघन्य स्थितिवार्लोका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर संख्यात वर्ष है क्योंकि इन वेदवालोंका इतने कालके अन्तरते क्षपकश्रेणि पर आरोहण करना सम्भव

है । इन सब्र प्रकृतियोंकी अनघन्य स्थितिवाल्येका अन्तर काल नहीं है यह स्पष्ट दी है । गति आदि मार्गणाओं

में अपनी अपनी विशेषता जानकर यह अन्तरकाल ले आना चाहिए ।

सन्निकर्षेमिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिवाले जीवके सम्यक्त्व और सम्यग्मथ्यात्वकी सत्ता होती मी है

और नहीं मी होती । यदि अनादि मिथ्यादृष्टि जीव हैं या जिन्होंने इन दोनोंकी उद्देलना कर दी है उनके

सत्ता नहीं होती शेष जीवोंके होती है । जिनके सत्ता होती दै उनकी इनकी स्थिति नियमसे अनुष होती

है क्योकि मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति मिथ्यात्व गुणस्थानमें होती है और इनकी उत्कृष्ट स्थिति वेदकसम्यक्त्वकी

ग्राप्तिके प्रथभथ समयमे होती है इसलिए मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिवाले जीवके इन दोनोंकी उत्कृष्ट

स्थितिका निषेष किया है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति मी अन्तमुंहूर्त कम अपनी उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर एक

स्थितिपयंन्त होती है कारण स्पष्ट है । इतनी विशेषता है कि अन्तिम जघन्व उद्देलनाकाण्डककी अन्तिम

फालिमें जितने निषेक होते हैं उतने मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिके साथ इन दोनों प्रकृतियोंकी अनुकृष्ट स्थितिके

सन्निकर्षं विकल्प नहीं होते । मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिवाले जीवके सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति भी होती

है ओर अनुत्कृष्ट स्थिति भी होती है । यदि मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करते समय सोलह कषायोकी

उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है तो उत्कृष्ट स्थिति होती है अन्यथा अनुकृष्ट स्थिति होती है जो अपनी

उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा कमसे कम एक समय और अभिकसे अधिक पल्यके असंख्यातवें भागग्रमाण

कम होती है। स््रीवेद पुरुषवेद हास्य और रतकी नियमसे अनुकृष्ट स्थिति होती हे क्योंकि उस

समथ इनका बन्ध नहीं होता जो अपनी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा कमसे कम अन्तमुहूत कम होती है और

इस प्रकार उत्तरोत्तर कम होती हुई इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति अन्तःकोड़ाकोड़ी प्रमाण तक प्रास हो

सकती है। मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिकि समय शेष पाँच नोकषायोंकी स्थिति उत्कृष्ट भी होती हे

और अनुत्कृष्ट भी होती है । यदि उस समय सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होकर एक आवलि

कम उसका पाँच नोकषायोंमें संक्रमण हो रहा है तो उत्कृष्ट स्थिति होती हे अन्यथा अनुक्क्ृष्ट स्थिति होती है

जो अपनी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमसे लेकर पल्यका असंख्यातवां भाग कम बीस कोड़ाकोड़ी

सागर तक सम्भव है। इस प्रकार मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको प्रधान करके सन्निकर्षका विचार किया ।

सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिवालेके मिथ्यात्वकी स्थिति नियमसे अनुत्कृष्ट होती है जो अपनी उत्कृष्ट

स्थितिकी अपेक्षा अन्तमुंहूर्त कम दती है । उस समय सम्यग्मिध्यात्वकी स्थिति नियमसे उत्कृष्ट होती है ।

कारण स्पष्ट है। सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी स्थिति नियमसे अनुल्क्ृष्ट होती है जो अपनी उत्कृष्ट

स्थितिकी अपेक्षा अन्तमुहूर्त कमसे लेकर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कम तक होती है । सम्यस्मिथ्यात्वकी

उत्कृष्ट स्थितिको मुख्य करके इसी प्रकार सन्निकर्ष विकल्प जानना चाहिए । मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको

मुख्य करके पहले सन्निकर्ण कह आये हैं उसी प्रकार सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा सन्निकर्ष

जानना चाहिए

स्नीवेदकी उत्कृष्ट स्थितिवालेके मिथ्यात्वकी स्थिति नियमसे अनुत्कृष्ट होती है जो अपनी उत्कृष्ट की

अपेक्षा एक समय कमसे लेकर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कम तक होती है । सम्थक्व और सम्यस्मि

Page 13:

९

थ्यात्वकी स्थिति नियमसे अनुत्कृष्ट होती है जो अपनी उत्कृष्ट की अपेक्षा अन्तमुंहू्त कमसे लेकर एक स्थिति

तक होती है। मात्र इनकी अन्तिम जघन्य स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको इन सन्निकर्ष भिकल्पौमेसे कम

कर देना चाहिए । सोलह कषायोंकी नियमसे अनुत्कृष्ट स्थिति होती है जो अपनी उत्क्ृष्टकी अपेक्षा एक

समय कमसे लेकर एक आवलि कम तक होती है । पुरुषवेदकी स्थिति नियमसे अनुत्कृष्ट होतो है जो अन्त

महूत कमसे लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर तक दोती हे । हास्य और रतिको स्थिति उत्कृष्ट भी होती है और

अनुत्कृष्ट मी होती है । स्नीवेदके बन्धके समय हास्य और रतिका बन्ध होता है तो उत्कृष्ट होती है अन्यया

अनुत्कृष्ट होती हे जो अपनी उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमसे लेकर अन्तःकोडाकोड़ी सागर तक होती

है। अरति और शोककी स्थिति उत्कृष्ट मी होती है और अनुत्कृश भी होती है। स््रोवेदके बन्धके समय

इनका चन्ध होता है तो उत्कृष्ट होती है अन्यथा अनुत्कृष्ट होती है जो अपनी उत्क्ृष्टकी अपेक्षा एक

समय कमसे लेकर पल्यका असंख्यातवाँ भागकम बीस कोड़ाकोड़ी सागर तक होती है । नपुंसकवेदकी स्थिति

नियमसे अनुत्कृष्ट होती है जो एक समय कमसे लेकर पल्यका असंख्यातवाँ माग कम बीस कोड़ाकोड़ी सागर

तक होती है भय और जुगुप्साकी स्थिति नियमसे उत्कृष्ट होती हे । पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थितिको मुख्य करके

इसी प्रकार सन्निकर्ष जानना चाहिए। हास्य और रतिकी उत्कृष्ट स्थितिको मुख्य करके भी इसी प्रकार

सन्निकर्ष जानना चाहिए मात्र इसके स्तरीवेद ओर पुरुषवेदकी अनुत्कृष्ट स्थिति अपनी उत्कृष्ट स्थितिकी

अपेक्षा एक समय कम आदि न होकर अन्तमुंहूर्त आदि कम होती है। कारणकी जानकारीके लिए

पृष्ठ ४७३ देखो ।

नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थितिवाले जीवक मिथ्या वकी स्थिति उत्कृष्ट भी होती हे और अनुत्क्ृष्ट भी होती

है । अनुत्कृष्ट स्थिति अपनी उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमसे लेकर पल्यके भसंख्यातवें भागतक कम होती है ।

सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यावत्की स्थिति नियमसे अनुत्कृष्ट होती है जो अन्तमेहूर्त कमसे लेकर एक स्थिति तक

होती हे । सोलह कषायोंकी स्थिति उत्कृष्ट भी होती है और अनुकृष्ट भी होती है । अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय

कमसे लेकर एक आवलि कम तक होती है। स््रीवेद और पुरुषवेदकी स्थिति नियमसे अनुकृष्ट होती है जो अपनी

उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तमुंहूर्त कमसे लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर तक होती है । हास्य ओर रतिकी स्थिति उत्कृष्ट

भी होती हे और अनुत्कुष्ट भी होती है जो अपनी उत्कृश्की अपेक्षा एक समय कमते लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ी

सागर तक होती है । अरति और शोककी स्थिति उत्कृष्ट भी होती है और अनुत्कृष्ट भी होती दै । अनु

त्कुष्ट स्थिति अपनी उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमसे लेकर पल्यका असंख्यातवाँ भागकम बीस कोड़ाकोड़ी

सागर तक होती है। भय और जुग॒ुप्साकी स्थिति नियमसे उत्कृष्ट होती दै । इसी प्रकार अरति सोक भय

और जुगुप्साकी उत्कृष्ट स्थितिको मुख्य करके सन्निकर्णं जानना चादिए । यहाँ जो विशेषता है उसे ४८३

प्ृष्ठसे जान लेनी चाहिए ।

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिवालेके अनन्तानुअन्धीचत॒ष्कका सत्र नहीं होता क्योंकि दं नमोहनीयकी

क्षपणाके समय मिध्यात्वकी जघन्य स्थिति होती है और अनन्ताजुबन्धीकी इससे पूर्व विसंयोजना हो जाती है ।

शेष कर्मो की स्थिति नियमसे अजघन्य असंख्यातगुणी अधिक होती है। सम्यक वकी जघन्य स्थितिवालेके

मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचारकी सत्ता नहीं होती । शेष कर्मो की अजघन्य असंख्यातगुणी

स्थिति होती दै । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिवालेके मिभ्यात्व सम्यक्त्व और अनन्तानुबन्धीचारको सत्ता

है भी और नहीं मी है । उद्देखनाके समयसम्ग्मिथ्या वको जघन्य स्थितिवाले जीवक सम्यक्तवकी सत्ता नहीं है

शेषकी है ओर क्षपणा समय सम्यग्मिध्यात्वकी जघन्य स्थितिवालेके मिथ्यात्व ओर अनन्तानुबन्धीचारकी

सत्ता नहीं होती सम्यकबकी होती है । जव इनकी सत्ता होती है तो इनकी नियमसे अजघन्य असंख्यातगुणी

होती है । इन छह प्रकृतियोंके सिवा शेष प्रकृतियोंकी नियमसे अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है।

अनन्तानुबन्धी क्रोषफो जघन्य स्थितिवालेके मिथ्यात्व आदि सब्र प्रकृतियोंकी नियमसे अजघन्य

असंख्यातगु णी स्थिति होती दै । मात्र अनन्तानुत्रन्धी मान आदि तीनकी जघन्य स्थिति होती है। इसी प्रकार

Page 14:

१०

अनन्तानुबन्धी मान आदि तीनकी जघन्य स्थिति की मुख्यतासे सन्निकषं जानना चाहिए। अप्रत्याख्यानावरण

क्रोधकी जघन्य स्थितिवालेके चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी नियमसे अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती

है। अप्रत्याख्यानावरण मान आदि तीन और प्रत्याख्यानावरण चतुष्कको नियमसे जघन्य स्थिति होती हे ।

इसी प्रकार इन सात कषायोंकी जघन्थ स्थितिकी मुख्यतासे सन्निकर्षं जानना चाहिए ।

स््ीवेदको जघन्य स्थितिवालेके सात नोकषाय और तीन संज्वलनोंकी नियमसे अजघन्य संख्यातगुणी

स्थिति होती है और छोमसंज्वलनकी अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है । नपुंसकवेदकी जघन्य स्थितिवालेके

इसी प्रकार सन्निकर्षं जानना चाहिए । पुरुषवेदकी जघन्य स्थितिवालेके तीन संज्वलनोंकी अजघन्य संख्यात

गुणी स्थिति होती है और कोभ संज्वलनकी अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है ।

हास्यकी जघन्य स्थितिवालेके तीन संज्वलन और पुरुषवेदकी अजघन्य संख्यातगुणी स्थिति होती है

और छोभसंज्वलनकी अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है । तथा पाँच नोकषायोंकी जघन्य स्थिति होती है ।

इसी प्रकार पाँच नोकषायोंकी जघन्य स्थितिकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए

क्रोधसंज्वलनकी जघन्य स्थितिवालेके दो संज्वलनकी अजघन्य संख्यातगुणी और लोमसंज्वलनकी

अबघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है। मानसंज्वलनकी जघन्य स्थितिवालेके मायासंज्वलनकी अजन्य

संख्यातगुणी और छोमसंज्वलनकी अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है । मायासंज्वख्नकी जघन्य स्विति

वालेके लोभसंज्वलनकी अजघन्य असंख्यातगुणी स्थिति होती है लोभसंज्वलनकी जघन्य स्थितिबालेके अन्य

प्रकृतियाँ नहीं होतीं ।

भावमूल और उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा सर्वत्र ओदयिक भाव है ।

अल्पबहुत्वसामान्यसे मोहनीयकी उ९क्ृष्ट स्थितिवाले जीव थोड़े हैं क्योंकि उत्कृष्ट स्थितिका

बन्ध संजी पद्चेन्द्रिय पर्यास मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं। इनसे अनुत्कृष्ट स्थितिवाले अनन्तगुणे है । कारण स्पष्ट

है। जघन्यकी अपेक्षा मोहनीयकी जघन्य स्थितिवाले सबसे थोड़े हैं क्योकि क्षपक सूहष्मसाम्परायिक जीवके

अन्तिम समयमे मोहनीयको जघन्य स्थिति होती दे । इनसे अजन्य स्थितिवाले जीव अनन्तयुणे हैं । उत्तर

प्रकृतियोंकी अपेक्षा यहां स्थिति अल्पबहुत्वका विचार किया है जिसका जान अद्धाच्छेदसे हो सकता है

इसलिएयहांवह नहीं दिया नाता है ।

इस प्रकार कुल तेईस अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर स्थितिविभक्तिका विचार करके आगे भुजगार

पदनिक्षेप इद्धि और स्थितिसत्कर्मस्थान इन अधिकारोंका अवलम्बन लेकर विचार करके ४स्थितिविभक्ति

समाप्त होती है । इन अधिकारोंकी विशेष जानकारीके लिए मूल्थरन्थका स्वाध्याय करना आवश्यक है ।

Page 15:

विषयसूची

भुजगार आदिके अ्थंपद कहनेकी प्रतिज्ञा १ अनन्तायुबन्धीके अवक्तन्यका काल २३२४

अर्थपद शब्दका अथे १ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वके

स्ुजगारविभक्तिका अथेपद २। अुजगार आदिका काल २४२६

अल्पतरविभक्तिका अर्थपद् २ उचद्चारणाके अनुसार कालका विचार २६४२

अवस्थितविभक्तिका अर्थपद् एक जीवकी अपेक्षा अन्तर 8२५०

अवक्तव्यविभक्तिका अर्थपद् ३ मिथ्यात्व ४२४३

१०७ शेष क्म षट्

अुजगारके १३ अछुयोगदार रै१०५ उश्चारणाके अनुसार अन्तर ४३५०

समुस्की्तेना ध नाना जोर्वोकी अपेक्षा भंगविचय ५०९५

स्वामित्व ६१४ मिथ्यास्व सोलह कषाय और

मिथ्यात्व नौ नोकषाय ५०५१

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व ७९ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्व ५१

शेष कम ५१० डच्चारणाके अनुसार मंगविचय ५१५५

उच्चारणाके अनुसार स्वामित्व १०१४ उच्चारणाके अनुसार भागाभाग ५५५७

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यातवके उच्चारणाके अनुसार परिमाण ५७५९

विषयमें दो उच्चारणाओंके सतोंका उद्चारणाके अनुसार क्षेत्र ५९६०

निर्देश १२२३ उच्चारणाके अनुसार स्पशेन ६०६६

एक जीवको अपेक्षा काल १४४९ नाना जीवक अपेक्षा काक ६७७३

मिथ्यात्त ६४९० सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्व ६७६८

सुजगारविभक्तिके चार समय १५ केष कर्म ६८

भिन्नमिन्न स्थितिबन्धके अनन्तालुबन्धीका अवक्तव्यकाल ६८६५

कारणभूत संक्षेशपरिणामोंका उद्चारणाके अनुसार काल ६९७३

विचार १६१७ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ७४८२

स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके सम्यक्स्व और सम्यम्मिथ्यात्व उ४७७

परिणमनकालका विचार १७१८ शेष कर्म ७७

सोलह कषाय और नौ नोकषाय २०२३ अनन्तानुबन्धीके अवक्तव्यका अन्तर ७७।

सोलह कषारयोके सुजगारके १९ उच्चारणाके अनुसार अन्तर ७८८२

समयोंका विचार २०२१ उच्चारणाके अनुसार भाव ८२८३

नौ नोकषायोंके सुजगारके १७ सन्निकर्ष ४३९५

समयोंका विचार २१ मिथ्थात्वकी सुख्यतासे ३८४

स््रीवेद् आदिके अवस्थितका शेषके विषयमे जाननेकी सूचना

अन्तसुहूते काल कहाँ किस व उसका व्याख्यान ८४९५

प्रकार प्राप्त होता द्वै इसका जिचार २३२३ अल्पबहुत्व ९५१०५

Page 16:

२

मिथ्यात्व ९७५७ स्थानद्दानिप्ररूपणा १३५१३९

बारह कषाय ओर नौ नोकषाय ९७ भिथ्यात्वकी कितनी बृद्धियां और कितनी

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यासर ९५७१०२ हानियां होती हैं इसका निर्देश १४०१४१

अनन्तानुबन्धौ चतुष्कं १०२ शेष कर्मोकी ब्रृद्धियां ओर हानियां १४११५९१

उच्चारणाके अनुसार अल्पबहत्व॒ १०२१०५ उच्चारणाके अनुसार ससुत्छीतंना ५११९६०

पदनिक्षेपके २ अचुयोगद्वार १०५११७ 9 स्वामित्व १६०१६३

अतिज्ञा १०५ एक ज्ञोवकी अपेक्षा काछ १६४१९०

तीन अनुयोगद्वारोंके नाम १८५१०६ मिथ्यात्व १६४१६९

उच्वारणाके अनुसार समुर्कीवेना १०६ मदान्ध और कषायप्राश्तमें

उत्कृष्ट १०६ मतभेदक्ा निर्देश १६५

जघन्य १०६ दोष कर्म १६

उच्चारणाके अनुसार स्वामित्व १०७११० उच्चारणाके अनुसार काक १६९१५०

उत्कृष्ट १०७१०९ फक जीवकी अपेक्षा अन्तर १९१२२१

जघन्य १०९११० मिथ्यात्व १९६१५४

उत्कृष्ट अल्पबहुस्व ११०११६ शेष कर्मं श्ण

मिथ्याख ११०१११ उच्चारणाके अनुसार अन्तर १५४२२१

सम्यवत्व और सम्यम्मिथ्यात्वके 2 9 भंगविचय र२९२२९२३

अतिरिक्त शेष कर्म १११ 9 भागामाग २२५७२२८

नपुंसकवेद अरति शोक भय छः 9 परिमाण २२८२३०

और जुगुप्सा १११११२ र ष्क २३१

सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्व १९२११३ 9 सपरन २३२२५०

उद्वारणाके अनुसार उत्कृष्ट अर काठ २५१२६०

अल्पबहुत्व ११३११६ ॥ अन्तर २६०२७४

जघन्य अल्पबहुत्व ११६११७ भाव रण

उच्चारणाके अनुसार जघन्य अल्पबहुत्व २५४६१९

जल्पबहुत्व ११६११७ मिथ्यात्व २७४२८८

बृद्धिके १३ अदुयोगद्यार ११७३१९ बारह कपाय और नो नोकषाय २८८२८९

प्रतिज्ञा ११७ सम्यक्त्व ओर खम्यग्मिथ्यात्व २८९३०२्

बृद्धिके दो भेद और उनका विचार ११८१३९ अनन्वानुबन्भीचतुप्क सह ३०२३०३

स्वस्थानबृद्धि ११८१२० उारणाके अनुसार अलपबु २०२२१९

परस्थानवृद्धि १२१ स्थितिसत्कमेस्थान ३१९३३६

स्वस्थानइद्धिकी निरन्तर इृद्धिका स्थितिसत्कर्मस्थानोंके दो अधिकार ३१९

कथन १२११३४ प्ररूपणा २३१५३२९

परस्थानवृद्धि १३५१३७ अल्पबहुत्व ३२९३३६

Page 17:

Page 18:

कसायपाहइडस्स

ट्विदिविहत्ती

तद्यो अत्याहियारे

Page 19:

Page 20:

सिरिजइ्वसदाइरियविरश्यचुण्णिसुत्तसमण्णिदं

सिरिभगवंतगुणहरभडारओवहडइं

तस्स

सिरिवीरसेणाहरियविरहया टीका

जयधवला

तत्थ

उत्तरपयडिट्िदिविद्दतती णाम विदिश्रो अत्थाहियारो

जे शुजगारअप्पद्रअवद्िदअवत्तव्वया तेसिमटपदं ।

१ किमइप्द णाम १ यजमारअप्यदरअवद्टिदावत्तञ्वयाणं सरुवं त॑ परूवेमि

त्ति भणिदं होदि । तं किमइं चुचदे १ अगबगयचदुसरूवस्स शचजमारविखओ बहो सुद्देण

ण॒ उप्पज्जदि त्ति तदुप्पायणइं बुचदे ।

अब जो सशुजगार अ्पतर अवस्थित और अवक्तव्य पद हैं उनका

अथपद कहते दें ।

१ शंका यहाँ अर्थपद् से क्या तात्पये है १

समाधान झुजगार अल्पतर अवस्थित और अवक्तव्यका जो स्वरूप दै उसे कहते हैं

यह् इसका तात्पये ह ।

शंका सुजगार आदिका स्वरूप किसडिये कहते हैं १

समाधान जिन्होंने जगार आदि चारोंका स्वरूप नहीं जाना है उन्हें भ्ुजगार विषयक

ज्ञान सुखपूर्वक नहीं उत्पन्न होता है अतः सुजगारादि विषयक ज्ञानके खुखपूर्वक उत्पन्न करानेके

किये उनके स्वरूपका कथन करते है।

Page 21:

र जयधवरासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

जत्तियाओ अस्सि समए दिदिविहत्तीञ्ओो उस्सक्षाविदे अणंतर

विविक्क॑ते समए अप्पदराओं बहुदरविहक्तिओ एसो सुजगारविहत्तिओ ।

२ अरस समए अस्मिन् वतैमानसमभे जत्तियाभो यावन्त्यः ट्विद्विहत्तीओं

स्थितिविभक्तयः स्थितिविकल्पाः इति यावत् । उस्सकाबिदे ता्तकषिता वढितास इत्यथे

अणंतरविदिकंते समए अनन्तरन्यतिक्रान्ते समये । अप्पद्राओ अरपतराः स्थितयो यदि

भवन्ति । बहुद्रविहत्तिमो स ॒बहुतरस्थितिषिकरपो जीवः । एसो शचजगारविहत्तिओ ।

स एष् जीवो अूजगारविभक्तिः । अणंतरादीद्धिदीर्ितो जदि वड् माणसमण् बहुआओ

डिंदीओ बंधदि तो येजगारविहत्तिओ त्ति भणिदं दोदि ।

ओसकाबविदे षहुदराओ विहृत्तीओ एसो अप्पदरविहत्ति्चो

३ बहुदराओ विदत्तीओ अनन्तरव्यतिक्रान्ते समये बहुस्थितिविकल्पेषु व्यवस्थि

तेषु ओसकाबिदे वतंमानसमये स्थितिकांडघातेन अधःस्थितिगलनेन वा अपकर्पितेषु ।

एसो अप्पदरविदृत्तिओं एषः अल्पतरविभक्तिकः ।

ओसक्ताचिदे उस्सकाविदे वा तत्तियाओ चेव विदत्तीओ एसो

अवहिदविहत्तिओ ।

8 ४ ओसकाविदे उस्सकाविदे वा जदि तत्तियाओं तत्तियाओ चेन दिदि॑भवसेण

इस समयमे जितनी स्थितिविभक्तियां दें उनके अनन्तर व्यतीत हुए समयमे

अल्पतर स्थितिविभक्तियोंकों उत्कर्षिंत करके बांधने पर वह बहुतरविभक्तिवाला जीव

छजगाररिथतिविभक्तिवाला होता हे ।

२ अस्सि समए का अर्थ इस वर्तमान समये ह । जात्तियामोः का अथे जितनी

है। द्विदिविहत्तीओ का अर्थ स्थितिविभक्तियाँ अर्थात् स्थितिविकल्प दै । उस्सक्ताविदे का अथं

उनके उत्कर्षित करने पर अर्थात् बढ़ाने परः है । अणंतरविदिक्कंते समए का अथे अनन्तर व्यतीत

हुए समयमे है । अप्पद्राओअर्थात् अल्पतर स्थितियाँ यदि होती हैं । तो वह् बहुदरविहत्तिओः

अर्थात् बहुत स्थितिविकल्पवाछा जीवः है । एसो भ्रुजगारविह॒त्तिओ अथीत् यह सुजगारविभक्ति

वाला जीव है । इसका यह तात्पर्य है कि अनन्तर अतीत समयसे यदि वतेमान समयमे जीव

बहुत स्थितियोंका बन्ध करता है तो वह ख॒जगारविभक्तिवाखा कहा जाता हे ।

जो अनन्तर अतीव समयमे बहुतर स्थितिविभक्तियोंमें रहकर पुनः उन्हें

अपकर्षित करके इस वर्तमान समयमे अल्पतर स्थितिविभक्तिर्योको श्राप्त होगया बह

जीव अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला होता हे ।

३ बहुद्राओ विहत्तीओः अथात् जो अनन्तर अतीत हुए समयमे बहुत स्थितिविकल्पोंमें

रहा वह जब ओसक्काविदेश अथौत् इस वतेमान समयमे स्थितिकाण्डकघात या अधःस्थिति

गलनाके द्वारा बहुत स्थितियोंको घटाकर अल्पतर स्थितिविभक्ति कर देता है तब वह जीव अल्पतर

स्थितिविभक्तवाला होता है ।

अपकर्षित करने पर या उत्कषिंत करने पर यदि उतनो ही स्थितियां रहें तो

वह जीव अवस्थितविभक्तिवाला दोता है ।

४ अपकर्षित करने पर या उत्कर्षित करने पर यदि स्थितिबन्धके कारण उतनी ही स्थिति

Page 22:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारससुक्षित्तणा ३

ट्रिदिविहत्तीओ होति तो एसो अवद्धिदविहत्तिओं णाम

अविहृत्तियादो विहक्तियाओ एसो अवत्तन्वविहत्तिञो ।

४ णिस्संतकम्मिओ होदूण जदि स संतकम्मिओ होदि तो अवत्तव्बविद्दत्तिओ

होदि बह्खदोणिअवड्ाणाणममावादो तदभावो वि पुव्व॑ संतकम्मस्स अभावादो पृचिन्न

संतकम्ममवेक्खिय ट्विदवष्डिहाणिअवड्डाणाणं तेण विणा संमवो दिदि विरोदादो ।

तम्दा ते अवेक्खिय अवत्तन्वं सिद्ध अण्णहा अवत्तव्धसदेण वि तस्साव्वत्तप्यसंगादो ।

एदेण अद्दपदेण ।

६ एदमडपदं काडण उवरि भण्णप्राणञणियोमदाराणं परूवर्ण कस्सामो ।

७ एत्थ ताव मंदयुद्धिजणाणुग्गदडषचारणा बुचचदे शजभारे तेरस अणियोग

विभक्तियाँ होती है जितनी कि पिछले समयमे थीं तो बह जीव अवस्थितविभक्तिवाला

होता है ।

जो अविभक्तिकसे पुनः विभक्तिवाला होता है वह अवक्तव्यविभक्तिवाला जीव है ।

५ जो निःसक्त्वकमंवाछा होकर यदि पुनः सत्कर्मवाला होता है तो वह अवक्तव्य

विभक्तिवाखा जीव है क्योकि इसके वृद्धि हानि और अवस्थानका अभाव है । वृद्धि हानि और

अवस्थानका अभाव भी पहले सत्तामें स्थित कर्मोके अभावसे होता है क्योकि जो इद्धि हानि

और अवस्थान पहले सत्तामें स्थित कर्मोकी अपेक्षासे पाये जाते थे उनका सत्तामें स्थित कर्मों के

बिना पाया जाना सम्भव नहीं है । अन्यथा विरोध आता है । इसलिये उक्त अपेक्षासे अवक्तव्य

विकल्प है यह बात सिद्ध हुई अन्यथा अवक्तव्य शब्द्से भी उसके अवक्तब्यपनेका प्रसंग आप्त

होता दै। अथात् पूर्वोक्तं प्रकारसे यदि अवक्तव्य भंग न माना जाय तो उसे अवक्तन्यः इस

शब्दके द्वारा भी नहीं कह सकेंगे ।

विश्लेषार्थयहाँ स्थितिसत्त्वकी अपेक्षा शजगार आदिका विचार किया गया है अतः

इसके अनुसार जगार आदिके निम्न लक्षण प्राप्त होते हैंजिस जीवके अनन्तर अतीत समयमें

अल्प स्थिति दै वह यदि वतेमान समयमे बन्ध या संक्रमके द्वारा उससे अधिक स्थितिको प्राप्त

करता है तो वह भ्रुजगार स्थितिविभक्तिवाखा जीव कदा जाता है । जिसके अनन्तर अतीत समयमे

अधिक स्थिति है वह यदि स्थितिघात या अधःस्थितिगछना के द्वारा वतमान समयमे कम

स्थिति कर लेता है तो बद् अल्पतर स्थितिविभेक्तिवाछा जीव कद्दा जाता दै। जिस जोबके

स्थितिकी घटाबढ़ी होते हुए भी बन्धके वशसे प्रथमादि समयोंके समान द्वितीयादि समयोंमें

स्थिति बनी रहती है वह जीव अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला कदा जाता है। तथा जो

निःसक्त्वकर्मवाला होकर पुनः स्थितिसत्कमंको प्राप्त करता है वह अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाछा

कहा जाता है। प्रकृत अनुयोगद्वारमें इन्हींकी अपेक्षा मोहनीयके अवान्तर भेदोंको स्थितिका

विचार किया गया है ।

इस अथंपदके अलुसार ।

8 ६ इस अर्थपदको करके आगे कदे जानेवाले अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं।

७ अब यहाँ मन्दबुद्धि जनोंपर अनुमह करनेके लिय उच्चारणाका कथन करते हैं

Page 23:

् जयधवलासहिंदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

दाराणि णादव्वाणि मवंतिसथक्ि्तणा सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओओ

मागामागं परिमाणं सेत्तं पोसणं कालो अंतरं मातरो अप्पाब्रहुए त्ति।सप्तुकित्तणाणुगमेण

दुविदो णिदेसोभोषेण आदिसेण य । ओघेण मिच्छत्तबारसक०णवणोक० अत्थ

आजगारभप्पदरअवदिदविदृत्तिया । सम्मत्तसम्मामि ०अणंताणु गचउक्षाणमेवं चेव ।

णवरि अस्थि अवत्तव्वं पि। एवं सब्वणेरश्यतिरिक्खपंचिदिय ति रिक्खपंचिदियतिरि०पज

पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमणुसतियदेव भवणादि जाव सहत्सार ०पंचिंद्यपंचि०

पज्ञ०तसतसपज ० पंचमण ०पंचवचि०कायजोमि ०ओरालिय ०वे उव्विय ०तिण्णिवेद

चतारिक०असंजद ०चक्खु ०अचक्खु ०पंचले ० भवसि ०सण्णिआहारि त्ति ।

पचि तिरिक्खभपजत्त छव्वीसं पयडीणमोघं । सम्मत्तसम्मामि० अत्थि

अष्पदरं चेव । अणंताणुचउक० अव्वत्तव्वं णत्थि । एवं मणुसअवञ्ज० सब्बएइंदिय

सव्वविशलिदियपंचि ० अपज ०सव्वपंचकाय ०तसअपज्जत्तओरा लियमिस्स ०वेडव्विय

मि०कम्मह्य ०मदिसुद ०विहंग ०मिच्छादि ०असण्णि ०अणाहारि त्ति ।

अुजगार स्थितिविभक्तिमें तेरह अलुयोगद्वार ज्ञातव्य हैंसमुत्कीतेना स्वामित्व काठ अन्तर

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय भागाभाग परिमाण क्षेत्र स्पशेन काल अन्तर भाव और

अल्पबहुत्व । उनमेंसे समुत्कीतेनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका द्वैओघनिर्देश और

आदेशनिर्देश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी भ्रुजगार

अल्पतर और अवस्थितविभक्तियोंके धारक जीव हैं। सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी

चतुष्कका कथन इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनका अवक्तव्य भंग भी है ।

इसी प्रकार सब नारकी सामान्य तिर्य॑च पंचेन्द्रियतियंच पंचेन्द्रियतियंचपयौप्त पंचेन्द्रियतिर्यच

योनिमती सामान्य ममुष्य मनुष्यपयौप्त मनुष्यिनी सामान्य देव भवनवासियोंसे लेकर सहस्नार

स्वरगंतकके देव पंचेन्द्रिय चेन्द्रिय पर्याप्त चरस जस पर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी

काययोगी औदारिककाययोगी वैक्रियिककाययोगी तीनों वेदवाले क्रोधादि चारों कषायवाले

असंयत चक्षुद्शनी अचझ्लुद्शनी ऋष्णादि पाँच लेश्यावाले भव्य संज्ञी और आहारक जीबोंके

जानना चाहिए ।

विशेषा्मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषाय इनका क्षय हो जाने के पश्चात् पुनः

इनकी उत्पत्ति नहीं होती अतः इनकी स्थितिमें ओघसे सुजगार अल्पतर और अवस्थित ये तीन

विभक्तियाँ ही बनती हैं। किन्तु अनन्ताजुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना हो जानेके पश्चात् पुनः

उत्पत्ति सम्भव है। तथा सम्यक्त्व जौर सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्देलना हो जानेपर भी उनका सतव

पुनः प्राप्त हो जाता है अतः इन छह श्रकृतियोमें जघस भ्रुजगार आदि चारों विभक्तियाँ बन जाती

हैं। मूल में जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें ओघके समान व्यवस्था बन जाती है अतः उनकी

प्ररूपणाको ओघके समान कहा ह्ढै।

८ पंचेन्द्रिय तियंच अपयाप्तकोमिं छब्बीस प्रकृतियोंका भंग ओघके समान है।

किन्तु सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अल्पतर ही है और अनन्तानुबन्धी चतुष्कका अवक्तव्य

नहीं है। इसी प्रकार मनुष्य अपयौपत सब एकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सब

पाँचों स्थावरकायः त्रस अपयाप्त औदारिकमिश्रकाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी कार्मणकाय

योगी मत्यज्ञानी श्रुताज्नानी विभंगज्ञानो मिथ्यादृष्टि असंज्ञा ओर अनाहारक जीवोंके जानना ।

Page 24:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभ्रुजगारससुक्कित्तणा ४

९ आणदादि जाव उवरिमगेवज० मिच्छत्तबारसक ० णवणोक ० अस्थि अप्प०

जीवा । अणताणु चउक एवं चेव शवरि अवत्तव्वं पि अत्थि । समत्तसम्भामि

ओघं एवं सुकले० । अणुद्सिदि जाव सब्ब सञ्परपयडीणं अत्थि अप्प० जीवा ।

एवमाहार आहारमिस्व ०अवगद् ०अकसा ०आमिणि ० सुद ०ओहि ० मणपज ० संजद

सामाश्यछेदो ०परिदारसु हुम ०जद्दाकखाद ०संजदासंजदओहिदंस ० सम्मादि ०खह्य ०

चंद्य ०उवसम ० सासण ०सम्म्रामिच्छाइट्टि त्ति अभव छब्बीसं पयडीणमत्थि युज ०

अप्प०अवद्धि ० बिह०

एवं सम्मुकित्तणाणुगमो समत्तो

विश्लेषार्थपद्चेन्द्रिय तिर्यच्च रुचभ्यपयाप्रकोमे सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वको छोड़कर

शेष छब्बीस प्रक्ृतियोंकी प्ररूपणाकों ओघके समान कहा है । इसका यह तात्पय है कि जिस प्रकार

ओघसे मिथ्यात्व आदिकी स्थितियोंमें भुजगार आदिका कथन किया है उसीप्रकार मनुष्य और तिर्यज्

लब्ध्यपर्याप्तकोंके जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता दै फ इनके अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी बिसं

योजना तथा संयोजना नहीं होती अतः इनके अनन्तानुबन्धी चतुष्कका अवक्तव्य भंग नहीं पायाजाता।

तथा इनके एक मिथ्यात्व गुणस्थान दी होता है और मिथ्यात्व शुणस्थानमें सम्यक्त्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वमें मिथ्यात्वका संक्रमण नहीं होता अतः इनके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका एक

अल्पतर भंग ही पाया जाता है । इसी प्रकार मूलमें और जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी

सब ग्रकृतियोंकी यही व्यवस्था जाननी चाहिये। यद्यपि उनमें कुछ ऐसी मार्गणाएँ हैं जिनमें

मिथ्यात्व और सासादन ये दो गुणस्थान होते है ओर ओदारिकमिश्र आदि कुछ ऐसी मार्गणाएँ हैं

जिनमें मिथ्यात्व सासादुन और जविरतसम्यग्ष्टि ये तीन गुणस्थान होते हैं तो भी इतने मात्रसे

उन सार्गणाओंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिके होनेमें कोई अन्तर

नहीं आता । इसका विशेष खुछासा स्वामित्व अनुयोगद्वारमें किया ही हे ।

९ आनत कल्पसे लेकर उपरिम भेवेयक तकके देवम मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकपषायोंकी अल्पतर स्थितिबिभक्तिके धारक जीव हैं। अनस्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसी

प्रकार जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि इसका अवक्तव्य भंग भी है । सम्यक्त्व और

सम्यम्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार शुक्ललेश्यावाले जीवोंके जानना चाहिए।

अनुदिशसे केकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतरस्थितिविभक्तिके घारक जीव

हैं। इसी प्रकार आहारककाययोगी जाहारकसिश्रकायोगी अपगतवेद्वाले अकषायी आभिनि

बोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपययज्ञानी संयतः सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत

परिहारविशुद्धिसंयत सूक्ष्मसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत अवधिद्शेनी सम्य

स्टृष्टि क्वायिकसम्यस्ट॒ष्टि वेदकसम्यग्ट॒ष्टि उपशमससम्यम्टष्टि सासादनसम्यग्दष्टि और सम्यग्मिथ्या

दृष्टि जीवोंके जानना चाहिए । अभब्योंमें छब्बीस प्रकतियोंकी भ्रुजगार अल्पतर और अवस्थित

विभक्ति के धारक जीव दै । वयक वि वहाँ

विशेषाथे आनतकल्पसे छेकर उपरिम ग्रेवेयक तकके देवोंके वहाँ उत्पन्न होनेके पहले

समयमें मिथ्यात्व बारह कपाय और नो नोकषायोंकी जो स्थिति होती है बह उत्तरोत्तर कमती ही

दोती जाती है बध या संक्रमसे उसमें वृद्धि नहीं होती अतः इन देवोंके उक्त कर्मेकी एक अल्पतर

स्थितिविभक्ति ही होती हे । किन्तु अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी स्थितिमें अल्पतर और अवक्तव्य ये

दो भंग होते हैं। बात यह ह कि उक्त स्थानोंमें मिथ्यादृष्टि जीव भी उत्पन्न होते हैं और जिन्होंने

Page 25:

६ जयधंवङासहिदे कसायपाहुडे दह्विदिविहत्तौ ३

साभित्तं । भिच्छुत्तसस सुजगारअप्पदरअवहिदविहत्तिओ को होदि

१० सुगममेदं पृच्छासुत्त ।

अण्णदरो णेरहयो तिरिक्खो मणुस्सो देवो वा ।

११ चज ०अबद्टिद् मिच्छा्टिस्सेव । अप्पद् सम्मादिद्धिस्स मिच्छादिद्विस्स वा।

अवत्तव्वओ एत्थ ।

१२ मिच्छत्तसंतकम्मे णिस्संतभावरवगए पणो तस्संतकम्मस्सुप्पत्तीर अभावादो।

सम्यक्त्व प्राप्त कर लिया है वे मिथ्यादृष्टि मी हो सकते हैँ । अब यदि किसी सम्यग्ट्टि देवने अन

न्ताुबन्धीकी विसंयोजना की और वह कालान्तरमें मिथ्यादृष्टि हो गया हो तो उसके अनन्ताजुबन्धी

चलुष्कका अवक्तव्य भंग प्राप्त हो जाता है और शेष देवोंके अनन्तानुन्धी चतुष्कका अल्पतर भंग

रहता दै । तथा यहाँ सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्देलना भी होती है अतः इन दोनों

५कृतियोंके ओधके समान भ्रुजगार आदि चारों भंग बन जाते हैं । इस प्रकार शुक्कलेश्यामें जानना

चाहिये । तथा अनुद्शिसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंके सब प्रकृतियोंकी स्थितिमें वृद्धि नहीं

होती अतः सब प्रकृतियोंकी स्थितिका एक अल्पतर भंग ही दै । इसी प्रकार मूलमें ओर जितनी

मार्गणाएं गिनाई हैं उनमें भी जानना चाहिये जिस जीवने अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना की है

वह सासादनमें भी जाता है और ऐसे जीवके सासादनके प्रथम समयमें ही अनन्ताबुबन्धीका

सत्त्व शो जाता है पर यहाँ सासादनगुणस्थानसे पूर्व अवस्थाका विचार सम्भव नहीं है अतः सासा

दनमें अवक्तव्य नहीं होता । इसी कारण सासादनमें भी अनन्तानुबन्धी चतुष्कका एक अल्पत्तर

मंग कहा है। अभव्योंके छब्बीस प्रकृतियोका ही सत्त्व होता है ओर उनके उन सब प्रक्ृतियोंकी

स्थितियोंमें वृद्धि हास और अवस्थान सम्भव है अतः उनके छब्बीस प्रकृतियोके तीन भंग के ।

इस प्रकार समुत्कीतेनानुगम समाप्त हुआ ।

स्वामित्व कद्दते हैं । मिथ्यास्वकी शुजगार अव्पतर और अवस्थित विभक्तिका

स्वामी कौन है ।

१० यह प्रच्छासूत्र सुगम दै ।

कोई भी नारकी तिथेच मनुष्य और देव मिथ्यात्वकी युजगार अल्पतर और

अवस्थितविभक्तिका स्वामी है ।

8 ११ शुज्ञगार और अवस्थितविभक्ति मिथ्यादृष्टि के ही होती है तथा अल्पतरविभक्ति

सम्यग्दृष्टि के भी होती है और मिथ्यादृष्टि के भी द्वोती है ।

मिथ्यास्वका अवक्तव्य भंग नहीं दे ।

१२ क्योकि मिथ्यात्वसत्कर्मके निःसत्त्वभावको प्राप्त दोनेपर पुनः उसकी सत्करमरूपसे

उत्पत्ति नहीं होती है ।

विशेषार्थमिशथ्यात्वका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही होता है और बन्धके बिना

मिथ्यात्वकी भ्रुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्ति बन नहीं सकती अतः मिथ्यात्वकी भुजगार और

अवस्थित स्यितिविभक्ति मिथ्यारृष्टिके ही होती है यह मूछमें कहा है । तथा जो मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट रिथतिका बन्ध करके अनन्तर उत्तरोत्तर कारणबश उसकी अल्पतर स्थितिका

Page 26:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारसामित्तं ७

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं ुजगारअप्पदरविदत्तिश्रो को होदि

१३ सुगममेदं पृच्छासुत्त ।

अण्णदरो शेरइयों तिरिक्खो मणुरुसो देवो चा ।

8 १४ तति वत्त्वं । शुजगारो सम्मादिद्वीणं चेव । अप्पदरं पण सम्भादिद्िस्स

मिच्छादिद्विस्स वा

अवहिदविहत्तिओ को होदि

१५ सुगमभेदं ।

पुव्व॒ुष्पणएणादों समत्तादो समयुत्तरमिच्छत्तेण से काले सम्मतं पडि

वरणो सो अवधिदविहत्तिओ ।

१६ तं जद्दासम्भत्तसंतकम्म॑ पेक्खिदूण समयुत्तरमिच्छत्त द्विदिसंतकस्मिएण

सम्मत्त गदिदे तम्गदणपटमसमण चेव समयुत्तरमिच्छतह्िदिसंतकम्मे सम्मत्तसम्म।

मिच्छत्तसरूवेण संकंते सम्भत्तसम्भामिच्छत्ताणमवद्िदविहत्ती होदि । इदो १ चरिभसमय

मिच्छाइड्िस्स सम्मत्तद्विदिसंतेण पटमसमयसम्माइड्िसम्मत्तद्धिदिसंतस्स समाणत्तादो ।

बन्ध करता है या विश्ुद्ध परिणामोंके निमित्तसे जिसने मिथ्यात्वं की स्थितिका घात किया है उस

मिथ्यादृष्टिके और सम्यग्ट्टिके मिभ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्ति होती दैः । किन्तु मिथ्यात्वकी

अवक्तव्यस्थितिविभक्ति नहीं होती क्योकि जिसने मिथ्यात्वका क्षय कर दिया है उसके पुनः

मिथ्यात्वकी उत्पत्ति नहीं होती ।

सभ्यक्तव और सम्पम्मिथ्याखकी अ॒जगार और अत्पतरस्थितिविभक्तिका

स्वामी कौन दै

१३ यह प्रच्छासूत्र सुगम दे ।

कोई नारकी पियं म्य और देव ध्यक और सम्यग्मिथ्याखको झुज

शार और अर्पतर स्थितिविभक्तिका स्वामी है ।

१४ ऐसा कहना चाहिए। भुजगार भंग सम्यण्दष्टियोके ही होता है । परन्तु अल्पतर भंग

सम्यग्टष्टिके भी होता है और मिथ्यारष्टिके भी होता है ।

अवस्थित विभक्तिका स्वामी कौन है ।

१७५ यह सूत्र सुगम है ।

पहले उत्पन्न हुई सम्यक्त्व प्रतिघ एक समय अधिक स्थितिवाले मिथ्यात्वके

साथ विद्यमान कोई एक जीव यदि तदनन्तर समयमे सम्यक्लको प्राप्त हुआ है तो बह

अवस्थितिविभक्तिका स्वामी हे ।

१६ खुलासा इस प्रकार हैजिस मिथ्यादृष्टि जीवके सत्तामें विद्यमान मिथ्यात्वकी

स्थिति सत्तामें विद्यमान सम्यक्त्वकी स्थितिसे एक समय अधिक है वह् जीव जब दूसरे समयमें

सम्यक्त्वको ग्रहण करता है तब उसके सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें ही मिथ्यात्वकी एक

समय अधिक स्थिति सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वरूपसे संक्रान्त हो जाती दहै अतः उसके

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थितविभक्ति होती है क्योंकि मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें

Page 27:

ठ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

चरिमसमयमिच्छाइट्टिस्स सम्मत्तणिसेगेड्िितों पढमसमयसम्भाहट्विस्स सम्मत्तणिसेगा

एगणिसेगेणव्भद्िया मिच्छत्तदयसरूवेण त्थिवुकसंकमेण गच्छमाणसम्मत्तणिसेगस्स

सम्माइहिपठमसमए गमणाभावादो । तदो णावद्विदत्त जुज़दि ति १ ण एस दोसो कारं

पेक्खिदूण सम्मत्तसस अबद्टिद्ुबलभादो तं जद्दमिच्छाइड्विचरिमसमए जत्तिया

सम्मत्तड्डिदो तत्तिया चे सम्माहट्टिपह्मसमए वि अधो एगसमए गलिदक्खणे चेव

मिच्छत्तादो सम्मत्तम्मि उवरि एगसमयव्डिदंसणादों णिसेगेहि अबह्धिदत्तं जदि

इच्छिजञदि तो वि ण दोसो काक्षमस्सिदृण सम्मत्तमिच्छत्ताणं समाणद्धिदिसंतकम्पिण

णिठ्वेगे पहुच एगणिसेगेणाहियमिच्छत्तद्टिदिसंतकम्मेण मिच्छादिह्धिणा सम्मत्त गदहिदे

चरिमपठमसमयमिच्छादिड्टिसम्भांदिद्ोसु णिसेगाणं सरिप्तत्त वलंभादों ।

१७ सम्मामिच्छत्तरस पुण हेट्ठा उचरिं च एगगिसेगादियमिच्छाइड्िणा सम्मत्त

गहिदे धवद्ठिदत होदि सम्माहड्टिपटमसमयम्मि एगे णिसेगे त्थियुंकसंकमेण गदे उवरि

एगणिसेगरप बड्डिदंसणादो। इत्तकारो परण पद्वाणीकय कालो । तं कुदो णव्बदे १ सम्मत्तादो

समयुत्तरमिच्छत्तण सम्मत पडढिवणे सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमकमेण अवद्ठिद

भोवपरूबणादो ।

सम्यस्वका जो स्थितिसत्त्व था सम्यग्दष्टिके प्रथम समयमे प्राप्त हुआ सम्यक्त्वका स्थितिसत्त्व

उसके समान है ।

शंंकामिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमे जो सम्यक्सवके निषेक हैं उनसे सम्यग्दष्टिके पहले

समयमें प्राप्त हुए सम्यक्त्वके निषेक एक अधिक हो जाते हैं क्योंकि मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वके उदय

रूपसे स्तिवुक संक्रमणके द्वारा प्राप्त होनेवाछा सम्यक्त्वका निषेक सम्यग्दष्टिके प्रथम समयमें

मिथ्यात्वके उदयरूपसे नहीं श्राप्त होता है। अर्थात् मिथ्यादृष्टिके सम्यक्स्वका निषेक स्तिवुक

संक्रमणके द्वारा मिथ्यात्वरूप होता रहता है परन्तु सम्यक्स्वके प्राप्त होनेपर वह निषेक मिथ्यात्वरूप

नहीं होता और इस प्रकार प्रकृतमें एक निषेककी वद्धि दो जाती है अतः सम्यक्त्वप्रकृतिका

ना नहीं बनता है

अवस्थित नी भ कोई दोष नहीं है क्योकि कारको अपेक्षा सम्यक्त्वका अवस्थितपना बन

जाता है उसका खुलासा इस प्रकार है मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमे सम्यक्त्वकौ जितनी

स्थिति थी उतनी ही सम्यग्दृष्टि प्रथम समयमें रही क्योकि नीचे एक समयके गलनेके समयमे

ही मिथ्यास्वसे सम्यक्त्वे ऊपर एक समयकी वृद्धि देखी जाती है ।

अब यदि निषेकोंकी अपेक्षा अवस्थितपना चाहते हो तो भी दोष नहीं है क्योंकि काछकी

अपेक्षा जिसके सम्यक्त्व और भिथ्यास्वका स्थितिसकमे समान दे और निषेकोंकी अपेक्षा जिसके

मिथ्यात्वका स्थितिसत्कमे एक निषेक अधिक है ऐसे किसी एक मिथ्यादृष्टिके सम्यक्त्वके प्रण करने

पर मिथ्यादृष्टिके अन्तिम और सम्यरृष्टिके ग्रथम समयमे दोनोंके निषकोंकी समानता पाई जाती है।

१७ सम्यम्मिथ्यात्वको अपेक्षा तो जिसके नोचे और ऊपर एक निषेक अधिक हो ऐसे

मिथ्यादृष्टिके सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर अवस्थितपना प्राप्त होता द क्योंकि सम्यग्दष्टिके प्रथम

समयमें एक निषेकके स्तिबुकसंक्रमणके द्वारा चे जानेपर ऊपर एक निषेककी बृद्धि देखो

जाती है । किन्त चूर्णिसूज्कारने तो काककी प्रधानतासे कथन किया दै ।

शुंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानक्षयोंकि उन्होंने सम्यक्त्व प्रकृतिसि एक समय अधिक स्थितिवाले मिथ्यात्वके

Page 28:

गा० २२ ह्िदिविहत्तीए उत्तरषयडियुजगारसामित्तं ६

१८ कि च जदि णिसेगेद्दि चेव सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमवद्टिदत्तमिच्छिज्जदि

तो अंतरकरणं काऊण मिच्छत्तपठमद्टिंदि गालिय विदियद्िदीए धरिददंसणतियद्विदि

संतकम्मस्स उवसमसम्माइट्टिस्स वि अवड्विदत्त होदि तस्थ दंसणमोहणिसेगाणं गलणा

माबादो । ण च जहवसदाहरिएण एत्थ अवद्धिदभावो परूबिदो । तदो जाणिज्ञइ जहा

जह्वसद्दाइरियो एत्थुदेसे पहाणीकयकाडो सि। जुत्तीण वि एसो चेव अत्थो

जुज्जदे कम्मभ्खंधाणं कम्ममावेणावट्टाणस्स कम्मड्डिदित्तादो ण च कम्मक्खंधो ड्िदी

पयडिट्टिदिअणुभागाधारस्स द्विदित्तविरोहादो ।

अवत्तव्वविहक्तिओ अण्णदरो ।

१९ कुदो १ अण्णदरगईए अण्णदरकसाएण अण्णद्रतसपाओग्गोगाहणाए अण्ण

दरलेस्साए णिस्संतीकपसम्मत्तसम्भामिच्छत्तेण मिच्छादिद्विणा पठमसम्भत्त गिदे

अवत्तच्वमावुवलंभादो ।

साथ सम्यक्त्व प्राप्त द्वेनेपर सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अक्रमसे अवस्थितपना कहा है ।

इससे माम होता है कि चूर्णिसूजमें कालक्ी प्रधानतासे कथन किया द ।

१८ दूसरे यदि निषेकोंकी अपेक्षा दी सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अवस्थितपना

स्वीकार किया जाय तो अन्तरकरण करके और मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिको गलाकर दूसरी

स्थितिमे जिसने दृशनमोहनीयकी तीन प्रक्रतियोंका स्थितिसस्कमे प्राप्त कर लिया है ऐसे प्रथमोपरम

सम्यस्दष्टिके भी सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अवस्थितपना प्राप्न दोता है क्योंकि

वहाँपर दशनमोहनीयके निपेकोंका गलन नहीं होता हे। परन्तु यतिद्रषभ आचायेने यहाँपर

अवस्थितपनेका कथन नहीं किया ह । इससे जाना जाता है कि यतिक्षषभ आचायेने इस उद्देशमें

कारको प्रधानतासे कथन किया है। युक्तिसे भी यही अर्थ जुड़ता है क्योंकि कमेस्कन्धोंका कमे

रूपसे रहना दी कर्मस्थिति कदी जाती है। केवल करमस्कन्ध स्थितिरूप नहीं हो सकता क्योकि

प्रकृति स्थिति और अनुभागके आधारको केवल स्थिति माननेमें विरोध आता हे ।

अवक्तव्य मिमकतिवाज्ञा कोई भी जीव होता है ।

१६ क्योकि जिसने सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वको निःसत्त्व कर दिया है ऐसे किसी

एक मिथ्यादृष्टि जीवके अन्यतर गति अन्यतर कषाय त्रस पर्यायके योग्य अन्यतर अवगाहना और

अन्यतर लेश्याके रहते हुए प्रथमोपशम सम्यक्त्व के प्राप्त करने पर सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

अवक्तव्य भाव देखा जात है।

विशेषार्थ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी भ्रुजगार स्थितिविभक्तिका स्वामी चारों

गतियोंका सम्यम्दष्टि जीव हो सकता है क्योकि उक्त दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिविभक्ति

संक्रमणसे ही प्राप्त होती है और इनमें मिथ्यात्वका संक्रमण सम्यग्दृष्टिके ही होता दे । तथा चारों

गतियोंके मिथ्य।दृष्ठि जीवके उक्त दोनों प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्ति दी होती है क्योकि

मिथ्यादृष्टिके अधःस्थितिगछना और स्थितिघातके द्वारा उत्तरोत्तर इनकी स्थितिमें न्यूनता देखी

जाती है। किन्तु जिस सम्यग्टष्िने इनकी भ्रुजगार या अवस्थित स्थितिविभक्ति नहीं की उस

सम्यग्दृष्टिके ग्रथम समयं और इन दोनों प्रक्रतियोंकी सत्तावाले अन्य सम्यम्दष्टियोंके ट्वितीयादि

समयोंमें इनकी अल्पतर स्थितिविभेक्ति बन जाती ह तथा जिन मिथ्याइृष्टियोंके सम्यक्त्वको अहण

करनेके पहले समयमे सम्यक्त्व जौर सम्यम्मिथ्यात्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी स्थिति एक समय

अधिक है उनके द्वितीय समयमें सम्यक्त्वके ग्रहण करनेपर सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी अब

Page 29:

१० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

एवं सेसाणं कम्माणं ऐेदव्वं ।

२० एदेण सुत्तरस देसामासियत्त जश्बसद्ाइरिएण जाणाविदं । तेणेदेण खचि

दत्थपरूवणइमेत्थुच्चारणाणुगर्म कस्सामो ।

२१ सामित्ताणुगमेण दुविलषे णिद सोभषेण आदेसेण य । ओवेण मिच्छत्त

चारक णवणो ० भुजगारअवद्िदविद्ती कस्स दोदि १ अण्णदरस्स मिच्छाइट्टिस्स ।

स्थित स्थितिविभक्ति होती है क्योंकि ऐसे जीवके यद्यपि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

प्क अधःनिषेक स्तिबुकसंक्रमणके द्वारा मिथ्यात्वमें संक्रमित हो जाता है तो भी सम्यक्त्व

और सम्यग्मथ्यात्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी स्थिति एक समय अधिक है अतः सम्य

ग्दशेनके ग्रहण करनेके पहले समयमे मिथ्यात्व द्रव्यके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वमें संक्रमित

होनेसे सम्यक्त्व और सम्बग्मिथ्यात्वकी ऊपर एक समय स्थिति बड़ जाती है अतः जिस समय

सम्यग्दशन को यह् जीव मदण करता है उस समय सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उतनी ही

स्थिति भ्रात होती हे जितनी सम्यक्त्व ग्रहण करनेके पूर्व समयमें थी और इस प्रकार सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभकित बन जाती है। यहाँ इस विषयमे यह शंका उठाई गई

है कि इस प्रकार पहले और दूसरे समयमें सम्यच्त्वकी स्थिति समान भके ही प्राप्त हो जाओ पर

निषेकरोमिं समानता नहीं हो सकती किन्तु मिथ्यात्वके अन्तिम समयमें सम्यक्त्वके जितने निपेक थे

सम्यक्त्व ग्रहण करनेके समय उनमें एक निषेक बढ़ जाता है क्योकि मिथ्यात्वे अन्तिम समयमें

सम्यक्स्वका एक निषेक स्तिवुकसंक्रमणके द्वारा मिथ्यात्वमें संक्रमित हो गया और इस प्रकार

मिथ्यात्व गुणस्थानमें ही सम्यक्त्वका एक निषेक कम हो गया । पर दूसरे समयमें सम्यक्त्वके अहण

करने पर सम्यक्त्वका अधःस्तन निषेक मिथ्यास्वमें नहीं संक्रमित होता किन्तु एक समय स्थिति

अधिक मिथ्यात्वके द्रव्यके सम्यक्त्वमें संक्रमित होनेसे सम्यक्त्वका एक निवेक बढ़ जाता है अतः

उक्त प्रकारसे सम्यक्त्वकी अवस्थित विभक्ति नहीं बन सकती इस शंकाका वीरसेन स्वामीने जो

समाधान किया है उसका सार यह है कि इस प्रकार यद्यपि निवेकमे बुद्धि हो जाती है पर स्थितिमें

वृद्धि नहीं होती क्योंकि मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयसे सम्यक्त्वकी जितनी स्थिति थी सम्यक्त्वके

अहण करने पर उसकी उतनी ही स्थिति प्राप्त हो गई क्योंकि सिथ्यात्वके अन्तिम समयमे इसकी

स्थितिमें यद्यपि एक समय कम हो गया तो भी सम्यक्त्वको ग्रहण करने पर ऊपर एक समय स्थिति

में वृद्धि भी हो गई अतः स्थिति समान रही आई । और स्थिति काल्प्रधान होती है निषेक प्रधान

नहीं । हाँ यदि निषेकोंकी अपेक्षा सम्यक्तत्वकी स्थितिमें अवस्थितपना छाना हो तो ऐसे मिथ्यादृष्टि

जीवको छो जिसके मिथ्यात्व और सम्यक्त्वकी स्थिति समान हो किन्तु सम्यक्त्वके निषेकसे मिथ्या

त्वका एक निषेक अधिक हो । अब यह जीव जब सम्यक्त्वको रहण करता है तो इसके मिथ्यात्व के

अन्तिम समयमें सम्यक्त्वके जितने निषेक रहते हैं उतने ही सम्यक्त्वको ग्रहण करनेके पहले समयमें

भी देखे जाते हैं अतः यहाँ निवेकोंकी अपेक्षा अवस्थित विभक्तिपना बन जाता है। तथा सम्यग्मि

थ्यात्वके निषेकोंकी अपेज्ञा अवस्थितविभक्तिपनाका कथन करते समय सम्यम्मिथ्यात्वके निषेकोंसे

सिध्यात्वके दो निषेक अधिक लेने चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

इसी प्रकार शेष कर्मोंझा जानना चाहिए

२० इस कथनसे यतिवृषभआचायने सूत्रका देशामपेकपना जता दिया इसलिए इसके

द्वारा सूचित होनेवाले अथैका ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर उच्चारणा का अनुगम करते हैं

२१ स्वामित्वानुगसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का हैओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ।

उनमेंसे ओघकी अपेक्षा सिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी शुजगार और अवस्थित विभक्ति

Page 30:

गा०रर् हिदिविहत्तीए् उडरपयडिभुजगारसामित्तं २१

अप्पदरविद्दती कस्प अण्णद्रस्स सम्मोइट्विस्स मिच्छाइट्विस्स वा। अखुताणु०

चउकस्स तिण्हं पदाणमेवं चेव वत्तव्वं । अवत्त ० कस्स १ अण्ण० पढमसमयमिच्छाइट्विस्स

सासणसम्माइट्विस्स वा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं शुजगारविद्त्ती कस्स सम्मत्तसम्पा

मिच्छत्ताणं तप्पाओग्गजहण्णट्टिदिसंतकम्मिएण भिच्छत्तस्ख तप्पाओग्गुकस्सट्टिदिसंत

कम्मिएण मिच्छादिद्टिणा सम्मत्त गद्दिदे तस्स पढमसमयसम्भादिद्विस्स सम्मत्तसम्मा

मिच्छत्ताणमुवरि मिच्छत्तट्विदीए तत्थ सचिस्से उदयावल्ियवज्ञाए संकंतिदधणादो ।

उवरिमसुण्णम्मि कधं संकमो १ ण तत्थ पि मिच्छत्तसंकंतीए विरोहाभावादों अप्पदर ०

कस्स १ अण्णद्० सम्माट्टिस्ष मिच्छाह्टिस्स वा अवद्िदं कस्त १ अण्णद० जो सम

उत्तरमिच्छत्तड्टिदिसंतकम्भिओ सम्मत्तं पडिवण्णो तस्स अवत्तव्वं करप अण्णदस्स

जो अक्तकम्मिओो सम्मत्त पडिवण्णो तस्स । एवं सब्वणेरहयतिरिक्खपंचिदिय

तिरिकिखिपंचि ० तिरि०पज ० पंचि तिरि०ण्जोणिणिमणुसतियदेव ०म्रवणादि जाव सह

स्मार ०पंचिदियपंचि ०पज ० तसतसपज॒०पंचमण ० पंचचचि ० कायजोगि ग्रोराजि ०

वैडन्वि ०तिण्णिवेदचत्तारिक ०असंजदचक्खु ०अचक्खु ०पंचले०भवस्ति ०सण्णि०

आहारि त्ति।

किसके होती हे किसी भी मिथ्यादृष्टि जीवके होती दै । अल्पतरविभक्ति किसके होती है किसी

सम्यग्दष्टि या मिथ्यारृष्टि जीवके होती है । अनन्ताजुबन्धीचतुष्कके उक्त तीन पदोंका कथन इसी

प्रकार करना चाहिये । अवक्तव्यविभक्ति किसके होती है किसी एक मिथ्यादृष्टि या सासाद्न

सम्यग्टष्टिके प्रथम समयमें होती है।

सम्यक्त्वं और सम्यग्मिथ्यात्वकी भ्रुजगारस्थितिविभक्ति किसके होती है सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वके तस्परायोभ्य जघन्य स्थितिसत्कमंवाले और मिथ्यात्वके तस्रायोग्य

उत्कृष्टस्थितिसत्कमंवाले मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा सम्यक्त्वके अहण करने पर उसके प्रथम समयमे

सम्यक्त ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी सुजगारस्थितिविमक्ति होती दे क्योंकि वहाँ पर सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वमें मिथ्यात्वकी उद्यावलिसे रहित शेष समस्त स्थितिका संक्रमण देखा जाता दै ।

शंंकासम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति से ऊपर शल्यम मिथ्यात्वका संक्रमण

कैसे होता है ९ माकि वहाँ ॥ नेसे ही

समाधान नदी क्योकि वहाँ भी मिथ्यात्वके संक्रमण होनेमें कोई निरोध नहीं हे ।

अल्पतर स्थितिविभक्ति किसके होती दै किसी एक सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्टि जीवके होती

दै । अवस्थितस्थितिविभक्ति किसके होती ह जो मिथ्यात्वके एक समय अधिक स्थिति

सत्करमके साथ सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है ऐसे किसी एक जीवके होती है । अवक्तव्यस्थितिविभक्ति

किसके होती हे सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वरूप सत्कर्मसे रदित जो कोई एक जीव सम्यक्त्वको

प्राप्त हुआ दे उसके अवक्तव्यस्थितिविभक्ति होती है। इसी प्रकार सब नारकी सामान्य तिर्यच

पंचेन्द्रिय तियंच पंचेद्रिय तियच पर्याप्त पंचेन्द्रि तियंच योनिमती सामान्य मनुष्य मनुष्य पर्याप्त

मनुष्यिनी सामान्य देव भवनवासियोंसे छेकर सहस्रार स्वगेतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेंद्रिय पर्याप्त

त्रस तरस पर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनयोगी काययोगी औदारिककाययोगी वैक्रियिक

काययोगी तीनों वेदवाले क्राधादि चारों कषायवाले असंयत चक्षुदशेनवाले अचश्लुदशेनवाले

कष्णादि पाँच लेश्यावाले भव्य संज्ञी ओौर आहारक जीवोके जानना चाहिए।

४777 त्ा5प्रतो भवहिद्विददशी इति पाठः । २ भाग्प्रातीसंतकम्मेण इति पाठः

Page 31:

श्र जयघवलासहिदे कसायपाहुडे दिदि विहत्ती ३

२२ पंचिं०तिरि०अपज्ञ० छन्बीसं पयडीणं चज ०अप्प ० अवष्टि० सम्पत्त

सम्भामिच्छत्तणमप्पदरं० करस १ अण्णद ० । एवं मणुसअपज़०सब्बएडदियसवब्वविग

लिंदियपंचि०अपज्ञ ०पंचकायतसअपज ० मदि ०सुद ०विहं ग मिच्छादि ०असण्णि त्ति।

२३ ओणददि जाव उवरिमगेवजञो त्ति मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० अप्पदर०

कस्प्त० १ अण्णद ० सम्मादिद्विस्स मिच्छाइट्टिस्स बा अणंताणु०चठक० अप्पदर ०अवत्त

व्वाणमोघं । सम्मत्सम्मामि० सुज ०अष्य ०अवत्तव्वाणमोघं । एदं चिराणुचारण

मस्सिदूण भणिदं । एदोए उच्चारणाए पुण सम्भत्तसम्मामिच्छन्ताणमोघमिदि भणिदं । तेण

अबह्धिदेण वि होदव्वं अण्णहा ओषत्ताणुबवत्तीदो । ण च एसो लिहंताणं दोषो समुक्ति

त्तणाए वि सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमोषमिदि परूबिदत्तादो । कपमेत्थ पण अबद्ठिद्भावो

विशेषार्थ यहाँ पर उच्चारणचार्यने अनन्ताजुबन्धीकी । अवक्तव्यस्थितिविभक्ति मिथ्या

दृष्टिके समान सासादनसम्यग्ष्टि के भी बतलाई है सो इसका कारण यह है कि जिसने अनंतानु

बन्धीकी विसंयोजना की है ऐसा उपशमसम्यम्टृष्टि जीव भी सासादन गुणस्थानको श्राप्त होता डे

यह बात कसायपाहुडकार ओर यतिवृषभ आचायेको इष्ट हे अतः सासादन गुणस्थानमें जनन्तानु

बन्धीका अवक्तव्य पद् बन जाता हे । बात यह है कि संक्रमित द्रव्यका एक आवलितक अपकषेण

ओर उदीरणा आदि काम नहीं होते यह् एक मत द और दूसरा मत यह है कि अनन्तानुबन्धीरूपसे

संक्रमित द्रव्यका सासादनमें उसी समय अपकपषेण और उदीरणा सम्भव हैं। गुणघर आचाये

और यतिवृषभ आचाये इसी दूसरे मतको मानते हैं। तदनुसार जिसने अनन्तानुबन्धीकी

विसंयोजना की है ऐसा कोई उपशमसम्यम्दष्टि जीव सासादनमें आता है तो उसके उसी समय

प्रत्याख्यानावरण आदि द्रव्यका अनन्तानुबन्धीरूपसे संक्रमित हो जाता है । और संक्रमित द्रब्यकी

उदीरणा भी हो जाती है अतः सासादन गुणस्थानमें अनन्तानुबन्धीका अवक्तव्य पद् बन जाता हे

यह् कथन नैगम नयकी मुख्यतासे हे । रोष कथन सुगम है ।

२२ पंचेन्द्रिय तियच अपरयाप्रकोमे छब्बीस प्रकृतियोकी भुजगार अल्पतर और अवस्थित

विभेक्तियाँ होती है । सम्यकत्वऔर सम्यग्मिथ्यास्वकी अल्पतरविभक्ति किसके होती है किसी भी

जीवके होती है । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब ऐकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय पंचेद्रिय अपर्याप्त

पाँचों स्थावरकाय त्रस अपरयाप्त मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि ओर असंज्ञी

जीवोके जानना चाहिए ।

२३ आनतकल्पसे लेकर उपरिम भ्रेबेयक तकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्ति किसके द्वोती है किसी भी सम्यग्ष्टि जोर मिथ्याटृष्टि जीवक

होती है । अनन्ताजुबन्धीचतुष्ककी अल्पतर और अवक्तव्य स्थितिविभक्ति जधके समान दै ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी सुजगार अल्पतर और अवक्तव्य विभक्ति ओवके समान है । यह

कथन पुरानी उच्चारणाका आश्रय लेकर किया दै । प्रकृति उय्चारणामें तो सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वका कथन ओघके समान दै ऐसा कहा है इसलिए सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकौ

अवरिथतविभक्ति भी होनी चाहिये अन्यथा सम्यक्त्व और सम्मग्मिथ्यास्वके ओघपना नहीं बन

सकता है । यदि कहा जाय कि यह लिखनेवालोंका दोष है सो भी बात नहीं है क्योकि समु

छीतेनामें भी सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका कथन ओघके समान है ऐसा कदा दै ।

शुंकातो फिर सम्यक्त्व ओ र सम्यग्मिथ्यात्वमें अवस्थितिविभेक्तिपना कैसे प्राप्त दोता है

Page 32:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभ्ुजगारसामित्त १३

लब्मदे १ मिच्छाइड्िणा सम्मत्तसम्मामिच्छनाणि उन्बेसलंतेण मिच्छत्द्धिदिसंतादो हे

कदसम्मत्तसम्भामिच्छत्तद्टिदिसंतकम्मेण सम्मत्तदिषदेण मिच्छाइड्टिचरिमद्टिदिखंडयं

फालेदूण सम्मत्तद्धिदेसंतादा कयसमउत्तरमिच्छत्तट्धिदिसंतकम्मिएण वेद्गसम्मत्ते गदे

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमबद्टि दविह्तो होदि पदाणोकयकाशत्तदो । णिसेगाणं पहाणत्ते

संते वेदगसम्मत्तं पडिवज़माणेसु समट्विदिसंतकम्मिएसु सब्वेसु अवश्धिदविहतती होदि

सम्मत्तस्स । सम्मामिच्छत्तस्प पुण ण होदि । तेण दोण्दं पि प्खुदिडष्देसे चेव अब द्विद

भावों वत्तव्वो ण च वेदगसम्मत्तादिषुहमिच्छाशृड्धिम्मि डि दिखंडयघ।दो णत्थि चेवे त्ति

पचवट्ढाणं जुत्तं वेदयसम्भत्तं पडिवज़माणम्मि वि करहि पि विसोहियवसेण अणियमेण

ट्रिदिकंडयपिद्धोए बाहाणुवरुमादो । इदो एदं णव्बदे १ पदम्शादो चेव उचारणादो ।

दोण्हमुच्चारणाणं कथं ण विरोहो १ ण िरोहो णाम एयणयबिसओ । दो वि उचारणाओो

ण भिण्णणयणिवंधणाओ दमा ण विरोहो तति । एवं सुकलेस्साए वत्वं ।

समाधान सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उठ्ठेलना करनेवाले जिसने मिथ्यास्वके स्थित

स्यसे सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वको कम कर दिया है जो सम्यग्दशनके सम्मुख

है और जिसने मिथ्यात्वके अन्तिम स्थितिकाण्डकका वात करके सिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वको

सम्यक्त्वके स्थितिसत्त्व्से एक समय अधिक किया दै ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवके वेदकसम्यक्त्वको

अहण करनेपर सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्ति होती है क्योंकि यहाँपर

कालकी प्रधानता द । निषेकोंकी प्रधानता होनेपर वेदकसम्यक्स्वको प्राप्त होनेवाले समान स्थिति

सत्कर्मबाले सभी जीवो में सम्यकत्वकी।अवस्थित स्थितिविभक्ति होती हे । परन्तु सम्यग्मियात्वकी

नहीं होती अतः इन दोनोंकी अबस्थितविभक्तिका कथन पूर्वोक्त स्थानमें ही करना चाहिये।

यदि कहा जाय कि वेदकसम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिश्यादृषटि जीबमें स्थितिकाण्डकघात होता

ही नहीं सो ऐसा निश्चय करना भी ठीक नहीं दै क्योंकि वेदकसम्यकत्वको प्राप्त होनेवाले किसी भी

जीत में में विद्युद्धक अनुसार अनियमसे स्थितिकाण्डकघातकी सिद्धि होनेमें कोई वाधा नहीं

पाई जात्। ॥

जज यद बात किस प्रमाणसे जानी जातौ है

सभाधानइसी उच्चारणासे जानी जाती है ।

शंकादोनों उच्चारणाओंमें परस्पर विरोध कैसे नहीं माना जाय

समाधाननहींक्ष्योंकिबिरोध एक नयको विषय करता है। परन्तु दोनों उच्चारणाएँ भिन्न

भिन्न नयके निमित्तसे प्रबृत्त हैं अतः कोई विरोध नहीं द । तात्पय यह है कि जब एक ही इृष्टिसे

बिरुद्ध दो बातें कदी जाती है तब विरोध आता है । किन्तु इन दोनों उच्चारणाओंका कथन भिन्न

भिन्न दृष्टिसे किया गया है अतः कोई विरोध नदीं जाता ।

इसी प्रकार शुक्ललेश्यामें कहना चाहिये ।

विशेषार्थआनतादिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्याल्वके अवस्थितके बिना तीन पद्

होते हैं और अवस्थित सहत चार पद होते हैं। इस प्रकार यहाँ वीरसेन स्वामीने दो मर्तोका

उल्डेख किया द । पहुछा मत प्राचीन उच्चारणाका हे और दूसरा मत उस उच्चारणाका है जिसका

वीरसेन स्वामीने सर्वत्र उपयोग किया दै। यहाँ पर वीरसेन स्वामीने पहले मतके समर्थन या

निषेधमें तो कुछ भी नहीं छिखा है। हाँ दूसरे मतका उन्होंने अवश्य समर्थन किया है। पहले तो

उन्होंने यह यतदाया है कि यह लेखकोंकी भूल नहीं दै । यदि छेखकोंकी भूल होती तो एक जगह

Page 33:

१४ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्तों ३

२४ शरणुदिस्सादि जाव सब्वद्सिद्धि ति सञ्रपयदीणमप्पद्रं कस्स अणद् ०

एवमादार०आहारमिस्स ०अवग॒द अकषा ० आमिणि ० सुद ० ओहि मणपज ० संजद् ०

समाहयछेदो ०परिहार ० सुदम ०जदाक्खाद संजदासंजद ओहिदंस ०षम्मादि ०

खट्टय वेदय ०उवसम ०सासण ०सम्मामिच्छादिद्वि त्ति। ओरालियमिस्स छब्दीस

पयडि०तिण्डं पदाणमोघं॑ । सम्मत्तसम्मामि० अप्पद० ओषं । एवं वेउव्वियमिस्स०

कर्मृहय ०अणाहारए त्ति अभव० छब्बीसपयडीणं पिण्डं पदाणमेहंदियभंगो ।

एबं सामित्ताणुगमो समत्तो ।

एत्तो एगजीवेण कालो

६ २५ सुगममेदं सुत्तं ।

मिच्छत्तस्स सुजगारकम्मंसिओ केवचिरं कालादो होदि

२६ ५ब पि सुगमं ।

जहर्णेण एगसमओ ।

होती किन्तु जब समुत्कीतेनामें भी आनतादिमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके पद ओघके समान

बताये हैं तब इसे लेखकोंकी भूछ नहीं कह सकते । तब ग्रइन हुआ कि तो यहाँ अवस्थित पद् कैसे

बनता है इसपर वीरसेनस्वामीने यह समाधान किया है कि जिसने आनतादिकमें सम्यक्त्व और

सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्देलनाद्वारा मिथ्यात्वसे कम स्थिति कर छी है वह जब सम्यक्त्वके सम्मुख

होता ह तब मिथ्यात्वके अन्तिम स्थितिखण्डके पतन द्वारा यदि सम्यक्रस्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी

स्थिति एक समय अधिक करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त करता है तो सम्यक्त्व ओर सम्यग्मि

्यात्वकी अवस्थितविभक्ति बन जाती है । यह काकी प्रधानतासे कथन किया है पर जब

निषेकोंकी प्रधानतासे विचार करते हैं तब सभन स्थितिवालोके सम्यक्सवकी अवस्थितविभक्ति

प्रात दती है । किन्तु इस प्रकार सम्यम्मिथ्यात्वकी अवरिथितविभक्ति नहीं बनती ।

२४ अनुद्शिसे केकर स्वाथंसिद्धितकके देवोमे सव प्रकृतियोकी अल्यतरस्थितिविभक्ति

किसके होती है किसी मी जीवके होती दैः । इसी प्रकार आहारककाययोगी आदारकमिश्रकाय

योगी अपगतवेदवारे अकषायी अभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपयेयज्ञानी

संयत सामायिकसंयत केदोपस्थापनासंयत परिहारविशुद्धिसंयत सूक्ष्मसांपरायिकसंयत यथाख्यात

संयत संयतासंयत अवधिद्शनवाले सम्यग्टष्टि श्षायिकसम्यग्टष्ट वेदकसम्यग्दषि उपश्चम

सम्यग्दृष्टि सासादनसम्यग्टष्टि ओर सम्यम्मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चाहिये ।

ओद्।रिकमिश्रकाययोगी जीवम छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा तीन पदोका भंग ओघके

समान है । तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर र्थितिविभक्ति ओधके समान ड ।

इसी प्रकार वैक्रियिकमिश्रकाययोगी का्मेणकाययोगो और अनाहारक जी वोके जानना चाहिये।

अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतियोकी अपेक्षा तीन पदोंका भंग एकेन्द्रियोंके समान है ।

ह इ इस प्रकार स्वामित्वानुगम समाप्त हुआ ।

आगे एक जीवकी अपेक्षा कालानुगमका अधिकार हे ।

२५ यह सूत्र सुगम दै । ९

ॐ मिथ्याखके मुजमारस्थितिसत्कमंवारे जीवका कितना काल है १

२६ यद सूच मी सुगम है ।

जघन्य काल एक समय है ।

Page 34:

ग० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारसामित्तं १५

२७ इदो मिच्छत्तड्िदीए उवरि एगसप्रयं वड्डिदण पधद्धे मिच्छतटटिदिज

गारस्स एगसमयकालुवलंमादो ।

उक्षस्सेण चत्तारि समया ४।

२८ तं जदाअद्धाक्एण ट्विदिबंधे वड्दि अजमारस् एगो समओ । संकि

लेप्तक्खएण बड्डिदृण बद्धे विदियो समयो । एह दियस्स विगदं कादृण पंचिदिए्सुप्पण्ण

पढ़पसमए असण्णिद्विदिं बंधमाणस्स तदिओ सम॑भो । सरीरं पेत्तण चउत्थसमणए सण्णिद्टिदिं

बंधमोणस्स चउत्थों श्ुजगारसमओ ।

२६ का अद्भा णाम १ टविदिबंधकालो कि तरस पमाणं । जह० एगसमओ

उकं अंतोप्ठ दृत्त । एदिस्से अद्धाए खरमो विणासो अद्भाक्खग्रो णाम । एगट्टिदिबवंधकालो

सव्वेतिं जीव्राणं समणप्रिणामो कण्ण होदि १ ण अंतरंगकारणमेदेण सरिषत्ताणुव

बत्तीदो । एगजीवस्व सब्तरकालमेगपभाणद्वाए ट्विंदिबंधो किण्ण होदि १ ण अंतरंगकारणेसु

दव्बादिसंबंघेण परियत्तमाणस्प एगम्मि चेव अंतरंगकारणे सन्वकालमवड्ाणामावादो ।

३० को संकरिलेषो ण।म १ कोहमाण मायालोहपरिणाम विसेसो । ते हि सव्वासि

२७ क्योकि मिथ्यात्वकी स्थितिके ऊपर एक समय बढ़ाकर बन्ध करनेपर मिथ्यात्वकी

सुजगार स्थितिविभक्तिका एक समय काछ पाया जाता दै ।

उत्कृष्ट कारा चार समय है ४।

२८ उसका खुलासा इस प्रकार हैंअद्धाक्षयसे स्थितिबन्धके बढ़ानेपर भुजगारका पहला

समय होता हे । संतो शक्षयसे स्थितिको बढ़ाकर बन्ध करने पर दूसरा भ्रुजगार समय होता है ।

एकेन्द्रिय पयायसे विग्रह् करके पंचेन्द्रियमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमे असंज्ञीकी स्थितिका बन्ध

करनेवाले जीवके तीसरा भुजगारसमय होता दै । शरीर ग्रहण करके चौथे समयमें संज्ञीकी स्थितिका

बन्ध करनेवाले जीवके चौथा जगार समय होता है ।

२६ शंकाअद्वा किसे कहते हैं ॥

समाधान स्थिविवन्धके कालको द्वा कहते हैं ।

शंकाउसका प्रमाण क्या दे

समाधानजधन्य कार एक समय और उच्छ काल अन्तमुह॒ते है ।

इस अड्ाके क्षय अर्थात् विनाशका नाम अद्भाक्षय है ।

शंका सत्र जीवोंके एक स्थितिबन्धका काठ समान परिणामवाला यों नहीं होता है

समाधान नहीं क्योंकि अन्तरंग कारणमें भेद होनेसे उसमें समानता नहीं बन सकती है ।

शंक्काएक जीव के सदा स्थितिबन्ध एक समान काठवाला क्यों नहीं होता है

समाधाननहीं क्योंकि यह जीव अन्तरंग कारणोंमें द्रव्यादिकके सम्बन्ध से परिवतेन करता

रहता है अतः उसका एक ही अन्तरंग कारणमें सवदा अवस्थान नहीं पाया जाता है ।

३० शुंक्वा संक्त किसे कहते हैं

समाधान क्रोध मान माया और छोभरूप परिणामविशेषको संज्ञका कहते हैं ।

Page 35:

१६ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

द्िदीणं बंधस्स सव्वे वि पाओग्या १ ण परिमिदाणं ट्विदीणं बंधस्स परिमिदसंकिलेसाणं

चेव कारणत्तादो । तं जहासव्वजहण्णबंधो धुबद्धिदी णाम । तिस्हे ट्विदीए बंधपाओ

ग्गाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्टि दिबंधज्झबसाणद्वाणाणि छबड्डीए असंतेरोगमेचछट णिहि

सह अवद्ठिदाणि । समयुत्तरधुवद्टिदीए वि एत्तियाणि चेव । णवरि घुबद्धिदिपरिणामेद्दितो

पलिदो० घसंखे०भागपडिभागेण विसेसादियाणि । एवं विसेसाहियकमेण ट्विदाणि जाव

सशरिसागरोवमकोडाकोडोए चरिमसमओ त्ति। पुणो धुबद्िदीए असंखेज्जलोगज्श

वसोणाणि पलिदो० असंखे०भाममेत्तखंडाणि कायववाणि । ताणि च अण्णोण्णं विसेसाहि

याणि एवं सब्बद्धिदिअज्ञवसाणाणि खंडेदन्वाणि । संपदि धुबद्धिदीए पढमखंड

ट्विदअसंखे ०छोगद्टिदिबंधज्झ वसाणइणेदि धुबद्धिदौ चेव बज्ञदि ण उवरिमहिदीभो ।

इदो १ तब्बंधसत्तीए तेसिममावादो । गिरुद्द्िदोए पण इेदिमह्िदीओण अन्तरेति

सब्बजहण्णड्टिदिबंधादो हेड बंधड्टिदीणमभावादो । पुणो तत्थतणत्रिदियखंडपरिणामेदि

धुवट्टिदें समउत्तरधुवद्धिदि च बंधदि ण उबरिमिट्टिदीओ । प्रणो तदियखंडपरिणामेद्दि

धुवद्िदिं समउत्तरुब्टिदिं दुसमञत्तरधुशष्टिदिं च बंधदि । एवं तिसमयचदुसमयपंचसम

युत्तरादिकमेण धुवद्धिदें बंधाविय णेदभ्वं जाब चर्मिपरिणामखंडं ति । पुणो चरिम

संडपरिणामेदि धुषहिदिष्पईडि समयुत्तरादिकमेण परिणामखंडमेत्तद्धिदीओ बज्ञंति ण

शंका वे सब संवेश परिणाम कया सब रिथितियोंके बन्धके योग्य होते हैं १ ह ह

समाधान नर्द क्योकि परिमित स्थितियोंके बन्धकरे परिभित संक्लेश परिणाम दी कारण

होते दै । उसका खुलासा इस प्रकार हैसबसे जघन्य बन्धका नाम ध्रुबस्थिति दै । उस स्थितिके

बन्धके योग्य असंख्यात लोकप्रमाण स्थितिवन्धाघ्यवसानस्थान होते दै । जो षटस्थानपतित

वृद्धिकी अपेक्षा जखंख्यात छोकप्रमाण छहस्थानोंके साथ अवस्थित हैं। एक समय अधिक भुवस्थिति

बन्धके योग्य भी इतने ही स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं किन्तु इतनी विशेषता दै कि वे परि

णाम धरुबस्थितिके परिणामोमें पल्योपमके असंख्यातबें भागका भाग देने पर जितना लब्ध अवि

उतने घ्रुवस्थितिके परिणामोंसे अधिक होते हैं। इस प्रकार सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिके

अन्तिम समय तक वे परिणाम उत्तरोत्तर विशेषाधिक क्रमसे स्थित हैं। पुनः भ्रुवस्थितिके

असंख्यात छोकप्रमाण परिणामोकि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण खण्ड करने चाहिये । जो

परस्पर विशेषाधिक ह इसी प्रकार सब स्थितियोंके परिणामस्थानोंके खण्ड करने चाहिये । इनमें

ध्रुवस्थितिके पहले खण्डमें स्थित असंख्यात छोकप्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंसे ध्रुव

स्थितिका दी बन्ध होता है अगछी स्थितियोंका नहीं क्योंकि उन परिमाणोंमें आगेकी स्थितियोंके

बन्धकी शक्ति नहीं पाई जाती है तथा उन परिणामोंके द्वारा भ्रुवस्थितिसे नीचेकी स्थितियोंका बन्ध

नहीं होता है क्योकि सबसे जघन्य स्थितिबन्धके नीचे बन्धस्थितियाँ नहीं पाई जाती हैं। पुनः

भुवस्थितिसम्बन्धी दूसरे खण्डके परिणामोंसे शुवस्थिति और एक समय अधिक ध्रुवस्थितिका बन्ध

होता है किन्तु इससे आगेकी स्थितियोंका बन्ध नहीं होता। पुनः तीसरे खण्डके परिणामोंसे

प्रुवस्थिति एक समय अधिक ध्रुवस्थिति और दो समय अधिक ध्रुबस्थितिका वन्ध होता है।इस

प्रकार तीन समय चार समय और पाँच समय आदि अधिकके क्रमसे ध्रुवस्थितिका बन्ध कराते

हुए अन्तिम परिणासखंड तक ले जाना चाहिये। पुनः अन्तिम खण्डके परिणामोंसे भुवस्थितिसे

लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे परिणामोंके जितने खंड हो उतनी स्थितियोंका बन्ध होता

Page 36:

गा० २२ द्विद्विहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारसाभित्तं १७

उवरिमाओ । समयुत्तरधुवड़्िदीर पठमखंडपरिणामेहि संखाए धुषद्धिदिविदियखंड

समणिदि धुवह्धिदी समयुत्तरधुवद्धिदी वा बज्छई ण उवरिमाओ । धिदियखंडपरिणमेहि

धुब्धिदितदियखंडसमाणेष्टि घुव्धिदी समयुत्तरधुबद्धिदी दुघमयुत्तरधुबह्धिदी च ञ्छ

ण उवरिमाओ । एवं णेदव्यं जाव दुबरिमखंडं ति । पणो चरिमखंडज्ञवसाणद्वाणेद्द

समयाहियधुषद्धिदिष्पद्डि परिणामखंडमामहारमेत्तट्िदीओ उवरिमाओ बंधंति ण घुब

हिंदी धुबह्िदिपरिणामेहि चरिमिखंडपरिणामाणं सरिसत्तामावादो । एवं जाणिदूण

णेदव्वं जाव अणुकस्सुकस्सट्टिदि त्ति।

३१ उकस्षद्धिदीए पढठमखंडपरिणामेद्दि उकस्सट्विदिप्पहुडि देडा परिणामखंड

भागहारमेत्तडिदीओ बज्ञंति । विदियखंडपरिणामेहि रूवृणपरिणाभखंडसलागमेत्त्टिदीओ

हेट्टिमाओ बज्ञ॑ति। तदियखंडपरिणामेहि दुरूुवणपरिणामखंडसलागामहिदी ओ दिद्टिमाओ

बज्ञंति । एवं गंतूणुकरपष्ठिदी चरिमखंडपरिणामेहि उकस्सद्धिदी एका चेव बज्ञह।

इदो तकखंडपरिण।मार्ण हेट्ठिमखंडेहि अणुकट्टीश अमाकादो । जेणेगद्धिदिपरिणामा उवरि

पलिदोवमस्स असंखे ०मागभेत्ताणं चेव इदौणं वंधकारणं होति तेण अद्धाकखएण सु

महंतो वि ह्िदिवंधद्चनमारो पलिदोवमस्स असंखेञजदिभामो चवे त्ति घेत्तव्वों ।

8 ३२ संपदि एदि द्िदिवंषज््नस्ाणाणाणं परिणामकालो जहण्णेण एगसमय

है इनसे भौर ऊपरकी स्थितियोंका नहीं । एक समय अधिक धुवस्थितिके पहले खंडके परिसाणोंसे

जो कि संख्यामें धुवस्थितिके दूसरे खंडके समान दै शुवस्थितिका या एक समय अधिक घुव

स्थितिका बन्ध होता है ऊपरकी स्थितियोंका नहीं। धुवस्थितिके तीसरे खण्डके समान दूसरे

खण्डके परिणामोंसे ध्रुवस्थितिका एक समय अधिक भरुवस्थितिका और दो समय अधिक भुवस्थितिका

बन्ध होता है ऊपरकी स्थितियोंका नहीं । इसी प्रकार द्विचरमखण्डतक ले जाना चाहिये। पुनः

अन्तिम खण्डके अध्यवसानस्थानोंसे एक समय अधिक धुवस्थितिसे लेकर परिणामोंके खण्ड करनेके

स्यि जो भागहार कहा ड तत्ममाण ऊपरकी स्थितियोंका बन्ध दता दे ध्र॒वस्थितिका नहीं क्योंकि

भुवस्थितिके परिणामोंके साथ अन्तिम खण्डके परिणामोंकी समानता नहीं है । इसी प्रकार जानकर

अलुल्कृष्टउत्कृष्ट स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । अथात् जिन परिणामोंसे जिन स्थिति

खण्डोंका बन्ध हो उसका विचार कर कथन करना चाहिए।

8३१ उत्कृष्ट स्थितिके प्रथम खण्डके परिणामोंसे उत्कृष्ट स्थितिसे छेकरापरिणामखण्डोंके भागद्दार

प्रमाण नीचेकी स्थितियाँ बंधती हैं । दूसरे खण्ड के परिणामोंसे एक कम परिणामखण्डोंकी शलाका

प्रमाण नीचेकी स्थितियाँ बंधती हैं। तीसरे खण्डके परिणामोंसे दो कम परिणामखण्डोंकी शखाका

प्रमाण नीचेकी स्थितियाँ बंधती हैं इस प्रकार जाकर उत्कृष्ट स्थितिके अन्तिम खण्डके परिणामोंसे

एक उत्कृष्ट स्थिति ही बंधती हे क्योकि अन्तिम खण्डके परिणामोंकी नीचेके खण्डोंके साथ

अनुकृष्टि नहीं पाई जाती है। चूंकि एक स्थितिके परिणाम ऊपर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण

स्थितिके ही बन्धके कारण होते हैं अतः अद्धाक्षयके द्वारा खूब बढ़ाकर भी यदि भ्रुजगार स्थितिबन्ध

हो तो वह पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हो बड़ा होगा ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिये ।

३२ इन स्थितिबन्धाध्यवसातस्थानोंका जघन्य परिणामकार एक समय और उत्कृष्ट

१ ाग्प्रतौ साणाणं द्वाणार्ण इति काटः

द

Page 37:

१८ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे ट्विद्विहत्ती हे

मेत्तो उकस्सेण अह्डसमयमेत्तो । कृदो १ एगपरिणामप्पणादों । एगड्डिदीए सब््धिदिबंध

ज्ञवसाणदाणेसु अवट्टाणकालो पुण जहण्णेण एगस्मयमेत्तो उक० अंतोम॒ह्त । पुणो

विसमयतिसमयादिपाओग्ेदि ट्विद्बंधज्ञवसाणडाणेहि णिरुद्धेगट्धिदि बंधमाणेण तद्दि

बंधकाले समन्ते संकिलेसक्खयाभावोदो तिस्से ट्विदिबंधज्झव षाणद्णिदि समयुत्तरादिकमेण

पशिदो० असंखे०भागमेचट्विदिविपप्पेस उवरि चडिदूण बद्धेत अद्धाक्जएण एगो झुज

गारसमओ लद्धो होदि । पुणो चरिमसमण् एगद्डिदिबंधपाओर्गद्ठि दिवंधज्ञवसाणडणेसु

अवड्टाणकालो समत्तो । तर्ष समत्तीए संकिलेसक्खओ णाम ।

8 ३३ एवंत्रिदेण संकिटोसक्खएण उवरि समयुत्तरदुसमयुत्तरादिकमेण जाव संखेज

सांगरोबममेत्तद्टिदीण ट्विदिबंधज्ञवसाणड्रणाणि समयाविरोहेण परिणामिय बंधमाणस्स

संकिलेसक्खएण आुजगारस्स विदियों समयो। तद्रि समए कालं कादण विग्गहगदीए

पंचिंदिएसुप्पण्णपठमसमए असण्णिद्डिदिं वंधमाणस्स एदेदियस्स तदियों धुजगारसमयों ।

चउत्थसमण सरीरं चेत्तण अंतोकोडाकोडिट्टिदि बंधमाणस्स चउत्थो श्ुजगारसमओ

एवं मिच्छत्तआुजगारस्स चत्तारि चेव समया जत्थ जस्थ झुजमारों चुच्चदि तत्थ तत्थ

एत्थ परूषिदअत्थों परूवेयव्यों

अप्पदरकम्मंसिओं केवचिरं कालादो होदि

रे४ सुगभमेदं।

आठ समय अमाण है क्योंकि यहाँ एक परिणामकी मुख्यता है । परन्तु सब स्थितिबन्धाध्यवसान

स्थानोंमें एक स्थितिका अवस्थानकाछ जघन्यसे एक समय और उत्क्ृष्टरूपसे अन्तमुहते होता है ।

पुनः दो समय और तीन समय आदिके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके ढ्वारा विवक्षित एक

स्थितिको बांधनेवाले जीवके यद्यपि उस स्थितिबन्धका काल समाप्त हो जाता है तो भी संक्लेशका

क्षय न होनेसे उस स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके द्वारा एक समय अधिक आदिके ऋमसे

पल्थोपमके असंख्यातबें भागप्रमाण स्थितिविकल्पोंके ऊपर जाकर बन्ध होनेपर अदधाश्चयसे एक

भ्रुजगारसमय प्राप्त होता दै । पुनः अन्तिम समयमे एक स्थितिबन्धके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसान

स्थानोंमें रहनेका कार समाप्त होता है । उसकी समाप्तिको संक्लेशय कते हें ।

३३ इस प्रकारके संक्लेशक्षयके द्वारा ऊपर एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके

क्रमसे संख्यात हजार सागरप्रमाण स्थितियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको यथाविधि परणमाकर

बन्ध करनेवाले जीवके संक्लेशक्षयसे सुजगारका दूसरा समय होता हे । तीसरे समयमें जो एकेन्द्रिय

मरकर विग्नहगतिसे पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है वह बहाँ उत्पन्न होनेके पहले समयमें असंज्ञीकी

स्थितिका बन्ध करता है तब इसके तीसरा सुज़गार समय होता है । तथा चोथे समयमें शरीरको

ग्रहण करके अन्तःकोड़ाकोड़ीत्रमाण स्थितिका वन्ध करनेवाले उस जीवके चौथा म्रुजगार समय होता

दे इस प्रकार मिथ्यात्वसम्बन्धी सुजगारके चार ही समय होते हैं। आगे जहाँ जहाँ सुजगारका

कथन किया जाय वहाँ वहाँ यहाँ पर कदे गये अर्थकी प्ररूपणा करनी चाहिये ।

69 मिथ्यात्वके अल्पतरस्थितिसल्कमंवाले जोवक्रा कितना काल है

३४ यह् सूत्र सुगम ह ।

३ जान प्रलौ परिणमिय इति पाटः ।

Page 38:

गा०२२ द्विद्विहत्तीए उत्तरपयंडिभ्रुजगारसामित १९

जहरण्णेण एगगमश्नो ।

३५ ददो १ अुजगारमबद्ठिदं को करेमाणेण दगसमयं संतर दैड। ओदरिद्ण

पबंधिय विदियसमए सुजञमारे अवड्डाणे वा कदे अप्पद्रस्स एमसमयउवरमादो ।

उक्रस्सेण तेवदिसागरोवमसदं सादिरेयं ।

३९ तं नहा एको तिरिक्खो मणस्सो वा भिच्छाहड्टी एगं दिं बंधमाणो

अच्छिदो तिस्ते डिदीए हेड्ठा बंधमाणेण सब्वुकस्सो तप्पाओग्गो अंतोशहुत्तमेत्तो अप्पदर

कालो गमिदो प्रणो से काले ट्विदिसंतकम॑ वोलेदूश वंधहिदि त्ति कालं शदृण

तिपलिदोब मिएसु उबवण्णों पणो तत्य भंतोधु्ुताधसेसे जीविद्व्वएं त्ति सम्पत्तं घेत्ण

पढमच्छावद्ठिं ममिय सम्मामिच्छन्तं पडिवब्जिय पुणो वि सम्मतं चेत्तण विदियच्छावड्ट

ममिय अवसासे तप्पाओग्गपरिणामेण मिच्छन्तं गंतूण एकत्तीप्सागरोबमद्ठिदिएसु

देवेसु उवबण्णो । पुणो कालं कादूण मणुस्सेसुवबवज्जिय जा सकं ताव अंतो

सुहत्तकाल संतकम्भस्स हेड्ठा बंधिय पुणो संकिलेसं पूरेदण शुजगारविहत्तिओ जादो ।

एवं वेअतोषहु्ेहि तिहि पलिदोबमेहि य॒ प्ादिरेयतेषद्धिसागरोवसदमप्पदरस्स

उकश्सकालो होदि ।

अवहिदकम्मंसियों केवचिरं कालादो होदि

३७ सुगममेद

जहण्णेण एगसमओ ।

ॐ जघन्य काल एक समय है। न

३५ क्योकि भुजगार या जवस्थितको करनेवाला कोई एक जीव एक समयके लिये सत्क

नीचे उतरकर स्थितिका वन्ध करके पुनः दूसरे खमयमे यदि सुजगार या अवस्थित विकल्पको

करता है तो उसके अल्पतरका एक समय काल ग्राप्त होता है ।

उत्कृष्ट काल साधिक एकौ तअखठ सागर है ॥

३६ उसका खुलासा इस प्रकार है कोई एक तियंच या मलुष्य मिथ्यादृष्टि जीव एक

स्थितिका बन्ध करता हुआ विद्यमान है । पुनः उस स्थितिके नीचे बन्ध करते हुए उसने उसके

योग्य सर्वोत्क्रष्ट अन्तमुंहू्तेप्रमाण अल्पतरका कार बिताया । पुनः तदनन्तर कालमें स्थितिसत्कमं प

व्यतीत करके बन्ध करेगा इसलिए मरकर वह तीन पल्यकी आयुबाले जीवोंमें उत्पन्न हुआ पुनः

वहाँ पर जीवनमें अन्तमुंहूर्त काल शेष रहने पर सम्यक्त्वको महण करके और पहले छयासठ स।गर

काछ तक श्रमण करके सम्यम्मिथ्यात्वको प्राप्न किया । तथा फिर भी सम्यक्त्वको ग्रहण करके

दूसरी बार छयासठ सागर कार तक भ्रमण करके अन्तमें मिथ्यात्वके योग्य परिणामोंसे मिथ्यात्वमें

जाकर एकतीस सागरमप्रमाण स्थितिवाले देबोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः मरकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ

और वहाँ यथासंभव अन्तसुहूते कार्तक सत्कर्म नीचे वन्ध करके पुनः संक्लेशको प्राप्त होकर

वह सुजगारस्थितिविभक्तिवाङा हो गया। इस प्रकार दो अन्तमुहू्ते और तीन पल्यसे अधिक

एक सौ त्रेसठ सागर अल्पतर स्थितिविभक्तिका उत्कृष्ट काल प्राप्त होता है ।

ॐ मिभ्यालके अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले जीवका कितना काल है १

३७ यह सूत्र सुगम दे ।

जघन्य काल एक समय दे ।

Page 39:

२० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे छ्विद्विहत्ती हे

३८ कुदो सुज्ञगारमप्पदरं वा कुणमाणेण एगसश्रयसंवसमाणद्िदीए पमरद्वाए ॥

अवद्िदस्स एगसमयुवलंभादो

उक्छस्सेण अंतोझ॒हुत्तं ।

३९ दो १ भुजगारमप्पद्रं वा कादृण संतसमाण ट्विद्बंधस्स उकस्सेण अंतोधु हुत्त

मत्तकालुवलंभादी

एवं सोलसकसायणवणोकसायाएं ।

8४० बहा मिच्छत्तस्स सुजगारअप्यदरअवद्विदाणं परूवणा कदा तहा

सोलक ०णवणोकसायाणं श्ुुजगारअष्पदरअवद्धिदाणं वि परूवणा कायव्या । एस्थतण

विसेसपरूदणट्धुत्तर सुत्तं भणदि ।

णएवरि खुजगारकम्मंसिओो उश्षस्सेण एग॒णएवीससमया ।

४१ तं जद्दासचारससमयादियएगावलियसेसाउएण एडंदिणण अणंताणुबंधि

कोधं मोत्तण सेसमाणादिपण्णारसपयहीषु परिवाडीए पण्णारससमयेद्दि अद्धाक्खएण

अण्णोण्णं पेक्य वड्डिय बद्धापु पण्णोरस वि पयडीओ अआजगारसंकूमपाओरगाओं

जादाओ । पुणो बंधावलियमेत्तकाले अदिकंते सत्तरतस्तमयमेत्ताउअसेसे पव्चुत्तावलिय

कालम्मि पढ़मसमयप्पडुडि पषण्णारससमण्सु वड्डिदण बद्धपण्णारसपय डिट्टिंदि वधषरि

वाडीए अणंताणुबंधिकोधे संकममाणस्स पण्णारस युजमारसमया अशणंताणुबंधिकोंधस्स

३८ क्योंकि श्रुजगार या अल्पतरको करनेवाले किसी जीवक द्वारा एक समय तक सत्तामें

स्थित स्थितिके समान स्थितिका बन्ध करने पर अवस्थितका एक समय कार पाया जाता है ।

उत्क काल अन्त्चहृतं है ।

३६ क्योकि सजगर या जल्पतर करके सत्तां स्थित स्थितिके समान स्थितिके निरन्तर

बँधनेका उत्कृष्ट कार अन्तमुहूत पाया जाता है । ।

इसी प्रकार सोलह कषाय और नौ नोकपार्याका काल जानना चाहिये ।

४० जिस प्रकार मिथ्यात्वके युजगार अल्पतर और अवस्थित भंगोंका कथन किया है

7 उसी प्रकार सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके सुजगारः अल्पतर और अवस्थित विकल्पोंका

कथन करना चादिये । अब यहाँ पर विशेष कथन करनेके छिये आगेका सूत्र कहते हैं

इतनी विशेषता है कि शजगारस्थितिविभक्तिवालेका उस्क्ृष्ट काल उन्नीस समय है ।

४१ उसका खुछासा इस प्रकार दैजिसके सत्रह समय अधिक एक आवखगप्रमाण आयु

शेष दै ऐसे एकेन्द्रियके द्वारा अनन्तालुबन्धी क्रोधको छोड़कर शेष मान आदि पन्द्रह प्रकृतियोंके

कऋमसे पन्द्रह समयोंमें अद्धाक्षयसे एक दूसरेको देखते हुए उत्तरोत्तर स्थितिको बढ़ाकर बोधने पर

पन्द्रह द्वी प्रकृतियाँ सुजगारसंक्रमके योग्य हयो गई । पुनः बन्धावलिप्रमाण काछके व्यतीत हो जाने

पर और उस एकेन्द्रियके सत्रह समयप्रमण आयुके शेष रहने पर पूर्वोक्त आविके कालके भीतर

प्रथम समयसे केकर पन्द्रह सम्योमें बढ़ाकर बाँधी हुई पन्द्रह प्रकृतियोंकी स्थितिकों जिस क्रमसे

बन्ध हुआ था उसी क्रमसे अनन्ताजुबन्धी ऋषधमें संक्रमण करनेवाले जीवके अनन्तानुबन्धी क्रोधके

पन्द्रह खुजगार समय प्राप्त होते हैं । पुनः सोलहयें समयमें अद्धाक्षयसे अनन्तानुबन्धी क्रोधको

4 ता ० प्रतौ बंधिकोर्ध इति पाठः

Page 40:

गा० २२ दिदिविहत्तीए उत्तरपयडिसुजगारसामित्तं २९

द्धा पुणो सोलससमयम्मि अद्धक्खणएण अगांताणुबंधिकोघेण वड्डिदूण बद्धं सोरुस झुज

गारसमया । पुणो सत्तारससमणए संकिलेसक्खएण अणंताणुरंधिकोघेण सह सव्वेसिं

कसायार्ण वड्डिदूण बद्धे सत्तारष सुजमारसमया । पूणो कालं काद् ण एगविरगहेण

सण्णीसुप्पण्णपटमसमए असण्णिद्धिदिं बंधमाणस्स अट्टारस झुजगारत्षमया । पुणो सरोरं

घेचण सण्णिद्धिदिं बंधमाणस्स एमूणवीस शुजगारसमय। १६ । जहा अर्ण॑तणुवंधि रोषस्स

उकस्सेण एगूणबीससमयार्ण परूवणा कदा तहा माणादीणं पण्णारसण्डं पयडीणं पत्तय॑

पत्तेयं परिवाडीए परूबणा कायन्बा

४२ णवणोकसायाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि सत्तारससमयाहियआव लिया

चसेसे आउए आवलियपटमसप्रयप्पहुडि कोघादिसोलसकसायाणं परिवाडोए अद्धा

क्चएण सोलससमयमेत्तकार्ू वड्डिदृण बंधिश पुणो सत्तरसतसमएण संक्तिडिसक्लणण

सब्परासिं वेव सोलसपयडीणं श्ुजगारं कादुण पणो बंधाववियादिकंतकसायद्विदिं णव

णोकसायाणहुवरि बंधपरिवाडीए संकममाणस्स णोकसायाणं॑ सत्तारस युजगारसमया ।

पणो एगविग्गहेण सण्णीसुप्रण्णपढमसमर अण्णहिं बंधमाणस्स अट्टारस झुजमार

समया । पुणो सरोरगद्धिदषढ भसमए सण्णिद्धिदि बंधमाणस्स एमूणवीस शुजगारसभया ।

जहा ए्दयमस्सिद्ण शुजगारस्स एगूणवीपसभयाणं परूवणा कदा तदह विगलिदिय

जीवे वि अरिषदृण कायन्ता ।

बढ़ाकर बोधने पर सोलह भ्रुजगार समय होते हैं। पुनः सन्नहवें समयमे संक्लेशक्षयसे अनन्तानु

बन्धी क्रोधके साथ सब कषांयोंको बढ़ाकर बाँधनेपर सत्रह् सुजगारसमय होते हैं। पुनः मरकर एक

मोड़ाके द्वारा संज्षियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें असंज्ञियोंकी स्थितिको बाँधनेबाले उस जीवके

अठारह श्चुजगार समय होते हैं । पुनः शरीरको महण करके संज्ञीके योग्य स्थितिको बाँधनेवाले उस

जीवके उन्नीस भ्रुजगार समय होते हैं १९। मूलमें जिस प्रकार अनन्तानुबन्धी क्रोधके उत्क्ृष्टरूपसे

उन्नीस भुजगार समयोंका कथन किया है उसीप्रकार मानोदिक पन्द्रह प्रकृतियोंके १९ भुजगार

समयोंका क्रमसे अछग जलग कथन कर लेना चाहिये ।

४२ नौ नोकषायोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि

जिस एकेन्द्रिय जीवके आयुमें सत्रह समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष रहे उसके आवलिके

न् प्रथम समयसे लेकर क्रोधादि सोलह कषायोंका क्रमसे अद्धाक्षयके द्वारा सोलह समय तक स्थिति

बढ़ाकर बन्ध करावे । पुनः आवलिके सत्रहवें समयमें संक्लेशक्षयसे सभी सोलह प्रकृतियोंकी भ्रुजगार

स्थितिका बन्ध करावे । पुनः बन्धावलिके व्यतीत हो जाने पर बन्धक्रमसे उन कषायोंकी स्थिंतियों

का नौ नोकषायोंमें संक्रमण करावे । इस प्रकार संक्रमण करनेवाले जीवके नौ नोकषायोंके सत्रह

भ्ुजगार समय प्राप्त होते हैं। पुनः एक सोड़ेके द्वारा संज्षियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें असं

क्षियोंकी स्थितिको बाँधनेवाले उस पूर्बचर एकेन्द्रिय जीवके अटारह् भ्रुजगार समय होते हैं। पुनः

शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें संज्ञीके योग्य स्थितिको बाँधनेवाले उस जीवके उन्नीख भुजगार

समय होते हैं। यहाँ जिस प्रकार एकेन्द्रियोंका आश्रय लेकर भ्रुजगार स्थितिविभक्तिके उन्नीस

समयोंका कथन किया है उसी प्रकार विकलेन्द्रिय जीबोंका आश्रय लेकर भी कथन करना चाहिये ।

9 णा०प्रतौ सब्वेसि कम्माणं बड्डिदूण इति पाठ ।

Page 41:

२२ जयधवलछासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

४३ हत्थिपरिसइस्सरदीणमबद्टिदकाणों कथषठकस्वेण अंतोषठहुत्तमेत्तो १ ण

कसायाणमंतोङ्ञोडाकोडिसागरोवममेत्तद्धिदिमवद्धिदसरूेण अंतोषहुत्तं कालं वंधिय बंधाव

लियादिकंतकसायद्विदिं पुन्छु्तचदुण्डं रयडीणधूतरि अंतोुहत्तं संकामिदे इस्थिप्रिष

दस्वरदीणमवद्िदस्स अंतोमुहुत्तमेचकाछुर॒लंभादो एडो अवद्धिदकालो कत्थ गद्दिदो १

सण्णीसु । छुंदो १ तत्थ इत्थिपुरिस इस्सरदीणं बंधगद्धाए बहुत्तुवलंभादो बारसकसाय

विश्ेषाथं यहाँ सोलह कपषायोंकी जगार स्थितिका उत्कृष्ट काछ १९ समय वतराया ह ।

इसके लिये दो पर्यायोंका अहण किया है क्योकि एक पर्यायकी अपेक्षा १९ भ्ुजगार समय नहीं

प्राप्त होते । ऐसा नियम है कि सोछह कषाय और नौ नोकषायोंका परस्परमें संक्रमण होता है ।

इसके छिये यह् व्यवध्था है कि जिस समय जिस प्रकृतिका बन्ध होता है उसमें अन्य सजातीय

प्रकृतिका संक्रमण होता दै । चूंकि यहाँ अनब्तानुबन्धी क्रोधकी सुजगार स्थितिके उत्कृष्ट काछको

ग्राप्त करना है अतः ऐसा एकेन्द्रिय या विकडेन्द्रिय जीव छो जिसकी वर्तमान आयु एक आाव्डि

और सत्रह समय शेष रही हो उसने प्रह समयोंमें अनन्तानुबन्धी क्रोधको छोड़कर शेष

पन्द्रह कषायोंकी स्थिति उत्तरोत्तर बढ़ा बढ़ाकर बाँधी । पहले समयमें अनन्तानुवन्धी मानकी स्थितिको

सत्तामें स्थित स्थितिसे बढ़ाकर बाँधा । दूसरे समयमे अनन्तानुबन्धी मायाकी स्थितिको अनस्ताजुबन्धी

मानकी स्थितिसे बढ़ाकर बाँधा इत्यादि । तदनन्तर एक आवलि कारके व्यतीत हो जाने पर उसी

क्रमसे इनका अनन्तानुबन्धी क्रोधमें संक्रमण किया । इस प्रकार भुजगारके पन्द्रह समय तो ये प्राप्त

हुए । अब रहे चार समय सो सोलदवे समयमें अद्धाक्षयसे उसने अनन्तानुबन्धी क्रोधषकी स्थितिको

बढ़ाकर बाँधा । सत्र वें समयमे संक्लेशक्षयसे अनन्तानुबन्धी क्रोधके साथ सब कषायोंकी स्थितिको

बढ़ाकर बया । इस प्रकार भ्रुज़गारके सत्रह समय तो एकेन्द्रिय या विकलत्रयके प्राप्त हुए अव यह

जीव मरकर एक विम्रहसे संज्ञी पंचेनिद्रियोंमें उत्पन्न हुआ इसलिये उसने विग्रहकी अवस्थामें असंज्ञीके

योग्य स्थितिको बढ़।कर बाँधा और दूसरे समयमें शरीर ग्रहणकर लछेनेसे संज्ञी पच्च निद्रयके योग्य

स्थितिको बढ़ाकर वोधा । इस प्रकार झुजगार के १५ समय प्राप्त हुए । इसीप्रकार अनन्तानुबन्धी मान

आदिके और नौ नोक गयो १६ भुजगार समय प्राप्त होते हैं । किन्तु नौ नोकषायोंके सम्बन्धमें

इतनी विशेषता है कि सोलह कषायोंका अद्वाक्षयसे उत्तरोत्तर बढ़ाकर बन्ध करावे। तद्नन्तर सत्रहवें

समयमें संक््लेशक्षयसे स्थिति बढ़ाकर बन्ध करावे । पुनः एक आवि हो जानेपर इनका नौ नोक

पायोंमें सत्रह समयके द्वारा संक्रमण करावे तदनन्तर इस जीवको संज्षियोंमें उत्पन्न कराकर

पूर्वोक्त प्रकारसे दो सुजगार समय और प्राप्त करे । इस प्रकार नौ नोकषायोके १६ भुजगार समय

प्राप्त दते दै। न

४३ शंकाखीवेद पुरुषवेद दास्य ओर रतिका अवस्थित काछ उत्कृष्ट रूपसे अन्त

मुहूत केसे प्राप्त होता है

समाधाननहीं क्योकि जब कोई जीव कषायोंकी अन्तःकोड्ाकोड़ी सागर प्रमाण

स्थितिको अवस्थितरूपसे अन््तसुहूत काठतक बाँधकर पुनः बन्धावलिके व्यतीत होने पर उस

स्थितिका पूर्वोक्त चार प्रकृतियोंमें अन्तमुहूते काछतक संक्रमण करता द तब उस जीवके खीवेद्

पुरुषवेद् दास्य और रतिकी अवस्थितस्थितिविभेक्तिका अन्तमुहूते काल पाया जाता ड ।

शंंकायह अवस्थित काल कहाँ पर अहण किया गया है

समाधानसंज्ञियोमे । ।

शंकायह अवस्थित काठ संक्षियोंमें दी क्यों अहण किया गया है

Page 42:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारसामित्तं २३

णवणोकसायाणमुवसमसेदिम्डि अंतरकरणं काऊण सन्योनसमे कदे अवद्विदकालो अंतो

मुददत्तेत्तो लब्भदि विदियट्विदीए ट्विदणिसेशाणमवर््ठिदाएं सलणामवादो सो किण्ण

घेष्पदि १ ण घडियाजल व कम्मक्खंधट्डिदिसमएसु पडिसमयं गलम।णेसु कम्पट्टिदीए

अव्विदभावविरोहादो । गिसेगेद्दि अविट्वद्व जइबसहाइश्यों णेच्छदि चि इदो णव्ब रे १

सम्मत्त सम्मामिच्छत्ताशमबद्विदस्स अंतोष्ठतं मोत्तण उकस्हेण एग्रसम्रयपरूवणादो

अणंताशुबंधिचउठक्कस्स अवत्तव्वं जदण्णुकस्सेण एगसमओ ।

रा समाधानक्योंकि वदपर खीवेद पुरुषबेद हास्य और रतिक्रा बन्धकाल बहुत पाया

जाताद्ै। ह ह

शंका उपशषमश्रेणीमे अन्तरकरण करके सर्वोपशम कर ऊेनेपर बारह कषाय और नौ

नोपायो का अवस्थितकालछ अन्तुहूते प्रमाण प्राप्त होता दै क्योंकि वहाँवर द्वितीय स्थितिमें स्थित

निषेक अवस्थित रहते हैं उनका गकन नहीं होता है अतः इस अवस्थितकाछका ग्रहण क्यों नहीं

किया गया है ह दे

समाधाननहीं क्योंकि वहाँपर घटिकायन्त्रके जछके समान कर्मस्कन्धकी स्थितिके समय

प्रत्येक समयमें गछते रहते हैं अतः बहाँवर कर्मस्थितिका अवस्थितपना माननेमें विरोध आता ह ।

शंकायतिवृषभ आचायने निषेकॉकी अपेक्षा अवस्थितपनेको स्वीकार नहीं किया है यह

किस प्रमाणसे जाना जावा है

समाधानचूंकि यतिवषभ आधचायने सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी स्थितिका उत्कृष्ट

अवस्थितकाल अन्तमुंहूते ककर एक समय कहा द्वे। इससे मालूम पड़ता है कि यतिवृषभ

आचायेको निषेकोंकी अपेक्षा अवस्थितकाल इष्ट नहीं है ।

विशेषार्थं बात यह है कि जब कोई जीव बारह कषाय और नौ नोकषायोंका उपशम कर

लेता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंके सब निषेक अन्तमुह॒ते काछ्वक अवस्थित रहते हैं उनमें उत्कषेषण

आदि कुछ भी नहीं द्वोवा इसपर शंकाकार कहता है कि अवस्थित विभक्तिका यह काट क्यों

नहीं छिया जाता है। इसका जो समाधान किया गया हे उसका भाव यह है कि यद्यपि उक्त प्रकृ

तियोंके निषेक अन्तमुहूर्त काउतक अवस्थित रहते हैं यह् ठीक है फिर भी जिस प्रकार घटिका

यन्त्रका जर एक एक बुूँद्रूपसे प्रति समय घटता जाता है उसी प्रकार उनकी स्थिति भी प्रति समय

एक एक समय घटती जाती है क्योंकि अन्त्रकरण करनेके समय उनकी जितनी स्थिति रहती है

अन्तरकरणकी समाप्तिके समय वह अन्तमुहूतै कम दो जाती है अतः उपशमश्रेणिमें अवस्थित

विभक्ति नहीं भ्राप्त होती इसपर फिर शंकाकार कहता है कि स्थिति भले ही घटती जाओ पर निषेक

तो एक समान बने रहते हैं अतः निषेकोंको अपेक्षा यहाँ अवस्थितविभेक्ति बन जायगी । इसका

वीरसेन स्वामीने जो समाधान किया है उसका भाव यह दै कि यतिवृषभ आचायमने निषेकोंकी

अपेक्षा अवस्थितविभक्तिको नहीं स्वीकार किया है। इसका प्रमाण यह हे कि यदि उन्होंने

निषेकोंकी अपेशा अवस्थितपनेको स्वीकार किया होता तो वे सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

स्थितिके उत्डष्ट अवस्थितकाछकों एक समयप्रमाण न कहकर अलन््तमुंहूर्ते प्रमाण कहते क्योकि एक

अन्तमुहूते कार्तक उनका भी उपशसभाव देखा जाता है ।

अनन्तानुबन्धीचतुष्की अवक्तव्यस्थितिबिभक्तिका जधन्य और उत्कृष्ट काल

एक समय है ।

Page 43:

गे जयधवलासदहिदे कसायपाहुडे हिदिविह्ती ३

४४ कुदो १ अणंतागुज्चरकं णिस्संतीकयसम्धाइड्ििणा मिच्छत्ते सासणसम्भत्ते

वा पड़िवणो तस्र पटमसमए चेव अणंताणुग्चउकस्स ट्विदिसंतुप्पत्तीदो । इंदो

असंतस्स अण॑ताणु०चउकस्प उप्पत्ती १ ण भिच्छत्तोदष्टण कम्महयवग्णणक्खंषाण

मणंताणु चउकसरूवेण परिणमणं पडि विरोहामावादो सासणे इदो तेपि संतुप्पत्ती

छासणपरिणामादों को सास्रणपरिणामो १ सम्मत्तस्स अभावों तचत्थेसु असद्दणं ।

सो केण जणिदो १ अणंहाणुवंघीणञुदए्ण । अणंताणुबंधीणप्रुद्ओ इदो जायदे।

परिणामपचएण ।

सम्मत्तसम्मामिच्छुत्ताणं सुजगारअवहिदअवत्तव्वकम्मंसिओ केव

चिरं कालादो होदि

४४ सुगम ।

ॐ जदण्णुक्तस्तेणए एगसमओ

४६ तं जद्दापुव्वुप्पण्णसम्मत्तसंतकम्ममिच्छाइटिणा सम्मचसंदकम्मस्सुवरि

दुसमयुत्तरादिमिच्छत्तद्विंदि बंधिय गद्विद्धम्मत्तरस पढमसमए झ्ुजगारो होदि । समयुत्तर

४४ क्योकि जिस सम्यग्टष्टि जीवने अनन्तानुबन्धी चतुष्कको निःसत्त्व कर दिया है वह जब

मिथ्यात्व या सासादनसम्यक्त्वको प्राप्त होता है तव मिथ्यात्व या सासादनके प्रथम समयमें ही

अनन्तानुबन्धी चतुष्कका स्थितिसत्त्व पाया जाता दे ।

शंकाअसद्प अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी मिथ्यात्वमें उत्पत्ति कैसे हो जाती है

समाधाननहीं क्योंकि मिथ्यात्वके उद्यसे कार्मणवर्गणास्कन्धोंके अनन्तानुबन्धी चतुष्क

रूफसे परिणमन करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शंकासासादनमें उनकी सत्तारूपसे उत्पत्ति कैसे दो जाती दै

समाधानसासादनरूप परिणामोंसे ।

शंकासासादनरूप परिणाम किसे कहते हैं

समाधानवत्त्वार्थोमें अश्रद्धानलक्षण सम्यक्त्वके अमावको सासाद्न रूप परिणाम

के नह सासादुनरूप परिणाम किस कारणसे उत्पन्न होता है

समाधानअनन्तालुबन्धीचतुष्कके उदयसे दोता है ।

शंकाअनन्ताजुबन्धीचलुष्का उदय किस कारण से होता है

समाधानपरिणामविशेषके कारण अनन्तानुबन्धी चतुष्कका उद्य होता है ।

सम्यक्स और सम्थग्मिथ्या्वके अजमार अवस्थित ओर अवक्तव्य स्थिति

विभक्तिवाशे जीवका कितना कार है १

४५ यह सूत्र सुगम है ।

जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

४६ उसका खुलासा इस श्रकार द जिसने पहले सम्यक्स्वसत्क्मको उत्पन्न कर

लिया दै ऐसा कोई एक मिथ्यादृष्टि जीव जब सम्यक्त्वसत्कमंके उपर दो समय अधिक इत्यादि

रूपसे मिथ्यात्वकी स्थितिको बाँघकर सम्यक्त्वको अहण करता है तब उसके सम्यक्त्वके

ग्रहण करनेके प्रथम समयमें सम्यस्वकी भ्रुजगारस्थितिविभक्ति होती दै । तथा एक समय अधिक

Page 44:

गा० २२ ट्विद्विहृत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो २५

मिच्छत्द्धिदिं बंधिय गहिदसम्मत्तस्स पटमसमण अवदिदविद्दतीए कालो एगसमओ

शोदि विदियसमए भर्पदरविहत्तीए सप्ुप्पत्तोदो । उवस्तमसम्मत्तद्वाए दंसणतियद्विदीए

णिप्तेगाणं तिदियद्विदीए अवबह्टिदाणं गलणाभावादो अवद्विदकालो अंतोध्ठ॒हृत्तमेत्तो लब्भइ

सो किण्ण गहिदो १ ण तिष्ठं कम्माणं कम्मट्विदिसमएसु अणुसमयं गलमणेषु ट्विदीए

अवड्टाणविरोदादो । ण णिसेगाणं ट्विदित्तमत्यि दव्बस्स पज्जयभावबिरोहादो । णिस्संत

कम्मिएण मिच्छाहहिणा सम्मत्ते गद्दिदे एगसमयमवत्तव्यं होदि पुव्वमविज्ञमाण

सम्मत्तसम्माभिच्छत्तदिदिसंताणमेणिंद सपम्मप्पत्तीदो तस्स कालो एगसमओ वेव विदिय

समए अप्पदरसमुप्पत्तोदो ।

अप्पदरकम्मंसिओ केवचिरं कालादो होदि १

७७ सुगम ।

9 जहरणेण अंतोम॒हुत्तं ।

४८ दो णिस्संतकम्मिएण भिच्छाइड्टिणा पढमसम्पत्त घेत्तण पढमसमए

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमवत्तव्॑ कादूण विदियसमए अप्यदर करिय सब्वजहण्णंतो

मिथ्यात्वकी स्थितिको बोधकर जिसने सम्यक्स्वको ग्रहण किया दे उसके सम्यकत्वके ग्रहण करनेके

प्रथम समयमें सम्यक्स्वकी अवस्थितविभक्तिका काल एक समय प्राप्त होता है क्योकि दूसरे समयमे

अल्पतरविभक्ति उत्पन्न हो जाती है ।

श्ंकाउपश्चमसम्यक्त्वके कालमें तीन दशैनमोहनीयकी स्थितिके निषेक द्वितीय स्थितिमें

अवस्थित रहते हैं अतः उनका गलन नहीं होनेके कारण अवस्थितकाछ अन्तमुंहूर्तप्रमाण प्राप्त

होता है उसे यहाँ क्यो नहीं महण किया १

समाधाननहीं क्योकि बहाँपर तीनों कर्मोकी कर्मस्थितिके समयोंके प्रत्येक समयमें गलते

रहनेपर स्थितिका अवस्थान माननेमें विरोध आता है । यदि कदा जाय कि निषेकोंको स्थितिपना

प्राप्त हो जायगा सो मो बात नहीं है क्योकि द्रव्यको पर्यायरूप मानने में विरोध आता है। अथौत्

निषेक द्रव्य हैं और उनका एक समयवक कमेरूप रहना आदि पर्याय है । चूँ कि द्रव्यसे पयोय कथ

शित् भिन्न है अतः पर्यायके विचारमें द्रव्यको स्थान नहीं । जिसके सम्यक्त्वकमेकी सत्ता नहीं है

ऐसा मिथ्यादृष्टि जीव जब सम्यक्त्वको ग्रहण करता है तब उसके सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम

समयमें एक समयतक अवक्तव्यस्थितिविभक्ति दोती दैः क्योंकि पहले अविद्यमान सम्यक्त्व ओर

सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वकी इनके उत्पत्ति देखी जाती है । इस अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका

का एक समय ही है क्योकि दूसरे समयमे अल्पतर स्थितिविभक्ति उत्पन्न हो जाती हे।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्यके अस्पतर स्थितिविभक्तिसत्कमंवाले जीवा

कितना काछ है १

४७ यह सूत्र सुगम है। ५

जघन्य काल अन्तपुंह॒ते है ।

४८ क्योंकि जिसके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका सन्त्व नहीं है ऐसा मिथ्यादृष्टि जीव

अब प्रथमोपकमसम्यकत्वको ग्रहण करता है तब उसके सम्यक्स्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमे

सम्यक्टव ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी अवक्तव्य स्थितिविभक्ति होती है । तथा दूसरे समयसे अल्पतर

स्थितिविभक्तिको प्रारम्भ करके अति रूघु अन्तमुंहते कारके द्वारा वह यदि दशमोहनीयका क्षय कर

४ ४

Page 45:

२६ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ६

तेण दंसणमोहणीए खविदे अप्यद्रकारो जह अतोहं होदि ।

उक्षस्सेण वे छावहिसागरोवमाणि सादिरेयाणि।

4 3 न

४६ तं जहाणिस्संतकम्मियमिच्छादिद्टिगा सम्मत्त गहिंदे उवसमसम्मत्तद्धा

समयूणमेत्ता अप्पदरकालो होदि । पणो वेदगसम्भत्तं वेत्तण तेण सम्मत्तण पढमब्ावई

ग्रम्तिय पृणों सम्भामिच्छततं पडिवज्जिय तत्थ अंतोषुहुत्तमच्छिय वेदगसम्भत्तपुवणमिय

५ संवे

तेण सम्मत्तेण विदियछावद्धिं गमिय पणो मिच्छत्तं गंतूण पलिदो असंखे० भागमेच्तण

सब्वुकस्सुव्वेस्लणकालेण सम्मत्तसम्भामिच्छत्तेस उच्वेलिदेसवेछावट्टिसागरोवमाणि

पलिदो० असंखे०भागेण सादिरेयाणि सम्मत्तसम्पाभिच्छत्ताणप्रुकस्सप्पदरकालो । एवं

जहबसहाइरियसुत्तमस्सिदृण ओवपरूबणं करिय संपहि उचचारणमस्सिदूष श्रुजगारकाल

परूवर्ण कर्तामो । ह

४० काछाणुगमेण दुविहों णिदंसोओघेण आदेखेण य। ओघेण मिच्छकव०

केवचिरं कालादो होदि जद ० एमसमओ उक चत्तारि समया । अप्पद् केन १ जद०

एगसमओ उक० तेबट्टिसामरोवमसद सादिरेयं । अब्टि० केनचि ० १ जद ० एगसभओ

उक० अतोष्ठहत्तं । सोरसक ० णवणोक० अज जह ० एमसमओ उक्त० एगुणवीस

समया । अप्यद्रअवद्धिदाणं मिच्छत्तमंगो । अणंताणु च उक० अवत्तव्व जदण्णुक ०

एगसमओ । सम्मत्तसम्मामि ० भुज ० अद्धि ०अवत्तव्य ० जदण्णुक ० एगएओ । अष्पद०

देता दै तो उसके अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाट अन्तमुहूते प्राप्त दोता है ।

उत्कृष्ट काल साधिक दो छथासठ सागर हे । दे

४९ उसका खुलासा इस प्रकार हैजिसके सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्व कमेका सत्त्व

नदीं है ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवके सम्यक्त्व के रहण करनेपर एक समयकम उपशम खम्यक्त्वका काक

अल्पतरकाल होता है पुनः वेदकसम्यक्त्वको अण करके ओर उस सम्यक्स्वके साथ प्रथम

छथासठ सागर काल विताकर तदनन्तर सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होकर और वहाँ अन्तभहूतं कालतक

रहकर पुनः वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त करके और उसके साथ द्वितीय छधासट सागर का विताकर पुनः

मिथ्यात्वको प्राप्त करके जब वह पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण सर्वोत्कृष्ट उद्लेलनाकालके द्वारा

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्धेखना कर देता है तव उसके छम्यक्स्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

पल्योपमके असंख्यातवें भाग से अधिक दो छथासठ सागर प्रमाण अल्पतर काठ द्वोता दै ।

५० इस प्रकार यतिवृषभ आचायके सूत्रके आश्रयसे ओघका कथन करके अब उच्चारणाके

आश्रयसे खुजगारकाटका कथन करते हैंका छानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका दैओघनिद्देश

और आदेशनिर्देश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्वकी झुजगार स्थितिविभक्तिका कितना काल

है जघन्यकार एक समय और उत्कृष्टकाल चार समय है । अल्पतर स्थितिविभक्तिका कितना काल

ह १जघन्यकार एक समय और उत्क्ृष्टकाल साधिक एकसौ त्रेसठ सागर है । अवस्थित स्थितिविभक्ति

का कितना काक द जघन्यकाछ एक समय और उत्क्ृष्टकाल अन्तमुंहूत है। सोछह कषाय और नौ

नोकषायोंकी भुजगारस्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एंकसमय ओर उत्कृष्टकाछ उन्नीस समयहै। अल्पतर

और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका भंग मिथ्यात्वके समान दै । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य

स्थितिविभक्तिका जघन्य ओर उत्क्ृष्टकाछ एक समय है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी भ्रुजगार

१ ता० श्रतौ सुतो दोदि इति पाठः ।

Page 46:

भा० २२ हिद्विहत्तीए उत्तरपयडिसुजगारकारो २७

जह० अंतोघ्ु ० उक० वेछाबद्धिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । एवं तसतसपज्ज०

अचक्खु०मवसिद्धिया त्ति। णवरि तसतसपज्ज० सम्म०सम्मामि० अप्यद्० जदृ०

ऐगसमओ ।

५१ आदेसेण णेरहएसु मिच्छत्तरस झुज० केव० १ जह ० एगसमओ उक्त ० तिण्णि

समया । तं जद्दाअसण्णिपंचिंदियस्स दोविग्गहं कादृण णेरहएस उदवण्णस्स विदिय

समे अद्भाक्खएण एमो झुजगारसमओ । तदियसमए तद्धिदिपरिणामेदि चेव सण्णिषठिदिं

चंधमाणस्स पिदिओ श्जभारसमभो । संकिलेसक्खएण विणा तदियसमए कथं सण्णि

ट्विदिं बंधदि ण संकिरेषेण विणा सण्णिपंचिदियजादिमस्सिदूण ट्विद्बंंधवड्डीए उव

संभादो । चरस्थसमण संकिटेषक्खएण तदिओ धुजगारसमओ । एवं मिच्छत्तश्चजगारस्स

विष्णि समया परूषिदा । अहवा अद्धाक्खए्ण संकिलेसक्खएण च बडिद्ण बंध

माणस्छ वे समया । एस पादो एत्थ पद्दाणभावेण पेततव्वो । । अप्पद्र० जह० एगसमओ

उक० तेत्तीससागरो० देष्णाणि । अबटिद० ओषं । बारसक०णवणोक० भज ० ज०

एगसमओ उक ० सत्तारस समया । अट्टवारससमयमेत्तपुजगारकालो किमेत्थ णोवलब्भदे

अवस्थित ओर अवक्तव्य स्थितिविमक्तियो का जघन्य और उत्छषटकाल एक समय द । तथा जल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल अन्तमुहूते और उत्छष्टकाल साधिक एकसौ बत्तीस सागर हैः । इसी

प्रकार त्रस त्रस प्योप्त अचक्षुद्शनवाले और भव्य जी वोके जानना चादिये । किन्तु इतनी विशेषता

है कि चस और जरस पर्याप्रकोंमें सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य

काठ एक समय दै ।

विश्चेषाथं यद्यपि ओघसे सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिविभेक्तिका

जघन्य काल अन्तमुंहूर्तसे कम प्राप्त नहीं होता तो भी चस और त्रसपर्याप्त जीवोंके वह् एक समय

बन जाता है क्योकि जिसके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी उद्धेलनामे एक समय शेष रह गवा

है उसके त्रस और त्रसपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेपर वहाँ सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर

स्थितिका जघन्य काल एक समय देखा जाता है ।

५१ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्वकी सुजगारस्थि तिविमक्तिका कितना काढ

दै जवन्यकार एक समय और उत्कृष्टकाछ तीन समय है उत्कृष्टकाछ तीन समय इस प्रकार

दैजो असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव दो मोड़े लेकर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके दूसरे समयमें अद्धा

क्षथसे एक सुजगार समय होता हे । तीसरे समयमें स्थितिके उसी परिणामसे ही संज्ञीकी स्थितिको

बाँधते हुए उसके दूसरा सुजञगार समय होता है ।

शंका संक्लेशक्षयके बिना तीसरे समयम वह जीव संज्ञीकी स्थितिको कैसे बाँधता दे

समाधान क्योकि संक्लेशके बिना संज्ञी पंचेन्द्रिय जातिके निमित्तसे उसके स्थितिबन्धमें

वृद्धि पाई जाती है ।

तथा चौथे समयमे संक्लेशक्षयसे उसके तीसरा भ्रुजगार समय होता है। इस प्रकार

नारकियोंके मिथ्यात्वकी सजगारस्थितिकं तीन समयोंका कथन किया। अथवा अद्धाक्षय

और संक्लेशक्षयसे स्थिति बढ़ाकर बाँधनेवाले नारकीके दो थुजगार समय होते हैं। यह पाठ यहाँ

पर भ्रधानरूपसे लेना चाहिये। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्कृष्टकाल

कुछ कम तेतीससागर है । अवस्थित स्थितिविभक्तिका कार ओघके समान है । वारहःकषाय और

नौ नोकषायोंकी भ्रुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और दच्छ्टकाल सन्नह समय है ।

Page 47:

श्ट जयधवलासहिदेकसायपाहुडे ट्विदिविद्दत्ती ३

ण अद्कारसमस्स झुजगारसमयस्स विचारिज्जमाणस्साणुवलंभादों । अप्पदर०

अवह्टिद ० मिच्छत्तमंगों । अणंताणु०चउक० एवं चेन । णवरि अवत्तव्ब० ओघं ।

सम्मच०सम्मामि अप्पद जह एमसमओ उक ० तेत्तीसं सागरो०देखणाणि। सेसमोघं

५२ पढमपुढवि० एवं चेव णवरि सब्वेसिमप्पद० जह० एगसमभ्रो उक्ष

सगद्ििदों देखणा । विदियादि जाब सत्तमि त्ति मिच्छत्त शुज० ज० एगस० उक० वे

समया । अप्प० ज० एगरस० उक० सगसगद्ठिदी देखणा । अवष्टि० भोघं । बारसक०

शंकायद्दाँपर अठारह समयप्रमाण सुजगारकाल क्यों नहीं प्राप्त दता दे हे

समाधान नदीं क्योकि अठारह वँ शुजगार समय विचार करनेपर बनता नहीं अतः यहाँ

उसे स्वीकार नहीं किया ह ।

बारह कषाय और नौ नोकषा्योकी अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभेक्तियोंका भंग

मिथ्यास्वके समान है । अनन्तानुबन्धी चतुष्कका कथन इसी प्रकार जानना चाहिये । किन्तु इतनी

विशेषता है कि अवक्तव्य स्थितिविभक्ति ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट कार कुछ कम तेतीस सागर हे ।

शेष कथन ओधके समान हे ।

विशेषाथे सामान्यसे नारकियोंमें मिथ्यात्वकी सु जगार स्थितिका उत्कृष्ट का तीन या

दो समय घटित करके बतलाया है । साथ ही यह सूचना भी की है कि यहाँ दो समयवालछा पाठ

प्रधान है । माद्यूम होता है कि यह् सूचना बहुलताकी अपेक्षासे की है । एक तो असंज्ञी जीव नरकमें

कम उत्पन्न होते हैं । उसमें भी पहले नरकमें दी उत्पन्न होते है । फिर भी सवत्र सुजगार स्थितिके

तीन समय प्राप्त होना शक्य नहीं ह । हाँ दो समय सातो नरकोंमें प्राप्त होते हैं । यही कारण है कि

बौरसेन स्वामीने दो समयवाखी मान्यताको मुख्यता दी। तथा नरकमें वेदकसम्यक्त्वका उत्कृष्ट

कारू कुछ कम तेतीस सागर है अतः इस अपेक्षासे वहाँ मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट

कार कुछ कम तेतीस सागर प्राप्त होता दै । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट

काल जानना चाहिये। तथा किसी भी विवक्षित कषाय और नोकषायकी भ्रुजगार स्थितिके नरकमें

सन्नह समय दी बनते हैं क्योकि संक्रमणकी अपेक्षा पन्द्रह अद्धाश्चयकी अपेक्षा एक और संक्लेश

क्षयकी अपेक्षा एक इस प्रकार एक भवकी अपेक्षा भ्ुजगार के कुछ सत्रह समय ही प्राप्त द्वोते हैं।

सामान्यसे जो स्ुजगारके उन्नीस समय बतलाये हैं वे दो पर्यायोंकी अपेक्षा घटित किये गये हैं ।

पर यहाँ केवछ एक नरक पर्याय ही विवक्षित दै अतः सत्रह समयसे अधिक नहीं बनते । यही कारण

है कि वीरसेन स्वामीने नरकमें सुजगारके अठारहवें समयका भी निषेध कर दिया है। किन्तु नौ

नोकषायोंके सत्रह समय घटित करनेमें जो विशेषता ओघप्ररूपणामें बतछा आये हैं वह यहाँ भी

जान लेनी चाहिये ।

५२ पहलछी एथिवीमें इसी प्रकार जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता दै कि यहाँ सभी

प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्कृष्टकाल कुछ कम अपनी

स्थितिप्रमाण दै ।

दूसरी प्रथिवीसे ठेकर सातवीं प्रथिवी तकके नारकियोंमें मिथ्यात्वकी श्रुजगार स्थितिविभक्ति

का जघन्यकाल एक समय ओर उल्ृष्टकाल दो समय ह । अल्पतर स्थितिविमक्तिका जघन्य

काछ एक समय और उत्कृष्टकाल कुछ कम अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण दै । तथा अवस्थित

स्थितिविभक्तिका कार ओघके समान है । बारह कषाय और नौ नोकषायोकी भ्रुजगार स्थिति

Page 48:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो २६

णवणोक० युज० ज० एगस० उक ० सत्तारख समया । सेस मिच्छत्तमंगो।

अणंताणु चउक० एवं चे । णवरि अवत्त ओधं । सम्मत्तसम्मामि० अप्य ज०

गस ० उक समट्ठिदी देखणा । सेस ओघ॑ं ।

३ ४३ तिरिकख० मिच्छत्त अुज ओघं । अप्प ज० एगस० उक० तिण्णि

पलिदोवमाणि घादिरेयाणि । अवद्धि ओघं । बारसङ०णवणोक० अणंताणु चउक०

अप्य० मिच्छत्तमंगो सेस० ओघं । सम्मत्तसम्मामि० अप्पद० ज०ए गस उक

तिण्णिपलि० देख्० । सेसमोषं ।

५४ पंचिंदियतिरि०पंचि०तिरिक्खपज्ज०पंचिं०तिरि०जोणिणीतु मिच्छत्तसोल

विभक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्कृष्टकाल सन्नह समय दै तथा शेष अल्पतर और अवस्थित

स्थितिविभक्तियोका भंग मिथ्यात्वके समान है । अनन्तानुबन्धी चतुष्कका कथन इसी प्रकार जानना

चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता ड कि अवक्तव्यस्थितिविभक्तिका काछ ओघके समान है। सम्यक्त्व

और सम्यर्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाछ कुछ कम

अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण दै । तथा शेष स्थितिविभक्तियोंका काछ ओघके समान दै ।

विशेषाथंसामान्यसे नारकियोंके सब प्रकृति कौ अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट काछ यद्यपि

कुछ कम तेतोस सागर बतलछा आये हैं पर प्रथमादि नरकोंमें वह कुछ कम अपनी अपनी उत्कृष्ट

स्थितिप्रमाण ही प्राप्त होता है क्योंकि जिस नरककी जितनी उत्कृष्ट स्थिति होगी उससे कुछ कम

काल तक ही उस नरकका नारकी अल्पतर स्थितिके साथ रद् सकता है। तथा सामान्यसे नारकियों

के मिथ्यात्वकी भ्रुजगार स्थितिका जो उत्क्रष्ट काल तीन समय या दो समय बतलाया है वह पहले

नरकमें तो अविकल बन जाता है किन्तु द्वितीयादि नरकोंमें असंज्ञी जीव मरकर नहीं उत्पन्न

होता है अतः वहाँ तीन समयव।छा विकल्प नहीं बनता द । शेष कथन सुगम है

५३ तियेझ्वोंमें मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान दे । अल्पतर

स्थितिविमक्तिका जधन्यकार एक समय और उत्कृष्टकाल साधिक तीन पल्य है । तथा अवस्थित

स्थितिविभक्तिका कार ओघके समान है बाहर कषायः नौ नोकपाय और अनन्तानुबन्धो चतुष्ककी

अल्पतर स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके समान है । तथा शेष स्थितिविभक्तियोंका काल ओघके

समान है सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय

ओर उत्कृष्टकाल कुछ कम तीन पल्य है । तथा शेष स्थितिविभक्तियोंका का ओघके समान है ।

विशेषाये तियंचोंमें मिथ्यात्वकी भ्रुजगार स्थितिका जघन्यक्राछ एक समय और उत्कृष्ट

काठ चार समय बन जाता दै इसलिये इसे ओघके समान कहा । तथा अल्पतर स्थितिका जो

साधिक तीन पल्य कहा दे उसका कारण यह दे कि भोगभूमिमें तो तिर्यचि मिथ्यात्वकी अल्पतर

स्थिति ही होती दै इसलिये अल्पृतर स्थितिके तीन पल्य तो ये हुये तथा इसमें पूं पयौयका

अन्तमुहूवे और सम्मिलित कर देना चाहिये । इस प्रकार अल्पतर स्थितिका साधिक तीन पल्य

प्राप्त हो जाता हे । तथा यहाँ सम्यक्त्व और सम्याग्सिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिका जो उत्कृष्ट काल

कुछ कम तीन पल्य कदा दै सो यह जिसने उत्तम भोगभूमि के तिय॑चमें उत्पन्न होकर अतिशीघ्र

बेदकसम्यक्त्वको प्राप्त कर लिया है और अन्ततक चेदकसम्यक्त्वके साथ रहा उसकी अपेक्षा कहा

है क्योंकि इसके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी स्थिति उत्तरोत्तर अल्प अल्प द्वोती जाती है।

शेष कथन सुगम हे ।

६५४ पंचेन्द्रियतियच पंचेन्द्रियतियंच पयोप्त और पंचेन्द्रिय तियंचयोनिमती जीवमें

Page 49:

३० जयघवलासहिदे कासयपाहुडै द्विदिविद्तत्ती ३

सक०णवणोक० खुज० ज० एगस० उक ० तिण्णि समयो अड्डारस समया ससं

विरिक्ोधं । णवरि पंचिं०तिरि०पज्ज० इरिथवेद० युज परार जद० एगस० उकक०

सत्तारस समया । जोणिणि परिस णवुंप् युज ० ज एगस० उक सत्तारस घमया ।

४५ पंचि० तिरि०अपनज्ज० मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० अष्पद्० जह ०

श्गसमओ उक ० अंतोष्ठ० । सेसं पचि तिरिक्खभंगो णवरि हत्यिपुरिस० ज०

एयस० उक० सत्तार समया । सम्मत्तसम्मामि ० अप्प० ज ० एगस ० उक० अंतो

मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय

ओर उत्छृष्टकाख मिथ्यात्वकी अपेक्षा तीन समय और शेषकी अपेक्षा अटारह समय है। तथा

शेष कथन सामान्य तियेचोंक समान हे । किन्तु इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रिय तियच पर्याप्तकोंमें

स्रीवेदकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकार एक समय और उत्क्ृष्टकाल सत्रह समय है । तथा

योनिमती तियचोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेदकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय

और उत्कृष्टकाल सत्रह समय है ।

विशेषाथजिस प्रकार नारकियोंमें भिथ्यात्वकी सुजगार स्थितिका उत्कृष्ट काछ तीन समय

घटित करके बतला आये हैं उसी प्रकार यहाँ उक्त तोन प्रकारसे तिरय॑चोंके भी घटित कर लेना

चाहिये । तथा उक्त तीन प्रकारके तियचोंमें सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी सुजगार स्थितिका

उत्कृष्ट काछ अठारह समय प्राप्त होता है। जिसका खुलासा इस प्रकार है उक्त तीनों प्रकारके

वि्॑च असंज्ञी भी होते हैं और संज्ञ भी । अब ऐसा असंज्ञी जीव लो जिसकी आयुमें एक आवलि

और सोलह समय शेष है तब उसने विवक्षित कषायको छोड़कर शेष पन्द्रह कषायोंकी उत्तरोत्तर

आजगार स्थितिका पन्द्रह समयमें बन्ध किया । पश्चात् एक आवलिके बाद जब आयुर्मे सोर समय

शेष रहे तब उसने उन सुजगार स्थि वियोका पन्द्रह समयके द्वारा विवक्षित कषायमें संक्रमण किया ।

अनन्तर सोलहवें समयमे उसने अद्धाश्चयसे मुजगार स्थितिको वोधा और सत्रहवे समयमें ऋजु

गतिसे संज्ञियोंमें उत्पन्न दोकर संज्ञियोंके योग्य स्थितिका बन्ध किया पश्चात् अटारहवें समयमे

संक्टेशक्षयसे सुजगार स्थितिको बाँधा । इस प्रकार यहाँ सुजगार स्थितिके कुछ अठारह समय प्राप्त

ह्यते हैं। किन्तु तियंच पंचेन्द्रिय पर्यापकके खीवेदकी और योनिमती तिर्यचके पुरुषवेद और

नपुंसकवेदकी भ्रुजगार स्थितिके सन्नह समय ही प्राप्त दोते हैं जिसका उल्लेख मूलमें किया ही है।

बात यद् हैँ कि जो जिस वेदके साथ उत्पन्न होता हे उसके पूर्वं पयोयकेअन्तिम अस्तमुंहू्तेमें बह

वेद ही बँधता है अतः योनिमती तियंचमें उत्पन्न होनेवाले जीवके पृवे पयौयके अन्तमं पुरुष व

नपुंसक वेदका बंध नहीं दोनेसे सोछह कषायोंका उक्त बेदोमे संक्रमण भी नहीं होता अतः उक्त

बेदोंके शुजगारके अठारह समय घटित नहीं होते । इसीप्रकार पर्याप्त तिय॑चके सरीषेदके भुजगारका

काक अठारह समय न रहकर सत्रह समय कहा है। सो यह सवद समय स्वस्थानकी अपेक्षा

जानना चाहिये ।

५५ पंचेन्द्रिय तियंच अपयोप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी अल्प

तरस्थितिविभेक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्कष्टकाछ अन्तुहूत है तथा शेष स्थिति

विभक्तियोंका भंग तियचोंके समान द किन्तु इतनी विशेषता हे कि खीवेद और पुरुषवेद्की सुजगार

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्क्ृष्टकाल सन्नह समय दै । सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य काछ एक समय और उच्छृष्टकार अन्तमुंहूर्त है । इसी

Page 50:

गा० २२ द्िदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकाखो ३१

धृतं । एवं मणुषश्रपञ्ज० । णवरि छव्वीस पयडीणं युज० ज० एयस० उक० वे

समया सत्तारस समया

४६ मणुसतिए मिच्छ०सोलसक०णवणोक० युज ज० एयस० उक०

वेसमया सत्तारस समया । सेस पंचि०तिरिक्खभंगो णवरि मणुसपज्ज० बारखसक०

णवणोक० अप्य जह ० एयस० उक्क० तिण्णि पलिदो सादिरेयाणि पृथ्वक्नोडितिभागेण ।

५७ देवाणं णारयभंगो । णवरि मिच्छत्तस्स सम्मत्त ०सम्भ्राभि ०सोलसक०

णवणोक० अप्प० ज० एयस० उक० तेत्तीससागरोवमाणि । भवण ०वाण० एवं वेव ।

णवरि अप्पदर० सगड्ठिदी देखणा जोद्सियादि जाव सहस्सारोत्ति विदियपृढविभंगो ।

अकार मलुष्य अपयोध्क जीबोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि छब्बीस प्रकृतियोंकी

अुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाछ एक समय और उत्क्ृष्टकार मिथ्यात्वकी अपेक्षा दो समय

तथा शेषकी अपेक्षा सन्नह समय दे ।

8 ५६ सामान्य पर्याप्त और मनुष्य इन तोन प्रकारके मलुष्योंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय

ओर नौ नोकषायोंकी सुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्य काछ एक समय और उत्क्ष्टकाल मिथ्या

त्वकी अपेक्षा दो समय तथा शेषकी अपेक्षा सत्रह समय है। तथा शेष भंग पंचेन्द्रिय तिय॑चोंके

समान ह । इतनी विशेषता है कि मनुष्य पर्याप्तकोंमें बारह कषाय और नोकषायों की अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकार एक समय और उत्कृष्टकाछ पूर्वकोटित्रिभागसे अधिक तीन पल्य

प्रमाण है।

विशेषार्थपंचेन्द्रिय तियंच रूव्ध्यप्यौप्तकोंकी आयु अन्तहूतेसे अधिक नहीं ्ोती

इसलिये इनमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट काछ अन्तमुहू्ते कहा । तथा इनके स््रीवेद्

और पुरुषवेदकी जगार स्थितिका उत्कृष्ट काछ अठारह् समयप्राप्त न होकर सत्रह समय ही प्राप्त

द्वोता दे । इसका विशेष खुलासा जिस प्रकार पंचेन्द्रिय तियंच आदिके कर आये हैं उसी प्रकार

यहाँ भी कर लेना चाहिये शेष कथन सुगम है । मनुष्य छब्ध्यपर्याप्तकोंके यद्यपि सब प्रकृतियोंकी

शरुजगार आदि स्थितियोंका काल पंचेन्द्रिय तियच छब्ध्यपर्याप्तकोंके समान ही होता है फिर भी

छब्बीस प्रकृतियोंकी भ्रुजगार स्थितिके उत्कृष्ट कालमें कुछ विशेषता है । बात यह है कि मनुष्यों

संज्ञी ओर असंज्ञी ये दो भेद नहीं होते अतः इनके मिथ्यात्वकी सुजयार स्थितिका उत्कृष्टकाल दो

समय और सोलह कषाय तथा नौ नोकपषायों की भ्रुजगार स्थितिका उत्क्ृष्टकाल सत्रह समय ही प्राप्तद्ोता

है। उक्त प्रकृतियोंकी जगार स्थितिके उत्कृष्ट काछके विषयमे यही कारण सामान्य पर्याप्तक और

योनिमती मनुष्योंके जानना चाहिये। इन तीन प्रकारके मनुष्योंका शेष कथन पंचेन्द्रिय तियचोंके

समान है किन्तु मनुष्य पर्याप्तकोंक बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाछ

एक पूरवकोिका त्रिभाग अधिक तीन पल्य है क्योकि जिस मनुष्य पर्याप्तकने आगामी भवकी

आयुको बोकर तदनन्तर कायिक सम्यग्द्शनको प्राप्त कर छिया है उसके मनुष्य पर्याप्तक अवस्थाके

रहते हुए उक्त काछतक अल्पतर स्थिति देखी जाती है ।

५७ देबोंमें नारकियोंके समान जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता हे कि यहाँ मिथ्यात्व

सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषयोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्टकाछ तेतीस सागर है । भवनवासी और व्यन्तर देबोंमें इसी प्रकार

जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि यपर अल्पतरस्थितिविभक्तिका उत्कृष्टकाल कुछ कम

अपनीअपनी स्थिविप्रमाण ह । ज्योतिषियोंसे लेकर सहख्रारस्वगंतकके देवोंमें दूसरी प्रथिवीके

Page 51:

श्र जयघबलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती हे

णवरि सोहम्मादिसु अप्प० ज० एगस० उक० सगद्डिदी आणदादि जाव उवसिमिगेवजो

ति मिच्छत्तबारसक०णवणोक० अप्पद० जदण्णुक हिद । अण॑ताणुचउक अप्प

दर० जद० एयसमओ उक्ष० सगसमद्टिदी । अवत्तव्ं ओघं । सम्मत्तसम्मामि

अप्प० जह ० एयस ० उक० सगरगद्धिदी । सेस ओघं । अणुदिसादि जाव सब्बदु

सिद्धि त्ति सब्वपयडी अप्प जदण्णुक जदण्णुकस्सट्टिदी णवरि सम्मच० अप्पदरस्स

जह एयस० अणंताणु चउक अप्प जई ० अंतो्चु ।

समान जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता दहै कि सौधमौदिक स्वर्गो में मल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल अपनी स्थितिप्रमाण है । आनत कल्पसे लेकर उपरिम

मैवेयकतकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकार जघन्य र्थितिप्रमाण और उत्कृष्टकाछ उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है । अनन्तालुबन्धी चहुष्क

की अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य कारु एक समय और उत्कृष्ट काछ अपनी अपनी स्थितिप्रमाण

ह । तथा अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका कार ओघके समान है । सम्यक्त्व जौर सम्यग्मिथ्यात्वकी

मस्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट काल अपनी अपनी स्थितिप्रमाण दै ।

शेष कथन ओघके समान है । अनुदिशसे ठेकर सवोर्थसिद्धतकके देवोंमें सब भ्रकृतियों की अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्य का जघन्य स्थितिप्रमाण और उत्कृष्ट काछ उच्छ स्थितिप्रमाण दहै किन्तु

इतनी विशेषता ह कि सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिविमक्तिका जघन्य काल एक समय दै । तथा

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य काल अन्तमुहूत दै ।

विशेषार्थसर्वार्थसिद्धिके देवोंके सब प्रकृतियोंकी उत्तरोत्तर अल्पतर स्थिति ही होती दैः

इसलिये सामान्य देवोंके सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्क्ष्टकाल तेतीस सागर कहा । भवन

ब्रिकमें सम्यस्दृष्टि जीव नहीं उत्पन्न होते अतः यहाँ सब भ्रकृतिर्योकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट काछ

कुछ कम अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण भ्राप्त होता दै । तथा बारहवें स्वगेतक संक्लेशानुसार

स्थितिमें घटाबढ़ी होती रहती हे इसलिये यहाँ तक सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्य काठ

एक समय भी प्राप्त होता है । कन्तु बारहवें स्वगेके ऊपर यद्यपि सब प्रकृतियोंकी स्थिति उत्तरोत्तर

अल्प ही होती जाती हे फिर भी नौ ग्रेवेयकतकके जीव सम्यग्ट्रष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों प्रकारके होते

हैं। तथा सम्यग्यदृष्टिसे मिथ्यादृष्टि भी होते हैं और मिथ्यादृष्टिसे सर ग्हृष्टि भी। अतः यहाँ

अनन्वाुबन्धौ चतुष्क सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकों स्थिति अल्पतर और अवक्तव्य दो

प्रकारकी बन जाती है किन्तु शेष कर्मोकी एक अल्पतर स्थिति ही प्राप्त होती है। तदनुसार रर्

प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्य काछ अपनीअपनी जघन्य स्थितिप्रमाण और उत्कृष्ट काल

अपनीअपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है। किन्तु शेष छह प्रकृतियोकी अल्पतर स्थितिका

जघन्य काछ एक समय भी बन जाता है वयोकि जिसने अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना की दै ऐसा

कोई एक जीव सासादनमें जाकर पहले समयमें अवक्तव्य स्थितिको प्राप्त हुआ और दूसरे समयमें

अल्पतरस्थितिको प्राप्त करके यदि मर जाता है तो अनन्तानुबन्धीकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल

एक समय प्राप्त होता है। दसी प्रकार उद्देलनाकी अपेक्षाउक्त स्थानों में सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

अल्पतर स्थितिका जघन्य काछ एक समय बन जाता दै तथा अजुद्श आदियें वाईस प्रङ

तियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्य और उत्कृष्ट काछ अपनीअपनी जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण

है यह तो स्पष्ट ही है। किन्तु शेष छह प्रकृतियोंमें अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अल्पतर स्थितिका

जघन्य कार अन्तमुहू्े है क्योकि बहाँ उत्पन्न द्वोनेके अन्तमुंहूत कालके भीतर जो अनन्तानुबन्धीकी

विसंयोजना कर देता दै उसके अनन्तानुबन्धीकी अल्पतर स्थितिका जघन्य काछ अन्तमुंहूत ही प्राप्त

Page 52:

गा० १२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो ३३

५८ एदिएसु मिच्छत्त० शुज० ज० एयसमओ उक वेसमया अप्प० ज

एगस ० उक ० पलिदो० असंखे०भागो । अबद्ध ओप । सोखसक०णवणोक श्ुुज ०

विदियपुढविभंगो । अप्य ज० एगस० उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । सम्मत्त

सम्मामि० अप्प० ज० एगस० उक० पलिदो० असंखे०भागो । एवं बादरेइंदिय०

सुहुमेइंदिय ०पुढवि०बादरपुढवि ०सुहुमपुढवि ०आउ बाद्रआउ ०सुहूमआउ ० तेड०

बादरतेउ ० सुहुमतेड ०वाउ ०बादरवाउ ०सुहुमबाउ ० बादरवणप्फदिपत्तेयत्रणप्फादि ०

जगिगोद ०बादरसुहुभाणं । बाद्रेइंदियअपज्ज ० सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता्ण मिच्छत्तसोल

सक०णवणोऋ० युज ०अवद्टि० एडंदियमंगो । अप्पदर० जह० एगस० उके०

अतो । सम्मत्सम्मामि० अप्प० ज० एयस० उकक० अंतोग्यु०। एवं पचकाय

बादरअपज्ज ०सुहुमपज्जतापज्जत्ताणं । बादरेइंदियिपज्ज ०विगलिंदिय ०विगलिंदिय

पज्जत्ताणं मिच्छत्त यूज ० ज० एगस० उक० बेसमया । अप्पद० ज० एगसमओ

उक० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । अवब्टि० ओघ॑ । सोलसक०णवणोक० सुज ज०

एगस० उक० सत्तार समया। अप्पद०अवद्ठि० मिच्छत्तमं गो । सम्भत्तसम्मा

होता है। तथा सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल एक समय कृतक्॒त्यवेदके सम्यक्त्वकी

अपेक्षा प्राप्त होता है ।

6 १८ एकेन्द्रियोंमें सिथ्यात्वकी मुजगार स्थितिविभक्तिका जवन्यकाल एक समय और

उलछृषटकाल दो समय है । अल्पतर स्थितिविभक्तिका जवन्यकाल एक समय और उत्क्ृष्टकाल पल्यो

पमका असंख्यातवाँ भागप्रमाण है । अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान् है। सोलह

कपाय और नौ नोकयायोकी सुजगार स्थितिविभक्तिका भंग दूसरी प्रथिवीके समान दै । अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल पत्ये असंख्यातवें भागप्रमाण है।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्याव्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय ओर उत्कष्ठकाल

पल्यके असंख्यात भागप्रमाण है। इसी प्रकार बादर एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकेन्द्रिय प्रथिबीकायिक

बादर प्रथिवीकायिक सूम प्रथिवीकायिक जलकायिक बादर जलकायिक सूक्ष्म जलकायिक अग्नि

कायिक बादर अग्निकायिक सूक्ष्म अप्निकायिक वायुकायिक बादर बायुकायिक सूस वायुक्रायिक

बादर बनस्पतिकायिक प्रतयेकशरीर वनस्पतिकायिक बादर बनस्पतिकायिक सूम वनस्पतिकायिक

निगोद बादर निगोंद और सूक्ष्म निगोद जीवोंके जानना चाहिये । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त

सृदम एकेन्द्रिय पर्याध और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोक

घायोंकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका भंग एकेन्द्रियोंके समान है। तथा अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जयन्यकाल एक समय और उत्करष्टकाल अन्तमु हते है । सम्यक्त्व चौर सम्यस्मि

ध्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल अन्तमु हू्त है। इसी

प्रकार पाँचों स्थावरकाय बादर अपर्याप्त पाँचों स्थावरकाय सूक्ष्मपर्याप्त और पाँचों स्थावरकाय सूक्ष्म

अपर्य जीबोंके जानना चाहिए। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त विकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय पर्याप्त जीबोंमें

मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कषटकाल दो समय हे।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्क्रष्टकाल संख्यात हजार वषं टे । तथा

अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान है । सोलह कपाय और नो नोकपषायोंकी भुजगार

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ठकाल सत्रह समय है तथा अल्पतर और

अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका भंग मिथ्यात्वके समान है। सम्यकत्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

पृ

Page 53:

३४ जयधवबलासहिदे कसायपाहृडे द्विदिविहत्ती ३

मिच्छत्त० अप्प० मिच्छत्तमंगो । विगलिंदियअपज्जत्ताणमेव चव णवरि अप्पद० ज०

एगसमओ उक० अंतोम्म ० ।

५६ पंचिंद्यपंचिं०पज्जताणमोघं । णवरि श्रुज० जह० एगसमओ उक्क०

तिण्णि अड्वासस समया। सम्म सम्मामि० अप्प० जह० एगसमयो । पंचिदिय

अपज्ज० पंचिं०तिरिक्खअपज्ज ०भंगो ।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके समान है। विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंक्े इसीप्रकार

जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि इनमें अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक

समय और उत्क्ृष्टकाल अन्तमुहू् है ।

विशेषार्थएकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिका उत्कृटकाल दो समय अड्धाक्षय

और संक््लेशक्षयकी अपेक्षासे कद्दा है। तथा सोलह कपाय और नौ नोकषायोंकी भुजगार स्थितिका

जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल सत्रह समय जो दूसरी प्रथिवीमें बतला आये हैं वह एकेन्द्रियों

के भी बन जाता है अतएव यहाँ उक्त प्रकृतियोंकी सुजगार स्थितिका काल दूसरी प्रथिवीके समान

कहा है । एकेन्दरियोके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजगार अवक्तव्य व अबस्थित स्थिति

नहीं होती क्योंकि इनके ये पद सम्यग्दष्टिके पहले समयमें ही सम्भव है। एकेन्द्रियोंमें

सव ग्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ठटाल पल्यके असंख्यातबें भाग प्रमाण है क्योंकि जो

पंचेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर निरन्तर एकेन्द्रिय ही रहे आते हैं उन्हें सत्तामें स्थित

स्थितिको घटाकर एकेन्द्रियके योग्य करनेमें पस्यका असंख्यातवां भाग प्रमाण काल लगता है ।

मूलमें बादर एकेन्द्रिय आदि और जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी इसी प्रकार जानना चाहिये ।

किन्तु बादर प्केन्द्रिय अपयां्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका उत्कृष्ट

काल अन्तमुंहूर्त है इसलिये इनमें सब प्रकतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्क्ृष्टकाल अन्तमुंहू्त कहा ।

इसी प्रकार पाँचों स्थावरकाय बादर अपर्याप्त तथा सुम पर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त जीबोंके भी

जानना चाहिये। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त विकलेन्द्रिय और विकलेन्दिय पर्याप्त जीवोंका उल्छृष्काल

संख्यात हजार बषे है इसलिये इनमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्काल संख्यात हजार

चे कहा । तथा बिकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका उ्छषटकाल अन्तमुंहूर्ते है अतः इनमें सब प्रकृतियोंकी

अल्पतर स्थितिका उद्ृष्ठकाल अन्तमुहूर्तप्रमाण कहा । शेष कथन सुगम है ।

५६ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके ओघके समान जानना चादिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि इनमे सुजगारका जघन्पकाल एक समय और उच्छषटकाल मिथ्यात्वकी अपेक्षा

तीन समय तथा शेषकी अपेक्षा अठारह समय है । तथा सम्यक्त्व और सम्यभ्मिथ्यात्वकी अस्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय दै । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके पंचेन्द्रिय तियेंच अपर्याप्कोंके

समान जानना चाहिए।

विशेषार्थ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें संज्ञी और असंज्ञी दोनों भेद सम्मिलित

हैं अतः इनमें मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिका उत्कृष्काल तीन समय तथा सोलह कषाय और नौ

नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उक्छृष्टकाल अठारह समय वन जाता है। इन तीन और अठारह

समयोंका विशेष खुलासा पहले किया ही है उसी प्रकार यहाँ भी जान लेना चाहिये। तथा सम्यक्त्व

श्नौर सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल एक समय उद्देलनाकी अपेक्षा प्राप्न होता है।

इस प्रकार यहाँ उक्त कथनमें ओघसे विशेषता है। शेष सव कथन ओघतके समान है ।

१ ता० प्रतौ स्मयों। पंचिइति पाठः ।

Page 54:

गा० २२ द्विंदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारंकाला २५

६० बादरपुढविपज्ज ०बादरआउ ०पज्ज ०बादरते उपज्ज ०बादरवाउपज्ज ०बादर

वणप्फदिपत्तेय ०पज्ज० सब्ब्रपयडी० भ्रुज०अवष्टि ० विदियपुढविभंगो । अप्पद० विग

लिंदियपज्जत्तभंगो ।

६१ तसअपज्ज० छव्बीसपयडी० झ्ुुज०अवष्टि० ओघं । णवरि इतिथ पुरिस०

श्ुज० सत्तारस समया । अप्पद् जह० एगस० उक० अंतोझ्० । सम्भत्तसम्मामि०

अप्प० ज० एगसमओ उक अंतोम्मु ०१ ।

6 ६२ पंचमण०पंचवचि० मिच्छत्तसोलसक०णवणोक०सम्पत्तसम्मामि ०

अप्पद० जह० एगसमओ उक्क० अंतोम्म० । सेस० विदियपुढविभंगो । एवं वेउव्विय ० ।

कायजोगि० ओघमंगो । णवरि सब्वेसिमप्प० रक ० पलिदो० असंखे०भागों। ओरा

लिय० मिच्छत्त ० झ्ुज० ज० एगसमओ उक ० वे समया। अबह्धि ओघ॑ । अप्प०

ज० एगस० उक्० चावीस वाससहस्साणि देखणाणि सोलसक०णवणोक० श्रुज० ज०

एगस० उकक० सत्तारस समया । अवद्ध ओधं । अप्पदर० सम्मत्तसम्मामिच्छचाण

६० बाद्र्टयिवीकायिक पर्याप्त बाइर जलकायिक पर्याप्त बादर अभिकायिक पर्याप्त बादर

बायुकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीबोंके सब प्रकृतियोंकी सुग

गार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका भंग दूसरी प्रथिवीके समान है। तथा अल्पतर स्थिति

विभक्तिका भंग विकलेन्द्रिय पर्याप्रकोंके समान है ९

6 ६१ चस अपयांप्कोंमें छब्बीस प्रकृतिर्योकी भुजगार और अवस्थित स्थिति विभक्तियोंका

भग ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ ख्रीवेद और पुरुषबेदकी भुजगार स्थिति

विभक्तिका उत्कृष्टकाल सन्नह समय है। तथा अल्पतर स्थितिनिभक्तिका जघन्यकाल एक समय और

उत्कष्ठकाल अन्तमुंहूर्ते है। सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल

एक समय और उत्कृष्टकाल अन्तमुहूत दै ।

विशेषार्थसब अपर्याप्तक नपुंसक दी होते हैं इसलिये त्रस अपर्याप्तकोंमें त्लीवीद और

पुरुषवेदकी मुजगार स्थितिका उत्क्ष्टकाल सत्रह समय ही प्राप्त होता है। तथा अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट

काल अन््तमुहू् है इसलिये इनमें सब प्रकृतियोंक्री अल्पतर स्थितिका उत्क्ष्ठकाल अन्तत कदा ।

शेष कथन सुगम हे।

6 ६२ पाँचों मनोयोगी और पाँचों बचनयोगी जीरोमिं मिथ्यात्व सोलह कषाय नो नोकषाय

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय ओर उत्कृष्टकाल

अन्तमुहूते है। तथा शेष कथन दूसरी प्रथिवीके समान है । इसी प्रकार बैक्रियिककाययोगी जीबोंके

जानना चाहिये । काययोगियोंके ओघके समान भंग है। किन्तु इतनी विशषता है कि इनके सब प्रकृतियों

की अल्पतर स्थितिविभक्तिका उत्कृष्टकाल पल््योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है । ओऔदारिककाय

योगियोंमें मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल दो समय

है। अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल

एक समय और उत्कृष्टकाल कुछ कम बाईस हजार वर्ष है। सोलह कषाय और नौ नोकषायोकी

झुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल सत्रह समय है। अवस्थितस्थिति

विभक्तिका काल ओघके समान है। तथा इन प्रकृतियोंकी चअर्पतर स्थितिविभक्तिका और

१ ता प्रतौ सम्मत्तसम्मामि० भष्य० ज०एणसमओ उक्क० अंतोमुहुर्त इति पाठो नास्ति ।

Page 55:

३६ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

मप्पदरस्स च ज० एगसमओ उक ० बावीस वस्ससहस्साणि देखणाणि । सेसमोषं ।

ओरालियमिस्स० भिच्छत्त शज० ज० एगस० उक तिण्णि समया । अप्पद॒०

एगस० उक० अतोष्ठ अवष्टि० ज० एगस० उक अतो । सोलसक०णव

णोक० झुज० ज० एगस० उक० अष्टरस समया । अवट ज० एमस० उक

अंतोष्ठ । अप्प० ज० एगस ० उक्त अतो ०। सम्मत्तसम्मामि अप्प० ज० एगस ०

उक० अंतोम्मु० । वेउव्वियमिस्स द्भावीसपयडीणमप्य ज० एगस ० उक्क० अंतोम्म०।

सेस० बिदियपुढविभंभो । णवरि पदविसेसो जाणियव्वो । आहारकाय० सब्वपय०

अप्प० ज० एगस० उक० अतो । आहारमिस्स० सबव्वपय अप्प० जहण्णुक

अंतोघ्ठु । एवषवसमशम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं । कम्मइथ ० मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक०

श्रुज० ज० एगसमओ उक ० वे समथा। अप्य ०ग्रवह्धि ० ज० एगसमग्रो उक ० तिण्णि

समया । सम्मत्तसमभ्मामि अप्प० ज० एगस० । उक्त तिण्णि समया । एवमणाहार० ।

सम्यत तथा सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जधन्यकाल एक समय और उत्कृष्ठकाल

कुछ कम बाईस हजार वर्ष है। शेष कधन ओघके समान है। औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें सिथ्यात्वकी

सुजगार स्थितिबिमक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृ्काल तीन समय है। अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्क्ृष्टकाल अन्तमुहूते है । अवस्थित स्थितिविभक्ति

का जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल अन्तमुहत्ते है। सोलह कषाय ओर नो नोकषायोंकी

भुज्गार स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ककाल अठारह समय है। अवस्थित

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्क्ष्टकाल अन्तमुंहू्ते है । अल्पतर स्थिगिविभक्तिका

जघम्यकाल एक समय और उत्क्षकाल अन्तमुहूतं है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय आओर उलत्कृष्ठकाल अन्तमुंहूर्त है । वैक्रियिकमिश्रकाय

थोगियोंमें अद्ठाईस प्रकृतियोंकी अस्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्काल

अन्तमुहूर्त है। शेषका भंग दूसरी प्रथिवीके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि पदविशेष

जानना चाहिये। आहारककाययोगियोंमें सव प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल

एक समय ओर उत्क्ष्ठकाल अन्तमुहूते है। आद्यारकमिश्रकाययोगियोंमें सब प्रकतियोंकी अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्य और उचछृषटकाल अन्तमुंहूर्त है। इसी प्रकार उपशमसम्यम्दष्टि और

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चाहिए। कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय ओर नो

नोकपायोंकी भुजञमार और अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल दो

समय है। अत्त और अवस्थित स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय ओर उत्कृष्टकाल तीन

समय है। सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्थकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और

उत्कृष्ठकाल तीन समय है । इसी प्रकार अनाहारक जीबोंके जानना चाहिए ।

विश्ेषार्थपाँचों मनोयोग पाँचों बचनयोग और वैक्रियिककाययोगका उत्क्ृष्टकाल अन्त

सहतं है अतः इनमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्क्शकाल अन्तमुदूते कद्दा। औदारिक

काययोगका उल्कृष्टकाल कुछ कम बाईस हजार वषे है अतः इसमें सव प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थिति

का उत्कृष्टकाल कुछ कम वाईस हजार वपं कदा । औदारिकमिश्रकाययोगका उत्कृष्टकाल अन््तमुंहूर्त

है अतः इसमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कष्टकाल अन्तमुंहूर्त कहा । बैक्रियिकमिश्रकाय

योगनं भी इसी प्रकार समझना चाहिये। तथा इसी प्रकार आहारककाययोग और आहारकमिश्र

Page 56:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालोी ३७

6 ६३ वेदाणुवादेण इत्थि० मिच्छत्ततस शुज० ज० एगसमओ उकस्सेण

तिण्णि समया अप्प० ज० एगस० उक्क० पणवण्ण पलिदोबमाणि देश्णाणि ।

अव्टि० ओधं । बारसक०णवणोक० अज ज० एगस० उक० अटद्ठारस समया।

णवरि पुरिस०णबुंस० सत्तारस समया। अप्प०अवषटि ० मिच्छत्तभंगो । अणंताणु ० चउक०

एवं चेव । णवरि अवत्तव्य० जदण्णुक० एगस० । सम्मत्तसम्मामि अज अबह्ि०

अवत्तव्ब ० शोषं अष्पद्० ज० एगस० उक ० पणवण्णपलिदो० सादिरेयाणि ।

पुरिसवेद ० पंचिदियमंगो । णवरि इत्थिणवुंस युज उक ० सत्तारस समया । णबुंस

मिच्छत्तसोलसक०णवणोक०श्रुज ० अवहि० ओधं । णवरि इत्थिपुरिस० युज ० उक ०

सत्तारस समया । अप्य ज० एगस० उक० तेत्तोससागरोबमाणि देष्णाणि ।

अणंताणु ०चउक अवत्तव्वं ओघं । सम्मत्तसम्मामि ० अप्प ज० एगस० उक०

तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि सेस० ओघं । अवगदवेद चडबीसपयडि० अप्प०

काययोगमें भी समना चाहिये । इतना विशेषता है कि मिश्रयोगोंमें अवक्तव्य भंग नहीं दोता।

तथा आहारकक्ाययोग और आद्वारकमिश्रकाययोगमें एक अल्पतर स्थितिविभक्ति ही होती है ।

उपशमसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका उत्क्ष्ठकाल भी अन्तमुंहूर्त हे तथा इनमें एक अल्पतर

स्थितिविभक्ति ही होती है इसलिये इनमें अल्पतर स्थितिके कथनको आहारकट्ठिकके समान कदा ।

कर्मण काययोगमें अद्धाक्य और संक्लेशक्षयकी अपेक्षा सर्वत्र भुजगारके दो समय ही प्राप्त होते

हैं इसलिये इसमें छब्बीस प्रकृतियोंकी भुजगार स्थितिका उच्छृष्टकाल दो समय कहा । तथा इसका

उत्क्ष्काल तीन समय है इसलिये इसमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उचछषटकाल तीन समय

कहा । संसारी जीवोंके अनाह्वारक अवस्था कामंणकाययोगमें ही होती है अतः इसके कथनको

कार्मणकाययोगके समान कहा । शेष कथन सुगम है ।

6 ६३ बेदमागंणाके अनुवादसे ख्रावेदिय।में मिथ्यात्वकी भुजञगार स्थितिविभक्तिका जघन्य

कः एक समय और उत्कृष्ठकाल तीन समय हे । अल्पतर स्थितिविर्भाक्तका जघन्यकाल एक समय

और उत्कृष्टकाल कुछ कम पचवन पल्य है। अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल ओपघके समान है ।

बारह कषाय और नौ नोकपायोंकी भुजगार स्थितिविभभक्तिका जधन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट

काल अठारद समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके पुरपवेद चौर नपुंसकवेदकी भुजगार

स्थितिविभक्तिका उत्कुष्टकाल सत्रह समय है । तथा अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभक्तिका मग

मिथ्यात्वके समान है। अनन्तानुबन्धी चतुष्कका इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी॥वशेबता है

कि अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य ओर उत्कृष्टकाल एक समय है । सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्व

की भुजगार श्चवस्थित्त और अवक्तव्य स्थितिविभक्तियोंका काल श्नोधके समान है। अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उल्कृष्टकाल साधिक पचवन पर्य है। पुरुषबेदी जीवाके

पंचेन्द्रियोंके समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके खीवेव् आर नपुंसकवेदकी सुजगार

स्थितिविभक्तिका उच्ृष्टकाल सत्र समय है । नपुंसकवेदयोंमें ।मथ्यात्व सोलह कपाय ओर नो

नोकषायोंकी युजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान है। किन्तु इतनी

विशेषता है कि इसके खीवेद श्रौर पुरुषवेदकी भुजगार स्थितिविभक्तिका उत्कृष्टकाल सत्रह समय है ।

अल्पतर स्थितिनिभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उच्छृष्टकाल कुछ कम तेतीस सागर है।

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका काल धके समान है। सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृटकाल साधिक तेतीस

Page 57:

ड्प जंयधंवलासहिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

ज० एगस० उक ० अंतो्ु०। एवमकसा०सुहुम ०जहाक्खादसंजदे त्ति ।

6 ६४ चत्तारिक० मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामि सोलसक ०णवणोक० यूज ०

अवदि ० सम्म०सम्मामि०अणंताणु चउक ० अवत्तव्ब श्रोधं । अप्प० ज० एगस्०

उक० अंतोष्चु ।

६५ मदि०सुद मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० शुज०अवहि० ओघं । अप्प०

ज० एगस० उक ० एकत्तीसं सागरो सादिरेयाणि । सम्मत्तसम्मामि अप्पद०

सागर है । शेष कथन ओघके समान हे । अपगतवेदियोंमें चौबीस श्रकृतियोंकी अल्पतर स्थिति

विभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उच्छषटकाल अन््तसुंहूर्त है । इसी प्रकार अकषायी

सूद्मसांपरायिकसंयत अर यथाख्यातसंयत जीबोंके जानना चाहिए ।

6 ६४ क्रोधादि चारों कषायवाले ज॑वोमे मिथ्यास्व सम्यक्त्व सम्यम्मिथ्यात्व सोल कषाय

और नो नोकषायोंक्री झुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका तथा सम्यक्त्व सम्यग्मिध्यात्व

और अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य घ्थितिविभक्तिका काल ओघके समान है। अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्क्ट्काल अन्तमुंहू्त है।

विशेषार्थवेदमारगणामें निम्न वाते ध्यान देने योग्य हैं । पहली तो यह कि विवश्चित बेदमें

उस वेदके अतिरिक्त शेष वेदोंकी जगार स्थितिका उच्ृष्टकाल सत्र समय होता है । दुसरी यह

कि यद्यपि खीवेदी आआदिका उत्कृष्टकाल सो पट्य प्रधक्स आदि है फिर भी इनमें मिथ्यात्व आदिकी

अल्पतर स्थितिका काल उस वेदके उत्क्ृष्काल प्रमाण नहीं है। इनमेंसे ख्रीवेदमें मिथ्यात्व आदि

छब्बीस प्रकृतियोंक्री अल्पतर स्थितिका काल कुछ कम पचवन पस्य है क्योंकि यहाँ सम्यग्दशन श जो

उत्कृष्टकाल है बही यहाँ उक्त प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उक्छृष्टकाल प्राप्त होता है। किन्तु सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वके विषयमें स्थिति इससे भिन्न है । बात यह् है कि इनकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट

काल सम्यक्त्व व मिथ्यात्वके क्रमसे प्राप्त दोते रहनेसे होता है और स््ीवेदियों में मिथ्यादष्टि जीव ही उत्पन्न

होता है अतः सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिका उत्कृषकाल साधिक पचवन पल्य प्राप्त

होता है । तथा ओघयमें सत्र प्रकृतियोंको जो भुजगार आदि स्थिति कदी दै वह् अधिकतर पुरुषबेद

की प्रधानतासे ही घटित होती है । पंचेन्द्रियोंमें सी बहू अविकल बन जाती है क्योंकि पुरुषवेदी

पंचेन्द्रिय ही होते हैं अतः यहाँ पुरुपवेदभें सुजगार स्थिति आदिका काल पंचेन्द्रियोंके समान कहा।

तथा नपुंसकवेदमें २६ प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाल कुछ कम तेतीस सागर हे क्योकि

यहाँ सम्यग्दर्शनका जो उत्क्ृष्टकाल है वही उक्त प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उच्छृषटकाल है। तथा

सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वकी अल्पतर स्थितिका उच्छष्टकाल साधिक तेतीस सागर है। विशेष

खुलासा जिस प्रकार स्त्रीवेदियोंके कर आये हैं उसी प्रकार यहाँ भी कर लेना चाहिये। शेष कथन

सुगम है। अवगतवेदमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थिति ही होती है। तथा इसका जघन्यकाल

एक समय और उत्क्ृष्टकाल अन्तमुहूर्त है अतः इसमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल

एक समय और उल्कृष्टकाल अन्तमुहूर्त कहा । इसी प्रकार अकपायी सूच्ष्मसाम्परायिकसंयत और

यथाख्यातसंयत जीबोंके भी घटित कर लेना चाहिये । तथा क्रोधादि चारों कषायोंकी अल्पतर स्थिति

का उ्ृटकाल अन्तमुंहूर्त है अतः इनमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाल अन्तमुहूते

कहा। शेष कथन सुगम है।

6 ६५ मत्यज्ञानी और श्रताज्ञानी जीबोंमें मिध्यात्व सोलह कथाय और नौ नोकषायोंकी

आुजगार और अवस्थित स्थितिविभाक्तका काल ओघके समान है । तथा अल्पतर स्थितिविभक्तिका

4 ता० प्रतौ सागरो० देसूणाणि इति पाठः ।

Page 58:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो ३६

जह ० अंतोम्म० उक पलिदो असंखे मागो । विहंग मिच्छत्तसोलसक ० अरुज ज०

एगस० उक ० चिदियपुढविर्भेगो । अवह ओघं अप्प० जह० एगस० उक्क०

एक्कत्तीसं सागरो० देष्रणाणि । सम्म ० सम्मामि अप्प० ज० एयस्० उक्क०

पलिदो० असंखे ०भागो ।

६६ आशभिणि०सुद०ओहि मिच्छचसोलसक ०णवणोक ० अप्प० ज०अंतोमु ०

उक्क० छावहिसागरोब॒माणि सादिरियाणि। णवरि अणंताणु० देखू० । सम्मत्तसम्मामि०

अप्प० ज० अंतोम्म ० उकक्र० छावह्विसागरो० सादिरेयाणि । श्रुज०अबद्ठि ०अव्त ०

णत्थि । मणपज्ञ अद्वाबीसं पथ अप्प० जह० अंतोम्म ० उक्र पुज्वकोडी देखणा ।

एवं संजद सामाईय ०छेदोव परिहार ० संजदासं जद त्ति । णवरि सामाइय ०छेदोव ०

चउबीसपय ० अप्प० जह० एयममओ । असंज० ओधमंगो । णवरि अ्रष्प ० सादिरेयं

तेचीसं सागरोवभाणि । सम्म० अप्प० जह० एगसमओ

जघन्यकाल एक समय और उत्कष्रकाल साधिक इकतीस सागर है । सम्यक्त्व चौर सम्यग्मिथ्यात्वकी

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जधन्यकाल अन्तमुंहूर्त और उक्छृष्ठकाल पल्योपमक्रे असंख्यात भाग

प्रमाण है। विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यात्व सोलह कथाय औ नौ नोकपषायोंकी भुजगार स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकालका भंग दूसरी प्रथिवीके समान है। अवस्थित स्थिति

विभक्तिका काल ओघके समान है । तथा अल्पतर स्थितिविभक्तिका जबन्यक्ाल एक समय और

उत्कृष्टकाल कुछ कम इकतीस सागर है । सम्यक्त्व चौर सम्यग्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्ति

का जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल पल्योपमक असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

6 ६६ आमिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीबोंमें सिथ्यात्व सोलह कषाय

और नो नोकपायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जधन्यकाल अन््तमुंहू्त और उत्कृष्टआाल साधिक

छुथासठ सागर है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीकी अपेक्ता कुछ कम छुयासठ सागर

है । सम्यक्त्व और सम्याग्मथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल अन्तमुंहूतते और उत्कृष्ट

काल साधिक् छघासठ सागर है। यहाँ भुजगार अवस्थित और अवक्तव्य विभक्तियाँ नहीं हैं ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें अट्ठाईस अकृृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जधन्यकाल अन्तमुंहूर्त और

उत्कृष्ककाल कुछ कम पूेकादि प्रमाण है। इसी प्रकार संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत

परिद्दारविशुद्धिसंघबत और संयतासंयत जीबोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि सामायिक

संयत्त और छेदोपस्थापना संयत जीवों चौबोस प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल

एक समय है। असंयतोंमें ओधक समान भंग है। किन्तु इतनी विशेषता है कि इनमें अल्पतर

स्थितिविभक्तिका उत्कृष्काल साधिक तेतीस सागर है । तथा सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल एक समय हे ।

विशेषार्थनौवें ग्रैवेयकममें मिथ्यात्त आदिकी अल्पतर स्थिति होती है। अब यदि वहाँ

कोई मिथ्यादृष्टि जीव उत्पन्न हुआ तो उसके आदि और अन्तमं भी अल्पतर स्थिति पाई जाती है

अतः मत्यज्ञानी और श्रताज्ञानौ जीबोंके मिथ्यात्व आदि छव्बीस प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका

उल्छृषटकाल साधिक इकतीस सागर कहा। तथा विभंगज्ञान अपर्याप्त अवस्थामें नहीं पाया जाता

इसलिये इसमें उक्त प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाल कुछ कम इकतीस सागर कदा ।

तथा मिथ्यादृष्टिके सम्यकत्थ और सम्यग्मिथ्यात्वकी सत्ता पल्यके असंख्यातबें भाग प्रमाण कालतक

9 ता० प्रतौ जह० एगस० इति पाठः ।

Page 59:

घ० जयघवलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

६७ घक्खु मिच्छतसोलसक णवणोक ० भुज ०अवहि ० अणंताणु चउक्क ०

अवत्तव्ब० ओघं । अप्प० ज० एगस० उक्क० तेवहिसागरोबमसद सादिरेयं।

सम्मत्तसम्मामि० भुज ०अवहि ०अवत्तव्यमोधं । अप्प० ज० एगस० उक्क० वे

छावद्विंसागरो० सादिरेयाणि । ओहिदंस० ओहिणाणिभंगो ।

ही पाई जाती है अतः उक्त तीनों अज्ञानों में इन दो प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाल पल््यके

असंख्यातवें भागप्रमाण कहा । खाभिनिवोधिकज्ञान आदि सम्यसक्षानोंमें केवल अल्पतर स्थिति ही

पाई जाती है। किन्तु मनःपर्ययज्ञानकों छोड़कर इनका जघन्यकाल अन्तमुंहूत और उत्कष्काल

साधिक छुथासठ सागर है इसलिये इनमें सव प्रकरतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल अन्तमुंहूर्ते

और उत्कृष्काल साधिक छुथासठ सागर कहा। किन्तु अनन्तानुबन्धी चतुष्क इसका अपवाद हे।

बात यद् है कि वेदक सम्यक्टवके साथ अनन्तानुबन्धीका सतव कुत कम छथासठ सागर तक ही

पाया जाता है इसलिये इसकी अल्पतरस्थितिका उत्कृष्टकाल कुचं कम छथासठ सागर का । तथा

मनःपर्ययज्ञानका जवन्यकाल अन्त्ुहूतं और उच्छृष्टकाल कुछ कम पूर्वकोटि वपे प्रमाण है अतः

इसमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल अन््तमुंहू्ते और उत्कृष्काल कुछ कम पूर्व

कोटि वर्ष प्रमाण कहा । मनःपर्ययज्ञानके समान संयत आदि मार्गणाओंमें भी जानना चाहिये

क्योंकि इनका जवन्य और उत्क्ष्टकाल मनःपर्ययज्ञानके समान है। इतनी विशेषता हे कि सामायिक

और छेवोपस्थानाका जघन्यकाल एक समय भी है जो कि उपशान्तमोदसे च्युत हुए जीवके ही

सम्भव है क्योंकि ऐसा जाव एक समय तक अनिवत्तिकरण गुशस्थानमें रहा ओर मरकर यदि देव

हो जाता है तो उसके सामायिक और छेदोपस्थापना संयमका जवन्यकाल एक समय पाया जाता

है । पर यहाँ २४ प्रकृतियोंकी सत्ता ही सम्भव है अतः २४ प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्य

काल एक समय कहा । असंयत सार्गणामें और सब काल तो ओघके समान बन जाता हे किन्तु

सब प्रकृतियोंकी अल्पतरस्थितिका उत्क्ष्टकाल साधिक तेतीस सागर तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यास्वकी अल्पतर स्थितिका जधन्यकाल एक समय प्राप्त होता है। बात यह है कि अविरतसम्यम्दृष्टिका

उत्कृष्टकाल कुछ कम एक पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागर है अतः असंयममें सब ग्रकृतियोंकी

अल्पतर स्थितिका उत्कृटकाल उक्त प्रमाण कहा । तथा यहाँ ऋृतकत्यवेदककी अपेक्षा सम्यक्त्वकी

अल्पतर स्थितिका जघन्यकाल एक समय प्राप्त होता है।

6 ६७ चज्ञदशैनवाले जीबोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय ओर नौ नोकषायोंकी भुजगार और

अवस्थित स्थितिविभक्तिका तथा अनन्ताजुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका काल ओघके

समान है। अल्पतर स्थित्तिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उक्ृष्टकाल साधिक एक सौ

त्रेसढ सागर हे । सम्यक्त और सम्यग्मिथ्यास्वकी सुजगार् अवस्थित और अवक्तज्य स्थितिविभ

क्तियोंका काल ओघके समान है । तथा अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय ओर

ल्छृषकाल साधिक एक सौ वत्तीस सागर दै । अवधिदशेनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानी

ज्ञीबोंके समान है।

विशेषार्थउछद॒शेनमागेणाका काल यद्यपि दो हजार सागर है पर इसमें अल्पतर स्थिति

का काल इतना नहीं प्राप्त दोता इसलिये यह कहा है कि च्ुदर्शनमें २६ प्रकृतियोंकी अल्पतर

स्थितिका जघन्यकाल एक समय ओर उ्छृष्टकाल साधिक एक सौ त्रेसठ सागर है। तथा

सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्टकाल साधिक एक सौ वत्तीस सागर है।

३ ता प्रतौ चडक्क० ओघं भवत्तव्ब० इति पाटः ।

Page 60:

गा० २२ ट्विदिविद्दत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो 2१

६८ किण्हणीलकाउ० मिच्छत्त० शुज०अवहि ओघं । अप्पद० ज० एगस०

उक्क० तेत्तीससत्तारससत्तसागरोवमाणि देखणाणि। सोलसक०णवणोक० झुज०

अवधि ओघं । अप्प० मिच्छत्तमंगो । अणंताणु०चउक्क० अवत्तव्व जहण्णुक्क०

एगस० । सम्मत्तसम्प्रामि० युज ० अवदि ०अवत्तव्वं ओघं । अप्प ज० एगस्त०

उक्क० तेत्तीपसत्तारससत्तसारोव देखणाणि । तेड सोहम्मर्भगो पम्भ सहस्सार

भगो । सुक्क आणदमंगो । णवरि अप्प० तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि ।

६६ अभव छव्वीस० मदि ०मंगो । सम्माइध्ि ० आमिणि०भंगो । खद्य

सम्मा० एक्कवीस्तपय० अप्पद० ज० अतोहं उक्क तेत्तीसं सागरो० सादि

रेयाणि । वेदग ० भिच्छत्तसम्मामिच्छत्तअणंताणु चडउक० ओहि०भंगो । णवरि उक

छावहिसागरो० देखणाणि । सम्मत्तबारसक०णवणोक० अप्प० ज० अंतोम्म ० उक

छावट्विसागरोत्रम।णि ॥ सासण० सब्बपयडि ० अप्प० ज० एगस० उक० छ आव

लियाओ । मिच्छाइट्ठि ० मदिअण्णाणिमंगो ।

यह ओघके समान घटित कर लेना चाहिये। किन्तु इन दो प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिके जघन्य

कालमें कुछ विशेषता है । बात यह् है कि उठेलनाकी अपेक्षा इनकी अल्पतर स्थितिका जघन्य काल

एक समय भी पाया जाता है अतः यहाँ अस्यत्र स्थितिका जघन्य काल एक समय कहा। शेष कथन

सुगम है। तथा इसके आगे अन्य मार्गणाओंमें जो कालका निर्देश किया है उसका अलुगम पू

कथने हो जाता है इसलिये प्रथक् खुलासा नहीं किया ।

6 ६८ कृष्ण नील और कापोत लेश्यावाले जीबोंमें मिथ्यात्वकी भुजगार और अवस्थित

स्थितिविभक्तियोंका काल ओचके समान है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय

और उक्ृषटकाल क्रमसे कुछ कम तेतीस कुछ कम सत्रह और कुछ कम सात सागरप्रमाण है।

सोलद्द कषाय और नो नोकपायोंकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका काल अरोचके समान

है । तथा अल्पतर स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके समान है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अवक्तञ्य

स्थितिविभक्तिका जघन्य और उक्ृष्टकाल एक समय है। सम्यक्त्व चौर सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजगार

अवस्थित और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका काल ओघके समान है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल क्रमसे कुछ कम तेतीस कुछ कम सत्रह और कुछ कम

सात सागर है । पीतलेश्यावाले जीवोंके सौधर्मके समान भंग है । पद्मलेश्यावालोंके सहस्वारके समान

भंग है। और शुक्ललेश्यावालोंके आनतकल्पके समान भंग है। किन्तु इतनी विशेषता है कि शुक्ल

लेश्यामे अल्पतर स्थितिविभक्तिका उत्कृष्टकाल साधिक तेतीस सागर है ।

6 ६९ अभय्योंमें छब्वीस प्रकृतियोंका भंग मत्यज्ञानियोंके समान है। सम्यग्टष्टियोंके आभिनि

बोधिवज्ञानियोंके समान संग है। क्ञायिकसम्यग्दष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल अन्तमुंहूर्ते और उत्क्रष्टकाल साधिक तेतीस सागर है। वेदकसम्यस्टष्टियोंमें मिथ्यात्व

सम्यम्मिथ्यात्त ओर अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग अवधिज्ञानियोंके समान है। किन्तु इतनी

विशेषता है कि अल्पतर स्थितिविभक्तिका उत्कृष्ट काल कुछ कम छथासठ सागर है। सम्यक्व

बारह कपाय और नौ नोकपारयोकी अस्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल अन्तमूहूते और उत्कृष्ट

काल छथासठ सागर है । सासादनसम्यम्टष्टियोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्यकाल एक समय ओर उत्कृष्टकाल छह आवली है। मिथ्यादृष्टियोंके भत्यज्ञानियोंके

समान भंग है ।

६

Page 61:

र जयधवलासदहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

6 ७० सण्णि० पंचिंदियभंगो। एवमादारीणं । णवरि सण्णि० मिच्छ०सोलसक०

णव्णोक० आुज० उक्क्र० वे सत्तारस समया। असण्णि० मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामि०

सोलसकऋ०णवणोक० अप्पदर ज० एगसमओ उक्क० पलिदो असंखे०भागो । सेस

ओरालियमिस्स ०मंगो ।

एवं कालाणुगमो समन्तो ।

अंतरं।

6 ७१ सुगममेदं अहियारसंभालणफलत्तादो ।

मिच्छृत्तसस सुजगारअवधिदकम्मंसियस्स अंतरं जहएणेण एगसमओ।

७२ छदो चु ठगारअवद्िदविहनत्ती ओ एगसमयं कादृण विदियसमए अप्पदरं

करिय तदियखए सुजगारअबहिदेसु एगसमयमेच्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तेवह्िसागरोबमसद॑ सादिरेथं ।

७३ तं जहातिरिक्खेस मणुस्सेसु वा शुजगारअवह्िदाणमारदि कादृण प्रणो

तस्येव श्रत इत्तकालमप्पदरेणंतरिय तिपलिदोव्रमिएसुप्पज्ञिय तेवष्टिसागरोवमसदं ममिय

मणुस्तेषुष्पज्ञिय अतो गदे संकिलेस प्रेदुण श्रुज ०अबष्टि ०कदेसु लद्धमंतरं होदि ।

6 ७० संज्ञी जीवो पंचेन्द्रियों के समान संग है। इसी प्रकार आहारक जीवोंके जानना चाहिए।

पिन्तु इतनी विशेषता है कि संझ्षियोंमें मिथ्यात्य सोलह कपाय और नो नोकपायोंकी भुजगार

स्थितिविभक्तिका उत्कृष्टकाल मिथ्यात्वकी अपेक्षा दो समय और रोपी अपेक्षा सन्रह समय है ।

असंक्ञियोमे मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व सोलह कपाय और नौ नोकपायोंक्री अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल पल्योपमक्रे असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

तथा शेत्र भंग औदारिकमिश्रकाययोंगियोंके समान है ।

इस प्रकार कालानुगम समाप्त हुआ।

आगे अन्तरालुगमका अधिकार है ।

७१ यह सूत्र सुगम है क्योंकि अधिकारकी संम्दाल करना इसका फल है ।

ॐ मिथ्यात्वकी झुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीवका जघन्य

अन्तरकाल शक समय हे ।

७२ क्योंकि जो कोई जीव सुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंकों एक समय तक

दरके ओर दूसरे समयमे अल्पतर स्थितिविभक्ति करके यदि तीसरे समयमे पुनः भुजगार और

वदद विभक्तियाँ रस्ते दै तो उनके जुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका केवल

एप षय न्तर पाया झाता हैं।

उत्कुष्ट अन्दरकाल साधिक एकसौ तरेसट सागर है ॥

७३ उ खुशाखा इस प्रकार है जिन्होंने तियंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर भुजगार

उपर उवरि स्थिति वमति प्रास्म्स किया । पुनः वहीं पर अन्तमुद्दत कालतक अल्पतर स्थिति

विभक्तिसे छन्द अन्दरित दिया। पुनः वे तीन पल्यकी आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न होकर और

एकस उलट सागर काल्ततक परिश्रमण करके भनुष्योंमें उत्पन्न हुए और वद्य पर उन्होंने अन्तमुंहूर्त

कालके बाद संक्लेशकी पूत्ति करके सुजगार और अवस्थित विभक्तियोंको किया । इस प्रकार भुजगार

आर अनस्थित विभक्तियोंका उत्कृष्ट अन्तर साधिक एकसौ त्रेसठ सागर प्राप्त द्ोता है।

Page 62:

गां० २२ दिदिविहत्तीए उत्तरपयाड्सुजगारअंचर ४१

अप्पद्रकम्मंसियस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि

७४ सगममेदं ।

जहण्णेण एगसमओ ।

७५ कुंदो १ मिच्छत्तस्स अप्पदरं करेमाणेण शुजगारमबद्धिदं वा एगसमय

कादूण पणो तदियसमए अप्पदरे कदे एगसमयमेत्तंतरुवरुभादो ।

उक्रस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

७६ इदो १ अप्पदरं करंतेण अज ०अवद्धिदाणि अंबोमहुत्त कादूण अप्पदरे

कदे अंतोम्नहुत्तमेत्तंतरुवलंभादो ।

सेसाएं पि ऐेदव्यं ।

७७ जहा मिच्छत्तस्स णोदं तहा सेसपयडीणं पि णेदव्यं एवं चुण्णिसुतादरि ण

छचिदत्थस्ष उचचारणमस्सिदृण परूवर्ण कस्सामो ।

७८ अंतराणुगमेण दुविदों णिदेसोओबेण आदेसेण य । तत्थ ओघेण मिच्छत्त

बारसक ०णवणोक० श्रुज०अव्टि० ज० एगस० उक्क० तेबट्टिसागरोबमसदं सादि

रेये । अप्पद्र० ज० एगस० उक्ष अंतोम्म० । अणंतागुचडक० शुज्ञ०अवष्ठि ०

मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिविभक्तिबाले जीवका अन्तरकाल कितना है

५४ यद् सूत्र सुगम हे ।

जघन्य अन्तरकाल एक समय है ।

6 ५५ क्योकि मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिकों करनेवाले जिस जीवने एक समयके

लिए अुजगार या अवस्थित स्थितिविभक्तिको किया पुनः तीसरे समय में यदि वह् अह स्थिति

विभक्तिको करता है तो उसके अल्पतर स्थितिविभक्तिका एक समय अन्तर पाया जाता है ।

उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तयुहूतं हे ।

6 ७६ क्योंकि अल्पतर स्थितिविभक्तिको करनेवाले जिस जीवने अन्तमुंहूत कालतक भुज

मार् और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंको किया। पुनः उसके अन्तमुहूर्त कालके वाद अल्पतर

स्थितिविभक्तिके करनेपर मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल अन्तत प्राप्त दोता है ।

इसी प्रकार शेष ग्रकृतियोंका भी अन्तरकाल जानना चाहिए ।

6 ७७ जिस प्रकार मिथ्यात्वका अन्तरकाल कहा उसी ग्रकार शेष ग्रकृतियोंका भी जानना

चाहिए । इस प्रकार चूर्णिसूत्रके कर्ता यतिवृषभआचारयेके द्वारा सूचित हुए अथ्थैका उद्चारणाके

आश्रयसे कथन करते हैं

6 न अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ।

उनमेंसे वकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकपायोंक्री मुजगार और अबस्थित

स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक एकस त्रेखठ सागर है।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहृर्त है। अनन्ता

नुबन्धी चतुष्ककी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके सम।न है । अल्पतर

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो छथासठ सागर द ।

Page 63:

५ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे दिदिविदत्ती ३

मिच्छत्तमंगो । अप्प० ज० एगस० उक्ष ० वे छावट्विसागरो० देखणाणि। अवत्तव्ब

ज० अंतोम्म० उक० अद्भपोग्गलपरियईं देष्णं । सम्मत्तसम्पामि भुज ०अवह्ि ज

अंतोमुहुत्तं अप्पद्र० ज० एगस० अव्वत्तव्य ज० पलिदो० असंखेभागो । उक

सव्वेसिं पि अद्धपोम्मरुपरियदं देष्णं । एवमचक्खुभवसिद्धियाणं ।

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुँहूत और उचछ अन्तर कुछ कम अर्धपुद्गल

परिवर्तनप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्ककी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तर अन्तमुहूते अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तत्य

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर पस्योपमके असंख्यातथें भागप्रमाण है। तथा सभी स्थिति

विभक्तियोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। इसी प्रकार अचक्षुद्शेनवाले

ओर भव्य जीवोंके जानना चाहिए ।

विशेषार्थ एक जीवने अनस्तालुबन्धीकी विसंयोजना की पश्चात् बह यं कम एकसो

बत्तीस सागर तक विसंयोजनाके साथ रदा और अन्तमे जाकर उसने अवक्तव्य स्थितिविभक्तिपूर्वक

अल्पतर स्थितिको प्राप्न किया । इस प्रकार अनन्तानुबन्धीकी अल्पतर स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर छुछ

कम एकसौ बत्तीस सागर प्राप्त होता है। जिसने अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना की है ऐसा एक जीव

मिथ्यास्वमें गया और वहाँ उसने अवक्तव्य स्थितिको प्राप्त किया । तद्नन्तर दूसरी बार अन्तमुंहूर्तके

भीतर उसने मिथ्यात्वसे बेदक सम्यक्स्वको प्राप्त करके और अनन्तालुचन्धीकी विसंयोजना करके

अन््तमुहूर्तेमें मिथ्यात्वकों प्राप्त किया और इस प्रकार दूसरी बार अवक्तव्यस्थितिको प्राप्त किया।

इस प्रकार अवक्तव्य स्थितिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त प्राप्त हो जाता है। तथा जिस जीवने अर्धं

पुद्गन्ञपरिवर्वन कालके आरंभमें और अन्त अनन्तानुबन्धीकी चिसंयोजना करके मिथ्यात्वको

प्राप्त किया है उसके अवक्तव्य स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर कु कम अर्धपुद्गल परिवतन प्रमाण प्राप्त

होता है। सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजगार और अवस्थित स्थिति सम्यग्दशेन ग्रहण करनेके

पहले जमयमें होती है। अतः जिसने अन्तमुहूतके अन्द्र दो बार सम्यक्त्वको ग्रहण करके भुजगार

या अवस्थित स्थितिको जया है उसके उक्त प्रकृतियोंकी भुजगार या अवस्थित स्थितिका जघन्य

अन्तर अन्तमु हूर्त प्राप्त होता है। जो सम्यक्स अर सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिको कर रहा

है उसने एक समय तक भुजगार या अवस्थित स्थितिको किया और पुनः अल्पतर स्थितिको करने

लगा उसके उक्त प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है। सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्देलनामें पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण काल लगता है और अवक्तव्य

स्थिति उद्देलनाके बिना प्राप्त नहीं होती अतः सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अवक्तव्य स्थितिका

जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागश्रमाण कहा । जिसने अर्धपुदूगल परिवतन कालके प्रारंभमें

सम्धक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी सत्ता प्राप्त करके यथासम्भव भुजगार आदि स्थितियोंको किया।

अनन्तर इनकी उद्वदेलना करके कुछ कम अरधपुद्गल परिवर्तन काल तक २६ प्रकृतियोंकी सत्ताके

साथ रहा। पश्चात् कुछ कालके शेष रह जानेपर पुनः इनकी सत्ताको प्राप्त करके उक्त भुजगार आदि

स्थितियोंको किया । इस प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजगार आदि स्थितियोंका उत्कृष्ट

अन्तर कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तेन प्रमाण प्राप्त होता है। यहाँ हमने सब प्रकृतियोंकी मुजगार

आदि स्थितियोंके अन्तरका खुलासा नहीं किया है। जिनका आवश्यक था उन्हींका किया है।

शेषका मूलसे होजाता है । इसी प्रकार मार्गणाओंमें भी जहाँ जिसके खुलासा करनेकी आवश्यकता

होगी उसीका किया जायगा ।

Page 64:

गा० २२ ह्विद्विह॒त्तीए उत्तरपयडिभुजगारअंतरं ४५

६ ७९ अदेसेण णेरइएसु मिच्छन्त बारसक् ०णवणोक० युज ०अबह्टि ज० एग

समओ उक्क० तेत्तीससागरोबमाणि देखणाणि । अप्प ज० एगस ० उक्ष अतोभ्ु०।

अणंता्ु ०चउक्क ० एवं चेव । णवरि अप्पदर जह ० एगसमओ उक तेत्तीसं सागरो०

देखणाणि । अवत्तव्व० ज० अंतोम्म० उक० तेत्तीससागरो देष्णाणि । सम्मत्त

सम्मामि० झ्ुज०अवष्डि० ज० अंतोम्म० अप्प० ज० एगस० अवत्तव्व ज०

पलिदो० असंखे ० मागो । उक० सव्वेसिं तेत्तीसं सागरो देखणाणि एवं सव्वणेरहयाणं

वत्तव्वं णवरि सगसगट्डिदी देषणा ।

८० तिरिक्ख० मिच्छत्त ०बारसक ०णवणोक० ० श्रुज०अवष्टि० ज० एग

समओ उक पलिदो० असंखेजभागो । अप्पद० ज० एगस० उक ० अंतमु ० ।

अणंताणु०चउक ० शुज०अवद्धि मिच्छत्तमंगो । अप्प० ज० एगस० उक ० तिण्णि

पलिदो० देद्णाणि अवत्तव्वं ओघं । सम्मत्तसम्भामि० चहदुण्हं पदाणमोधभंगो ।

८१ पंचिदियतिरिक्खपचि तिरि०पज पंचि तिरि०जोणिणीसु मिच्छत्त

बारसक ०णवणोक ० शुज ०अवट्धि ज० एगस ० उक पुव्वकोडिपुधत्तं । अप्प०

ओधं । एवमणं ताणु चउकाणं । णवरि अप्प० ज० एगस० उक तिण्णि पलि देखू

6 ५६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कयाय ओर नो नोकपायोंकी ञुजगार

ओर अवस्थित स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस

सागर हैं। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमु हूर्त है।

अनन्तानुबन्धी चतुष्कका इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसकी अल्पतर स्थिति

विभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है । तथा अवक्तव्य

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमं ओर उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है । सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वक्री भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका जवन्य अन्तर अन्तमुहूत

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर

पल्योपमके असंख्यातबें भागप्रमाण हे। तथा सभी स्थितिविभक्तियोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम

तेतीस सागर है । इसी प्रकार सब नारकियोंके कहना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि कुछ

कम तेतीस सागरके स्थानमें कुछ कम अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिये।

6 ८० तियेचोंमें मिथ्यात्व ब।रह कषाय और नो नोकषायोंकी झुजगार और अवस्थित

स्थितिविभक्तिका जवन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण

है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते है।

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके समान है।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उल्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य है।

तथा अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका अन्तर ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके चारों

पदोंका भंग ओघके समान है । ५ हि

6 ४१ पंचेन्द्रिय तियेच पंचेन्द्रिय तियंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तियंच योनिमती जीवोंमें

मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकपायोंकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभ्क्तिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिप्रथक्त्व प्रमाण है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तर

श्रोधक्रे समान हैं । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्कका जानना चाहिए । किन्तु इतनी बिशेषता हे

Page 65:

४६ जयधबलासहिदें कसायपाहुडे द्िदिविहत्ती ३

णाणि । अवत्तव्ब ज० अंतोएु० उक ० तिण्णि पलिदो० पुन्वफोडिपुधत्तणन्महियाणि ।

सम्मत्तसम्मामि० शुज० ज० अंतोषहत्तं अप्प ज० एगस ० अवत्त्च० ज०

पलिद असंखेभागो । उक सव्वेसिं पि तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तेणञ्भहियाणि ।

अवद्ध ज० अंतोष्ठु० उक पुव्वकोडिपुधत्त । एवं मणुसतिय ० । णवरि मिच्छत्त

सोलसक०णवणोकसायाणं जम्दि पुव्व रोडिपुधक्तं तम्हि पुन्धकोडी देखणा ।

८२ पंचिदियतिरिक्खअपज्ज०मिच्छच सोलसक ०णवणोक० श्रुज०अप्प ०

अवडिदाणं जह एगसमओ उक० अंतोश्न । सम्भत्तसम्मामि अप्यद्रस्स णत्थि अंतरं ।

एवं मणुसअपज्ज ०एइंदियबादरेइंदियसुहुमेइंदियतेसिं पज्जत्तापज्जत्तसव्बविगलिंदिय

पंचिंदियअपज्ज ०पंचकाय ०बादरसुहुमपज्जत्तापज्जचतसअपज्ज ०ओरालिमिस्स ०वेउ

व्वियमिस्स ०विभंगणाणि त्ति।

८३ देव मिच्छत्तबारसक०णवणोक० युज ०अवड्टि ज० एगस० उक्क०

अट्टारससागरो सादिरेयाणि । अप्पदर० ओघं । अणंताणुन्चउक ० अप्पदर० ज०

एगस ० अवत्तव्व० ज० अंतोप्ु० । उक ० दोण्ं पि एकत्तीसं सागरो देषणाणि ।

। कि अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर छुछ कम तीन पल्य है ।

अवक्तत्य स्थित्तिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूतते और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिप्रथक्त्वसे अधिक

तीन पस्य है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूते

अल्पतर स्थित्तिविभ्तिका जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य

अन्तर पल्योपमके असंख्यातर्वे भागप्रमाण है। तथा सभी स्थितिविभक्तियोंका उत्कृष्ट अन्तर पूवै

कोटि प्रथक्त्वसे अधिक तीन पस्य है। अवस्थित स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त और

उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि प्रथक्त्व है। इसी प्रकार सामान्य पर्याप्त और मनुष्यनी इन तीन प्रकारके

मनुष्योंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायों

की जिस स्थितिविभक्तिके रहते हुए पूर्वकोटि प्रथकत्व कहा है वहाँ कुछ कम पूर्वकोटि अन्तर

कहना चाहिये।

6 ८२ पंचेन्द्रिय तियच अपर्यप्तकोंमें मिथ्यात्य सोलह कषाय और नौ नोकपा्योकी भुजगार

अल्पतर और अवस्थित स्थितिंविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते

है। सम्यक्त्व चौर सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तर नहीं है । इसी प्रकार

मनुष्य अपर्याप्त एकेन्द्रिय बधदर एकेन्द्रिय सूक्ष्म एक्ेन्द्रिय तथा बादर और सूक्ष्मके पर्याप्त और

अपर्याप्त सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त पाँचों स्थावरकाय तथा इनके वाद्र और सूक्ष्म तथा

पर्याप्त और अपर्याप्त तरस अपर्याप्त औदारिकमिश्रकाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और

विभंगज्ञानी जीवोंके जानना चाहिए।

6 ८३ देवों मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी भुजगार और अवस्थित स्थिति

विभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारह सागर है। अल्पतर

स्थितिविभक्तिका अन्तर ओघके समान है। अनन्ताचुत्रन्धी चतुष्ककी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त है। तथा

का १ ता प्रतौ जोघ॑ । अवत्तब्व ०अरण्णइति पाठः ।

Page 66:

गा० २२ दिदिविहत्तीए उत्तरपडिभुजगारअंतरं ४७

सेसं मिच्छत्तमंगां सम्मत्तसम्मामि० ुज० ज० श्र॑तोश्च० अप्पद० ज० एगस०

अव्यत्तव्ब० ज० पलिदो० असंखे ० भागो। उक० सब्वेसि पि एकत्तीसं सागरो० देखणाणि ।

अवष्टि ज० अंतोम्रु ० उक० अड्डारस सागरो ० सादिरेवाणि । मवणादि जाव सहस्सार ०

एवं चेव । णवरि सगह्टिदी देखणा ।

6 ८४ आणदादि जाव उवरिमगेवज्ञो त्ति भिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० अप्प

द्रस्स णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि० आुज० ज० अतो अप्प ज० एयस०

अवत्तव्य ० ज० पलिदो० असंखे०भागो० । अणंताणु चउक ० अप्पदर० अवत्तच्वाणं

ज० अंतोम्र० । उक्क० सब्वेसि पि सगह्टिदी देखणा । एवं सुक्कले० ।

6 ८५ अणुदिसादि जाव सब्बइसिद्धि चि सब्यपयडीणमप्पदर० णत्थि अंतरं ।

एवमाहार ० ्राहारमिस्स ०अवगद ०अफसा०आभिणि०सुद ०ओहि ०मणपज्ञ ०संजेद् ०

सामाइयछेदो ० परिहार ०सुहुम ०जदाक्खाद ०संजदासंजदओहिदंस सम्मादि ०

ख्य ०वेदय ०उवसम ० सासण०सम्मामिच्छाइड्डि ति ।

6 ८६ पंचिदियपंचि०पञ्ञ ०तसतसपज्ञ मिच्छत्तवारसक ०णवणोक० ओघ॑।

अणंताणुन्चउक्क ० ओघं । णवरि अवत्तव्य० ज० अंतोघ्ठ ० उक्क० सगड्ठिदी देखणा ।

दोनोंका दी उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकतीस सागर है। शेष स्थितिविभक्तियोंका भंग मिथ्यात्वके

समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जगार स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्न्तमुहूते

अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर

पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रनाण है । तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकतीस सागर है ।

अबस्थित स्थितिविभक्तिका जवन्य अन्तर अन्तमंदूत और उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारह सागर

है । भचनवासियों से लेकर सहर्लार स्वगेतकके देबोंके इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी

विशेषता है कि कुछ कम अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए।

6 ८४ आनतकल्पछे लेकर उपरिम ग्रैवेयकतकके देवोंमें मिथ्यात्य बारह कषाय और नो

नोकषायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तर नहीं है। सम्यकत्व और सम्यम्मिध्यात्वकी ुजगार्

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूतेझल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण तथा अनन्तजुबन्धी

चतुष्ककी अल्पतर और अवक्तव्य स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर अन््तमुंहूर्त है । तथा सभीका

उच्छ अन्तर छुछ कम अपनी अपनी स्थितिप्रमाण है । इसी प्रकार छुक्ललेश्यामे जानना चाहिए।

6 २८५ अनुदिशसे लेकर सर्वायेसिद्धितकके देवोंमें सब प्रकतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका

अन्तर नहीं है । इसी प्रकार आदारककाययोगी आहारक सिश्रकाययोगी अपगतवेद्वाले अकषायी

आमिनिवोधिकन्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानीमनःपर्ययज्ञानी संयत सामयिकसंयत छेदो पस्थापना

संयत परिहारविशुद्धिसंयत सूक्ष्मसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत अ वधिदरशनी

सम्यग्टष्टि क्षायिकसम्यग्दष्टि वेदकसम्यस्टाष्ट उपशमसम्यम्दष्टि सासादनसम्यम्दष्टि और सम्यग्मि

ध्याहृष्टि जीबोंके जानना चाहिए ।

८६ पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त चस और त्रसपर्याप्त जीवों सिथ्यात्व बारह कषाय और

नौ नोकपायोंका भंग ओघके समान है । अनन्तानुबन्धी चतुष्कका भंग ओघके समान है। दिन्तु

सि १ जाणप्रतौ सम्मामि० इति पाठः ।

Page 67:

न जयघवलासहिदे कसायपाहृडे दिदिविहत्ती ३

सम्मत्त०सम्मामि० श्ुज०अवद्डि ज अंतोषु० उक सगद्ठिदी देखणा । अप्पदर ०

ज० एगप्त० अव्वत्तव्य० ज० पलिदो० असं मागो । उक्क० सगह्टिदी देखणा । एवं

पुरिसचक्खुसण्णि त्ति।

6 ८७ पंचमण ० पंचवचि मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० शुन ०अप्पद्र ०

अबट्धि ज० एगसमओ उक अंतोम्मु० । सम्म ०सम्मामि अप्प० ज० एगसमओ

उक० अंतो । सेसाणं णत्थि अंतरं । एबमोरालिय ०वेउव्वि ०चत्तारिकसायाणं ।

८८ काधजोगि मिच्छत्तसोलसक० णवणोक श्रुज०अवष्टि० ज० एगस ०

उक्ष० पलिदो० असंन्भागो अप्प ज० एगस० उक० अंतोप्रु । अणंताणु०

चउक० अवत्तव्व० णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि० अज ० अवदि खवत्तव्व णत्थि

अंतरं । अप्पद्र० ज० एगसमओ उक अतोञु । कम्मइय० छव्बीसं एयडीणं सुज ०

अप्पदर ०अवद्टि ० जहण्णुक० एगसमओ सेसं णत्थि अंतरं । एवमणाहार० ।

८६ इत्थि मिच्छत्तसोलसक णवणोक ० युज ०अवह्धि० ज० एगस०

उक्क० पणवण्ण पलिदो० देखणाणि अप्पदर० ओघं । णवरि अणंताणु चउक अप्प

इतनी विशेषता है कि अवक्तत्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्न्तमुंहूते और उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम अपनी स्थितिप्रषाण है। सम्यक्त्व श्मौर सम्यम्मिथ्यात्वकी सुजगार और अवस्थित

स्थितिविभक्तियोंका जवन्य अन्तर अन््तमुहूर्ते और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण

है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय ओर अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य

अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण दै । तथा दोनोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अपनी

स्थितिप्रमाण है । इसी प्रकार पुरुषवेदी चहुदर्शनवाले ओर संज्ञी जीबोंके जानना चाहिए।

८७ पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीबोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय ओर नौ

नोकषायोंकी भुजगार अल्पतर और अवस्थित स्थित्तिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अस्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य

अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूत है । तथा शेष स्थितिविभक्तियोंका अन्तर नहीं है ।

इसी प्रकार औदारिककाययोगी वैक्रियिककाययों गी और चार कषायवाले जीवों के जानना चाहिए।

८८ काययोगियोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय और नौ नोकपायोंकी सुलगार और अवस्थित

स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर पल््योपमके असंख्यातवें भाग

प्रमाण है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूरतं है।

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका अन्तर नहीं है। सम्यक्त्व ओर सम्यग्मि

अ्यात्वकी भुजगार अवस्थित और अवक्तत््य स्थितिविभक्तिका अन्तर नहीं है । अल्पतर स्थिति

विभक्तिका जवन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है। कार्मंणक्राययोंगियोंमें

छब्बीस प्रकृतियोंकी शुजगार अल्पत्तर और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका जघन्य और उत्कृष्ट

अन्तर एक समय है । शेषका अन्तर नहीं है। इसी प्रकार अनाहारकोंके जानना चाहिए ।

5६ स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषार्योकी भुजगार और अवरिथत

स्थितिविभक्तियों का जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पचवन पल्य है।

अल्यतर स्थितिविभक्तिका अन्तर ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धी

र हि तापरतौ एगस० । अठइति पाठ ।

Page 68:

गा०२२ द्िदिविहन्तीए उत्तरपयदिभुजगारअंतरं ६

दर० ज० एगस० उक पणवण्ण परिदो० देखणाणि । अवत्तव्ब० ज० अंतोष्ठ०

उक्क० सगद्धिदी देखणा । सम्मत्तसम्मामि० श्रुज०अवष्टि० ज० अंतोम॒हुत्त अप्पदर०

ज० एगसमझो अवत्न्व० ज० पलिदो० असंखे०भागो उक० सव्वेसिं पि सगड्डिदी

देखणा । णवुंस ० मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० श्ुज अवद्भि ज० एगसमओरो

उक० तेत्तीसं सागरो देखगाणि अप्पदर० ज एगस० उक ० अंतोष् । णवरि

अण॑ंताणु ०चउक्क० अप्पदर० ज० एगसमओ उक तेत्तीसं सागरो ० देखणाणि।

अवत्तव्ब ० ज० अंतोभु० उकक० अडद्भपोग्गलपरियईं देखणं। सम्मत्तसम्मामि०

ओधं । एबमसंजद० ।

६ ९० मदि०सुद० मिच्छन्तसोलसक ०णवणोक० अज ०अवड्ि ज० एगस०

उक० एकचीसं सागरो० सादिरेयाणि । अप्पदर० ओघं । सम्मचसम्मामि० अप्य

णत्थि अंतरं । एवं मिच्छादिदधीणं । अभव छष्बोसं पयडीणमेवं चेव ।

६१ किण्ह०णील०काउ० मिच्छत्तबारसक णवणोक० भुज ०अवहि० ज०

एगस० उक ० सगद्टिदी देखणा । अप्पदर० ओधं । अणंताणु०चउक्त० भुज ०अवद्ठि०

ज० एगस० अप्पदर ज० एगस ० अगत्तव्व ० ज० अंतोशु० उक ० सव्वेतिं सगद्िदी

चतुष्ककी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उच्छष्ट अन्तर छुछ कम पचवन

पल्य है । अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहर्त और उत्क्रष्ट अन्तर कुछ कम अपनी

स्थितिप्रमाण है । सम्यक्त्व श्रौर सम्यम्मिथ्यात्वकी भुजगार और श्रवस्थित स्थितिविभक्तियोंका

जघन्य अन्तर अन्तमुहूर्त अल्पत्तर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तञ्य

स्थितिविभक्तिका जयन्य अन्तर पल्योपसक्रे असंख्यातवे भागप्रमाण है । तथा समीका उत्कृष्ट

अन्तर कुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण है । नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोक

घायोंकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम तेतीस सागर है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट

अन्तर अन्तमुहूर्ते है। किन्तु इतनी बिशेषता है क्रि अनन्तालुबन्धीचतुष्ककी अल्पतर स्थिति

विभवितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है। अवक्तव्य

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अधंुद्गलपरिवतंनप्रमाण

है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार असंयत जीवोकि

जानना चाहिए।

६० मध्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय और नो नोकषायोंकी

सुजगार श्रौर अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्क्रष्ट अन्तर साधिक

इकतीस सागर है । अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तर ओघके समान है। सम्यक्त्व और सम्यम्मि

अ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तर नहीं है। इसी प्रकार मिथ्यादृष्टियोंके जानना चाहिए ।

अभव्यो छब्बीस प्रकृतियोंका इसी प्रकार जानना चाहिये ।

९१ कृष्ण नील और कापोत लेश्यामें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी

झुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका वन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छुछ कम

अपनी स्थितिप्रमाण है। अल्पतर स्थितिविभक्तिका ओघके समान है। अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

झुज्ञगार और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूत है । तथा

सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अपनी अपनी स्थिःतप्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

हि

Page 69:

५० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

देखणा । सम्मत्तसम्भामि० यज ०अवह्टि ज० अंतोभ्नु ० अप्पदर० ज० एगस ०

अवत्तव्व ज० पलिदो० असंखे मागो उक ० सव्वेधिं सगह्टिदौ देखणा। तेउ०

सोहम्मभंगो । पम्म० सहस्तारभंगो असण्णि० एडंदियभंगो । णवरि छव्वीसपयडी०

ज ०अवदि जद एगसमओ उक ० पलिदो० असंखे भागो । आहारि० ओघं ।

णवरि जम्हि उवडूपोम्गलपरियडं तम्हि अंग्रुलस्स असंखेगमागो ।

एवमंतराणुगमो समत्तो ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ

६२ सुगममेदं अहियारसंभालणफलत्तादो ।

खंतकम्मिएस पयदं ।

६३ कदो १ असेंतकम्मिएसु युजगारादिपदाणमसंमवादो ।

सच्चे जीवा मिच्छृत्तसोलकसायएवणोकसायाणं जगारटिदि

विहत्तिया च अप्पदरद्टिदिविदत्तिया च अवद्टिदद्िदिविदत्तिया च ।

९४ एदेसि कम्माणं शुजगारअप्पदरअबड्विदड्डिदिविद्दत्तिया सब्बे जीवा ते

णियमा अत्थि ति संबंधों कायव्यो ।

अणंताणुवंधीणमवत्तव्वं भजिदव्वं ।

भुजगार और अवस्थित स्थित्तिवियक्ति्योका जवन्य अन्तर अन्तमुंहूते अल्पतर स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तर एक समय और अवक्तठ्य स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर पलल््योपम॒रे असंख्यातवें

भागप्रमाण है। तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अपनी अपनी स्थितिप्रमाण है । पीतलेश्यामें

सोधमंके समान भंग है। पद्नलेश्यामें सहस्तारके समान भंग है। असंज्ञियोंमें एकेन्द्रियोंके

समान भंग है। इतनी विशेषता है कि छब्बीस प्रकृतियोंकी सुजगार और अवस्थित स्थिति

विभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्थोपमके असंस्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारकोंके ओधके समान है। इतनी विशेषता है कि जहाँ उपाधैपुद्गल परिवतंनप्रमाण

अन्तर कहा है वहाँ इनके अंगुलके असंख्यातर्वे भागम्रमाण अन्तर कहना चाहिये।

इस प्रकार अन्तरानुगम समाप्त हुआ।

अब नानाजीबोंकी अपेक्षा भंगविचयाचुगमका अधिकार हे ।

६२ यद् सूत्र सुगम है क्योंकि इसका फल अधिकारकी सम्हाल करना है ।

सत्कर्मवाले जीवोंका प्रकरण है।

६३ शंकासत्कर्म वाले जीवोंमें ही इस अधिकारकी प्रवृत्ति क्यों होती है ९

समाधानक्योंकि जिन जीवो मोहनीयकर्सकी सत्ता नहीं है उनमें मुज्ञगारादि पदोंका

पाया जाना सम्भव नहीं है ।

मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकपायोंकी श्र॒ुजगारस्थितिविभक्तिवाले

अल्पतरस्थितिविभक्तिवाले और अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले सब जीव नियमसे हैं ।

६४ इन पूर्वोक्त कर्मो सुजगार अल्यवर ओर अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जो सब

जीव हैं वे नियमसे हैं ऐसा यहाँ सबन्ध करना चाहिये।

अनन्तानुबन्धीचतुष्कका अवक्तव्य पद् मजनीय है ।

Page 70:

गा० २२ द्िदिविहन्तीए उत्तरपयडिभुजगारमंगविचओ ५९

९५ इदो विसंजोददअणंताणुचउक ० सम्माइट्टीणं णिरंतरं मिच्छत्तमुणेण

परिणमणाभावादों ।

सम्मत्तसम्मामिच्छृत्ताणं श्ुजगारअवहिदअवत्तव्वह्विदिविहृतत्तिया

मअजिदव्वा ।

६ छदो १ णिरंतरं सम्मत्तं पडिवजमाणजीवाणमभावादों ।

अप्पदरहधिदिविहत्तिया णियथमा अस्थि ।

8७ इदो १ सम्भत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मियजीवार्णं तीदाणागदबइमाण

कालेसु विरहाभावादो ।

९८ एवं जइवसहाइरियदेसामासियसुत्तत्थपरूवणं काऊण संपदि जइबसहा

इरियद्धूचिदत्थम्ुच्चारणाए भणिस्सामों णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुपिहो णिदेसो

ओघे० आदेसे० ओघेण० मिच्छत्तबारसक०णवणोक० अज ०अप्पदर ०अबडि०

६५ क्योकि अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना करनेवाले सम्यम्दष्टि जीवोंका मिथ्यात्व

गुणके साथ निरन्तर परिणाम नहीं पाया जाता ।

सम्यक्त्थ और सम्यग्मिथ्यात्वकी श्ुजगार अवस्थित और अवक्तव्य स्थिति

विभक्तिवाले जीव भजनीय दै ।

६६ क्योंकि निरन्त ए सम्यक्स्वको प्राप्त होनेवाले जीव नहीं पाये जति हैं ।

अल्पतरस्थितिविभक्तिवाले जीव नियमसे हैं ।

६७ क्योकि सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यास्वसत्कमंवाले जीवोंका अतीत अनागत और

वततैमान इन तीनों कालोंमें अभाव नहीं है ।

विशेषाथअंधाँगर भुजगार आदि पदोंका आल्म्बन लेकर नाना जीबोंकी अपेक्षा भग

विचयका विचार किया जा रहा है । मोहनीयके कुल भेद र८ हैं । उनमेंसे मिथ्यात्व सोलह कषाय

और नौ नोकपायोंके भुजगार अल्पतर और अवस्थित पद्वाले नाना जीव निरन्तर पाये जाते हैं

यह स्पष्ट ही है क्यों कि यथासम्भव मिथ्यात्व आदि गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध सम्भव

होनेसे ये बन जाते हैं। किन्तु अनन्तानुबन्धी चतुष्कके अवक्तव्य पद्की यह स्थिति नहीं है।

कारण कि जो चोंबीस प्रकृतियोंकी सत्तावाला जीव मिथ्यात्व और सासादन गुणस्थानमें आता

है उसीके यह पद् सम्भव है पर ऐसे जीवोंका निरन्तर उक्त गुणस्थानोंको प्राप्त होना सम्भव नहीं है ।

कदाचित् एक भी जीव उक्त गुणस्थानोंका नहीं प्राप्त होता मौर कदाचित् एक जीव तथा कदाचित

नाना जीव स्वत गुणस्थानोंका प्राप्त होते हैं इसलिए अनन्तानुबन्धीके अवक्तव्य पदवाले भजनीय कहे

हैं । तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके अल्पतर पदवाले जीव तो सदा पाए जाते हैं क्यों कि इन

प्रकृतियोंकी सत्ताबाले सम्यग्दष्टि रौर मिध्यादृष्टि जीवोंका निरन्तर सद्भाव पाया जाता है और उनके एक

मात्र अल्पतर पद ही होता है पर इन प्रकृतियोंके शेष पद् जनीय हैं क्योकि शेष पद जो मिथ्या

स्वसे सम्यकत्वकों आप्त करते हैं उनके ही प्रथम समयमें सम्भव हैं और ऐसे जीव निरन्तर नहीं पाये

जाते अतः इन प्रकृतियोंके भुज़गार अवस्थित और अवक्तव्य पद्वाले जीव भजनीय कहे हैं ।

६८ इस प्रकार यतिदृषभ आचायके देशामर्षकसुत्रके अर्थका कथन करके अब यतिवृषभ

आचायके द्वारा सूचित किये गये अरथेकी उच्चारणाका कथन करते हैंनाना जीबोंकी अपेक्षा भंग

ब्रिचयानुगमसे निर्देश दो प्रकारका हैओघनिर्देश ओर आाड्ले्कक्षिदिंश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा

Page 71:

५२ जंयधवलासहिदे कसायपाहुं ह्िदिविहत्ती ३

णियमा अत्थि । अणंताणुचउक ० अरुज ०अप्प अवद्ध णियमा अत्थि । अवत्तव्वं

भयणिजा । सिया एदे च अवत्तव्वविहत्तिओ च सिया एदे च अवत्तव्वविहत्तिया च ।

सम्मत्त सम्मामि ० अप्पदर० णियमा अस्थि सेसपदा मयणिज्ञा। एवं तिरिक्छ०

कायजोगि०ओरालिय ०णचुंस ०चत्तारिक ०असं जद ०अचबखु ०किएहणीलकाउ ०

मवसि०आहारि त्ति।

९९ आदेसेण णेरइए्सु मिच्छत्तबारसक०णवणोक० अप्पदर ०अवद्ठि ० णियमा

अस्थि भ्ुज० भयणिज्ञा० सिया एदे च शुजगारविहत्तिओ च सिया एदे

च भ्ुजगारविहत्तिया च अणंताणु०चउक अप्पद०अवद्टि ० णियमा अस्थि । सेस

पदा भयणिज्ञा। सम्मत्तसम्मामि० ओघर्भेगो । एवं सव्बणेरइयपंचिंद्यतिरिक्ख

तिय०मणुसतिय ०देव ०भवणादि जाब सहस्तार ०पंचिदियपंचि पज्ञतसतसपज्ञ०

मिथ्यास्व बारह कपाय और नो नाकषायोंको भुजगार अल्पतर और अवस्थत स्थितिविभक्तिवाले

जीव नियमसे हैं । अनन््तानुबन्धीचतुष्ककी सुजगार अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले

जीव नियमसे हैं। अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव भजनीय हैं । कदाचित् ये सुजगारादि

विभक्तिवाले बहुत जीव होते हैं ओर अवक्तव्यविभक्तिबाला एक जीव होता है । कदाचित् ये भुज

गारादिविभक्तिवाले नाना जीव होते हैं और अवक्तव्य विभक्तिवाले नाना जीव होते हैं। सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले नीव नियमसे हैं । तथा शेष पदवाले जीव

भजनीय हैं। इसी प्रकार ति्य॑च काययोगी औदारिककाययोगी नपुंसकवेदवाले क्रोधादि चार

कषायवाले असंयत अचहुदशनवाले ऋष्णलेश्यावाले नीललेश्याबवाले कपोतलेश्यावाले भव्य

ओर आहारक जीबोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थमिथ्यास्व बारह कषाय चनौर नो नोकषाय इन २२ ग्रकृतियोंके भुजगार अस्पतर

और अवस्थित ये तीन पद होते हैं जो सर्वदा पाये जाते हैं इसलिये इनकी अपेक्षा एक ध्रवर्मंग ही

होता है । अनन्तानुबन्धी चतुष्कके चार पद हैं जिनमें भुजगार अल्पतर और अवस्थित ये तीन

पद् ध्रव हैं और अवक्तव्यपद् अश्ुव है। अवक्तव्यपद्वाला कदाचित् एक जीव होता है और

कदाचित् नाना। अब इन दो गोम प्रुवभंग और मिला दिया जाता है तो अनन्तालुबन्धीकी

अपेक्षा कुल तीन भंग प्राप्त होते हैं। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्थात्वके चार पद् हैं। जिनमें

युलगार अवस्थित और अवक्तव्य ये तीन भजनीय और एक अल्पतर ध्रव है अतः यहाँ कुल

२७ भंग होते हैं क्योंकि एक और नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन भजनीय पदोंके २६ भंग और उनमें

एक धुव भंगके मिलानेपर कुल २७ भंग होते हैं । ति्ंच आदि मूलमें गिनाई गई कुछ ऐसी सार्ग

णाप हैं जिनमें यह ओघ श्ररूपणा घटित हो जाती है अतः उनके कथनको ओघके खमान कहा है।

६६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकपषायोंको

अरपतर और अवस्थित स्थितिक्मिक्तिवाले जीव नियमसे हैं। इनके भुजगार पदवाले जीव

भजनीय हैं। कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक भुजगार स्थितिविभक्तिवाला जीव है।

कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना भुजगार स्थितिविभक्तिवाले जीव हैं। अनन्तानु

बन्धीचतुष्ककी अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीब नियमसे हैं तथा शेष

पद् भजनीय हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इर प्रकार सब

नारकी पंचेन्द्रिय तिर्येच पचेन्दरिय तिर्यच पर्याप्त पंचेन्द्रिय तियेंच यानिमती सामान्य मलुष्य

मनुष्य पर्याप्त मलुष्यिनी सामान्य देव भवनवासियोंसे लेकर सहस्तार स्वर्गतकके देव पंचेन्द्रिय

पंचेन्द्रिय पर्याप्त त्रस त्रसपर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी वैक्रियिककाययोगी खीवेद

Page 72:

गा०२२ ह्िदिविदत्तीए उत्तरपयडिभुजगारभंगविचश्चो

पंचमण ०पंचवचि ०वेउव्बिय ०इत्थि पुरिस चक्खु ०तेउ ० पम्म ०सण्णि त्ति ।

१०० पंचि तिरि०अपञज्ञ मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० णारयभंगो । णवरि

अणंताणु० अवत्त० णत्थि । सम्म०सम्मामि अप्प णियमा अस्थि । एवं सब्ब

तरिगलिदियपंचिदियअपज्ञ ०बादरपुटविपज्ञ ०बादरआउ ० पञ ०बादरतेउपज्ञ ०बादरवाउ

पञ्ञ ०बादरवणप्फदिपत्तेय ०पञ्ञ ०तसअपज ०विहंगणाणि त्ति ।

१०१ मणुसअपज० छव्बीस॑ पयडीणं सव्बपदा भयणिज्ञा । भंगा छव्वीसः

धुवषदाभावादो । सम्मत्तसम्भामिच्छत्ताणमप्पद्रं भयणिज्जं । संगा दोण्णि धुवाभावादो ।

एवं वेउन्वियमिस्स० ।

वाल पुरुषवेदवाले चक्ुदर्शनवालेपीतलेश्याबाले पद्मलेश्यावाले और संज्ञी जोबोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थनरकमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंके दो पद् ध्रुव और एक पद्

भजनीय बतलाया है अतः इनके ध्रुव भंगके साथ तीन अंग प्राप्त होते हैं। अनन्तानुबन्धी चतुष्कके

चार पदोंमेंसे अल्पतर और ्र्वास्थत ये दो पद् ध्रुव तथा भुजगार और अवक्तन्य ये दो पद्

भजनीय बतलाये हैं इसलिये इनके नौ भग प्राप्त होते हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके

जिसप्रकार ओघसे २७ भंग बतला आये हैं उसी प्रकार यहाँ मी घटित कर लेना चाहिये । मूलमें

सब नारकी चादि और जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें उक्त व्यवस्था बन जाती है।

१०० पंचेन्द्रिय तियेंच अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय और नौ नोकषायोंकी

अपेक्षा नारकियोंके समान भंग है। किन्तु इतनो विशेषता है कि इनमें अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

अवक्तव्यस्थितिविभक्ति नहीं है। तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीव नियमले हैं । इसी प्रकार सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त वाद्रघ्रथिवीकायिक पर्याप्त

बादर जलकायिक पर्याप्त बादर अप्निकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक पर्याप्त बादर वनस्पति

कायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त त्रस अपर्याप्त और विभंगज्ञादी जीवोंके जानना चाहिए।

विशेषाथपत्चेन्द्रिय तिच लब्ध्यपर्याप्तक मिथ्यादृष्टि दी होते हैं उनमें अनस््तामुबन्धी

चतुष्कका वक्तव्य भंग नहीं बनता । अत इनके मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषाय

इन सबके भुजगार अल्पतर और अवस्थित ये तीन पद ही होते हैं । इनमेंसे दो पद ध्रुव और एक

झुजगार पद भजनीय है अतः कुल तीन मंग प्राप्त हेते हैं । यहाँ नारकियोंके समान कदनेका मत

लव यह है कि जिसप्रकार नारक्रियोंके एक भुजगार पद भजनीय बतलाया उसी प्रकार पच्य

तियेंच लब्ध्यपर्याप्रकोंके भी जानना चाहिये । तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वक्री अपेक्षा इनके

एक अल्पतर पद ही पाया जाता है जो ध्रुव है अतः इनकी अपेक्षा एक ध्रुव भंग ही प्राप्त होता है।

सब विकलेन्द्रिय आदि और जितनी मागेणाए मूलमें गिनाई हैं उनमें भी यह व्यवस्था बन जाती है

अतः उनके कथनको पंचेन्द्रिय तियंच लब्ध्यपर्याप्रकोंके समान कहा ।

१०१ मलुष्य अपर्याप्तकोंमें छब्बीस प्रकृतियोंके सब्र पद भजनीय हैं। भंग छब्बीस दी

होते हैं क्योकि यहाँ घ्रुवपदका अभाव है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्थका अल्पतर पद् भजनीय

है। भंग दो होते हैं क्योंकि भुवपदका अभाव है। इसी प्रकार वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीबोंके

ज्ञानना चाहिए।

विश्वेषार्थलब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य यह सान्तर मार्गणा है। अतः इसमें २६ प्रकृतियोंके तीनों

पद् भजनीय हैं जिनके कुल भंग २६ होते हैं । यहाँ धुब पदका अभाव होनेसे ध्रुव भंगका निषेध

किया है। यद्यपि सम्यक्स्व और सम्यग्मिथ्यात्वका यहाँ एक अस्पतर पद् ही है फिर भी सान्तर

मार्गणाके कारण वह् भी भजनीय है अतः उसके एक जीव और नाना जीबोंकी अपेक्षा दो भंग कहे ।

Page 73:

ण्छ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे छद्विदिविहत्ती ३

१०२ आणदादि जाव उबरिमगेवज्ञो त्ति मिच्छत्तबारसक०णवणोक० अप्प

दर० णियमा अस्थि । अणंताणु०चउक्क० अप्पदर० णियमा अत्थि । अवत्तव्वविहत्तिया

भयणिज्ञा । भंगा तिण्णि । सम्मत्तसम्मामि० ओघं॑ । एवं सुक्कले अशुद्दिसादि जाव

सव्बह्ठ० सव्वपयडीणमप्पदर० णियमा अत्यि । एव्मामिणि०सुद०ओहि०मणपज्ञ ०

संजद्सामाइयछेदो ०परिहार ०संजदासंजदओहिदंस ०सम्मादि ०खड्य ०

वेदय दिदि त्ति।

१०३ एहंदिय ० सव्यपयडि० सव्बपदा णियमा अस्थि । एवं बाद्रपुहुमेददिय

पञ्ञत्तापजत्त पुढवि ०बाद्रपुढ्रि बाद्रपुटवि ०अपजञ ०सुहुमपुटविपज्जतापजत्त

आउ०बाद्रआउ० बादरआउअपज०सुहुमआउ ०पजञत्तापजत्त तिउ ०बादरतेड ० बादर

तेडअपज०सुहमतेडपजत्तापज्त्वाउ ०बादरवाउ ० बादरबाउअपज ० सुहुमबाउपञजतता

यहाँ भ पुव पदका अभाव हाने ध्रुव भंगका निषेध किया। वैक्रियिकमिश्रकाययाग यह भी सान्तर

मार्गणा है और इसमें लब्ध्यपयाप्तक मनुष्योंके समान सब प्रकृतियोंके पद् तथा भंग बन जाते हैं

अतः इनके कथनको लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके समान कहा ।

१०२ आनतकत्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयक तकक देवोंमें मिथ्यात्य बाहर कपाय और नौ

नोकपायोँ ङी अरहपतर स्थितिविभक्तिवाले जीव नियमसे हैं। अनन्तायुबन्धी चतुष्ककी अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाले जीव नियमसे हैँ । अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव भजनीय हैं । भंग तीन

होते हैं। सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्यका कथन ओघके समान है। इसी प्रकार शुक्ल लेश्यावाले

जीबोंमें है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थंसिद्धितकके दे बोम सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीव नियमसे हैं। इसी प्रकार आमिनिव्रोधिकज्ञानों श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्येयज्ञानी

संयत सामायिकर्संयत छेदोपस्थापनासंयत परिद्ारविशुद्धिसंयत संयतासंयत अवधिदर्शनवाले

सम्यग्टृष्टि क्ञायिकसस्यग्दष्टि और वेदकसम्यग्टष्टि जीबोंके जानना चाहिए ।

विशेषार्थआनतसे लेकर उपरिमग्रैवेयकतकके देवोंके भिथ्यास्व आदि २२ प्रकृतियोंका एक

अल्पतर पद् ही बतलाया है अतः इनका एक ध्रुव भंग ही दता है । अनन्तालुवन््धी चतुष्कके

अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद् बतलाये हैं । इनमें से अल्पतर पद् ध्रुव है और अवक्रतत्य पद्

श्रध्रुव है। अतः एक जीव और नाना जीबोंकी अपेक्षा इन अवक्तव्य सम्बन्धी दो। अध्रुव अंगोंमें

एक धुवभंगके मिला देनेपर तीन भंग प्राप्त होते हैं। आनतादिकमें मिथ्यात्वसे सम्यक्त्वकी प्राप्ति

और सम्यक्त्वसे मिथ्यात्वकी प्राप्ति सम्भव है अतः यहाँ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वक्रे ओघके

समान चारों पद और उनके २७ भंग बन जाते हैं । यही कारण है कि यहाँ सम्यक्त्व और सम्य

म्मिथ्यात्वके भंगोको ओचके समान कहा है । अनुदिश आदिकमें तो सम्यग्टष्टि जीव ही होते हैं

और सम्यम्टष्टियोंक सब ग्रकृतियोंका एक अरुपतर पद् ही होता है। इसीलिये श्रुदिशादिकमे

सव ग्रकृतियोंका एक अल्पतर पद् कहा है। मूलमें आमिनिबोधकज्ञानी आदि और जितनी

सार्गणाएं गिनाई हैं उनमें भी एक अल्पतर पद दी सम्भव है अतः उनके कथनको अनुदिश आदिके

समान कहा ।

अ १०३ एकेन्द्रियोंमें सब प्रकृतियोंके सवर पदवाले जीव नियमसे हैं। इसी प्रकार बादर और

सूह्रम एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त प्रथिबीकायिक बादर प्रथिवीकायिक बादर प्रथिवी

कायिक अपर्याप्त सूक्षम प्रथिवीकायिक सूम प्रथिबीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्र जलकायिक

बादर जलकायिक बादर जलकायिक अपयांप्त सूक्म जलकायिक तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त

अग्निकायिक बाद्र अप्निकायिक बादर अप्निकायिक अपर्याप्र सूम अम्रिकायिक तथा उनके पर्याप्त

और अपर्याप्त बायुकायिक वाद्र बायुकायिक बादर बायुकायिक अपर्याप्त सूह््म वायुकायिक तथा

Page 74:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारभागाभागो ५५

पञ्जतवणष्फदि ०वाद्रवणप्फदि ० बाद्रबणप्फदि पत्तेय ०अपज् ०सुहमवणप्फदि

पठ्जत्तापज्जत्त बाद्रणिगोद ०सुहुमणिगोदपज्जत्तापज्जत्तओरालियमि ० कम्महय

मदि०सुद ०अभवसि ०मिच्छादि ०असण्णिअणाहारि त्ति । णवरि कम्मइ्यअणाहारि०

सम्म ०सम्पामि ०अप्पद ० भयणि०। आहार आहारमि सव्वपयडीणमप्यदरं भयणिज्ञं ।

एवमवगद् ०अकसा ०सुहम ०जहाकंखाद ०उवसम ०सासाण ० सम्मामि दिदि त्ति।

एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

8

१०४ भागाभागाणुगमेण दुविद्दो णिदेसोओघे० आदेसे । । ओघेण मिच्छत्त

वारसक०णवणोक० शुज सव्वजी केवडिओ भागो १ असंखे भागो अप्पद॒०

केवडिओ भागो १ असंखेज्ञा भागा । अव द्धि सव्वजी केव १ संखे मागो । एवमणं

ताणु०चउक० । णवरि अवत्तव्व अणंतिमभागो । सम्मत्तसम्मा मि अप्पदर ० सव्बजी

उनके पर्याप्त और अपययौ वनस्पतिकायिक वाद्र वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर वादर्

वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्त सूद्मबनस्पति व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त

बादर निगोद ओर उनके पर्याप्त और अपर्याप्त सूह्म निगोद और उनके पर्याप्त और

अपर्याप्त औदारिकमिश्रकाययोंगी कार्मणकाययोगी मल्यज्ञानी श्रुताज्ञानी अभव्य मिथ्यादृष्टि

असंज्ञी और अनाहारक जीवोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि कार्मणकाययोगी चौर

अनाहारक जीवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वकी अस्पतर स्थितिविभकितव्राले जीव भजनीय

हैं। आहारकक्राययोगी और आद्दास्कमिश्रकाययोगियोंमें सब प्रकृतियोंका अल्पतर पद् भजनीय

है । इसी प्रकार अपग॒तवेदी अकषायी सूदमरसांपरायिकसंयत यथख्यातसंयत उपशमसम्यम्टष्टि

सासादनसम्यग्टष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चाहिए।

विशेषाथेएकेन्द्रियोंके र८ प्रकृतियोंमेंसे जिसके ज़ितने पद सम्भव हैं उन पदवाले जीव

सर्वदा रहते हैं अतः यहाँ एक ध्रुव भंग ही होता हे । इसी बातके द्योतन करनेके लिये सव ग्रकृति

योंके सव पद् नियमसे हैं यह कहा है। इसी प्रकार मूलमें गिनाई गड बादर एकेन्द्रिय आदि

मार्गगाओंमें एक प्रूव पद ही प्राप्त होता है अततः उनके कथनको एकेन्द्रियोंके समान कहा । किन्तु

कार्येणकाययोग और अनाहारक मार्गणामें सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वकी सत्तावाले जीव कदा

चित् पाये जाते हैं और कदाचित् नहीं पाये जाते हैं इसलिये इनमें उक्त प्रकृतियोंका अल्पतर

पद् भजनीय है जिससे एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा दो भंग प्राप्त होते हैं। आहारककाय

योग और आहारकमिश्रकाययोगमें खव प्रकृतियोंका एक अल्पतर पद् ही होता है फिर भी यह

सान्तर मार्गंणा है इसलिये इसमें अल्पतर पदको भजनीय कदा । यहाँ भी दो भंग दोते हैं । मृलमें

अपगतवेद आदि और जितनी मागां गिनाई हैं उनमें सब श्रकृतियोंके अल्पतर पदबाला

कदाचित् एक जीव और कदाचित् लाना जीव होते हैं अतः उनके कथनको आहारक

काययोगियोंके समान कडा । ग है

इस प्रकार नानाजीबोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

१०७ मागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हेओघनिर्देश और आदेश

निर्देश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कपाय और नौ नोकध्ययोंकी भुजगार स्थिति

विभक्तिवाले जीव सब जीवोंके कितने भाग हैं १ असंख्यातवें भाग हैं। अल्पतर स्थितिविभक्ति

बाले जीव कितने भाग हैं ९ असंख्यात बहुभाग दै । अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव सब जीवोंके

कितने भाग हैं ९ संख्यातवें भाग हैं । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव अनन्त्वे भाग हैं । सम्यक्व और

Page 75:

५६ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविदत्ती ३

केव० १ असंखेज़ा भागा । सेस० असंखे०भागो । एवं तिरिक्खकायजोगिओरालिय ०

णजुँ्र०चत्तारिक ० असंजद ०अचक्खु ०तिण्गिले ०भवसि ०आहारि ति ।

१०४ आदेसेण णेरइएसु एवं चेव । णवरि श्रणंताणु चउक ० अवत्तव्बमसंसे०

भागो । एवं सत्तसु पृढवीसु पंचिंदियतिरिक्खतिय ०देव०मवणादि जाव सहस्सार०

पंचिदियपंचिं०पज्ज ०तसतसपज्ज ०पंचमण ०पंचवचि ०वेउव्वि ०इत्थि ०पुरिस ०

चक्खु ०तेउ ०पम्म ०सण्णि त्ति।

१०६ पंचिदियतिरिक्खअपज्ज० छव्वीसं पयडीणमेवं चेव । णवरि अणंताणु०

चउक० अवत्तव्य० णत्थि । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं णत्थि भागामागं एगप्पदर

पदत्तादो । एवं मणुसअपज्ज ०सब्बण्डंदियसव्यविगर्लिदिय ०सव्बपंचकायतसअ्रपञ्ञ ०

ओरालियमिस्स ०वेच्वि ० मिस्सकम्मइ्यमदिसुद्०विहंग ०मिच्छादिद्विअसण्णि ०

अणाहारि त्ति।

१०७ मणुस० णिरभोघं । मणुसपज्ञ०मणुसिणी एवं चेव । णवरि जम्दि

असंसे मागो तम्हि संखे मागो कायन्वो ।

१०८ आणदादि जाव उवरिमगेवजञो त्ति अणंताणुचउक० अप्प० सव्वजी

के० १ असंखेजा भागा । अवत्तव्व० अखे मागो । सम्मत्तसम्मामि० ओघं ।

सम्यम्मिथयास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव सव जीबोंके कितने भाग हैं ९ अखंख्यात

बहुभाग हैं । तथा शेष पदवाले असंख्यातवें भाग हैं। इसी प्रकार तियंच काययोगी औदारिक

काययोगी नपुंसकवदवाले क्रोधादि चारों कपायवाले असंयत अचचक्ष॒ुदर्शनवाले ऋष्णादि तीन

लेश्याबाले भव्य और आह्यारक जीवोंके जानना चाहिए।

१०५ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता हैकि

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले असंख्यातवें भाग हैं। इसी प्रकार सातों

प्रथिवियोंके नारकी पंचेन्द्रिय तियेच पंचेन्द्रिय तियंच पर्याप्त पंचेन्द्रिय तियंच योनिमती सामान्य

देव भवनवासियोंसे लेकर सदार स्वगंतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त त्रस तरस पर्याप्त

पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनयोगी वैक्रियिककाययोगी स्त्ीवेदवाले पुरुषवेदवाले चह्ल॒दर्शनवाले

पीतलेश्यावाले पद्मलेश्यावाले और संज्ञी जीवॉके जानना चाहिए।

९०६ पंचेन्द्रियतियंचअपर्याप्तकोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकीअपेक्षा इसी प्रकार जानना चाहिए।

किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके अनन्तानुबन्धी चलुष्कका अवक्तव्यपद् नहीं है । तथा सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यासवका भागाभाग नहीं है क्योंकि यहाँ इन दोनों प्रकृतियोंका एक अल्पतरपद हं ।

इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब एकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सब पाँचों स्थावर

काय त्रस अपर्याप्त औदारिकमिश्रकाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी कार्मणकाययोगी मत्यज्ञानी

श्रुताज्ञानी विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्ञी ओर अनाहारक जीवोंके जानना चाहिए।

१०७ सामान्य मलुष्योमें सामान्य नारकियोंके समान जानना चाहिए। मनुष्य पर्याप्त और

मनुष्यनियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ असंख्यातवाँ भाग

कदा है वहाँ संख्यातवाँ भाग कर लेना चाहिये।

१०८ आनत कस्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयक तकके देवोंमें अनन्तानुवन्धीचतुष्ककी अस्पतर

स्थितिविभक्तिबाले जीव सब जीबोंके कितने भाग हैं १ असंख्यात बहुमाग हैं। तथा अवक्तव्य

Page 76:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उनत्तरपयडिमुजगारपरिमाणं ५७

सेसपयडि० णत्थि मागामागं । एवं सुकरे० । अणुदिसादि जाव सव्वद़ सब्ब

पयडी णत्थि भागाभागं । एवमाहार०हारमिस्ष ०अवगद् ०प्रकसा०आमिणि०

सुद ०ओहि मणपज ० संजद् सामाइय०छेदो परिहार ०सुहुम ०जहाक्खाद ०संजदा

संजद०ओहिदंस ०सम्भादिद्ठि ०खश्य ० वेदय उवसम ०सासाण ०सम्मामिच्छादिट्टि

ति । अभव० छत्वीसपयडि० मदिभंगो ।

एवं भागाभागाणुगमों समत्तो ।

१०६ परिमाणाणुगमेण दुबिहों णि०ओबेण आदेसेण । ओघेण मिच्छत्त

अारसक०णवणोक तिण्णि पदा० केत्तिया १ अणंता । अणंताणु०चउक्क ० एवं चेव ।

णवरि अवत्तन्व असंखेजा । सम्मत्तसम्मामि० सब्बपदा केत्तिया श्रसंखेजा । एवं

तिरिक्खकायजोगिओरालि ०णबुंस ०चत्तारिक ०असंजद ० अचक्खु ०तिण्णिरे ० भवसि ०

आहारि त्ति ।

११० अदेसेण णेरइएसु सब्वपयडीणं सबव्वपदा केत्तिया असंखेजञा । एवं

सव्बणेरइय ०सव्वपंचिदियतिरिक्खमणुसअपज्ञ ० देव ०भवणादि जाव सहस्सार ०पंचि

दियपंचिं ०पञ्ञतसतसपज ०पंच मण ० पंचव चि ०वेउव्बिय ० इत्थि ०पुरिस ० चक्खु ०

तेउ०पम्म ०सण्णि त्ति। मणुस० अणताणु चउक अवक्तव्य केत्ति० संखेऽजा ।

स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातवें भाग दै । सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वका कथन ओघके

समान है । यहाँ शेष प्रकृतियोंक्री अपेक्षा भागाभाग नहीं है । इसी प्रकार शुक्कलेश्यावाले जीवोंमें

जानना चाहिए। अनुदिशसे लेकर सर्वाथसिद्धितकके देबोंमें सब प्रकृतियोंकी अपेक्षा भागाभाग

नहीं है । इसी प्रकार आह्ारककाययोगी आहारकमिश्रकाययोगी अपगतवेदी अकषायी जाभिनि

बोधिकज्ञानी श्रतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्येयज्ञानी संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत

परिद्यारविशुद्धिसंयत सदम सांपरायिकसंयत यथार्यातसंयत संयतासंयत अवधिदर्शनी सम्यम्दृष्टि

क्षायिक्सम्यम्दष्टि वेदकसम्यस्टष्टि उपशमसम्यम्दष्टि सासादनसम्यस्टष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि

जीवबोंके जानना चाहिए । अभव्योंमें छब्च्रीस प्रकृतियोंका भंग मत्यज्ञानियोंके समान है ।

इस प्रकार भागाभागानुगम समाप्त हुआ।

१०६ ओघ और आदेशकी अपेक्षा परिमाणानुगम दो प्रकारका है । उनमेंले ओघकी

अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकपायोंकी अपेक्षा तीन पदवाले जीव कितने हैं अनन्त

हैं। अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता हे कि

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यात हैं । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके सब पद्वाले

जीव कितने हैं १ असंख्यात हैं । इसी प्रकार तिर्येच काययोगी ओदारिककाययोगी नपुंसकवेदबाले

करोधादि चारों कषायवाले असंयत अचक्षदर्शनवाले ऋष्णादि तीन लेश्यावाले भव्य और

आद्वारक जीवोंके जानना चाहिए। हि

११० आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें सव प्रकृतियोंके सब पदवाले जीव कितने हैं ९

असंख्यात हैँ । इसी प्रकार सब नारकी सब पंचेन्द्रियतियेद्च मनुष्य अपर्याप्त सामान्य देव भवन

वासियोंसे लेकर सहस््रारस्वर्गंतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपरयाप्त चस त्रसपर्याप्त पांचों मनो

योगो पांचों वचनयोगी वैक्रियिक्रकाययोगी स्त्रीवदवाले पुरुषबेदवाले चह्ुदशनवाले पीतलेश्या

वाजे पद्म लेश्याबाले और संज्ञी जीवो जानना चाहिए। मनुष्योंमें अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अवक्तव्य

Page 77:

जयघवलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविदत्ती ३

सम्मत्तसम्भामि श्ुज०अवद्ि ०अवत्तव्व केत्ति संखेज्जा । सेसपयडीणं सब्ब

पदा० अणंताणु० झ्ुुज०अप्प०अवद्धि सम्म ०सम्मामि० अप्प के० १

असंखेज्जा ।

१११ मणुसपज्ज०मणुसिणी० सव्वपयडी० सब्बपदा० के० १ संखेञ्जा । एवं

सब्बड्ठ ०आहार ०आहारमिस्स ०अवगद् ०अकसा ० मणपञ्ज ० संजद्० सामाइयछेदो ०

परिहार ०सुहुम ०जहाक्खादसंजदे त्ति।

११२ आणदादि जाव उवरिमगेवज्जो त्ति सव्यपयडीणं सवपदा० के

असंखेज्जा । रवं सुकले० । अणुदिसादि जाव अवराइद त्ति सव्वपयडि० अप्पदर०

के १ असंखेज्जा । एवमाभिणि सुद् ओदि संजदासंजद्०ओदिदंस ०सम्मादि०

खय ०वेदय उवसम सासण ०सम्पामिच्छादिट्टि तति ।

११३ एडंदिण्सु मिच्छत्त सोलसक०णवणोक० सव्वपदा० के० १ अणंता ।

सम्मत्तसम्मामि अप्पदर० के० १ असंखेञ्जा । एवं सब्बएडंदियवणप्फदि०बादर

सुहमपज्जत्तापज्जचणिगोद ० बादरसुहुमपज्जत्तापज्जच ओरालियमिस्स कम्मइय

मदि०सुद०मिच्छादि०असण्णि०अणाहारि त्ति। विगलिदियाणं पंचिदियतिरिक्ख

अपज्जत्तभंगो । एवं पंचिं०अपज्ज०चत्तारिकायतस अपज्ज ०वेउव्वियमिस्सपिहंग

स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं १ संख्यात हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी मुजगार

अवस्थित और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं १ संख्यात हैं । तथा शे प्रकृतियोंके

सब पदवाले अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी भुजगार अल्पतर और अवल्थितविभक्तिवाले तथा सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं ९ असंख्यात हैं ।

१११ मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोमे सब प्रकृतियोके सव पदवाले जीव कितने हैं ९

संख्यात दै । इसीप्रकार सर्त्रर्थिसिद्धिके देव आहारककाययोगी आहारकमिश्रकाययोगी अपगत

बेदबाले अकषायवाले मनःपर्ययज्ञानी संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहार

विश्युद्धसियत सूह्मसांपरायिकसंयत और यथाख्यातसंयत जीबोंके जानना चाहिए।

8 ११२ आनतकल्पसे लेकर उपरिमग्रेवेयकतकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदवाले जीव

कितने हैं ९ असंख्यात हैं । इसी प्रकार शुक्कलेश्यावाले जीबोंमें जानना चाहिए। अनुदिशसे लेकर

अपराजिततकके देथोंमें स प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं असंख्यात

हैं। इसीप्रकार आमिनिवोधिकज्ञानी श्रतज्ञानी अवधिज्ञानी संयतासंयत अवधिदशेनी

सम्यस्टृष्टि क्ञाथिकसस्यस्टष्टि वेदकसम्यग्टष्टि उपशमसम्यम्दष्टि सासादनसम्यम्दष्टि और

सम्यम्मिथ्यादृष्टि जीवोंके जानना चाहिए।

११९ एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंके सब पदवाले जीव कितने

हैं १ अनन्त हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं ९

असंख्यात हैं । इसी प्रकार सब एकेन्दरिय वनस्पतिकायिक उनके बादर और सूदंम तथा पर्याप्त

ओर अपर्याप्त निगोद उसके बादर ओर सूम तथा पर्याप्त और अपर्याध ओौदारिकसिश्रकाय

योगी कामेणकाययोगी मत्यज्ञानी श्रवाज्ञानी सिथ्यादष्टि असंज्ञी और अनाहारक जीवों के जानना।

बिकलेन्द्रियोंके पंचेन्द्रियतिरयैव्च अपर्याप्रकोंके समान भंग है। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय अपर्याप्त

प्रथिवी आदि चार स्थावरकाय त्रय अपर्य बैक्रियिकमिश्रकाययोगी और विर्भगज्ञानी जीवोत्र

Page 78:

शा० २२ द्िदिविदत्तीए उत्तरपयडिभुजगारखेत्त ५६

णाणि त्ति । अभव० छव्बीसपयडि० मदि०भंगो।

एवं परिमाणाणुगमो समत्तो ।

११४ खेत्ताणुगमेण दुविहो गिदेसोशोवेण अदेसेण य । ओघेण मिच्छत्त

भारसक०णवणोक० तिण्णिपद्ा केवडि खेत्ते सब्बलोगे। अणंताणुचउक ० एवं

चेव । णवरि अवत्त लोगस्स असंखे०भागे । सम्मत्त सम्मामि० सव्वपदा० ठोग०

असंखे० भागे । एवं तिर्वि ०कायजोगि०ओरालिय णवुंस ०चत्तारिक ०असंजद् ०

अचक्खु ०तिण्णिले ०मचसि ० आहारि ति ।

११५ आदेसेण णेरइएसु सव्बपयडी ०सव्वपदा के०१ लोग० असंखे भागे। एवं

सव्वणेरइयसव्वपंचिंदियतिरिक्ख ०सब्यमणुस ० सव्बदेव ०विगलिंदियसब्वपंचिदिय

र

बादरपुटविपञ्ज ० पादरश्रउपनज्ज० बादरतेउपज्ज ०बादरवाउपज्ज ० बाद्रवणप्फदिपत्तय

पञ्ज ०सव्वतस ०पंचमण ०प॑चवचि ० वेउज्विय ०वेउ मिस्स ० आहार ०आदारमिस्ष ०

इत्थि०पुरिस ०बिहंग ०आभिणि ०सुद ०ओहि ०मणपज्ज ० संजद ०सापराइयछेदो ०

परिदहार०सुहुम ०जहाबखाद ०संजदासंजद् ०चकखु ० ओहिदंस ०तिण्णिले ० सम्मादिद्धि ०

खश्य ०वेदय ०उवसम ०सासाण सम्मामि०सण्णि त्ति। णवरि बादरबाउपज्जत्त ०

सम्मत्तसम्मामि० अष्पद्रवञ्जं लोग० संखे०मागे।

जानना चाहिए। अभय्योंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा सत्यज्ञानियोंके समान भंग है । वि

इस प्रकार परिमाणानुगम समाप्त हुआ।

8 ११४ क्षेत्रानगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओ घनिर्देश और आदेशनिर्देश।

उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंके तीन पदवाले जीव कितने क्षेत्रमें

रहते हैं सब लोकमें रहते हैं अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा इसीप्रकार जानना। किन्तु इतनी

विशेषता है कि अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव लोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रमें रहते हैं । सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदवाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते है लोकके असंख्यातबें भाग क्त्र

रहते हैं। इसी प्रकार सामान्य तियच काययोगी औदारिककाययोगी नपुसकवेदबाले क्रोधादि

चारों कपायवाले असंग्रत अचजक्ुदशनवाले कर्णादि तीन लेश्यावाले भव्य और आहारक

जीर्वोके जानना चाहिए।

११५ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें सव प्रकृतियोंके सब पद्वाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते

हैं लोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रमें रहते हैं । इसी प्रकार सब नारकी सब पंचेन्द्रियतियंच सब

मनुष्य सब देव सब विकलेन्दरिय सब पंचेन्द्रिय बादर प्रथिबीकायिकपर्याप्त बादर जलकायिक

परयाप्त बादर अप्निकायिकपर्याप्त बादर वायुकायिकपर्याप्त बादर बनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

पर्याप्त सब त्रस पाँचों सनोयोगी पाँचों वचनयोगी वैक्रियिककाययोगी वैक्रियकमिश्रकाययोगी

आहारककाययोगी आहारकमिश्रकाययोगी खीवेदवाले पुरुषव्रेदवाले विभंगज्ञानी आमिनिबोधिक

ज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनः्पयैयज्ञानी संयत सामायिकसंयत छदौ पस्थापनासंयत परिदार

विश्ुद्धिसंयत सूच्मसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत चह्ल॒दर्शनबाले अवधिदर्शनवाले

पीत आदि तीन लंश्यावाले सम्यस्टष्टि ज्ञायकसम्यस्टष्टि वेदकसम्यम्टष्टि उपशमसम्यम्दृष्टि

सासादनसम्यस्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादष्टि और संज्ञी जीवक जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि

बादरबायुकायिकपर्याप्क जीवोंमें सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीबोंको छोड़कर शेष पदवाले जीव लोकके संख्याते भाग क्षेत्रमें रहते हैं ।

Page 79:

६० जयघवलासद्दिदे कसायपाहुडे छविदिविहत्ती ३

११६ एइंदिएसु मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० भरुज ०अवद्ठिअप्पदर ० ओघं ।

सम्मत्तसम्मामि ०अप्पदर ओघं । एवं बादरसुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तपुढवि ०बादरपुढवि

अपज्ज ० सुहमपुठ विपज्जत्तापज्जत्तआउ ०बादरआउअपज्ज ०सुहुमआउ पज्जत्तापज्जत्त ०

तेउ० बादरतेउ ०अपज्ज ० सुहुमतेउपज्जत्तपज्जत्तवाउ ०बादरबाउअपज्ज ०सुहुमवाउ

पज्जचापज्जत्तबादरवणप्फद्पत्तयसरीरअपज्ज ० वणप्फदि ० णिगोद ०बादरसुहुमपज्जत्ता

पज्जत्त ओरालियमिस्स ०कम्मइय ०मदि ०सुद ० मिच्छादि ०असण्णि ०आहारि त्ति।

११८ अवगद० सब्बपयडि० अप्प० लोग० असंखे०भागे एवमकसा० ।

अभवसि० छव्वीसपयडीणं मदि०मभंगो ।

एवं खेत्ताणुगमो समत्तो ।

११८ पोसणाणुगमेण दुविहो णिदेसोओषेण आदेसेण य । तत्थ ओषेण

११६ एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय ओर नो नोकषायोंकी युज गार अवस्थित और

अल्पतस स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है । तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है। इसी प्रकार बादर ओर सूक्ष्म

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त प्थिबीकायिक बादर प्रथित्रीकायिक बादर ४थिवीकायिक

अपर्याप्त सूक्ष्म प्थिवीकायिक और उनके पर्याप्त और अपरयाप्त जलकायिक बादर जलकायिक

बादर जलकायिक अपर्याप्त सूक्म जलकायिक और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त अप्निकायिक

बादर अप्रिकायिक बादर अग्निकायिक अपर्याप्त सूक्म अप्निकायिक और उनके पर्याप्त

ओर अपर्याप्त वायुकायिक बादर वायुक्रायिक बादर वायुकायिक अपर्याप्त सुम वायुकायिक

ओर उनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिक

भ्रत्येक शरीर अपर्याप्त वनस्पतिकायिक तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त

निगोद तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त औदारिकमिश्रकाययोगी कार्मण

काययोगी मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्ञी और अनाह।रक जीबोंके जानना चाहिये।

११७ अपगतवेदियोंमें सव प्रकृतियों थी अल्पतर स्थित्तिविभक्तिवाले जीव लोकके असंख्या

ते भाग क्तत्रमे रहते हैं इसी प्रकार अकषायी जीवोंके जानना चाहिए। अभव्योंमें छब्बीस

प्रकृतियोंकी अपेक्षा मत्यज्ञानियोंके समान भंग है ।

विरोषा्थंमोघसे मिथ्यात्व सोलद कषाय और नौ नोकपायोंकी भुजगार अवस्थित

और अल्पतर स्थितिवाले जीव अनन्त हैं और ये सब लोकमें पाये जाते हैं अतः इनका क्षेत्र सब

लोक कहा। तथा अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिवाले और सम्यक्त्व तथा

सम्यग्सिथ्यात्वके सब पदवाले जीव अ संख्यात होते हुए भी स्वल्प हैं अतः इनका क्षेत्र लोकके

असंख्यात भागप्रमाण कद्दा यह् व्यवस्था तिर्येचगति आदि मूलमें गिनाई हुई मार्गणाओंमें

बन जाती है अतः इनके कथनको ओघके समान कहा। आदेशसे जिस मार्गेणाबाले और

उसके अवान्तर भेदोंका जितना क्षेत्र है उसमें २६ प्रकृतियोंके सम्भव पदवालोंका उतना ज्षेत्र

कहा। किन्तु सम्यक्थ और सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा सर्वेत्र सम्भव पदवालोका क्षेत्र लोकके

असंख्यात्वें भाग प्रमाण है । इसी प्रकर अनन्तानुबन्धी चतुष्कक्की अवक्तव्य स्थितिबाले जीयोका

कत्र सर्वत्र लोकके असंख्यातवें माग प्रमाण है।

इस प्रकार कतत्राचुगम समाप्त हुआ ।

११८ स्पशीनालुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनि्देश और आदेशनिर्देश ।

Page 80:

गा० २२ ट्विदिविदत्तीए उत्तरपयडिञुजगारपोसणं ६१

मिच्छत्तबारसक ० णवणोक तिण्ं पदाणं विहत्तिएहि केबडियं सेत्तं पोसिदं १ सब्ब

लोगो । अणंताणु्चउक एवं चेव । णवरि अवक्तव्य लोग० असंखे०भागो अह

चोदसभागा वा देखणा । सम्मत्त०सम्मामि अप्पदर० के० खेर पो० १ रोग असंखे०

भागो पोसिदो अड चोदस० देखणा सव्बलोगो वा । सेसविहत्तिएदि केब० १ लोग०

असंखे ०भागो अड चोहस० देखणा। एवं कायजोगि०चत्तारिकसा०असंजद ०

अचक्खु ०भवसि ०आहारि त्ति ।

११९ अदेसेण णेरइण्सु मिच्छत्त ०बारसक०णवणोक तिण्डं पदाणं विहृत्ति ०

लोग असंखेमागो छ चोदस देष्षणा। अणंताणुचउक् एवं चेव । णवरि

उनमेंसे ओधकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकपायोंके तीन पद्विभक्तिवाले जीवानि

किलने क्षेत्रका स्पशं किया है सव लोकका स्पशं किया है । अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसी

प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तञ्य स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने लोकके

असंख्यातर्वें भाग और त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागग्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया

है। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्श

किया है ९ लोकके असंख्यातवें भाग तरस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग ओर सब

लोक क्षेत्रका स्पशे किया है । तथा शेष विभक्तिबाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पशे किया है लोकके

असंख्यातवें भाग और त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागग्रमाण क्षेत्रका स्पशे किया

है । इसी प्रकार काययोगी क्रोधादि चारों कषायवाले असंयत अचक्षुद्शनी भव्य और आद्वारक

जीबोंके जानना चाहिये ।

विशेषा्थओघसे मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी भुजगार अवस्थित

और अल्पतर स्थितिबाले जीव अनन्त हैं और ये सब लोकम पाये जाते हैं अतः इनका स्पर्श

सव लोक कहा । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अबक्तत््य स्थितिवाले जीवोंका वतमान स्पशं लोकके

अरसंख्यातवे भाग है क्योंकि वर्तमान कालमें जिन्होंने अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना की है ऐसे

जीव सम्यक्त्वसे च्युत होकर मिथ्यात्वे जनेवाले बहुत ही थोड़े हैं । तथा अतीत कालीन स्पशं

त्रस नालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग है क्योंकि यद्यपि ऊपर नौवें अवेयक तक्के और नीचे

सातवें नरक तकके जीव अनन्तानुबन्धीकी अवक्तव्य स्थितिको करते हुए पाये जाते हैं । परन्तु उनका

क्षेत्र लोकके असंख्यातर्वें भाग ही है। किन्तु इस पद युक्त देवोंका विहारवत् स्वस्थान त्रस

नालीके आठबढे चौदह भाग है अतः इनका अतीत कालीन स्पर्शं त्रस नालीके कुछ कम आठबटे

चौदह भाग प्रमाण कहा । सम्यक्व च्रौर सखम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिवालोंका स्पशे तीन

प्रकारसे बतलाया है। इनमेंसे लोकका असंख्यातवाँ भागप्रमाण स्पर्श वर्तमान कालकी अपेक्षा बत

लाया है। कुछ कम आठबटा चौदह भाग प्रमाण स्पशं विहार आदि पदोंकी अपेक्षासे बतलाया है ।

ओर सब लोक स्पशे मारणान्तिक तथा उपपाद पदकी अपेत्ता बतलाया है। तथा शेष पदोंकी

अपेक्षा जो लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्पर्श बतलाया है बह वर्तेमान कालकी प्रधानतासे

वया और कुछ कम आठबटा चौदह राजु प्रमाण स्पशं अतीत कालकी अपेक्षा बत्तलाया

है। यहाँ कुछ ओर मार्गगां गिनाई है जिनका स्पशे ओघके समान प्राप्त होता है अतः उनके

कथनको ओघके समान कहा । जैसे काययोगी आदि ।

११६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कपाय और नौ नोकषायोंके तीन

पदवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग

Page 81:

६२९ जयधवलासदिद कसायपाहुडे ह्विदिविहनत्तौ ३

अवत्तव्व खेत्तभंगो । सम्मत्त०सम्मामि० अप्पद्र० लोग० असंखे०भागो छ चोदस

देखणा । सेस० लोग० असंखे०भागो । पढमाए वेत्तम॑गो । धिदियादि जाव स्मि

तति णिरयोधो णवरि सगपोखणं कायव्वं । तिरिक्ख ओधं । णवरि अह चोहस भागा

तति णत्थि । एवमोरालिय ०णयुंस ०तिण्णिलेस्सा त्ति।

१२० पंचिदियतिरिक्खपंचि ० तिरि०्पज्जपंचि तिरि०जोणिणी मिच्छत्त०

सोलसक ०णवणोक ० सव्वपदाणं बि० के० खे० पो० १ रोग असंखे भागो सब्ब

लोगो वा। णवरि अणंताणु०चउक० अवत्तव्व० इत्थि०पुरिस ० छुज०अवष्ठि०

खेत्तमंगो । सम्म०सम्मामि० अप्यदर० मिच्छत्तमंगो सेस० खेत्तभंगो एवं मणुस

तिय० । पंचिंदियतिरिक्ख०अपज्ज० मिच्छत्त०सोलसक०णवणोक० तिण्णिपदा०

प्रमाण क्षेत्रका स्पश किया है । अनन्तानुतन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु

इतनी विशेषता है कि अवक्तव्यका भंग क्षेत्रके समान है। सम्यक्त्व और सम्थग्मिथ्यास्वकी अल्पवर

स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें भाग ओर त्रस नालीके चौदद भागोंमेंसे कुछ कम

छहमाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्श किया है । तथा शेष स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने लोकके अरसंख्यातवें

भाग क्षेत्रका स्पर्शा किया है । पहली प्रथिवीपें स्पर्टाका भंग ततत्र समान है । दुसरीसे लेकर सातवीं

तक सामान्य नारकियोंके समान स्पर्श है। किन्तु इतनी विशेषता है कि अपना अपना स्पर्श

कहना चाहिये। तिर्खचोंमें ओवके समान स्पश है। किन्तु इतनी विशेषता है कि आठवटे चौदह

भाग यह विकल्प नहीं है। इसी प्रकार औदारिककाययोगी नपु सक्वेदी ओर छृष्णादि तीन

लेश्यावाले जीबोंके जानना चाहिये।

विशेषार्थसामान््यसे नारकियोंका स्पशं लोकके असंख्यात्वे भागप्रमाण और कुछ कम

छुदबटे चौदह राज ममाण बत्तलाया है। वह यहाँ सब प्रकृतियोंके सव पदों अपेक्षा बन जाता

है। किन्तु इसके दो अपवाद हैं । एक तो अनन्तानुबन्धी चतुष्कके अवक्तव्य पदकी अपेक्षा चद

स्पशं नहीं प्राप्त होता क्योंकि ऐसे जीव मारणान्तिक समुद्धात या उपपाद पदसे रदित देति हैं।

इसलिये उनके लोकके असंख्यातर्वें भागप्रमाण ही स्पर्श पाया जाता है। दूसरे सम्यक्त्व ओर

सम्यम्मिथ्यात्वके अल्पतर पदको छोड़कर शेष परदोंकी अपेक्ता भी लोक्के असंख्यातवें भागप्रमाण

स्पर्श प्राप्त होता है। कारण वही है जो अनन्तानुबन्धीके अबक्तव्य भंगके सम्बन्धमें बतलाया है ।

प्रथमादि नरकोंमें भी इसीप्रकार अपने अपने स्पशेको जानकर कथनकर लेना चाहिये। यद्यपि

तिर्य चोमे सब प्रकृतियोंके सब पदोंकी अपेक्षा ओघके समान स्पशे बन जाता है किन्तु यहाँ कुछ कम

आठबवदे चौदह राजु स्पर्श नहीँ प्राप होता क्योंकि यह स्पशं देवोंकी प्रधानतासे बतलाया है परन्तु

तिय॑च्चोंमे देव सम्मिलित नहीं दै । ओदारिककाययोग आदि मार्गणाओंमें भी इसी प्रकार घटित

कर लेना चाहिये

१२० पंचेन्द्रियतिर्थ॑च पंचेन्द्रियतियच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिणंच योनिमती जीवोंमें

मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके सब परविभक्तिवाले जीवोनि कितने ज्षेत्रका स्पशं

किया है १ लोकके असंख्यातबें भाग और सब लोक क्षेत्रका स्पशं करिया हे । किन्तु इतनी विशेषता

है कि अनन्तानुबन्बी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिक्भिक्तिवालोंका तथा खरीवेद् ओर पुरुषबेदकी

भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका अंग क्षेत्रके समान है । सम्यक्त्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिबालोंका भंग मिथ्यात्वके समान है और शेषका भंग ज्षेत्रके समान है।

इसी प्रकार सामान्य पयोप्त और मनुष्यिनी इन तीन प्रकारके मनुष्योंके जानना चाहिये । पंचेन्द्रिय

Page 82:

गा० २२ टविद्विहत्तीए उत्तरपढिभुजगारपो सर ६३

सम्म०सम्मामि० अप्पदर० पंचिदियतिरिक्खमंगो । एवं मणुसमअपज्ञ० सन्वविग

रिदियपंचिदियअपज् ० बादरपुढविपज्त्तबादरआ उपज ० बादरते उपज्ज बादरवाउपज्ज

बादरव ० तसअपजलञत्ता त्ति। णवरि बादरवाउपज्ञ० छज्बीसपयडि० तिण्णिपद०

लो० संखे०मागो । इत्थि०पुरिस० श्ुज०अवष्टि० वज सव्बलोगो वा।

१२१ देव० मिच्छत्तसोलसक० णवणोक० सन्वपदाणं वि लोग० असंखे०

भागो अट्डणव चोह० देखणा । णवरि अणंताणु०चउक० अवत्तव्व इत्थि०पुरिस०

अज ०अव्टि० छोग० असंखे०भागो अट्डचोइस० देखणा। सम्म०सम्माप्ति० श्ुज०

तिर्थच अपर्याप्तिकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके तीन पद॒वाले जीबोंका और

सम्यक्त्व तथा सम्यग्मिथ्याध्वकी अल्पतरस्थितिविभक्तिवाले जीवोंका भग पंचेन्द्रियतियेंचोंके समान

है । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बादर प्रथिवी कायिकपर्याप्त

बादर जलकायिक पर्याप्त बादर अप्निकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक

अतेकशरीर और चस अपर्याप्त जीबोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि बादर वायुकायिक

पर्याप्तकोंमें छब्बी ७ प्रकृतियीके तीन पदवाले जीवोंने लोकके संख्यातर्वें भाग क्षेत्रक्रा स्पशें किया

है। तथा खीवेद और पुरुषवेदकी सुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिके विना शेष स्थिति

विभक्तिवाले जीवोंने सव लोकका स्पशौ किया है।

विशेषार्थसामान्य नारकियोंमें सब्र प्रकृतियोंके सव पदोंके स्पर्शके लिये जो युक्ति दे

आये हैं वही तिर्यश्नत्रिकमें भी लागू दोती है । किन्तु यहाँ भी छुछ अपवाद हैं । दो अपवाद तो

वही हैं जो नरकगतिमें बतला आये हैं । तथा एक तीसरा अपवाद ख्रीवेद और पुकषवेदकी भुजगा

और अवस्थित स्थितिके स्पर्शका है। बात यह है कि यद्यपि उक्त तीन प्रकारके तिर्य चोका सब

लोक स्पशं बतलाया है पर यह उन्दीके प्राप होता है जो एकेन्द्रियोंमेंसे आकर इनमें उत्पन्न होते हैं

या जो एकेन्द्रियोंम मारणान्तिक समुद्धात करते हैं । परन्तु ऐसे जीबोंके स्वेद श्नौर पुरुषवेदकी

भुजगार और अवस्थित स्थिति नहीं पाई जाती अतः यहाँ इनका स्पशे क्षेत्रके समान बतलाया है।

मनुष्यत्रिकमें भी इसीग्रकार विशेषताओंको जानकर स्पशका कथन करना चाहिये। पंचेन्द्रियतियंच

लब्ध्यपर्याप्कोंमें मिथ्यात्व आदिके तीन पदोंकी अपेक्षा तथा सम्यक्त्व शौर सम्यम्मिथ्यात्वके

अल्पतर पदकी अपेक्षा स्पर्श पंचेन्द्रियतियचोंके समान प्राप्त होता है अतः इनके कथनको पंचेन्द्रिय

तिर्मचोके समान बतलाया । मलनुष्यअपर्याप्त आदि छुछ और मार्गणाएं हैं जिनमें यह व्यवस्था

बन जाती है अतः इनके कथनको पंचेन्द्रियतियेच लब्ध्यपर्याप्कोंके समान बतलाया है। किन्तु

बादर वायुकायिकपर्याप्त जीव इसके अपवाद हैं । बात यह है कि बादर वायुकायिक पर्याप्तकोंका

स्पर्श लोकके संख्यातवें मागप्रमाण बतलाया है अतः इनमें छब्बीस ग्रकृतियोंके तीन पदवालोंका

स्पशं लोकके संख्यातवें भागप्रमाण बन जाता है। यहाँ जो खीवेद ओर पुरुषवेदकी भुजगार और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोंके सब लोक स्पर्शंका निषेध किया है सो इसका कारण प्रायः वही है

जो पहले बतला आये हैं ।

१२१ देवोंमें मिथ्यास्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके सब पद्विभक्तिवले जीवॉने

लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ ओर कुछ कम नौ माग

प्रमाण क्षेत्रका स्पर्श किया है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अ वक्तञ्य

स्थितिविभक्तिवाले जीने तथा ख्रीवेद और पुरुषवेदकी मुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्ति

वाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें भा। और घस नालीक चौदह भागोंमेंसे छुछ कम आठ भागप्रमाण

क्षत्रका स्पर्श किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी सुजगार अवस्थित और अवक्तव्य

Page 83:

६9 जयघवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदनत्ती ३

अवट ०अवत्तव्व० रोग० असंखे०भांगो अड चोदस० देखणा। अप्पद्र० लोग०

असंखे ० भागो उद्रणव चोदस० देघणा । एवं सोहम्म० । भवण०वाण०जोदिसि०

एवं चेव । णवरि अद्धुद्ठअड्डणब चोदस देखणा। सणक्छुमारादि जाब सहस्सार०

सव्बपयडि० सव्वपदवि० लोग० असंखे मागो अद्र चोद् ० देखणा । आणदादि जाव

अच्चुदे त्ति सव्यपय० सव्वपदवि लोग० असंखे०भागो छ चोहस० देखणा। एवं

सुक० । उवरि खेत्तमंगो । एवमाहार ०आहारमिस्स०अवग ०अकसा मणपज्ञ ०

संजद०सामाइय छेदो ०परिहार०सुहुम ०जहाक्खाद०अभवसिद्धिया त्ति।

१२२ एडंदिण्सु मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० तिण्हं पदाणमोघं । सम्मत्त ०

सम्मामि० अप्पदर० पंचिंदियतिरिक्खअपजत्तभंगो । एवं चत्तारिकायबादरअपज्ञ०

सब्वेसि सुहुमपजत्तापजतबादरबणप्फदिपत्तेय अपञ्ज ०बणप्फदिणिगोद ०ओरालिय

पमिस्स ०कम्मइ्य ०मदि०खुद०मिच्छाइट्टिअसण्णि०अणाहारि त्ति।

स्थिविविभक्तिवाले जीवोंने लोकके असंख्यातर्वें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें ते कुछ कम आठ

भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया है। अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें माग

और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछकम आठ और कुछकम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया दै।

इसीप्रकार सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके जानना चाहिये। भवनवासी व्यन्तर और ज्योतिषी

देवोंके इसीप्रकार जानना । किन्तु इतनी विशेषता है कि उन्होंने त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछकन

साढ़ेतीन कुश्कम आठ और कुछकम नौ भागग्रमाण क्षेत्रका स्पश किया है। सनत्कुमारसे लेकर

सहार स्वर्गतकके देवोंमें सब्र प्रकृतियोंके सब पद्विभक्तिवाले जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग

और त्रसनालीके चौदह भागोंमें ते कुछकम आठ भागग्रमाण क्षेत्रका स्पर्श किया है । आनतसे लेकर

अच्युत कल्पतकके देबोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदविभक्तिवाले जीबोंने लोके असंख्यातवें भाग

और त्रसनालीके चोद भागोंमेंसे कुञरकम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशौ किया है। इसीप्रकार शुक्त

लेश्याबाले जीबोंके जानना चाहिए। ऊपर नौ ग्रेवेयक आदियें स्पर्श क्षेत्रके समान है। इषीप्रकार

आहारककाययोगी आहारकमिश्रकाययोगी अपगतवेदी अकषायी मनःपर्ययज्ञानी संयत

सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहारविशुद्धिसंयत सूक्मसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत

और अमव्य जीबोंके जानना चाहिये ।

विशेषार्थर्वमें नरकगति आदियें स्पर्शंका जो विवेचन किया है उसे ध्यानमें रखते हुए

देवोंमें और उनके अवान्तर भेदोंमें यदि सब प्रकृतियोंके यथासम्भव पदोंकी अपेक्षा स्पशेका विचार

किया जाता है तो किस अपेक्षा कहाँ कितना स्पशं बतलाया है यह बात सहज ही समममें आजाती

है। इसीलिये यहाँ अलगअलग खुलासा नहीं किया है। तथा एवं कह कर जो आह्यारककाय

योग आदिमें स्पशेका निर्देश किया है उसका यही अभिप्राय है कि जिसप्रकार नौ ग्रेवेयक आदिमे

स्पर्श चेतरे समान है उसी प्रकार इन मागेणाओमे भी जानना चाहिये ।

१२२ एकेन्द्रियोंमें भिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकपषायोंक्रे तीन पद्वाले जीका

स्पश ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका

स्पर्श पंचेन्द्ियतिर्यच अपर्याप्तकोंके समान है। इसीप्रकार प्रथिवीकायिक आदि चार स्थावरकाय

इनके बादर तथा बादर अपर्याप्त सभी सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक

प्रत्येक शरीर और उनके अपर्याप्त वनस्पतिकायिक निगोद ओऔदारिकमिश्रकाययोगी कार्मेण

काययोगी मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्ञी और अनाहारक जीबोंके जानना चाहिये ।

Page 84:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारफोसर्ण ६५

8 १२३ पंचिदियपंचि ०पञ्ज ०तसतसपज्ज ० मिच्छत्तवारसक ०णवणोक ०

तिण्णिपद०वि लोग असंखे ०भागो अड चोदस० देखणा सव्वरोगो वा । णवरि

इत्थि पुरिस युज ० अवद्ध अद्र बारस चोदस देखणा। अणंताणु चउक्र एवं

चेष । णवरि अबत्तव्य० ओं । सम्मत्तसम्मामि० ओघं । एवं पंचमण०पंचवचि०

इस्थि पुरिस ० चक्सुसण्णि त्ति । णवरि इत्थि पुरिसवेदमग्गणासु इत्थि०पुरिस०

श्रुज०अवष्टि अद्र चोइस० देखणा ।

१२४ वेउव्विय० मिच्छत्तबारसक०णवणोक० तिण्णिपद० लछोग० असंखे०

विशेषार्थएकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व आदि २६ ग्रकृतियोंके तीन पदवालोंके स्पशको आचके

समान सब लोक बतलानेका कारण यह है कि ये जीव सब लोकमें पाये जाते हैं। तथा सम्यक्त्व

और सम्यस्मिथ्यात्वके अल्पतर स्थितिवालोंक स्पशेको पंचेन्द्रियतियंच अपर्याप्तकोंके समान

बतलानेका कारण यह है कि जिसप्रकार पंचेन्द्रियतियंच अपर्याप्तकोंमें इन प्रकृतियोंकी अल्पतर

स्थितिबालोंका वतमान कालीन स्पर्श लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीतकालीन स्पर्श

सव्र लोक पाया जाता है उसी प्रकार एकेन्द्रियोंमें भी बन जाता है। इसीप्रकार चारों स्थावरकाय

आदि मार्गणाओंमें स्पर्शका विवेचन कर लेना चाहिये ।

१२३ पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्र त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंमें मिथ्या बारह कषाय

और नो नोकपायोंक्रे तीन पदविभक्तिवाले जीवोंने लोकके असंख्प्रातवें भाग त्रसनालीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सब लोकप्रमाण क्षेत्रकरा स्पश किया है। किन्तु इतनी विशेषता

है कि सत्रीवेद और पुरुपत्रेदकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने त्रसनालीके

चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुदं कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्श किया है । अनन्तानु

बन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसीप्रकार जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य स्थिति

विभक्तिवाले जीबोंका स्पशं झोघके समान है। सम्यक्घ्व च्रौर सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा स्पर्श

श्रोयके समान है । इसी प्रकार पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनसोगी खीवेदवाले पुरुषवेदबाले

चज्तुदर्शनबाले और संज्ञी जीबोंके जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि खी चनौर पुरुषवेद

मगेणाच्रोमें खी ओर पुरुषवेदकी भुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिबाले जीवोंने त्रसनालीके

चौदह भागोंमेंसे कुड कम आठ भागप्रमाण क्ेत्रका स्पर्शं किया हे ।

विशेषा्थपंचेन्द्रिय आदि चार मार्गणाओंमें और स्पर्श तो सुगम है। किन्तु खीवेद

और पुरुषवेदकी भूजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोंका स्पशं जो छुछकम आठबटे चौदह

राजु बतलाया है वह विहार आदिकी अपेक्षा बतलाया है । तथा कुछकम बारहबटे चौदह राजु

स्पर्श सारणान्तिक और उपपाद पदकी अपेक्षा बतलाया है। यहाँ इन दोनों प्रक्ृतियोंके उक्त पदोंकी

अपेक्षा इससे अधिक स्पर्श नहीं प्राप्त होता। इसी प्रकार पाँच मनोयोगी आदि मार्गणाओंमें भी

घटित कर लेना चाहिये । किन्तु स््रीवेद और पुरुषवेद मार्गणाओंमें जो खीवेद और पुरुषवेदकी

भुजगार ओर अल्पतर स्थितिवालोंका स्पर्श कुछकम आठ चौदह राजु बतलाया है सो इसका

कारण यह है कि ये जीव अधिकतर देव होते हँ जो तीसरे नरकतक नीचे और अच्युत कल्पतक

ऊपर विकार करते हुए पाये जाते हैं। इसके ऊपर यद्यपि पुरुषबेदी जीव हैं पर वे बिद्दार नहीं करते

अतः उनका स्पर्श लोकके असंख्यातवें भागश्रमाण ही है इसलिये उससे इस स्पर्शमें कोई

विशेषता नहीं आती।

१२४ वैक्रियिककाययोगियोंमें मिभ्यास्व बारह कपा और नौ नोकपायोंके तीन पदवाले

६

Page 85:

६६ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहची

भागो अद्र तेरह चोदसभागा वा देखणा । णवरि इत्थि०पुरिस० झ्ुुज०अव्ठि० अड्ढ

बारस चोहस० देखणा। अणंताणुचउक० एवं चेव । णवरि अवत्तव्ब ओघं ।

सम्पत्तसम्माप्ति० अप्पदर० मिच्छत्तमंगो। सेस ओघं । वेउव्यियमिस्स० खेत्तभंगो ।

१२५ विहंग० मिच्छत्त ०सोलसक०णवणोक० तिण्णिपदा सम्मत्तसम्मामि०

अप्पदर० पंचिंदियभंगो । आभिणि०सुद् ०ओहि० सव्यपयडि० अप्पदर० लोग०

असंखे भागो अद्र चोद देखणा। एवमोदिदं स ०सम्मादि ०खडय ०वेदय ०उवसम ०

सम्मामिच्छादिष्टि त्ति। संजदासंजद्० सव्वपयडि० अप्पदर० रोग० असंखे०भागो छ

चोदस भागा वा देखणा । तेड० सोहम्मर्भगो । पम्म सहर्पारमंगो । सासण० सब्ब

पयडि० अप्पद्र० लोग ० असंखे०भागो अट्ट बारस चोहस० देषठणा ।

एवं पोसणाणुगमो सभत्तो ।

जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और च्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछकम आठ और कुछकम ।

तेरह थागप्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया है । किन्तु इतनी विशेषता है कि ख्रीवेद और पुरुषवेदकी

झुजगार और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने तअसनालीक चौदह भागोमेंसे कुछकम आठ

ओर कुछकम बारह भागप्रमाण ज्षेत्रका स्पशं किया है। अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा

इसी प्रकार जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य स्थितिभक्तिवाले जीवोंका

मंग ओघके समान है। सम्यक्स्थ और सम्यम्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोका

मंग मिथ्यात्वके समान है। तथा शेष कथन ओघके समान हे। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियों में

क्षेत्रके समान भंग है ।

विशेषाथअन्यत्र वैक्रियिककाययोगियोंका स्पशं जो तीन प्रकारका बतलाया है वही यहाँ

मिध्यात्व आदिके तीन पदोंकी अपेक्षा प्राप्त द्वोता है जो मूलमें बतलाया ही है । किन्तु इनमें खी

वेद् ओर पुरुषवेदकी भूजगार और अल्पतर स्थितिवालोंका वही स्पशं प्राप्त होता है जो पंचन्द्रिय

जीबोंके पहले बतला आए हैं इसलिये यहाँ इसका तत्ममाण कथन किया। चैक्रियिककाययोगियोंमें

अनन्तानुवन्धी चतुष्कका स्पर्श इसी प्रकार हैं। यह जो कडा है सो इसका यह तात्पये है कि जिस

प्रकार इनमें मिथ्यात्व आदिके सम्भव पदोंका स्पशं बतलाया है उसीप्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्कके

अवक्तव्य पदको छोड़कर शेष पदोंका स्पशं जानना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

१२५ विभंगज्ञानियोंसें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकपायोंके तीन पद और

सम्यक्त्व तथा सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिका भंग पंचेन्द्रियोंके समान है। आभिनि

बोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीबोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चोदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण

क्षेत्रका स्पश किया है। इसी प्रकार अवधिदर्शनी सम्यस्दृष्टि क्षायिकसम्यग्दष्टि वेदकसम्यग्दृष्टि

उपशप्रसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चाहिए। संयतासंयतोंमें सब प्रकृतियोंकी

अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया है। पीतलेश्याका भंग सौधे समान और

पद्मलेश्याका भंग सहस्तार कल्पके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाले जीवने लोकके असंख्यातर्थें भाग और त्रसनालीके चौदद भागोंमेंसे कुछ

कम आठ और कुछ कम वारह भाग प्रमाण केत्रका स्पशे किया है ।

Page 86:

गा०२२ ट्विदिबिहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकाला ६७

णाणाजीवेदि कालो ।

१२६ सुगममेदं ।

सम्मत्तखम्माभिच्छत्ताणं खुजगारअवहिदअवत्तव्वहिदिविदृत्तिया

केवचिरं कालादो होंति

१२७ णदं पि सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ

१२८ इदो १ सम्मदसम्मामिच्छत्ताणं शुजगारअवद्विदअवत्तव्याणि एगसमयं

कादण विदियसमए सब्वेसि जीवाणमप्पदरस्स गमणुबलंभादों ।

उक्कस्सेण आवलियाए असंखेञ्न दिभागो ।

१२६ इदो सगसगंतरकाले अदिकंते श्रुजगारअबद्ठिदअवत्तव्वाणि कुणमा

णाणं णिरंतरमावलि० असंखे०भागमेत्तकालमवद्टिंदावत्तव्वधुजगाराणपम्ुवरलंभादो ।

अप्पदरहिदिविहृत्तिया केवचिरं कालादो होंति

१३० सुगमं ।

सव्वद्धा ।

विशेषार्थयहाँ विभंगज्ञानी आदि जितनी सागेणाओंमें अपने अपने सम्भव पदोंकी

अपेक्षा स्पर्शन बतलाया है बह उन उन मार्गणाओंके स्पर्शनकों जान कर घटित कर लेना चाहिए।

कोई विशेषता न होनेसे उसका हमने अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है ।

इसप्रकार स्पर्शनानुगम समाप्त हुआ ।

अब नानाजीबोंकी अपेक्षा कालानुगमका अधिकार है।

१२६ यह सूत्र सुगम हे ।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी सूजमार अवस्थित और अवक्तव्यस्थिति

विभक्तिवाले जीरयोका कितना काल है १

१२७ यह सूत्र भी सुगम हे ।

जघन्य काल एक समय है ।

१२८ क्योकि सम्यकत्व और सम्याग्मथ्यात्वकी भुजगार अवस्थित और अवक्तव्य

स्थितिविभक्तियोंको एक समय तक करके दूसरे समयमें उन सव जीवोंका अल्पतर स्थितिविभक्तिमें

गमन पाया जाता है ।

उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण हे ।

१२६ क्योकि अपने अपने अन्तरकालके व्यतीत दो जाने पर भुजगार अवस्थित और

अवक्तव्य स्थितिविभक्तियोंको करनेवाले जीवोंके निरन्तर आवलिके असंख्यातवबें भागप्रमाण काल तक

अबस्थित अवक्तव्य शौर भुजगार पद पाये जाते हैँ ।

अल्पतरस्थितिविभक्तिवाले जीबॉका कितना काल है १

8 १३० यह सूत्र सुगम है।

सब काल हे ।

Page 87:

दत जयधवबलासदहिदे कसायपाहुडे दविदिविहनत्ती

१३१ इदो १ णाणाजीवष्पणाए सम्पत्तसम्मामिच्छन्ताणमप्यद्रटिदि विहत्ति याणं

तिसु नि कालेसु बिरहामाबादो ।

सेसाणं कम्माणं विहत्तिया सच्चे सव्वद्धा ।

१३२ इदो अणंतरासीसु श्रुजगारअवद्विदअप्पदराणं विरहाभावादो ।

णवरि अणए॑ताणएवंधीणमवत्तन्वदिदिविहत्तियाणं जदरणेण एगसमओ ।

१३३ इदो अवत्तव्वं कुणमाणजीवाणमार्णतियामावरादो । ण सम्मत्तअप्पदर

विहत्तिएहि वियहिचारोसम्मत्तप्पदरस्सेव अणंताणुबंधीण मवत्तव्वस्स समपा ओर गगुणद्वाए

सब्वसमए असंमवादो ।

१२१ क्योकि नाना जीवोंकी अपेक्षासे सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्वक्री अल्पतर स्थिति

चिभक्तिको करनेवाले जीवोंका तीनों ही कालोंमें विरह नहीं होता ।

शेष कर्मोंकी सब स्थितिविभक्तिवाले जीव सर्वदा पाये जाते हैं ।

१३२ क्योंकि शेष कर्मोकी भुजगार अवस्थित ओर अल्पतर स्थितिविभक्तियोंको करने

बाली जीवराशि अनन्त है अतः उनका कभी विरह नहीं होता ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीकौ अवक्तव्यस्थितिविभक्तिवाले

जीवोंका जघन्य काल एक समय है ।

१३९ क्योंकि अवक्तव्य स्थितिविभक्तिको करनेवाले जीवोंका प्रमाण अनन्त नहीं हे ।

यदि कहा जाय कि इस तरह तो सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीबोंके स्वथ व्यभिचार

हो जायगा क्योंकि इनका प्रमाण भी अनन्त नहीं है अतः इनका भी विरह पाया जाना चाहिये

सो बात नहीं है क्योंकि जिस प्रकार सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिके योग्य सत्र काल है उस

प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिक्रे योग्य सब काल नहीं हे अतः अनन्ता

चुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका सर्वदा पाया जाना सम्भव नहीं है ।

विशेषार्थयदाँ यद बतलाया हैं कि चूँकि अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तत्य स्थिति

विभक्तिवालोंका प्रमाण अनन्त नहीं है अतः उनका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय

घन जाता है। इस पर यह शंका की गई है कि सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिवालोंका भी प्रमाण

अनन्त नहीं है परन्तु उनका काल सर्वेदा बताया है अतः उस कथनके साथ इसका व्यभिचार प्राप्त

होता है । तात्पय यह है कि सम्यकत्वकी अल्पतर स्थितिवालं जीव भी असंख्यात हैं और अनन्ता

नुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिबाले जीव भी असंख्यात हैं । अतः अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

अवक्तब्य स्थितिवाले जीव अनन्त नहीं दोनेसे इनका जघन्य काल यदि एक समय माना जाता है

तो अनन्त नहीं होनेसेः यह हेतु व्यभिचरित हो जाता है क्योकि सम्यक्स्वकी अल्पतर स्थितिवाले

जो कि अनन्तालुबस्धी चतुष्ककी अवक्तत््य स्थितिवालोंके विपक्ष हैं उनमें भी यद हेतु चला जाता

है। वीरसेन स्वामी ने इस शंकाका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि यद्यपि ये दोनों

विभक्तिवाले जीव असंख्यात हैं फिर भी सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थित्तिवालोंका सर्वदा काल बन

जाता दै क्योकि सम्यक्स्यकी अल्पतर स्थितिका एक जीवकी अपेक्षा जो जघन्य काल अन््तमुंहू्ते

और उत्कृष्ट काल साधिक एक सो बत्तीस सागर बतलाया हे उते देखते हुए उसका सर्वंदा पाया जाना

सम्भव है। परन्तु यह बात अनन्तालुबन्धीकी अवक्तव्यस्थितिकी नहीं है क्योकि एक जीवकी अपेक्षा

Page 88:

गा० २२९ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयदिशुजगारकाला ६६

उकषस्सेण आवलियाए असंसेज्न दिभागो ।

१३४ कारणं खगम । एवं लदवसहाईरियदेसोमासियुत्स्थपरूवणं कादूण संपहि

तेण द्वचिद्अस्थस्सुचारणमस्सिद्ण करसामो ।

१३५ कालाणुगमेण दुविहों णिदेसोओघेण आदेसे० । तस्थ ओघेण मिच्छत्त

बारसक०णवणोक ० अरुज ०अप्पदर०अह्धि केवचिरं सब्वद्रा अणंताणु० एवं

चेव । णवरि अवत्तव्य० केवचिरं १ जह० एगसमओ उक० आवलि० असंखे०भागो ।

सम्पत्तसम्मामि० अप्पदर० केवचिरं० १ सब्बद्धा । सेसपदवि० केवचिरं १ जद०

एगस० उक आवलि० असंखे०भागो । एवं तिरिक्ख०कायजोगि०ओरालिय ०

णवं ०चत्तारिक ०असंजद०अचक्खु ०तिण्णिले ०भवसि०आहारि त्ति ।

१३६ आदेसेण णेरइएऐसु मिच्छत्तबारसक ०णवणोक अप्पद ०अवड्डि० केव० १

सब्बद्धा भ्ुज० ज० एगस० उक्० आवलि० असंखे०भागो अण॑ताणु०चउक०

अप्पदर ०अवद्टि मिच्छत्तभंगो। ज ०अवत्तव्य ० ज० एगस ० उक ० आवलि० असंखे०

इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय ही बतलाया है । अब यदि नाना जीव एक साथ अनन्ता

सुबन्धीकी अवक्तव्य स्थितिको प्राप्त हों और दूसरे समयमें अन्य जीव इस पदको न प्राप्त हों तो

इसका जघन्य काल एक समय भी बन जाता है। यही कारण है कि अनन्तानुबन्धीकी अवक्तव्य

स्थितिबालोंका प्रमाण असंख्यात होते हुए भी नाना जीवोंकी अपेक्षा भी इसका जघन्य काल एक

समय बतलाया है।

कय

उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातं भागप्रमाण है ॥

१३४ कारण सुगम है। इस प्रकार यतिव्ृषभ आचायेके देशामपषेक सूत्रके अर्थका कथन

करके अब उसके द्वारा सूचित दोनेवाले अर्थका उच्चारणाके आश्रयसे कथन करते हैं ।

१३५ काललुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनिर्देश और आदेश निर्देश ।

उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी ञुजगार अल्पतर और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका कितना काल है सब काल है । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

अपेक्षा इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य स्थित्तिविभक्तिवाले जीबोंका

कितना काल है ९ जघन्थ काल एक समय और उत्क्ट्ठ काल आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण

है। सम्यक्व अरर सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका कितना काल है ९

सब काल है । शेष पदस्थितिविभक्तिवाले जीबोंका कितना काल है जघन्य काल एक समय ओर

उच्छृ काल आवलीके असंख्यातवं भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यद्च काययोगी ओदारिककाय

योगी नपुंसकवेदवाले ऋघादि चारों कपायवाले असंयत अचह्ुुदशनवाले ऋष्णादि तीन लेश्या

बाले भव्य और आहारक जीवोंके जानना चाहिए।

8 १३६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कवाय और नौ नोकषायोंकी

अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभक्तिबाले जीबोंका कितना काल है सब काल है। भुज्ञगार

स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका जबन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल आवलीके असंस्यातवें भाग

प्रमाण है । अनन्ताचुचन्धी चतुष्ककी अल्पतर और अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले जीबोंका भंग

सिध्याघ्वके समान हैं। भुजगार और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका जघन्य काल एक

समय ओर उत्कृट काल आवलिके असंख्यातर्वे भागप्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी

Page 89:

५० जंयधवलासंहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

भागो । सम्मत्तसम्मामि० ओघं। एवं सब्वणिरयपंचिंदियतिरिक्खपंचि० तिरि०

पञ्ञ०पंचिं ०तिरि०जोणिणीदेव ०भवणादि जाव सहस्सारपंचिदियपंचि पज्ञ०तसतस

पञ्ञ ०पंचमण०पंचवचि ०वेटव्विय ० इत्थि ० पुरिस चक्खु ०तेउ ० पम्म ०सण्णि ति ।

१३७ पंचिं०तिरि०अपज्ञ० मिच्छत्सोलसक०णवणोक० तिण्हं पदाणं णेरइयाणं

भगो । सम्मत्त ०सम्मामि० अप्पदर० केब० १ सब्बद्धा एवं वियलिंदियपज्त्तापज्त्त

पंचिं०अपज ०बादरपुटविपज्ञ बाद्रआडपज ०बादरतेउपज्ज बाद्रवाउपन्ज बाद्र

वणप्फदिपत्तेय पञ्ज ०तसअपज्ज विहंगणाणि त्ति ।

अपेक्षा ओघके समान भंग है । इसी प्रकार सब नारकी पंचेन्द्रिय तिर्यद्व पंचेन्द्रिय तियेच्च पर्याप्त

पंचेन्द्रिय तिर्यच्च योनिमती सामान्य देव भवनवासियां ते लेकर सदार स्वगैतकके देव पंचेन्द्रिय

पंचेन्द्रिय पर्या त्रस रस पर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनयोगी वेक्रियिककाययोगी खीवेद्

चाले पुरुषवेदवाले चक्षुदर्शनी पीतलेश्यावाले पद्चललेश्याबाले और संज्ञी जीवोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थनारकियोंके एक जीव की अपेक्षा मिथ्यात्व आदि २२ प्रकृतियोंकी अल्पतर और

अवस्थित स्थितिविभक्तियोंका जो काल बतला आये हैं उसे देखते हुए यहाँ नाना जीवों की अपेक्षा

उनका सर्वंदा काल प्राप्त होता है अतः यहाँ उनका सर्वदा काल बतलाया है। किन्तु भुज़गार

स्थितिकी यह बात नहीं है। नाना जीवोंकी अपेक्षा भी यदि इसके उपक्रम कालका विचार

किया जाता है तो उसका जघन्य प्रमाण एक समय और उत्कृष्ठ प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भाग

प्रमाण प्राप्त होता है इसलिये यहाँ इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा । इसी प्रकार

अनन्तानुबन्धी चतुष्कके पदोंका भी यथायोग्य विचार कर लेना चाहिये। सम्यक्त्व च्रौर सम्यग्मि

ण्यास्वकी अल्पतर स्थितिवाले जीव नरकमें भी सर्वदा पाये जाते हैं। अब रहे शेष पदवाले जीव

सो उनका उपक्रम कालके अलुसार पाया जाना सम्भव दे। ओघमें भी यही बात है। अतः सम्य

करब और सम्यग्सिथ्यात्वके सब पदोंके कालको ओघके समान बतलाया । अमे जो और मार्गणाएँ

गिनाई हैं उनमें यह व्यवस्था बन जाती है अतः उनके कथनको सामान्य नारकियोंके

समान बतलाया । हे

१३७ पंचेन्द्रिय ति्यच्च अपरयाप्रकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंके तीन

पद्वाले जीबोंका भंग नारकियोंके समान है। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यास्वकी अल्पतर स्थिति

विभक्तिवाले जीवोंका कितना काल है सब काल है। इसी प्रकार विकलेन्द्रिय ओर उनके पर्याप्त

और अपर्याप्त पद्चेन्द्रिय अपरया बादर एथिवीकायिक पर्याप्त बादर जलकायिक पर्याप्त बादर

अप्निकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक प्रस्येकशरीर पर्याप्त त्रस

अपर्याप्त और विभंगज्ञानी जीबोंके जानना चाहिए ।

विशेषा्थपंचेन्द्रिय तियंच अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व आदि २६ प्रकृतियोंके अल्पतर आदि

तीन पदोंका काल नारकियोंके समान बन जाता है इसलिये यहाँ इनके कथनको नारकियोंके समान

बतलाया है । यहाँ अनन्तानुबन्धीकी अवक्तव्य स्थिति नहीं होत्ती यह स्पष्ट ही है। तथा सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी एक अर्पतर स्थिति ही होती है। साथ ही यहाँ सम्यक्त्व ओर सम्यग्मि

थ्यात्वकी सत्तावाले जीव नियमे पाये जाते हैं इसलिये इसका काल स्वेदा बतलाया है। आगे

जो और मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी यह व्यवस्था बन जाती है अतः उनके कालको पंचेन्द्रिय

तियच अपर्याप्तकोंके समान बतलाया है ।

चि 4 ता० प्रतौ अपज्ज ० इति पाटः ।

Page 90:

गा० २२ द्विदिविहन्तीए उत्तरपयडिशुजगारकाली ७१

१३८ मणुस० मिच्छत्तबारसक ०णवणोक० णेरइयमंगो । अणंवाणु०चउक० एवं

चेव। णवरि अवत्त० केव० १ जह० एगस० उक० संखेज्जा समया। सम्मत्त०

सम्मामि० अप्पदर ० केव ० १ सब्बद्धा । श्ुुजगारअवद्विदअवत्तव्वाणं केब० ९ जह ०

एगस० उक संखे० समया एवं मणुसपज्जत्तमणुसिणीणं णवरि जम्मि आवलि०

असंखे ० भागो तम्मि संखेज्जा समया । मणुसअपज्ज० मिच्छत्तसोलसकसायणवणोक ०

ञ्ुज०अप्पद ० श्रवह्धि सम्पत्तसम्मामि० अप्प० के० ज० एगस० उक० पलिदो०

असंखे ० भागो । णवरि ज आवलि० असंखे०भागो ।

१३६ आणदादि जाव उवरिमगेवज्जो त्ति मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक ० अप्पदर०

सब्बद्धा । अणंताणु०चउक० अवत्त ओघं सम्मत्तसम्मामि० अजगार० अव्ि ०

अवत्तव्व ० ज० एगसमओ उक० आवलि० असंखे०भागो । अप्पदर० सब्बद्धा । एवं

सुकले० । अणुद्दिसादि जाव सव्वद्क० अद्ठावीसंपय० अप्पद्० सब्बद्धा। एक्मामिणि०

रा इ १३८ सामान्य मलु्योमें भिध्यप्त्व वारह् कषाय ओर नो नोकषायोका भंग नारकियों के

समान है । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा इसी प्रकार आनना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका कितना काल है जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

संख्यात समय है । सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अस्पतर स्थितिविभकतिवाले जीका कितना

काल है १ सब काल है। भुजगार अवस्थित और अवक्तत्य स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका कितना

काल है जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और

मनुष्यनियोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ आवलीका असंख्यातं भाग काल

कहा है वहाँ संख्यात समय काल कहना चाहिये। मलुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और

नौ नोकपायोंकी भुजगार अल्पतर और अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका तथा सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका कितना काल है १ जघन्य काल एक समय

ओर उत्कृष्ट काल पलल््योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हे । किन्तु इतनी विशेषता है कि भुजगार

स्थितिविभक्तिवाल जीबोंका उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

विशेषार्थमह॒ष्योंमें अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिवाले जीव संख्यात ही

होते हैं अतः इनमें उक्त विभक्तिबालोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय बतलाया है। यही बात

सम्यवत्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी मुजगार अवस्थित और अवक्तव्य स्थितिवालोंके सम्बन्धमें

जान लेना चाहिये। मनुष्य पर्याप्त और सनुष्यनी तो संख्यात ही होते हैं अतः मूलमें सामान्य

सनुष्योंमें जिन स्थितिविभक्तिबालोंका आवली के असंख्यातर्वें भाग काल बतलाया है वहाँ भी

इनके संख्यात समय काल जानना चाहिये । लब्ध्यपर्याप्रक मनुष्योंका उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातर्वे

भागप्रमाण हैँ अतः यहाँ सब प्रकृतियोंके सम्भव पदोंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण बतलाया । किन्तु

मुजगार स्थितिका उपक्रम काल ही आवलीके असखंख्यातवें भागप्रमाण है अतः इसकी अपेक्षा

उत्कुष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण बतलाया ।

१३६ आनतकल्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयकतकके दे बोभे मिथ्यात्व सोलह कषाय और

नो नोकपायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीबोंका सब काल है । किन्तु अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका काल ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

मुज़गार अवस्थित और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट

काल आवलीके असंख्यातवें मागप्रमाण है। तथा अल्पतर स्थितिविभ्भाक्तिवाले जीबोंका काल सर्वदा

Page 91:

७२ अयधवलासहिदे कसायपाहुडे दिदिनिहत्ती ३

सुद ०ओहि ०मण्पञ्ज ० संजद् ०सामाइयछेदो ०परिहार ० संजदासंजद ०ओ हिंस ०

सम्भादि०खडय ०वैदय दिटटि त्ति।

१४० एइंदिएसु मिच्छत्तसोलसक णवणोक० रव्वपदाणमोधं । सम्मत्त०

सम्पामि अप्पद० केव सब्बद्धा । एवं बादरेइंदियसुहुमेइंद्यपज्जत्तापज्जत्तबादर

पुटविअपञ ज०सुहुमपुद विपज्जत्तापज्जतबाद्रआउअपज्ज ० सुहुमआउपज्जत्ताएज्जत्त

बादरतेउअपज्ज ० सुहुमतेउपज्जत्तापज जत्तबादरवाउअपज्ज ०सुहुमवाउपज्जत्तापज्जत्त

वणप्फदिणिगोदबादरसुहुमपज्जत्तापज्जत्तबादरवणप्फद्पत्तेयसरी रअपज्ज ०ओरालिय

मिस्स०मदि०सुद०मि च्छादि० असण्णि त्ति।

है। इसी प्रकार शुक्ललेश्याबाले जीबोंके जानना चाहिए। अनुदिशपे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके

देवोंमें अद्वाईस प्रक्रतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिबाले जीवोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार

आनिभिवोधिकनल्लानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपयेयज्ञानी संयत सामायिकर्सयत छेदो

पस्थापनासंयत परिद्ारविश्युद्धिसंयत संयतासंयत अवधिदशेनी सम्यग्टष्टि क्षायिकसम्य्टषटि

और वेदकसम्यम्दष्टि जीवोंके जानना चाहिए। ह

विशेषा्थआनतादिकमें मिथ्यात्य आदि २६ प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थिति ही दोती है

अतः वहाँ इसका सर्वदा काल बन जाता है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीकी

अवक्तव्य स्थिति भी होती है सो उपक्रम कालके अनुसार इसका यहाँ सी ओघके सवान काल

बतलाया है। अब रहीं सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्व प्रकृतियाँ सो इनके यहाँ चारों पद् बन

जाते हैं । उनमेंसे तीन पदोंका तो उपक्रम कालके अनुसार जबन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण बतलाया द्वै। और अर्पतर स्थितिबालोंका सर्वदा सद्भाव पाया

जाता है इसलिये इसका सर्वदा काल बतलाया है। झुक्कलेश्यामें यद्द व्यवस्था बन जाती है अतः

उसमें सब प्रकृतियोंके सम्भव पदोंके कालको पूर्वक्तं प्रमाण कहा है। अनुदिशादिमें तो सव

प्रक्ृतियोंकी एक अल्पतर स्थिति ही होती है परन्तु वहाँ सत्र प्रकृतियोंका स्वेदा सद्भाव पाया जाता

है इसलिये वहाँ अरपतर स्थितिका सर्वेद काल बतलाया है। आमिनिब्रोधिकज्ञानी आदि जो और

मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी इसी प्रकार बतलनेका कारण यह है कि उनमें भी अलुद्शादिकके

समान व्यवस्था प्राप्त होती है ।

१४० एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय और नो नोकषायोंके सब पदोंका भंग ओघके

समान है। सम्यक्त्व चौर सम्यम्मिथ्यास्वकी अल्पतरस्थितिविभक्तिबाले जीवोंका कितना काल

है सब काल है। इसी प्रकार बादूर एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इन दोनोंक्े पर्याप्त और

अपर्याप्त बादर प्रथिवीकायिक अपर्याप्त सूहम प्रथिवीकायिक ओर इनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर

जलकायिक अपर्याप्त सूम जलकायिक ओर इनके पर्याप्त और अपर्याप्त बाद्र अप्निकायिक अप

याँप्त सूदम अभिकायिक ओर इनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर वायुकायिक अपयांप्त सूक्ष्म वायु

कायिक और इनके पर्याप्त और अपर्याप्त वनस्पति नियोद् तथा इन दोनोंके बादर ओर सूक्ष्म तथा

पर्याप्त और अपर्याप्त बादर वनस्पत्तिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्र औदारिकरमिश्रकाययोगी

मत्यज्ञानी श्रताज्ञनी मिथ्यादृष्टि ओर असंज्ञी जीवोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थओबमें मिथ्यात्वआदि २६ प्रकतियोंके भुजगार अल्पतर और अवस्थित पदोंका

ज्ञो काल कह है वह एक्ेन्द्रियोंकी मुख्यतासे ही बतलाया है अतः यहाँ उक्त प्रकृतियों हे उक्त पदों के

कालको ओघके समान कहा । तथा एकेन्द्रियों में सम्प्रक्त ओर सम्यग्मथ्यात्वका एक अल्पतर

Page 92:

गा० २२ दिद्विहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारकालो ७४

१४१ आहार० सव्बपयडी अप्पद् ० ज एगस ०उक अंतोु एषमवगद ०

अकस।०सुहुम ०जहाक्खादे त्ति । आहारमिस्स० सब्बपयडी० अप्पद० जण्णुक

अंतोघ्ु० । वेडव्वियमिस्स० मणुसअपज्जत्तमंगो । अमव छव्बीसपयडी ० मदि०भंगो ।

१४२ उवसम० सव्वपयडो० अप्पद० ज० अंतोष्ठ० उक० पलिदो० असंखे०

भागो । एवं सम्मामिच्छाइड्विस्स वि। सासण० सव्बपयडी० अप्पद० ज० एगस०

उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । कम्मइ्य०अणाहारि० ओरालियभिस्स ०भंगो। णवरि

सम्मत्तसम्मामि० अप्पद० ज० एगस० उक्ष आवलि० असंखे०भागो ।

एवं कालाणुगमो समत्तो ।

पद ही होता है और यहाँ उनका सदा सद्भाव पाया जाता है अतः यहाँ अल्पतर पदका सवैदा

काल कदा है। आगे बादर एकेन्द्रिय आदि जो बहुत सी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें यह व्यवस्था

बन जाती है अतः उनके कालको एकेन्द्रियोंके समान कदा है ।

१४१ आहारककाययोगियोमे सव प्रकृतियोंकी अल्पतरस्थितिविभक्तिवाले जीरवोका

जघन्य काल एक समय और उस्कृष्ट काल अन्तमुंहू्े दै । इसी प्रकार अपगतवेदी अकषायी सुम

सांपरायिकसंयत और यथाख्यातसंयत जीवोंके जानना चाहिए। आहारकमिश्रकाययोगियोंमें सव

प्रकृतियोंकी अल्पत्नर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका जघन्य और उत्कृष्टकाल अन्तमुं हू है। वैक्रियिक

मिश्नकाययोगियॉमें मनुष्य अपर्याप्तकोंके समान भंग है । अनन्यो छन्वीस प्रक्तियोंकी अपेक्षा

मस्यज्ञानियोंके समान भंग है ।

विशेषार्थआदारककाययोगका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तसुदू्त है ।

तथा इसमें सब प्रकृतियोंका एक अस्पतर पद ही होता है । यही कारण है कि यहाँ सब प्रकृतियोंके

अल्पतर पदका जवन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल अन्तश बतलाया है। इसी प्रकार

अपगतबेद आदि मार्गेणाओंमें भी समझना चाहिये। किन्तु आहार्कमिश्रका जघन्य चनौर उक्ष

काल अन्तश दी है अतः यहाँ सब प्रकृतियोंके अल्पतर पदका जघन्य और उष्क्ृष्ट काल अन्त

मुहूर्त बतलाया है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगका नाना जीबोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातर्घे

भागप्रमाण है । लब्ध्यपर्याप्क मनुष्योंका भी इतना ही काल है अतः वैक्रियिकमिश्रकाययोगका भंग

लब्ध्यपर्याप्तक मचुष्योके समान बतलाया है। अभव्य मत्यज्ञानी दी होते हैं अतः इनका भंग मत्य

ज्ञानियोंके समान बतलाया है ।

१४२ उपशमसम्यम्दष्टियोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवोंका अघम्य

काल अन्त्ुहूते और उत्कृष्ट काल पल््योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्या

दृष्टि के भी जानना चाहिए। सासादनसम्यम्दृष्टियोंमें सब श्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिबाले

जीवोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ठकाल पल्योपमके असंख्यात्वें भागश्रमाण है।

कार्मणकाययोगी और अनाहारकोंमें औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान भंग है। किन्तु इतनी

विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाल जीबोंका जघम्य काल

एक समय और उल्कृष्ट काल आवलिके असंख्यात भागप्रमाण है।

विश्वेषार्थ उपशम सम्यस्दष्टियोंका नाना जीबोंकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तमुंहूते और

उत्कृष्ट काल पल्यके संख्याते मागप्रमाण है अतः यहाँ सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिका काल

उक्त प्रमाण बतलाया है। इसी प्रकार सम्यग्मिध्यारृष्टियोंके भी जानना चाहिये। किन्तु सासादुन

१०

Page 93:

॥ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्धिदिबिहत्ती ३

अंतरं ।

१४३ सुगमं अदियारसंमालणफलत्ादो।

ॐ सम्मत्तसम्मामिच्छुत्ताणं युजगारअवत्तच्चदिदिविहत्तियंतरं केवचिरं

कालादो होदि १

१४४ णदं पि सुगमं ।

जदर्णेण एगसमओ ।

१४५ इदो १ सम्पत्तसम्मामिच्छत्ताणं श्ुजगारमवत्तव्व॑ च कादृण सम्पत्तं पडि

वञ्जमाणजीवाणं जद० एगसमयमेत्तंतरुवलंभादो ।

उक्षस्सेण चडवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

१४६ सामण्णेण सम्मत्तग्गहणंतरकालो चउवीसं अहोरत्तमेत्तो तति पूव्वं परूविदो

संपदि अवत्तव्वमावेण सम्मत्तग्गदणं तरकालो वि तत्तिओ येवे त्ति कथमेदं जुन्जदे १ ण एस

सम्यग्दष्टियोंका जघन्य काल एक समय है अतः यहाँ जघन्य काल एक समय बतलाया है । उत्कृष्ट

काल पूर्ववत् दै । कार्मेणकाययोग और अनाहारक जीबोंका सबेदा काल है । यदी वातत औदारिक

मिश्रकी है अतः यहाँ सव प्रकृतियोंके सम्भव पदोंका काल औदारिकमिश्रके समान बन जाता दै ।

किन्तु सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिवालोंके कालमें विशेषता है। बात यह है

कि एक जीवकी अपेक्षा कार्मेणकाययोंग और अनाहारक अवस्थाका उत्कृष्ट काल तीन समयसे

अधिक नहीं है और सम्यक्त्व तथा सम्यामिथ्यात्वकी सत्तावाले जीव असंख्यात होते हुए भी स्वल्प

हैं। अब यदि उपक्रम कालकी अपेक्षा विचार किया जाता है तो यहाँ आवलिके असंख्यातवें भागसे

अधिक काल नहीं प्राप्त होता । अतः यहाँ उक्त दोनों प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिबालोंका जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्ट काल आबलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बतलाया है।

इस प्रकार कालानुगम समाप्त हुआ।

अब अन्तरासुगम का अधिकार है ।

१४३ यह सूत्र सुगम है क्योंकि इसका फल अधिकारका सम्हालनामात्र है।

सम्यक्त्व ओर सम्परम्मिथ्यात्वकी शुजगार और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका

अन्तरकाल कितना हे १

१४४ यह सूत्र भी सुगम है।

जघन्य अन्तरकाल एक समय है ।

१४५ क्योंकि सम्यक्त्व चौर सम्यम्मिथ्यात्वके भुजगार और अवक्तव्यके घाथ सम्यक्त्व

को प्राप्त दोनेवाले जीवोंका जघन्य अन्तरकाल एक समयमात्र पाया जाता है।

विशेषार्थसम्यर्दशनके प्राप्त होनेके प्रथम समयमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वकी

भुजगा श्रौर अवक्तव्य स्थिति होती है। अब यदि प्रथम और तीसरे समयमें बहुतसे जीव उक्त

पदोंके साथ सम्यग्दशनको प्राप्त हुए और दूसरे समयमें नहीं हुए तो उक्त पदोंका जघन्य अन्तर

काल एक समय प्राप्त हो जाता हे । यह उक्त सूत्रका भाव है ।

उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चौबीस दिन रात है।

१४६ शुंकापहले सामान्यते सम्यक्त्वके प्रहणका अन्तरकाल चौबीस दिन रात कहा

दे अब सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवक्तत्यस्थितिविभक्तिके साथ सम्यक्त्व ग्रहणका अन्तर

Page 94:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारअंतरं ७

दोसो सादिरेयचउवीसअदोरततमेचंतरस्स अ्॒जगारअवत्त्बद्धिदिविहत्तीणं परूबणादो ।

अवदिदष्िदिविहत्तियंतरं केवचिरं कालादो होदि

१५७ सुगम ।

जहरण्णेण एगसमओ ।

१४८ एदं पि सुगमं।

उक्षस्सेण अंगुलस्स असंखेज्दिभागो ।

१४६ इदो १ सम्मत्तट्विदीदो समयुत्तरमिच्छलद्िदिसंतकम्भं मोत्तण सेसट्विदिसंत

कम्मेहि संखे०सागरोवमसहस्समेत्तेहि सम्मत्तं पडिवज्जमाणाणं अंयुलस्स असंखेमाग

मेतत॑तरस्स संभवं पडि विरोहाभावादो । संखेज्जसागरोवमसहस्समेत्तमुकस्संतरमिदि अभ

णिय अंगुरस्स असंखे०भागमेत्तमिदि किमदं वुचदे १ ण पुणो पुणो दुसमउत्तरादिद्विदीसु

ड्ाइदूण सम्मतं पडिवज्जमाणा्ण जीवाणं बहुअमंतरश॒वलब्भदि ति अंगुलस्स असंखे०

भागमेत्तंतरुवएसादो । एकेकिस्पते हिदीए असंखे०लोगमेत्तद्विदिबंधज्झवसाणडाणाणि

अस्थि । तेसु अंतरिय असंखे०लोगमेत्तंतरपमाणपरूवणा किण्ण कोरदे १ ण ट्विद्अंतरे

काल भी उतना दी कहा जा रहा है सो यह कैसे बन सकता है ९

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि यहाँ भुजगार और अवक्तव्य स्थितिविभक्तियोंका

अन्तरकाल केवल चौबीस दिनरात न कहकर साधिक चौबीस दिन रात कहा है ।

ॐ अवस्थित स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल कितना है

१४७ यह सूत्र सुगम है ।

जघन्य अन्तरकाल एक समय है । ५

१४८ यह सूत्र भी सुगम दै । तार्प्यं यह है कि यह पद भी सम्यग्दर्शनको भ्रहण करनेके

प्रथम समयमे हो सकता है। अब यदि नाना जीवोंने इस पदके साथ पहले और तीसरे समयमें

स्न प्राप्त किया और दूसरे समयमें नहीं किया तो इसका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त

हा जाता ॥ ल

उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असख्यातव भागप्रमाण है ॥

१४६ क्योंकि सम्यक्स्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वके एक समय अधिक स्थितिसस्कमेको

छोड़कर संख्यात हजार सागर प्रमाण शेष स्थितिसत्कर्मके द्वारा सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीबोंके

अंगुलके असंख्यातर्बे भागमात्र अन्तरे होनेमें कोई विरोध नहीं आता दै ।

झुका उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार सागरप्रमाण है ऐसा न कहकर अंगुलके असंख्यातवें

भागप्रमाण है ऐसा किसलिये कहा है ९

समाधानतहीं क्योंकि सम्यक्त्वकी स्थितिसे सिथ्यात्वकी दो समय अधिक आदि

स्थितियोंके द्वारा पुनः पुनः सम्यक्त्वको भ्राप्त होनेवाले जीबोंके बहुत अन्तर पाया जाता है इसलिये

अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तर कहा है।

शंका एक एक स्थितिके असंख्यात लोकप्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसायस्थान होते हैं । अत्तः

खन सबका अन्तर कराने पर अन्तरका प्रमाण असंख्यात लोक प्राप्त होता है इसलिये यहाँ असंख्यात

लोक प्रमाण अन्तरकालकी प्ररूपणा क्यों नहीं की

4 ताजग्रतौसूवलंभादो दति पाठः ।

Page 95:

७६ जयंधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

परूविज्ञमाणे पयदड्डिदिं मोत्तण अण्णट्विदीहि सम्मत्तं पडिवज्जमाणाणं ट्विद्अंतरुव

लंभादो । परिणामंतरे पुण परूविज्ञमाणे असंखेज्जलोगमेत्तमंतरं होदि परिणामाणम

खेज्ज लो गपमाणचवर्ंभा ५ त

संखेज्जलोगपमाणत्तुवलंभादो । ण च ट्विदिवियप्पा असंखे०लोगमेत्ता अत्थि जेण तदंत

रमसंखेज्जलोगमेत्त होज्ज । कि च ण परिणाममेदेण णियमेण ट्विदिबंधमेदो असंखे०

लोगमेचट्टिद्बंंधज्मवसाणट्राणेहि एकिस्से चे ट्विदीए बंधुवलंमादो । तदो ट्विदिबंध

उ्नवसाणटाणेसु अंतराविदे वि अंतरमंगुलस्स असंखे मागमेत्तं चेव होदि ति ।

समाधाननहीं क्योकि स्थितिके अन्तरका कथन करनेपर प्रकृत स्थितिको छोड़कर अन्य

स्थितियोंके द्वारा सम्यकत्वको प्राप्त होनेबाले जीवोके स्थितिका अन्तर प्राप्त होता है। किन्तु

परिणामोंके अन्तरकी अपेक्षा कथन करनेपर असंख्यात लोकप्रमाण अन्तर होता है क्योंकि

परिणाम असंख्याल लोकप्रमाण पाये जाते हैं। परन्तु स्थितिविकल्प असंख्यात लोकप्रमाण

नहीं हैं जिससे स्थित्यन्तर असंख्यात लोकप्रमाण होवे । दूसरी बात यह है कि परिणामभेदसे

नियमतः स्थितिबन्धमें भेद नहीं होता है क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण स्थितिबन्धाध्यबसायप्रमाण

स्थानोंके द्वारा एक ही स्थितिका बन्ध पाया जाता है। अतः स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका अन्तर

कराने पर भी स्थिप्यन्तर अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण दी होता है। यही कारण है कि यहाँ

असंख्यात लोकप्रमाण अन्तरकालकी प्ररूपणा नहीं की ।

विशेषार्थयहाँ सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिका जघन्य

अन्तर काल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातबें भागप्रमाण बतलाया है।

सो इनमेंसे जघन्य अन्तरकाल एक समय तो स्पष्ट ही है। अब रही उत्कृष्ट अन्तरकालकी

बात सो इसका खुलासा करते हुए वीरसेन स्वामीने स्वयं दो शंकाएँ उठाई हैं। पहली

शंका तो यह है कि जब स्थितिके कुल विकल्प संख्यात हजार सागर प्रमाण हैं तब

उच्छ्र अन्तरकाल संख्यात हजार सागर प्रमाण होना चाहिये। बात्त यह है कि जो सम्यक

ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी एक समय अधिक स्थितिबाला जीव

सम्यग्दशनको प्राप्त होता है उसके सम्यग्दशनको प्राप्त होनेके प्रथम समयमे उक्त दोनों प्रक्ृतियोंकी

अवस्थित स्थितिविभक्ति होती है। यदि इससे अधिक स्थित्तिवाला जीव सम्यग्दशनको प्राप्त होता

है तो उसके अवस्थित स्थितिविभक्ति नहीं होती अव यदि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी एक

बार अवस्थित स्थितिके बाद जीव सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी दो समय

आदि अधिक स्थितिके साथ निरन्तर सम्यग्दशनको प्राप्त द्ोते रहें तो स्थितिके जितने चिकल्प हैं

उतनी बार ऐसा हो सकता है तदनन्तर अवश्य ही सम्यक्त्व और सम्यर्मिथ्यास्वकी अवस्थित

स्थिति प्राप्नो जायमी । अतएवं अवस्थित स्थितिका उत्कृष्ट अन्तरकाल संख्यात हजार सागरसे

अधिक नहीं प्राप्त होना चाहिये । यह पहली शंका है जिसका वीरसेनस्वामीने जो समाधान किया

है उसका भाव यह है कि जो सम्यक्स्व श्रौर सम्यर्मिथ्यात्वकी सत्तावाले जीव मिथ्यात्वसे सम्यक्त्व

को प्राप्त होते हैं उनमें दो समय अधिक आदि स्थितियोंके साथ सम्यक्त्वको जीव पुनः पुनः प्राप्त

होते रहते हैं इसलिये अवस्थित स्थितिका अन्तर काल संख्यात हजार सागर प्रमाण प्राप्त न होकर

अंगुलके असंख्यातवें भागग्रमाण श्राप्त होता है। दूसरी शंकाका भाव यह है कि एक एक स्थितिके

स्थितिबन्धाध्यक्सायस्थान असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा कुल स्थितिविकल्प संख्यात

हजार सागर प्रमाण होते हैं अव यदि सब स्थितियोंके बन्धके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसाय

१ आ० प्रतौमंतरेण इति पाटः ।

Page 96:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए उत्तरपडिभुजगारअंतरं ७७

अप्पदरहिदिविहत्तियंतरं केवचिरं कालादो होदि

१५० सुगम ।

णत्थि अंतरं ।

१५१ कुदो १ सम्मत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मियाणं अप्पद्रब बदाणं विरहामावादो ।

सेसाणं कम्माणं सव्वेसिं पदाणं एत्थि अंतरं ।

१५२ अणंतेसु एडंंदिए्सु शुजगारअप्पदरअबद्ठिदाणं सच्वकालं संभवादो ।

एवरि अणंताणुबंधीणं अवत्तव्वदिदिविहत्तियंतरं जदर्णेण एगसमओ।

१५३ इदो अण॑ताणुबंधिविसं जोइदसम्माइड्टीणं मिच्छततं गदपटमसमए संभवादो ।

उक्रस्सेण चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

१५४ दो १ सम्मत्तं पडिवज्जमाणाणमंतरेण मिच्छन्तं पडिवञजमाणाणमंतरस्व

समाणत्तादो एवं जइब्सहप्ठृदबिणिग्गयदेसामासियचुण्णिसुत्तत्थपरूवर्ण कादूण संपदि

स्थानोंका अन्तर कराया जाता है तो वह असंख्यातलोकप्रमाण प्राप्त होता है इसलिये यहाँ अवस्थित

स्थितिका उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण न कहकर असंख्यात लोकप्रमाण कहना

चाहिये। इस शंकाका बीरसेन स्वामीने दो प्रकारसे उत्तर दिया है। पहले उत्तरका भाव यह है कि

यहाँ परिणामोंका अन्तर नहीं दिखाना है किन्तु स्थितियोंका अन्तर दिखाना है । दूसरी बात यद्

है कि परिणामोंमें भेद होनेसे कमंस्थितिमे भेद होनेका कोई नियम नहीं है क्योकि असंख्यात

लोकप्रमाण परिणामोंके द्वारा एक द्वी स्थितिबंध पाया जाता है।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल कितना है

१५० यह सूत्र सुगम है ।

अल्पतर स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल नहीं है ।

१५१ क्योंकि अल्पतर स्थितिविभक्तिको प्राप्त सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वसत्कमेंबाले

जीबोंका विरह नहीं पाया जाता है ।

इसी प्रकार शेष कर्मे सब पदोंका अन्तरकाल नहीं है ।

१५२ क्योंकि अनन्त एकेन्द्रियोंमें शेष सभी कर्मोकी मुजगार अस्पतर और अवस्थित

स्थितिविभक्तियाँ सदा पाई जाती हैं।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तालुबन्धियोंकी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तरकाल एक समय है

१५३ क्योंकि जिन सम्यण्ट्टियोने चनन्तानुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना कर दी है उनके

मिथ्यात्वको प्राप्त होनेके प्रथम समयमें ही अवक्तव्य स्थितिबिभक्ति पाई जाती है । इसलिये इसका

जघम्य अन्तरकाल एक समय बन जाता है।

उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चौबीस दिन रात है ।

९४४ क्योंकि सम्यक्स्वको प्राप्त होनेवाले जीवोंके अन्तरकालके साथ मिथ्यात्वक्ो प्राप्त

दोनेबाल जीवोंका अन्तरकाल समान है । इस प्रकार यतिवृषभ आचायेके मुखसे निकले हुए देशा

मषक चूर्णिसत्रोंके अथेका कथन करके अब उसके द्वारा सूचित होनेवाले अर्थंका कथन करनेके लिये

१ आशप्रतौ सच्वेसि कम्माणं वदाणं इति पाठः ।

Page 97:

जद जयधवलासहिदे कसायपाहुडे दिदिविहत्ती ३

तेण छचिदत्थपरूवणडुभुच्चारणाणुगर्म कस्सामो ।

१५५ अंतराणुगमेण दुविहोणिदेसों ओघेण आदेसेण य । ओबेण मिच्छत्त

बारसक० ण्रणोक० तिण्णि पदाणं णत्थि अंतरं । अणंताणु चउक एवं चेव । णवरि

अवनत्तथ्व जह ० एगसमओ उक ० चउवबीस अहोरत्ते सादिरेगे। सम्मत्तसम्मामि

अप्पदर० णस्थि अंतरं । श्रुज० ज ० एगस ० उक चउवीस अहोरत्ते सादिरेगे । एवमव

्व्वस्स वि वक्तव्यं विसेसामावादो । अवष्टि० ज० एगसमओ उक असंखेगरोगा ।

है खेगोगमेत्ेस अंतरावि ५ प्ते

हदो ट्विदिबंधज्ञवसाणडाणेसु असंखे०लोगमेत्तेसु अंतराबिदे तदुबरुभादो । चुष्णिषुत्तण

एदस्स बिरोहो किण्ण होदि १ होदि चेव फं तु जाणिय जहा अविरोहो होदि तहा

वत्तव्वं । एवं तिरिक्ख ०कायजोमि ०ओरालि णवुंस ० चत्तारिक असंजद् ०अचक्खु ०

तिण्णिङे०भवसि आदारि ति ।

उच्चारणाका अचुगम करते हैं

१५७ अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनिदेश और आदेशनिर्देश।

डनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्या वारदकपाय और नौ नोकषायेकरि तीन पदोंका अन्तरकाल नहीं

है । अनन्तानुबन्धी चतुष्कका इसीभ्रकार जानना । किन्तु इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य स्थिति

विभक्तिका जघन्य अन्तरकाल एकसमय और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चोबीस दिनरात है ।

सम्यकत्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिका अन्तरकाल नहीं है । भुजगार स्थितिविभक्तिका

जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चौबीस दिनरात है। इसी प्रकार

अवक्तव्यस्थितिविभक्तिका भी कहना चाहिये। क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

अवसथ स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तरकाल एक समय ओर उल्क अन्तरकाल असंख्यातलोक

प्रमाण है ।

शंका सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिका उत्कृष्ट अन्तरकाल

असंख्यातलोकप्रमाण क्यों है ९

समाधानस्योकि असंख्यात लोकप्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका अन्तर करानेपर

बह अन्तरकाल प्रा होता है।

शंकाइस कथनका चूर्णिसूत्रके साथ विरोध क्यों नहीं होता है ।

समाधानशणिरोध तो होता ही हे किन्तु जानकर जिस प्रकार अविरोध हो उस प्रकार

कथन करना चाहिये ।

इसीश्रकार तियेच काययोगी ओौदारिककाययोगी नपुंसकवेदी क्राधादि चारों कपायबाले

असंयत अचज्षुद्शनवाले ऋष्णादि तीन लेश्यावाले भव्य और आहारक जीवोंके जानना ।

विशेषा् यद्यपि चूणिसूत्रकारने सम्यम्मिभ्यात्व और सम्यक्ववकी अवस्थित स्थिति

विभक्तिका उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण बतलाया दै परन्तु यहाँ उच्चारणाके

अभिप्रायानुसार बह अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण बतलाया गया है। सो यद्यपि इन दोनों

कथनोंमें विरोध तो है फिर भी ऐसा माद्धम होता है कि चूर्णिसूत्रकार स्थितिविकल्पोंके अन्तरका

मूल कारण स्थितिबन्धके कारणभूत परिणामोंको नहीं स्वीकार करके उक्त कथन करते दै और

जच्चारणाचाये स्थितिबन्धके विकल्पोंके अन्तरका कारण परिणामोंका स्वीकार करके उक्त कथन करते

हैं । यही कारण है कि यहाँ इन दोनों प्ररूपणाओंमें मतभेद दिखलाई देता है। यदि यह निष्के

ठीक है तो इसे विज्रक्षामेद कदा जा सकता है। वीरसेन स्वामीने इस मतभेद॒का उल्लेख कर जो

Page 98:

गा० २२ द्विदिविद्दत्ती९ उत्तरपयडिभुजग।रअंतरं ज

१५६ आदेसेण य णेरइएसु मिच्छतसोललसक०णवणोक० शन ० ज ० एगसमओ

उक० अतो । सेस० ओघं । एवं सन्वणेरहयपंचिदियतिरिक्छतियमणुस्सतियदेव ०

मवणादि जाव सहस्सार०पंचिंदियपंचिं०पज्ज ०तसतसपज्ज पंचमण० पंचवचि०

वेउव्विय ० इत्थि ०पुरिस ०चक्खु ०तेउ ०पम्म ०सण्णि त्ति । पंचिदियतिरिक्वअपज्ञ

मिच्छनत्तसोलसक०णवणोक तिण्णि पदा णिरओघ॑ । सम्म ०सम्मामि० अप्प० ओधं ।

एवं सन्बविगलिदियपंचि ०अपनज्ज ०बादरपुढविपज्ज ०बादरआउपज्ज ०बादरतेउपज्ज ०

बादरवाउपज्ज ०बादरवणप्फदिपत्तेय ० पज्ज तसअपज्ञ०विहंगणाणि त्ति । मणुसअपज ०

मिच्छत्तसोलसक०णवणोक ० तिण्णिपदा० सम्मत्तसम्मामि अप्पद० ज० एगस०

उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एवं वेउव्वियमिस्स० । णवरि उकस्संतरं बारस जुहुता ।

इसमें सामंजस्य बिठानेकी सूचना की है उसका रहस्य यही प्रतीत होता है। इस प्रकार इन दोनों

मतभे्दोका वास्तविक कारण क्या होना चाहिए इसका विचार किया।

१५६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व सोलह कपाय और नौ नोकषायों की

आुजगार स्थितिविभक्तिका जधन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तसुंहूते है।

शेष कथन ओघके समान है। इसी प्रकार सव नारकी पंचेन्द्रिय तिथंचत्रिक मनुष्यत्रिक सामान्य

देव भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार स्वर्गतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप त्रस तसपर्याप्त

पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी वैक्रियिककाययोगी ख््रीवेदवाले पुरुषवेदबाले चक्तुदशेनी

पीतलेश्याबाले पद्मलेश्यावाले और संज्ञी जीवोंके जानना । पंचेन्द्रिय तियंच अपर्यप्तकोंमें मिथ्यात्व

सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके तीन पदोंका भंग सामान्य नारकियोंके समान है । तथा सम्यक्त्व

आर सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिविभक्तिका भंग ओघके स्मान है। इसी प्रकार सव विकले

न्दरिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बादर प्रथिबीकायिक पर्याप्र बादर जलकायिक्क पर्याप्त बादर अग्नि

कायिक पर्याप्त बादर बायुकायिक पर्याप्र बादर वनस्पतिकरायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त त्रसअपर्याप्त

और विभंगज्ञानी जीवोंके जानना । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषा

योक्रे तीन पदोंको तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तरकाल

एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार वैकरियिक

मिश्रकाययोगी जीबोंके जानना । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहू्त है।

विशेषा्थनारकियोंमें मिथ्यात्व आदि २६ प्रकृतियोंकी भुजगार स्थिति विभक्तिके अन्तरमें

ही विशेषता हे शेष सव कथन ओघके समान है । विशेषताका उल्लेख ओघमें किया ही है। कुछ

और मार्गणाएँ हैं जिनमें यह प्ररूपणा बन जाती है अतः उनके कथनको सामान्य नारकियोंके

समान बतलाया है। जैसे प्रथमादि नरकके नारी आदि। पंचेन्द्रिय तियंच लब्ध्यपर्याप्तकोंमें

सम्यक्स्व और सम्यम्मिथ्यात्वका एक अल्पतर पद् ही होता है। परन्तु यहाँ ये दोनों प्रकृतियाँ

निरन्तर पाई जाती हैं अतः यहाँ इन दोनों प्रकृतियोंके अल्पतर पदका अन्तरकाल नहीं पाया जाता।

ओघंसे भी यही बात प्राप्त होती है अतः इख कथनको ओघके समान बतलाया है। शेष कथन

सामान्य नारकियोंके समान है यह स्पष्ट ही है। सब विकलेन्द्रिय आदि इव ओर मार्गणाएँ हैं

जिनमे यह प्ररूपणा बन जाती है अतः उनके कथनको पचेन्दरियतिर्यच लब्ध्यपर्याप्तकोंके समान

बतलाया है । मलुष्य लब्ध्यपर्याप्त यह सान्तर मार्गंणा है। इसका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यात्बे भागप्रमाण है । इंसलिये यहाँ सब प्रकृतियोंके अपने अपने सम्भव

पदोंका जघन्य चौर उस्कृष्ट अन्तरकाल उक्तप्रमाण बतलाया है । इसी प्रकार वैक्रियिकमिश्रकाययोगमें

Page 99:

जयधवलाखदिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

१५७ आणदादि जाव उवरिमगेवज्ञो तति अणंताणु चउक्त अवत्तव्व सम्मत्त ०

सम्मामि० शुन ०अप्पद्र ०अवद्टिद अवक्तव्य ओधं । सेसपयडि० अप्पदर० णत्थि

अंतरं । एवं सुक० । अणुदिसादि जाव सव्व सव्वपय० अप्पदर० णत्थि अंतरं ।

एवमाभिणि०सुद ०ओहि० मणपज्ञ ०संजद ०सामाइयछेदो ०परिहार ० संजदासंजद ०

ओदिदंस०सम्मादि०खहय ० वेदय दिदि ति ।

१५८ एहंदिएसु सथ्चपयडी सव्वपदाणं णत्थि अंतरं । एवं बादरसुहुमेहदियपज

त्तापज्ञत्त बादरपुट विअपज्ज ० सुहमपुठविपज्जत्तापज्जत्त बादरआउअपज्जसुददुमआउ

पज्जत्तापज्जत्त बादरतेडअषपञ्ज ० षुहुमतेडपञ जत्तापज्जत्त बादरबाउअपज्ज ०सुहुमवा

उपज्जत्तापज्जत्तबादरवणप्फदि सुहुमबणप्फदिबादरणिगोद ०सुहुमणिगोदपज्जत्तापज्जत्त

ध

बाद्रवणप्कदिपत्तेयअपञ्ज०ओरालियमिस्स मदि ० सुद् ०मिच्छादि ० असण्णि त्ति ।

जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्रक्राययोगका उत्कृष्ट अन्तरकाल बारह

सूते है इसलिये यहाँ सब पदोंका उच्छृ अन्तराल बारह मुहूर्त बतलाया है।

8 १५७ आनत कल्पते लेकर उपरिम ग्रैवेयकतकके देवोंमें अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अब

क्तठ्य स्थितिविभक्ति तथा सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिध्यास्वकी भुजगार अल्पतर अवस्थित और

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका अन्तर ओघक समान है । तथा शेष प्रकृतयो कौ अल्पतर स्थिति

विभक्तिका अन्तर नहीं है। इसी प्रकार शुक्तलेश्यावाले जीवोंकं जानना । अनुदिशसे लेकर

सरवार्थसिद्धितकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिबिभक्तिका अन्तर नहीं है । इसी

प्रकार आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी संयत सामायिकसंयत

छेदोपस्थापना संयत परिदारविशुद्धिसंयत संयतासंयत अवधिदशेनी सम्यस्टष्टि क्ञायिकसम्यन्दष्ट

ओर बेदकसम्यग्दष्टि जीवोँके जानना ।

विशेषार्थआनतसे लेकर उपरिम श्रेवेयकतकके देवोंमें अनन्तालुबन्धौ चतुष्कके अल्पतर

ओर अवक्तव्य ये दो पद् सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके चारों पद् तथा शेष प्रकृतियोंका एक

अल्पतर वद् ही प्राप्त होता है । यहाँ सब्र प्रकृतियोंका अल्पतर पद तो सदा पाया जाता है इसलिये

इसका अन्तरकाल नहीं वतलाया । अब रहे पूर्वोक्त शेष पद सो इनका ओघके समान अन्तरकाल

यहाँ भी बन जाता है । कारण स्पष्ट दै । शक्तलेर्यामें भी यद व्यवस्था प्राप्त होती है इसलिये इसके

कथनको आनतादिकके समान बतलाया दै । अनुदिशादिकमें सम्यग्दष्टि जीव ही होते द अतः उनके

खब प्रकृतियोंका निरन्तर एक अस्पतर पद ही होता है इसलिये इसका अन्तरकाल नदीं कहा ।

आगे आशिनिवोधिकज्ञानी आदि और जितनी मार्गण गिनाई हैं उनमें भी एक अल्पतर पद्

ही होता है अतः उनका कथन अनुद्शि आदिके समान जानने की सूचना की दे ।

१४८ एकेन्द्रियोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंका अन्तरकाल नहीं है। इसीप्रकार बादर

एकेन्द्रिय जथा इनके पर्याप्त और अपरया सूक्ष्म एकेन्द्रिय तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर

प्रथिवीकायिक बादर प्रथिवीकायिक अपर्याप्त सूम एथिवीकायिक तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त

बादर जलकायिक तथा उनके अपर्याप्त सूक्ष्म जलकायिक तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर

अग्निकायिक तथा उनके अपर्याप्त सूच्म अभ्निकायिक तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर

बायुकायिक तथा उनके अपर्याप्त सूक्ष्म बायुकायिक तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त बादर वनस्पति

कायिक सूक्ष्म वनस्पति कायिक बादर निगोद और सुम निगोद तथा इन सबके पर्याप्त और

Page 100:

गा० २२ द्विदिविदत्तीए उत्तरपयडिभुजगारअंतरं ८१

१५६ आहार ०आदहारमिस्स सव्वपयडी अप्पदर जदह ० एगसमओ उक

वासपुथत्त । एवमकपा ०जहाक्खादसंजदे त्ति । कम्मदय ओरालियमिस्समंगो । णवरि

सम्पत्त ०सम्मामि अप्पद० ज० एगसमओ उक ० अंतोघ्चु० । एवमणाहारीणं ।

१६० अवगद० मिच्छत्तसम्मत्त सम्मामि०अद्रक अप्प० ज० एगस ० उक

वासपुधत्त । एवमडणोकसायाणं । पुरिस चदुसंज अप्पद्० ज० एगस ० उकक०

छम्मासा सुहुम० लोभसंज अवगद्वेदभंगो दंसणतियएकारसक ०णवणोक० अक

सायभंगो । अमवसि छब्बीस पयडीणं मदि०भंगो ।

अपर्याप्त बादर वनस्पति कायिक भव्येकशरीर और उनके अपर्याप्र ओदारिकमिश्रकाययोगी

मत्यज्ञानी श्र॒वाज्ञानी मिथ्यादृष्टि भौर असंज्ञी जीरवोके जानना चाहिए ।

विशेषाथएकेन्द्रियोंका प्रमाण अनन्त है इसलिये उनमें मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंके

यथाम्भव पदोंका अन्तरकाल नहीं प्राप्त होता । यद्यपि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी सत्तावाले

जीव असंख्यात ही हैं फिर भी इनका यहाँ एक अल्पतर पद ही है अतः इसका भी अन्तर काल

नहीं प्राप्त होता । बादर एकेन्द्रिय आदि मूलमें और जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी यही

व्यवस्था प्राप्त होती है ।

१५६ आदारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोभी जीबोंमें सब प्रकृतियोंके अल्पत्तर

पद्क्रा जघन्य अन्तर एक समय है ओर उत्कृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्स्व है। इसी प्रकार अकषायी और

यथाख्यातसंयत जीवोंके जानना चाहिए। कार्मणकाययोगी जीबोंमें औदारिकमिश्रकाययोगी जीबोंके

समान भङ्ग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिभ्यास्वके अ स्पतर पदका जघन्य

अन्तर एक समय द्वे और उत्कृष्ट अन्तर अन्तञुहू्तं है । इसी प्रकार अनाहारक जीवोके

जानना चाहिए ।

विशेषार्थ ्राहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्त्व है। तथा इन योगोंमें सब प्रकृतियोंका एक अल्पतर पद ही होता

है । इसलिये इन दोनों योगोंमें सब प्रकृतियोंके अल्पतर पदका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्त

प्रमाण कहा है। अकषायी और यथाख्यातसंयत जीवोके सब्र प्रकृतियोंका अल्पतर पद उपशम

श्रेणिमें ही प्राप्त होता है चौर उपशम श्रेणिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्तप्रमाण है अतः इन

दोनों मागेणाश्नोमे सब श्रकृतियोंके अल्पतर पदका अन्तरकाल पूर्वोक्त प्रमाण बतलाया है। कार्मण

काययोगमें ओओौदारिकभिश्रकाययोग घे जो विशेषता है वह सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतियोंके

सम्बन्धमें है । बात यह् है कि कार्मणकाययोगका प्रत्येक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय

और उत्कृष्ट काल तीन समय है । अब यदि नाना जीवोंकी अपेक्षा भी विचार किया जाता है तो

इसमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अन्तरकाल प्राप्त हो जाता दै जो औदारिकमिश्रकाययोगमें

नहीं प्राप्त होता । यही कारण है कि यहाँ जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल

अन्तमुहूर्त बतलाया है। अनाहारक अवस्था कार्मणकाययोगकी अविनाभाविनी है इसलिये इनका

कथन भी कार्मणकाययोगियोंके सम्रान बतलाया है ।

१६० अपगतवेदी जीबोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायके अर्प

तरपदका जघन्य अन्तर एक समय है ओर उत्कृष्ट अन्तर वषेप्रथक्र है। इसी प्रकार आठ नोक

षा्योके अर्पतर पदका अन्तर काल जानना चाहिए। पुरुषषेद और चार संज्वलनके अल्पतर

पद्का जघन्य अन्तर एक समय है ओर उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है। सूक्ष्म सास्परायसंयत जीवोंमें

लोभसंज्वलनका भङ्ग अपगतवेदी जीवोके समान है। तीन दर्शनधोहनीय ग्यारह कषाय और नो

१९

Page 101:

८्र् जयथवलासटिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

अरे

१६१ उवसम० सव्वपयडी अप्पदर० ज ० एगस ० उक चउबीस अशोरत्त

सादिरेगे । सांसणसम्मामि ० सन्वपयडि० अप्प० ज० एगस० उकं पलिदो०

असंखे मागो ।

एवमंतराणुगमो समत्तो ।

१६२ भाव्राणुगमेण दुविहों णिइसोओबे० आदेसे० । ओवेण सव्वपयडिसव्व

पदाणं को भावों ओदइओ भावों ण उवसंतकसायअप्पदरेण वियहिचारो तत्थ मि

नोकषायका भङ्ग अकषायी जीवोंके समान दै । अभव्य जीबोंमें छब्बीस प्रकृतियोका भङ्ग मत्यज्ञानी

जीवोंके समान है ।

विशेषार्थअवगतवेदमें मिथ्यात्व सम्यस्मिध्यात्व सम्यक्त्व और आठ कषायोंकी अल्प

तर स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल उपशम श्रेणिमें ही प्राप्त होता है । तथा उपशमश्रेणिका जघन्य अन्तर

काल एक समय और उष्कृष्ट अन्तरकाल वर्षेप्रथकत्व है। इसलिये अबगतबेदमें उक्त प्रकृतियोंका

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्तप्रमाण बतलाया ह । आठ नोकषायोंका अन्तरकाल क्षपक

श्रेणिमें भी बन जाता है पर यह यथासम्भव नपुंकबेद और स््ीवेदकी अपेक्षा ज्षपकश्रेणि पर चढ़

हुए अपगतवेदी जीवोके ही प्राप्त होता है। पर क्षपकश्नेणिकी अपेक्षा ऐसे अपगतवेदियोंका वही

अन्तस्काल है जो उपशसश्रेणिका पूर्वमें बतलाया है। इसलिये आठ नोकषायोंके अल्पतर पदका

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तराल उक्तप्रमाण कहा है। अब रहा पुरुषबेद और चार संज्वलनोंका

अल्पतरपद सो यह पुरुषवेदसे अपगतवेदी हुए जीवोकरे भी होता है। तथा क्षपकरश्नणिकी अपेक्षा

ऐसे जीबोंका उत्क्रष्ट अन्तरकाल छुद्द महीनासे अधिक नहीं है। अतः उक्त प्रकृतियोंके अल्पतर

पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना बतलाया है । सूदमसन्प

राय संयममें लोभ संज्वलनका सत क्षपकश्रेणिमे मी है अतः इसका अन्तरकाल अपगतबेदियोंक्े

समान बतलाया। किन्तु शेष प्रकृतियोंका सच उपशसश्रेणिमें ही होता है इसलिये इनका अन्तर

काल अकषायियोके समान बतलाया है ।

१६१ उपशमसम्यग्टष्टियोंमें सब प्रकृतिर्योकी अह्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिन रात दै । सासादनसम्यग्टषि चौर सम्यम्मिथ्या

दृष्टियोंमें सब प्रकृतियोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

विशेषार्थपशम सम्यक््स्वका जघन्य अन्तरकाल एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तरकाल

चौबीस दिन रात है इसलिये इनमें सब प्रकृतियोंके अल्पतर पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय

और उस्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चौबीस दिन रात बतलाया है। सासादन सम्यक्त्वका जघन्य

अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण बतलाया है। यही

कारण है कि इसमें सब प्रकृतियोंके अल्पतर पदका जघन्य और उच्छृष्ट अन्तरकाल उक्तपरमाण कहा है।

इस प्रकार अन्तराजुगम समाप्त हुआ ।

१६२ भावानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैअोधनिर्देश और आदेशनिर्देश ।

ओघसे सव प्रकृतियोंके सब पदोंका कौन भाव है औदयिक भावदै। यदि कहा जाय कि इस

१ ताप्रतौ ओघेण इति पाठो नास्ति ।

Page 102:

गा० रर ह्विदिविद्दत्तीए उत्तरपयडिशुजगारसण्णियासो परे

णाणावरणादीणघ्रुदयदंसणादो । जेण विणा जं ण होदि तं तस्ते त्ति ववदारदंसणादो ।

एवं णेदश्वं जाव अणाहारए तति ।

एवंमावाणुभमो समत्तो ।

सरिणियासों ।

१६३ सुगममेदं अहियारसंभालणहउत्तादो ।

मिच्छुत्तस्स जो छजगारकम्मंसि्मो सो सम्मत्तस्स सिया अप्पदर

कम्मंसिओ सिया अकम्मंसिओ ।

१६४ जदि सम्मत्तस्स संतकम्ममत्यि तो मिच्छत्तसुजगारकम्मंसियम्मि सम्म

तस्स णियमा अप्पदरष्टिदिविहत्ती होदि पढमसमयसम्मादिद्ट मोत्तणण्णत्थ सजगर

अवद्धिदअवत्तव्वाणं सम्मत्तगोयराणममावादो जदि अकम्मंसिओ तो णस्थि सण्णियासो

संतेण असंतस्स सण्णियासविरोहादो ।

एवं सम्मामिच्छत्तस्स वि ।

तरह उपशान्तकषाय जीवके अल्पतरपद्करे साथ व्यभिचार हो जायगा क्योकि वहाँ पर उपशम

भाव पाया जाता है सो भी बात नहीं है क्योंकि वहाँ पर भी ज्ञानावरणादि कर्मकरा उदय देखा

ज्ञाता है । तथा जो जिसके बिना न हो बह उसका है ऐसा व्यवहार भी देखा जाता है। इस प्रकार

अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिये।

विशेषार्थउपशान्तकंषाय गुणस्थानमें मोहनीयका उपशम होनेसे इस अपेक्षासे उपशम

भाव है फिर भी वहाँ सोहनीयके अल्पतर पदका ओऔद्यिक भाव कहा गया है। यद्यपि वीरसेन

स्वामीने यहाँ अन्य ज्ञानावरणादि कर्मोके उद्यकों स्वीकार कर अल्पतर पदके ओद्यिक भावका

समर्थन किया है फिर भी मोहनीयका उदय न होनेसे मोहनीयके अवान्तर भेदोंके अल्पतर पदका

ओऔद्यिक भाव कैसे बनेगा यह विचारणीय है । माद्टूम पड़ता है कि अन्यत्र सर्वत्र सोहनीयका

उद्य देखकर यहाँ भी उसका उपचार किया गया है। कारणका निर्देश वीरसेन स्वामीने

स्वयं किया है ।

इस प्रकार भावानुगम समाप्त हुआ ।

ॐ अब सन्निकर्षानुगमका अधिकार है ।

१६३ यह सूत्र सुगम है क्योंकि इसका फल अधिकारकी सम्हाल करनामात्र है ।

जो मिथ्यात्वकी झुजगार स्थितिसत्कमंवाला है वह कदाचित् सम्यक्तवको

श्रसपतरस्थितिसत्कर्मबाला है और कदाचित् सम्यक्त्वसत्कमेसे रहित है ।

१६४ यदि सम्यक्त्वकमंका अस्तित्व हे तो मिथ्याघ्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिके होने

पर सम्यक्स्वकी नियमसे अल्पतर स्थित्तिविभक्ति होती है क्योकि सम्यग्षटिके धरथम समयको

छोड़कर अन्यत्र सम्यक्स प्रकृतिके मुजगार अवस्थित और अवक्तव्य पद नहीं होते हैं। यदि

सम्यक्व सस्कमसे रदित है तो सन्निकर्ष नहीं होता क्योंकि सतके साथ असत्का सन्निकर्षे

माननेमें विरोध आता है ।

ॐ इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वका भी सज्निकष जानना चाहिए ।

ता० आ० प्रस्योः संभालह्ह्ेउत्तादो इति पाठः ।

Page 103:

दंड जयधवलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

१६४ जहा सम्मत्तेण सण्णियासो कदो वदा सम्मामिच्छक्तेण वि कायब्बो

विसेसाभावादो ।

सेसाणं णेदव्वो ।

१६६ सेसाणं कम्माणं सण्णियासो जाणिदूण णेदन्वो । त॑ जहामिच्छत्तस्स

जो थुजगारबिहत्तिओ सो सोलसकसायणवणोकसायाणं सिया श्रुजगारविहत्तिओ सिया

अष्पद्रविहत्तिओ सिया अवद्िदविहत्तिओ । एवं मिच्छत्तअघद्िदस्स वि वत्तच्वं ।

मिच्छत्त० अप्पदरस्स जो विहत्तिओ तस्स सम्मत्तटटिदिसंतकम्मं सिया अत्थि सिया

णत्थि । जदि अत्थि तो सिया अप्पद्रबिहत्तिओ सिया भजगारविदत्तिओ सिया

अवह्टिदविहत्तिओ सिया अवत्तव्वविहत्तिओ । एवं सम्मामिच्छत्तस्स वि सण्णि

यासो कायल्वो । बारसक्सायणवणोकसायाणं सिया अुजरगारविहत्तिओ सिया अप्प

दरबि० सिया अवड्डिदवि० । एकमणंताणुबंधिचठकाणं । णवरि सिया अवत्तव्वविहत्तिओ

सिया अविहत्तिजओ वि ।

सि १६५ जिस प्रकार सम्यव्वके साथ सन्निकर्ष किया उसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकें साथ ।

भी करना चाहिये क्योंकि उससे इसमे कोई विशेषता नहीं है ।

शेष कर्मोका सब्निकष यथायोग्य जानना चाहिये ।

१६६ शेष कर्मोका सन्निकपं जानकर कथन करना चाहिये। इसका खुलासा इस प्रकार है

जो मिथ्यात्वकी जुगार स्थितिविभक्तिवाला है वह सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी कदाचित्

जगार स्थितिविभक्तिवाला है कदाचित् अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित् अवस्थित

स्थितिविभक्तिवाला है। इसी प्रकार मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिकी अपेक्षा भी कथन करना

चाहिये। जो मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है उसके सम्यक्व स्थितिसत्कर्म कदाचित्

है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो वह मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला जीव सम्यक्त्व

की कदाचित् अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है कदाचित् भुजगार स्थितिविभक्तिवाला है कदाचित्

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित् अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला है। इसी प्रकार

सम्यम्मिथ्याल्वका भी सन्निकर्ष कहना चाहिये । बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी कदाचित् मुज

गारस्थितिविभक्तिवाला है कदाचित् अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित् अवस्थित

स्थितिविभक्तिवाला है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्कका सन्निकर्ष जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि वह इस अपेक्षा कदाचित् अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित् अनन्ता

चुबन्धीचतुष्कसे रहित है ।

विशेषाथसक्लिकर्ष संयोगका नाम है । भ्रकृतमें यह विचार किया है कि किस श्रकृतिकी

किस स्थितिके रहते हुए तदन्य प्रकृतिकी कौनसी स्थिति हो सकती है। पहले मिथ्यात्वकों मुख्य

मानकर उसकी भुजगार आदि स्थितियोंके साथ अन्य प्रकृतियोंकी भुजगार आदि स्थितियोंका

संयोग बतलाया गया है । यथामिथ्यात्वकी जगार स्थितिमें सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका

सत्त्व है भी और नहीं भी है। मिथ्यात्वकी भुजगार स्थिति सिध्यात्व गुणस्थानमें होती है । अव

वि ता० प्रतौ सूत्रमिदं नोपनिबद्धम् ।

२ ता० प्रतौ सेसाणं कर्माणं सण्णियासो जाणिदूण णेद्व्वो इत्ययं दीकांशः सूत्रस्वेनोपनिबद्धः ।

Page 104:

गा० २२ डिदितरिदत्तीए उत्तरपडिभुजगारसण्णियासों ८५

१६७ सम्मत्तस्स जो अजगारविदत्तिओ सो मिच्छत्तसोलसकसायणव

णोकसायाणं णियमा अप्पद्रत्रिहत्तिओ सम्मामिच्छत्तस्स णियमा ञुजगारविहत्तियो । एवं

जिस मिथ्यादृषटिने सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी उद्देलना कर दी है उसके मिथ्यात्वकी भुजगार

स्थितिके रदते हुए इन दोनोंका सत्व नहीं होता। और जिसने उद्धंलना नहीं की है उसके सत्त

होता है । किन्तु मिथ्यात्व गुणस्थानमें सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यास्वकी एक अल्पतर स्थिति ही

होती है क्योकि इन दोनों प्रकृतियोंकी शेष स्थितियाँ सम्यक्त्वको प्राप्त करनेके प्रथम समयमें दी

होती हैं । इसलिये सिद्ध हुआ कि मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिके समय सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वका यदि सत्त है तो एक अल्पतर स्थिति होती है। अब रदे सोलद कषाय और नौ नोकपाय सो

मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिके समय इनकी मुज़गार अल्पतर और अवस्थित ये तीनों स्थितियाँ सम्भव

हैं क्योकि किसी एक कर्मकरा जितना स्थितिबन्ध होता है तद्न्य कर्मका आवाधाकाण्डकके भीतर

न्यूनाधिक रूपसे बन्ध होता रहता है । इसलिये मिथ्यात्वकी भुजगार स्थितिके समय सोलह कषाय

और नौ नोकषायोंके भुजगार अल्पतर और अवस्थित ये तीनों पद् सम्भव हैं । इस प्रकार

मिथ्यात्वकी सुजगार स्थितिकी अपेक्षा सन्निकर्षका विचार किया । मिथ्यास्वकी अवस्थित स्थितिकों

सुर्य मानकर भी सन्निकषे पहलेके समान ही प्राप्त होता है इसलिये उसका अलगसे निर्देश नहीं

करते हैं । अब रदी मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिको मुख्य मानकर विचार करनेकी बात सो इसके

रहते हुए सम्यक्त्व ओर सम्यग्सिथ्यात्यका अस्तित्व है और नहीं भी है। जिसने इद्वूलना कर दी

है उसके नहीं है शेषके है । पर ऐसे जीवके मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिके रहते हुए सम्यक्त्व चनौर

सम्यम्मिथ्यात्वकी अल्पतर झुज़गार अवस्थित और अवक्तव्य ये चारों स्थितियाँ सम्भव हैं । इनमें

से भुजगार अवस्थित ओर अवक्तव्य तो सम्यक्स्वको पराप्त होनेके प्रथम समयमें ही होते हैं ।

अल्पतर पद् सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्ठि किसीके भी होता दे। बारह कषाय और नौ नोकषायोके

भुजगार अल्पत्र ओर अवस्थित ये तीनों पद् होते हैं क्योंकि मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिके

समय उक्त प्रकृतियोंके तीन पद होनेमें कोई बाधा नहीं आती । तथा अनन्तालुवन्यी चतुष्क है भी

और नहीं भी है। जिसने विसंयोजना कर दी है उसके नहीं है शेषकरे है। यदि है तो इसके भुज्ञगार

आदि चारों पद सम्भव हैं । कारण स्पष्ट है ।

उक्त विशेषताओंका ज्ञापक कोषठक

में में अल्पतर में

सभ्यक्ख ब सम्य हि भी हि हद शशि द नहीं भी हैं यदि हैं

स्मिथ्यास्व यदि हैं तो अल्प यदि हैं तो अल्प तो चारों पद

तस्ष्द तरपद् ै््््॒॒४ः

सुज्गार अर्तर भुजगार अल्पतर नहीं है यदि है

अनन्तालुबन्धी व अवस्थित व अवस्थित तो चारों पद्

१२ कषाय और अुजगार अल्पतर जुजगार अल्पतर भुजगार अल्पतर

६ कषाय ब अवस्थित व अवस्थित ब अवस्थित

१६७ जो सम्यकस्वकी सुजगार स्थितिविभक्तिबाला है बह मिथ्या सोलह कषाय और

नौ नोकषायोंकी नियमसे अल्पतरस्थितिविभक्तिवाला है। तथा सम्यग्मिथ्यात्वकी नियमसे भुजगार

Page 105:

नः जयधवलाखदिदेः कसायपाहुडे द्विदिबिहत्ती ३

सम्मत्तस्स अवद्विदअधत्तव्याणं पि सण्णियासो कायव्यों णवरि सम्मत्तस्स जो अवद्विद

विहत्तिओ सो सम्मामिच्छत्तस्स वि णियमा अबद्धिदविदत्तिओ । जो सम्मत्तस्स अवत्तव्ब

विहत्तिओ सो सम्प्रामिच्छत्तस्प सिया श्जगारविहत्तिओ सिया अवत्तव्बविहत्तिओ।

सम्मत्तस्स जो अप्पदरविहत्तिओं सो मिच्छत्तसोलसक णवणोकसायाणं सिया झुज ०

सिया अप्यद० सिया अवष्टिविहत्तिओं। अणंताणुचउक० अवत्तव्वस्स सिया

विहत्तिओ । सम्मामि० णिय० अप्पदरविहत्तिओ । णवरि मिच्छत्तसम्मामि ० अणंताणु ०

सिया अविहत्तिओ वि। एवं सम्मामिच्छन्तस्स वि सण्णियासो कायन्वो । णवरि सम्मामि

जो अप्पदरसंतकम्मिओ सो सम्पत्तस्स सिया संतकम्मिओ । सम्मामिच्छत्तस्स जो

अवत्तव्बविहत्तिओ सो सम्मत्तस्स णियमा अवत्तव्वविहत्तिओ ।

स्थितिमिभक्तिवाला है । इसी प्रकार सम्यक्त्वे अवस्थित और अवक्तन्य पदोंका भी सनिकपं

करना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि जो सम्यक्त्वकी अ वस्थितस्थितिविभक्तिवराला है वह

सम्यग्मिथ्यात्वकी भी नियमसे अ वस्थिततस्थितिविभक्तिवाला ह । तथा जो सम्यक्त्वकी अवक्तव्य

स्थितिविभक्तिबाला है बह सम्यग्मिथ्यात्वकी कदाचित् भुजगार स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित्

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिबाला है ॥ तथा जो सम्यक्त्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है बह

मिथ्यात्य सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी कदाचित् भुजगार स्थि।तविभक्तिवाला है कदाचित्

अल्वतर्रास्थतिविभक्तिबाला है और कदाचित् अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला है । तथा अनन््तालु

बन्धी चतुष्ककी कदाचित् अवक्तव्यस्थितिविभक्तिवाला भी हैं और सम्यम्मिध्यास्वकी नियमसे

अल्पतर स्थितिविभक्तिबाला दहै । किन्तु इतनी विशेषता है कि वह जीव कदाचित् मिथ्यात्व

सम्यम्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्कके सत्कमेसे रहित भी है । इसी प्रकार सम्यग्मिध्यास्वकी

अपेक्षा भी सन्निकपे करना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि जो सम्वस्मिथ्या्वकी अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला है बह कदाचित् सम्यकत्वसत्कर्मंवाला है और कदाबित् उससे रहित है । तथा

जो सम्यग्मिध्यात्वकी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला है वह नियमसे सम्यक्त्वकी अवक्तञ्य स्थिति

विभक्तिवाला है ।

विशेषार्थअब सम्यक्त्वके सुजगार आदि पर्दोको मुर्य मानकर संयोगका विचार करते

हैं । सम्बकस्भक भुजगार अवस्थित और अवक्तव्यपद् सम्यक्त्वको प्राप्त दोनेके प्रम समयमें होते

हैं। किन्तु इस समय मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंका एक अस्पतर पद ही होता है

क्योंकि विशुद्धिके कारण उक्त प्रकृतियों की उत्तरोत्तर अस्प स्थिति हाती जाती है । अतः सिद्ध हुआ

कि सम्यक्त्वके उक्त तीन पदोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नो कषायोंका एक अल्पतर पद्

होता है। अब रही सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति सो इसका बही पद होता है जो सम्यक्त्वका होता है ।

अर्थात् सम्यक्त्वके भुजगारमें सम्यग्मिध्यात्वका भुजगार पद होता है। सम्यक्त्वके अवस्थित पदमें

सम्यग्मिथ्याध्वका अवस्यितपद होता है और सम्वक्त्वके अवक्तव्य पदमे सम्यग्मिथ्यात्वका अवक्तव्य

पद् होता है। किन्तु इसका एक अपवाद है । बात यह है कि सस्यक्त्वकी उद्देलना हो जानेषर भी

सम्यग्मिध्यात्वका सत्त्व वना रहता है । अब यदि ऐसे जीवने सम्यक्त्वको प्राप किया तो उसके

सम्यक्स्वके अवक्तव्य पदमे सम्यग्मिथ्यात्वका भुन्॒गार पद भी बन जाता है । इसलिये सिद्ध हुआ

कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य पदमे सम्यग्मिध्यात्वके अवक्तव्य और भुजगार ये दो पद होते हैं अब

ह तार प्रतौ सम्मत्तसभ्मा मिच्छ एस्स इत्ति पाठः ।

Page 106:

गा० २२ ट्विदिविह्तीए उत्तरपयडिभुजगारसण्णियासो २७

रही सम्यक्त्वके अस्पतर पदको मुख्य मानकर सन्निकर्षके विचार करनेकी बात सो ऐसी अवस्थामें

मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके सब पद् सम्भव हैं कारण स्पष्ट है। किन्तु सम्यग्मि

ध्याप्वका एक अस्पतर पद् ही होता है। तथा जिसने अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना और मिथ्यात्व

तथा सम्यग्मिथ्यास्वकी क्षपणा कर ली है उसके सम्यकत्वका अल्पतरपदके रहते हुए उक्त प्रकृतियोंका

अभाव भी होता है क्योकि सम्यक्त्वकी क्षपणा सबके अन्तमें द्ोती हे इसलिये सम्यकस्वके रहते

हुए भी इनका अभाव द्वो जाता है । इस प्रकार सम्यक्त्वकों मुख्य मानकर सन्निकर्षेका विचार

किया । अब यदि सम्यग्मिथ्यात्वको सुख्य मानकर सन्निकर्षका विचार किया जाता है तो यही

स्थिति प्राप्त होती है। किन्तु कुछ विशेषता है। बात यह है कि सम्यक्त्वकी उद्देलना पहले हो जाती

है और सम्यग्मिथ्यास्वकी उद्देलना उसके बाद होती है । तथा ऐसे समयमें दोनों प्रकृतियोंकी अल्प

तर स्थिति ही होती हे । अतः सम्यग्मिथ्थात्वकी अल्पतर स्थिति के समय सम्यक्त्वकी सत्ता होती

श भीहो वी पि

भी है और नहीं भीहोती है। यदि सत्ता होती है तो अल्पतर स्थिति ही पाई जाती दै । तथा जिसने

सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्बंलना कर ली है उसके सम्यक्त्व की उद्वेलना पहले हो जाती है अतः सम्यग्मि

ध्यात्वकी अवक्तव्य स्थितिमें सम्यक्त्वकी नियमसे अवक्तव्य स्थिति होती हे ।

अब सम्यक्त्वकों मुख्य मानकर उक्त विशेषताओंका ज्ञापक कोक देते हैं

सम्यक्स्व भुज्ञगार अवस्थित वक्तव्य अत्पतर

न छ

सम्यम्मिथ्यात्व ल अवस्थित ड़ नि नहीं है यदि है

ः अबक्तठ तो अल्पतर

ल हि लप नहीं है यदि है तो

मिथ्या अल्पतर अल्पतर अल्पतर सुजगार अपर

ओर अवस्थित

अनन्तालुबन्धी अल्पतर अल्पतर अल्पतर नही यदि है तो

चारों पद

६5 कंताय और अल्पतर अल्पतर अर्पतर अनगार अल्पतर

६ नोकषाय और अवस्थित

जन सम्पम्मिध्यात्वक्षा मुख्य मानकर उक्त विशेषताध्ोका ज्ञापक कोष्ठक रेते है

अब सम्यग्मिश्यात्वकों मुख्य मानकर उक्त विशेषताश्रोंका ज्ञापक कोष्ठक देते है

सम्यग्मिथ्यात्व भुज्ञगार अवस्थित श्रवक्तव्य अल्पतर

॥ ॥

त0्

सम्यक्व मुजञगार अवस्थित अबक्तव्य नहीं है यदि है तो

॥ अल्पतर

है नो

मिथ्यात्व अल्पतर अल्पतर अल्पतर नहीं है यदि है तो

॥ ॥ तीर्नी पद्

07

ति

श्ननन्तालुबन्धी अल्पतर अच्पतर अस्पतर नी है यदि है तो

॥ चारों पद

्डससकसककसससस सस्ा35फ २ फ ज ओ इलइस्क् ६ 5 फ खस्न्क्नक्न्ञ

१२ कषाय और अल्पतर अस्यतर अल्प गनो

६ नोकषाय ति त प्ट तीनो पद

शरण जज

Page 107:

मम जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

१६८ अणंताणुकोध० जो शुजगारविहत्तिथो सो मिच्छत्तपण्णारसक० णव

णोकसायाणं सिया शुजगारविहत्तिओ सिया अप्पदरविदृत्तिओं सिया अब्टिदविहत्तिओ।

समत्तसम्माभिच्छत्ताणि सिया अस्थि सिया णत्थि जदि अत्थि णियमा अप्पदर

विहत्तिओ । एवमवद्धिदस्स वि वत्त्वं । अणंताणुकोध ० अवत्तच्स्स जो विहत्तिओ

सो भिच्छत्तबारसक ०णवणोकसायाणं णियमा अप्पद्रविहत्तिओ तिण्ह॑ कंसायाणं

णियमा अवत्तव्बविहत्तिओ । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं णियमा अप्यदरविहत्तिओ । अणं

ताणु०कोध० जो अप्पद्रविहत्तिओ सो मिच्छत्तपण्णारसक ० णवणोकसायाणं सिया

ज ० अप्पदर० अबद्िदविहत्तिओ । सम्म सम्मामि० सिया विह० सिथा अविह ।

जई विहत्तिओ सिया अूज० अप्पद० सिया अव्टि० सिया अवत्तन्वविहत्तिओ

एवमणंताणुमाणमायालोहाणं । एवं बारसक०णवणोकसायाणं । णवरि एदेसिमप्प०

विह० मिच्छ०अगंताणु अविहत्तिओ वि। अणंताणु० ४ अवत्तच्च मिच्छत्तणेव

णेदव्वं । एवं च खवगोवसमं सेटिविवक्खभकादृण वुत्तं । तच्विवक्खाए पुण अण्णो वि

बिस्ेसो अस्थि सो जाणिय णेदव्वो ।

ए अनन्तानुबन्धी क्राधकी जो सुजगार स्थितिविभक्तिवाला हे वह मिण्यालव यन्द

कषाय ओर नो नोकषायोंकी कदाचित् अुजगारस्थित्तिविभक्तिवाला हे कदाचित् अल्पतर स्थिति

विभक्तिबाला है और कदाचित् अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला है । इसके सम्यक्त्व और सम्य

र्मिथ्यात्व कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो वह उनकी नियमे अल्पतर स्थिति

विभक्तिवाला है। इसी प्रकार अवस्थित स््थितिविभक्तिकी अपेक्षा भी कथन करना चाहिये।

अनस्तालुबन्धी करोधकी जो अवक्तव्यस्थितिविभक्तिवाला है वह मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। अ नन्त।लुबन्धी मान आदि तीन कषायोंकी

नियमसे अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला है। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी नियमसे

अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। जो अनन्तानुबन्धी करोधकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है बह

मिथ्यात्व पन्द्रह कषाय और नौ नोकषायोंकी कदाचित् भुजगार अल्पतर और अवस्थित

स्थितिविभक्तिवाला है। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी कदाचित् स्थितिविभक्तिवाला है

और कदाचित् नहीं है। यदि है तो कदाचित् भुजगार स्थितिविभक्तिवाला कदाचित् अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला कदाचित् अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला और कदाचित् श्रवक्तव्य स्थिति

विभक्तिवाला है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान माया और लोभकी अपेक्षा जानना चाहिए । इसी

प्रकार बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि इनकी

अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवके मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्क की अविभक्ति भी होती

है और इनक अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिका भंग मिथ्यात्वके समान

जानना चाहिये। इस प्रकार क्षषक और उपशमश्रेणीकी विवक्षा न करके यह् कथन किया है ।

उनकी विवक्षा करने पर तो और भी विशेषता है सो जानकर कहना चाहिये।

विशेषा्थहले मिथ्यात्व आदि ग्रकृतियोंको मुख्य मानकर सन्निकर्षका विचार किया

इसी प्रकार अपनी अपनी क्शिषताको जानकर अनन्तालुबन्धी आदि प्रकृतियोंको मुख्य मानकर

तार प्रतौ याणं पि णियमा इति पाठः ।

Page 108:

गा० २२ टिदिविदत्तीए उत्तरपयडिश्रुजगारसण्णियासो ८४

१६६ आदे णेरहय० एवं चेव । णवरि सम्मामि० अप्प० विह ० मिच्छ०

णिय० अस्थि एवं पटमाए । विदियादि जाव सत्तमा त्ति एवं चेव णवरि सम्म०

अप्प मिच्छ०सम्मामि० णिय० अस्थि । बारसक०गवणोक० अप्प मिच्छ

णिय० अत्थि । तिरिक्खि ० पंचि तिरिक्खतियदेवा भवणादि जान सदस्सार त्ति णारय

मंगो विदियुविमंगो

मंगो । णवरि जोणिणिभवण वाण वेतरजोदिसियाणं विदिय मणुत्ततिय

समझिकपेको घटित कर लेना चादिये जो मूलने बतलाया दीदहै। यहाँ केवल उन विशेषताओंका

ज्ञापक कोष्ठक दिया जाता है

अब अनन्तानुवन्धी कषायको मुख्य मानकर सन्निकर्षका कोष्टक देते हैं

भुजगार अवस्थित अवक्तव्य अल्पतर

अनन्तानुबन्धी सुजगार अवस्थित अवक्तव्य अल्पतर

मानआदि अल्पतर और अब भुज० और अल्प आुजञ० और अवण

२कपाय नो नाक सुज० अल्प० सुजन असन स झुज़० अस्प सुन० अल्प० अस्यत सुज० अस्प च्रौर

और मिथ्यास्व और झब० और अवबछ७ भस्वतर् अवस्थित

नहीं दे यदि नींद यदि हे नहीं दे यदि हैं तो।

सम्यक्वसम्यन्सि तो अल्पतर तो अबस्थित अर्त सुज० अस्प० अब०

अब १२ कपाय और ६ नोकषायोंकों मुख्य मानकर सन्निकपेका कोष्ठक देते हैं

कषाय और

६ नोकपाय भुजगा अल्पत्तर अवस्थित

ए है यदि है तो

अनन्तानुबन्धी शुज० अल्प० अच०भुज० अल्प० अव०सुज० अल्प० अवण

अवक्तव्य

मिथ्यात्व उम अल्प अव नी है यदि है तो उन अल्प० अव०

युज० अल्प० अब०

सम्यक्त्व सम्य नहीं हैं यदि हें तो नहीं हैं यदि हैं तो नहीं हैं यदि हैं तो

र्मिथ्यात्व अल्पतर सुज० अल्प० अब० अल्पतर

१६६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है

कि सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवके मिथ्यात्व नियमसे है । इसी प्रकार पहली

प्रथिवीमे जानना चादिए दूसरीसे लेकर सातवीं प्रथिवी तक भी इसी श्रकार जानना चाहिए । किन्तु

इतनी विशेषता है कि सम्यक्तवकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवके मिथ्यात्व और सम्यम्मिथ्यात्व

नियमसे दें। वारह कषाय शौर नो नो कषायोंकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीवके मिथ्यात्व नियमसे है।

तिर्थच पंचेन्द्रिय तियंचन्रिक सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्तार स्वगं तकके देवोंके

श्र

Page 109:

६० जयधवलाखदिदे कसायपाहुडे द्विदिविदत्ती ३

पंचिदियपंचि ० पज ०तसतसपञ्ञ० पंचमण पंचवचि ०कायजोगिओरालिय ०बेउ

व्विय ०तिण्णिवेद ०चत्तारिक ०असंजद ०चक्खु ०अचक्खु ० पंचले ०भवसि सण्णि०

आहारि त्ति सूल्लोधभंगो । णवरि वेउव्वियकिण्हणीलकाउ पटमपुटविभगो । वेउव्वि०

किप्हणील० सम्म०सम्मामि० तिदियपुटविभंगो ।

१७० पंचि०तिरिक्खअपजत्ताणं जोणिणिभंगो । णवरि सम्मत्तसम्मामिच्छ

नारकि्योके समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता है कि तिर्य॑चयोनिनी भवनवासी व्यन्तर और

ज्योतिषी देवोंके इसरी प्रथिवीके समान भंग है। मनुष्यत्रिक पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त त्रस

चस पर्याप्र पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनयोगी काययोगी औदारिक काययोगी वेक्रियिककाय

योगी तीनों वेदवाले क्रोधादि चारों कषायवाले असंयत चज्ञुदशेनवाले अचज्ञदशेनवाले ऋष्णादि

पाँच लेश्यावाले मव्य संज्ञी अर आहारक जीवोंके मूलोघके समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता

है कि बैक्रियिककाययोगी ऋष्णलेश्यावाले नीजलेश्यावाले और कापोत्तलेश्यावाले जीवोंके पहली

पृथिवीके समान भंग है । इसमें भी वैक्रियिककाययो पी ऋष्णलेश्यावाले और नीललेश्यावाले जीबोंके

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग दूसरी प्रथिवीके समान हे ।

विशेषार्थपहले जो ओघ प्ररूपणा बतलाई है बद नारकियोंमें घट जाती है। किन्तु एक

विशेषता है वह यद् कि ओघसे सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर स्थितिमें मिथ्यात्व है और नहीं है यह

बतलाया है वह व्यवस्था यहाँ लागू नहीं द्वोती क्योकि क्षायिकसम्यग्द्शनकी प्राप्तिके समय

ऋच प्ररूपणामें उक्त व्यवस्था घट जाती है पर नारकी जीवोंके क्ञायिकसम्यग्दशेनकी उत्पत्ति

सम्भव नहीं । नरकमें या तो क्षायिकसम्यग्दशन होनेके बाद जीव उत्पन्न हो सकता है या कृत

कृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न हो सकता है। अतः नरकमें सम्यग्मिथ्यात्वकी अस्पतर स्थितिमें

मिथ्यात्व नियमसे है। तथा इसके भुजगार अल्पतर और अवस्थित ये तीनों पद भी सम्भव हैं।

यह श्रो प्ररूपणा पहले नरककी अपेक्षासे बतलाई है क्योकि यह विशेषता वहीं घटित होती है ।

द्वितीयादि नरकों में दो अपवादोंक्रो छोड़कर ओर खव पूर्वोक्त कथन बन जाता है। बात यह है कि

द्वितीय आदि नरकोंमें कतकृत्यवेदकसम्यम्हाष्ट उत्पन्न नहीं होता अतः वहाँ सम्यकत्वकी अल्पत्तर

स्थितिके समय मिथ्यात्व और सम्यम्मिथ्यात्व नियमत हैं । उसमें भी इस अवस्थामें मिथ्यात्वके

मुजगार आदि तीनों पद सम्भव हैं ओर सम्यग्मिध्यात्वका एक अल्पतर पद ही होत्ताहै। तथा

इन्त नरकोंमें क्षायिकसम्यम्टष्टि नहीं उत्पन्न होता । अतः वहाँ बारह कप्राय और नौ नोकषायोंकी

अलूपतर स्थितिके समय मिथ्यात्व नियमसे है। तथा इसके तीनों पद भी सम्भव हैं । आगे मूलमें

सामान्य तियेद्व आदि छुछ ऐसी मार्गणाएँ बतलाई हैं जिनमें सन्निकर्षकी प्ररूपणा सामान्य नार

कियोंके समान घटित होती है। किन्तु तिर्यच्योनिमती आदि कुछ ऐसी मागेणाएँ हैं जिनमें सम्य

ग्टष्टि जीव नहीं उत्पन्न होते हैं । अतः उनमें दुसरे नारकियोंके समान सन्निकष प्राप्त होता है । अतः

इनके कथनको सामान्य नारकी या दूसरे नरकके नारकियोंके समान जानना चाहिये । तथा मनुष्य

त्रिक आदि छुछ ऐसी मी सार्गणाएं हें जिनमें ओघ प्ररूपणा अविकल घटित हो जाती है अतः

उनके कथनको ओघके समान जानना चाहिये । तो भी चार मार्गणाओं में कुछ विशेषता है । बात

यह है कि कापोतलेश्या कृतऋत्यवेदक सम्यस्दष्टिके भी प्राप्त दती है इसलिये इसमें पहली प्रथिबीके

समान कथन बन जाता है और वैक्रियिक्रकाययोग कृष्ण तथा नील लेश्यामें ऋतकृत्यवेदक

सम्यक्त्वकी प्राप्ति नहीं होती इसलिये इनमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका कथन दूसरी

पृथिवीके समान प्राप द्ोता है ।

१७० पंचेन्द्रिय तियेच अपर्याप्क जीबोंके तियश्वयोनिनीके समान भंग है। किन्तु

Page 110:

गा० २२ हिदिविहत्तीए उत्तरपयडिभुजगारसण्णियासों ६१

त्ताणं झुजगार ०अवद्ठि ०अबत्तव्ब ० णत्यि । अप्पदरमेकं चेव अत्थि अणंताणुचउक०

अवत्तव्वं णत्थि । एवं मणुसअपज ०सब्वेइंदियसव्वविगर्लिदियपंचि०अपज ०सब्ब

पंचकाय ०तसअपल्ञ ०ओरालि ० मिस्सवेउव्वियमिस्सकम्मइय ० सदि ०सुद् ०विहंग ०

मिच्छादि०असण्णि०अणाहारि त्ति। णवरि ओरालियमिस्स ०वेउव्वियमिस्स ०कम्म

क्ष्य ०अणाहारीसु विसेसो जाणियव्बो ।

१७१ आणदादि जाव णवमगेवज्ो त्ति मिच्छत्तरस जो अप्पदरविदृत्तिओ सो

बारसकसायणवणोकसायाणं णियमा अप्पद्रविहतत्तिओं अणंताणु०चउक० सिया अत्थि

सिया णत्थि । जदि अत्थि सिया अप्पद्रविद्त्तिओं सिया अवत्तव्वविहत्तिओ । सम्मत्त

सम्मामिच्छत्ताणि सिया अस्थि सिया णस्थि । जदि अत्थि सिया शूजमार० सिया अ

प्पद्र ० सिया अवत्तव्व ० सिया अवद्ठिद विहक्तिओ । एवं बारसकसायणवणोकसायाणं।

मिच्छ०सम्म०सम्मामि ०अणंताणु ० चउक ० सिया अत्थि ।

इतनी विशेषता है कि इनके सम्यक्त्व और सम्यिमिभ्यात्वके मुज्ञगार अवस्थित और अवक्तव्य

ये तीन पद नहीं है । केवल एक अल्पतर पद् दँ । तथा अनन्तानुबन्धी चतुष्कका अवक्तव्य पद्

नहीं है । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्रक सब एकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक सब

पाँचों स्थावरकाय तरस अपर्याप्त ओऔदारिकसिश्रकाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी कार्मेणकाय

योगी मत्यज्ञानी श्रताज्ञानी विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्ञी ओर अनाहारक जीवोंके जानना ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि ओऔदारिऋमिश्रकाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी कारमणकाययोगी

और अनाहारक जीवोंमें विशेष जानना चाहिये।

विशेषार्थं पच्ेन्दियति्च् अपर्याप्रकोंके सम्यग्दशेनकी श्राप्ति नहीं होती इसलिये इनके

सम्यक्त्व और सम्यस्मिथ्यात्वके भुजगार अवस्थित और अवक्तव्य ये तीन पद सम्भव नहीं किन्तु

एक अल्पतर पद ही होता है । और इस्रीलिय इनके अनन्तातुबन्धीका अवक्तव्यपद नहीं होता ।

शेष कथन योनिमती तिय॑त्चोंके समान है यह स्पष्ट ही है । मनुष्य लब्धपर्याप्क आदि कुछ ओर मा्ग

खाएं हैं जिनमें यह अवस्था बन जाती है अतः इनके कथन 7 पन्नन्द्रियतियेत्व लब्ध्यपर्याप्तकों के समान

बतलाया है । किन्तु औदारिकमिश्रक्राययोग वैक्रियिकृसिश्रकाययोग कार्मणकाययोग और अना

दारक अवस्थामें विशेषके जाननेकी सूचना की हे सो इसका इतना ही मतलब है कि इन मागै

णाओंमें ऋतकृत्यवेदकसम्यग्दष्टि जीव भी उत्पन्न होते हैं अतः इनमें पहली प्रथिवीके समान भंग

बन जाता है ।

१७१ आनतसे लेकर नो ग्रेवेयकतकके देबोंमें जो मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिविभक्ति

बाला है वह बारह कषाय और नो नोकषायोंकी नियमसे ४५ स्थितिबिभक्तिवाला है । इसके

अनन्तालुबन्धी चतुष्क कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो उसकी अपेक्षा यह कदाचित्

अल्पतरविभक्तिवाला और कदाचित् अवक्तव्यस्थितिभक्तिबाला होता है। तथा सम्यक्त्व शौर

सम्यग्मिथ्यात्व कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो इनकी अपेक्षा कदाचित् मुजगार

स्थित्तिविभक्तिवाला कदाचित् अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला कदाचित् अवक्तव्य और कदाचित्

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाला द्वोता है । इसी प्रकार बारह कषाय और नो नोकषायोंकी अपेक्षा्में

सनिकष जानना चादिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि इसके मथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व

और अनन्तानुबन्धा चतुष्क कदाचित् दै ।

Page 111:

६२ जयधवलासंहिदे कसायपाहुंडे हिद्विद्दत्ती हे

१७२ सम्मत्तस्स जो अप्यदरड्टिदिविदत्तिओं सो मिच्छत्तबारसकसायणवणो

कसायाणं णियमा अप्पदरड्टिदि विहत्तिओ । णवरि मिच्छततं सिया अस्थि । अणंताणु०

चउक० सिया अत्थि जदि अत्थि सिया अप्पद्रविहत्तिओ सिया अवत्तव्वविहत्तिओ ।

सम्भामिच्छत्तस्स सिया विदत्तियो जदि विहत्तिओ णियमा अप्पद्रविहक्तिमो । सम्मत्त

अजगारस्स जो विहत्तिओ मिच्छत्तसोलसक०णत्रणोऋ० अप्पद्र० णियमा बिहत्तिभ

सम्माभिच्छत्तप्स श्ुुजगारस्स णियमा विहत्तिओ । एयमवत्तव्वस्स वि सण्णियासो कायतव्बो।

णवरि सम्भामिच्छत्तस्स सिया अनगारविहत्तिओ सिया अवत्तव्वविहत्तिओ ।

सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तमंगो । णवरि सम्मत्तं सिया अत्थि । अप्पदरव्दत्तियम्मि त्ति

वत्तव्वं । सम्मामिच्छत्तरस अवत्तव्वविदत्तिओं सम्मत्तस्स णियमा अवत्तव्वविहत्तिओ।

१७३ अरणताणु ०कोध ०अप्प ० जो विहत्तिओःसो मिच्छत्तपण्णारसकसायणवणो

कसायाणमप्पद णियमा विहत्तिओ । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि सिया अत्थि । जदि अस्थि

सिया झ्ुज० विह सिया अप्य बिदत्तिओ सिया अवत्तव्वबिहत्तिओ पिया अबद्विद्विह

चिओ अणंताणु ०कोध ० जो अवत्तव्व विहत्तिओ सो मिच्छत्तवारस ० गबणोक० णियमा

१७२ सम्यक्त्वकी ज्ञो अल्पतरस्थितिविभक्तिवाला है वह मिध्यात्व बारद कपाय और

नौ नोकषायोंकी नियमसे अल्पतरस्थितिविभक्तिवाला है। किन्तु इतनी विशेषता है कि कदाचित्

मिथ्यात्व है। अनन्तानुबन्धी चतुष्कं कदाचित् है। यदि है तो उसकी अपेक्षा यह जीव

कदाचित् अल्पत्तर स्थितिविभक्तिबाला और कदाचित् अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला है।

सम्यम्मिथ्यात्व कदाचित् है यदि है तो उसकी अपेक्षा नियमसे अहल्पतर स्थितिविभक्तिवाला

है। जो सम्यक्त्वकी भुजगार स्थितिविभक्तिबाला है वह मिथ्यात्व सोलह कषाय और

नौ नोकषायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। सम्यम्मिध्यात्वकी नियमसे

आुजगार स्थितिविभक्तिवाला है। इसी प्रकार अवक्तव्यपदका भी सन्निकर्ष करना चाहिये। किन्तु

इतनी विशेषता है कि यह कदाचित् सम्यम्मिथ्यात्वकी जुगार स्थितिविभक्तिवाला है और कदाचित्

अबक्तव्यस्थितिविभक्तिवाला है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग सम्यक्त्वे समान है। किन्तु इतनी

विशेषता दै कि सम्यग्मिथ्यात्वकी अल्पतर विभक्तिवालेके सम्यक्त्व कदाचित् है ऐसा कहना

चाहिये और जो सम्यग्मिथ्यात्वकी अवक्तव्य विभक्तिवाला है वह सम्यक्त्वकी नियमसे

अवक्तव्य विभक्तिवाला है ।

१७३ जो अनन्ताजुबन्धी क्रोधकी अल्पतर स्थितिविभक्तिवाजा है बह मिथ्यात्व पन्द्रह

कृषाय ओर नो नोकषायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। सम्यक्त्व अर सम्यग्मि

थ्यात्व कदाचित् हैं। यदि हैं तो इनकी अपेक्षा यदह जीव कदाचित् मुज्ञगार स्थितिविभक्तिवाला

कदाचित् अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला और कदाचित् अवक्तव्य और कदाचित् अवस्थित स्थिति

विभक्तिवाला है । जो अनन्तानुबन्धी करोधकी अ वक्तञ्य स्थितिविभक्तिबाला जीव है वह मिथ्यात्व

बारद्द कषाय और नो नोकषायोंकी नियमवे अल्पतर ल्थितिविभक्तिवाला दोता है । अनन्ताचुबन्धी

मान आदि तीन कषायोंकी नियमसे अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाला होता है। सम्यक्त्व और सम्य

१ ता प्रतौ सिया अवत्तस्वविहृत्तिओं इति व्ृच्कोछ्ठास्तर्गंतः पाटः ।

Page 112:

गा० २२ छिद्विहत्तीए उत्तरपडिभुजगारसण्णियासो ६३

अप्पद्रविदत्तिओ । तिण्हं कस्रायाणं णियमा अतत्तव्यविहत्ति ओ। सम्मचसम्भामिच्छत्ताणं

णियमा अप्पदरविहृत्तिओ । एवं तिण्हं कसायाणं । एवं सुक ।

१७४ अणुदिसादि जावर सब्र त्ति मिच्छत्तस्स जो अप्यद्रविदत्तिओ सो सेस

सत्तावीसपयडीणं णियमा अप्प०विह० । णवरि अणंवाणु० अविहत्तिओ वि। सम्म

त्रप जो अप्पद्रविहत्तिओ तस्त मिच्छत्तसम्मामि०अणंताणु०चउक० सिया अत्थि।

जदि अत्थि णियमा ते्िमप्पदरविहत्तिओ । बारसक ०णव्रणोकसायाणं णियमा अप्पद्र

विदृत्तिओ । सम्मामि० जो अप्पदरविद्दत्तिओ तर्त मिच्छत्तमंगो एवमणंताणु चउकस्स।

णवरि एकम्मि णिरुद्धे सेसतियं णियमा अस्थि अपचकंखाणकोध० जो अप्पद्रविह

चिओ तस्स मिच्छत्तसम्मत्तसम्भामि ०अणंताणु ०चउक ० सिया अस्थि । जदि अति

णियमा अप्प०विदत्तिओं। एकारसक०णवणोकसायाणं णियमा अप्प विहत्तिओ ।

एवमेकारसक०णवणोकसायाणं । आर ०आहारमिस्स ०आमिणि०खुद ०ओहि०

मणपल्ञ ०संजद ०सामाइयछेदो ०परिहार ०संजदासंजद ०ओहिदं प ०सम्मादिट्ठि वेद व ०

दिद्लीणमणुहिसभंगो । णवरि विसेसो जाणिय बचव्बों ।

१७४ अवगदवेदेसु जो मिच्छत्तस्स अप्पद्रविहत्तिओ सो सम्मत्त ०सम्म्रामि०

बारसक ०णवणोक ० णियमा अप्पद०विहत्तिओं। एवं सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं ।

ग्मिथ्यात्वकी नियमसे अल्पतरस्थितिविभक्तिवाला होता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान आदि

तीन कषायोंकी अपेक्षा कहना चाहिये। इसी प्रकार शुक्लेश्याबाले जीवोंके जानना चाहिए ।

१७४ अलुरिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें जो मिथ्यात्वकी अल्पतरस्थितिविभक्ति

बाला है बह शेव सत्ताईंस प्रकृतियोंकी नियमत्ने अल्पतरस्थितिविभक्तिवाला दोता है । किन्तु इतनी

विशेषता है कि इसके अनन््तानुबन्धीचतुष्कका अभात्र भी होता है। सम्यक्त्वकी जो अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला दै उसके मिथ्या सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धौ चतुष्क कदाचित् है ।

यदि हैं तो उनकी अपेक्षा नियमसे अत्पतर स्थितिविभक्तिवाला है । तथा बारह कषाय और नौ

नोकपायोंकी अपेक्षा नियमसे अल्पतर स्थितिविर्भाक्तवाला है । जो सम्यग्मिथ्यारवकी अल्पतर

स्थितिनिभक्तिवाला है उसके भिथ्यात्वके समान भंग हैं । इसी श्रकार अनन्तालुवन्धीचलुष्ककी

अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि एक प्रकृतिके रहते हुए शेष तीन नियमसे हैं ।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोधकी जो अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है उसके मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यस्मि

श्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्क कदाचित् हैं। यदि हैं तो उनकी अपेक्षा नियमसे अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला हे । तथा ग्यारह कषाय और नो नोकषायोंकी अपेक्षा नियमसे अल्पतरस्थिति

विभक्तिवाला है । इसी प्रकार ग्यारह कषाय और नो नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चादिए। आह्ारक

काययोगी आहारकमिश्रकाययोगी आमिनित्रोधिकज्ञानी श्रतज्ञानी अवधिज्ञानी सनःपयंयज्ञानी

संयत सामायिकसखंयत वेदोपस्थापनासंयत परिद्दारविशुद्धिसंयत संयतासंयत अवधिवशैनी

सम्यग्टष्टि ओर वेदुकसम्यम्दष्टि जीवोंके अचुदिशके समान भंग है। किन्तु इतनी विशेषता है कि

विशेष जानकर कना चाहिये।

१७५ अपग्तवेदियोमिं जो मिथ्याव्की अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है वह सम्यक्स

सम्यस्मिथ्यात्व वार्ह कषाय और नौ नोकपायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है । इसी

Page 113:

६४ जंयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविदत्ती ३

अपचक्खाणकोह० जो अप्प विहत्तिओ तस्स मिच्छत्त ०सम्मत्त ०सम्मामि० सिया

अस्थि । जदि अस्थि णियमा अप्यबिहत्तिओ । एकारसक०णवणोकप्तायाणं णियमा

अप्प०विहत्तिओं। एवमेकारसक०णवणोकषायाणं । णवरि चदुसंनल ० सत्तणोक

सण्णियासविसेसो जाणियव्यो अकसा०सुहुम ०जहाक्खाद् ० अवगद ०भंगो ।

१७६ खश्यसम्मादिद्वीसु जो अपचक्खाणकोघ० अप्प०विहत्तिओ सो एका

रसक०णवणोक० णियमाअप्प०विदत्तिओं । एवमेकारसक०णवणोकसायाणं । णवरि

विसेसो जाणियव्यो। उवसप्र० मिच्छत्तस्स जो अष्पदरविहत्तिओ सो सम्मत्तसस्मामि ०

बारसक ० णवणोक ० णियमा अप्पद०विहत्तिओ। अणंताणु०चउक्क पिया अस्थि । जदि

अत्थि णियमा अप्य विहत्तिओ। एवं सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं अणंताणु कोध० जो अप्य

विहत्तिओ सो सेससत्ताबीसं पयडी णियमा अप्व विहत्तिओ । एवमणंताणुगमाणमाया

लोहाणं । अपचक्खाणकोध० अप्प० जो विहत्तिओ सो मिच्छ० सम्म ०सम्मामि ०

एक्षारसक०णवणोक० अप्प० णियमा विहत्तिओ । अणंताणु०चउक० सिया अत्थि

जदि अत्थि णियमा अप्प विहत्तिओ । एवमेकारसक ०णवणोकषायाणं । एवं

सम्मामि० । सासण० जो मिच्छत्तस्स अप्यद्रविहत्तिओ सो सेससत्तावीसपयडीणं

प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। अप्रत्याख्यानावरण करोधकी जो

अरपतर स्थितिविभक्तिवाला है उसके मिथ्यास्व सम्यक्त्व श्रौर सम्यग्मिथ्यात्व कदाचित् हैं । यद्

हैं तो उनकी अपेक्षा नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला दै। तथा ग्यारह कषाय ओर नौ

नोकषायोंकी अपेक्षा नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। इसी प्रकार ग्यारह कषाय ओर नो

नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि चार खंज्वलन और सात नोकषा

योंका सन्निकर्षविशेष जानना चाहिये। श्रकषायी सूदमसांपरायिकसंयत और यथाख्यातसंयतोंके

अवगतवेदियोंके समान भंग है ।

इ १७६ क्ञायिकसम्यस्टष्टियोंमें जो अप्रत्याख्यानावरण क्रोधौ अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला

है वह ग्यारह कषाय और नौ नोकषायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिबाला है। इसी प्रकार

ग्यारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । परन्तु चार संज्बलन और सात नोकषायोंका

सन्निकर्ष विशेष जानना चाहिये। उपशमसम्यस्टृष्टियोंमें जो मिथ्यात्वक्की अल्पतर स्थितिविभक्ति

बाला है वह सम्यक्स सम्याग्मथ्यात्व वारद कषाय और नौ नोकषायोंकी नियमख्े अल्पतर स्थिति

विभक्तिवाला है। अनन्तानुबन्धीचतुष्क कदाचित् हैं । यदि दें तो उनकी अपेक्षा नियमसे अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला है । इसीप्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। अनन्ता

जुबन्धी करोधकी जो अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है वह शेष सत्ताईस प्रकृतियोंकी नियमले अल्पतर

स्थितिविभक्तिवाला है इसीप्रकार अनन्तालुबन्धी मान माया और लोभकी अपेक्षा जानना चाहिए।

अप्रत्याख्यनावरण क्रोधकी जो अल्पतर स्थितिविमक्िाला दै बह मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मि

ध्यात्व ग्यारह कषाय और नौ नोकषायोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है। अनन्ताबुबन्धी

चतुष्क कदाचित् हैं ओर कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो इनकी अपेक्षा नियमप्ते अल्पतरस्थिति

विभक्तिवाला है । इसीप्रकार ग्यारह कषाय और नो नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इसीप्रकार

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चाहिए । सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंमें जो मिथ्यात्वको अल्पत्र

Page 114:

द्विदिविहत्तीए उत्तरयबिअप्पाबहुआं ६५

णियमा अप्प विहत्तिओ । एवं सेससत्तावीसं पयडीणं पुध पुथ सण्णियासो कायव्वो ।

अभव ० छव्वीसं षय० असण्णि०मंगो

एवं सण्णियासाणुगमो समत्तो

अपपाबहुआं ।

१७७ सुगममेद् ।

भिच्छुत्तस्स सव्वत्थोवा सुजगारदिदिविदचिया ।

१७८ कदो १ अद्घासंकिलेसक्खएण दुसमयसंचिदत्तादो । एइंदिएहिंतो विगल

समगलिंदिएसुप्पजिय अ्जगारं इणमाणजीवा अत्थि कि तु ते अप्पहाणा जगपदरस्त

असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

अवदिदटहिदिविहत्तिया असंखेज्ञगुणा ।

१७९ को गुणगारो १ अंतेषहुततं संखेज्जावलियमेतत । इदो एगद्ठिदिबंधकालस्स

उकस्सेण अंतोमुहुत्तपमाणचादो । एगद्डिदिबंघस्स उकस्सकारो बहुओ ण संमवदि त्ति

संखेज्जसमयमेत्तो ट्विदिवंधकालो घेप्पदि तति ण वोत्तु जुत्तं सूलग्गसमासं कादृण अद्विय

ट्विदिबंधमज्किमद्धाए गहिदाए वि संखेज्जावलियमेचरस अवद्िदद्िदिषंधकारस्सुबरंमादो।

एत्य अबड्धिदजीवपमाणाणयणं चुचदे तं जहाएकम्मि समए जदि अणंतो जीवरासी

स्थितिविभक्तिबाला है वद शेष सत्ताईस प्रकृतियोंकी नियमसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाला है ।

इसीप्रकार शोष सत्ताईस प्रकृतियोंकी अपेक्षा अलग अलग सन्निकर्ष करना चाहिये । अभव्योंमें

छब्बीस प्रकृतियोंका संग असंज्ञियोंके समान है ।

इसप्रकार सन्निकर्षानुगस समाप्त हुआ ।

अब अल्पबरहुत्वासुगमका अधिकार है ।

१७७ यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यास्वकी जगार स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े है ।

१७८ क्योकि अद्भाक्षय और संक््लेशक्षयके केवल दो समयमे जितने जीवोंका सज्य

होता है उतने जीव ही मिथ्यात्वकी अुज्ञगार स्थितिविभक्तिवाले यहाँपर ब्रहण किये है । यद्यपि

एकेन्द्रियोमेसे विकलेन्द्रिय ओर सझलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर भुजगार स्थितिविभक्तिको करनेवाले

जीव होते हैं परन्तु वे यहाँवर अप्रधान हैं क्योंकि वे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

१७६ गुणकारका प्रमाण क्या है ९ संख्यात आवलि प्रमाण अन्तमुंहते गुणकारका प्रमाण

है क्योंकि एक स्थितिबन्धका उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू्ते है। यदि का जाय करि एक स्थितिबन्धका

उत्कृष्ट काल बहुत संभव नहीं है अतः संख्यात समयमात्र स्थितिबन्धकाल लेना चाहिये सो

भी कहना युक्त नहीं है क्योंकि स्थितिबन्धके मूल और अग्रकालक्ों जोड़कर और आधा करके

स्थितिबन्धके मध्यमकालके ग्रहण करने पर भी अवस्थित स्थितिबन्धकाल संख्यात आवबलिप्रमाण

प्राप्त होता है । अब यहाँ अवस्थित जीबोंका प्रमाण लानेकी विधि कहते हैं । वह इस प्रकार है

ता ग्रतौ जद्धास्ंकिलेसक्डय इति पाठः । २ ता० आ० प्रतयो बहुआणं इति पाटः ।

Page 115:

६६ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे ह्विदिविद्दत्ती ३

एगसमयसंचिदश्चजगारमेत्तों लब्भदि तो अबद्टिदकालम्मि केत्तियं लमामों त्ति पमाणे

णिच्छागुणिदफले ओवड्डिदे अब्टिद्विहत्तियरासी होदि तेणेसो ऋुजगारविह॒त्तिएदिंतो

असंखे गुणों ।

अप्पदरहिदिविहत्तिया संखेज्नगाणा ।

१८० इवो १ अवब्ठिदष्टिदिबंधकालादो अप्पदरष्टिदिबंधकालस्स संखेज्जगुणचादो।

कि कारणं १ एमट्डिदीए पाओग्गट्विदिबंधज्कवसाणइणेसु चेव अव्टिदष्ठिदविहत्तिया

परिणमंति अण्णहा ट्विदिबंधस्स अवद्ठिदत्तविरोहादों । अप्यद्रविहत्तिया पण तत्तो हेद्धिम

सब्वट्टिदीणं ट्विदिबंधज्ञवसाणइणेसु परिणमंत्रि तेण ते तत्तो संखेज्जगुणा । जदि अब

द्िदविहत्तियाणमेगह्धिदीए ट्विदिबंधज्ञवसाणइाणाणि चेव विसओ तो हेट्ठिमअसंखेज्ज

हिदीणं ट्विदिबंधज्ञपसाणडाणेस परिणमंता अप्पदरबिद्ृतिया तत्तो असंखेज्जगुणा किण्ण

होंति १ ण संखेज्जवार्मप्पदरं कादुण सइमवद्डिदट्ठिदिबंधकरणादों । संते संमवे असं

खेज्जवारमप्पद्रद्टिदिसंतकम्म॑ किण्ण कुणदि १ साहावियादो । ण च सदावो पडिबोयणा

जोऽणो अञ्ववत्थावत्तीदो । जेचिओ एगट्टिदिबंधकालो सब्बुकस्सो अत्थि तत्तो

एक समयमे यदि एक समय द्वारा संचित हुईं जगार स्थितिबन्धरूप अनन्त जीवराशि प्राप्न होती

है तो अवस्थित कालमें कितनी प्राप्त होगी इसप्रकार इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके और

उसमें प्रमाणराशिक्रा भाग देनेपर अवस्थित स्थितिविभक्तिवाली जीवराशि प्राप्त दोती है। अतः

यह राशि भुजगार स्थितिविभक्तिवाली ज्ञीवराशिसे असंख्यात्तगुणी है यह सिद्ध हुआ।

अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

१८० क्योंकि अबस्थितस्थितिबन्धके कालसे अस्पतर स्थितिबन्धका काल संख्यातगुणा

है । इसका क्या कारण है । आगे इसे बताते हैंएक स्थितिके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसान स्थानोंमें

ही अवस्थित स्थितिविभक्तिबाले जीन परिणमन करते रहते हैं अन्यथा स्थितिबन्धके अवस्थित

होनेमें विरोध आता है । परन्तु अल्पत्तर स्थितिविभक्तिवाले जीव उससे नीचेकी सभी स्थितियोंके

योग्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें परिणमन करते रहते हैं अतः अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीव अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंसे संख्यातगुणे होते हैं ।

शंकायदि अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव एक स्थितिके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसान

स्थानमें दी रहते हैं तो नीचेकी असंख्यात स्थितियोंके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसान स्थानों परिणमन

करनेवाले अस्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंसे असंख्यातगुणे

क्यों नहीं द्वोते हैं

समाधाननहीं क्योंकि जीव संख्यातवार अल्पतर बन्धको करके एक बार अवस्थित

स्थितिबन्धको करता है अतः अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबोंसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले

जीव असंख्यातगुणे नहीं होते हैं ।

शंका संभव होते हुए जीब असंख्यातबार अल्पतर स्थितिसत्कमेक्रो क्यों नहीं करता हे १

समाधानऐेसा स्वभाव है । और स्वभाव दूखरेके द्वा प्रतिबोध करनेके योग्य नहीं दोता

अन्यथा अव्यवस्था प्राप्त होनी है । ह

Page 116:

गा० २२ हिदिविहन्तीए उत्तरयिअप्पाबहुअं ६७

संखेऽजगुणं कारं ट्विदिसंतादो हेड्ठा श्रुजगारअप्पदरअबद्डिद्सरूवेण ह्विदीओ बंधमाणो

अधड्टिदिगलणाए संतकम्मस्स अप्पदर॑ कादृण पुणो तस्स अवह्िदं करेदि त्ति भणिदं

होदि । काले संखेज्जगुणे संते जीवा वि संखेज्जगुणा चेव अवद्विदअप्पदरभाष॑ समयं

पडि पडिवज्जमाणजीवाणं समाणत्तादो । अप्पदरावद्धिदाणि सव्वकालमत्थि त्ति अणंत

कालसंचओ किण्ण चेष्यदे १ ण अप्पदरमवद्टिदं च पडिवण्योगजीवो जाव अणप्पिद्पदं

ण गच्छदि तावदियमेत्तकालम्मि चेव संचयस्सुबरंमादो । ण च एगजीवो उकस्सेण

अतोहं मोत्ृण अणंतकारमप्यद्रमबद्धिदं वा इुणमाणो अस्थि एगद्टिदिपरिणामाण

मार्णतियप्पसंगादी । एगद्ठिदीए ट्विद्बंधज्मवसाणडाणमेचो अवद्धिद ्दिवंधकालो किण्ण

होदि १ ण एगस्स जीवस्स एगट्डिदीए ट्विदिबंधज्झवसाणड्ाणेस परिणमणक्रारो जहण्णेण

एगसमयमेत्तो उकस्पेण अतोघुदरत्तमेत्तो चेवे ति परमगुरूवएसादो ।

एवं वारसकसायएवणोकसायाणं ।

8 १८१ जहा मिच्छत्तस्स अप्पाबहुभं परूबिदं तहा बारसकसायणवणोकसायाणं

परूबेदव्वं विसेसाभावादो ।

सम्मत्तखम्मामिच्ुत्ताणं सव्वत्थोवा अवद्िदद्टिविविदत्तिया ।

पक स्थितिका जितना सर्वोत्कृष्ट बन्धकाल दै उससे संख्यातगुणे कालतक स्थितिसत्त्वसे नीचे

सुज्ञगार अल्पतर और अवस्थितरूपसे स्थितियोंका वन्ध करता हुआ यद जीव अधूःस्थिति

गलनाके द्वारा सत्कमंको अल्पतर करके पुनः उसे अवस्थित करता है यद् उक्त कथनका तालये दै ।

जब कि काल संख्यातगुणा है तो जीव भी संख्यातगुणे ही होते हैं क्योकि अवस्थित और अल्पतर

मावको प्रत्येक समयमें प्राप्त होनेवाले जीव समान है ।

शंकाअल्पतर और अवस्थितविभक्तियाँ सवदा पाई जाती हैं अतः यहाँ अनन्तकालमें

दोनेबाला संचय क्यों नहीं लिया जाता है ९

समाधाननहीं क्योंकि अल्पतर और अवस्थितपदको प्राप्त हुआ एक जीव जबतक अवि

यक्तित पदको नहीं प्राप्त होता है उतने कालमें होनेब्ाले संचयका हीं यहाँ म्ण किया है । और एक

जीव उत्कृष्टरूपले अन्तमुंहूर्त कालको छोड़कर अनन्तकाल तक अल्पतर और अवस्थितपद्को करता

हुआ नहीं पाया जाता अन्यथा एक स्थितिके परिणाम अनन्त दो जायंगे ।

शंकाएक स्थितिके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका जितना प्रमाण है अवस्थित

स्थितिबन्धकाल उतना क्यों नहीं दोता है ९

समाधान नहीं क्योंकि एक जीवक एक स्थितिके योग्य स्थितिबन्धाध्यबसायस्थानोंमें

परिगम करनेका जघन्यकाल एक समयमात्र और उत्कृष्रकाल अन्तुहूतंप्रमाण है ऐसा परमगुरुका

उपदेश है।

इसी प्रकार बारह कषाय और नौ नोकषाय का अल्पबहुत्व जानना चादिए।

१८१ जिस प्रकार मिथ्यात्वका अल्पबहुत्व कदा दै उसी प्रकार बारह कषाय और नौ

नोकषायोंका कहना चाहिये क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं।

१३

Page 117:

ध्न जयघवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

१८२ छदो समउत्तरमिच्छन्तद्धिदिसंतकम्मेणेव सम्मत्तं पडिवञ्जमाणाणमवद्धिद

द्िदिविहत्तिसंभवादो । सम्मत्तह्टिदिसंतादो समयुत्तरमिच्छन्तद्धिदिसंतकम्मेण सम्मत्तं पडि

वज्जमाण। सुद्दु थोवा । तं इदो णब्बदे १ सम्मतस्मामिच्छन्तञुजगारअवत्तव्बह्िदि

दिदत्तियाणश्ुकस्संतरं चउबीस अह्दोरत्ते सादिरेगे त्ति परूविय तेसिमवद्धियरष अंगुलस्स

असंखेज्जदिभागमेत्तंतरपरूवणादो ।

भ्रुजगारहिदिविहत्तिया असंखेञ्जनगुणएा ।

१८३ को गुणगारो १ आवलियाए असंखे०भागो । इदो सम्मत्तेगद्धिदीए णिरु

द्वाए तत्तो समयुत्तरमिच्छत्तट्टिदिसंतकम्मेणेव सम्मत्त पडिवञ्जमाणाणमवद्िदट्िदि

विहत्ती होदि । दुसमयुत्तरादिसेसासेसह्िदिवियप्पेहि सम्पत्तं पडिवज्जमाणाणं ञुजगारो

चैव होदि । एवं सव्वसम्मत्तड्डितीओ अस्सिदण अजगारअबह्धिदाणं विसयपरूवणाए

कीरमाणाए श्ुजगारविसओ वेव बहुओ । किं च मिच्छत्तधुब्विदीदो हा दुसययूणादि

सम्मत्तट्िदिषतकम्मेण सम्मत्त पडिवञ्जमाणाणं भुजमार विदत्ती चेव । तेग अबब्विद

विद्दत्तिश्हिंतो श्ुजगारविद्दत्तिया असंखेज्जगुणा।

वत्तव्वदिदिविहत्तिया असतंखेज्नशणणा । ।

१८४ इदो १ सम्मत्तसम्मामिच्छतताणं संतकम्मेदि सद सम्मत्तं पडिवजमाण

इ एतस् क्योंकि मिथ्यात्वकी एक समय अधिक स्थितिसत्कमके साथ सम्यर्दर्शनको प्राप्त

होनेबाले जीवोंके ही सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्ति संभव है ।

शंकासम्यक्त्वकी स्थितिसस््वत्े सिथ्यात्वकी एक समय अधिक स्थितिसत्करमके साथ

सम्यग्दशनको प्राप्त होनेवाले जीव सबसे थोड़े हैँ यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानसम्यक्त्त ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी झुजगार और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले

जीबोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक चौबीख दिनरात है यह कहकर उन्हीं दोनों प्रकृतियोंकी भवस्थिव

स्थितिविभक्तिका अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है इससे जाना जाता है कि

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं ।

झुजगार स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । ॥

१८३ गुणकार क्या है १ अगवलिका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है क्योंकि सम्यक्त्वकी

एक स्थितिके रहते हए उषसे मिथ्यात्वकी एक समय अधिक स्थितिसत्कर्मके साथ ही सम्यग्दशनको

प्राप्त होनेबाले जीवों के अवस्थित स्थितिविभक्ति द्वोती है तथा दो समय अधिक आदि शोष सम्पूणे

स्थितिविकस्पोके साथ सम्यर्दशेनको प्राप्त दोनेवाले जीवोंके जगार स्थितिविभक्ति ही होती है।

इस प्रकार सम्यक्त्वकी सब स्थितियोंके आश्रयसे मुजगार ओर अवस्थित स्थितिविभक्तियोंके

विषयकी प्ररूपणा करने पर भुजगारका विषय ही बहुत प्राप्न होता है । दुसरे मिथ्यात्वकी धुबस्थितिके

नीचे सम्यक्स्वकी दो समय कम आदि स्थितिसत्कमेके साथ सम्यग्दशनको प्राप्त द्वोनेवाले जीवोंके

भुजगांर स्थितिविभक्ति ही दोतौ है । अतः अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीवसे मु जगार स्थिति

विभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं।

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

१८४ क्योंकि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व सत्कमंके साथ सम्यब्दर्शनको श्राप्त द्ोनेवाले

Page 118:

गा० २२ हिदिविहत्तीए उत्तेरपयडि अ्रप्पाबहुअं ६६

मिच्छादिद्वीहिंतो णिस्सतम्मियमिच्छादिद्धीणं सम्मत्तं पडिषजमाणाणमसंखेजगुणत्तादो ।

सम्मत्तसम्भामिच्छन्ताणं ट्विदिसंतकम्मे अणुच्वेिदे किम बहुआ जीवा सम्मतं

ण पडिवज्ञंति १ ण उन्बेछणकिरियाए पारद्धाए तं किरियं छंडिय विसोहिं गंतूण

अधापमत्तादिकिरियंतराणं गच्छमाणजीवाणं बहुआणमसंभवादो । जेणेकिस्से किरियाए

खल्लीविछसंजोगेण किरियंतरं होदि तेण सम्मत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मेण सम्मत्त

पडिवज़माणेहिंतो उव्वेद्धिदसम्मत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मिया सम्मत्त पडिवज्ञमाणा

असंखेजगुणा होंति । श्रुजगारं कुणमाणरासी पलिदोवमस्स असंखेजदिभागमेत्तकाल

संचिदो अवत्तव्वं कुणमाणरासी पुण अद्भपोग्गलपरियट्डसंचिदो तेण श्रुजगारविद्दत्तिणहिंतो

अवत्तव्वषिहृत्तिया असंखेज्ञगुणा त्ति वा वत्तव्वं । सम्मत्तसम्भामिच्छ्तसंतपच्छायद्

जीवा उवडपोग्गरुपरियडसंचिदा अणंता अत्थि ्ति इदो णंव्बदे महाबंधम्मि

बुत्तपयडिबंधप्पाबहुआदो । तं जद्दाछप्हं कम्माणं सव्वस्थोवा धुवबंधया । सादियबंधया

अणंतगुणा। अबंधया अणंतगुणा । अणादियबंधया अणंतगुणा । अद्भुवबंधया विसेसाहिया

त्ति एदेण सुत्तेण उवसंतचराण मिच्छादिद्लीगमणंतगरुणतं णव्बदे । सम्मत्तचराणं पुण

मिथ्यादृष्टि जीवसे सम्यग्द्शनको प्राप्त होनेवाले सम्यक्स और सम्यम्मिथ्यात्व कर्मत रहित मिथ्या

दृष्टि जीव असंख्यातगुरो हें ।

शंकासम्यक्त्व और साम्यम्मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मेंकी उद्र लना किये बिना बहुत जीव

सम्यक्त्वको क्यों नहीं प्राप्त होते हैं ९

समाधान नदी क्योकि उदः लनारूप क्रियाके भारम्म हो जाने पर उस क्रियाको छोड़कर

और विशुद्धिको प्राप्त दोकर अधश्परवृत्तादि रूप दूसरी क्रियाओंको प्राप्त दोनेवाले बहुत जीबोंका होना

असंभव है । चू कि जैसे खस्वाट पुरुषके शिरपर बेलका गिरना कदाचित् सम्भव है उसी ररह एक क्रिया

के रहते हण खरी क्रिया कचित् ही होती है अतः सम्यक्त्थ और सम्यम्मिथ्यात्व सत्कर्मके साथ

सम्यग्द्शनको श्राप्त होनेबाले जीवोंबे सम्यक्त्व श्र सम्यम्मिथ्यात्वसत्कमंकी उद्धेलना

कर खम्यक्त्वको श्राप्त होनेत्राले जीव असंख्यातगुणे होते हैं। अथवा सुजगार स्थिति

विभक्तिको करनेवाली जीवराशिका संचयकाल पस्योपमङे असंख्यातवे भागप्रमाण है परन्तु अब

कतव्य स्थितिविभक्तिको करनेवाली जीवराशिकरा संचय काल अधंपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है इसलिये

जगार स्थितिविभक्तिबाले जीवोंसे अवक्तन्यस्थितिनिभक्तिबाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं ऐसा

कहना चाहिये ।

शंकाघम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्व की उद्रलना करके जो जीव अर्धपुद्गल परिवतेन

कालके भीतर संचित होते हैं वे अनन्त हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानमहाबन्धमें कहे गये प्रकृतिबन्ध सम्बन्धी अल्पवहुत्वसे जाना जाता है। जो इस

प्रकार दैचद क्कि भुवबन्धवाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे सादिबन्धवाले जीव अनन्तगुखे हैं ।

इनसे अबन्धक जीव अनन्तगुणे हैं इनठे अ नादिबन्धवाले जीव अनन्तगुणे हैं । इनसे अभवबन्धवाले

जीव विशेष अधिक हैं । इस सूत्रसे जिन्होंने पहले उपशमसम्यक्त्व प्राप्त किया ऐसे मिथ्यादृष्ट

ता० प्रतौ खछबविछ इति पाठः ॥

Page 119:

१०० जंयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

मिच्छादिद्वीणं धुवबंधएहिंतो अणंतगुणत्तं जुत्तीदो णव्वदे । त॑ जहावासपुधत्तमंतरिय

जदि संखेज़ा उवसंतचरा मिच्छत्त पडिवज्जमाणा लब्भंति तो उवडूपोग्गलपरियड्न्भ॑तरे

केसिए लभामो त्ति पमाणेणिच्छागुणिदफले ओबद्िदे सादियबंधयाणं रासी होदि।

संखेजावलियाओ अंतरिय जदि पलिदो० असंखे०भाममेत्ता सम्मादिद्टिणो मिच्छत्तं

पडिवज्माणा रूब्भंति तो उवड्डपोग्गलपरियट्ठम्मि कि लभामों त्ति पमाणेणिच्छागुणिद

फले ओवडिदे सम्मत्तचरमिच्छादिद्विरासी होदि । एसो पुच्वह्छरासीदो असंखेजगुणो

असंखेजगुणफलत्तादो एसो च राप्ती सव्यकालमबद्धिदों चदुगदिणिगोदरासिं व

आयाशुसारिवयत्तादो । णासिद्धो दितो अद्दु्तरछस्सदजीवेस चहुगदिणिगोदेहिंतो

णिव्याणं गदेसु णिच्रणिगोदेहिंती चदुगदिणिगोदेसु एत्तिया चेच जीवा अद्धसमयादिय

छम्मासंतरेण पविस्संति त्ति परमगुरूबदेसादो । जदि ण पविस्संति तो को दोसो ९

चदुगदिणिगोदाणमायवजियाणं सब्बयाणं खो होज असंखेजरोगमेत्तपोग्गकपरियड

पमाणत्तादो । ते तत्तियमेत्ता त्ति कुदो णब्बदे १ जुत्तीदो । तं जहाएकम्हि समए

जदि असंखेजलोगमेत्ता पत्तयसरीरा चदुगदिणिगोदसरूवेण पविसमाणा लब्भंति तो

जीव अनन्तगुभे देते हैं यद जाना जाता है। परन्तु जिन््दोंने पहले सम्यक्त्वको प्राप्न किया

ऐसे मिथ्यादृष्टि जीव ध्र् बबन्धक जीवोँसे अनन्तगुणे हैं यद् बात युक्तिसे जानी जाती है। जो

युक्ति इस प्रकार हैवर्षप्रथक्त्वके अन्तरालसे यदि संख्यात उपशान्तचर जीव मिथ्यालको प्राप्त

हते हुए पाये जाते हैं तो उपाधैषुद्गलपरिवर्तन कालक भीतर कितने जीब प्राप्त होते हैं इस प्रकार

इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर सादिबन्धक

जीवराशि प्राप्त होती है। तथा संख्यात आवलियोंके अन्तरालसे यदि पल्योपमके असंख्यातर्बें

भागप्रमाण सम्यम्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होते हुए पाये जाते हैं तो उपार्धपुद्गलपरिवर्त॑न कालके

भौतर कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध श्वे उसमें

प्रमाणराशिका भाग देनेपर सम्यक्त्वचर मिथ्यादृष्टि जीवराशि प्राप्न होती है । यह जीवराशि पूर्वोक्त

ज्ञीवराशिसे असंख्यातगुणी है क्यो कि इसका गुणनफल पूर्वोक्तराशिसे असंख्यातगुणा है । यह

जीवराशि सर्वदा अवस्थित है क्योंकि जिस प्रकार चतुर्मति निगोद् जी वराशिका आयके अनुसार

व्यय होता है उसी प्रकार इस राशिक्रा भी आयके अनुसार ही व्यय होता ह । यदि कहा जाय कि

दृष्टान्त असिद्ध है सो भी बात नहीं है क्योंकि चतुर्गंतिनिगोदसे निकलकर छहसो आठ जीवोके

मोक्षको चले जानेपर नित्यनिगोदसे उतने दी जीव छुद्द मद्दीना और आठ समयके अन्तरसे चतुगेति

निगोदमें प्रवेश करते हैं ऐसा प्म गुरुका उपदेश है।

शंकायदि नित्यनिगोदसे उत्तने जीव चतुर्गतिनिगोदमें प्रवेश न करें तो क्या दोष है ९

समाधानयदि उतने जीव प्रवेश न करें तो अायरहित और व्ययसद्दित द्ोनेके कारण

चतुर्गेतिनिगोद जीबोंका क्षय हो जायगा क्योंकि असंख्यात लोक प्रमाण पुदूगलपरिवततेनके जितने

समय हैं उतना चतुगेति निगोद जीबोंका प्रमाण है ।

शंकाचतुगंतिनिगोद जीव इतने हैं यद किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानयुक्िसे जाना जाता है। बह इस प्रकार दैएक समयमे यदि असंख्यात लोक

प्रमाण प्रश्येकशरीर जीव चतुर्गतिनिगोदरूपसे प्रवेश करते हुए पाये जाते हैं तो ढाई पुदूगल

Page 120:

गा० २२ दिद्विहत्तीए उत्तरपयडिअप्पाबहुआं १०१

अट्डाइज़पोग्गलपरियटेसु किं लभामो त्ति पमाणेणोवद्धिय फलेण गुणिदे असंखेजलोम

मेत्तपोग्गलपरियद्डपमाणा चदुगदिणिगोदजीवा होंति णएदे च अदीदकालादो अणंतगुण

हीणा तत्थाणंतपोगगलपरिषद्ूवलंभादो ।

१८५ तं जहाअदीदकाले एयजीचस्स सव्वत्थोचा भावपरियङ्वारा । भवपरि

यद्कणवारा अणंतगुणा । कालपरियइवारा अगंतगुणा । खेत्तपरियड्वारा अणंतगुणा पोग्गल

परियइवारा अणंतगुणा । एदप्स साहणइमप्पाबहुगं वुचदे । तं जहासब्वत्थोतो

पोगगरपरियड्कारो । खेत्तपरियड्कारो अणंतमुणो । काङपरियडकारो अणंतगुणो । मव

परियडङालो अर्ण॑तगुणो। भावपरियड्धकालो अणंतयुणो चि । तदो सिद्धो दिडंतो । एदेहि

अणंतसम्मत्तचरमिच्छादिद्ीहिंतो परिदोवमस्स असंखेजदिभागमेत्ता श्ुजमारं इणमाणे

हिंतो असंखेजगुणा अवत्तव्वं करेति ति सिद्धं ।

अप्पदरष्धिविविहत्तिया असंखेज्यणा ।

१८६ को गुणगारो १ आवलियाएण असंखेजदिभागों केण कारणेण १

उच्येह्ठमाणमिच्छादिङ्कोहि सह सयरबेदगुवस्मसासणसम्मामिच्छादिद्धीणं गहणादो ।

अणंतोबडूपोग्गरुपरियइसंचिदरासीदो अवत्तव्वं इणमाणा अप्यदरबिहत्तिएर्हितो

परिवर्तनोंमे कितने प्राप्त दोंगे इख प्रकार इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे

उसमे फलराशिसे गुणित करने पर असंख्यात लोक पुद्गल परिवतेनप्रमाण चतुर्गतिनिगोद जीव

प्राप्त होते है । ये जीव अतीत कालसे अनन्तगुशे दीन हैं क्योंकि अतीत कालमें अनन्त पुद्गल

परिवतेन प्राप्त होते दें ।

१८५ खुलासा इस प्रकार हैअतीत कालमें एक जीवके भाव परिवतैनवार सबसे

थोड़े हुए हैं। इनसे भवपरिवतेनवार अनन्तगुणे हुए हैं। इनसे काल परिवर्तनवार अनन्तगुणे हुए

हैं। इनसे चेत्रपरिवतंनवार अनन्तगुणे हुए हैं। इनसे पुद्गल परिवतेनवार अनन्तगुणे हुए हैं । अब

इसकी सिद्धिके लिये अल्पवहुत्वको कहते हैं। जो इस प्रकार है५द्गलपरिबतेनका काल सबसे

थोड़ा है। इससे क्षेत्र परिवर्तेनका काल अनन्तगुणा है । इससे काल परिवतेनका काल अनन्तगुणा

है। इससे भव परिवतेनका काल अनन्तगुणा हे। इससे भावपरिवर्तनङा काल श्ननन्तगुणा है

इसलिये दृष्टान्तकी सिद्धि होती है । इस सम्यक्त्वचर अनन्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ल्योपमके

असंख्यातवें भागप्रमाण जीव और अुजगार स्थिति विभक्तिक्रो करनेवाले जीबोंसे असंख्यातगुणे जीव

अवक्तव्यस्थितिविभक्तिको करते हैं यह सिद्ध हुआ ।

अरुपतरस्थितिवि भक्तिः करनेवाले जीवं अंसंख्यातग॒णे हैं ।

१८६ झंकाशुणकारका प्रमाण क्या है ९

समाधानअावलीका असंख्यातवां भाग गुणकार का प्रमाण है ।

शंंकाइसका क्या कारण दै १

समाधानक्योंकि यहाँ पर उद्देलना करनेवाले मिथ्यादष्टि जीबोंके साथ सभी वेदक

अम्यग्दष्ट डपशमसम्यग्दष्टि सासादनसम्यग्दष्टि और सम्यम्मिथ्यादृष्टि जीबोंका रहण किया है ।

Page 121:

१०२ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

असंखेजञयुणा अणंतगुणा वा किण्ण होंति ण आयाणुसारिवयणियमादो ।

अणंताणुबंधीणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वद्िदिविदृक्तिया ।

१८७ इदो पलिदोवमस्स असंखेजमागपमाणत्तादो ।

ुजगोरद्िदिविहत्तिया अणंतयुप्णा ।

१८८ सन्वजीवरासीए असंखेजदि मागमेचजीबाणं सजगारं इणमाणाण

सुवलंभादो ।

अवदिददिदिविदत्तिया असंखेज्जग॒ुणा ।

१८६ इदो १ खुजगारहिदिविहत्तियसंचयणिमित्तदोसमएहिंतो अबड्धिदह्िदिविदततिः

जीबसंचयणिभित्ततोषठहु्तफालस्स असंखेजगुणत्तादो ।

अप्पदरदिदिविदत्तिया संखेञ्जण्णा । प

१६० इदो ९ अवद्टिदह्िदिवंधकालं पेक्खिदूण अप्दरह्िदिसंतकारस्स संखेजगुण

तादो । एवं चुण्णिसुत्तत्थं परूविय मंदमेहाविजणाणुग्गद्ृषचारणाणुगमं कस्सामो ।

१६१ अप्पाबहुअं दुविहंओघेण आदेसेण य । तत्थ ओघेण मिच्छत्तबारसक०

णवणोक० सच्वत्थोवा खुज० । अवदड्धि असंखेगुणा । अप्प० संखेगुणा । अणंताणु

जका माघ पुद्गलपरिवतेनके दारा संचित हुई अनन्त राशिमेंसे अवक्तव्य स्थिति

विभक्तिको करनेवाले जीव अल्पतर छ्थितिविभक्तिवाले बीबोंसे असंख्यातगुणे या अनन्तगुणे

क्यों नहीं होते हैं ९

समाधान नदी क्योकि आयके अनुसार व्ययका नियम हे ।

अनन्ताुबन्धीकी अवक्तव्यस्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े दै ।

१८७ क्योंकि ये पल्योपमके अखंख्यातवें भागप्रमाण दै

जगार स्थितिविभक्तिवाले जीव अनन्तगुणे ई ।

१८८ क्योंकि सब जीव राशिक्रे असंख्यातवें भागप्रमाण जीव सुजगार स्थितिविभक्तिको

करते हुए पाये जते हैं ।

अवस्थितस्थितिभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

१८६ क्योकि भुज़गार स्थितिविभक्तिवाले जीबोंके संचयका निमित्त दो समय है और

अवस्थित स्थितिचिभक्तिवाछे जीबोंके संचयका निमित्त अन्तमुंहूर्ते काल है जो कि दो समयते

असंख्यातगुणा है अतः भुजगार स्थितिविभक्तिवाले जीवोंसे अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव

असंख्यातगुणो हैं।

अद्पतरस्थितिबिभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

१६० क्योंकि अवस्थित स्थितिवन्धके कालको देखते हुए अस्पतर स्थितिसस्वका काल

उससे संख्यातगुणा है । इस प्रकार चूर्णिसूत्रोंके अथेका कथन करके अब मन्दवुद्धि ज्ञनोके अनुप्दके

लिये उच्चारणाका अनुगम करते दः ॥

१९१ ओघ और आदेशके मेदे अल्पबहुत्व दो प्रकारका है । उनमेंत्रे ओघकी अपेन्ता

मिथ्यात्व बारद कषाय चौर नो नोकषायोंकी झुजगारस्थितिविभक्तिवाले जीव सचसे थोड़े हैं ।

इनसे अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुरे हैं । इनसे अल्पतर स्थितिविभाक्तिवाले जीव

Page 122:

गा० २२ ट्विदिविहृत्तीए उत्तरपयडिअप्पावहुआँ १०३

चउक० सव्वत्थोधा अवत्तव्व० । चज ० अणंतगुणा । सेस० मिच्छत्तमंगो । सम्मच

सम्मामि० सब्वस्थोवा अवक्तव्यद्धिदिविहत्तिया । इदो सम्मचतसम्मामिच्छत्तसंतकम्मिय

मिच्छादिद्टीणमसंखेजदिभागो सम्मत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मेण सह सम्मत्त प्रडिवज्जमाण

रासी होदि । तस्स वि असंदेजदिभागो सम्मत्तसम्भामिच्छत्ताणि उव्वेष्िय उबडु

पोग्गलपरियई भमदि । एदेण कमेण उबह्पोगशलपरियड््भंतरे संचिद्णंवजीवरासीदो

जेण संचयाणुसारेण वओ होदि तेण अवत्तव्यद्धिदिविहत्तिया थोधा ण च चुण्णिसुत्तण

सह बिरोहो पुथभूदाइरियउवदेघमवलंबिय अनड्ाणादों अवह्टि असंखेजगुणा । झुज ०

असंखेज्ञगुणा । अप्प० असंखेजगुणा । एवं तिरिक्व्०कीयजोमि०ओरालि०णचुंस०

चत्तारिक ०असंजद ०अचक्खु तिण्णिङे०भवधि ०आहारि्ति ।

१९२ आदेसेण णेरदएसु एवं चेव । णवरि अणंताणु सच्चत्थोवा अवत्तव्व ।

श्ज० असंखेगगुणा । एवं सव्वणेरहयपंचिदियतिरिक्खतिय ०देब्मवणादिः जाव

सहस्सार ०पंचिंदिय ०पंच्रि ०पञ ०तसतसपज्ञ० पंचमण ० पंचवचि ०वेउव्वि ०इत्थि ०

पूरिस०चक्खु ०तेउ ०पम्म ०सण्णि त्ति ।

१९३ पंचि तिरिक्खअपज ० मिच्छ्तसोलसक णवणोकसाय णिरयभंगो ।

संख्यातगुणे है । अनन्तानुचन्धी चतुष्ककी अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े है ।

इनसे भुजगार स्थित्तिविभक्तिवाले जीव अनन्तगुओे दै । जेष भंग मिथ्यात्वे समान है । सम्यक्स और

सम्यभ्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं क्योकि सम्यक्त्व और

सम्यम्मिथ्यास्व सत्कर्म वाले मिथ्यादष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवराशि सम्यक्त्ब और सम्यग्मि

थ्यात्व सत्कर्मके साथ सम्यक्त्व को प्राप्त होती है । तथा इसके भी असंख्यातवें भागप्रमाण जीवराशि

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्देलना करके उपाधेपुदूगल परिवतैनकाल तक घूमती है। इस

क्रमसे उपाधेपुद्ूगल परिवर्तेन कालके भीतर संचित हुई अनन्त जीवराशिमेसे चूँकि संचयके अनुसार

व्यय होता है इसलिये अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव थोड़े हैँ । इस कथनका चूर्णिसून्रके साथ

विरोध री नहीं आता है क्योंकि यह कथन प्रथरभूत आचायेके उपदेशका अवलम्ब लेकर

अवस्थित है । इनसे अवस्थित स्थित्तिविभक्तिवाले नीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे सुज गार स्थिति

विभक्तिवाले जीव असखंख्यातगुणे हैं । इनसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

इसी प्रकार सामान्य तिर्यच काययोगी औदारिककाययोगी नपुंसकवेदी क्रोधादि चार कषायवाले

असंयत अचज्लुदर्शनवाले ऋष्णादि तीन लेश्यावाले भव्य और आहारक जीवोंके जानना चाहिए।

१९२ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें इखी प्रकार अर्थात् ओघके समान ही जानना

चाहिए किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा अ वक्तञ्य स्थितिविभक्ति

बाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे भुजयार स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार

सब नारकी पंचेन्द्रिय तिरयचत्रिक सामान्य देव भवनवासियोंसे लेकर सदार स्वर्ग तकके देव

पुंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त त्रस त्रसपर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी वैक्रियिककाययोगी

स्रीवेदी पुरुषवेदी चह्तुदर्शनवाले पीतलेश्यावाले पद्मलेश्यावाछे और संज्ञी जीबोंके जानना चाहिए।

१६३ पंचेन्द्रियतियंच अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलद कषाय ओर नौ नोकषायोंका भंग

Page 123:

१०४ ज्यथवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविदन्ती ३

णवरि अणंताणु चउक० अवत्तव्वं णत्थि । सम्मत्तसम्मामि० अप्पावहुअं णत्थि

एगपदत्तादो । एवं सणुसअपज्ञ०सव्वएडंदियसव्बविगर्लिदियपंचिंदियअपज् ०सब्ब

पंचकाय ०तसअपज्ञ ०ओरालियमिस्स ०वेउ ०मिस्स ०कम्मइ्य ०तिण्णिअण्णाणमिच्छा

दिट्टिअसण्णि ०अणाहारि त्ति।

१६७ मणुस० मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० सम्मत्तसम्मामि ओघ॑ ।

णवरि सम्मत्तसम्मामिच्छत्त ० अवत्त ० थोवा अवड्टि० संखे०गुणा। यज संखे०गुणा ।

अप्पदर ० असंखे०शुणा । अथवा सम्म०सम्मामि० अवद्डि० थोवा। श्रुजञ० संखे०

गुणा । अवत्तव्व० संखे०्मुणा । अप्पद० असंखे०गुणा । अणंताणु ०चउक ० णिरओघ

मंगो । मणुपपज्ञ०मणुधिणीसु एवं चेव । णवरि जम्मि असंखेज्जगुणं तम्मि संखेज

गुणं कायव्वं ।

१९५ आणदादि जब उवरिमगेवज्जो त्ति अणंताणुचउक० सब्बत्थोवा अब

त्तव्य० । अप्पदर० असंखेज्ञगुणा । सम्मत्त ०षम्मामि० ओषधं । चुण्णिसुक्ते आणदादिषु

सम्मत्तसम्भामिच्छत्ताणं अबह्टिदविदत्ती णत्थि । एत्य पुण उच्रारणाए अत्थि । एवं

नारकियोंके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके अनन्तानुबन्धी चतुष्कक। अवक्तव्यपद्

नहीं है। तथा सम्यक्त्व चौर सम्यम्मिथ्यात्वका अल्पवहुत्व नहीं है क्योकि यहाँ इन दो प्रकृतियोंका

एक अल्पतरपद ही पाया जाता है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब एकेन्द्रिय सव विकलेन्द्रिय

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सब पांचों स्थावरकाय चस अपरयाप्त अौदारिक मिश्रकाययोगी वैक्रियिक

भिश्चकाययोगी कार्मेणक्ाययोगी तीनों अज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्ञी और अनाहरकोंके

जानना चाहिए ।

१६४ मनुष्योंमें मिथ्यात्व बारह कषाय नौ नोकषाय सम्यक्स्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

भंग ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वक्नी अपेक्षा

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनघे अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव

संख्यातगुरो हैं । इनसे भुजगार स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे अल्पतर स्थिति

विभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। अथवा सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अवस्थित

स्थितिविभक्तिबाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे भुजगार स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुरो हैं ।

इनसे अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुखे हैं । इनसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं। जनन्तानुचन्धी चतुष्कका भंग सामान्य नारकियोंके समान है । मनुष्य पर्याप्त

और मलुष्यनियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता दै कि जहाँ असंख्यातगुणा

है बहोँ संख्यातगुणा कहना चाहिये।

१९५ आनतकल्पसे लेकर उपरिम ग्रैवेयक तक्के देवोंमें अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा

अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीव खबसे थोड़े हैं। इनसे अल्पतर स्थितिविभक्तिवाले जीव श्रखं

ख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। चूर्णिसून्रके अनुसार

आनतादिकमें खम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अवस्थिस्थितिविभक्ति नहीं दै । परन्तु यहाँ उच्चा

रणामें है। सो जानकर इसकी संगति बिठा लेना चादिये । यहां शेष प्रकृतियोंका अल्पवहुस्व नदीं हे

Page 124:

गा० २२ पदणिक्खेबो २०

जाणिद्ण घडावेदव्वं सेसपयडीणं णत्थि अप्पावहुओं एयपदत्तादो । एवं सुकले० ।

अणुदिसादि जाव सव्वट सव्वपयडि० अप्पाबहुअं णत्थि एगपदत्तादो । । एवमाहार०

आहारमिस्स ०अवगद् ०अकसा ०आभिणि ०सुद ०ओदि ०मणपन्ज ०संजद ० सामाहय

छेदो ०परिदार ०सुहुम ०जहाक्खाद ०संजदासंजद ओष्िदंस ०सम्मादि ०खश्य वेद्य ०

उवसम ०सासण ०सम्मामिच्छादिद्टि चि । अभव छच्वीसं पयडीणं मदि०्मंगो ।

एवमप्पाबहुगोणुगमे समत्ते शजमाराणुगमो समसो ।

पदणिक्खेवो

एत्तो पदणिक्खेवो ।

१६६ सुगममेदं छजगारविसेसो पदणिक्वेवो एतो अहिकओ दड्व्बो त्ति

अहियारसंभालणफलत्तादो कथं ्जगारविसेसो पदणिक्खेबो त्ति णासंकणिज्जं तत्थ

परूविदाणं वेव अ नगारादिषदाणं वड्डिहाणिअवद्ठाणसण्णं कादृण जदण्णुकस्सबिसेसेण

विसेसिद्णेत्थ परूवणादो ।

पदणिक्खेवे परूवणा सामित्तमप्पाबहुअं अ ।

१६७ णदं सुच॑ पदणिक्खेवत्थाहियारपमाणेण सद तण्णामाणि परूवेदि । एस्थ

क्योंकि उनका एक पद है । इसी प्रकार शुक्ललेश्यामें जानना चाहिए। अजुविशसे लेकर सर्वाथेसिद्धि

तकके देबोंमें सब प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व नहीं है क्योंकि एक पद है। इसी प्रकार आद्वारककाय

योगी आद्वारकमिश्रकाययोगी अपगतवेदीअकषायीआभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी

सनःपर्ययज्ञानी संयत सामायिकसंयत्त छेदोपस्थापनसंयत परिहारविशुद्धसंयत सूच्ष्मसम्पराय

संयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत अवधिदशनी सम्यग्दृष्टि क्ञायिकसम्यम्दष्टि वेदकसम्यग्दष्टि

उपशमसम्यस्दष्टि साखादुनसम्यम्दष्टि ओर खम्यभ्मिथ्यादृष्टि जीवोके जानन चाहिए। अभव्योंमें

छब्बीस प्रकृतियोंका भज्ञ मत्यज्ञानी जीवोंके समान दे ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर सुजगारानुगम समाप्त हुआ ।

पदनिक्षेप ॥

यहाँसे पदनिेपालुगमङा अधिकार है ।

१६६ यह् सूत्र सुगम दै सुजगार विशेषको पद्निक्तेय कहते दँ । निखा यदसि अधि

कार है । इख प्रकार अधिकारकी सम्दाल करना इस सूत्रका फल दै ।

शंकायुजगारविशेषका नाम पदनिक्तेप कैसे दे ९ ह

समाधानऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये क्योंकि भुजगार अजुयोगद्वारमे कहे गये

झुजगार आदि पदोंकी दी बृद्धि हानि श्नौर अवस्थानरूप संज्ञा करके तथा उन्हें जघन्य और

उत्कृष्ट विशेषणसे विशेषित करके उनका यहाँ कथन किया गया है।

पदनिक्षेपमें प्ररूपणा स्वामित्व अब्पबहुत्व ये तीन अलुयोगढार द्वोते हैं ।

१६७ यह सूत्र पदनिक्तेपके अर्थाधिकारोंकी खंख्याके साथ उनके नामोंका कथन करता है।

१४

Page 125:

१०६ जयथवलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

परूवणासामित्ताणं विवरणं ण रिषं सुगमत्तादो ।

१९८ संपहि उ्चारणमस्सिदणं तेसं विवरणं कस्सामोपदणिक्खेवे तत्थ

इभाणि तिण्णि अगिंओगदाराणि सषुकिंचणा सामित्तमप्पाबहुअं चेदि । तस्थ सषु

किंत्तण दुविहाजह उक । उक० पयदं । दुविहो णिदेसोओघे० आदेसे० । ओषेण

सन्वप्यडीणमत्थि उक ० वड्ढी द्वाणी अबड्डाणं च । एवं चदुषु गदीसु । णवरि पंचिदिय

तिरिक्खअपज ० मणुस अपज ० सम्मत्तसम्माभि० अर्थि उक ० हाणी । आणदादि जाव

उवरिमगेवजो त्ति उव्बीसपयडीणमत्यि उक० हाणी । सम्म ०सम्मामि० अत्थि उक०

चड्डी दाणी । अवट्काणं णत्थि । अणुदिसादि जाव सन्वह त्ति अद्भावीसपय० अत्थि

उक हाणी । एवं णेदन्वं जाव अणादारशए त्ति । एवं जहण्णं पि णेदव्वं ।

चूर्णिसूत्रमें श्रूपणा और स्वाभिस्बका विशेष व्याख्यान निबद्ध नहीं किया है क्योंकि उनका

व्याख्यान सुगम है ।

१६८ अब उच्चारणाका आश्रय लेकर उनका व्याख्यान करते हैंपदनिक्षेपमें ये तीन

अनुयोगद्वार हैंसमुत्कीतेना स्वामित्व भौर अस्प वहु्व । उनमेंसे समुस्कीतेना दो प्रकारकी

हेजघन्य और उत्कृष्ट । उनमेसे उत्कृष्टका प्रकरण है । उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है

ओघ और आदेश उनमेंसे ओघकी अपेक्षा सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट बुद्धि हानि ओर अवस्थान

है। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना । किन्तु इतनी विशेषता है कि पंचेद्िय तिर्य॑च अपर्याप्त

ओर मनुष्य अपर्याप्त जीवोमे सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वक्ी उत्कृष्ट हानि है। आनतकल्पसे

लेकर उपरिम ग्रेवेयक तकके देवोंमें छब्त्रीस प्रकृतियोंकी च्छ दानि है । तथा सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानि है। अवस्थान नहीं है । अलुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि

तक्के देवोंमें अद्धाईस प्रक्ृतियोंकी उस्क्ृष्ट दानि है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गगा तक कथन करना

चाहिये । इसी प्रकार जघन्य वृद्धि आदिको भी जानना चाहिये ।

विशेषार्थयहाँ युजगार विशेषको पदनिक्षेप कदा है । इधका यद तात्पयं है कि पदले जो

झुजगार अल्पतर और अवस्थित पद् बतलाये हैं उनकी ऋमसे वृद्धि दानि चौर अवस्थित संज्ञा

करके और उनमें जघन्य ओर उत्कृष्ट भेद करके कथन करना पदनिक्षेप कहलाता है । यहाँ पदसे

बृद्धि आदि रूप पदोंका रहण किया है और उनका जघन्य तथा उत्कृष्टरूपसे नित्तेप करना पदनिक्षेप

कद्दलाता है यद् उक्त कथनका तात्पयें है। इस अधिकारकी यतिवृषभ्ष आचायेने केवल तीन

अधिकारों द्वारा कथन करनेकी सूचना की है । वे तीन अधिकार प्ररूपणा रूवामित्व और अल्पबहुत्व

हैं। इसके कालादि और अधिकार क्यों नहीं स्थापित किये गये इस भ्ररनका उत्तर देना कठिन है ।

बहुत सम्भव है परम्परासे इन तीन अधिकारों द्वारा दी इस अनुयोगद्वारका वणन किया जाता रहा

हो । पट्खण्डागमममें भी इस अधिकारका उक्त तीन अुयोगद्वारोकि द्वारा वणन किया गया है । यति

वृषभाचायेने यहाँ नामनिर्देश तो तीनोंका किया है परन्तु वर्णेन केवल अह्पबहुत्वका दी जिया है ।

फिर भी उचारणामें इन सनका वणेन है । वीरसेन रुवामीने उसके अनुसार उन अलुयोगद्वारोंका

खुलासा किया है। प्ररूपणा अनुयोगद्वारका सुनासा करते हुए जो यद बतलाया है कि घोघ

सब प्रकृतयोंकी उत्कृष्ट वृद्धि उल्कृष्ट द्वानि और उत्कृष्ट अवस्थान है सो इसका यदह भाव है कि जिस

कमेकी उत्कृष्ट स्थितिके प्राप्त होनके पूवं समयमें जितनी जघन्य स्थिति सम्भव हो उसके रद्दते हुए भी

तदनन्तर समयमें संक्लेश आदि अपने अपने कारणोंके अनुसार बह जीव उस कमेंकी उत्कृष्ट स्थितिको

Page 126:

गा० २२ पंद्णिक्खेवे सांमित्तं १५७५

१६६ सामित्त दृविहंजहण्णघुकर्सं च। उकस्सए पयदं । दुविहो णिदेशोओपेण

आदेसेण च । तत्थ ओघेण मिच्छत्तसोलसक० उक० बड़ी कस्स १ अण्णद्रस्स जो

चउद्दाणियनवमज्झस्स उवरिमंतोमु दृतं अंतोकोडाकोडिड्धिदिं बंधमाणो अच्छिदो पृण्णाए

ड्िद्बंधगद्धाए उकस्ससंकिलेसं गदो तदो उकस्सद्िदी पबद्धा तस्स उक ० बड़ी । तस्तेव

से काले उकस्समवट्ठाणं । उक० हाणी कस्स १ अण्णद उकस्सट्धिदिसंतकम्मम्मि उकस्स

दविदिखंडयं पादंतस्स उक्ष हाणी । णवणीक० उक्क० वही करप १ अण्णद० तप्पा

ओग्गजहण्णट्विदिसंतकम्मिएण उकस्सकस्रायद्टिदीए पडिच्छिदाए तस्स उक्क० बड़ी ।

तस्ते से काले उक० अवड्डाणं । उक० हाणी कस्स १ अण्णद० उक० ट्विद्सिंतकम्पम्मि

जेण उकस्सट्टिदिकंडओ पादिदो तस्स उक० हाणी । सम्मत्तसम्मामि० उक्क० बड़ी

प्राप्त दो सकता है उदाहरणार्थ मिथ्यास्वह्की अन्तकोड़ाकोड़ी सागरकी स्थितिवाला जीव भी

संक्लेशके कारण तदनन्तर समयमे सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त हो सकता

है। इसी प्रकार सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी सागरप्रथक्त्व स्थितिवाला जीव भी तदनन्तर

समयमें अन्तमुहू्तकम संत्तर कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थितिको प्राप्त दो सकता है। इसी प्रकार

यथायोग्य अन्य कर्मोंक्की उत्कृष्ट वृद्धि जानना चाहिये । यह त्कृष्ट वृद्धि हुईं। इसके बाद जो अबस्थान

होता है उसे बृद्धिसम्बन्धी उत्कृष्ट अवस्थान कहते हैं । इसी प्रकार उत्कृष्ट काण्डकघातका विचार करके

उत्कृष्ट दानि और द्वानिसम्बन्धी उत्कृष्ट अवस्थान जान लेना चाहिये । ये उत्कृष्ट वृद्धि आदि तीनों

पद् चारों गतिर्योके जीबोंके सम्भव हैं । किन्तु पंचेन्द्रिय तियेद्ल अपर्याप्त और मनुष्यअपर्याप्त जीबोकि

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उक्त पदोंमें से एक उत्कृष्ट द्वानि ही होती है। आनतादिकमें २६

प्रकृतियोंका एक अल्पतर पद है इसलिये २६ प्रकृतियोंकी केबल उत्कृष्ट हानि होती है। किन्तु

सम्यक्व श्रौर सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पद् सम्भव हैं अतः इन दो प्रकृतियोंके उत्कृष्ट

अवस्थानके विना दो पद् होते हैं । अनुदिशसे लेकर सर्वायेसिद्धितकके देवोंके २८ प्रक्ृतियोंका एक

अह्पतर पद ही सम्भव है इसलिये एक उत्कृष्ट हानि होती है । इसीप्रकार जहाँ भुञगार आदि जितने

पद् बतलाये हों उनका विचार करके अन्य मार्गणाओं में भी ये उस्क्ृष्ट वृद्धि आदि पद जान लेना चाहिये ।

इसप्रकार प्ररूपणा अनुयोगद्वारका कथन समाप्त हुआ

१६६ स्वामिप्व दो प्रकारका है जघन्य और उस्क्ृष्ट । उनमेंसे उत्क्ृटका प्रकरण है ।

इसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैभोघ और आदेश । उनमें खे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व और

सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है जो कोई एक जीन चतुःस्थानिक यवमध्यके ऊपर

अन्तमुहू्ते काल तक अन्तःकोडाकोडी सागरप्रमाण स्थितिको बाँधता हुआ अवस्थित है। पुनः

स्थितिबन्ध छालके पूर्ण होनेपर उस्क्रष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ और तदनन्तर उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध

किया उसके उच्छृ वृद्धि होती है । तथा उसके तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान द्वोत्ता है । उक्ष

हानि किसके होती हे जिसने उल्कष्ट स्थितिसत्कमेंके रहते हुए उत्कृष्ट स्थितिखण्डका चात किया

है उसके उल्कृष्ट हानि होती है । नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ठ बुद्धि किसके होती है नौ नोकषायोंकी

तत्मायोग्य जघन्य स्थितिसत्कर्मव्ाले जिस जीवने कषायकी उत्कृष्ट स्थितिको नौ नोकषायरूपसे स्वीकार

किया है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती दै । तथा उसी जीबके तदनन्तर समयमे उस्क्ृष्ट झव॒स्थान होता

है। उत्कृष्ट हानि किसके दोती है जिस जीवने उत्कृष्ट स्थितिसत्क्मके रहते हुए उत्क्रष्ट स्थिति

काण्डकका घात किया है उसके उत्कृष्ट द्वानिहोती है। सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी दतृ

Page 127:

१०८ जंयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विद्विद्दत्ती ई

कस्स १ अण्णदरस्स वेदगसम्भत्तपा ओग्ग जहष्णट्वि दिसंतकम्मियमिच्छादिद्विणा मिच्छत्तु

कस्सद्ठिदिं बंधिदण ट्विदिघादमकाऊण अंतोप्मुहत्तण सम्मत्ते पडिवण्णों तस्प पटमसमय

वेदगसम्मादिद्टिस्स उक० बड़ी। उक० हाणी कस्स १ अण्णद० उकस्सद्िदिसंतकम्भम्मि

उकस्सट्विदिकंडगे हदे तरप उकस्सहाणी उक्क० अवद्धाणं कस्स० १ अण्णद० जो

सम्मत्तड्ठिंदिसंतादो समयुत्तरमिच्छत्तट्टिदिसंतकम्मिओ तेण समत्ते पडिवण्णो तस्स

पढ़मसमयसम्भादिद्विस्स उकस्समवद्गाणं । शवं चदुसु गदीसु । णवरि पंचिं०तिरि०अपज०

मणुसअपजञ ० छव्वीसपयडीणध्ुक० बड़ी कस्स० १ अण्णद० तप्पाओोग्गजदण्णट्धिदिसंत

कम्मिएण तप्पाओग्गउकस्सद्डिदीए पबद्धाए तस्स उकस्सिया बड्डी । तस्सेव से काले

उकस्समबद्ठाणं । उक० हाणी कस्स० अण्णदरस्स मणुस्सो मणुस्सिणी पंचिदियतिरि

क्खजोणिओ वा उकस्सह्धिदिं घादयमाणो अपजत्तएसु उववण्णो तेण उकष्सद्ठिदिकंडए

इदे तस्त्र उक हाणी । सम्मत्त ०सम्मामि० उक्त० हाणी करुस १ अण्णद० मणुस्सो

मणुस्सिणी पंचि० तिरि०्जोणिणीओ वा सम्मत्त ०सम्मामि० उकस्सट्विदिकंडयं घादय

भाणो अपजत्तणसुबवण्णो तेण उकस्सट्ठिदिकंडए हदे तस्स उक० हाणी ।

२०० आणदादि जाव उवरिमगेवजो त्ति छब्वीसं पयडीणघुक०हाणी कस्स ९

अण्णद् पढमसम्मत्ताहिमुहेण पढमट्विदिखंडए हदे तस्स उकू० हाणी। सम्मत्त

सम्मामि० उक बड़ी करस १ अण्णद्० जो वेदगसस्मत्तप्पाओग्गसम्मत्तजहण्णद्विदि

वृद्धि किखके होती है वेदकसम्यक्त्वके योग्य जघन्य स्थितिसल्कर्मवाले जिस मिथ्यादृष्टि जीवने

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करके और स्थितिघात न करके अन्तमुंहू्तेकालमें सम्यक्त्वको

प्राप्त किया उस वेद्कसम्यग्टष्टिके भ्रथम समयमे उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट हानि किसके होती

है १ उत्कृष्ट स्थिति सस्कमेके रहते हुए जिस जीवने उत्कृष्ट स्थितिकाण्डकका घात किया उसके

उत्कृष्ट दानि दती है । उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है सम्यकत्वके स्थितिसत्कर्मसे मिथ्यात्वक्ली

एक खमय अधिक स्थितिसत्कमेबाला जो जीव सम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस सम्यग्टष्टिके प्रथम

समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता

है कि पंचेन्द्रिय तियेज्व अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्त जीवों में छब्बीस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट बुद्धि किसके

होती है ९ तत्मायोग्य जघन्य स्थितिसत्कमेबाले जिस जीवने तत्पायोग्य उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध किया

उसके उत्कृष्ट बुद्धि होती है। तथा उसके तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट अबस्थान होता है । उस्कृष्ठ

दाचि किसके होती है १ जो मनुष्य मनुष्यनी या पंचेन्द्रिय तियंच योनिवाला जीव उत्कृष्ट ल्थिति

का घात करता हुआ अपर्याप्तकॉर्मे उत्पन्न हुआ और वहाँ उसने उत्कृष्ट स्थितिकाण्डकका घात

किया उसके उत्कृष्ट दानि होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उतकट हानि किसके होती है ९

जो मनुष्य मनुष्यनी या पंचेन्दरिय तिर्य॑च योनिबाला जीव सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यास्वका घात

करता हुआ अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ और वह्दों उसने उत्कृष्ट स्थितिकाण्डकका घात किया उसके

उत्कृष्ट हानि होती है ।

२०० आनतकल्पसे छेकर उपरिम ग्रेवेयकतकके देवों छः्बीस प्रक्ृतियोंकी उत्कृष्ट दानि

किसके होती है ९ प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख जिस जीवने प्रथम स्थित्तिकाण्डकका घात कर दिया

हे उसके उत्कृष्ट हानि होती है। सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ९

Page 128:

गा० २१ पदरिक्खेवे सामित्त १०६

संतकम्मिओ मिच्छत्तस्स ॒तप्पाओग्णुक स्सट्टिदिसंतकम्मिओ वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो तस्स

उक बड़ी । उवसमसम्भत्तं चरिमफालीए सह पडिवजंतम्मि उकस्विया वड्डी क्रिष्ण

दिजदै ण तिण्णि वि करणाणि कादृण उवसमसम्मत्तं पडिवज्माणस्स इ्िदिकंडय

घादेण घादिय दहरीक्यद्िदिभ्मि उकस्सट्ठटिदीए अभावादो । उक० हाणी कस्स १

अण्णद० अणंताणुचउकं बिसंजोएंतेण पढमे ट्विदिकंडए हदे तस्स उक हाणी ।

२०१ अशुद्सादि जाव सब्बई त्ति अड्डाबीसपयडी० उक्त हाणी कस्स १

अण्णद्० अणंताणु०चउक्क ० विसंजोएंतेण पढमट्डिदिखंडए हृदे तस्स उकस्सिया द्वाणी ।

एवं जाणिदूण णेदव्वं जाबव अणाहारए ति ।

२०२ जदण्णए पयदं दुबिहों णिदेसोओघे० आदेसे०। ओषेण छव्बीसं

पयडीणं जह० बड़ी कस्स १ अण्णद० समयूणुकस्सट्टिदं बंधिध जेणुकस्सट्टिदी

पबद्धा तस्स जह० बड़ी । ज० हाणी कस्स १ अण्णद० उकस्सट्टिर्द वंधमाणेण जेण

समयूणुकस्सट्टिदी पबद्धा तस्स जह दाणी । एगदरत्थ अबड्डा्ण । सम्मत्तसम्मामि०

जद० वड़ी कर्ष अण्णद० जो पुव्वुष्पण्णादो सम्मत्तादो मिच्छत्तस्स दुसमयुत्तरद्विदि

वेदकसम्यक्त्वके योग्य सम्यक्त्वकी जघन्य स्थिति सत्करमं्राला और मिध्यात्वक्री तत्पायोग्य उत्कृष्ट

स्थितिसत्कर्मबाला जो जीव वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ उसके उत्कृष्ट बुद्धि होती है ।

शंकाजो सम्यक्त्व प्रकृतिकी अन्तिम फालिके साथ उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उसे

उत्कृष्ट ब्राद्धका स्वामी क्यों नदीं बतलाया ९

समाधाननहीं क्योकि तीनों दी करणोंको करके उपशम सम्यक्स्वको प्राप्त दोनेवाले जिस

जीवने स्थितिकाण्डकघातके द्वारा दीघं स्थितिका घात करके उसे हस्व कर दिया है उसके उत्कृष्ट

स्थिति नहीं पाई जाती है । ।

उत्कृष्ट हानि किसके दोती है १ शअननन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करनेवाले जिख जीवने प्रथम

स्थितिकाण्डकका घात कर दिया है उसके उत्कृष्ट दानि होती है ।

२०१ अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें अद्दाईस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि

किसके होती है अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना करनेवाले जिस जीवने प्रथम स्थितिकाण्डकका

धतं कर दिया है उसके उत्कृष्ट द्वानि होती है। इसी प्रकार जानकर अनाद्वारक मार्गणातक

ले जाना चाहिये ।

२०२ अब जघन्य स्वामित्वका प्रकरण हैउसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है

ओपघ और आदेश । उनमेंसे ओंघकी अपेक्षा छब्ब्रीस प्रकृतियोंकी जघन्य बृद्धि किसके होती है ९

एक समय कम उत्कृष्ट स्थितिको बाँधकर जिसने उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध किय्रा है उसके जघन्य बुद्धि

होती है । जघन्य हानि किसके होती दे ९ उत्कृष्ट स्थितिको बाँधनेवाले जिस जीवने एक समय कम

उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध किया उसके जघन्य हानि होती हे । तथा किसी एक जगह अबस्थान द्वोता है।

सम्यवत्थ और सम्यग्मिथ्याध्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ९ जो पहले प्राप्त सम्यक्त्वकी स्थिति

से मिथ्यात्वकी दो समय अधिक स्थितिको बोधकर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ उसके जघन्य वृद्धि

॥ ता आ प्रस्योः बंघिय जो अणुक्कस्सद्धिदी इति पाटः ।

Page 129:

११० जयधवबलासदहिदे कसायपाहुडे हिद्विहसी १

बंधिय सम्मतं पडिवण्णो तस्स जह० बडी । । जह० हाणी कस्स १ अण्णद् गलमाण

अधड्टिदिस्स । अवट्टाणस्स उकस्सभंगो । एवं चदुसु गदीसु णवरि पंचिं०तिरि०अपजञ०

मणुसअपजत्तरसु सम्मत्त ०सम्मामि० जह हाणो कस्स १ अण्णद गलमाणअधद्टि दिस्स।

२०३ आणदादि जाव णवगेवजञा त्ति छव्बीस पयडीणं जहण्णिया हाणी कस्स १

अण्णद गलमाणअध ट्विदिस्प । सम्मत्त ०सम्मामि० जह० बही कस्स १ अण्णद०

जो मिच्छत्त गंनूण एगप्नव्वेछलणकंडयमुव्वेछ्लेद्ण पुणो सम्मत्त पडिवण्णो तस्स पटमसमय

सम्माइट्टिस्स सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं जह० वड्धी । जह० हाणी कर्ष १ गलमाण

अधड्किदिस्ष । अणुदि्ादि जाव सब्बई त्ति अद्वावीसपयडीणं जह० हाणी कस्स १

अष्णद् गलमाणअधट्टिदिस्स । एवं जाणिदृन णेदग्वं जाव अगाहारए त्ति ।

अपपावहुए पयव ।

२०४ संपहि पच्ावसरमप्पाबहुअं परूवेमि त्ति भणिदं होदि ।

मिच्छुत्तरुस सव्वत्थोवा उक्कस्सिया हाणी ।

२०४ इदो १ जत्तियमेचद्विदी ओ उकस्तेण वड्डिदृण वंदि । पणो कंडययादेण

उकस्सेण घादयमाणस्स तत्तियमेत्तट्िदीणं षादणसत्तीए अभावादो । तं इदो ण्ये १

होती है । जघन्य द्वानि किसके होती है १ जिसके प्रति समय अवस्थिति गल रदी है ऐसे किसी

ज्ञीवके जघन्य हानि होती है । जघन्य अवस्थानक्रा भंग उत्कृष्कके समान है । इसी भकार चारों

गतियोंमें जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि प॑चेन्द्रिय तिर्यक्च अपर्याप्त भौर मनुष्य

अपर्यात्त जीबोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जधन्य हानि किसके होती है जिसके श्रधःस्थिति

गल रही है उसके जघन्य दानि होती है ।

२०३ आनतकल्पसे लेकर नौ प्रेवेयकतकके देवों में छब्बी स प्रकृतियोंकी जघन्य हानि किसके

होती हैं १ जिसके प्रति समय अधःस्थिति गल रही है उसके जघम्य हानि होती है । सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है १ जो मिथ्यात्वको प्राप्त होकर और एक उद्देलना

काण्डककी उद्र लना करके पुनः सम्यक्त्वको भ्राप्त हुआ है उस सम्यस्दष्टिके प्रथम समयमें सम्यकत्व॑

ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी जघभ्य वृद्धि होती है। जघन्य हानि किसके होती हैः १ जो प्रति समय

अधःस्थितिको गला रदा है उसके जघन्य हानि दोती है। अनुदिशसे लेकर सर्बाथेसिद्धितकके देवोंमें

अद्धाईस प्रकृतियोंकी जघन्य हानि किसके दोती है जिसके भ्रति समय भधःस्थिति गल रही हे

उसके जघन्य हानि होती है । इसी प्रकार जानकर अनाद्दारक मा्गणातक कथन करना चाहिये ।

अब अल्पबहुत्वका प्रकरण है । ।

२०४ अब अवखरप्राप्त अल्पबहुत्वानुगमका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तापय हे ।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि सबसे थोड़ी हे ।

२०५ क्योकि यद् जीव जितनी स्थितिको उत्क्ृष्टरपसे बढ़ाकर बाँधता है काण्डकघातके

द्वारा उत्कृष्ट रूपसे घात करते हुए उस जीबके उतनी स्थितिके घात करनेकी शक्ति नहीं पाई जाती

है। तात्पये यह है कि एक बारमें जितनी स्थिति बढ़ाकर बांधता दै उतनी स्थितिका एक बारमें

घात नहीं दोता।

Page 130:

गा० २२ पदणिक्खेबे अप्पाबहुआं १११

एदम्हादों चेबर अप्याबहुगादो ।

उक्षस्सिया बड़ी अवटाणं च सरिसा विसेसाहिया ।

२०६ केत्तियमेत्तेण १ उकस्सियाए बड्डीए उकस्सदाणि सोदिय सद्धसेससंखेज

सागरोवमद्धिदिमेचेण । व्डिअवट्टाणाणं कथं सरिसत्त १ पुव्वद्धिदीओ पेक्खिदूण जेहि

ट्विदिविसेसेदि ट्विदीए ह्वी होदि तेसि ट्विदिविसेसाणं बहि त्ति सण्णा । जेदि हिदि

विसेसेद्दि बड्धिएण दवाइटूण वा अवचिट्ठदि तेसिं बड्िदहाष्दट्िदिविसेसाणमवहाणमिदि

जेण सण्णा तेण वष्डिअवड्डाणाणं सरिसत्तं ण विरुज्ञदे ।

एवं सव्वकम्भाणं सम्मत्तसम्मामिच्छत्तवज्ञाणं ।

२०७ जहा मिच्छत्तस्स अप्पाबहुअं परूतिदं तदा सम्मत्तसम्मामिच्छत्तवज्ञाणं

सच्तरकम्माणमप्पाबहुअं परूबेदय्वं विसेसाभावादो । जासु पयडीक्ु विसेसो अस्थि तस

विसेसस्त परूवणइम्नत्तरसुत्त भणदि ।

णवरि णवुंसयवेदअरदिसोगभयदुगुकाणसुकस्सिया वड्ढी

अवहाणं थोवा ।

२०८ छुंदो पलिदो असंखे ०भागेणब्महियबीससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो

शंकायद किस प्रमणसे जाना जाता दे ९

समाधानइसी अल्पवहुत्वसे जाना जाता है ।

उत्डृष्ट बृद्धि और अवस्थान ये दोनों समान होते हुए विशेष अधिक है ।

२०६ कितने अधिक हैं १ उत्कृष्ट बृद्धिमेंसे उत्कष्ट द्वानिकों घटाकर जो संख्यात सागर

स्थिति शेष रदती है तघ्ममाण अधिक हैं । हु ।

शंकाइछि और अवस्थान समान कैसे दो सकते है वि

समाधानपदलेकी स्थिति्योको देखते हुए जिस स्थिति दिशेषकी अपेक्षा स्थितिशी बृद्धि

हो उन स्थितिविशेषोंकी चूकि वृद्धि यद संज्ञा है। तथा जिन स्थिति विश्वेषोंकी अपेक्षा बढ़कर या

घट कर स्थिति स्थित रहती है उन बढ़ी हुईं या चटाई हुई स्थितियोंकी चूकि अवस्थान यह संज्ञा

है इसलिये वृद्धि और अवस्थानके समान होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वको छोड़कर सब कर्मोंका अल्प

बहुत्व जानना चाहिए। वि

२०७ जिसप्रकार मिथ्यात्वके अल्पबहुस्वका कथन किया उसी प्रकार सम्यक्त्व नौर

खम्यग्मिथ्या्वको छोड़कर शेष सब कर्मो करे अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये क्योकि उससे इसमें

कोई विशेषता नहीं है। तथा जिन प्रकृतियोंमें विशेषता है उनकी विशेषताके कथन करनके लिये

आगेके सूत्रको कहते हैं

किन्तु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेद अरति शोक भय और जुगुप्साकी

उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान थोड़ा है । ।

२०८० क्योंकि इनकी वृद्धि और अवस्थानका प्रमाण पस्योपमके असंख्यातर्वें भागसे

आ प्रतौ सुष द्विदीभो इति पाटः । २ जा प्रतौ भणिदं इति पाठः नि

Page 131:

११२ जयघवलासद्दिदेकसायपाहुडे टिद्विद्ृत्ती ३

तं जदाऋसाएसु उकस्सद्विदि बंधमाणेसु णवुंसयवेदअरदिसोगभयदुगुंछोणं णियमेण

बंधो होदि। होंतो वि एदार्सि पयडीणं ट्विदिबंधो उकस्सेण वीसंसागरोबम

कोडाकोडिमेत्तो होदि । जहण्णेण समयूणाब्राह्मकंड एणूणवीसंसागरोबमकोडाकोडिमेत्तो

एत्थ उकस्सवड्डिअबड्टाणेहिं अद्वियारत्तादो । एगाबाहाकंडएणुणवीसंसागरोवमकोडा

कोडिमेत्तडिदिं पंच णोकसाया बंधावेदव्वा । एवं बंधिय पणो बंधावलियादिकंत

कसायद्डिदीए पंचणोकसाएसु संकंताए पलिदोवमस्स असंखेभागेणन्महियवीसंसागरो

वमकोडाकोडिमेत्ता बड़ी अबड्डाणं च होदि तेणेसा थोवा ।

उक्कस्सिया हाणी विसेसाहिया ।

२०९ इदो १ दा अंतोकोडाकोर्डि मोत्तण उबरिमिकिंचूणचालीससागरोबम

कोडाकोडिमेचट्धिदीणं कंडयघादेण घादुबरंभादो । केततियमेच्ेण विसेसाहिया १ अंतो

कोडाकोडीए ऊणवीसंसागरोवमकोडाकोडिसेत्तेण । इत्थिपुरिसहस्सरदीणमेस कमो

णत्थि उकस्सट्विदिबंधकाले ताति बंधामावादो । । पडिहग्गद्धाए अंतोकोडाकोडिमेत्तद्टिदि

बंधमाणचदुणोकसायाणष्ुवरि बंधावलियादिकंतकसायुकस्स ट्विदीए संकंतिसंभवादो ।

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सखव्वत्थोवसखुक्षससमवदाणं ।

२१० इदो एगसमयत्तादों ।

अधिक बीस कोड़ाकोड़ी सागर है। सुस इख प्रकार हैकषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होते

हुए नपु खक्वेद् अरति शोक भय और जुगुप्साका नियमसे बन्ध होता दै । बन्ध दोताहभा

भी इन प्रकतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध वीस कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है और जघन्य स्थिति

बन्ध एक समयकम एक आवाधाकाण्डकसे न्यून बीख कोड़ाकोढ़ी सागरप्रमाण होता है । प्रकृतमें

सत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थानका अधिकार है अतः पांच नोकषायोंका स्थितिबन्ध एक अावाधाकाण्डक

कमर बीस कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण कराना चाहिये । इस प्र शार बन्ध कराके पुनः बन्धावलिसे रहित

कषायकी स्थितिके पाँच नोकषायोंमें संक्रान्त कराने पर चूकि पल्योपमके असंख्यातवें भागव

अधिक बीस कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण वृद्धि और अबस्थान द्दोता है इसलिये यद थोड़ी है ।

उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है ।

8 २०६ क्योंकि नीचे अन्तःकोद़ाकीडी प्रमाण स्थितिको छोड़कर कुछ कम चालीख कोड़ा

कोड़ी प्रमाण उपरिम स्थितियोंका काण्डकथातके द्वारा घात पाया जाता है।

श्ंकाकितनी अधिक है ९

समाधानअन्तश्कोड़ाकोड़ी कम बीस कोड़ाकोड़ी सागर अधिक है।

किन्तु स््ीवेद पुरुषवेद हास्य और रतिका यद्द क्रम नहीं है क्योकि उत्कृष्ट स्थिति बन्धके

समय इन प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता है। अतः प्रतिभग्नकालके भीतर अन््तःकोड़ाकोड़ी प्रमाण

स्थितिको लेकर बंधनेवालीं चार नोकषायोंके ऊपर बन्धावलिसे रद्धित कषायकी उत्कृष्ट स्थितिका

संक्रमण देखा जाता है ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अवस्थान सबसे थोड़ा दे ।

8 २१० क्योंकि उसका प्रमाण एक समय है

Page 132:

गा० २२ पदणिक्खेवे अप्पाबहुआं ११३

उक्कस्सिया हाणी असंखेज्वगुणा ।

8 २११ इदो १ अंतोकोडाकोडीए ऊणसत्तरिसागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो ।

उक्कस्सिया बड़ी विसेसाहिया

२१२ साग्रोवमेण सागरोवमपुधत्तेण वा ऊणसत्तरिसागरोबमकोडाकोडि

पमाणत्तादो । सागरोबमेण सागरोवमपुथत्तेण वा ऊणत्तसस कि कारणं १ बुचदेएइंदिएस

ठाइद्ूण जेण सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि उच्वेद्धिदाणि सो तेसिं सागरोवममेत्तद्टि दिसंते

सेसे वेदगसम्मत्तपाओग्गो जदि तसकाइएसु अच्छिदूण उव्वेर्लदि तो सागरोवमपुधत्त

सम्मत्तसम्प्रामिच्छत्तद्वि दिसंते सेसे वेदगपषाओग्गो होदि तेणेत्तिएण ऊणसत्तरिसाग

रोवमकोडाकोडिमेत्तद्धिदी उकस्सवड़ी होदि। एत्थ पुण एगसागरोवमेणूणुकस्सद्धिदी

घेत्तव्वा उकस्सबड्डीए अहियारादो ।

२१३ संपहि चुण्णिसुत्त मस्सिदूण अप्पाघरहुपरूबणं करिय विसेसावगमणड्मेत्थ

उच्चारणाणुग़रम कस्सामो। अप्पाबहुओं दुविहंजहण्णमुकस्सं च। उकस्सए पयदं । दुविदो

णि०ओघे ० आदेसे० । तत्थ ओघेण छव्बीसं पयडीणं सव्बत्थोवा उकस्सिया द्वाणी ।

बड्डी अबड्डाणं च विसेसाहिया । एदस्स आइरियस्स अहिप्पाएण कसाए्सु उकस्सद्वि्दि

बंधमाणेसु पंचणोकसायाणप्ुकस्सद्विदिबंधणियमों णत्थि हाणीदो बड़ी विसेसाहिया

उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है ।

२११ क्योकि इसका प्रमाण अन्तः्कोड़ाकोड़ी सागर कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर है ।

उत्कृष्ट इद्धि विशेष अधिक है ।

ह २१२ क्योकि इसका प्रमाण एक सागर या सागरए्रथक्त्व कम सत्तर कोड़ाकोढ़ी

सागर है ।

शंकासत्तर कोड़ीकोड़ी सागरमेंसे जो एक सागर या सागरप्रथक्त्व कम किया है सो

इसका क्या कारण है हि

समाधान जिसने पकेन्दरियोमे रहकर सम्यक्त्व और सम्यस्मिथ्यास्वकी उद्वलना की है बह

उनकी एक सागरं प्रमाण स्थितिके रहते हुए वेदकसम्यक्छ्वके योग्य होता है । और यदि त्रसकायिकों में

रहकर उद्व लना की है तो वह सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्याध्वकी सागर प्रथक्त्व प्रमाण स्थितिके

रहनेपर वेदकसम्यक्त्वके योग्य द्वोता है अतः इतनी स्थिति कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण

उत्कृष्ट वृद्धि होती है। परन्तु यहाँ पर एक सागर कम उत्कृष्ट स्थिति लेनी चाहिये क्योंकि यहाँ

उत्कृष्ट वृद्धिका अधिकार है ।

२१३ इस प्रकार चूर्णिसूजके आश्रयसे अल्पबहुत्वका कथन करके अब उसका विशेष ज्ञान

करानेके लिये यद पर॒ उच्चारणाका अलज्ुगम करते हैं। अल्पबहुत्व दो प्रकारका हैजघन्य और

उत्कृष्ट उनमेंसे उत्कृष्ट का प्रकरण है। उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैभोषनिर्देश नौर

आदेशनिर्देश। उनमेंसे ओघकी अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि सबसे थोड़ी दे । उत्कृष्ट

वृद्धि और अवस्थान विशेष अधिक हैं । उच्चारणाचार्यके अभिप्रायानुसार कषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति

बैंधते समय पाँच नोकषायोंकी उत्कृष्टि स्थितिके बन्धका नियम नहीं है अन्यथा पाँच नोकषायोंके

॥ ५ आर भरतौ हाइदूण इति पाटः ।

१५

Page 133:

११४ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

त्ति पंचणोकस्रायाणमप्पाबहुअण्णहाणुववत्तीदो । सम्मत्तसम्मामिच्छत्त ० सव्वस्थोवा।उक०

अबड्ठाणं उक हाणी असंखे गुणा । उक ० बड़ी विसेस।० । एवं चदुसु गदीसु । णवरि

पंचिदियतिर्विखअपज्ञ० मणुस्सअपज्ञ० छव्वीसं पयडीणं सनव्वस्थोवा उक ० बडी

अवट्ाणं च उक हाणी संखे गुणा । सम्मत्तसम्मामि णस्थि अप्पाबहुअं एगपद्

त्तादो । एवं सन्वविगरिदियपंचिदियअपज ०तसअपज्ञ ०असण्णि तति ।

२१४ आणदादि जाव उवरिमगेवजा त्ति छव्वीष्ं पयडीणमप्पाबहुअं णत्थि

एगपदत्तादो । सम्मत्त सम्मामि० सब्बत्थोवा उक० हाणी । उक० बड़ी संखेजगुणा ।

अणुदिसादि जाब सव्वं त्ति णत्थि अप्पाबहुगं एगपदत्तादो ।

२११५ इंदियाणुवादेण एदंदिणसु छव्बीसं पयडीणं सब्यत्थोवा बही अवह्ाणं

च हाणी असंखेगुणा । एडदियाणं सत्थाणवड्डिअबट्टागविवकक््खाए एदमप्पाबहुअं

परूबिदं । परत्थाणविवक्खाए पुण णवणोकक्षाएयु विसेसो अस्थि सो जाणिषव्वो

एषो अस्थो जहासंमवमण्णस्थ वि जोजेयव्वो । सम्मत्तसम्मामि णत्थि अप्पाबहुअं ।

एवं सन्वेइंदियसव्वपंचकायाणं । ।

२१६ पंचिदियपंचि पजच्एसु मूलोषभंगो । एवं तसतसपज्ञ ० पंचमण०

पंचवचि कायजोगि ०ओरालिय वेउव्विय ०तिण्णिवेद ०चत्तारिक्सायअसंजद ०

अल्पबहुत्वमें हानिसे बुद्धि विशेष अधिक है यह् नहीं बन सकता है। सम्यक्व ओर सम्यस्सि

थ्यात्वका उल्कृष्ट अवस्थान सबसे थोड़ा है । इससे उत्कृष्ट हनि असंख्यातगुणी है। इससे उत्कृष्ट

वृद्धि विशेष अधिक है । इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि

पंचेन्द्रिय तिय अपर्याप्त सौर मनुष्य अवर्याप्तक्रोंमें छब्ब्रीस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि और अब

स्थिति सबसे थोड़ी है। इससे उच्छृ दानि संख्यातगुणी है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

अल्पबहुत्व नदीं है क्योंकि यहाँ उसका एक अल्पतर पद दी पाया जाता है। इसी प्रकार सत्र

विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त त्रस अपर्याप्त और असंज्ञी जीवोंके जानना चाहिए।

२१४ आनतकल्पले लेकर उपरिम ग्रेबेयकतकके देवोंमें छब्बीस प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व

नहीं है क्योंकि यहाँ पर इन भ्रकृतियोका एक अस्पतर पद हौ पाया जाता है। सम्यक्त्व ओर

सम्यग्मिध्यात्वकी उत्कृष्ट हानि सबसे थोड़ी है। इससे उत्कृष्ट बुद्धि संख्यातगुणी है । अनुदिशसे

लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है क्योंकि ययपर सभी प्रकृतियोंका एक अल्पतर

पद ही पाया जाता है ।

२१४ इन्द्रियमा्गेणाके अलुवादसे एकेन्द्रियोंमें छब्बीस प्रक्ृतियोंकी वृद्धि और अवस्थान

सबसे थोड़ा है । इसपे हानि असंख्यातगुणी है । एकेन्द्रियोंकी स्वस्थान वृद्धि और अवस्थानकी

विवक्तासे यह अल्पबहुत्व कहा है । परस्थानकी विवक्षासे तो नौ नोकषायोंके अल्पबहुत्वमें विशेषता

है जो जानना चाहिये। इस अरथी यथासम्भव अन्यत्र भी योजना करनी चाहिये। यहाँ सम्यक्त्व

ओर सम्यग्सिथ्याध्वका अल्पबहुस्व नहीं है। इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय और सब पाँचों स्थावरकाय

जीबोंके जानना चादिए।

३ २१६ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीबोंमें मूलोघके समान भंग है । इसी प्रकार त्रस

तसपर्याप्त पौचो मनोयोगी पाँचों बचनयोगी काययोगी ओऔदारिकक्राययोगी वैक्रियक्रकाय

योगी तीनों वेदवाले चारों कषायवाले असंयत चक्षुद्शेनवाले अचक्तुद्शनबाले ऋष्णादि पाज

Page 134:

शे० २२ पंद्णिक्खेवे अंप्पावहुओं १९४

चक्खुअचक्खु ० पंचले०भवसि ०सण्णिआहारि ति

२१७ ओरालियमिस्स० सच्वस्थोवा छष्वीसं पयडीणं उक्त ० वड्डी अवह

च । उक० हाणी संखे०गुणा । सम्मत्तसम्मामि ० णत्थि अप्पाबहुगं । एवं वेउव्विय

मिस्स०कम्महय०अणादारि त्ति। आहार ० आहारमिस्स अद्भावीसपयडीणं णत्थि

अप्पाबहुगं ए गप्पद्रपदत्तादो । एवमवगद ०अकसा ०आभिणि ०सुद् ०ओहि ० मणपज्ञ०

संजद०समाइयछेदो ०परिदार० सुदुम ०जदाक्लाद ०संजदासं जद ०ओदिदंस ० सुक्ले ०

सम्मादि० वेदगसम्मादि ० उवसम ०सासण०सम्मामिच्छादिद्धि तति । णवरि आमिणि०

सुद०ओदि०संजद ०सामाइयछेदो। ० संजदासंजदओहिदंस ०सुकले ०संम्भादि०

वेदगसम्मादिद्वीसु सम्मत्तसम्मामि० सब्बस्थोवमबड्ठाणं । हाणी असंखे०गुणा । बड़ी

विसेसाहिया तति किण्ण बुचरे ण अप्पिद्मर्गणाए सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं बड्डि

अवड्डाणाभावादों णवरि सुकलेस्सिएसु तेसिं सब्ब॒त्थोवा उकस्समवद्वाणं । द्वाणी असंखे०

गुणा बड़ी विसेसा०

२१८ मदिसुदअण्णा० छव्बीसपयडीणं मूलोघभंगो । सम्मचसम्मामि० णत्थि

अप्पावहुगं । एवं विहंग ०मिच्छोदिद्धि ति । अभविय ० छव्बीसं पयडीणं मूलोघं । खश्य ०

लेश्याबाले भज्य संज्ञी भौर आहारक जीबोंके जानना चाहिए।

२१७ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थानं

सबसे थोड़ा है । इससे उस्कृष्ठ दानि संख्यातगुणी है । यहाँ सम्यक्त्व चौर सम्यग्मिथ्यास्वका अरुप

बहुत्व नदीं है। इसी प्रकर वैक्रियिकमिश्रकाययोंगी कार्मणक्राययोगी और अनाहारक जीबोंके

जानना चाहिए । आहारककाययोगी और अ।हाकरमिश्रकाययोगी जीबोंमें अद्ठाईंस भ्कृतिर्यो का अल्प

बहुत्व नहीं है क्योंकि यहाँ इनका एक अल्पतर पद् दै । इसी प्रकार अपगतवेदी अऋषायी आमिनि

बोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी संयत सामायिकसंयत छेंदोपस्थापना

संयत्त परिहारविशुद्धि संयत सूच्रम सांपरायिक्सयत यथाख्यात्तसंयत सँयतासंयत अवर्धिद्शौनी

शुक्ललेश्यावाले सम्यग्ष्टि वेदकसम्यस्दष्टि उपशमसम्यम्दष्ि साखादनसम्यग्हडि और सम्य

स्मिथ्यादृष्टि जीवोंके जानना चाहिए ।

शंकाभाभिनिबोधिकन्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी संयत सामायिक्संयत छेदोप

स्थापनासंयत संयतासंयत अवधिद्शनी शुक्ललेश्यावाले सम्यग्टष्टि ओर बेदकसम्यम्टष्टि जीबोंमें

सम्यक्त्थ और सम्यग्मिथ्यास्वका अवस्थान सबसे थोड़ा है । इससे हानि असंख्यातगुणी है तथा

इससे वृद्धि विशेष अधिक है ऐसा क्यों नहीं कदा है ९

समाधाननदीं क्योकि विवक्षित मार्गंगाओंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी वृद्धि

और अवस्थानका अभाव है। किन्तु इतनी विशेषता है कि शुल्तलेश्याबाले जीबोंमें उक्त दो

प्रकृतियोंका उत्क् अवस्थान सबसे थोढ़ा है। इससे हानि असंख्यातगुणी है तथा इससे वृद्धि

विशेष अधिक है।

२१८ मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीबोंमें छब्बीस प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व मूलोघके

समान है। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अल्पबहुष्व नहीं है । इसी प्रकार विर्भगज्ञानी

ओर मिथ्यादृष्टि जीबोंके जानना चादिए । अभव्योंमें छब्बीख प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व मूलोघके

Page 135:

११६ जंयधवलासदहिदे कंसायपाहुडे द्विदिचिहत्ती ३

एकवीसपयडीणं णत्थि अप्पापहुअं ।

एवघरुकस्सप्पाबहुगाणुगमो समन्तो ।

जहणिणया वड्डी जहण्णियः हाणी जहण्णमवहाणं च सरिसाणि।

२१९ इदो एगसमयत्तादो । तेण कारणेण णत्थि अप्पाबहुअं व एदं

चुण्णिपुततं देसामासियं तेणेदेण छचिदत्याणुगमणद्युचारणं मणिस्तामो ।

२२० जहण्णए पयदं । दुविहों णिदेसोओघेण आदेसेण । ओघे० अड्वीसं

पयडीणं जदण्णिया बड़ी दणी अबड्टाणं च तिण्णि वि सरिसाणि एवं सव्वणिरय०

तिरिक्ख ०पचि तिरिक्ख ०पंचिं० तिरि० पज ०पंचिं०तिरि जोणिणिमणुसमणुसपज ०

मणुसिणीदेवभवणादि जाव सदस्सार ०पंचिदियपंचिं० पञ्र०तसतसपज्ञ ०पंचमण ०

पंचवचि ०कायजोगि ०ओरालि०वेउव्विय ०तिण्णिवे ०चत्ता रिकसाय ०असंजद् ०

चक्खु ०अचक्खु ०पंचडे ०भवसि ०सण्णि ०आहारि तति । पंचि०ठिरि०अपज० एवं चेव ।

णवरं सम्मत्तसम्मामि० णत्थि अप्पाबहुगं जहण्णदाणिमेत्ततादो । एवं मणुसअपज्ञ०

सब्वएइंदियसव्वविगलिंदियपंचिं० अपज्ञ ० सव्वपंचकायतसअपजञ ०ओरालियमिस्स ०

वेउव्वियमि ०कम्महय ०तिण्णिअण्णाणमिच्छादिअसण्णिअणाहारि ति ।

२२१ आणदादिं जाव उवरिमगेवजो ति छव्बीसं पयडीणं णत्थि अप्पाबहुगं

एगपदत्तादो सम्मत्त सम्मामि सब्वत्थोवा जह० हाणी। जद्द० बड्डी असंखे०

समान है । क्षायिक सम्यस्टष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व नहीं है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्वानुगम समाप्त हुआ

जघन्य वृद्धि जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान समान हैं ।

२१६ क्योंकि इनका प्रमाण एक समय है। इसलिये इनमें परस्पर अल्पबहुस्व नहीं है ।

यह चूणिसूत्र देशामषेक् है इसलिये इससे सूचित होनेबाले अथेका अचुसरण करनेके लिये अब

उच्चारंणका कथन करते हैं हर

२२० जघन्य अल्पबहुत्वका प्रकरण है। उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है

ओपघनिदेश और आदेशनिर्देश । उनमेंले ओघकी अपेक्षा अट दै प्रकृतियों ङी जवन्य वृद्धि हानि

और अवस्थान ये तीनों ही समान हैं। इसी प्रकार सब नारकी तियंच पंचेन्द्रिय तियेद् पंचेन्द्रिय

तिर्य्॑ पर्याप्त पेचेन्दरिय तिये योनिमती मनुष्य मचुष्य पर्याप्त मजुष्यनी देव भवनबासियोंसे

लेकर सदसार कल्पतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्यास्र चस न्नसपर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों

बचनयोगी काययोगी ओऔदारिककाययोगी वैक्रियिककाययोगी तीनों वेदवाढे चारों कषायवाले

असंयत चछुदर्शनवाले अचज्षुद्शनवाले ऋष्णादि पाँच लेश्याबाले भव्य संज्ञी ओर आहारक

जीबोंके जानना चाहिए। पंचेन्द्रिय तिर्यच् अपर्याप्त जीवोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु

इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अल्पबहुत्व नहीं है

क्योंकि इनकी यहाँ जघन्य हानि मात्र पाई जाती है। इस्री प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब एकेन्द्रिय

सब बिकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सब पाँचों स्थावरकाय त्रस अपयाप्त औदारिकसिश्रकाययोगी

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी कार्मणकाययोगी तीनों अज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंज्षी ओर अनादारकं

जीवॉके जानना चाहिए। है है

२२१ आनतकल्पसे लेकर उपरिम ग्रैवेयकतकके दे बोम छब्बीस प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व

नहीं है क्योंकि इनका यहाँ एक पद पाया जाता है। सम्यकत्थ भौर सम्यग्सिध्यात्वकी जघन्य हानि

Page 136:

भा० २२ बड्डिपरूवणा । ११७

गुणा । इदो तप्पाओगगु्वेष्टणकंडयमेत्तत्तादो । एवं सुक्लेस्सिएस । णवरि तिरि०

सणुस्सेस सुकलेस्पिएसु सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं जदण्णमवद्भाणं पि संभवदि ।

२२२ अणुदिसादि जाव सब्वद्ठसिद्धि त्ति अड्कावीसपयडीणं णत्थि अप्पाबहुगं ।

एवमादार ०आदहारमिस्स ०अवग॒द ०अकसा ० आभिणि ०सुद ० ओहि ० मणपज्ञ ० संजद

सामाइयछेदो ०परिहार ०सुहुम जदाक्खाद् ०संजदासं जद ०ओहिदंस सम्मादि ०

ख्य ०वेदय उवसम ०सासण ० सम्मामिण्दिद्ि त्ति। अभविय० छत्वीसं

पयडीणं जहण्णवड्डिहाणिअबड्डाणा्ं णत्थि अप्पाबहुगं समाणत्तादो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते पदणिक्खेवाणुगमो समत्तो ।

। वड्डो

एत्तो वी ।

२२३ एत्तो पदणिक्छेवादो उवरिं बड्डिं भणामि त्ति भणिदं होदि । का बड़ी

णाम १ पदणिक्खेवविसेसो बडी । तं जहापदणिक्खेवे उक० बड्डी उक्ृ० हाणी

उकस्समवद्वाणं च परूबिदं ताणि च वड्डिहाणिअवद्टाणाणि एगसरूवाणि ण होति

अणेगसरूबाणि त्ति जेण जाणावेदि तेण पदणिक्लेवविसेसो षड्भि ति चेत्त्वं ।

सबसे थोड़ी है । इससे जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी हैं क्योंकि उसका श्रमाण तत्पायाग्य उद्वेजन

काण्डकमात्र है इसी प्रकार शुक्तलेश्याबाले जीवोंमे जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि

पि और मनुष्य शुक्ललेश्यावाले जीवों सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वक्रा जघन्य अवस्थान

भी सम्मव है ।

२२२ अनुविशसे लेकर सर्बाथेसिद्धितकके देवोंमें अद्ठाईस प्रकृतियोंका अल्पबहुस्व नहीं

है । इसी प्रकार आद्वारककाययोगी आहारकमिश्नकाययोगी अपगतवेदवाले अकषायी अभिनि

बोधिकज्ञानी श्रतज्ञानी अ वधिज्ञानी मनःपयैयज्ञानी संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत्त

परिद्ारविशुद्धिसंयत सृुद्दमसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत अवधिदशनी सम्यग्दृष्टि

क्षायिकसम्यग्टष्टि वेदकसम्यग्टष्टि उपशमसम्यम्टष्टि सासादनसम्यग्दष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि

जीबोंके जानना । अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतितियोंकी जघन्य वृद्धि हानि और अवस्थान नहीं होनेसे

अहरुपबहुत्व नहीं है क्योकि ये तीनों समान हैं ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त द पदनिक्षेपानुगम समाप्त हुआ।

६

अब यहाँ सेब्द्धिका कथन करते है । ।

वि है २२३ इसके अर्थात पद्नित्तपके अनन्तर अब बृद्धिका कथन करते हैं । यह इस सूत्रका

तात्पय है ।

शंकाश्धि किसे कहते हैं ९

समाधानपदनिक्तेपविशेषको वृद्धि कहते हैं। खुलासा इस प्रकार हैपदनिश्षेपमें उच्छ

वृद्धि उत्कृष्ट हानि और उत्कृष्ट अवस्थानका कथन क्रिया किन्तु वे वृद्धि हानि ओर अवस्थान

एकरूप न होकर अनेकरूप हैं यह बात चूँकि इससे जानी जाती है अतः पदनिततेप विशेषको दद्धि

कहते हैं ऐस। यहाँ प्रदरण करना चाद्विए ।

ता प्रतौ मणपज्ज० संजदा संजद आ० भरतौ मणपज्ञ० संजदासंजद० इति पाठः ।

Page 137:

१६८ यधवलासदिदे कसायपाहुडे द्िदिविहत्ती है

२२४ एत्थ बड्डिहाणीणमत्थपरूवणाएं कीरमाणाणए तत्थ ताव तासि सख्वं

जुचदे । तत्थ बड़ी दुविद्दासत्थाणवड्डी परत्थाणवड्डी चेदि । तत्थ एगजीवसमासमरिसिद्ण

ड्विदीणं जा बड़ी सा सट्ठाणबड़ी णाम । तं जहाचदुण्डमेईदिाणमप्पप्यणो जहण्णबंधस्सुवरि

समयुत्तरादिकमेण जाव तेति चेव उकस्सबंधो त्ति ताव णिरंतरं बंधमाणाणमसंखेजदि

भागवड्ी चेव होदि । इदो १ पलिदोवमस्स असंखेज़दिभागमेत्ताणं चेव वीचारडाणाएं

तत्थुबलंभादो । हेड्ढा ओदरिदूण बंधमाणाणं पि एका चेव असंखेजभागद्ाणी होदि ।

बेइंदियतेइंदियचउरिंदियअसण्णिपंचिंदियपजत्त पजत्ताणमड्॒ण्णं पि जीवसमासाणम

प्पप्पणो जदण्णबंधप्प्डुडि समयुत्तरादिकमेण जाव तेसिम्ुकस्सबंधो त्ति ताव बंधमाणाण

मसंखेजमागवड्धी संखेजभागवद्भि त्ति एदाओ दो चेव बड़ीओ होति एदेसु अदसु

जीवम सेसु पलिदो ० संखे भागमेच्वीचारड।णुवरलंभादो । पुणो उकस्सबंधादो समयुणादि

कमेण ददा ओसरिदण वंधमाणाणमसंखेज्ञमागहाणी संखेज्मागहाणी च होदि ।

सण्णिपंचिदियपजत्तापजत्ताणं दोण्हं पि जीवसमासाणमप्पप्पणो जहण्णबंधप्पहुडि जाव

समुकस्सबंधो द्वि ताव समयुत्तरादिकमेण बंधमाणाणमसंखेजभागबड्डी संखेजमामवड्ी

संखेजगुणव्डि त्ति एदाओ तिण्णि बड्डीओ होति । पुणो हदा ओसरिदृण बंधमाणाणम

संखेज्ञभागदहाणी संखेज्ञमागहाणी संखेजणुणहाणि त्ति एदा तिण्णि हाणीओ होति ।

णवरि सण्णिपंचिदियपज्त्तणएसु केसि चि कम्माणमसंखेजगुणवडी असंखेजञगुणहाणी

च होदि ।

२२४ यहाँपर वृद्धि ओर हानि की अर्थश्ररूपणा करनेपर पहले उनका स्वरूप कहते हैं ।

इन दोनोंमेंसे वृद्धि दो भकारकी हैस्वस्थानबुद्धि और परस्थानबृद्धि। उनमेंसे एक जीवसमासके आश्रयसे

स्थितियोंकी जो वृद्धि होती है बह स्वस्थान बृद्धि है । यथाचार एकेन्द्रियोंके अपने अपने जघन्य

बन्धके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे लेकर जबतक उन्हीं का उत्क्ष्टबन्ध द्वोता है तबतक निरन्तर

बन्धवाले उन कर्मोकी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है क्योंकि वहाँपर पल्यके असंख्यातर्वे भागप्रमाण

बीचारस्थान पाये जाते हैं । तथा उत्कृष्टस्थतिसे नीचे उतरकर वंधवाले कर्मो़ी मी एक असंख्यात

भागहानि दी होती है। दोइन्द्रिय चीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और इनके

अपर्याप्त इन आठों दी जीवसमासोंके भी अपने अपने जघन्यबन्धसे लेकर एक समय अधिक आदिके

क्रमसे उत्कृष्टबन्ध तक वंधनेवाले कर्मोकी असंख्यातभागबुद्धि और संख्यातभागबृद्धि ये दोनों दी

बृद्धियां होती हैं क्योंकि इन आठ जीवसमासोमें पल्यके संख्याते भागप्रमाण वीचारस्थान पाये

जाते हैं । पुनः उत्क्ष्टबन्चले एक समय कम आदि क्रमसे नीचे उतरकर बंधनेवाले कर्मोकी असंख्यात

भागानि चौर संख्यातभागहानि दोती है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त इन दोनों

जीवसमासोंके अपने अपने जघन्यबन्धसे लेकर अपने अपने उत्कृष्टन्नध तक एक समय अधिक

आवदिके क्रमसे घंघनेवाले कर्मोकी असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबृद्धि ये

तीन बृद्धियां होती हैं । पुनः नीचे उतरकर बंघनेवाले कर्मोकी असंख्यात भागदानि संख्यातभागहानि

और संख्यातगुणद्वानि ये तीन द्वानियां होती हैं। किन्तु इतनी विशेषता है कि संज्ञीप॑चेन्द्रिय

पर्याप्तकोंमें किन्दीं कर्मोकी असंख्यातगुणबृद्धि ओर भसंख्यात्तगुणदानि होती है ।

Page 138:

गा० २२ बह्धिपरूपणा ११६

विेषारथजीवसमास चौदह है । इसमेंसे प्रत्येकमें जो अपनी अपनी जघन्य स्थितिसे

लेकर अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक बुद्धि दोती है उसे स्वस्थानबृद्धि कहते हैं । और अपनी

अपनी उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर जो अपनी अपनी जघन्य स्थिति तक हानि दोती है उसे स्वस्थान

हानि कहते हैं। इसी प्रकार नीचेके जीवसम।सको ऊपरके जीवसमासमें उत्पन्न कराने पर जो स्थिति

में वृद्धि द्वोती हे उसे परस्थानवृद्धि कहते हैं और ऊपरके जीवसमासको नीचेके जीवसमासमें उत्पन्न

कराने पर जो स्थितिमें हानि होती है उतरे प्रस्थान हानि कहते हैं । इनमेंसे पहले किस जीवसमास

में कितनी स्वस्थानबृद्धि और स्वस्थान हानि सम्भव है इसका विचार करते हैं। मोहनीयके २८

भेद हैं। उन सबकी अपेक्षा एक साथ ज्ञान करना सम्भव नहीं इसलिये पहले मिथ्यास्वकी अपेक्षा

विचार करते हैं । पर कहाँ कौनसी हानि और इद्धि होती है इसका ज्ञान होना तब सम्भव है जब

हम प्रत्येक जीवसमासमे जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिको जान लें। अतः पहले प्रत्येक ज्ीवसमासमें

जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिका विचार किया जाता है सामान्यतः यद् नियम दै कि एकेन्द्रियके एक

सागरप्रमाण द्वीन्द्रिके पच्चीस सागर प्रमाण चरीन्दरियके पचास सागरभरमाण चौइन्द्रियके सौ

सागरप्रमाण ओर असंज्ञी पेचेन्द्रयके एक हजार सागरंप्रसाण उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होता है । तथा

एकेन्द्रियके अपनी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे पल्यका असंख्यातवाँ भाग कम कर देने पर और शेषके अपनी

अपनी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे पल्यका संख्यातवाँ भाग कम कर देने पर जो स्थिति शेष रहती है बह

अपना अपना जघन्य स्थितिबन्ध है । एकेन्द्रियके चार भेद हैं। तथा जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिकी

अपेक्षा उनके आठ भेद दो जाते हैं। अब प्रत्येककी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति लानेके लिये उनकी

निम्न प्रकारसे स्थापना करो ।

१ ण् द छ डर क्ष ७ ट

बापउ सू पउ वाअउ सू अउ सू अज बा अ ज सूपज बा प ज

१९६ ए ट १ र् १४ क्ट

आशय यह है कि एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर जघन्य स्थिति तक मध्यके जितने

विकल्प हैं उसके ३४३ खण्ड करो । बादर पर्याप्तकके स्थितिक्रे ये सब खण्ड पाये जाते हैं । सूम

पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिकी तरफके १६६ और जघन्य स्थित्तिकी तरफके ६८ खण्ड छूट जाते हैं ।

बादर अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिकी तरफके २२४ और जघन्य स्थितिकी तरफङे ११२ खण्ड छूट

जाते हैं । तथा सूक्ष्म अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिकी तरफके २२८ और जघन्य स्थितिकी तरफके

११४ खण्ड छूट जाते हैं ।

द्वीन्द्रियके दो भेद हैं । तथा जघन्य और उल्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा उसके चार भेद हो जाते

हैं। अब श्रत्येककी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त करनेके लिये उनकी निम्न प्रकारसे

स्थापना करो

१ ग् डे छठे

द्वी० प० उ० दड्वी० अ० उ० द्वी० अ० जञ० द्वी० प० ज०

छ १ म्

आशय यह है कि द्ीन्द्ियकी उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर जघन्य स्थिति तक कुल स्थितिके

जितने विकल्प हैं उनके सात खण्ड करो। दवीन्द्रियपर्याप्तकके ये सब खण्ड सम्भव हैं। पर हीन्द्रिय

अपर्याप्तकके उत्क्रष्ट स्थितिकी ओरके चार खण्ड और जघन्य स्थितिकी ओरके दो खण्ड छूट जाते

हैं। त्रीन्द्रिय आदिके द्वीर्द्रियके समान ही विवेचन करना चाहिये ।

इससे स्पष्ट है कि एकेन्द्रियोंके सब भेदोंमें अपने अपने जघन्य स्थितिबन्धले अपना अपना

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पल्यका असंख्यातवाँ भाग अधिक है और दीन्द्रियादिकि अपने अपने जघन्य

Page 139:

१२० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविदत्ती ३

स्थितिबन्धसे अपना अपना उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पल्यका संख्यातवाँ भाग अधिक है । इतने विवेचनके

बाद कद कौनसी द्वानि और दद्धि दोती है इसका विचार करते हैं

एकेन्द्रिय सम्बन्धी चार जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकके जब अपने जघन्य स्थितिबन्धसे उत्कृष्ट

स्थितिबन्ध पल््यका असंख्यातवाँ भाग अधिक है या उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे जघन्य स्थितिबन्ध पल््यका

असंख्यातवाँ भाग दीन है तो यहाँ वृद्धिमें असंख्यातभागवृद्धि और हानिमें असंख्यातभागद्वानि ही

सम्भव हैं क्योंकि यहाँ जघन्य स्थिति एक एक समय स्थितिके वदाने पर या उत्कृष्ट स्थितिमेंसे

एक एक समय स्थितिके घटाने पर असंख्यातभागबृद्धि और असंख्यातभागद्वानि ही दोती है ।

पर इन जीवसमासोंके कुल स्थिति विकल्प भी अपनी अपनी स्थितिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं

अतः जघन्यसे उत्कृष्ट या उत्कृष्टे जघन्य स्थितिबन्धके द्वोने पर भी क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि और

असंख्यातभागहानि ही होती हैं। इस प्रकार एकेन्द्रियकें बद्धिमें असंख्यातभागबृद्धि और द्वानिमें

श्रसंख्यातभागदानि दी सम्भव हैं ।

तथा हीन्द्रियादिकके अपने अपने जघन्य स्थित्िवन्धसे अपना अपना उत्कृष्ट स्थितिबन्ध

पल्यका संख्यातवाँ भाग अधिक है । तथा उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे जघन्य स्थितिबन्ध पल््यका संख्यातवाँ

भग दीन है अतः यहाँ बृद्धि असंख्यातभागव्द्धि ओर संख्यातभागवृद्धि ये दो बृद्धियोँ सम्भव

हैं और द्वानिमें असंख्यातभागद्दानि और संख्यातमागहानि ये दो द्वानियाँ सम्भव हैं । अपनी अपनी

स्थितिके असंख्यातबें सागबृद्धि होने तक असंख्यातभागबृद्धि और हानि द्वोने तक असंख्यात

भागहानि होती है। तथा जब अपनी अपनी स्थितिके संख्यातवें भागकी वृद्धि या द्वानि होने

लगती है तब संख्यातभागबृद्धि या संख्यातभागद्वानि होती है। यहाँ तक एकेन्द्रियादि जीवसमासों में

कहाँ कितनी बृद्धि और हानि होती हैं इसका विचार क्रिया । अब संज्ञी पंचेन्द्रियके विचार करते हैं ।

सामान्यतः संज्ञी पंचेन्द्रियोंके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोढ़ाकोड़ी सागर् प्राप्त होती है और

जघन्य स्थितिबन्ध एक अन्तमुंहूर्त होता है। पर यदह जघन्य स्थितिबन्ध क्षपकश्रेणीमें दी दोता है ।

बैसे यदि एकेन्द्रियादिक जीव संक्षियोंमें उत्पन्न दते दै तो विप्रहगतिमें असंज्ञी पंचेन्द्रियके

योग्य स्थितिबन्ध होता है और शरीर भ्रदण करनेके वाद संज्ञीके योग्य कमसे कम अन्तःकोड़ाकोड़ी

सागर स्थितिका बन्ध होता है । तथा यदि संज्ञी पंचेन्द्रिय संज्षियोंमें उत्पन्न होता है तो उसके

कमसे कम अन्तत्कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिबन्ध नियमसे द्वोता है। अब इनके उत्तर

म्मे जवन्य और उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त करनेके लिये उनकी निम्न प्रकारसे स्थापना करो

संज्ञो प०ज० संज्ञी अ० ज० संज्ञी अ० ड० संज्ञी प० उ०

आशय यह है कि संज्ञी पर्याप्की जधन्य स्थिति अन्तःकोड़कोड़ी सागरसे संज्ञी अपर्याप्तक

की जघन्य स्थिति रूुख्यातगुणी अधिक है। इसी प्रकार उत्तरोत्तर आगे आगे भी जानना चाहिये ।

इससे इतना स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ अपने अपने जघन्य स्थितिबन्धसे अपना अपना उत्कृष्ट

स्थितिबन्ध संख्यातगुणा अधिक है और अपने अपने उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे अपना अपना जघन्य

स्थितिबन्ध संख्यातगुणा हीन है इसलिये यहाँ प्रत्येक भेदमें असंख्यातभागइद्धि संख्यातभागवृद्धि

और संख्यातगुणबृद्धि ये तीन बृद्धियाँ तथा असंख्यातभागहानि संख्यातभागद्वानि ओर संख्यात

गुणानि ये तीन द्वानियाँ बन जाती हैं इनका विशेष खुलासा मूलमें किया ही है तथा हम भी

आगे लिखे अनुसार खुलासा करनेवाले हैं अतः यहाँ विशेष नहीं लिखा गया है। तथा संज्ञी

पर्याप्तक्ों मेंसे किसी किसी जीवके किसी किसी कमंकी असंख्यातगुणबृद्धि ओर असंख्यातगुणद्ानि

भी होती है। जैसे जब किसी जीवके सम्यक्त्व या सम्यम्मिथ्यात्वकी स्थिति पल्यके सख्यां

भागके भीतर शेष रह जाती है और तब वह जीव उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है तो उसके

सम्यकत्वको अद करनेके प्रथम समयमें सम्यक्त्व या सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणबद्धि होती

है। इसीप्रकार अनिश्नत्तिकरणमें दूरावकृष्टिकी प्रथमस्थिति कांडकघातकी अन्तिम फालिके पतन

Page 140:

गा० २२ बड्डि परूवणा १२१

२२४ संपि परत्थाणवड़ी उच्चदे ॥ का परत्थाणवड्डी १ एडंदियादिद्ेष्टिम

जीवसमासाओ उवरिमजीवसमासासु उष्पाहदे जा द्िदीणं बड़ी सा परस्थाण

बड़ी णाम ।

२२६ संपदि सत्थाणबड्डीए ताव णिरंतरबड्डिपरूवर्ण कस्सामो । तं जद्दा

सण्णिपेचिदियपजत्तो मिच्छत्तस्स सञ्बजहण्णियमंतोकोडाकोडिमेचट्धिदिं बंधमाणो

अच्छिदो तेण समयुत्तरजहृण्णट्टिदीए पबद्धाए असंखेजमागबड़ी होदि । पणो तिस्से को

पडिभागो १ धुवद्धिदी । दुसमयुत्तरादिद्टविदीए पत्रद्धाए वि असंखेजमागवड़ी चेव होदि ।

तिस्से को पडिभागो पृव्यभागहारस्स दुभागों। तिसमयुत्तरजदण्णट्विदीए पबद्धाए वि

असंखेजभागवड़ी चेव होदि तिस्से मागहारो पुव्वभागहारस्स तिमागो । तस्स को पडि

भागो १ वद्धिरूबाणि । एवं चत्तारिपंचछसत्तड्ादिकमेण वडुवेदन्वं जाव धुव्टिदीए

उवरि धुत्द्टिदी पलिदोवमसल।गमेत्तट्टिदीओ बडदाओ त्ति। तासु ब्धिदासु वि असंखेज

भागवी चेव होदि तकाले धुवष्ठिदिभागहारस्स पलिदोवमपमाणत्तादो । पुणो

तदुबरि एगसमयं बड्डिदृण बंधमाणस्स वि असंवेजञमागवड़ी चेव होदि । इदो तत्थ

दोनेपर असंख्यातगुणद्वानि होती हे । क्योकि दूरापक्रष्ट संज्ञावाली स्थितिके प्रथम स्थितिकांडकसे

लेकर ऊपरकी सब स्थितिकांडकोंकी घातकर शेष रही हुई सब स्थिति असंख्यातवें भाग प्रमाण

दोती है। इस प्रकार संज्ञीपर्याप्कके चार वृद्धियाँ और चार हानियाँ दोती हैं तथा संज्ञी अपर्याप्कके

तीन वुद्धियं और तीन हानिं होती हैं यह निश्चित होता है ।

२२५ अब परस्थानवृद्धिका कथन करते हैं ।

शंकापरस्थानञद्धि किसे कहते हें ९

समाधानएकेन्द्रियादिक नीचेके जीवसमासोंको ऊपरके जीवसमासोंमें उत्पन्न करानेपर

जो स्थितियोंकी वृद्धि होती है उसे परस्थानबृद्धि कहते हैं ।

२२६ अब पहले स्वस्थानवृद्धिसंबन्धी निरन्तरबृद्धिका कथन करते हैं जो इस प्रकार है

जो संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव मिथ्यात्वकी सबसे जघन्य अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिको

बांधकर अवस्थित है पुनः उसके एक समय अधिक जघन्य स्थितिका बन्ध होनेपर असंख्यातमाग

वृद्धि होती है। इसका क्या प्रतिमाग है ९ धुवस्थिति । दो समय अधिकआदि स्थितिका बन्ध दोनेपर

भी असंख्यातभागबृद्धि दही होती है। इसका क्या प्रतिभाग है पूर्व मागदार अर्थात् श्रुवस्थितिका

दूखरा भाग प्रतिभाग है । तीन समय अधिक जघन्यस्थितिका बन्ध दोनेपर भी असंख्यातमागवृद्धि

ही होती है । इसका भागहार पूर्वं भागहारका तीसरा भाग है। इस तीखरे भागको प्राप्त करनेके

लिये क्या प्रतिभाग है १ वृद्धिके अङ्क इसका प्रतिभाग है। इसी प्रकार चार पाँच चह सात अर

आठ आदिके क्रमसे ध्रुबस्थितिके ऊपर एक ध्ुवस्थितिमें पल्योंकी जितनी शलाका हों उतनी

स्थितिकी वृद्धि द्वोनेतक ध्रुवस्थितिको बढ़ाते जाना चाहिये। इतनी स्थितियोंके बढ़ जानेषर

भी असंख्यातभागबृद्धि द्वी होती है क्योंकि उस समय भुवस्थितिका भागदार एक पल्य है। पुनः इसके

ऊपर एक समय बढ़ाकर बाँधनेवाले जीवके भी असंख्यातभागवृद्धि दी होती है क्योंकि यदॉपर भ॒व

१ ता० भरतौ पडिबद्धाए इति पाटः ।

१६

Page 141:

श्र जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्िदिविदत्ती ३

धुबड्धिदीए किंचूणपलिदोवममेत्तमागहारत्तादो । एवं समयुत्तरहुसमयुत्तरादिकमेण

चड्ढावेदव्य॑ं जाव दुगुणपलिदोवमसलामगाओ वड्डिदाओ त्ति । तत्थ वि असंखेजभागवड़ी

चेव होदि । इदो धुबट्धिदीए पलिदोवमस्स दुभागमेत्तमागह।रचादो । एवं गंतूण पलिदो

चमसलागमेत्तपटमवग्गमूलाणि बड्िदण बंधमाणस्स वि असंखेज़भागवड़ी चेव होदि

तत्थ धुबड्टिदीए पलिदोवमपढमवग्गमूलभागह।रचादो । एवं धुत्रद्धिदिभागद्दारों कमेण

विदियवग्गमूलं तद्यवग्गसूर्ल चउत्थवग्गमूल च होदूण पंचमबग्गमूलादिकमेण जहण्ण

परित्तासंखेज॑पत्तो । ताथे वि असंखेजभागबड्डी चेव । पुणो एवं बड्डिद्णच्छिदद्िदीए

उवरिमेगसमयं क्डिदूण बंधमाणस्स छेदभागहारो होदि । एसो छेदमागहारो केचियमेत्त

मद्भाणं गंतूण फिड्ठदि त्ति बुत्ते बुचदे । जहण्णपरित्तासंखेजण धुवद्धिदें खंडिय पुणो

तत्थ एभखंडे उकस्ससंखेजेण खंडिदे तत्थ जत्तियाणि रूबाणि सूवृणाणि तत्तियाणि

रूवाणि जाव बड्डिदृण बंधदि ताव छेदभागहारो होदि । संपुण्णेसु वड्डिदेसु छेदभागहारो

फिट्टदि धुवद्धिदीए उकस्ससंखेजमेत्तमागहारस्स जादत्तादो ।

२२७ संपहि छेदभागहारो असंखेजसंखेजमागवड़ीसु कत्थ णिवददि १ ण ताव

असंखेजभागबड्डीए जहण्णपरित्तासंखेजादो देष्िमसंखा असंखेजत्तामावादो । मवे वा

जदण्णपरित्तासंखेजस्स जदण्णविसेसणं फिडदि तत्तो हेडा बि असंखेज़स्स संभवादो ।

ण संखेजभागवड़ीए उकस्ससंखेज्ञादो उबरिमसंखाए संखेजत्तविरोहादो अबिरोहे वा

स्थितिका मागार कुछ कम पर्य है । इसी प्रकार एक समय अधिक दो समय अधिक आदि क्रमे

एक ध्रुवस्थितिके पर्योसे दूनी शलाकाओंकी वद्धि होने तक स्थितिको बढ़ाते जाना चाहिये। यहाँ

पर असंख्यातभागबृद्धि दी होती है क्योंकि यदॉवर धुवस्थितिका भागहार पल्यका द्वितीय भाग

है । इसी प्रकार आगे जाकर पल्योपम की जितनी शलाका हैं उतने प्रथम बर्गमूलप्रमाण स्थितिको

बढ़ाकर बांधनेवाले जी वके भी असंख्यातभागबृद्धि ही दोती है क्योंकि बहॉपर भ्रत्रस्थितिका भागहार

परल्योपसका प्रथम वर्गेमूल है। इस प्रकार धुबस्थितिका भागदार् क्रमले द्वितीय वर्गमूल तृतीय

वर्गेमूल और चतुर्थ बर्गेमूल होता हुआ पांचवाँ वर्गमूल आदि क्रमते जघन्य परीतासंख्यातको प्राप्त

होता है । वहाँ पर भी असंख्यातभागबृद्धि ही होती है । पुनः इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुई स्थितिके

ऊपर एक समय बढ़ाकर बाँधनेवाले जीवके छेदभागहार द्वोता है। यह छेद्भागद्वार कितने स्थान

जाकर समाप्त दता है ऐसा पूछनेपर कहते हैंजघन्य परीतासंख्यातका धरुवस्थितिमें भाग देनेपर

जो एक भाग प्राप्त हो उसे उत्कृष्ट संख्यातसे भाजित करनेपर वहाँ जितनी संख्या प्राप्त हो

एक कम उतने अंकप्रमाण स्थितिको बढ़ाकर बांधने तक छेद्भागदार होता है और संपूर्ण अंक

प्रमाण बढ़ाकर स्थितिको बांबनेपर छेद्भागद्वार समाप्त होता दैः क्योंकि यहाँ भ्ुवस्थितिका उच्छृ

भागहार उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण हो जात है ।

२२७ अब छेद्भागद्वारका असंख्यातभागवृद्धि और संख्यातमागबृद्धि इन दोनोंमेंसे

किसमें समावेश होता है १ असंख्यात भागबृद्धिमें तो होता नहीं क्योंकि जघन्य परीतासंख्यातसे

नीचे की संख्या असंख्यात नहीं हो सक्तती । यदि वह असंख्यात मान ली जाय तो जघन्यपरीता

संख्यातका असंख्यात यह विशेषण नष्ट होता है क्योंकि उसके नीचे भी असंख्यातकी संभावना

मान ली गई। तथा संख्यातभागवरद्धिते भी उसका समावेश नहीं होता क्योंकि उत्कृष्ट संख्यातसे

Page 142:

गा० २२ वट्टिपरूवणा १२३

उकस्ससंखेजस्स उकस्सविसेसणं फिडदि तत्तो उवरि पि संखेजस्स संमबुबरंभादो तति

अवत्तव्ववड्ीए णिवददि । कथमवत्तव्वदा संखेज्जासंखेज्जसंखाहिंतो पुधभूदत्तादो ।

संखेज्जासंखेज्जाणंतेहिंतो जदि पुधभूदा तो संखा चेव ण होदि । अध होदि तो अब्बावी

तिविदहसंखाववहारो त्ति १ ण ताव संखेज्जासंखेज्जाणंतेहिंतो पृधभूदा संखा णत्थिः पिण्ड

संखाणं विच्वालेसु अणंतवियप्पसंखाए उबलंभादो । ण संखासण्णा अव्वाविणी दच्बद्धिय

णए अवरंभिज्जमाणे तेति सव्वेति पि अणंतंसाणं एगरूवम्मि पविद्ाणं मेदाभावेण

असंखेज्जाणंतेस चेव पवेसादो । एस्थ पुण णश्गमणए अविलंबिज्जमाणे संखेज्जासंखेज्जा

णंतावत्तव्वमेएण चउच्िहा संखा होदि । इदो दव्वह्लियपज्जवद्धियणयविसयमव्लंबिय

णइगमणयसमुप्पत्तीदी । संपदि उकस्ससंखेजे भागहारे जादे संखेजभागवडीए

आदी जादा ।

२२८ एसो पहुडि छेदभागहारों समभागहारों दोदृणुवरि मच्छदि जाव

धुबह्धिदिभागहारो एगरूबं जादो त्ति । पणो तकाले संखेजगुणवड्ढी होदि धुवद्दीदीए

उवरि धुवद्रीदीए चेव बंधेण ब्डिदंसगादो । एत्तो पहुडि जाव उकस्सद्ठिदिं बड्डिदूण

ऊपरकी संख्याको संख्यात माननेमें बिरोध आता है । यदि उसे संख्यात मान लिया जाय तो उत्कृष्ट

संख्यातका उत्कृष्ट यह विशेषण नष्ट होता है क्योंकि उसके ऊपर भी संख्यातकी संभावना है। अतः

छेद्भागहारका अवक्तव्य वृद्धिं समाविश होता है।

शंकायह संख्या अवक्तव्य कैसे है ९

समाधानसंख्यात और असंख्यातसे प्रथग्भूत होनेके कारण यद संख्या अवक्तव्य है।

शंकासंख्यात असंख्यात ओर अनन्तसे यदि यह संख्या प्रथम्भूत है तो बह संख्या ही

नहीं है। और यदि वह संख्या है तो तीन प्रकारा संख्याव्यवहार अव्यापी होजाता है ।

समाधानसंख्यात असंख्यात और अनन्तसे प्रथ्भूत संख्या नहीं है यह बात नहीं है

क्योंकि तीन प्रकारकी संख्याके अन्तरालमें अनन्त विकल्पवाली संख्या पाई जाती है। पर इससे

संख्या यह संज्ञा अव्याप्त भी नहीं होती हे क्योंकि द्रयार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर वे सभी

अनन्त अंश एकमें प्रविष्ट हैं अतः भेद नहीं होनेसे उनका असंख्यात और अनन्तमें ही समावेश

हो जाता है । परन्तु यहाँ पर नैगमनयका अवलम्ब लेने पर संख्यात असंख्यात अनन्त और

अवक्तव्यके भेदसे संख्या चार प्रकारकी है क्योंकि द्॒व्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयके विषयका

अवलम्ब लेकर नैगमनय उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार उत्कृष्ठ संख्यात भागद्वार दो जाने पर संख्यात

भागवृद्धिका प्रारम्भ हुआ ।

२२८ यहाँसे लेकर छेदभागद्दार और समभागद्वार होकर आगे तबतक जाता है जबतक धुव

स्थितिका भागहार एकरूपको प्राप्त होता है । अर्थात् ध्रुवस्थितिके ऊपर धुवस्थितिकी ब॒द्धि होने तक

उक्त भागहवारकी प्रत्त होती है । पुनः उस समय संख्यातगुणबृद्धि होती है क्योंकि यहाँ ध्रव स्थतिके

ऊपर भुवस्थितिकी ही बन्धरूपसे वृद्ध देखी जाती है। इससे आगे स्थितिमें उत्तरोत्तर झद्ध करते

Page 143:

श्र जयधवलासदिदे कसायपाहुडे दविदिविहत्ती ३

बंधदि ताव संखेजगुणवडी चेव द्ोदि । असंखेजगुणवड्डी मिच्छत्तस्स किण्ण होदि १

ण धुबड्डीदीए पलिदोवमस्स असंखेज्ञदिभागपमाणत्तप्पसंगादो । ण च धुवद्धिदी तत्तिय

मेत्ता अत्थि तिस्से अंतोकोडाकोडसागरोवमपमाणत्तादो एसा धुह्धिदी असंखेजरूवेहि

शुणिदमेत्ता बंघेण किण्ण बडुदि १ ण उकस्सष्िदीए असंखेजसागरोबमपमाणत्तप्प

संगादो । ण च एवं तदोवदेसामावादो ।

हुए उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध तक संख्यातगुणबृद्धि ही होती हे ।

शंकामिथ्यात्वकी असंखयात गुणबृद्धि क्यों नहीं होती दै ९

समाधान न्धी क्योंकि मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणबृद्धि मानने पर ध्रुवस्थिति पल्यो

पमके असंख्यातबें भागप्रमाण श्राप्त दोती है । परन्तु ध्रुवस्थिति इतनी तो है नहीं क्योंकि बह अन्तः

कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण है ।

शंकाइस ध्ुबल्यितिमें बन्धरूपसे असंख्यातगुणी बृद्धि क्यों नहीं होती है ९

समाघाननहीं क्योंकि इसप्रकार वृद्धि मानने पर उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात सागरप्रमाण

हो जायगी । परन्तु ऐसा है नहीं क्योकि इस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

विरोषार्थं यदय यह बतलाया है कि भ्रुवस्थितिके ऊपर एक समय दो समय आदि

स्थितियोंके बढ़ने पर कहाँ तक असंख्यातभागबृद्धि होती हैं कहाँसे संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ

होता है और कहाँसे संख्यातगुणबृद्धि चाद होती है। जबतक स्थिति विवक्तित स्थितिके असंख्या

तबें भाग प्रमाण तक बढ़ती है तब तक असंख्यातभागवृद्धि होती है। इसके आगे संख्यातभाग

बृद्धि होती है जो विवज्षित स्थित्तिके दूने द्वोनेके पूवेतक होती है। तथा जब विबज्षित स्थिति

दूनी 4 इससे अधिक बढ़ती है तब संख्यातगुणबृद्धि होती है। विशेष खुलाश्ा इस

प्रकार है

ऐसा जीव लो जिसने पहले समये भुवस्थितिका बन्ध किया था। किन्तु दूसरे समयमें

उसने धुवस्थितिसे एक समय अधिक धुवस्थितिका बन्ध किया गो पिछले समयके बन्धसे यहं बन्ध

अ्रसंख्यातवे भाग अधिक हुआ । अतः यहाँ असंख्यातभागवृद्धि हुई। यहाँ भागद्वारका प्रमाण

घुबस्थिति है क्योंकि धुबस्थितिका धुबस्थितिमें भाग देनेपर एक श्राप्त होता है । अब एक ऐसा

जीव लो जिसने पिछले समयमे ध्रु बस्थत्तिका बन्ध किया और अगले समयमे दो समय अधिक

भुबस्थितिका बन्ध किया तो पिछले समयके बन्धसे यह् बन्ध भी असंख्यातबें भाग अधिक हुआ

क्योंकि दो यद्द ध्ुवस्थितिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है अतः यहाँ असंख्यातभागवृद्धि हुई। यहाँ

दोके भ्राप्त करनेके लिये भागद्वारका प्रमाण ध्रुवस्थितिका आधा दो जाता है। अब एक ऐसा जीव

लो जिसने पिछले समयमें धुवस्थितिका बन्ध किया और अगले समयमे तीन समय अधिक धुव

स्थितिका बन्ध किया तो पिछले सखमयके बन्धसे यह वन्ध भी असंख्यातबें भाग अधिक हुआ

क्योंकि तीन यह संख्या भी धरुबस्थितिके असंख्यात भागप्रमाण है। अतः यहाँ भी असंख्यात

आगवृद्धि हुईं। यहाँ शद्धिरूप अंक तीनके प्राप्त करनेके लिये भागहारका भ्रमाण प्रुवस्थितिका तीसरा

भाग द्वो जाता है। इसी प्रकार पिछले समयमें ध्रुबस्थितिका तथा अगले समयमें चार पाँच समय

आदि अधिक घुवस्थितिका बन्ध कराने पर भौ असंख्यातभागबृद्धि ही द्वोती है क्योंकि यहाँ

Page 144:

गा० २२ बड्डि परूबणा १२४

भागहारका प्रमाण धरुवस्थितिका चौथा भाग पाँचवाँ भाग आदि प्राप्त होता है। अब मान लो एक

जीव ऐसा है जिसने पिछले समयमें ध्रुवस्थितिका बन्ध किया और अगले समयमे श्रुवस्थितिें

जितने पल्य हों उतने समय अधिक धुबस्थितिका बन्ध किया तब भी असंख्यात भागवृद्धि दी प्राप्त

होती है क्योकि यहाँ भागहारका प्रमाण पर्य है । इसी प्रकार उत्तरोत्तर पिछले समयमें बेंधनेवाली

घ्रुवस्थितिसे अगले समयमें बेंधनेबाली स्थितिमें एक एक समय बढ़ाते जाओ और उनका भागद्वार

ब्राप्त करते जाओ। ऐसा करते करते भागद्वारका प्रमाण जघन्य परीतासंख्यात प्राप होगा । अथात्

पिछले समयमें किसीने ध्रुवस्थितिका बन्ध किया ओर अगले समयमें इतनी अधिक स्थितिका बन्ध

किया जो धुवस्थितिमें जघन्य परीतासंख्यातका भाग देनेपर जितना लब्ध प्राप्त हो उतनी अधिक

है तो भी असंख्यातभागबृद्धि दी होती है। इस प्रकार यहाँ तक अखंख्यातभागबृद्धिका क्रम चाद

रहा । अब इसके आगे भागद्दारमें यदि एक ओर कम हो जाय तो संख्यातभागबृद्धि प्राप्त होवे ।

किन्तु पूर्वोक्त बढ़ी हुई स्थितिमें एक समय आदि स्थितिके बढ़नेसे भागहारमे एकक कमी न होकर

बह बटोंमें प्राप्त होता है । किन्तु इसकी परीतासंख्यात ओर उल्छृष्ट संख्यात इनमेंसे किसीमें भी

गणना नहीं की जा सकती है क्योंकि उत्कृष्ट संख्यातमें एकके मिलाने पर जघन्य परीतासंख्यात

होता है या जघन्य परीतासंख्यातमेंसे एकके घटाने पर उत्कृष्ट संख्यात होता है ऐसा नियम है ।

किन्तु यहाँ पर जघन्य परीतासंख्यातमेंसे पूरा एक न घटकर उत्तरोत्तर एकके अंशोंकी कमी होती

गई है अतः इसे अवक्तव्यभागबृद्धि कद्दते हैं। किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि यह् गणना

संख्याके बाहर है । यदि द्रव्यदृष्टिसे विचार किया जाता है तो वे सब अंश उत्कृष्ट संख्यातके ऊपर

प्राप्त होनेवाले एकके हैं अतः उनका अन्तभाव जघन्य परीतासंख्यातमें हो जाता है। और यदि

पर्यायदष्टिसे विचार किया जाता है तो वे सब अंश एकसे कथञ्चित् भिन्न है इसलिये उनका जघन्य

परीतासंख्यातमें अन्तभाव नहीं होता । जब अन्तरभांव हयो जाता है तब तो उनका भेद्रूपसे विचार

नहीं किया जाता है। और जब अन्तर्भाव नहीं होता तब उनकी अवक्तव्य संज्ञा रहती है । प्रकृतमें

वृद्धिका विचार चला है अतः उसकी अवक्तव्यवृद्धि यद्द संज्ञा हों जाती है। धुवस्थितिमें जघन्य

परीतासंख्यातका भाग देनेसे जो प्राप्त दो उसमें उत्कृष्ट संख्यातका भाग दो ओर जो प्राप्त हो उसमें

से एक कम कर दो ऐसा करनेसे जितने विकल्प प्रात्त होते हैं उतने विकल्प होने तक अवक्तव्य

भागबृद्धिका क्रम चात्यू रहता है। अर्थात् पूर्वोक्त बढ़ी हुई स्थितिमें स्थितिके इतने समय बढ़

जाने तक अवक्तव्यभागबृद्धि होती है । यहाँ सवेत्र पिछले समयमें घ्रुवस्थितिका बन्ध कराना चाहिये

ओर अगले समयमें एक एक समय अधिक स्थितिका वन्ध कराना चाहिये क्योंकि जैसा कि

पहले बतला आये हैं तदनुसार घुवस्थितिकी अपेक्षा द्वी यहाँ असंख्यातभागबृद्धि आदिका विचार

किया जा रद्दा है । इस क्रमसे स्थितिमें एक एक समयके बढ़ाने पर जब छेदभागहार समाप्त दो

आता है तब संख्यात भागबृद्धि प्राप्त दोती है। और जब संख्यातभागबृद्धि समाप्त हो जाती है तब

संख्यातगुणबृद्धि प्राप्त होती है। संख्यातगुणबृद्धिका पहला विकर्प प्राप्त होने पर ध्रुबस्थिति दूनी

दो जाती है । अर्थात् पहले समयमे जब कोई धुवस्थितिका बन्ध करता है और अगले समयमे उससे

दुनी स्थितिका बन्ध करता है तो यह् जघन्य संख्यातगुणबृद्धि होती है क्योंकि पहले समयमें वैधी

हुई स्थितिसे अगले समयमें बंघनेवाली स्थिति दुनी हो जाती है । इस प्रकार अब आगे सत्त

कोड़ाकोड़ी सागर स्थितिके प्राप्त होने तक संख्यातगुणबृद्धि ही होती जाती है। इतने विचारसे

इतना निमः्धित होता है कि धुषस्थितिको माध्यम मानकर असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागबृद्धि

और संख्यातगुणबृद्धि ये तीन बृद्धियाँ दी प्राप्त होती हैं । अब इस विषयको उदाहरण देकर स्पष्ट

किया जाता हैनीचे उदाहरणमें जहाँ इस्र प्रक्तार चिन्ह हैं वहाँ मध्यके विकल्प छोड़ दिये हैं

ऐसा समभना चाहिये ।

Page 145:

१२६ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

२२९ अथवा पलिदोबमं धुवट्टिद च दो एदृण गणिय सत्थम्मि अणिउण

सिस्ससंबोहणड्ट पलिदोवमस्स संखेज्ञमागवङोए जादाए धुबद्धिदीए संखेज़भागवड़ी होदि

मानलोघरुबस्थित्ति पल्य प्रथम बग॑मूल परीतासंख्यात

१११८२ १४४ १२ ६

उत्कृष्ट संख्यात उत्कृष्ट स्थिति

८ ११५२०

पहले समयमें बाँधी हुई अगले समयमे बाँधी भागहार वृद्धि

स्थिति हुई स्थिति

११५२ ११५३ धरुबस्थित्ति असंख्यात मा० बु०

११५२ ११५४ धु स्थि० का आधा वि

११५२ ११५५ तीसरा मार हि

११२ ११६० १४४ पल्य ति

११५२ १२४८ १२ पल्यका ग्र व मू

११५२ १२८० ६ ज० परीता सं० ति

१६५२ १२८१ म्व अवक्तव्य भा० वृण

११२ १२८२ स्वडः

११५२् १२८३ य 0

११५२ १२६५ च्ञ

११४२ १२६६ ८ उत्कृ० संख्यात संख्यात मा० बु०

श्श्श्र १२६७ ७ 3

११५२ १३४४ हे ति

११५२ १७२ र् 9

११५२ २२०४ २ गुणकार संख्या० गु० व्र

११५२ ३४५६ द ध

११४२ ११५२० १० ५ ॐ

२२६ अथवा पस्य ओर ध्ुबस्थिति इन दोनोंको लेकर शाखे अनिपुण शिष्यो

के सम्बोधन करनेके लिये पस्यकी संख्यातभागवृद्धिके होनेपर धुवस्थितिकी संख्यातमागबृद्धि होती

१ ता प्रतौ ढोषुदृण द्रति पाठः ।

Page 146:

गा० २२ बद्डिपरूबणा १२७

त्ति णियमणिराकरणदुवारेण पुणरुत्दोसमजोएद्ण पुणरवि सत्थाणवड्डिपरूवर्ण कस्सामो ।

तं जहापलिदोवमंड्विय पणो तस्स हेड्ढा मागहारो त्ति संकप्पिय अण्णम्मि पलिदो

वमे ठविदे पलिदोवर्म पेक्खिय लद्धरूवे वड्डाविदे असंखेजमागवड़ी होदि । पुणो धुब

दिदि त्ति संखेजपरिदोवमाणि ठविय तेति दा भागहारो त्ति संकप्पिय धुब्धिदीणए

ठविदाए धुवड्डिदि पड़च असंखेजभागबड्डीए आदी होदि । दुसमयुत्तरडिदिं बंधमाणाणं

पि असंखेजमागवङ्की वेव होदि पलिदोवमस्स पलिदोवमदुभागमागद्वारत्तादो । एवं तिण्णि

चत्तारिपंचआदिसरूवेण वड्ुमाणेसु धुव्धिदीए अब्भंतरे पलिदोवमसलागमेचसमणसु

वेषेण वड्डिदेसु पलिदोवर्म धुव्टिदिं च पेक्िखिदूण असंखेज़भागबड्डी चेव होदि पलिदो

वमस्स धुवट्धि दिपलिदोवमसलागोवद्ठिद पलिदोवमभागहारत्तादो धुव्धिदीए पलिदोवम

भागहारत्तादो एवं रूबुत्तरादिकमेण वड्डिर्वाणि गच्छमाणाणि आवलियं पाविय पुणो कमेण

पद्राबलियं पाविय पुणो जधाकमेण पलिदोवमपढमवग्गमूर्ल पत्ताणि ताथे वि पलिदो

बमं धुवद्धिदें च पेक्खिदूण असंखेजभागवड्डी चेव पलिदोवमस्स पलिदोवमपटमवग्म

मूलभागहारत्तादी धघुबड्डिदीए धुबद्धिदिपलिदोवमसलागगुणिद्प लिदोवमपढमवरगमूल

भागहारचादो । एवं गंतृण जहृण्णपरित्तासंखेज़मादिं कादूण जाव पलिदोवमपढमबग्गमूल

चि एदेसिमसंखेज़ा्णं वम्गाणमण्णोण्णन्भासे कदे जत्तिया समया तत्तियमेत्तं धुषहिदीए

उवरि बड्िद्ण बंधमाणस्स वि पलिदोबमं धुवद्धिदं च पेक्खिदूण असंखेजमागवह़ी

है इस नियमके निराकरण द्वारा पुनरुक्त दोषफों नहीं गिनते हुए दुसरी बार भी स्वस्थानबृद्धिका

कथन करते हैं । जो इस प्रकार हैपल्यको स्थापित करके पुनः उसके नीचे भागहाररूपसे एक

दूसरे पल्यके स्थापित कर देने पर पल्यको देखते हुए लब्ध एकके बढ़ाने पर असंख्यातभागबृद्धि

होती है। पुनः यह धृबस्थिति है ऐसा जानकर संख्यात पल्योंकी स्थापना करके और उसके नीचे

यह भागहार दे ऐसा संकल्प करके ध्रवस्थितिके स्थापित करने पर धुवस्थितिको देखते हुए लम्ध

एकके बढ़ाने पर असंख्यातभागबुद्धिका प्रारम्भ होता है। दो समय अधिक स्थितिको बाँधनेवाले

जीवोंके भी असंख्यातभागवुद्धि ही होती है क्योंकि यहाँ पर पल्योपमका मागहार पल्योपमका

द्वितीय भाग है। इसी प्रकार पस्योपमर्मे तीन चार पाँच आदिके बढ़ाने पर तथा ध्रुबस्थितिमें जितने

पल्य हों उतने समयोंके बन्धरूपसे भुवस्थितिमें बढ़ानेपर पल्य ओर धुबस्थितिको देखते हुए असे

ख्यातभागवद्धि दी होती है क्योंकि धुवल्थितिभे जितने पल्य हैं उनका भाग परमे देनेपर जो

लब्ध आवे उतना यहाँ पल्यका भागद्वार होता है और धुवस्थितिका भागदाार एक पल्य होता है ।

इस प्रकार एक अधिक आविके क्रमसे वुद्धिके अंक आगे जाकर एक आवलीग्रमाण हो जाते हैँ ।

पुनः प्रतरावलिप्रसाण हो जाते हैं । पुनः यथाक्रमसे पल्योपमके प्रथम बर्गमूलको प्राप्त होते दै । तब

उस समय भी पल्योपम और धुवस्थितिको देखते हुए असंख्यातभागवुद्धि दी होती है क्योंकि यहाँ

पल्यका भागद्दार पस्यका प्रथमवर्गमूल है और धरुवस्थितिका भागद्दार भुवस्थितिमें जितने पल्य हों

उनसे पल्यके प्रथम वर्गमूलको गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उतना है । इस प्रकार बुद्धि करते हुए

जघन्थ परीतासंख्यातसे लेकर पल्यके प्रथमवर्ग मूलतक इन असंख्यात बर्गोका परस्पर गुणा करनेपर

जितने समय प्राप्त हों उतने समय भुवस्थितिके ऊपर बढ़ाकर बाँधनेवाले जीवके भ॑ पल्य और

घुबस्थितिको देखते हुए असंख्यातमागवृद्धि होती है क्योंकि यहाँ पल्यका भागद्वार जघन्य परीता

१ भाप्रतौ चढ़्िद इति पाठः ।

Page 147:

१२८ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्िदिविहत्ती ३

होदि परिदोवमस्स जहण्णपरित्तासंखेजमामहारत्तादो धुबद्धिदीए पुवद्धिदिषलिदोवम

सकरागगुणिदजदण्णपरित्तासंखेजमागहारत्तादो । एदिस्ते ट्विदीए उवरि एगसमयं बड्डिदण

बंधमाणाणं परिदोवमं धुवद्धिदिं च च पेक्खिदूण छेदभागहारो दोदि । तं जदाजदण्ण

परित्तासंखेजं विरकेदण पलिदोबर्म समखंड कादृण दिण्णे एकेकस्स रूवस्स वड्डिपमाणं

पावदि । संपदि एदिस्से उवरि एगसमयं बड्डिण बंधमाणस्स भागद्वारमिच्छामों चि

एगरूवधरिदं विरलेदुण एगरूवधरिदमेव समखंडं कादूण दिण्णे एकेकस्स रूवस्स एगेग

रूवपरिमाणं पावदि । पणो एत्थ एगरूवधरिदं घेत्तण उवरिमविरलणाए एगेगरूवधरिद्म्मि

इंविंदे इच्छिदबड्डिपमाणं होदि एगरूबपरिहणी च लब्भदि। एवं होदि त्ति

कादूण हेद्धिमविरलणं सूवादियं गंतूण जदि एगरूवपरिदाणी लब्भदि तो अहण्णपरित्ता

संखेज्जविरलणाएं केवडियरूवपरिहाणि रभामो त्ति पमाणेण फरगुणिदिच्छाए ओबदि

दाए जं रद्धं तं जदण्णपरित्तासंखेजम्मि सरिसच्छेद॑ कादूण सोदिदे सेपशक्षस्सं वेजमेत्त

रूबाणि एगरूवस्स असंखेजञा मागा च पलिदोवमस्प धुव्धिदीए उवरि बड्रूबाणं

भोगहारो होदि । एसो पलिदोवमस्स छेदमागहारो । संपहि धुवद्धिदिछेदभागहारपरूवणा

वि एवं चेव कायव्वा । णवरि परिदोवमचेदमागहारम्मि ज्ञीयमाणएगरूवंसादो धुव

ट्विदिछेदभागहारम्मि ज्ञीयमाणअंसो संखेजगुणो होदि परिदोवमभागहारस्स अंस

संख्यात है और ध्रुवस्थितिका भागद्वार एक ध्रवस्थितिमें जितने पल्य हों उनसे जघन्य परीता

संख्यातको गुणित करने पर जितना लब्घ आवबे उतना है । पुनः इस स्थितिके ऊपर एक समय

बढ़ाकर बन्ध करनेवाले जीबोंके पल्य और घर वस्थितिको देखते हुए छेद्भागद्वार होता है। जो इस

प्रकार हैजघन्य परीतासंख्यातका विरलन करके और उस पर पल्यको समान खण्ड करके देय

रूपसे दे देने पर एक एक रूपके श्रति वृद्धिका श्रमाण प्राप्त होता है। अब पूर्वोक्त बढ़ी हुई स्थितिके

उपर एक समय बढ़ाकर रवीधनेवालेका भागहार लाना इष्ठ है इसलिये एक रूपके ऊपर रखी

गई संख्याकाः विरलन करके और एक रूपके ऊपर रखी गई संख्याको ही समान खण्ड करके देय

रूपसे दे देने पर एक एकके प्रति एक एक प्राप्त होता है । पुनः यहाँ एक रूपके ऊपर रखी गई

संख्याको लेकर परिम विरलनमे एक रूपके ऊपर रखी गई संख्याम मिला देने पर इच्छित वृद्धिका

प्रमाण प्राप्त होता है और एक रूपकी हानि प्राप्त होती है । ऐसा होता है देखा सममकर अधस्तन

विरलनमे एक अधिक जाने पर यदि एकरूपकी हानि प्राप्त होती है तो जघन्य परीतासंख्यातरूप

विरलनमें कितने रूपोंकी दानि प्राप्त होगी इस प्रकार चैराशिक करके फलराशिवे इच्छाराशिको

गुणित करके और उसमें प्रमाण राशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे जघन्य परीतासंख्यातर्मेवे

उसके समान छेद करके घटा देने पर जो शेष रहे वह उत्क्रष्ट संख्यातप्रमाण और एक रूपका

असंख्यात बहुभाग होता है जो कि पल्यप्रमाण ध्रबस्थितिके ऊपर बढ़ी हुईं संख्याका भागहार

होता है। यह पल्यका छेद भागहार है । धुवस्थितिके जेदभागदारका कथन भी इसी प्रकार करना

चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि पल्यके छेदभागहारमें धीण होनेवाले एक रूपके अंशोवे

भ्रवस्थितिके छेदभागद्दारमें क्षीण दोनेवाले अंश संख्यातगुणे होते हैं क्योकि पल्यके भागहारके जो

१ शार प्रतौ असंखेजगुणो इति पाटः ।

Page 148:

गा० २२ बड्डिपरूबणा १२६

भागहारादो धुवद्धिदिभागद्वारस्स जो अंसो तम्भोगहारस्स संवेजगुणदीणततवरंमादो ।

एवं समयं पडि छेदमागहारे होदूण गच्छमाणे धुबह्धिदिभागहारम्मि ऐगरूवे परिदीणे

घुबद्धिदीए सम मागहारो होदि तकाले पल्दोवमस्स पुण छेदभागहारो चेव पलिदोवम

भागहारम्मि ज्ञीयमाणअंसादो धुवद्धिदिभागद्वारस्मि झीयमाणअंसस्स संखेजगुणत्तादो ।

पणो समयुत्तरं व्डिदृण बंधमाणाणं बड्ीर आणिज्ञमाणाए परिदोवमधुबद्िदीए छेदभाग

हयेहोदि।

२३० एवं खेदसममामगहारेखु धुवट्टिदीए शोदृण गच्छमणेषु धुवद्ठिदिभाग

हारम्मि जाव धुबह्िदिषलिदोवमसलागमेत्तरूबाणं रूवूणाणं परिदाणी होदि ताव पलिदो

बमस्स छेदमागहारो चेव । संपुण्णेसु परिद्दीणेसु पलिदोवमस्स धुबद्धिदीए च समभाग

हारो होदि । तकाले पलिदोवर्म पेक्खिदूण संखेजमागवड्डी परिदोवमकस्ससंखेजेण

खंडिदृणेखंडरस धुव्धिदीए उवरि ब्डिदत्तादो धरुव्टिदि पेकिखिदूण पुण असंखेज्ज

भागबड्डी धुबद्धिदीर उकस्ससंखेजगुणिद्धुबट्टिदिपलिदोवमसलागभागदारत्ादो । तदो

जम्मि देसे पल्दोवमं पेक्खिदण संखेजभागवड्डी होदि तम्दि वेव देसे धुबड्िदिं

पेक्खिदृण संखेजञभागवड्खी होदि त्ति णियमो णत्थि त्ति पेत्तव्वं । एवशवरिं पि समउत्त

रादिकमेण वङ्कावेदव्वं । णवरि सव्वत्थ धुव्धिदिभागहारम्मि धुवद्धिदिपलिदोवमसलाग

मेत्तरूवेसु परिद्दीणेस पलिदोवमभागहारम्मि एगरूव॑ परिदहायदि त्ति घेत्तव्वं ।

अंशका भागद्वार है उससे धरुबस्थित्तिके भागहारका जो अंश है उसका भागहार संख्यातगुणा दीन

पाया जाता है । इस प्रकार एक एक समयके प्रति लदभागदार होता हआ तब तक चला जाता दे

जब जाकर ध्ुवस्थितिके भागहार्में एक रूपकी हानि होकर ध्रु बस्थितिका समभागहार प्राप्त दोता

है। परन्तु उस समय पल्यका छेदभागद्दार ही होता है क्योंकि पल्यके भागदारसें क्षीण दोनेवाले अंश

से धर बस्थितिके भागहरमें क्षीण दोनेबाला अंश संख्यातगुणा होता है । पुनः एक समय स्थितिको

बढ़ाऋ बाँधनेवाले जीवोंकी बृद्धि लाने पर पस्य और धर वस्थित्तिका छेद्भागहार द्योता है।

२३० इस प्रकार भ्रुवस्थितिके छेद्भागद्दार और समभागदार द्वोते हुए चले जानेपर जब

जाकर प्रुवस्थितिके भागद्दारमें श्रुवस्थितिके जितने पल्य हों उनमेंसे एक कम रूपोंकी हानि होती है तबतक

पल्योपमका छेदभागद्वार ही होता है । तथा पूरे रूपोंकी हानि होने पर धर बस्थिति और पल्योपमका

समभागहार होता है। उस समय पस्योपमको देखते हुए संख्यातभागबृद्धि होती है क्योकि यहाँ

पल्योपमके उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण खण्ड करके उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण संख्याकी भुवस्थितिके

ऊपर बृद्धि हुईं है। परन्तु भुवस्थितिको देखते हुए असंख्यातभागबृद्धि है क्योकि यहाँ घ्रुवस्थितिका

भागहार ध्बस्थित्तिमें जितने पल्योंका प्रमाण दो उनसे उत्कृष्ट संड्यातको गुणित करनेपर जो लब्ध

श्यावे उतना है। अतः जिस स्थानपर पल्योपमको देखते हुए संख्यातभागबृद्धि दोती है उसी

स्थानपर ध्रवस्थितिको देखते हुए संख्यातभागबृद्धि द्वोती है ऐसा नियम नदी है ऐसा प्रदण करना

चाहिये । इसी प्रकार ऊपर भी एक समय अधिक आदि क्रमसे स्थितिको बढ़ाना चाहिये। किन्तु

इतनी विशेषत है कि सर्वत्र ध्र वस्थितिके भागहारमें एक ध्र बस्थितिमें जितने पल्य हों उतने रूपोंके

कम होनेपर पल््योपमके भागद्वारमें एक रूपकी दानि होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

१ शा० प्रतौ दिदीणं इति पाठः ।

१७ वि

Page 149:

१३० जयघवलासहिदे कसायपाहुडे दिदिविदत्ती ३

२३१ जस्थ परिदोवमभागहारो जदण्णपरित्तासंखेजस्स अद्धमेत्तो होदि तस्थ

वि शुबह्िदिवह्धिमागहारो असंखेजो होदि धुव्डिदिपलिदोवमंसलागाणमद्धेण गुणिद्

जहण्णपरित्तासंखेजपमाणत्तादो । पलिदोवमस्स भागहारे जहण्णपरित्तासंखेज्ञस्स तिभाग

मेते 3 संखे 3

भेत्ते जादे वि धुवद्डिदीए बड्धिरूबाणं भागदारो असंखेजं चेव धुत्रट्टिदिपलिदोवमसला

गाणं तिभागेण गुणिदजदण्णपरि्तासंखेजपमाणत्तादो । पलिदोवमवड्डिरूवमागहारे जहण्ण

परित्तासंखेजस्स चदुब्भागमेत्त जादे वि धुवट्टिदीए कड्डिरूवाणं मागहारो असंखेजं चेव

धुबद्धिदिपलिदोवमसलागार्ण चदुन्मागेण गुणिदजदण्णपरित्तासंखेजपमाणत्तादो । धुवष्ठिदि

पलिदोवमसलागाहि खंडिदजहण्णपरित्तासंखेज़े बड्ूवागमणं पडि पलिदोबमस्स

भागहारे जादे वि धुवद्िदिभागहारो असंखेजं चेव जदण्णपरित्तासंखेजपमाणत्तादो ।

संपि एक्तिवमद्धाणं जाव पावेदि ताव धुबह्िदिं पेकिखदृण असंखेजमागवडी पलिदोवमं

पेक्खिदूण पुण असंखेज़मागवड़ी संखेजमागवड़ी च जादा पुणो एवं वड्डिद्णच्छिद

ट्विंदीए उवरि एगसमयं बङ्िदण बंधमाणाणं पलिदोवमधुबद्धिदीणं खेदभागहारो होदि ।

एवं छेदभागहारों होदण गच्छमाणो जाव धुबह्िदीए समभागहासे ण होदि ताव ुबह्िदिं

पेक्खिदूण असंखेज़भागवड़ी चेव होदि । परलिदोवमं पेक्िदण पुण संखेजभागबड़ी

दव्वह्टियणयालंबणादो । पज्ञवद्धियणणए पुण अवलंबिज्माणे धुबह्धिदिभागद।रस्स अवत्तव्व

२३१ तथा जहाँपर पल्योपमका भागहार जघन्य परीतासंख्य।तसे आधा होता है वहोंपर्

भी ध्रुवस्थितिकी बृद्धिका भागहर असंख्यात होता है क्योकि यहाँ भर वस्थित्तिके भागदारका प्रमाण

एक ध्रु बस्थितिमें जितने पर्य हों उनके आधेसे जवन्य परीतासंख्यातको गुणित करनेपर जो लव्ध

वे उतना है । पस्योपमका भागदार जघन्य परीतासंख्यातका तीसरा भाग होनेपर भी ध्रु बस्थित्तिके

बढ़े हुए रूपोंका मागार असंख्यात ही होता है क्योंकि एक भबस्थितिमें जितने प्य हों

उनके तीसरे भागसे जघन्य परीतासंख्यातको गुणित क्रनेपर जो लन्ध अवरे उतना यहाँ ध वस्थित्तके

ऊपर बढ़े हुए रूपोंका भागहार है । परमोपमके उपर बढ़े हुए रूपों का भागद्वार जघन्य परीतासंख्यातका

चौथा भाग दोनेपर मी ध्रवस्थितिमें बढ़े हुए रूपोंका भगहार असंख्यात दी है क्योंकि एक

घुवस्थितिमें पस्योका जितना प्रमाण हो उसके चौथे भागसे जघन्य परीतासंख्यातको गुणित करनेपर

जो लच्ध आवे उतना यहाँ प्रुवस्थितिमें बढ़े हुए रूपोंका भागदार है । तथा बढ़े हुए रूपोंकी भी अपेक्षा

पल्यका भागहर एक भ्रुवस्थितिमें जितनी पल््यशलाका हों उनसे जघन्य परीतासंख्यातके खण्डित

कर देनेपर जितना लब्ध श्रा उतना हो जानेपर भी प्रुवस्थितिका भागहार असंख्यात ही होता है

क्योंकि यहाँपर घुबस्थितिका भागहार जघन्य परीतासंख्यात प्राप द्वोता है। इसप्रकार इतने स्थान

जबतक प्राप्त द्वोते हैं तबतक प्रुवस्थितिको देखते हुए असंख्यातभागवुद्धि होती है । परन्तु पल्यो

पको देखते हुए असंख्यातभागवृद्धि होती है ओर संख्यातमागवुद्धि दोतौ है । पुनः इस प्रकार

बढ़ाकर स्थित हुई स्थितिके ऊपर एक समय बढ़ाकर वांधनेवाले जीवोंके पल्योपम ओर ध्रुवस्थिब्रिका

छेद्सागद्दार होता दै । इसप्रकार छेद्भागहार होकर जाता हुआ जबतक भुषस्थितिका सम

भागहार नहीं होता है तवतक प्रुवस्थितिको देखते हुए असंख्यातभागवुद्धि ही होती है । परन्तु

पल्योपमको देखते हुए संख्यातभागबृद्धि होती है पर यदह असंख्या तभागवृद्धि द्रन्यार्थिकनयकी

अपेक्षासे ज्ञानना चाहिये। परन्तु पर्यायार्थिकनयका अवलम्ब करनेपर प्ुबस्थितिके भागद्वारकी

Page 150:

गा०२२ बंड्डिपरूवणी १३१

बही होदि । तत्थ अंसं मोत्तूण अंसीणममावादो । संपहि केदरं गंतूण धुबरद्धिदीए

समभागहारो होदि । उबरिमविरलूणाएं एगरूबधरिदयुकस्संखेजेण खंडेदृण तस्थ

एगखंडं स्वूणं जाव वदि ताव जेदमागहारो संपुण्णे बदिदे समभागहारो । ताधे

धुबद्ठिदिं पेक्खिदृण संखेज़मागवड़ीए आदी जाद् । दो धुब्डिदिबश्डिभागहारों उकस्स

संखेजं पत्तो ति ।

२३२ एवं पुणो वि उवरि छेद्सरूवेण भागदारो गच्छमाणो जदण्णपरिता

संखेजस्स अद्धमेत्तो धुव्टिदिभागद्ारो जादो ताथे पलिदोवमस्स भागहारों दुगुणिदघुव

ड्विदिपलिदोवमसलागोबद्धिदजहण्णपरिचासंखेजमेत्तों होदि। धुवष्टिदिभागदारे जहृण्ण

परित्तासंखेजस्स तिभागे संते तिगुणपिदोवमसलागादि खंडिदजदण्णपरित्तासंखे्ज

पलिदोवमस्स भागहारो होदि । धुवष्टिदिभागदहारे जदण्णपरित्तासंखेज़स्स चदुग्भागे संते

चदुग्गुणधुत्धिदिपलिदोवमसलागोव ट्विद्जहण्णपरित्तासंखज पलिदोवमभागहारो होदि।

धुबह्धिदिपलिदोवमसलागाहि खंडिद्जहण्णपरित्तासंखेजे धुवद्धिदिभागहारे संते पलिदो

वम॒स्स धुवद्धिदिषलिदोवमसलागाणं बग्गेण खंडिदजहण्णपरित्तासंखेजभागदारो होदि ।

एवं भागहारो हीयमाणों जाघे पलिदोवमस्स दोरूबमेत्तो जादो ताघे दुगुणधुबट्डिदि

पलिदोवमसलागाओ धुवद्धिदिभागहारो होदि। जाये परिदोबमभागहारो एगरूवं

जादो ताघे धुब्धिदिपलिदोवमसलागाओ धुबद्डिदिभागहारों होदि । संपदि पलिदोवम

अवक्तव्यबृद्धि दोती है क्योंकि वहाँवर अंशको छोड़कर अंशीका अभाव है। अब कितनीदूर

जाकर भुवस्थितिका समभागदार प्राप्त होता है इसे बतलाते हैंउपसिमि विरलनमें एक रूपके प्रति जो

संख्या प्राप्त है उसे उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे एक कम उसकी जबतक

बुद्धि हो तबतक छेद्भागहार होता है और पूरेकी बधि होनेपर समभागद्वार होता है । उस समय

धवस्थित्तिको देखते हुए संख्यातभागबृद्धिकी आदि हुई क्योकि यद्ाँपर भुवस्थितिके बृद्धिरूपोंका

भागद्दार उत्कृष्ट संख्यातको प्राप्त हुआ ।

२३२ इस प्रकार फिर भी ऊपर छेद और समानरूपसे भागद्वार जाता हुआ जब धुवस्थितिरा

भागद्वार जघन्य परीतासंख्यातका आधघा होता है तब पल्योपमका भागद्वार एक धुबस्थित्तिमें

जिलनी पल्यशलाकाएं हों उनके दुनेप्रमाणसे जघन्य परीतासंख्यातको भाजित करनेपर जो लब्ध

आधे उतना होता है। धुवस्थितिके भागहारके जघन्य परीतासंख्यातके तीसरे भागप्रमाण दोनेपर

एक ध्रुवस्थितिकी तिगुनी पल्यशलाका शरोसे जघन्य परीतासंख्यातको भाजित करके जो लब्ध आवे

उतना पल्योपमका मागहार होता है । धरुवस्थितिके भागदारके जघन्य परीतासंख्यातके चौथे भाग

प्रमाण होनेपर ध्ुवस्थित्तिकी चौगुनी पल्यशलाकाओंसे भाजित जघन्य परीतासंख्यातका जितना

भ्रमाण दो उतना पल्योपमका भागहार होता है । धुवस्थित्तिका मागहार प्रुत्बस्थितिकी पल्योपम

शलाकाओंसे भाजित जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण होनेपर पस्योपमका भागद्वार धघुवस्थितिकी पल्य

शलाकाओं के वर्गेसे जवन्य परीतासंख्यातको भाज्ञित करनेपर जितना लब्ध आवे उतना होता है ।

इस प्रकार घटता हुआ पल्योपमका भागद्वार जहाँवर दो अंक प्रमाण द्वोत्ता है वहोंपर धुवस्थितिका

भगार धुवस्थितिकी दुगुनी पल्यशलाकाप्रमाण होता है । तथा जहाँ पर पल्योपमका भागहार

एक शंक प्रमाण होता है वहाँवर धुबस्थितिका भागहार घ्रुवस्थितिकी पल्यशलाकाप्रमाण होता है।

ता प्रतौ संपुष्णों इसि पाडः । २ भा० प्रतौ छेद्समरूवेण इति पाठः ।

Page 151:

शेर् जयधवलासदिदे कसायपाहुडे छिद्विहत्ती ३

भागदारे णट धुवडिदिभागहारो समयूणादिकमेण झीयमाणो जाघे धुवष्धिद्पिलिदोवम

सलागाणमद्धमेत्तो जादों ताथे पलिदोबमस्स गुणगारो तिण्णि रूवाणि होंति। जाघे

धुवष्टिदिभागद्दारा तप्पलिदोबमसलागाणं तिभागमेत्तो जादो ताथे पलिदोवरमगुणगारो

चत्तारि रूवाणि। जाघे धुब्डिदिभागहारो तप्पलिदोवमसलागाणं चदुब्भाममेत्तो जादो ताघे

पलिदोबमगुणगारो पंचरूबाणि । एवं गंतूण घाघे धुबद्धिदिभागहारो दोसूवाणि ताथे

पलिदोवमशुणगारो धुवष्टिदिपलिदोबभसलागाणमद्धं रूवाहियं होदि । जाघे धुव्डिदि

मागहारो एगरूबं जादो ताथे पलिदोवमगुणगारो रूवाहियाओ छुवद्धिदिपलिदोबम

सलागाओ । तकाले धुबड्डिदीए संखेजगुणबड़ीए आदी जादा । एत्तो उवरि संखेजगुण

कि

बड्डी चेव होदृण सब्वत्थ गच्छदि जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीणं चरिमसमओ

तति । एवं मिच्छत्तस्स पिण्डं बड्डीणं सत्थाणेण अत्थपरूबणा कदा ।

आगे पल्योषमके भागहारके नष्ट दो जानेपर श्रुवस्थितिका भागहार एक समयकम आदि क्रमते नष्ट

होता हुआ जहयँ बह ध्रुवस्थितिकी पल्ल्यशलाकाओंका आधा भागभ्रमाण होता है वहाँ पल्योपमका

गुणकार तीनअंक प्रमाण होता दे । जहाँपर भ्रुवस्थितिका भागहार प्रुवस्थितिकी पल्यशल्ाकाओंका

तीसरा भागश्रमाण होता है वहाँवर पल्यका गुणकार चार अकप्रमाण होता है। जहाँवर प्रुवस्थिति

का भागदार् भुवस्थितिकी पल््यशलाकाओंका चौथाभागप्रमाण होता है वहाँपर पलल््यक्ा गुणकार

पाँच अंकप्रसाण होता है। इसप्रकार जाकर जिस समय प्रुवस्थितिका भागहार दो अंकप्रमाण दोता

है उस समय पट्योपमका गुणकार धुबस्यितिक्छी पल्यशलाकाओं के अर्धभागप्रमाणसे रूपाधिक होता

है। अर्थात शुवस्थितिमें जितने पट्योपमोंकी संख्या दो उस संख्याको आधा करके उसमें एक जोड़ देनेसे

रूपाधिक पल््यशलाकाओं के अधेंभाग प्रमाण आता है । तथा जिस समय ध्रुवस्थितिका भागहार

एक अंकप्रभाण हो जाता है उस समय पल्योपमका गुणकार धुबस्थित्तिकी रूपाधिक पस्यशलाका

प्रमाण हो जाता है। यहाँसे प्रुबवस्थितिकी संख्यातगुणबृद्धिका प्रारम्भ होता है । यहाँ से ऊपर

सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरका अन्तिम समय प्राप्त होने तक सर्वेत्न संस्यातगुणवुद्धि ही होकर जाती है ।

इस प्रकार मिथ्यात्वकी तीन बृद्धियोंकी स्वस्थानकी अपेक्षा अधेश्ररूपणा की ।

विरेषार्थ संज्ञी पंचेन्द्रिय जीब पहले समयमें धरुवस्थितिक। बन्ध करके यदि अगले समयमें

बढ़ी हुई किसी भी स्थितिका बन्ध करता हे तो उसके वहाँ असंख्यातभागषद्धि संख्यातभागवृद्धि

ओर संख्यातगुणबद्धि इनमेंसे कोई एक चृद्धि ही सम्भव है यह बात पहले बतलाई जा चुकी है । अब

यो पर पर्य और ध्रवस्यिति इन दोनोंको रखकर यदि उत्तरोत्तर समान बृद्धि की जाती है अर्थात्

जब पलथमें एक अंककी इद्धि करते हैं तब भुवस्थितिमें भी एक अंककी वृद्धि होती दै जब पल्यमें

दो अंककी बृद्धि करते है तव धुवस्थितिमें भी दो अंककी वृद्धि होती है और जब पल्यमें तीन

आदि अंकोंकी बृद्धि करते हैं तब ध्रुवस्थितिमें भी उतने ही स्थितिविकल्पोंकी वृद्धि दती है तो कहाँ

कौनसी वरद होती है इसका विचार किया गया है । यह तो सुनिश्चित है कि धुवस्थिति पत्यसे

संख्यातगुणी होती है क्योंकि अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण ध्रुवस्थितिमें संख्यात पल्य प्राप्त होते

है अलः प्यके एक आदिकी बृद्धि होने पर भागद्वारका जितना प्रमाण द्वोता है ध्ुवस्थितिमें उतनी

वृद्धि होने पर भागद्वारका प्रमाण उससे संख्यात्गुणा होता है। जैसे पल्यमे एककी वुद्धि करने पर

बृद्धिके भागदारका प्रमाण पल्य है क्योकि पल्यमें पल्यका भाग देनेसे एक प्राप्त होता ह । अव यदि

भुवस्थितिमें एककी ब्द्धिकी जाती है तो वहाँ बद्धिके भागद्ारका प्रमाण घुवस्थिति प्राप्त दोता है जा

Page 152:

गा० २२ बह्धिपरूवणा १३३

पूर्वोक्त भागदारते संख्यावगुणा है। यहाँ संख्यातसे भुवस्थितिमें जितने पस्य हों उतने संख्यात

लेना चाहिये । इस व्यवस्थाके अनुसार दोनोंकी असंख्यातभागवृद्धि एक साथ समाप्त न होकर

पस्यकी अ घरूयातभागव्रद्ध पहले समाप्त दो जाती है और प्रुवस्थितिकी असंख्यातभागबृद्धि उससे

संख्यात स्थान आगे जाकर समाप्त दोती है क्योंकि पत्यमें बृद्धिका संख्यातरूप भागद्वार संख्यात

स्थान पहले प्राप्त दो जाता है और प्लुवस्थितिमें वृद्धिका संख्यातरूप भागदार संख्यात स्थान आगे

जाकर प्राप्त होता है । इसी प्रकार पल्यमें संख्यात स्थान पहले संख्यातगुणबृद्धिका प्रारम्भ हो जाता

है किन्तु प्रुबस्थितिमें संख्यात स्थान आगे जाकर संख्यातगुणबुद्धिका प्रारम्भ होता है। अब आगे

इसी विषयको स्पष्ट रूपसे समझनेके लिये उदाहरण प्रस्तुत करते है

पल्यकी अपेक्षा

पस्यका प्रमाण १४४ ज० असंख्य।त्त ९ उ० संख्यात ८

क्रमांक ॥ पल्य बढ़े हुए स्थान भागहार बुद्धि

१ १४४ १४५ पल्य असं० भा० बू०

य अर १४६ पस्यका अधा ॥

३से५ हि ०० ०० ००

८ श्ण १५२ श्त ॥

्से १९१ किक ब्न्न ०० ०००

श्र १४४ १५६ श्र ॐ

१३ से १५ ५० क ०० ०००

१६ श्छ्छ १६० ६ परीतासं० ॥

१७ श्छ्छ १६१ ग्य छेद भागहार अवक्तव्यभागवृद्धि

श्त १४४ १६२ ८ उ० संख्यात संख्यातभागबृद्धि

५१६ १४४ १६३ ७१३ 9

३१ १४४ १७५ ४३ संख्यातभागवृद्धि

ध्न १४४ १६२ ३ 22

६४ १४४ श्ण्प २

२८ शठ २७य् ११ २

श १४४ द्म २ गुणकार संख्यातगुणवृद्धि

॥ श्ध्चछ ध्श्र द 2 ॥

Page 153:

१२४ जंयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिंबिहत्ती ३

ध्रुवस्थितिकी अपेक्षा

धुबस्थितिका प्रमाण ११४२

क्रमांक घ्रुबस्थिति बढ़ी हुईं स्थिति भागद्वार वृद्धि

१ पस्य ११४२ ११५३ धुबस्थिति अ० भा० बु०

र ११५४ प्रुबस्थितिकाजाधा अर

३ खे ७ ०० ००० ०० ०००

ह रथ ११६० १४४ ॥

९ से ११ ० ०० ००५

१२ ११५२ ११६४ ९६

१३ खे १५ ० ०० ० ००

श १९५२ ११६८ ७२

१७ ११५२ ११६६ ६७३ है गा

१८ ११५२ ११७० क्ट ॥

१६ 72 ११७१ ६०२९ गा

३१ श्श्श्र ११८३ ३८४ ि

श्रत ११५२् १२०० र्ट ह

२ ११५२ १२१६ श्र

१२८ ११५२ १२८० ६ 2

श्ट ११५२ १२६६ स संख्यातभागवृद्धि

र्त ११५२ १४४० छ कर

श्श्श्र ११५२ र्३०४ २ गुणकार संख्यातगुणबृद्धि

इन दोनों अंकसंदृष्टियोंके देखनेसे विदित होता है कि जहाँ पल्यमें १४४ अंककी बुद्धि द्वोने

पर संख्यातगुणबृद्धि प्रारम्भ हो जाती है वहाँ घुवस्थितिमें १४४ अंककी वृद्धि दोनेपर संख्यातभाग

बृद्धिका दी प्रारम्भ होता है। कारण यद है कि पल्यका प्रमाण अल्प दे और भुबस्थितिका श्रमाण

पल्यके प्रमाणसे संख्यातगुणा है इसलिए जितने स्थान आगे जाकर परयका प्रमाण दूना दोता है भुब

स्थितिको दूना करनेके लिए उससे अधिक स्थान आगे जाना पड़ता है। इसी प्रकार अ्थेसंदृध्ठिमें

भी जानना चाहिए ।

Page 154:

गा० २२ बड्डिपरूपणा १३१

२३३ संपदि तस्सेव भिच्छततस्स परत्थाणेण तिण्णं वड्डीणमत्थपरूवर्ण कस्सामो।

तं जहाएइंदिएण पंचिदियसंतकम्मं धादिय बीहदियादीणं तप्पाओग्गजहण्णबंधस्स

हेडा एगसमएणृणं काद्ण पुणो बीइंदियादिसु उप्पञ्ञिय एगसमयं बह्धिद्ण बद्धे असंखेज

भागवड्डी होदि बड्िदेगसखमयस्स॒गिरुढद्िदीणए असंखेजदिभामत्तादो । पणो तमेव

पंचिंदियद्विदिं बीईंदियादितप्पाओग्गजहण्णद्विद्वंधादी विसमयूण्ं घादिय बीहंदियादिषु

उप्पण्णपठटमसमए वि असंखेजमागवड्डी चेव होदि । कुदो ऊरणणीकददोसमयाणं चष

बंधेण वड्धिदत्तादों एवं तिसमयादिकमेण ऊणिय णेदव्यं जाव पंचिंदियसंतकम्मं बीई

दियादीणं तप्पाओग्गजहण्णबंधादोी पलिदोवमस्स असंखेजदिभागेण जद्दा ऊणं होदि तदा

घादिय वेइंदियादिसुप्पण्णस्स वि असंखेज्जमागवड़ी चेव होदि । संपदि एत्तो उवरि

समयुत्तरादिकमेण ऊणिय णेदव्वं जाव असंखेज्जमागवड्डीए दुचरिमवियप्पो त्ति

२३४ संपदि चरिमवियप्पं वत्तइस्सामो बीइंदियाणं तप्पाओर्गजहण्णड्ठि दिवंधं

जदण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिय तत्थेगखडेणृणं बेइंदियादीणं तप्पाओग्गजदृण्णड्डिद्बंघेण

जहा सरिसं होदि तहा पंचिंदियद्धिदिसंतकम्म॑ घादिय बेइंदियादिसु उप्पण्णपठमसमए

असंखेज्जभागवड्डी होदि । एसा असंखेज्जभागवड्डी सव्बपच्छिमा पत्तो उवरि संखेज्ज

भागवड्डीए विसयत्तादो । एवं बेदंदियादीणं पि पंचिदियट्टिदे घादयमाणाणं सगसग

२३३ अब परस्थानकी अपेक्षा उसी मिथ्यात्वकी तीन वृद्धियोंकी अथप्ररूपणा करते है ।

जो इस प्रकार हैजिस एकेन्द्रियने पंचेन्द्रिय सत्कमेको घातकर द्ीन्द्रियादिके योग्य जघन्य बन्धके

नीचे स्थितिको एक समय कम किया पुनः उसके द्वीन्द्रियादिकमे उत्पन्न होकर एक समय बढ़ाकर

स्थितिके बंधने पर असंख्यातभागबृद्धि दोती है क्योंकि वरहो पर जो एक समयकी बृद्धि हुई है

वह निरुद्ध अर्थात् सत्तामें स्थित पूवे स्थितिके असंख्यातरवे भागप्रमाण है। पुनः किसी

एक एकेन्द्रिय जीबने उसी पंचेन्द्रियकी स्थितिको दीन्द्रियादिके योग्य जघन्य स्थितिबन्धसे दो समय

कम करके उसका घात किया और दीन्द्ियादिकमें उत्पन्न हुआ तो उसके उत्पन्न द्वोनेके प्रथम

समयमें भी असंख्यातभागबृद्धि ही दोती ह क्योंकि कम किये गये दो समयोंकी ही यहाँ बन्धके

द्वारा वृद्धि हुईं है। इसी प्रकार तीन समय आदिके क्रमसे कम करके ले जाना चादिये । कँ तक

ले जाना चाहिये आगे इसीको बतलाते हैंकोई एकेन्द्रिय जीव पंचेन्द्रियके योग्य सत्कमको द्ीन्द्रिय

के योग्य जघन्य स्थितिबन्धसे पस्योपमका असंख्यातवाँ भाग जिस प्रकार कम हो उस श्रकार

घात करके द्वीन्द्रियादिकमें उत्पन्न हुआ तो उसके भी असंख्यातभागवृद्धि द्वी होती है । अब इसके

ऊपर असंख्यातभागबृद्धिका द्विचरमविकल्प प्राप्त होने तक एक समय अधिक आदिके क्रमसे कम

करके ले जाना चाहिये ।

२२४ अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैंद्वीन्द्रियोंके तत्परायोग्य जघन्य स्थित्तिबन्धमें

जघन्य परीतासंख्यातका भाग दे भाग देने पर जो एक भाग प्राप्तो उससे न्यून द्न्द्रियोंके

तत्पायोग्य जघन्य स्थितिबन्धके समान घात द्वारा पंचेन्द्रियोंके स्थितिसत्कर्मको कोई एकेन्द्रिय प्राप्त

करके यदि द्ीन्द्रयोमिं उत्पन्न दो तो उसके प्रथम समयमें असंख्यातभागवृद्धि होती है । यह सबसे

अन्तिम असंख्यातभागवृद्धि है क्योंकि इसके ऊपर संख्यातभागबृद्धि दोती है । इसी प्रकार

पंचेन्द्रियोंकी स्थितिका घात करनेवाले हीन्द्रियादिकके भी उन्हें अपने अपने उपरिम जीबोंमें

Page 155:

१३६ जञयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

उवरिमिजीवेसुष्पादिय असंखेज्जमागवड्डी वत्तव्वा ।

२३५ संपदि संखेज्जभागबड्डी परत्थाणेण बुचदे । तं जहाण्ददियो पंचिदिय

संतकम्मं घादयमाणो बेइंदियादीणं तप्पाओर्गजहण्णबंधस्स हेड्ठा पलिदोवमस्स संखेज्जदि

भागमेत्तं घादिय बेइंदियादिस उववण्णो तस्स पढ़मसमए संखेज्जभागबड्डी होदि

तप्पाओग्गजहण्णड्ि दिबंधे उकस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तसमयाणं बहस

णादो । परव्वघादिदसंतकम्मस्स हेढ्ढा एगसमयं घादिय बेइंद्यादिसुप्पज्जिय तत्तियं

चेव वड्डिदृण बद्ध संखेज्जमागबड्डी चेव होदि । एवं विसमयूणतिसमयूणादिकमेण णेदव्वं

जाव बेइंदियादितप्पाओग्गजहण्णड्िदिबंधादो हेड स्बूणतदद्वमेत्तेण पंचिदियद्धिदिं

घादिय बेइंदियादिसुप्पण्णपठमसमए तप्पाओग्गजहण्णट्विदिं बंधमाणस्स संखेज्जभागवड्डी

चेव होदि । तप्पाओग्गजहण्णट्टि दिबंधस्स संपुण्णमद्धं जाव पावेदि तार सण्णिपंचिदियद्धिदि

संतकम्म॑ किण्ण घादिदं १ ण सगरमद्धमेत्तं घादिय बेइंदियादिसुप्पज्जिय बह्डिदूण

बंधमाणस्स संखेज्जगुणवड्डीए सम्रुप्पत्तीदो । एवं बेइंदियादीणं पि वत्त्वं ।

२३६ संपदि संखेज्जगुणबड्डी उदे । तं जहाएइंदिओ पंचिदियसंतकम्मं

घादयमाणो बेइंद्यादिसुप्पज्जिय बज्ञमाणजहण्णद्विदिबंधादो हेड्डा समलमद्धमेत्त घादिय

पुणो बेइंदियादिसुप्पण्णपडमसमए सव्बजहण्णद्विदिं बंधमाणस्स संखेज्जगुणवड्डी होदि ।

उत्पन्न कराके असंख्यातभागबृद्धि कनी चाहिये ।

२३४ अब परस्थानकी अपेक्षा संख्यातभागबृद्धिको बतलाते हैं। जो इस प्रकार है

पंचेन्द्रियसस्कर्मका घात करनेवाला जो कोई एक एकेन्द्रिय जीव द्वीन्द्रियादिकके योग्य जघन्य बन्धके

नीचे पल्योपमके संख्यातें भागका चात करके दीन्द्रियादिकमें उत्पन्न हुआ उसके उत्पन्न द्वोनेके

प्रथम समयमें संख्यातभागबृद्धि दोती है क्योंकि हीन्द्रियादिकके योग्य जघन्य स्थितिवन्धें उत्कृष्ट

संख्यातका भाग देनेपर जितने खण्ड प्राप्त हों उनमेंसे एक खण्डप्रमाण समयोंकी वहाँ बृद्धि देखी

जाती है । तथा पहले घाते हुए सत्कमंके नीचे एक समयका घात करके और द्वीन्द्रियादिकमें उत्पन्न

होकर जो जीव उतनी स्थितिकी दी वृद्धि करके बन्ध करता है उसके संख्यात भागबृद्धि दी होती है।

इसीप्रकार दो समय कम त्तीन समयकम आदि ऋमसे ले जाना चाहिये। यह क्रम द्रीन्द्रियादिकके

योग्य जघन्य स्थितिबन्धसे नीचे एककम उनकी जघन्य आधी स्थिति प्राप्त दने तक चलता है।

इसप्रकार पंचेन्द्रियकी स्थितिका घात करके जो एकेन्द्रिय ढीन्द्रियादिकमें उत्पन्न हुआ उसके उत्पन्न

नेक थम समयमें द्वीन्द्रियादिकके योग्य जघन्य स्थितिका बन्ध करते हुए संख्यातभागबृद्धि

।

डी शंका४ीन्द्रियादिके योग्य जघन्य स्थितिबन्धके सम्पूर्ण आधा प्राप्तहोनेतक संज्ञी पंचेन्द्रियके

स्थिति सत्कमका घात क्यों नहीं कराया ९

समाधाननहीं क्योंकि पूरी आधी स्थितिका चात करके जो एकेन्द्रिय द्वीन्द्रियादिकमें

उत्पन्न होकर बढ़ा कर स्थिति बोँधता है उसके संख्यातगुणबृद्धि होती है । इसी प्रकार द्वीन्द्रियादिक

के भी कहना चादिये । हे

२३६ अब संख्यातगुणवृद्धिका कथन करते हैं । जो इस प्रकार हैकोई एकेन्द्रिय पंचे

न्द्रिय सत्कर्मका धात कर रदा है और ऐसा करते हुए उसने हीन्द्रियादिकमें उत्पन्न होकर जितना

जघन्य स्थितिका बन्ध होता है उससे नीचे पूरी आधी स्थितिका घात किया पुनः उसने दीन्द्रिया

Page 156:

गा० २२ बद्धिं परूबणा १३७

पणो एगसमयं हेड्ढा ओसरिय घादेदूण उप्पण्णस्स वि संखेज्जगुणबड़ी चेव होदि । पणो

एदेण कमेण ओसरिदूण सव्वजहण्णएडंदियट्टिदिसंतकम्मेण बेइंदियादिशुप्पज्जिय तप्पा

ओग्गजहण्णद्विदिं बंधमाणस्स संखेज्जमुणवड्डी चेव होदि । एवं बेइंदियादीणं पि संखेज्ज

गुणवड्डधि परूवणा कायच्वा ।

६ २३७ संपहि ट्डाणहाणिपरूवणा कीरदे । तं जद्दजहा वड़ो तहा हाणी।

णवरि अप्पणो उकस्सट्टिदीए असंखेज्जदिभागो जाव झीयदि ताव असंखेज्जमागहाणी

दिकमें उत्पन्न होकर प्रथम समयमे सबसे जघन्य स्थितिका बन्ध किया तव उसके संख्यातग्रणवृद्धि

होती है । पुनः एक समय नीचे उतर कर घात करके दवीन्द्रियादिकमें उत्पन्न होनेबाले जीवके भी

संख्यातगुणबुद्धि दी होती है । पुनः इसी ऋमसे नीचे उतर कर जिसके सबसे जघन्य एकेन्द्रिय स्थिति

सत्कमं है वह यदि द्वीन्द्रियादिकमें उत्पन्न होकर उनके योग्य जघन्य स्थितिका बन्ध करता है तो

उसके संख्यातगुणबृद्धि दी होती है। इसी प्रकार द्वीन्द्रियादिकके भी संख्यातगुणबद्धिका कथन

करना चाहिये ।

विशेषार्थनीचेके जीवसमासको ऊपरके जीवसमासमें उत्पन्न कराके जो स्थितिमें वद्धि

प्राप्त होती है उसे परस्थानबृद्धि कदते हैं । जैसे एकेन्द्रियको द्वीन्द्रियादिमें द्वीन्द्रियको त्रीन्द्रियादिक

में त्रीन्द्रियको चतुरिन्द्रियादिकमें चतुरिन्द्रियको असंज्ञी आदि में और असंज्ञीको संज्ञीमें उत्पन्न

करानेसे परस्थानबृद्धि प्राप्त दोती है । इनमेंसे पहले एकेन्द्रियको द्वीन्द्रियमें उत्पन्न कराके यह बुद्धि

प्राप्त की गई है । बैसे तो एकेन्द्रियके मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक सागरसे अधिक नहीं

होता । अब यदि ऐसा एकेन्द्रिय जीव है जिसके अपने स्थितिबन्धसे अधिक सत्त्व नहीं है तो उसको

दीन्द्रियमें उत्पन्न कराने पर केवल संख्यातगुणबृद्धि हयी प्राप्त होती है क्योकि एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट

स्थितिसे द्वीन्द्रियकी जघन्य स्थिति भी कुछ कम पचचीस गुनी है । किन्तु जो ऊपरकी पर्याये च्युत

होकर एकेन्द्रिय होता है उसके अपने स्थितिवन्धसेे अधिक्र स्थितिसत्त्व भी पाया जाता है। यद्

स्थितिसत््व किसी किसी एकेन्द्रियके अन्तमुंह्ते कम सत्तर कोड़ाकोदी सागर भी प्राप्त दोता है।

किन्तु यहाँ ऐसा स्थितिसत्त्व ग्रहण करना है जिससे एकैन्द्रियके द्वीन्द्रियमें उत्पन्न होनेपर असंख्यात

भागवृद्धि संख्यातभागबवृद्धि और संख्यातगुणबृद्धि बन जाबे। जिस एकेन्द्रियके दोन्द्रियकी

जघन्य स्थितिसे एक समय कम दो समय कम आदि षल्यके असंख्यातवें भागकम तक स्थित्ति

सक्छ होता है उसके द्वीन्द्रियमें उत्पन्न होने पर असंख्यातभागबृद्धि होती है क्योंकि यहाँ पुवं

स्थितिसे असंख्यातवें भाग प्रसाण स्थितिकी ही वृद्धि देखी जाती है। वीरसेन स्वामीने असंख्यात

भागबृद्धिका अन्तिम विऋलप वतलाते हुए लिखा है कि द्ीन्दरियकी जघन्य स्थितिमें परीतासंख्यातका

भाग दो भाग देने पर जो एक भाग अवे उतना द्ीन्द्रियकी जघन्य स्थितिमें से कम कर दो ।

बस जिस एकेन्द्रियके पंचेन्द्रियकी स्थितिका घात करते हुए इतनी स्थिति शेष रद्द जाय उसे द्वीन्द्रियमें

उत्पन्न कराने पर असंख्यातभागवृद्धिका अन्तिम विकस्य प्राप्त होता है। एकेन्दरियके द्वीन्द्रियमें

उत्पन्न होने पर उसके असंख्यातभागवबृद्धि कैसे प्राप्त होती है इसका यहाँ तक विचार किया । पद्ें

न्द्रियकी स्थितिका घात करनेवाले जो द्वीन्द्रियादिक त्रीन्द्रियादिकमें उत्पन्न होते हैं उनके भी पर्वोक्त

प्रकारसे असंख्यातभागवृद्धि घटित कर लेनी चाहिये। आगे परस्थानकी अपेक्षा संख्यातभागबृद्धि

और संख्यातगुणबृद्धिका कथन सुगम है अतः उसे मूलसे ही जान लेना चाहिये ।

२३७ अब स्थानहानिका कथन करते हैं। जो इस प्रकार हैजिस प्रकारं वृद्धि होती है उसी

प्रकार हानि द्वोत्ती है। किन्तु इतनी विशेषता है कि अपनी उत्कृष्ट स्थितिका असंख्यातवाँ भाग जब तक

१८

Page 157:

१३८ जयधवलासदहिदे कस्तायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

दयोदि । तदो संखेज्जभागहाणी होदूण गच्छदि जाब तिस्र ट्विदीए स्वूणमद्ध जणं वि ।

तदो सगले अद्धे घादिदे संवेज्जगुणदीणी होदि । एतो संखेञ्ञगुणहाणी चेव होदूण

गच्छदि जाब तप्पाओर्गधुब्धिदिसंतकम्मे ति । सम्मत्त घेत्तण पुण किरियाविरहिदो

होदृण जाब अच्छदि ताव असंखेन्जमागहाणी चेव होदि । अणंताणुबंधिविसंजोयणाए

ट्विदिखंडए्सु पदमाणेसु संखेन्जमागहाणी अण्णत्थ असंखेज्जमागहाणी । दंसणमोह

क्खवयस्स अपुव्वकरणपठमसमयप्पहुडि जाव परिदोवमद्टि दिसंतकम्मे त्ति ताव हदिकंडयाणं

चरिमफालीस पदमाणियासु संखेज्जभागहाणी होदि तम्मि अद्भाणे ट्विदिखेंडयस्स पलिदो

वमसंखेज्जदिभागपमाणत्तादो । अण्णत्थ असंखेज्जमागहाणी चेत्र ॥ अधब्विदिगलणाए

संसारावत्थाए पुण ट्विदिखंंडयस्स णियमो णत्थि कत्थ वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि

भागायामाणं कत्थ वि पलिदोबमस्स संखेज्जद्भागायामाणं कर्थ वि संखेज्जसागरो

चमायामाणं ट्विद्खिंडयाणं संसारावत्थाए उवरंमादो । पलिदोवमट्टिदिसंतकम्मप्पडुडि

दिकं ५

जाव द्रावकिट्टी वेद्दि ताव ट्विदिकंडयचरिमफालीए पडमाणाए् संखेज्जगुणदाणी

होदि । अण्णस्थ असंखेज्जमागहाणी अधद्विदिगलणाए । का दूरावकिट्टी १ जत्थ धादिद

सेसट्टिदिसंतकम्मस्स संखेज्जेखु भागेषु घादिदेसु अवसेसट्टिदी पलिदोवमस्स असंखेज्जदि

भागमेत्ता होदि सा हिद दूराचकिड़ी णाम । सा च एयवियप्प् सब्वेसिस णियट्टीणमेग

समए वइमाणाणं परिणामेस्ु समाणेसु संतेसु द्िदिखंडयाणमसमाणत्तंबिरोहादो ।

ज्षीण द्वोता है तब तक असंख्यातभागद्दानि द्वोती है। उसके बाद संख्यातभागद्वानि होकर तब तक जाती है

जब तक उस्र स्थितिकी एक कम आधी स्थिति क्षीण होती है। तदनन्तर पूरी आधी स्थितिके क्षीण

दोने पर संख्यातगुणद्दानि होती है । तथा यहाँसे तत्मायोग्य धरुबस्थिति सत्कमे प्राप्त होने तक संख्यात

गुणद्वानि ही होकर जाती है । सम्यक्त्वकी अपेक्षा तो जवतक जीव क्रियासे रदित होकर रहता है

तबतक असंख्यातभागद्वानि दी होती है । अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजनाके समय स्थितिकाण्डकोंके

पतन होने पर संख्यात भागहानि होती है । तथा अन्यत्र असंख्यातभागद्वानि होती है । दशेनमोहनीयकी

क्षपणा करनेवाले जीवके अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर जवत्तक पल्योपम प्रमाण स्थितिसत्कमे

रहता है तबतक स्थितिकाण्डकोंकी अन्तिम फालियोंका पतन होते समय संख्यातभागहानि दोती

है क्योंकि उस स्थानम स्थितिकाण्डक पस्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण द्ोता हे । तथा अन्यन्न

असंख्यातभागहदानि ही होती है । अघःस्थित्तिगननाके समय संसारावस्थामें तो स्थितिकाण्डकघात

का नियम नहीं है क्योंकि संसारावस्थामें कहीं पर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण आयाम

बाले कहीं पर पस्वोपमके संख्याते भागप्रमाण आयामवाले तथा कीं पर संख्यात सागरप्रमाण

आयामवाले स्थित्तिकाण्डकोंकी उपलब्धि होती है । पल्योपमप्रमाण स्थितिसत्कर्मसे लेकर जव तक

दूरापकृष्टि प्राप्त ढोत्ती है तवतक स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतन होने पर संख्यातगुएदानि

होती है । अन्यन्न अधःस्थितिगलनामे असंख्यातभागद्दानि होती है ।

श्ंकोदरावङृषटि किसे कहते हैं ९

समाधानजहाँ पर घात करके शेष रदे स्थितिसत्कर्के संख्यात बहुभागके चात दोन

पर अवशेष स्थिति पल्योपमके चअ संख्याते भागप्रमाण रह जाती है बह स्थिति दूरापक्ृष्टि कहलाती

है और वह एक विकल्पवाली होती हे क्योंकि एक समयमे विद्यमान सभी अनिश्वत्तिकरणगुणस्थान

वाले जीबोंके परिणामोंके समान रहते हुए स्थितिकाण्डकोंको असमान माननेमें विरोध आता है ।

Page 158:

गा० ररे ब्डिपरूवणां १३६

२३८ पुणो एदिस्से दूरावकिट्टीए पढमदट्विदिखंडयचरिमफालीए पडमाणाए

असंखेज्जगुणहाणी होदि । इदो द्रावर्डसण्णिदह्धिदीर पढमद्टिदिकंडयप्पहुडि उवरिमि

सब्बट्डिदिकंडयाणं घादिदसेसासेसट्टिदीए असंखेज्जभागपमाणत्तादो । सब्बद्धिदिकंडयाणं

पृण समयुणुकीरणद्धासु असंखेज्जमागदाणी चेव अधट्ठिदिगलणाए । एवं णेदव्वं जाव

मिच्छत्तस्व समयुणावरियमेत्द्िदिसंतकम्मं चेदिदं ति । तदो असंखेज्जभागहाणी होदूण

गच्छदि जावुकस्ससंखेज्जमेत्तद्टिदिसंतकम्म॑ सेसे ति । तदो संखेज्जमागहाणी होदण

गच्छदि जाव मिच्छत्तस्स तिसमयकोलदोडह्धिदिपमाणं सेसं ति । पुणो एगाए ट्विदीए

सम्मत्तस्पुवरि यिबुकसंकमेण संकंताए संखेज्जगुणदाणी होदि णिसेगे पडुच । कारं

पटच पुण संखेज्जभागहाणी चेव । एवं मिच्छत्तस्स सत्थाणपरत्थाणेद्दि बड्डिहाणिपरूवणा

कदा । एवं सोरसकसायणवणोकसायाणं बड्डिहोणिपरूवणा कायव्वा ।

२३८ पुनः इस दूरापकृष्टिकी प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतन होने पर

श्रसंख्यातगुणदानि होत्ती है क्योंकि दूरापक्रष्टि संज्ञावाली स्थितिके प्रथम स्थितिकाण्डऋसे लेकर

ऊपरकी सब स्थितिकाण्डकों क्री घातकर शेष रही हुई सब स्थिति असंख्यातवें भागप्रमाण होती है ।

खब स्थितिकाण्डकोंकी तो एक समय कम उत्कीरणाकालोंमें अधःस्थितिगलनाके द्वारा असंख्यात

भागहानि ही होती है । जबतक मिथ्यात्वसम्बन्धी एक समयकम आवलिसात्र स्थितिसत्कमे शेष

रहे तबतक इसी प्रकार ले जाना चाहिये । तदनन्तर उत्क्रष्ट संख्यात प्रमाण स्थितिसत्कम शेष रहने

तक असंख्यातभागद्वानि होकर जाती है। तदनन्तर मिथ्यात्वकी तीन समय कालवाली दो स्थिति

योंके शेष रहने तक संख्यात भागहानि होकर जाती है । पुनः एक स्थितिके स्तिबुकसंक्रमणके द्वारा

सम्यक्त्वके ऊपर संक्रान्त होनेपर निषेकोंकी अपेक्षा संख्यातगुणद्वानि होती है । कालकी अपेक्षा तो

संख्यातमागहानि दयी होती है । इस प्रकार मिथ्यात्वकी वृद्धि और हानिकरी स्वस्थान अर परस्थान

की अपेक्षा भ्रूपणा की। इसी प्रकार सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी इद्धि और हानिका

कथन करना चाहिये।

विकषेषार्थव्द्धिका विवार करते समय जिस प्रकार यदह बतला आये हैं कि किस जीव

समासमें किस स्थितिसे कितनी स्थिति बढ़ने पर कौन सरी बृद्धि भ्राप्त होती है । उसी प्रकार हानिमें

भी समभना चाहिये । किन्तु यद्य विलोमक्रमसे विचार करना चाहिये। अर्थात् उत्कृष्ट स्थितिसे

असंख्यातर्ब भागके कम द्वोने तक असंख्यातभागद्वानि होती है। इसके बाद संख्यातभागदानि

होती है जो एक कम आधी स्थिति प्राप्त होने तक द्ोती है । और इसके बाद तत्प्रायोग्य भू बस्थिति

के प्राप्त होने तक संख्यातगुणदहानि होती है । पहले जिस प्रकार स्तर धरबस्थितिकी अपेक्षा ब॒द्धियों

का बिचार कर आये हैं इसी प्रकार यहाँ पर उत्कृष्ट स्थितिकी अपक्षा दी हानियोंका विचार किया

है यहाँ इतना विशेष समझना चाहिये। यह तो हानिविषयक सामान्य कथन हुआ । किन्तु सम्यग्दृष्टि

जीवके हानिके कथनमें कुछ विशेषता है। बात यह है कि सम्यग्दष्टि जीवकी दो अवस्थाएँ होती हैं

एक क्रियारहित अर दूसरी क्रियाखदित । सवेत्र क्रियारद्दित अबस्थामें तो असंख्यातभागद्वानि दी

होती है क्योंकि वहाँ अधःस्थितिगलनाके द्वारा एक एक निषेकका ही गलन होता है । किम्दु

क्रियासदित अवस्थामें यदि अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना हो रही है तो स्थितिकाण्डक्रोंकी अन्तिम

फालिके पतनके समय संख्यातभागद्वानि होती है क्योंकि उस समय पल्यके संख्यातं भागप्रमाण

स्थिततिक। पतन हाता है। अन्यत्र असंख्यातभागहानि दी द्वोती दै। और यदि दर्शनमोहनीयकी

Page 159:

१४९ जेयधवलासरदिदे कंसायपाहुडे हिदिविदत्ती दे

मिच्छृत्तस्स अत्थि असंखेज्जभागवड़ी दाणी संखेज्नभागवड्डी दाणी

संखेज्जगणवड़ी दाणी असंखेज्जग॒णहाणी अवटहाणं ।

२३६ एदासि बड्ढीणं हाणीणं च जहा पटमसुत्तम्मि देसामासियत्तेण घचिद्

हाणिम्मि वड्हाणीणं सत्थाणपरस्थाणसरूवेण परूबण। कदा तहा एत्थ वि कायन्वा

विसेषामावादो । तिव्वतिव्ययरतिव्यतमेदि दि दिबंधनज्छवसाणङ्काणिहि ह्िदीए असंखेज्ज

भागवड्डी संखेज्जभागवद्धी संखेज्जगुणबड़ी च होदि त्ति णव्बदे । द्विदिअशुभागे

कसायादो इणदि त्ति सुत्तादो । ट्विदिखंडयाणं पण णत्थि संभवो णिकारणत्तादो तति

ण विसोहीए ट्विदिखेंडयघादसंभवादों का विसोही णाम १ जेषु जीवपरिणामेसु

क्षपणा कर रदा है तो अपूर्वकरणसे लेकर प्रत्येक स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिक्रे पतनके समय

संख्यातभागदानि दोती है जा पल्यप्रमाण स्थितिक्रे शेष रहने तक चा रहती दै किन्तु जब स्थिति

एक पल्य रह जाती है तब स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय संख्यातगुणदानि होती

है क्योकि यहाँ काण्डकका प्रमाण संख्यात बहुभाग है। तथा दूरापक्रष्टि संज्ञावली स्थितिके शेष रहने

पर प्रथम स्थित्तिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय च्रसंख्यातगुणहानि दोती है क्योकि

यहाँ असंख्यातगुणी स्थितिका घात हो जाता है । इसी प्रकार आगे मी एर समय कम श्रावलि

प्रमाण स्थितिके शेष रदने तक जानना चाहिये। किन्तु इसके आगे उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण स्थितिके शेष

रहने तक असंख्यातभागहानि होती है क्योंकि यहाँ अघःस्थितिगलनांके द्वारा एक एक निषेकका

दी प्रति समय गलन होता है। इसके आगे संख्यातभागद्दानि होती है। यद्यपि यहाँ भी एक एक

निषेकका ही गलन होता है पर यद एक एक निषेक विद्यमान स्थितिके संख्यातवें भागप्रमाण है

अतः यहाँ संख्यातभागद्वानि बन जाती है । किन्तु यह क्रम जिनकी स्थिति तीन समय है ऐसे दो

निषेकोंके शेष रहने तक ही चा रहता है । पर दो निषेकोंके शेष रहने पर उनमेंसे एक निषेकके

स्तिवुकसंक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिमें संक्रन्त हो जाने पर संख्यातगुणद्वानि प्राप्त होती है क्योंकि

तदनन्तर समयमे दो समय कालप्रमाण स्थितिबाला एक निषेक पाया जाता है फिर भी यह्

संख्यातगुणद्वानि निषेकोंकी अपेक्षासे कदी दै । काली अपेक्षासे नहीं क्योंकि कालकी अपेक्षासे तो

बहाँ मी संख्यातभागद्ानि ही है क्योंकि तीन समयकी स्थितिवाले द्वितीय निषेकके दो समयी

स्थितिवाले बचे हुए अन्तिम निषेक्में संक्रान्त होने पर संख्याभागहानि ही प्राप्त दोती है । यहाँ

इतना विशेष जानना चाहिये कि संसार अबस्थामें कब कितनी दानि द्वीती है ऐसा कोई नियम नहीं है ।

मिथ्यात्वकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागद्दानि संख्यातभागइद्धि

संख्यातभागहानि संख्यातगुणबद्धि संख्यातथुणहानि असंख्यातगुणहानि और अब

स्थान होता है ।

२६६ जिस प्रकार पहले सूत्रमें देशामषेकरूपसे सूचित हुई हानिमें वृद्धि और हानिका

स्वस्थान और परथानरूपसे कथन किया उसी प्रकार यहां भी इन बृद्धि और दानियोंका कथन करना

चाहिये क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

शंकातीज्र तोत्रवर और तीत्रतम थ्थि।तबन्धाध्यवसायस्थानोंसे स्थितिकी असंख्यात

भागवृद्धि संख्यातभागबुद्धि और संख्यातगुणबृद्धि होती है ऐसा जाना जाता है क्योंकि स्थिति और

अनुभाग कषायसे होता है ऐसा सूत्रवचन है । परन्तु स्थितिकाण्डकोंके दोनेकी संभावना नहीं

क्योंकि उनके होनेका कोई कारण नहीं पाया जाता है ९

समाधाननहीं क्योंकि विशुद्धिसे स्थित्तिकाण्डकका घात दोना संभव दै ।

Page 160:

गा० २२ बड्डि पंरूंबणो १४१

सप्नप्पण्णेसु कसायाणं हाणी होदि थिरसुद्दसुहगसादसुस्सुरादीणं खहययडीणं बंधो च

ते परिणामा विसोही णाम । ताहिंतो ट्विदिखंडयाणं घादो । । किमबद्ढाणं १ पुव्विल्ल

ड्रिदिसंतससमाणट्विदीणं बंधणमवङ्काणं णाम ।

एवं सव्वकम्माणं ।

२४० जहा मिच्छत्तर्स तिविद्दा वड्डी चउव्बिहा हाणी अबड्टां च होदि तहा

सब्वेसि पि कम्माणं । णवरि अणंताणुबंधिचउकस्स असंखेउजगुणहाणी बिसंजोएंतम्हि

गेण्हिदव्या । बारसकसायणवर्णोकसायाणं असंखेज्जगुणदहाणी चारित्तमोहक्खबणाए

गेण्हिदव्वा ।

२४१ संपहि सम्मत्तरस असंखेज्जमांगवड्डी उच्चदे तं जदावेदगपाओग्गंतो

कोडाकोडिमेत्तद्धिदीए उवरि दुसमयुत्तरमिच्छत्तट्विदिं बंधिय पडिहग्गेण सम्मत्ते गहिदे

असंखेज्जभागवडी होदि भिच्छन्तम्मि बड्डिददोण्ह॑ ट्विदीणं गहिदसम्मत्तपदमसमए

सम्मत्तसम्मा मिच्छत्तेसु संकंतत्तादो इमं पढमवारणिरुद्धद्धिदीदी विसमयुत्तरचदुसमयु

त्तरादिकमेण मिच्छत्तद्विदिं बड्डाविय सम्मत्त गेण्हाविय सम्मत्तसम्भामिच्छत्ताणमसंखेज्ज

भागवड्डी परूवेदव्वा । तस्थ अंतिमवियप्पो बुचदेणिरुद्धसम्मत्तड्डिंदि जदण्णपरित्ता

शंंकाविशुद्धि किसे कहते हैं ।

समाधानजीवोके जिन परिणो होने पर कषायोंकी हानि होती है और स्थिर झुभ

सुभग साता और सुस्वर आदि शुभ प्रकृतियोंका बन्ध होता है उन परिणामोंका नाम विद्धि है।

इन परिणामोंसे स्थितिकाण्डकोंका घात होता है ।

शंकाअवस्थान किसे कहते हैं ९

समाधानपदलेका जो स्थितिसत््व दै उसके समान स्थितियोंका बन्ध होना अवल्थान

कदा जाता है।

इसी प्रकार सब कर्मोकि जानना चाहिये ।

२४० जिस प्रकार सिथ्यात्वकी तीन अकारकी बुद्धि चार प्रकारकी हानि और अवस्थान

होता है उसी प्रकार सभी कमेकि जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्ताजुबन्धी

चतुष्ककी असंख्यातगुणद्वानि विसंयोजनाके समय ही अहण करनी चाहिये। तथा बारह कषाय और

नो नोऋषायोंकी अखंख्यातगुणहानि चारित्रमोहनीयकी क्षपणाॐे समय ग्रहण करनी चाहिये ।

२४९१ अब सम्यक्त्थवकी असंख्यातभागवुद्धिका कथन करते हैं । जो इस प्रकार हैवेदक

सम्यक्ल्वके योग्य अन्तःकोङ्ाकोडप्रमाण स्थित्तिके उपर दो समय अधिक मिथ्यात्वकी स्थितिको

बाँधकर प्रतिभग्न होकर सम्यक्टवके ग्रहण करने पर असंख्यातभागवृद्धि द्वोती है क्योंकि मिथ्यात्वमें

बढ़ी हुई दो स्थितियोंका सम्यक्त्व ग्रहण द्वोनेके प्रथम समयमे सम्यक्त्व च्रौर सम्यग्मिथ्यात्वमें संक्र

मण होता है। इस प्रकार प्रथमबार विवक्षित स्थितिसे तीन समय अधिक और चार समय अधिक आदि

क्रमसे मिथ्यास्वकी स्थितिको बढ़ाकर और सम्यक्त्वको भदण कराके सम्यक्स्त्र और सम्यग्मिथ्यास्वकी

असंख्यातभागवुद्धिका कथन करना चाहिये। उनमें अब अन्तिम विकल्पको कहते हैंविवक्तित

सम्यक्वकी स्थितिको जघन्य परीतासंख्यातले खण्डित करके जो खण्ड प्राप्त हों उनमेंसे एक खण्ड

Page 161:

१४२ ज्यधवला सहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती

संखेज्जेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तद्धिदीहि मिच्छत्तड्दिदीओ बंधेण बड्डाबिय सम्मत

चेत्तणावद्धिदमिच्छत्तट्विदीस सम्पत्तसम्भामिच्छत्तेस संकंतासु अपच्छिमा असंखेज्ज

भागवड़ी ।

२४२ संपहि पढमवारणिरुद्धवेदगपाओग्गसम्मत्तसंतकम्मस्सुवरि समयुत्तरसंत

कम्मियमिच्छादिट्ट घेत्ण असंखेज्जमागवड्िपरूबणं कस्सामो । एदम्हादो णिरुद््धिदीदो

मिच्छत्तद्विदिं दुसमयुच्तरं बंधिय सम्मत्त गहिदे असंखेज्जभागवड्डी होदि । एवं तिसमयु

चरादिकमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्धिदीओ मिच्छत्तम्मि बड़ाविय असंखेञ्ज

भामवड्डिपरूवणा कायव्या। एवं विसमयुत्तरतिसमयुत्तरचदुसमयुत्तरादिकमेणब्महिय

ट्विदिसंतकम्माणं णिरुभणं काऊण णेदव्यं जाव तप्पाओग्गअंतोमहृत्तणणसत्त रिसागरो

बमकोडाकोडि त्ति। एवं णीदे एगेगसम्मत्तसंतकम्मट्ठिदीए उवरि पलिदोवमस्स संखे

ज्जदिभागमेत्ता असंखेज्जभागवड्डिवियप्पा लद्धा होंति । एवमेत्तिया चेव असंखेज्जभाग

बड्डिवियप्पा लब्भंति त्ति णावहारणं कायव्वं कत्थ तरि एगदोतिण्णिसंखेज्जअसंखेज्ज

अंतोहुम्त्तादिवियप्पाणघुवर्ल भादो । एवमसंखेज्जभागवड्डिपरूवणा कदा ।

२४३ संपद्दि संखेज्जमागवड्डिपरूवणा कीरदे । एगो वेदगपाओगगसम्मत्तसंत

कम्मिओ मिच्छादिद्टी तत्तो उवारि तप्पाओग्गजहण्हं पलिदोवमस्स संखज्जदिभागमेच

मिच्छत्तद्विदि बड्िदूण बंधिय सम्मत्त गहिदे संखेज्ञभागवड़डी होदि । पणो संपि

प्रमाण स्थितियोंके द्वारा मिथ्यात्वकी स्थितिर्योको बन्धके द्वारा बढ़ाकर और सम्यक्त्तरकों अहण

करके बढ़ी हुई भिध्यावकी स्थितियोके सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वमें संक्रान्त होने पर उत्कृष्ट

असंख्यातभागबुद्धि होती है।

२४२ अब प्रथमबार विवज्षित वेदकसम्यक्त्वके योग्य सम्यक्त्वसत्कमंके ऊपर एक समय

अधिक सत्कमेंबाले मिथ्यादृष्टिको प्रदण करके असंख्यातभागवुद्धिका कथन करते हैंइस विवक्षित

स्थितिसे मिथ्यात्वकी दो समय अधिक स्थितिको बाँधकर सम्यक्त्वके प्रदण करने पर असंख्यात

मागवृद्धि होती है। इसी प्रकार तीन समय अधिक आदि क्रमसे पल्योपमके असंख्यतर्वें भागप्रमाण

स्थितियोंको मिथ्यात्वमें बढ़ाकर असंख्यातभागवुद्धिका कथन करना चाहिये । इस प्रकार तत्परायोग्य

अन्तमुहूर्तकम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरग्रमाण स्थिति प्राप्त होने तक दो समय अधिक तीन समय

अधिक और चार समय अधिक आदि क्रमते स्थितिसस्कर्मोंको ग्रहण करके कथन करना चाद्ये ।

इस प्रकार कथन करने पर सम्यक्त्व सत्कमेकी एक एक स्थितिक्रे ऊपर पल्योपमके संख्यातवें भाग

प्रमाण असंख्यातभागबुद्धिके विकल्प प्राप्त होते हैं। इस प्रकार इतने दी असंख्यातभाग वुद्धिके विकल्प

प्राप्त ह्वोते हैं ऐसा निश्चय नहीं करना चाहिये क्योंकि कीं पर एक दो तीन संख्यात असंख्यात

और अन्तमुंहूर्त आदि विकल्प पाये जाते हैं । इस प्रकार असंख्यातभागवुद्धिका कथन किया।

8 २४३ अब संख्यातभागवृद्धिका कथन करते हैंवेदकसम्यक्त्वके योग्य किसी एक

सम्यक्त्वसत्कमें बाले मिथ्यादृष्टि जीवने उसके ऊपर पल्योपमके संख्यातवें भागश्रमाण तत्प्रायोग्य

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिको बढ़ाकर बाँधा पुनः उसके सम्यकत्वके ग्रहण करने पर संख्यातभागवुद्धि

होती है । पुनः इस समय विवज्षित सम्यक्त्वॐे स्थिति सत्कमेके ऊपर बढ़ी हुई मिथ्यात्वकी स्थिति

Page 162:

गा० २२ बह्टिपरूबणा १४

णिरुद्रसम्मक्तह्टिदिसंतकम्मस्मुवरि ब्डिदमिच्छत्तड्ििदे समयुततरदुसमयुत्तरादिकमेण

बड्डाविय सम्मत्त घेत्तण सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं संखज्जमागवड्डि काऊण णेदव्वं जाव

अप्पिदसम्भत्तड्डिदीए संखेज्जभागव्डिवियप्पाणं ५ त्ति। संपहि चरिमवियप्यो

चुचदेअप्पिदसम्पत ट्विदीए उवरि तत्तियभेतं समयुणं बंधेण मिच्छन्ते बड्डाविय पडि

हग्गेण मिच्छाइड्टिणा सम्मत्त गहिदे अप्पिदष्डिदीए अपच्छिमो संखेज्जमागवड्डिवियप्पो

होदि । पुणो पटमवारणिरुदर ्म्मत्तसंतकम्भस्सुवरि समयुकत्तरसंतकम्मिएण मिच्छादिद्धिणा

तप्पाओग्गजहण्णियं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमत्तद्विदिं वड्धिएण बंधिय पडिदग्गेण

सम्मक्ते गिदे संखेज्ञमागवड़ी होदि । पुणो संपहियसम्मत्तसंतकम्मद्ठिदिमवद्ठिद

कादुण मिच्छत्त्विदिं पृव्वव्डिद्िदीदों समयुत्तरं बड्माविय सम्भत्ते गिदे विदिओ

संखेज्जभागवड्डिवियप्पो होदि । एवं जाणिदृण णेदव्यं जाव एदिस्से वि णिरुड्ठड्िदीए

संखेज्जभागवड्डिवियप्पा सव्वे समत्ता त्ति। एवमणेण विहाणेण पढमवारणिरुद्धसम्भच

ट्विदिं दुसमयुत्तरादिकमेणब्भदियं कादुण णेदब्वं जाव पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणण

सत्तरिसागरोवमकोडाकोडि त्ति। एवं णीदे एगेगसम्मत्तसंतकम्मद्टिदीए उवरि कत्थ

वि संखेज्जसागरोवममेत्ता क्त्य चि संखेज्जपलिदोवममृत्ता क्त्य वि असंखेज्जवस्स

मेत्ता कत्थ वि संखेज्जवस्समेत्ता कत्थ वि अंतोम्न॒हुत्तमेच कत्थ वि संखेज्जसमयमेता

संखेज्जभागव्डिवियप्पा लद्धा होति । णवरि अग्गट्िदिम्हि पलिदोवमस्स संखेज्जभाग

मेचड्विद्विसेसेदि एको वि संखेज्जभागवह्डिवियप्पो ण लद ।

को एक समय अधिक दो समय अधिक आदि क्रमसे बढ़ाकर और सम्यक्त्वकां प्रदण कराक

सम्यक्त्व और ख्म्यग्सिथ्यात्वकी संख्यातभागव्द्धि करते हुए सम्यक्त्वकी विवज्षित स्थितिके संख्यात

भागचरद्धि सम्बन्धी विकस्पोमेखे द्विचरमविकस्पके प्राप्त होने तक ले जाना चाहहये। अब अन्तिम

विकस्पको बतलाते हैंसम्यक्त्वकी विवक्तित स्थितिके ऊपर बन्धके द्वारा मिथ्यात्वकी एक समय

कम उतनी ही स्थिति और बढ़ाकर कोई एक मिथ्यादृष्टि जीव प्रतिभम्न होकर सम्यक्त्वको ग्रहण

करले तो उसके विवक्तित स्थितिका संख्यातभागवृद्धिसम्बन्धी उत्कृष्ट विकल्प होता है पुनः पदली

बार विवज्ञित सम्यक्त्वसत्कमंके ऊपर एक समय अधिक सत्कमेंबाले मिथ्यादृष्टि जीवने तत्पायोग्य

पल्योपमके संख्याते भागप्रमाण जघन्य स्थितिको बढ़ाकर बोधा ओर ग्रतिभम्न होकर सम्यकटवको

ग्रहण किया तो उसके संख्यातभागबृद्धि द्ोती है। पुनः इस समय जो सम्यक्त्व सत्कमंकी स्थिति

कही है उसे अवस्थित करके और मिथ्यास्वकी स्थितिको पहले बढ़ी हुई स्थितिसे एक समय और

बढ़ाकर जो जीव सम्यकत्वको ग्रहण करता है उसके संख्यातभागबृद्धिका दूसरा भेद होता है। इस

प्रकार इस विषज्षित स्थितिके भी संख्यातभागवृद्धिसम्बन्धी सब भेदोंके समाप्त दने तक इसी प्रकार

जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार इस विधिके अनुसार पहलीबार विवक्षित सम्यक्त्वकी

स्थितिको दो समय अधिक आदि क्रमसे अधिक करके पस्योपमके संख्यातवें भागसे कम सत्तर

कोड़ाकोड़ी सागर प्राप्त होने तक्र कथन करना चाहिये । इख प्रकार कथन करने पर सम्यक्त्वसत्कर्म

की एक एक स्थितिके ऊपर कहीं पर संख्यातसागर प्रमाण कहीं पर संख्यात पल्यप्रमाण कहीं पर

असंख्यात वर्षप्रमाण कहीं पर संख्यात वर्षप्रमाण कद्दीं पर अन््तमुंहूर्तश्रमाण और कहीं पर संख्यात

समय प्रमाण संख्यातभागवृद्धिके भेद प्राप्त द्वोते हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि अग्र स्थितिमें

पल्योपमके संख्यातर्वेभागप्रमाण स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा संख्यातभागवृद्धिका एक भी विकल्प

प्राप्त नहीं द्वोता है ।

Page 163:

१४४ जयघबवलासहिदे कसायपाहुडे दिदिविहत्ती ३

२४४ संपहि संखेजजगुणवड़ी बुचदे तं जहापलिदोवमस्त संखेज्जदिभाग

मेत्तसम्मत् ट्विदिसंतकम्मियमिच्छादिद्टिणा उवसमसम्मत्ते गहिदे संखेज्जगुणवड्डी होदि ।

एतो समयुत्तरादिकमेण सम्मत्तसम्भामिच्छत्तहिदीओ परिवाडीए बड्डाविय सम्मत्त

गिदे वि संखेज्जगुणवड्डी ओ चेव होति । एवं ऐणेदव्यं जाब सागरोबम सागरोवमपुधत्तं

वा पत्तं ति। इदो उवसमसम्मत्तपाओग्गाणं हिदीणमेत्तियाणं चेव संमवादो । एत्तो

समयुच्तरसम्मत्तहिदिसंतकम्मियमिच्छादिष्िणा वेदगसम्भन्ते गदिदे संखेज्जगुणवड्ी होदि ।

एवं गंतूण मिच्छत्तधुबद्धिदीए अद्धमेत्तसम्मत्तड्धिदिसंतकम्मेण धुवद्धिदिमेत्तमिच्छत्द्टिदीए

वेदगसम्मत्ते गहिदे संखेज्जगुणवड़ी होदि । एवं मिच्छत्घुव्धिदोए णिरुद्धाए एत्तिओ

चेष संखेज्जगुणवड्धिविसयो । पुणो पढमवारणिरुद्वसम्मत्तद्विदिसंतं धुवं कादण पुव्बुत्त

मिच्छतट्टिदिसंतश्म्मं समयुत्तरादिकमेण बड्डाविय णेदव्वं जाबव सत्तरिसामरोवमकोडा

कोडिमेत्तमिच्छत्तद्धिदं बंधिय पडिदग्गो दोदूण वेदगसम्मत्तं गहिद्समए सम्मत्तसम्मा

मिच्छत्ताणं संखेज़मुणव्डि कादृण ट्विदो त्ति । पणो पुव्विछसम्भत्तद्विदीदो समयुत्तर

सम्मत्तद्विदिणिरुंमणं कादृण पृव्व॑ व संखेजगुणव्डिवियप्पा अपरिसेपा वत्तव्वा । एवं

दुसमयुत्तरतिसमयुत्तरादिकमेण सम्प्रचद्विदिसंतं बड्डाविय णेदव्य जाव सम्भत्तद्विदिसंत॑

धुबद्ठिदिं पत्तं ति । ताघे भिच्छत्तुवह्धिदीदो दुभुणमिच्छत्तद्विदिसंतकम्मिएण वेदगसम्मत्ते

२४४० अब संख्यातगुणबृद्धिका कथन करते हैं । जो इस प्रकार दैसम्यक्त्वकी पल््योपस

के संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिसत्कमेबाले मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा उपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करने

पर संख्यातगुणबृद्धि होती है इसके आगे एक समय अधिक आदि क्रमसे सम्यक्त्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वकी स्थितियोंको उत्तरोत्तर बढ़ाकर सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर भी संख्यातगुणबृद्धियाँ ही

होती हैं । सम्यक्त्वकी एक सागर या एक सागरप्रथक्त्व प्रमाण स्थित्तिके प्राप्त होने तक इसी प्रकार

कथन करना चाहिये क्योंकि उपशमसम्यक्त्वके योग्य इतनी स्थितियाँ ही सम्भव हैं इसके आगे

सम्यक्त्वकी एक समय अधिक स्थिति सत्कमेंबाले मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा वेदकसम्यक्त्बके ग्रहण

करने पर संख्यातगुणबृद्धि होती है । इस प्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय प्रमाण स्थितिके बढ़ाने पर

मिथ्यास्वकी घ्रुवस्थितिखे सम्यक्त्वकी आधी स्थिति सत्कर्मवाले जीवके द्वारा मिथ्यात्वकी धव

स्थितिप्रमाण स्थितिके साथ वेदक सम्यक्त्वके अहण करने पर संख्यातगुणबृद्धि होती है । इस प्रकार

मिथ्यात्वकी ध्ुवस्थितिके रहते हुए संख्यातगुणबृद्धिविषयक्र भेद इतने ही होते हैं । पुनः पदलीबार

अहण किये गये सम्यक्त्वे स्थितिसत्त्वको ध्रुव करके और पूर्वोक्त मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मको

एक समय अधिक भादि क्रमसे बढ़ाकर वहाँ तक ले जाना चाहिये। जहाँ तक सन्तर कोड़ाकोड़ी

सागरप्रमाण मिथ्यात्वकी स्थितिको बाँधकर और ग्रतिभप्त होकर वेदकसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके

प्रथम समयमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी संख्यातगुणब्रद्धि करके यह जीव स्थित दहो । पुनः

पहलेकी सम्यक्त्व की स्थितिसे एक समय अधिक सम्यक्त्वकी स्थितिको ग्रहण करके पहलेके समान

संख्यातगुणबुद्धिके सब विकल्प कद्दना चाहिये। इस प्रकार दो समय अधिक तीन समय अधिक

आदि क्रमसे सम्यक्त्वके स्थितिसत्त्वकों बढ़ाकर सम्यक्ट्यका स्थितिसत्त्व प्रुबस्थितिको ग्राप्त होने तक

लेज्ञाना चाहिये। उस समय मिथ्यात्वकी घ्रवस्थितिसे मिथ्यात्वके दूने स्थितिसस्कमेवाले जीवकरे

Page 164:

गा० २२ बड्डिपरूवणाए समुक्कित्तणा १४५

गिदे संखे्ञगुणवङ्ी होदि । पुणो शमं मिच्छ्तधुषट्धिदिमेचसम्मत्तट्टिदिं धुवं कादण

दुगुणमिच्छत्तघुबह्िदिं समयुत्तरादिकमेण वद्डाविय णेदव्वं जाव अंतोमुहत्तणसत्तरि

सागरोबमकोडाको डिमेत्तमिच्छत्तट्टिद्संतकम्मे त्ति। पणो समयुत्तरमिच्छत्तधुषद्धिदि

मेत्तसस्मत्तट्विदीए उवरि दुसमयाहियधुव्धिदिमेच वड्डिय वेदगसम्मत्त गिदे संखेजगुण

बडी होदि। एवमप्पप्पणो णिरुद्धड्टिदिसंतकम्मस्सुवारि दुगुणदुगुणकमेण मिच्छत्तड्डिदिं

बंधाविय वेदगसम्भत्ते गदिदे दुगुणबड़ी होदि । एवं णेदव्ब॑ जाव अंतोसुहत्तणसचरि

सागरोवमकोडाकोडि त्ति। एवं णीदे मिच्छत्तधुव्धिदीए उवरि समयुत्तरादिकमेण जाव

सत्तरिसागरोवमकोडाकीडीणमद्धमेत्तद्वितीओ त्ति ताव एदाहि ट्विदीहे संखेजगुणव्ि

वियप्पा र्धा पुणो उवरिमतदद्धमेत्तट्धिदी हि ण लद्भा सम्मत्त सम्मामिच्छत्ताणमसंखेजगुण

हाणी दंसणमोहणीयक्खबणाए जहा मिच्छत्तसस द्रावकिद्विद्ठिंदिसंतकम्मे सेसे असंखेज

गुणहाणी परूविदा तहा परूवेयव्वा विसेसाभावादों ।

२४५ संपहिं असंखेजमागहाणो चुच्चदे । त॑ं जहासम्मत्तं घेत्तण जाव किरि

याए विणा वेछावट्टिसागरोबमाणि भवादि ताव अधघट्ठिदिगलणाए असंवेज्ञमागहाणी

होदि । दंसणमोहक्खबणाएं वि ते सच सव्वद्धिदिकंडयाणं चरिमफालीणं पदणसमयं मोचण

अण्णत्थ अधट्डिदिगलणाए मागदाणीः चेव । अथवा एबमसंखेज़ा भागद्दाणी

वत्तव्या तं जहाअंतोम्न हृत्तणसत्तरिसागरोवमकोडाको डिमेत्तसम्मत्तटधिदिसंतकम्मिय

द्वारा वेदकसम्यक्त्थके अहण करने पर संख्यातगुणबृद्धि होती है। पुनः मिथ्यात्वकी भ्रुबस्थिति

प्रमाण सम्यक्त्वकी इस स्थितिकों ध्रुव करके मिथ्यास्वी दूनी भुवस्थितिकों एक समय अधिक

आदि क्रमसे बढ़ाकर मिथ्यात्वकी अन्तमुंहूर्तकम सत्तर कोड़ाकोडी सागरप्रमाण स्थितिसत्कर्म प्राप्त

द्ोने तक ले जाना चाहिये। पुनः मिथ्यात्वकी एक समय अधिक ध्रुवस्थितिप्रमाण सम्यक्त्वकी

स्थितिके ऊपर दो समय अधिक ध्रवस्थितिप्रमाण स्थितिको बढ़ाकर वेदकसम्यक्त्वके अहण करने

पर संख्यातगुणबृद्धि दोती है । इस प्रकार अपने अपने विवज्षित हुए स्थितिखत्कमंके ऊपर दूने दूने

ऋमसे समिथ्यात्वकी स्थितिका बन्ध कराके वेदकसम्यक्त्वके अदहण करने पर दुगुनी इद्धि होती है ।

इस प्रकार अन्तसुहू्तकम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर तक ले जाना चाहिये । इस भकारं ले जाने पर

मिथ्यात्वकी ध्रवास्थतिके ऊपर एक समय अधिक आदि ऋ्मसे सत्तर कोड़ाकोड़ी खागरकी अधी

स्थित्तिके प्राप्त दीने तक इन स्थितियोंके द्वारा संख्यातगुणबूद्धिके भेद प्राप्त होते हैं। पुनः सम्यक्त्वकी आधी

ऊपरकी स्थितियोकि द्वारा संख्यातगुणबृद्धिके भेद नहीं प्राप्त होते हैँ । जिस प्रकार दशनमोहनीयकी

क्षपणामें मिथ्यात्वकी दूरापकृष्टि स्थितिसत्कके शेष रहने पर असंख्यातगुणद्वानिका कथन किया उस

प्रकार सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्याकी असंख्यात्तगुणएहानिका कथन करना चाहिये क्योकि उससे

इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

। २४५ अब असंख्यातभागहानिका कथन करते दैखम्यक्त्वको ग्रहण करके जव तक

क्रियाके बिना एकसौ बत्तीस सागर काल होता है तबतक अघःस्थितिगलनाके द्वारा असंख्यात

भागानि होती है । दशनमोदनीयकी क्षपणाके समय भी सब स्थितिकाण्डकोंकी अन्तिम फालि्यो

के पतन समयको छोड़कर अन्यत्र अधःस्थितिगलनाके द्वारा असंख्यातभागहानि दी होती है ।

अथवा इस प्रकार असंख्यातमागहानिका कथन करना चाहिये । जो इस प्रकार हैसम्यक्स्वकी

अन्तमुहूर्तकम सन्तरकोढाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिसत्कमंबाले मिश्यारृष्टि जीवके पल्योपमके

ता० प्रतौ मेत्तदिंदिहीणलछसम्मत्तइति पाठः

१६

Page 165:

१४६ जयघधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

मिच्छाइट्ििणा पलिदोवमस्स असंखेजभागमेत्त द्विदिखंडयघादेण विणा अधट्टिदिगलणाए

सम्मत्तष्िदीए गलिदाए असंखेजभागद्वाणी णिरंतरं जाव धुवद्धिदि त्ति लब्भदि। इदो १

णांणाजीवे अस्सिदूण घुबड्डिदीए ऊणसत्तरिसागरोषमफोडाकोडिमेचद्धिदीणं अधद्टिदीए

गलणुवलंभादो । धुबड्धिदीदो उवरिमसव्वसम्मत्तड़िदीणं णाणाजीवुन्वेक्षणमस्सिदूण असं

खेजभागहाणी किण्ण लब्भदे १ सु लब्भदि । को भणदि ण लब्भदि तति । किंतु मिच्छत्त

धुबड्िदीदो उवरि सम्म्तद्टिदियुव्वेह्ठमाणस्स ॒परिदोवमस्स अखंखेजदिभागमेत्तो चेव

ड्विदिखंडओ पददि चि णियमो णत्थि इदो विसोहीए पलिदोवमस्स संखेजभागमेत्ताणं

संखेज्ञपलिदोवममेत्ताणं कत्थनि संखेजसागरोवममेत्ताणं च डिदिकंडयाणं पदणसंभ

वादो । सव्वेसि्ववेह्टणकंडयाणं पमाणं पलिदोवमस्स असंखेजमागमेत्तं चेवे त्ति आइरिय

बयणेण कथं ण विरोहो १ णत्थि बिरोहो पलिदोवमस्स संखेजमागट्टिदिकंडयप्पहुडि उवरि

सब्बद्धिदिखंडयाणमुव्वेछणपरिणामेण विणा विसोहिकारणत्तादो । ण च विसोहीए

पदमाणद्धिदिकंडयाणश्चव्वेह्ठणपरिणामो कारणं होदि अच्ववस्थावत्तीदो ।

२४६ सम्मत्तस्स डब्वेकणाए पारद्भाए पुणो सम्मत्तम्मि पदमाणट्विकंडयपमाणं

पलिदोवमस्स असंखेजमागमेत्तं चेवे त्ति के बि आइरिया मणंति तण्ण वडदे विसोह्दीए

द्िदिखंडयघादेण मिच्छत्तरस संखेज्जगुणहाणीण संतीए भिच्छत्तद्धिदिसंतकम्मादो सम्मत्त

असंख्यातबें भागभ्रमाण स्थितिकाण्डकवातके बिना अधःस्थितिगलनासे सम्यक्स्वकी स्थितिके

गलित दोने पर भुवस्थितिके भ्राप्त दोने तक निरन्तर असंख्यातभागहानि होती है क्योकि नाना

जीवोंकी अपेक्षा धुबस्थितिसे न्यून सत्तर कोड़ाकोड़ी प्रमाण स्थितियोंकी अधःस्थितिगलना

पाई जाती है।

शंका्रवस्थितिखे ऊपरकी सम्यक्त्वकी सव स्थितियोंकी नाना जीबोंकी अपेक्षा उद्धे लना

का आश्रय लेकर असंख्यात भागानि क्यों नहीं प्राप्त दोती है ९

समाधानअच्छी तरहसे श्राप्त होती है। कोन कहता है कि नहीं प्राप्त होती है । किन्तु

मिथ्यात्वकी ध्ुबस्थितिके ऊपर सम्यक्त्वकी स्थितिकी उद्ध लना करनेवाले जीवके पल्योपमके

असखंख्यातर्वें भागप्रमाण स्थितिकाण्डकका ही पतन होता है ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि विशुद्धि

के कारण कहीं पर पल्योपमक्रे संख्यात्वें भागप्रसाण कहीं पर संख्यात पल्यप्रमाण और कहीं पर

संख्यात सागरभ्रमाण स्थितिकाण्डकोंका पतन सम्भव है ।

शंकासभी उद लनाकाण्डकोंका प्रमाण पल्योपसके असंख्यातवें भागमात्र दी है आचार्यो

के इस वचनके साथ उपर्युक्त कथनका विरोध क्यों नहीं प्राप्त होता है ९

समाधानकोई विरोध नहीं है क्योकि पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिकाण्डकसे

लेकर ऊपरके सब स्थितिकाण्डक उद्रो लनारूप परिणामोंसे न दोकर विशुद्धिनिमित्तक होते हें । यदि

कहा जाय कि विशुद्धिके द्वारा पतनको प्राप्त होनेवाले स्थितिकाण्डकोंका उद्र लनापरिणाम कारण द्वोता

है सो भी बात नहीं है क्योकि ऐसा माननेमें अव्यवस्थाकी अत्ति आती हे।

२४६ सम्यक्त्वकी उद्धोलनाके प्रारम्भ होने पर तो सम्यक्त्वके पतनको प्राप्त दोनेवाले

स्थितिकाण्डकोंका प्रमाण पल्योपमङे असंख्यातर्वें भागमात्र ही द्वोता है ऐसा कितने ही आचाये

कहते हैं परन्तु उनका यह कना नहीं बनता है क्योंकि ऐसा मानने पर विशुद्धिसे स्थिततिकाण्डकघात

Page 166:

गा० २२ बद्डिपरूवणाए समुक्षित्तणां ९४७

ट्विदिसंतकम्मस्स संखेजगुणत्प्पसंगादो । ण च एवघुव्वेष्ठणसंकमेणं मिच्छत्तंस्सुवरि

सम्मत्ते णिरंतरं संकममाणे सम्मत्तद्विदीदो मिच्छतट्विदीए संखेज्युणदीणत्तविरोदादो ।

तम्हा मिच्छन्तस्स ड्विंदिखंडए पर्दते सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं घादिद्सेसमिच्छत्तद्डिदीदो

उबरिमिद्ठिदीणं णियमा घादो होदि तति चेत्तव्वं । एवं संते सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमेग

णिसेगमेत्तो वि हिदिखंडओ होदि ति वुत्त दोदु णाम ण को वि एत्थ विरोदो ।

२४७ उव्वेह्टणाए सम्मत्तसम्मामिच्छततेसु मिच्छततघुबद्धिदिपमाणं पत्तेषु वि एसो

चेव कमो विगलिंदियविसोहीदि धादिजमाणमिच्छसद्धिदिखंडयाणं पलिदोवमस्स संखे

जमागायामाणमुवलंभादो । एइंदिएसु पुण उव्वे्टमाणस्सेव बिसुञ्छमाणस्स वि पलिदो

वमस असंखेजदिभागमेत्तो ट्विदिखंडओ होदि । एददिशसु विगलिंदिएसु च संखेजगुण

हाणी वि सुणिज्ञदि सा इदो लब्भदे १ ण सण्णिपंचिदिएण आदत्तद्विदिखंडए एइंदिय

बिगलिंदिएस णिबदमाणे तदुब॒रंभ।दो । एवम्रेइंदिए संखेज्ञमागहाणी वि परत्थाणादो

साहेयव्या। तम्दा अंतोषठुहुचृणसत्तरिमादिं कादृण जावर सन्बजदण्णचरिशव्वे्ठणकडयं

ति ताव णिरंतरमसंखेजमागहाणीए तरियप्पा लब्भंति ति वेत्तव्ं । विज

के द्वारा मिथ्यात्वकी संख्यातगुणदानिके दाते हुए मिथ्यात्वके स्थितिसत्कमेंसे सम्यक्त्वकं स्थिति

सत्कर्मको संख्यातगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योकि इद्र लना

संक्रमके द्वारा मिथ्यात्वके ऊपर सम्यक्त्वका निरन्तर संक्रमण होने पर सम्यक्त्वकी स्थितिखे

मिथ्यात्वकी स्थित्तिको संख्यातगुणा दीन माननेमें बिरोध आता है । अतः मिथ्यात्वके स्थितिकाण्डकके

पतन होने पर घात करनेके बाद शेष रही मिथ्यात्वकी स्थितिसे सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिध्यात्वकी

ऊूपरकी स्थितियोंका नियमसे चात है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । ऐसा होने पर सम्यक्त्व और सम्य

मिथ्यात्वका एक निषेकप्रमाण भी स्थितिकाण्डक होता है ऐसा कहने पर आचायंका कहना है कि

रहा आओ इसमें कोई विरोध नहीं है ।

२७७ उद्र लनाके द्वारा सम्यक्त्व और सम्यंग्मिथ्यात्वके मिथ्यात्वकी ध्रुबस्थितिप्रमाण

प्राप्त होने पर भी यही क्रम होता है क्योंकि विकलेन्द्रियोंकी विशुद्धिके द्वारा घातको प्राप्त दोनेबाले

सिथ्यात्वके स्थितिकाण्डकोंका आयाम पल्योपमके संख्यातर्बें भागप्रमाण पाया जाता है। परन्तु

एकेन्द्रियों मे उद्र लना करनेवालेके खमान विशुद्धिको प्राप्त दोनेवाले जीवके मी पल्योपमके असंख्या

से भागप्रमाण स्थितिकाण्डक होता है ।

शंकाएकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमें संख्यातगुणद्ञानि भी सुनी जाती है बह कैसे

श्राप्त द्ोती है ९

समाधाननहीं क्योकि जिस संज्ञी पंचेन्द्रियने स्थितिकाण्डकका आरम्भ किया उसके

श र विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके संख्यातगुणद्दानि

पाई जाती है ।

इसी प्रकार एकेन्द्रियमें परस्थानकी अपेक्षा संख्यातमागहानि भी साधना चादिये । अत्त

श्न्तयुहूतेकम सन्तर कोड़ाकोड़ी सागरसे लेकर सबसे जघन्य अन्तिम उद्रलनाकाण्डकतक निरन्तर

शअसंख्यातमागहानिके विकल्प प्राप्त होते हैं ऐसा भण करना चाद्ये ।

६ बिरेषार्थ वैसे तो स्त्र सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्तरोत्तर हानि ही होती है किन्तु वेदक

सम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्वको प्रास्त दोनेवाले जीवके उसकी वृद्धि भी देखी जाती है । यहाँ पहले

Page 167:

१४८ जंयधवलांसदिदे कंसायपाहुडे छ्विद्विहत्ती है

२४८ संपहिं संखेज़भागद्ाणी उचदे । ठं जहाअंतोुहु्ृणसत्तरिसागरोवम

कोडाकोडीणं संखेञ्जभागमेत्ते सव्वजहण्णद्धिदिखंडए हदे संखेजजभागदाणी होदि एवं सम

युत्तरादिकमेण ट्विदिखंडए णिवद्माणे संखेजभागहाणी चेव दोदि । एवं णेदव्वं जाव

अंतोभरुहुणसचरिसागरोबमकोडाकोडीणं समयूणद्वमेच ट्विदीओ एकसराहेण घादि

दाओ त्ति। एवं समयाहियअंतोुहृतूणसत्तरिसागगेवमकोडाकरोडिद्धिदिं पि णिरं

मिदृण संखेजभागदाणिपरूवणा कायव्वा । एवं हेट्टिमसव्वद्धिदीणं समयाविरोहेण गिर

भणं कादृण संखेञ्जमागहाणिपरूबणा कायव््ा । दंसणमोहक्खबणाएं वि अपुव्वकरण

पटमसमयग्पहुडि जाब पलिदोवमट्टिदिसंतकम्मं चेड्डदि ताव एस्थंतरे पदमाणद्धिदिकंडयाणं

चरिमफालीसु णिवदमाणासु सव्वत्थ संखेऽजमागहाणी होदि रस्य णिवदमाण

डिदिकंडओ पलिदोवमस्स संखेजदिभागमेत्तो चेवे त्ति णिवमादो ।

२४६ संपहि संखेजगुणहाणी वुचदे । तं जहादंसणमोहक्खबणाए पलिदो

बृद्धिका विचार क्रमप्राप्त है सम्यकक्त्वकी स्थितिमें चार बृद्धियाँ दोती हैं असंख्यातबृद्धि संख्यात

भागबृद्धि संख्यातगुणबृद्धि और असंख्यातगुणणरद्धि । यह नियम है कि जिसके सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी स्थिति कमसे कम प्रथक्त्व सागरसे एक या दो समय आदि अधिक होती है

वह जीव यदि सम्यक्त्वको प्राप्त दोता है तो नियमसे वेदकसस्यक्त्वको दी प्राप्त दोता है । साथ ही

यह भी नियम है कि ऐसे जीवके मिथ्यात्वकी स्थिति नियमसे अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर होती है।

पदले हमें असंख्याठ्भागवृद्धिता विचार करना है। किन्तु सम्यक्त्थ और सम्यम्मिथ्यात्वके

अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरसे नीचे उपर्युक्त सब स्थितिविकल्पोंमें असंख्यातभागवृद्धि सम्भव नहीं।

हँ मिथ्यात्वकी धुवस्थित्तिके नीचे पलल््यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविऋल्पोंमें असंख्यात

भागबृद्धि दो सकती है क्योंकि यदि कोई जीव मिथ्यात्वकी इस स्थितिके साथ वेदकसम्यक्त्वको

श्राप्त होता है और उस समय सम्यकत्वकी स्थिति एक समयसे लेकर प्यके श्रसंख्यातवें भागप्रमाण

कम है तो असंख्यातभागवृद्धि दी होगी ।

२४८ अब संख्यातभागहानिका कथन करते हैं। जो इस प्रकार हैअन्तमुंहूर्तकम

सत्तर कोड़ाकोड़ी सागस्प्रमाण स्थितियोंके संख्यातवें भागप्रमाण सबसे जघन्य स्थितिकाण्डकके

घात होने पर संख्यातभागहानि रोती है । इसी प्रकार एक समय अधिक आदि रमसे स्थिति

काण्डकके चात होने पर संख्यातभागदहानि ही होती है । इसी प्रकार अन्तमुहूतेकम सत्तर कोड़ाकोड़ी

सागरकी एक समय कम अधेप्रमाण स्थितियोंका एक साथ घात प्राप्त होनेत्तक कथन करना चाहिये ।

इसी प्रकार एक समय अधिक अन्तमुहूतेकम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थितिके रहते हुए भी

संख्यातभागद्वानिका कथन करना चाहिये । इसी प्रकार नीचेकी सब स्थितियोंको यथाप्रमाण ग्रहण

करके संख्यातभागद्वानिका कथन करना चाहिये । द्शैनमोदनीयक्र क्षपणाके समय भी अपूर्वकरणके

प्रथम समयसे लेकर पल्यप्रमाण स्थित्तिसत्कमके रहने तक इस अन्तरालमे पतनको प्राप्त होनेवाले

स्थितिकाण्डकोंकी अन्तिम फालियोंका पतन होने पर सर्वत्र संख्यातभागहानि होती है क्योकि यहाँ

पर जिन स्थितिकाण्डकोंका पतन द्वोता है उनका प्रमाण पस्यके संख्यात्वेभागमात्र दी दै

ऐसा नियम है ।

२४६ अब संख्यातगुणद्वानिको कदते हैं। जो इस प्रकार हैदशेनमोहनीय की क्षपणामें

Page 168:

गा० ३१२ बड्धिंपरूवणाए संमुकित्तणा १४९

वमट्ठिदिसंतकम्मप्पहुडि जाव द्रावकिट्विद्विदिसंतकम्मं॑ चेटदि ताव एत्थ व पदमाण

ट्विदिखंडयाणं चरिमफालीसु णिवदमाणासु सव्बत्थ संखेजगुणदहाणी होदि । सं स्ारावस्थाए

विसोहीए ट्विदिखंडए वादिजमणे समया्िरोहेण सव्वत्थ संखेजगुणहाणी सम्मत्तसम्मा

मिच्छत्ताणं वत्तव्वा ।

२५० संपदि असं वेज्जगुणहाणी बुचदे तं जहादं सणमोहक्खवणाए द्रावकिद्धि

ट्विदिसंतकम्मे चेडिदे तत्तो उवरि जाणि टट दिकंडयाणि पदति तेसिं सन्वेसि पि चरिमफालोसु

णिवदमाणासु असंखेज्जगुणहाणी चेव होदि । इदो १ साहावियादो । सब्बुकस्सचरिशुव्वे

सलणच रिमफालीए णिवदिदाए वि असंखेज्जगुणहाणी होदि। पुणो अण्णेगेण जीवेण इमाए

सब्बुकस्सचरिश्॒व्वेटलणफालियाए समयूणाए पादिदाए असंखेज्जगुणहाणी होदि । एवं

दुसमयूणतिसमयूगादिकमेण णेदव्वं जाव सव्यजहण्णुव्वेल्लणचरिमफालिं पादिय असंखेज्ज

गुणदार्णि कादूण ट्विदो त्ति। एवं कदे समयुणसन्वजहण्णुभ्वेदलण चरिमफाटिं सम्धुकस्व

उव्वैटलणचर्मिफालियाए सोहिदे सुद्धसेसम्मि पलिदो० असंखे०भागम्मि जत्तिया

समया तत्तियमेत्ता असंखेज्जगुणहाणिवियप्पा उन्बेल्लणारए लड़ा होति ।

२५१ संपदि अवड्टिदस्स परूबणा कीरदे । तं जदाबेदगपाओग्गञंतोकोडाकोडि

सागरोबमट्टिदिसंतकम्मस्सुबरि समयुक्तरं मिच्छत्तद्विदि बंधिदृण सम्पतते गहिदे अबह्टिदं

होदि । पुणो पुव्चुत्तद्धिदीदों समयुत्तरसम्मत्तद्धिदिसंतकम्मियसम्मादिद्विणा मिच्छत्त गंतूण

पल्यप्रमाण स्थित्तिसत्कर्म॑से लेकर दूरापकृष्टि स्थितिसत्कमेतक इस अन्तरालमें पतनको प्राप्त दोनेबाले

स्थितिकाण्डकोंकी अन्तिम फालियोंके पतन होने पर सववेत्र संख्यातगुणहानि होती है । तथा संसारा

बस्थामें विश्युद्धिके द्वारा स्थितिकाण्डकका घात करने पर यथाअगम सर्वत्र सम्यक्त्व और सम्म

म्मिथ्यास्वकी संख्यातगुणद्ानि कहनी चाहिये ।

१५० अब असंखयातगुणद्वानिका कथन करते हैं । जो इस प्रकार है दशेनमोहनीयकी पामे

दूरापक्रष्टिप्रमाण स्थितिसत्कर्मके शेष रहने पर इसके आगे ऊपर जितने स्थितिकाण्डकोंका पतन होता है

उन सबकी अन्तिम फालियोंका पतन होते समय असंख्यातगुणहानि ही द्वोती है । क्योंकि ऐसा

स्वभाव है । सबसे उत्कृष्ट अन्तिम इद्र लनाकाण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय भी असंख्यात

गुणहानि होती है। पुनः किसी एक अन्य जीव द्वारा सबसे उत्कृष्ट अन्तिम उद्रो लनाकाण्डककी एक समय

कम अन्तिम फालिका पतनकरनेपर असंख्यातगुणहानि दोती है ।इस प्रकार दो समय कम तीन समय

कम आदि क्रमते लेकर सबसे जघन्य उद्देलनाकाण्डकक्नी अन्तिम फालिके पतन होने तक कथन करना

चाहिये क्योंकि इनके पतनमें भी असंख्यातगुणहानि होती है । इस प्रकार करने पर एक समय कम

सबसे जघन्य उदे लनाकी अन्तिम फालिको सबसे उत्कृष्ट उद्ठ लनाकी अन्तिम फालिमें से घटाने पर

शेष रह्दे पल्ल्योपमके असंख्यातवें भागमें जितने समय हों उद्धेलनामे भ्रसंख्यातगुणदानिके उतने

विकल्प प्राप्त होते हैं ।

२५१ अब अवस्थितका कथन करते हैं। जो इस प्रकार हैवेदकसम्यक्त्थके योग्य

अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर स्थितिसत्कर्मके ऊपर एक समय अधिक मिथ्यात्वकी स्थितिको बॉधकर

सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर अवस्थित होता है। पुनः पूर्वोक्त स्थितिसे सम्यक्त्वकी एक समय

अधिक स्थितिसत्कर्मबाले सम्यग्दष्टिके द्वारा सिथ्यात्वमें जाकर और मिथ्यात्वकी एक समय अधिक

Page 169:

१५५ जयधेवला तिदे कसायपाहुडे ह्विदिविहत्ती

मिच्छत्तड्डिदिं समयुत्तरं बंधिय सम्मत्त गदिदे अवद्धिदं होदि । एवं जाणिदृण णेदव्बं

जाव अंतोध्र॒दृत्तणसत्तरिसागरोबमकोडाकोडि त्ति

णवरि अणंताणुवंधीणमवत्तव्वं सम्मत्त सम्मामिव्छृत्ताणमसंखेज्तयण

बड़ी अवत्तव्वं च अत्थि ।

२५२ अणंताणुबंधिचउकं निसंजोहदसम्मादिद्धिणा मिच्छत्ते गदिदे अवन्तव्वं

होदि पृव्बमविजमाणद्धिदिसंतसपूप्पत्तीदो । अवत्तव्वसदेण भण्णमाणस्स कधमवत्तव्वत्तं १

ण बह्डि दणिअबट्टाणाणमभावेण जज गारअप्पदरअवद्िदसदेदि ण बुचदि ति अवत्तव्वत्त

ब्थुवरगमादो ।

२५३ संपदि सम्मत्तस्स असंखेजगुणवड़ी बुचरे। तं जहसब्वजदण्णड्टिदिचरिषु

व्वेरलणकंडयसंतकम्मियमिच्छादट्िणा उवसमसम्मत्ते गदिदे असंखेजगुणवड्डी होदि ।

पुणो एदस्स चरिध्वव्वेटलणकंडयस्सुवरि समयुत्तरादिकमेण जे ददा पलिदोवमस्स असं

खेजभागमेत्ता चरिमफालिवियप्पा तेहि सह पठमसम्मत्तं गेष्डमाणाणं तत्तिया चेव

असंखेजगुणवड्डि वियप्या । एवश्चुवरिं पि असंखेज्ञगुणव इ बियप्पा॒वत्तव्वा । तस्थ सब्ब

पच्छिमवियप्पो बुचदे तं जहासव्बजहण्णमिच्छत्तड्डिदें जदण्णपरित्तासंखेजेण

खंडिय तस्थ एगखंडमेत्तसम्मचद्टि दिसंतकम्मिएण मिच्छादिद्िणा सव्बजदृण्णमिच्छत्त

स्थितिको बोधकर सम्यक्त्वके अदण करने पर अवस्थित होता है । इसी प्रकार अन्तमु हूतेकम सत्तर

कोड़ाकोड़ी सागर स्थिति तक जानकर कथन करना चाहिये ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तालुबन्धीका अव्यक्तव्य पद होता है। तथा

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्याखकी असंख्यातगुणवृद्धि और ।अव्यक्तव्यस्थितिविभक्ति

होती है । ह

२५२ जिस सम्यग्टष्टिने अनन्ताजुन्धीचतुष्ककी विसंयोजना की है उसके भिथ्यास्वके

ग्रहण करने पर अवक्तव्यस्थितिविभक्ति दोती हे क्योंकि सम्यग्दष्टिके अनन्ताचुबन्धीका स्थितिसरव

अविद्यमान था वद अब यहाँ पर उत्पन्न हो गया।

शंकाजों अवक्तव्य शब्दके दवारा कहा जा रदा है वह अधक्तव्य कैसे हो सकता है ९

समाधाननहीं क्योंकि इद्धि हानि और अवस्थान न पाये जानेके कारण इते जगास

अल्पतर और अवस्थित शब्दोंके द्वारा नहीं कह सकते अतः इसमें अवक्तव्यभाव स्वीकार

किया गया है ।

२५३ अब सम्यक्वकी असंख्यातगुणबुद्धिका कथन करते हैं। जो इस प्रकार हैसबसे

जघन्य अन्तिम उद्र लनाकाण्डक स्थित्िसत्कमे बाले मिथ्यादृश्टिके ढवारा उपशमसम्यक्त्वके प्रहण करने

पर असंख्यातगुणबृद्धि होती है । पुनः इस अन्तिम उद्बे लनाकाण्डकके ऊपर एक समय अधिक आदि

क्रमले पल्योपमके असंख्यात चहुभाग जो अन्तिम फालिके भेद अवस्थित दँ उनके साथ प्रथमोप

शमसम्यकत्वको ग्रहण करनेवाले जीबोंके उतने ही असंख्यात्गुणबुद्धिके भेद दोते हैं । इसी प्रकार

ऊपर भी असंख्यातगुणबडिके भेद कहना चाहिये । उनमेंसे सबसे अन्तिम भेद कहते हैं । जो इस

प्रकार हैमिथ्यात्वकी सबसे जघन्य स्थितिको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके जो एक

खण्ड प्राप्त हो उतनी जिसके सम्यक्त्वकी स्थिति है ओर जिसके मिथ्यत्वकी सबसे जघन्य स्थिति

Page 170:

गा० २२ चड्डिपरूवणाए समुक्कित्तणा १५१

डट्विदिसंतकम्मिएण पटमसम्मक्ते गदिदे एत्थतणचरिमिअसंखेजगुणवङ्धी होदि । एवश्रुवसम

सम्मत्तपाओरग मिच्छत्तहटिदीणं पदकं णिरुमणं कादृण परूविदे असंखेजगुणवड्भिषियप्पा

सद्धा होंति। सम्मत्तसम्भामिच्छत्तणिस्संतकम्मिएण सादियमिच्छाइडिणा अणादिय

मिच्छाइड्रिणा वा पढमससम्मत्त गहिदे अवत्तव्वं होदि । इदो पुव्वमविजमाणद्धिदि

संतुप्पत्तीदो ।

२५४ एवं चुण्णिसुत्तमस्सिदृण समुकिचणपरूवर्ण करिय संपदि उच्चारणमस्सि

दृण भणिस्सामों । वड्डिविदत्तीण तत्थ इमाणि तेरस अणियोगद्ाराणिसम्रुक्तिच्णादि

जाव अप्पाबह्ुुए त्ति । समुकित्तणाएं पयदं । दुविहो णिदेसीओघे ० आदेसे० । ओषेण

मिच्छत्त बारसक ०णवरणोकसायाणं अत्थि तिण्णित्रह्िचत्तारिदाणिअवह्टिदाशि । एव

मणंताणु चउक । णवरि अवक्तव्यं पि अस्थि । सम्मत्तसम्मामि चत्तारिवडिचत्तारि

हाणि अवद्टिद्अवत्तव्वाणि अत्थि । एवं मणुस्षतियपंचिदियपंचि पज् तसतसपज्ञ०

पंचमण ०पंचवचि ०कायजोगि ०ओरालि ०तिण्णिवेदचत्ता रिक ०चक्खु ०अचबखु ०

अवसि ०सण्णि०आहारि त्ति ।

२५४ आदेसेण णेरइएसु मिच्छन्तबारसक ०णवणो० अत्थि तिण्णिवड्डी

तिग्णिहाणि अवड्टाणं च असंखेगुणहाणी णत्थि दंसणचरित्तमोहाणं खबणाभावादों ।

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमरिथ चत्तारि बड़ी चत्तारि हाणी अवट अवत्तव्वं च । अर्ण

सत्तामें है ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवके प्रथम सम्यवस्वके प्रदण करने पर इस स्थान सम्बन्धी अन्तिम

असंख्यातगुणवृद्धि होती है। इसी प्रकार उपशमसम्यक्त्वके योग्य मिथ्यात्वकी स्थितियों अलग

अलग ग्रहण करके प्ररूपण करने पर असंख्यातरुणवृद्धिके भेद श्राप्त होते हैं । जिसने सम्यक्त्व

या सम्यस्मिथ्यात्वस्थितिसत्कर्मको निःसत्त्व कर दिया है ४ऐसे सादि मिथ्यादृष्टि जीबके द्वारा

या अनादि मिथ्यादृष्टि जीवक द्वारा प्रथम सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर अवक्तव्य भंग होता है ।

क्योंकि पहले इनकी सत्ता नहीं थी किन्तु अब दो गई हे ।

२५४ इस प्रकार चूणिसूत्रके आश्रयसे समुत्कीर्तनाका कथन करके अब उच्चारणाके आश्रये

समुत्कीतेनाका कथन करते हैं३द्धविभक्तिमें समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक तेरह अनुयोग

द्वार होते हैं। उनमेंसे समुत्कीर्तनाका प्रकरण है । उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओचघ

निर्देश और आदेशनिर्देश उनमेसे ओवकी अपेक्षा सिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी

तीन बृद्धियाँ चार हानियाँ और अवस्थानपद होते हैं । इसी प्रकार अनन्तानुचन्धीचतुष्कके जानना

चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि इसका अवक्तव्य भंग भी होता है। सम्यक्त्व शौर सम्य

म्मिथ्यात्वकी चार वृद्धियाँ चार द्वानियाँ अवस्थान और अवक्तव्य होते हैं । इसी प्रकार मनुष्यत्रिक

पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त चरस त्रसपर्याप्त पाँचों सनोयोगी पाँचों बचनयोगी काययोगी

ओरदारिककाययोगी तीनों वेदवाले चारों कषायवाले चलुद्शनवाले अचज्षुदशेनवाले भव्य

संज्ञी और आहारऊ जीबोंके जानना चाहिये।

२५४ आदेशानर्देशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी

तीन बृद्धियाँ तीन द्वानियाँ और अवस्थान हैं। असंख्यातगुणद्वानि नहीं है क्योकि बहाँ दशनमोदनीय

ओर चारित्रमोहनीयकी क्षुपणा नदीं होती सम्यक्त्व अर सम्यम्मिथ्यास्वकी चार बृद्धियाँ चार

Page 171:

श्श्र जयघवबल।सहिदे कस्रायपाहुडे हिदिविदृत्ती ३

ताणु०चरक० अस्थि तिण्णिबड्डी चत्तारिहाणी अवष्टि० अबत्तव्यं च। एवं सब्ब

शेरइयतिरिक्ख ०पंचिदियतिरिक्ख ० पंचि तिरि० पज्ज ०पंचि०तिरि ०जो णिणिदेव ०

भवणादि जाव सहस्सार ०वेउव्बि ०कायजोगितिण्णिलेस्सिया त्ति। पंचिंदियतिरिक्ख

अपज्ज० छन्वीक्षपयडीणमत्थि तिण्णिबड्डी तिण्णिद्ाणी अब्डाणं च। सम्ब०

सम्मामि० अस्थि चत्तारिहणी । एवं मणुसअपज्ज ०पंचिं०अपज्ज ०तसअपज्जत्ते तति ।

२५५ आणदादि जाव उवरिमिगेवज्जे त्ति मिच्छत्त बारसक ०णवणोक० अस्थि

असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी सम्मत्त ०सम्मामि अस्थि चचारिषड्डी चत्तारिदाणी

अवत्तव्वं च । अवद्वाणं णत्थि सम्भसद्धिदीदो समयुत्तरमिच्छत्त्िदिसंतकम्मेण

सम्मत्तग्गहणाभाषादो । अणंताणु०चउक ० अस्थि चत्तारिदहाणो अवत्तव्वं च । अशुद्दितादि

जाव सब्वडूसिद्धि त्ति मिच्छत्त सम्मामि०वारसकसा०णवणाक० अत्थि असंखेजञमाग

दवानियाँ अबस्थान और अवक्तम्य हैं। अनन्तालुबन्धी चलुष्ककी तीन बृद्धियाँ चार हानियाँ

झवस्थान और अवक्तव्य हैं । इसी प्रकार सब नारकी तिच पंचेन्द्रिय तिर्यच पंचेन्द्रिय तियेच

पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्थेच योनिमती सामान्य देव भवनवासियोंसे लेकर सदस्तार स्वग॑तकके देव

वैक्रियककाययोगी और तीन लेश्यावाले जीबोंके जानना चाहिए। पंचेन्द्रिय ति्येंच अपर्याप्तकॉमें

छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन बृद्धियाँ तीन हानियाँ और अनवस्थान हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्य

म्मिथ्यारंवकी चार द्वानियाँ दें । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और चस अपर्याप्त

ज्ञीबोंके जानना चाहिये ।

विशेषार्थओघसे मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंकी जितनी बृद्धियाँ द्वानियाँव अवस्थान आदि

बतलाये हैं वे सब सामान्य मनुष्य आदि मूलमें कदी गई मार्गणाओंमें सम्भव हैं अतः उनके

कथनको ओघके समान कद है क्योंकि उक्त मार्गणाओंमें दर्शनमोहनीय ओर चारित्रमोहनीयकी

क्षपणा सम्भव है। किन्तु सामान्य नारकी आदि कुछ ऐसी मागेणा हैं जिनमें अनन्तालुबन्धीकी

विसंयोजना और सम्यक्टब तथा सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्ध लना पाई जानेसे इन चद प्रकृतियोंका कथन

ओघके सम।न बन जाता है किन्तु शेष बाईस प्रकृतियोंकी एक असंख्यातगुणहानि नहीं पाई जाती

क्योकि उक्त मार्गणाओं में दशेनमोहनीय ओर चारित्रमोहनीयकी क्षपणा नहीं होती। पंचेन्द्रिय

तिर्थच लब्ध्यपर्याधक आदि कुछ ऐसी मार्गगा हैं जिनमें सम्यक्त्वकी प्राप्ति नहीं हाती अतः इनमें

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी एक भी बृद्धि और अषस्थान नहीं होता किन्तु उद्ध लनाकी

प्रधानतासे चारों दवानियाँ बन जाती हैं । तथा अनन्ताजुबन्धीकी विसंयोजना और दर्शनमोहनीय

तथा चारित्रमोहनीयकी क्षपणा नहीं दोती इसलिये यहाँ शेष २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणहानि

भी नहीं दती । किन्तु शेष हानि वृद्धि और अवस्थान बन जाते हैं ।

२२४५ आनतकट्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयवकतकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय चौर नो

नोकपषायोंकी असंख्यातभागद्दानि और संख्यातभागद्वानि है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

चार बृद्धियाँ चार द्वानियाँ और अवक्तव्य हैं। अवस्थान नहीं है क्योंकि यां पर॒ सम्यक्त्व

स्थिति एक समय अधिक मिथ्यास्वकी स्थिति सत्कमेवाला जीव सम्यकत्वको ग्रहण नहीं करता

हे । अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी चार द्वानियाँ और अवक्तव्य हैं। अनुद्शिस्े लेकर सर्वाथेसिद्धि

तकके देवोंमें मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागहानि

Page 172:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए समुक्तित्तणा १५३

हाणी संखेजमागहाणी । सम्मत्त अत्थि असंखेजमागदाणी संखेजभागदाणी संखेज

गुणहाणी च अणंताणु्चउक० अत्थि चत्तारि हाणी

२४६ इदियाणुबादेण णएडईंदियबादरसुहमपञजत्तापजत्ताणं मिच्छतसोलघक०

णवणोक० अस्थि असंखेजमागवड्धी । सेसवड्डीओ णत्थि । इदो १ आवलियाए असंखे

ज्दिभागमेत्तमाबादद्ाणपमाणण्णदाणुववत्तीदो । असंखेजभागहाणी संखेजमागदाणो

संखेजगुणहाणि त्ति अत्थि तिण्णि हाणीओ । संखेज्रमागहाणिसंखेजगुणहाणीणं कथं

संभवो १ ण एस दोसो संखेज्ञमागहाणिसंखेजगुणहाणीओ कुणमाणसण्णिपंचिंदिण्सु

असमत्तद्विदिकंडयउकीरणडेस एइंदिण्सु पविटंसु तासि दोष्डं हाणीणं तत्थुवर्ूभादो ।

और संख्यातभागहानि दै । सम्यक्त्वकी असंख्यातमागहानि संख्यातभागहानि ओर संख्यात

गुणहानि दै । तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी चार ह्वानियाँ हैं ।

विशेषार्थआनतादिकमें स्थितिसत्त्वसे दीन स्थितिका दी बन्ध होता हे इसलिये यहाँ

मिथ्यात्व आदि २२ भ्रकृतियोंकी वृद्धि तो सम्भव दी नहीं हाँ हानि अवश्य दोती है फिर भी यहाँ

मिथ्यात्व आदिकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरसे अधिक नहीं होती इसलिये

उक्त २२ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदानि और संख्यातभागहानि ये ही दो द्वानियाँ सम्भव हैं।

इनमेंसे असंख्यातभागद्वानि तो अधःस्थितिगलनाकी अपेक्षा प्राप्त होती है और संख्यातमागहानि

कचित् स्थतिकाण्डकघातकी अपेक्षा प्राप्त होती है। अब रदीं छह प्रकृतियाँ । सो यहाँ सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्रो लना सम्यक्त्वकी प्राप्ति और अनन्ताजुबन्धीकी विसंयोजना ये सब कुछ

सम्भव हैं अतः यहाँ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी चारों वृद्धियाँ चारों हानियाँ अवक्तव्य तथा

अनन्तानुबन्धीकी चारों हानियाँ और अवक्तव्य बन जाते हैं। किन्तु अवस्थान किसीका नहीं

बनता क्योंकि जो वेधनेवालीं २६ प्रकृतियाँ हैं उनका बन्ध तो स्थितिसत्त्वस्ते उत्तरोत्तर कम ही होता

है अतः इनका अवस्थान नहीं बनता और जो सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतियाँ हैं सो इनका

अवस्थान तच बने जव सम्यक्त्व या सम्यग्यिथ्यात्वकी स्थितिसे मिथ्यात्वकी एक समय अधिक

स्थितिवाला जीव सम्यक्त्वको ग्रहण करे पर यहाँ ऐसा सम्भव नहीं । परन्तु यतिब्रषभाचायेके मतसे

अवस्थान सम्भव है। आनताविछ्में मिथ्यात्व आदि २२ प्रकृतियोंकी दो हानियोंका जिस प्रकार

कथन किया उसी प्रकार अनुद्शादिकमें भी करना चाहिये । किन्तु यहाँ सब जीव सम्यम्दष्टि ही

होते हैं अतः सम्यग्मिथ्यात्वकी भी यहाँ हानियाँ दी प्राप्त दोतो हैं जो मिथ्यात्वके समान जानना

चाहिये। अब रहीं शेष पाँच प्रकृतियाँ सो यहाँ ऋृतकृत्यवेदकसम्यम्दष्टि भी उत्पन्न होते हैं और

अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना भी दोती है अतः सम्यक्त्वकी असंख्यातगुणद्वानिके सिवा शेष तीन

हानियाँ और अनन्तानुवन्धीकी चारों हानियाँ बन जाती हैं ।

२५६ इन्द्रियमार्गगाके अनुवादसे एकेन्द्रिय तथा उनके बादर और सृदम तथा पर्याप्त और

अपर्याप्तकों में मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंक्री असंख्यातभागबृद्धि है। शेष बृद्धियाँ

नहीं हैं क्योंकि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आवाधास्थानका प्रमाण अन्यथा बन नहीं सकता

है । हानियोंमें असंख्यातभागह्ानि संख्यातभागदानि अर संख्यातगुणहानि ये तीन द्वानियाँ है ।

शुंकायहाँ संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि कैसे सम्भव है ९

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि जो संख्यातभागद्ानि और संख्यातगुणद्वानिको

कर रहे हैं तथा जिन्होंने स्थितिकाण्डकघातके डत्कीरणकालको समाप्त नहीं किया है ऐसे पंचेन्द्रियोंके

२०

Page 173:

१५४ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे दिदिविदत्ती हे

जेण तत्तिओ ट्विदिकंडभो अणुभागक्खंडओ वा पादेदुमाठत्तों तेण एडंदिएसु वि गदस्स

तस्स णिच्छएण पदेदव्वमिदि कुदोव्गम्मदे परमगरुरूवणसादों । एइंदिएसु पण ट्विदि

कंदयायामो पलिदो० असंखेजमागमेचो चेव । एदं कुदो णव्बदे १ एइंदियोणं पलिदो०

असंखेज़मागमेत्तवीचारड्ाणपरूवणादो । सण्णिपंचिंदियपच्छायदएइंदिओ छव्बीसप्हं

कम्माणमंतोप्नहत्तणसण्णिसंबंधि उकस्सट्विद्सिंतकम्मिओ संखेजमागद्ाणिसंखेजगुण

हाणीओ किण्ण करेदि ण एइंदिएसु संखेजभागहाणिसंखेजगुणद्वाणीणं कारणभूदवित्तो

हीणमभावादो । तं इदो णव्वदे १ तत्य संखेजमागवड्डिसंखेजगुणवड्जीणं कारणभूदसंकि

केसाणममावादो । संकिलेसाभावो विसोदीए अमावस्स कथं गमओ १ ण सत्वस्य

पडिओगीसु रएकस्सामावे अवरस्स वि अभावुवलंभादो ट्विद्हिद्समुप्पत्तियकालस्स

पलिदो ० असंखेज्जमागपमाणत्तण्णहाणुववत्तीदो या संखेज्जमागद्गाणिसंखेज्जगुणद्वाणीणं

तत्थाभावोव गम्मदे । तीहि वि पयारेहि ट्विदिखंडए घादिदे एसो कारो लब्भदि त्ति

पकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर वहाँ ये दोनों दानियाँ बन जाती हें ।

शंकाजिसने उतने स्थितिकाण्डक और अलुभागकाण्डकका पतन करनेके लिये आरम्भ

किया है उस जीवके एकेन्द्रियोंमें भी चले जाने पर उस स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका पतन

होना ही चाहिये यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानपरम शुरुके उपदेशसे जाना जाता है। परन्तु एकेन्द्रियोंमें स्वस्थानकी अपेक्षा

स्थितिकाण्डकका आयाम केबल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंकायदद किस प्रमाणसे जाना जाता है १

समाधानक्योंकि एकेन्द्रियोंके बीचारस्थान पल्यके असंख्यातवें भागमात्र कहे हैं इससे

जाना जाता है कि एकेन्द्रियोंमें स्थितिकाण्डकका आयाम पस्यके असंख्यातबें भागप्रमाण है।

शंका जो संज्ञो पंचेन्द्रिय पर्यायसे आकर एकेन्द्रिय हुआ है और जिसके छब्वीस कर्मोका

अन््तमुंहूर्तकम संज्ञीसम्बन्धी उत्क्रट्ट स्थितिसत्कमें है बह संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणद्वानिको

क्यों नहीं करता है

समाधाननहीं क्योकि एकेन्द्रियोंमें संस्यातभागद्वानि ओर संख्यातगुएदानिकी कारणभूत

विशुद्धियोंका अभाव है।

शंकायद किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानक्योंकि वहाँ पर संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिके कारणभूत

संक्लेशका अभाव है।

शंका संक्लेशका अभाव विश्वुद्धिक अभावका गमक कैसे दो सकता है ९

समाधान नदी क्योंकि सर्वत्र प्रतियोगियोंमें एकका अभाव होने पर दूसरेका भी अभाव

पाया ज्ञाता है। अथवा स्थितिहतसमुत्पत्तिक काल पल्यक्रे असंख्यातवें भागप्रभाण अन्यथा बन नहीं

खकता है इसे जाना जाता है कि एकेन्द्रियोंमें संड्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानिका अभाव है ।

तीनों द्वीप्रकारोंसे स्थितिकाण्डकका घात करने पर यद काल प्राप्त होता है ऐसी आशंका नहीं करनी

१ तार भ्रतौतं कदो णब्बदे संकिलेसाभावों हृति पाठः

Page 174:

गा० ई२ बड्डि परूवणाए संमुक्कित्तणां १५२

णासंकणिज्जं एगभवद्टिदीए असंखेज्जभागद्ाणिकंडयवा रेहिंतो संखेज्जभागहाणिसंखेज्ज

गुणहाणिकंडयवाराणं संखेज्जदिभागत्तादो । एदं इदो णब्बदे १ एगभबड्िदीए

सब्वत्थोचा संखेज्जगुणदाणिकंडयवारा संखेज्जभागहागिकंडयवारा संखेञ्जगुणा असंखेज्ज

मागहाणिकंडयवारा संखेज्जगुणा ति अप्पाबहुआदो णव्बदे । एद्मप्पाबहुअमसिद्ध

मिदि ण वत्तव्वं उबारिं भण्णमाणजीवअप्पातहुएण सिद्धत्तादो ।

२५७ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तगट्टिदिकंडयस्स जदि संखेज्जावलियमेत्तो

ट्विदिकंडयउकीरणकालो लब्भदि तो संखेउजपलिदोवमाणं कि लमामो त्ति पभाणेण

फरगुणिदिच्छाए् ओवड्डिदाए संखेञजावलियमेत्तो डिदिददसष्प्य्तियकालो होदि । ण

च एत्तिओ कालो इच्छिज्जादि पद्रावलियाए उबरिमिसंखाएं पलिदोबमादो हेद्िमाए

तप्पाओोग्गाए पलिदोवमस्स असंखेजजदिभागत्तञ्युवगमादो । असंखेज्जमागहाणिकंडओ

ण पाणो पलिदोवमस्स असंखेञ्जदिमागेण कारेण असंखेज्जभागकंडएण जा ट्विंदी

ह्मदि तिस्से संखेज्जभागहाणिकंडएण एगसमए घादुबलमादो । तम्हा एइंदिओ

असंखेज्जभागहाणि चेव कुणदि त्ति चेत्तव्वं । एदमत्थपदं सब्बणइंदिएसु बत्तव्वं ।

२५८ एदेसिं पयडीणमच्डाणं पि अत्थि एरदिएसु समद्धिदिवंधसंभवादो ।

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमत्थि चत्तारि हाणीओ । संखेज्जमागहाणिसंखेज्जगुणदहाणीणं

चाहिये क्योंकि एक भवस्थितिमे असंख्यातभागदानिके जितने काण्डकबार होते हैं उनसे संख्यात

मागहानि और संख्यातशुणहानि काण्डकोंके वार संख्यातं भागप्रसाण हैं ।

शंक्ायह किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानएक भवस्थितिमें संख्यातगुणद्वानि काण्डकबार खबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यात

मागहानिकाण्डकवार संख्यातगुशे हैं । इनसे असंख्यातभागद्वानिकाण्डकबार संख्यातगुणे हैं इस

अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यद् अल्पबहुत्व असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है क्योकि आगे

कदे जानेबाले जीव अल्पबहुत्वले यह सिद्ध है ।

२४७ पट्योपमके संख्याते भागभ्रमाण एक स्थितिकाण्डकका यदि संख्यात आबलिप्रमाण

स्थितिकाण्डकउत्कीरणाकाल प्राप्त होता है तो संख्यात पल्योंका कितना उत्कीरणाकाल श्राप्त हो गा इस

प्रकार त्रैराशिक द्वारा फलराशिसे इच्छाराशिकों शुणित करके जो लब्ध अवे उसमें प्रमाणराशिका

भागं देने पर संख्यातआवलिश्रमाण स्थितिहतसमुत्पत्तिक काल प्राप्त होता है। परन्तु प्रक्ृतमें इतना

काल इष्ट नहीं है क्योंकि यहाँ प्रतराबलिसे ऊपरकी संख्या और पस्थके नीचेकी तत्प्रायोग्य संख्याको

पल्यका असंख्यातवाँ भाग स्वीकार किया है। यदि कहा जाय कि यहाँ असंख्यातमागदानिकाण्डक

प्रधान नहीं है सो भी बात नहीं है क्योंकि पलल््योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके द्वारा

असंख्यातभागकाण्डकरूपसे जो स्थिति घाती जाती है उसका संख्यातभागहानिकाण्डकके द्वारा

एक समयमें घात पाया जाता है। इसलिये एकेन्द्रिय असंख्यातभागहानिक्रो द्यी करता है ऐसा

ग्रहण करना चाहिये । यह भर्थंपद् सब एकेन्द्रियोमें कदना चाहिये ।

२५८ एकेन्दरियोमे इन उपयु क्त प्रकृतियोंका अवस्थान भी है क्योंकि एकेन्द्रियोंमें सम।न

स्थितिका वन्ध सम्भव है। सम्यक्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानिं हैं ॥ यहाँ संख्यातभाग

१ तः प्रतौ पकिदोवमाणाणं इति पाठः । २ ता० प्रतौ तप्पाओग्गादो इति पाठः ।

Page 175:

१५६ जयधंवलादिदे कसांयपाहुडे दिदिविदत्तौ

पर्वं व अत्थपरूवणा कायव्या । णवरि उच्चेह्छगाद् वि उद यावलियए उकस्ससंखेज्ज

मेत्तणिसेगेसु सेसेसु संखेज्जमागद्दाणी लब्भदि । तिध्मयकालदोणिसेगेसु सेते संखेज्ज

भागहाणी होदूण पणो संखेञ्जगुणहाणी होदि से काले दुसमयकालेग णिसेगुबलंभादो ।

एवं सच्वपचकायाणं । ॥

२५९ सब्बविगलिंदिएसु मिच्छत्तपोलसक०णवणोक० अस्थि असंखेज्जमागबड्टी

संखेज्जमागवड़ी च पलिदो० संखेज्जभागमेत्तवीचारडणाणं तत्थुवलंभादो । एडंदियाणं

विगलिंदिएसुप्पण्णाणं पढमसमए् संखेज्जगुणवड्डी किण्ण लब्भदि ण वियलिंदियद्टिदिं

पेक्खिदूण विवलिंदियद्विदिवड्डीए संखज्जगुणत्ताणुवलंभादो । परत्थाणविवक््खाएं णोक

सायाणमेत्थ संखेज्जगुणबड्डीए वि लब्भदि सा एत्य ण विवक्खिया ।

२६० असंखेज्जभागहाणी संखेज्जमागहाणी संखेज्जगुणहाणि त्ति अस्थि तिण्णि

हाणीभओ । सत्थाणे दो चेव हाणीओ होति संखेज्जगुणहाणी पुण सण्णिपंचिंदिएसु

पारद्डड्टिदिकंडयउकीरणद्वाए अब्भंतरे चेव विगलिंदिएसुप्पण्णेसु लब्भदि । एदेसिंकम्माण

मवद्ठाणं पि अत्थि। सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमेइंदियमंगो । एचमसण्णीणं। णवरि

संखेज्जगुणबड्डी वि अत्थि एडंदियाणं विगरलिंदिएसुप्पण्णाणं तदुबलंभादो ।

हानि और संख्यातगुणद्वानिकी अर्थप्ररूपणा पदक समान करनी चादिये । किन्तु इतनी विशेषता

है कि उद्र लनाके समय भी उद्यावलिमें उत्कृष्ट संख्यात निषेक्रोंके शेष रहने पर संख्यातभागहानि

प्राप्त दोती है । तथा त्तीन समय काल स्थितिवाले दो निषेकोंके शेष रहने तक संख्यातमागहानि होकर

पुनः संख्यातगुणद्वानि होती हे क्योंकि तदनन्तर समयमें दी समय कालप्रमाण स्थितिबाला एक निषेक

पाया जाता है । इस प्रकार सव पाँचों स्थाबरकायिक जीबोंके जानना चाहिए ।

२४६ सब विकलेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभाग

वृद्धि ओर संस्यरमाग्ड है क्योंकि वहाँ पर पल्योपमके संख्याते भागप्रमाण वीचारस्थान

पाये जते हैं ।

झंकाजो एकेन्द्रिय विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमे

संख्यातगुणवृद्धि क्यों नदीं पाई जाती है ९

समाधान न्दी क्योकि विकलेन्द्रियोंकी स्थितिको देखते हुए एकेन्द्रियोंसे विऋलेन्द्रियोंमें

उत्पन्न दने पर विकलेन्द्रियोंकी स्थितिमें जो वृद्धि होती है उसमें संख्यातगुणापना नहीं पाया जाता

है। परस्थानकी विवज्ञासे नोकषायोंकी यहाँ पर संख्यातगुणबृद्धि भी प्राप्त होती है पर उसकी

यहाँ विवक्ष नहीं है ।

२६० द्वानियोंमें असंख्यातभागद्ानि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानि ये तीन

हानियाँ होती हैं । परन्तु स्वस्थानमें दो दी हानियाँ होती हैँ । संख्यातगुणदानि तो जो संज्ञी

पंचेन्द्रिय प्रारम्भ किये गये स्थितिकाण्डक उत्कीरणाकालके भीतर ही विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए हैं

उनके ही पाई जाती है । इन उपयु क्त कर्मोका अवस्थान भी है। तथा सम्यक्व श्मौर सम्यग्मि

थ्यात्वका भंग एकेन्द्रियोंके समान है। इसी प्रकार अरसंज्ञियोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता

है कि इनके संख्यातगुणबुद्धि भी है क्योकि जो एकेन्द्रिय विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके वद्

पाई जाती है । ॥

9 ता० ब्रतौ संखेज्जे वड्डी ए इति पाडः २ ता०प्रतौ गुणनी भस्थिइति पाठः

Page 176:

गा० २२ ब्टिपरूवणाए सम्रुक्तिच्णा १५७

२६१ ओरालियमिस्सकायजोगीणं पंचिदियतिरिक्खअपञ्जततर्भभो । एवं वेउव्विय

मिस्स०कम्मह्य ०अणाहारि त्ति । सण्णीसु विग्गहगदीए उष्पण्णवियलिंदियाणं व

सण्णीसु विग्गदगदीए उप्पण्णसण्णीणं पि विदियविग्गहे संखेज्जगुणवड्डी णत्थि त्ति भ

वत्त्व महाबंधम्मि पठिदसंखेज्जगुणवड्डीए विसयाभावेण अभावावततदो

विशेषाथएकेन्द्रियों में जघन्य स्थितिबन्धसे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पर्यके असंख्यातवें भागसे

अधिक नहीं होता इसलिये इनमें मिथ्यात्व आदि २६ प्रकृतियोंकी एक असंख्यातभागबृद्धि दी दोती दै ।

यदी कारण है कि यहाँ अन्य बृद्धियोंक्ा निबेध किया। किन्तु द्वानियाँ तीन दती हैं । यहाँ असंख्यात

भागदानिका पाया जाना तो सम्भव है पर संख्यातभागद्ानि और संख्यातगुणदानिका पाया

जाना कैसे सम्भव है १ इसका वीरसेन स्वामीने यद् समाधान किया है कि जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव

उक्त प्रकृतियोंकी संख्यातभागदानि अर संख्यातगुणद्वानि कर रहे हैं वे स्थितिकाण्डकके उत्कीरण कालके

भीतर मरकर यदि एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हो जाँय तव भी उनकी उस स्थितिकाण्डकके घात होने तक

वह् क्रिया चाद रहती है अतः एकेन्द्रियोंमें भी उक्त प्रकृतियोंकी संख्यातभागहानि और संख्यात

गुणद्वानि बन जाती है । किन्तु स्वयं एकेन्द्रिय जीव संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणहानिका

प्रारम्भ नहीं करते क्योंकि उनके इनके योग्य विशुद्धि नदीं पाई जाती । चूँकि इनके संख्यातभाग

बद्धि और संख्यातगुणबद्धिके कारणभूत संक्लेश परिणाम नहीं पाये जाते हैं इसलिये माल्यम होता

है कि इनके संख्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानिके कारणभूत विशुद्धिरूप परिणाम भी नहीं पाये

जाते हैं । दूसरे इनके स्थितिदतसपुस्पत्तिक काल पल््यके अखंख्यातवें भाग प्रमाण बतलाया है

इसले भी माद्छूम होता है कि इनके संख्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानि नहीं होती । अन्य

इन्द्रियवाले जीवोंकी स्थितिका घात करके एकेन्द्रियके योग्य स्थितिके उत्पन्न करनेमें जितना काल

लगता है बह एकेन्द्रियका स्थितिहतसमुत्पत्तिक काल कदा जाता है । कदाचित् यद्द कदा जाय छि

असंख्यातभागदानि संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणहानि इन तीनों प्रक्रारोंसे स्थिति दतसरसु

त्पत्तिक काल उक्त प्रमाण प्राप्न हो जायगा सरे भी बात नहीं है क्योंकि एक भवस्थितिमें जितने

असंख्यातभागद्ानि काण्डकबार दोते हैं उसमें संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि काण्डकबार

उनके संख्यातवें भागग्रमाण होते हैं । फल यह दोता है कि यदि संख्यातमागहानिके द्वारा संख्यात

पल्य प्रमाण स्थितिका घ।त किया जाता है तो उसमें कुल संख्यात आवलिप्रमाण काल लगता है

जव कि यह् काल पस्यके असंख्यातर्वें भागरूपले विवक्तित नदीं है । किन्तु पल्यका असंख्यातबाँ

भाग काल प्रतरावलिसे ऊपरका काल कहलाता है अतः सिद्ध हुआ कि एकेन्द्रिय जीव स्वयं संख्यात

भागद्वानि ओर संख्यातगुणहानिका प्रारम्भ नहीं करते हँ । एकेन्द्रियोंके उक्त प्रकृतियोंका अवस्थान

भी द्वोता है क्योंकि पूवे समयके हिथतिसच्वके समान इनके दूसरे समयमें स्थितिबन्ध देखा जाता

है । अब रहीं सम्यक्त्व और सम्यम्सिथ्यात्व प्रकृतियाँ सो इनकी यहाँ चारों दवानियाँ पाई जाती हैं ।

इनके कारणका खुलासा मूलमें किया ही है । पाँचों स्थावरकायिक जीबोंके भी इसी प्रकार समझना

चाहिये। विकलेन्द्रिय और अर्सज्ञीके किस कमंकी कितनी हानि और इद्धि दोती हैं इसका खुलासा

भी मूलत हो जाता है अतः यहाँ उसका निर्देश नदीं किया है।

२६१ ओऔदारिकमिश्रकाययोगियोंके पंचेन्द्रिय तियंच अपर्याप्तकोंके समान भंग है। इसी

प्रकार वैक्रयिकांमश्रकाययोगी कार्मेणक्रःययोगी और अनाद्वाए्क जीवोंके जानना चाहिए। जिस प्रकार

बिकलेन्द्रियके बिग्रहगतिसे संक्षियोंमें उत्पन्न होने पर संख्यातगुणबुद्धि सम्भव है उस प्रकार जो संज्ञी

बिम्नहगतिसे सांज्षयों में उत्पन्न हुए हैं उनके दूसरे विग्नहमें संख्यातगुणबृद्धि नहीं होती है ऐसा नहीं

Page 177:

१५८ जयधवलासदिदे कसायपाहृडे हिदिविहत्तौ ३

विग्गहगदीए जो बंधो सो ट्विदिसंतादो हेड्डा चेवे त्ति णासंकणिज्जं बद्धणिरयाउआणं

पच्छा तिव्वविसोहीए ट्विदिघादं कादूण अपज्जत्तद्टिदिबंधादों संखेज्जगुणहाणीकयद्ठिदीणं

णिरएसुप्पज्जिय विदियविग्गहे अपज्जत्तजोगुकस्सकसायं गयाणमुकस्सद्ि दिबंधस्स

जदण्णट्विदिसंतादो संखेञ्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो । आदहारआहारमिस्ष मिच्छत्त

सम्मचसम्मामि सोलसक ०णवणोक ० अत्थि असंखञ्जमागहाणी । एवमकसा०

जहाक्खाद०सासणण० दिधि त्ति।

२६२ अवगद ० मिच्छत्त०सम्मत्तसम्मामिच्छत्त अत्थि असंसेउजमागहाणी

संखेज्जमागहाणी च । एवमट्रुकसायाणं इत्थिणवुंसयवेदाणं च । अंतरकरणे कदे उवसम

सेडिम्मि मोहणीयस्स ट्विद्घादों णत्थि । एत्थ एस्थुचारणाए पण अत्थि चि भणिदं तं

जाणिय वत्तव्वं । सत्तगोकसायचदुसंजरुणाणमस्थि असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी

संखेज्जगुणहाणी च । ।

कहना चाहिये क्योकि ऐसा मानने पर मदाबन्धमे जो कार्मणकाययोगमें संख्यातगुणबुद्धि कदी दै

उसका फिर कोई विषय न रइनेसे अभाव हो जायगा । यदि कहा जाय कि विम्नहगतिमें जो वन्ध

दोता है बह स्थितिसन्त्वसे नीचे द्वी द्वोता है सो ऐसी आशंका भी नदीं करनी चाहिये क्योंकि

बिन््होंने पहले नरकायुका बन्ध किया है और पीछेसे जिन्होंने तीत्र विशुद्धिकि कारण स्थितिघात

करके अपनी क्मस्थितिको अपर्याप्तकोंके स्थितिबन्धसे संख्यातगुणा दीन कर दिया है और जो

नरकमें उत्पन्न होकर दूसरे विम्नहमें अपर्याप्त योगके रहते हुए उत्कृष्ट कषायको प्राप्त हो गये हैं

उनके उख समय उत्कृष्ट स्थितिबन्ध जघन्य स्थितिसच्तवसे संख्यातगुणा होता है इसमें कोई विरोध

नहीं है। आहारककाययोगी और आद्वारकमिश्रकायय्ोगी ज्ञीवोंमें मिथ्यात्व सम्यक्व सम्यम्मि

थ्यास्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातमागहानि है। इसी प्रकार अकषायी यथा

ख्यात्तसंयत और सासादुनसम्यग्दष्टि जीबोंके जानना चहिए।

२६२ अवगतवेदियोमे मिथ्यात्व सम्यक्स और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानि

आर संख्यातभागहानि हे । इसी प्रकार आठ कषाय ख्रीवेद और नपुंसकवेदकी जानना चाहिए । चन्तर

करण करने पर उपशमश्रणीमें मोहनीयका स्थितिवात नहीं होता। परन्तु यहाँ इस उद्चारणामें तो

है रखा का है सो उसका सममः कर कथन करना चहिए । सात नोकषाय और चार संज्वलनोंकी

श्रसंल्यातभागहानि संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणदहानि है ।

विशेषा्थऐसा नियम दै कि दर्शनमोहनीयका उपशम दो जाने पर भी अववर्तन और

संक्रमण होता रहता है अतः अपगतवबेदी जीवके तीन दशनमोहनीयकी स्थितिकी असंख्यातमाग

ह।नि और संख्यातभागद्दानि बन जाती हैं । मध्यकी आठ कषायोंकी तो क्त गक्ेणिके सवेद्भागमें

ही पणा हो जाती है किन्तु उपशसश्रेणिमें इनकी अवेदभागमें उपशमना द्वोती दे इसलिये अपगत्त

बेदीके इनकी स्थितिकी भी असंख्यातभागद्वानि और संख्यातभागहानि ये दो हानियाँ बनं जानी

चाहिये । किन्तु इस विषयमें दो मत हैं। चूर्णिसूत्रकारका तो यह मत है कि उपशमश्रेणिमें अन्तरकरण

दो जाने पर मोहनीयका स्थितिकाण्डकघात नहीं दोता। वीरसेन स्वामीने इसका यह कारण

बतलाया है कि यदि उपशमश्रेणिमें अन्तरकरणके बाद मोहनीयका स्थितिकाण्डकघात मान लिया

ज्ञाय तो उपशमनाके क्रमानुसार नपुंसकवेदसे ख्रीवेद आदिकी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी दीन स्थिति

ता प्रतौ एव्थुच्चारणाएं अस्थि इति पाठः ।

Page 178:

गा० २२ बह्िपरूबणाए सञुक्ित्तणा १५९

२६३ मदिअण्णाणिसुदअण्णाणिविभंगणाणीसु मिच्छत्तसोरसक०णवणोक०

अत्थि तिण्णिवड्डटी तिण्णिहाणी अबहाणं च । अणंताणु चउक अवत्तव्वं णत्थि

पुषवष्टसमए अण्णाणामावादो । सम्मत्तसम्पामि० अत्थि चत्तारि हाणीओ। एवं

मिच्छाइड्टी ।

२६४ आमिणि०सुद ०ओदि मिच्छ सोरसक ०णवणोक ० असंखेऽज

भागहाणी संखेउजभागहाणी संखेज्जगुणहमणी असंखेज्जगुणहाणि त्ति अस्थि चत्तारि

हाणीओ । सम्मत्त ०सम्मामि० अस्थि चत्तारि हाणीओ । चच्तारिवष्डिअवत्तव्वाबड्ा

णाणि णत्थि पुच्विह्समणए तिण्डं णाणाणमभावादो । एवं मणपन्ज ० संजद ०सामाइय

छेदो ०ओहिदंस ० सुकले5सम्मादिद्टि ति । णवरि सुकले० सम्म ०सम्मामि० चत्तारि

बड्डिअवड्ठा ०अवत्तव्ब ० अणंताणु ०चउक० अवत्तव्वं च अत्थि ।

२६५ परिहार० मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणंताणुबंधिचउकाणं अस्थि

हो जायगी जो इष्ट नहीं है क्योंकि उपशम दो जाने पर सबकी समान स्थिति दोती है देखा नियम

है । अतः चूर्णिसूत्रकारके मताजुखार अपगतवेदीके आठ कषायोंकी संख्यातमागदानि न दोकर एक

असंख्यातभागद्ानि ही प्राप्त होती है । किन्तु यहाँ इनकी दो द्वानियाँ बतलाई हैं इससे माद्धम होता

है कि उद्चारणाचाय अन्तकरणके बाद भी मोहनीयका स्थितिकाण्डकघात मानते हैं। नंपुंसकवेद

ओर स्त्रीवेदके विषयमें भी इसी प्रकार समभना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है इन दोनोंकी

उक्त दो द्वानियाँ क्षषक अपगतवेदीके भी बन जाती हैं । यहाँ अनन्तानुबन्धी तो है ही नहीं अतः

उसका तो विचार ही नहीं है । अब शेष रहीं सात नोकषाय और चार संज्वलन ये ग्यारह प्रकृतियाँ

सो इनमें असंख्यातभागद्वानि संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणद्दानि ये तीन हानियाँ बन जाती

हैं। यह कथन क्षपकश्रेणि़ी मुख्यतासे किया है । उच्वारणाचायैके मतसे उपशमश्रेणिमें अपगतवेदीके

इनकी असंख्यातभागदानि और संख्यातमागहानि ये दो द्वानियाँ ही प्राप्त दोती हैं । किन्तु चूर्णि

सून्रकारके मतसे एक असंख्यातभागहानि ही प्राप्न होती है ।

२६३ मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ

नोकषायोंकी तीन वृद्धियाँ तीन हानियाँ और अवस्थान है । अनन्तानुबन्धीचतुष्कका अवक्तव्यमंग

नहीं हे क्योंकि पूवं समयमें अज्ञानका अभाव है । तथा सम्यक्ट्थ ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी चार

हानियाँ हैं । इसी प्रकार मिथ्यादृष्टियोंके जानना चाहिए।

२६४ आमिनिवोधिवज्ञानी श्रतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोमें मिथ्यात्व सोलह

कषाय और नौ नोकपार्योकी असंख्यातभागद्वानि संख्यातमागद्दानि संख्यातगुणहानि और

असंख्यातगुणह्ानि ये चार द्वानियाँ हैः । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार द्वानियाँ है। चार

बुद्धियाँ अवक्तव्य और अबस्थान नहीं हैं क्योंकि पूवै समयमे तीन ज्ञानोंका अभाव है। इसी

प्रकार मनःपर्ययज्ञानी संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनसंयत अवधिदर्शनबाले शुक्ललेश्या

बाले और सम्यम्दष्टि जीवोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विश्येषता है कि शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धियाँ अबस्थान और अवक्तव्य तथा अनन्तानुबन्धी

चतुष्कका अवक्तव्य हैं ।

२६४ परिदारविञ्युद्धिसंयतोनिं मिथ्यास्व सम्यक्त्व सम्यम्मिथ्यात्व और अनन्तालुबन्धी

Page 179:

६० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे दविदिविदत्ती ३

चत्तारि हाणी घारसक०णबणोक० अस्थि असंखेज्जभागहाणी संसेज्जभागहाणी च ।

एवं संजदासंजद् । असंजद्० मिच्छत्त अस्थि तिण्णि बड़ी चत्तारि हाणीओ अवट्दार्ण

च । सम्मत्तसम्मामि०अणंताणु चउक्ष मूरोधं । बारसक०णवणोक० अत्थि

तिण्णि बड़ी तिण्णि हाणी अबड्डाणं च। एवं तेउ०पम्म० । सुहुमसंप० मिच्छत्त

सम्मत्तसम्मामि० अत्थि असंखेज्जमामहाणी संखेज्जभाणी वारक ०णवणोक०

अत्थि असंखेज्जभागदाणी । णवरि लोभसंजल० संखेज्जभागदाणी संखेगुणहाणी च अस्थि ।

२६६ अभवि० छन्वीसं पयडीणमत्थि तिण्णि बड़ी तिण्णि हाणी अबड्डाणं च

वेदगसम्माइड्टी० आभिणिभोहिय ० ममो । णवरि बारसक ० णवणोक० असंखेज्जगुणदाणी

णत्थि । खश्य० एकवीसपयडीणमत्थि असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागदाणी संखेज्ज

गुणहाणी असंखेज्जगुणदाणी च । उवसम० अड्डावीसपयडीणमत्थि असंखेज्जमागदाणी

संखेज्जगुणहाणी अणंताणु० दोहाणीओ च । सम्मामि० अत्थि अडावीसपयडीण

मसंखेज्जभागहाणी संखेज्जमागहाणी संखेज्जगुणहाणी च ।

एवं सम्नुकित्तणा समन्ता ।

२६७ सामित्ताणुगमेण दुविहयो णिदेसोमोषे आदेसे० । ओवेण छन्वीसं

पयडीणं तिण्णि बडी अबट्टाणं च कस्स अण्णद्रस्प मिच्छादिद्धिस्स । पिण्णिहाणी कस्स १

अण्णद् सम्माइट्टिस्स मिच्छाइट्टिस्स वा। असंखेज्जगुणहाणी कस्स १ अण्णद ० सम्मा

चलुप्ककी चार द्वानियाँ हैं । बारह कषाय और नौ नोकपार्योकी अखंख्यातभागद्वानि और संख्यात

भागहानि है । इसी प्रकार संयतासंयतोंके जानना चाहिए । असंयतोंमें मिथ्यात्वकी तीन वृद्धियाँ चार

हानियाँ और अवस्थान हैं । सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्ताजुवन्धी चतुष्कका भंग मूलोघके

समान है । बारह कषाय और नौ नोकषायोकी तीन वृद्धियाँ तीन दानियोँ और अवस्थान दँ । इसी

प्रकार पीत और पद्मलेश्यावाले जीवोंके जानना चाहिए सूक्ष्म सांपरायिकसंयतों में मिथ्यात्व सम्यकत्व

आर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि और संख्यातभागहानि है । तथा बारह कषाय और नो

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानि है । किन्तु इतनी विशेषता है कि लोभसंज्वलनकी संख्यातभागहानि

ओर संख्यातगुणहानि है ।

२६६ अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन बृद्धियाँ तीन दानियाँ और अवस्थान हैं ।

चेदकसम्यस्दृष्टियोंका भंग अभिनिवोधिकज्लानियोंके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है किबारद्द कषाय

ओर नौ नोकषायोंकी असंख्यातगुणहानि नहीं है। क्ञायिकसम्यस्टष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंकी असंख्यात

भागहानि संख्यातभागहानि संलयातगुणदानि आओर असंख्यातगुणद्वानि है । उपशमस्म्यस्टष्टियोंमें

अटद्टाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और संख्यातभागद्वानि है। तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

शेष दो हानि हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें अद्भाईंस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानि संख्यात

भागहानि और संख्यातगुणहानि हैं ।

इस प्रकार समुस्कीतेनानुगम समाप्त हुआ ।

२६७ स्वामिस्वाचुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओपधनिर्देश और आदेश

निर्देश। उनमेंसे ओघकी अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन ब्ृद्धियाँ और अवस्थान किसके द्वोते हैं १

किसी एक मिथ्यादृष्ठिके होते हैं । तीन हानिर्योँ किसके होती हैं अन्यतर सम्यम्दृष्टि या मिथ्या

Page 180:

गा० २२ वट्टिपरूवणाए सरामित्तं १६१

इंड्टिस्स । णवरि अणंताणु वक अवत्तव्वं कस्स १ मिच्छाइट्टिस्स पठमसमयसंजुत्तरत ।

सम्मत्तसम्भामिच्छन्ताणं चत्तारि वड़ी अवट्टाणमवत्तव्वं च करस १ अण्णद् ० पढमसमयसम्मा

इष्िस्व । चत्तारि हदाणी० करप अण्णद० सम्माइड्िस्स मिच्छाइड्टिस्स वा। एवं

मणुसतियपंचिदियपंचिं ० पज्ज ०तसतसपञज ०पंचमण ० पंचवचि ०कायजोगि

ओरालि०तिण्णिवेदचत्तारिक ० चक्खु ०अचक्खु ०भवसि ०सण्णिआहारि त्ति ।

२६८ आदेसेण णेरहएसु भिच्छत्तबारसक ०णवणोक० ओघं । णवरि असंखेज्ज

गुणदाणी णत्थि । सम्मत्तसम्माभिच्छत्ताणमोघं । णवरि असंखेज्जगुणहाणी मिच्छा

इड्टिस्स चेवच । अणंताणु चउक ० सव्वपदाणमोधं । एवं सब्बणेरइयतिरिक्खपंचिंदिय

तिरिक्खपंचि तिरि०पज्ज ०पंचिं०तिरि०जोणिणिदेव० भवणादि जाव सहस्सार०

ग्ष्टके दोती हैं । असंख्यातगुणहानि किसके होती है ९ अन्यतर सम्यस्दष्टिके होती है। सन्तु इतनी

विशेषता है कि अनन्ताुषन्धीचतुष्कका अवक्तव्य किसके होता है १ जो सम्यग्दष्टि मिथ्यात्वमें

जाकर अनन्तानुबन्धीसे संयुक्त होता है उस मिथ्यादष्टिके प्रथम समयमे होता है । सम्यक्त्व और

संम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धियाँ अबस्थान और अवक्तव्य किसके होते हैं १ अन्यतर सम्यम्दष्टिके

प्रथम समयमें होते हैं । चार द्वानियाँ किसके होती हैं अन्यतर सम्यस्दृष्टि या सिथ्यादृष्टिके होती

हैं। इसी प्रकार मलुष्यत्रिक पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त चस असपर्याप्त पाँचों मनोयोगी

पाँचों वचनयोगी काययोगी ओऔदारिककाययोगी तीनों वेदवाले चारों कषायवाले चक्षुदशेनवाले

अचक्षुदर्शनवाले भव्य संज्ञी और आद्दारकोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थस्वामित्व अनुयोगद्वारमें वृद्धि और दानि आदिका कौन स्वामी है इसका

विचार किया है। यद तो सुनिश्चित है कि सम्यक्त्र और सम्यस्मिथ्यात्वको छोड़कर सम्यम्दृष्टिके

शेष प्रकृतियोंकी स्थितिमें बृद्धि नहीं होती । उधमें भी सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी वृद्धि खम्य

ग्टृष्टिके भ्रथम समयमें ही होती है। अतः यह निश्चित हुआ कि २६ प्रकृतियोंकी तीन बृद्धियाँ और

अवस्थान मिथ्यादृष्टिके ही होते हैं । किन्तु हानियाँ सम्यग्टष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनोंके सम्भव हैं ।

उसमें भी असंख्यातगुणदयानि दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयके क्षपणामें ही दोती है अतः

निश्चित हुआ कि तीन हानियाँ सम्यम्दष्टि और सिथ्यादृष्टि दोनोंके होती हैं। किन्तु असंख्यातगुणद्वानि

सम्यस्टृष्टिके ही होती है। अनन््ताबुबन्धीचतुष्कका अवक्तव्य भी होता है। जिसने अनन्ताजु

बन्धीकी विसंयोजना कर दी है वह जब नीचे जाता है तभी अनन्तानुबन्धीका अवक्तव्य होता

है। यही कारण हे कि जो मिथ्यात्वके प्रथम समयमें अनन्तानुबन्धीसे संयुक्त होता है उसके अनन्तालु

बन्धीका अवक्तव्य बतलाया । अब रही सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वप्रकृति सो जैसा कि पहले

बतला आये हैं कि इनकी बृद्धियाँ सम्यस्टष्टिके प्रथम समयमें दी सम्भव हैं तदनुसार चार वृद्धियाँ

अवस्थान और अवक्तव्य तो सम्यग्दषटिके प्रथम समयमें ही होते हैं । हाँ चारों दानियाँ मिथ्यादृष्टि

ओर सम्यग्दष्टि दोनोंके होती हैं ।

। २६८ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषा्योका कथन

ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ असंख्यातगुणद्वानि नहीं है। सम्यक्त्य और

सम्यम्मिथ्यात्वका कथन ओघके स्मान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातंगुणद्वानि

मिध्यादृश्टिके दी होती दै । तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सब पदोंका भंग ओघके समान है। इसी

प्रकार सव नारकी तियेच पंचेन्द्रिय तियंच पंचेन्द्रिय तियंच पर्याप्त पचेन्दरिय तिर्थ॑च योनिमती

सामान्य देव भवनवासियोंसरे लेकर सहस्तार स्वरगंतकके देव वैक्रियिङ्कराययोगी असंयत और

२१

Page 181:

१६२ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिबिहत्ती ३

वैउव्वियकायजोगिअसंजदपंचलेस्सा ति । णवरि असंजदतेउपम्म० मिच्छ

असंखेज्जगुणदहाणी ओघं । ह

२६९ पंचिं०तिरिं०अपज्ज ० अट्टावीस पयडीणं सव्वपद्ा कस्स १ अण्णद्० ।

एवं मणुसअपज्ज ०सबव्वएडंदियसव्वविगलिंदियपंचिदिय अपज्ज ०सब्वपंचकायतस

अपज्ज ०तिण्णिअण्णाणअभवसि ० मिच्छादि ० असण्णि त्ति। णवरि अभव० छन्वीसं

पयड्डिआलाबो कायच्बो ।

8 २७० आणदादि जाव णवगेवज्जो त्ति मिच्छत्तबारसक ०णवणो ई ० असंख ज्ज

भागहाणी संखेज्जमागहाणी करस १ अण्णद० सम्माइड्टिस्स मिच्छाइड्टिस्स वा । अण्णं

ताणु०चउक० एवं चेव । णवरि संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी च कस्स सम्मा

इट्टिस्स । अवत्तव्वमोधं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं चत्तारि बड़ी अव्तव्वं कस्स १ अण्णद्०

पदमसमयसम्माहृ्टिस्स । तिण्णि हणी कस्स १ सम्माइट्टिस्स मिच्छाइड्टिस्स बा । असं

खेज्जगुणदाणी कस्स १ अण्णद्० मिच्छाइट्टिस्स । णवरि सम्मामिच्छन्तस्स संखेज्जगुण

शाणी मिच्छाइड्टिस्स चेव ।

२७१ अणुदिसादि जाव सब्बह्सिद्धि त्ति अड्ावीसं पयडीणं सव्वपदा कस्स

सम्माइट्ििस्स एवमाहार ० आदहारमिस्स ० अवगद ०अङ्सा०आमिणि ०सुद् ओहि०

मणपज्ज०संजद ०सामाहयछेदो परिहार ०सुहुमसांपराय ०जहाक्खाद ०संजदासंजद ०

पाँच लेश्यवाले जीवोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंयत पीतलेश्याबाले और

पद्नलेश्यावाले जीवों मिथ्याध्वकी बसंख्यातरुणदानि ओघके समान है ।

२६६ पंचेन्द्रिय तियंच अपर्याप्तकोंमें अद्दाईस प्रकृतियोंके सच पद किसके होते हैं ९

अन्यतरके होते हैं । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त सब एकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त

सखव पाचों काय त्रस अपर्याप्त तीनों अज्ञानी अभव्य मिथ्यादृष्टि मौर असंज्ञी जीवोंके जानना

चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतिर्योका आलाप कहना चाहिये।

२७० आनत कल्पसे लेकर नो भ्रेवेयकतकके देवों मिथ्यात्व बारद कषाय ओर नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागदानि और संख्यातभागदानि किसके द्वोती हैं ९ अन्यतर सम्यण्टषटि या

मिथ्यादष्टिके होती हैं। अनन्तानुबन्धी चतुष्कका कथन इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता

है कि संख्यातगुणदानि और असंख्यातगुणद्वानि किसके द्वोती हैं १ सम्यग्दष्टिके होती हैं । अवक्तव्य

का भंग ओघके समान है । सम्यक्त्व ओर खम्यम्मिथ्यास्वकी चार वृद्धियाँ और अवक्तव्य किषके

होते हैं ९ अन्यतर सम्यग्दष्टिके प्रथम समयमें होते हैं । तीन द्वानियाँ किसके होती हैं ९ सम्बग्षटि

या मिथ्यादृष्टि दोती हैं । असंख्यातगुणद्ानि किसके होती है अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है।

किन्तु इतनी विशेषता है कि सम्यम्मिथ्यास्वकी संख्यातगुणदानि मिथ्यादृष्टिके दी होती है। ह

२७१ अनुद्शिसे लेकर सर्वार्थसद्धितकके देवोंमें अद्धाईस प्रकृतियोंके सब पद किसके

होते हैं ९ सम्यग्द्टिके होते हैं । इसी प्रकार आहारककाययोगी आद्वारकमिश्रकाययोगी अपगत

बेदी अकषायी आभिनिबोधिकज्ञानीश्रुतज्ञानी अवधिज्ञानीमनःपर्येयज्ञानी संयत सामायिकसंयत

छेद्ोपस्थापनासंयत परिद्दारविशुद्धिसंयत सूदेम सांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत संयतासंयत

Page 182:

गा० २२ चट्टिपरूबणाएं सामित्त श्र

ओदिदंस ०सम्मादि०खश्य ०वेदय ०उवसमसम्मादिद्टि त्ति। णवरि अप्पप्षणों पय०

पद्विसेसो जाणियव्बो ।

२७२ ओराकियमिस्स मिच्छत्तसोरसक णवणोक० तिष्णिवड़ी अवद्वाणं च

कस्स १ अण्ण मिच्छाइट्टिस्स । असंखेन्जमागहाणी कस्स अण्णद० सम्माइड्टिस्स

मिच्छाइड्टिस्स वा। संखेज्जभागद्दाणी संखेज्जगुणहाणी च कस्स १ अण्णद० मिच्छा

इद्र । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं चत्तारि हाणीभो कस्स १ अण्णद० मिच्छाइड्डिस्स ।

णवरि सम्मत्तस्स असंखेज्जगुणदहाणिवज्जाओ तिण्णि हाणीओ सम्मामि० असंखेज्जमाग

हाणौ च सम्मादिद्टिस्स वि होति । एवं वेउव्वियमिस्स ०कम्मइयअणादारि ति ।

२७३ सुकरे असंसेज्जमागहाणिसंखेऽजमागहाणिसंखेज्जगुणहाणी ओ

मिच्छत्तसोलसक०णवणोक विस्याओ कस्स १ अण्णद्० भिच्छादिट्विस्स सम्भादिद्धस्स

वा । असंखेज्जगुणहाणी कस्स १ सम्माइड्िस्स । अणंताणुण्चउक्ष अवत्तव्ब० ओघं ।

सम्मत्तसम्मामिच्छन्ताणं चत्तारि बड़ी अवड्ठणं अदत्तव्वं च करप १ पटमसमयसम्माइ्टिस्स ।

चत्तारि हाणीओ करस मिच्छाइड्िस्स सम्माधट्ठिस्स वा। सासण० अड्डाबीसं

पयडीणमसंखेज्जमागहाणी कस्स १ अण्णद० । सम्मामि० अड्डावीसपयडीणं तिण्णि

हाणीओ कर्ष १ सम्मामिच्छाइड्टिस्स ।

एवं सामित्ताणुगमो समत्तो ।

अबधिदशेनवाले सम्पग्दृष्टि क्ञायिकसम्यग्दष्टि वेदकसम्यस्दष्टि और डउपशमस्म्यग्टष्टि जीवोंके

जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि अपनी अपनी प्रकृतियोंके पद्विशेष जानना चाहिए ।

२७२ ओदारिकमिश्रकाययोगियोंमें सिथ्यात्व सोलद कषाय और नौ नोकषायोंकी तीन

वृद्धियाँ ओर अवस्थान किसके हैं ९ अन्यतर मिथ्यादृष्टिके दै । असंख्यातभागदानि किसके है ९

अन्यतर सम्यम्दष्टि या भिथ्यादृष्टिके है। संख्यातमागदानि भौर संख्यातशुणदानि किसके हैं ९

अन्यतर मिथ्यादृष्टिके हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार द्वानियाँ किसके हैं १ अन्यतर

मिथ्यादृष्टिके हैं। किन्तु इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्थकी असंख्यातगुणद्वानिको छोड़कर शेष तीन

हानियाँ तथा सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानि सम्यम्दष्टिके भी होती है। इसी प्रकार वैक्रियिक

भिश्रुकाययोगी कार्मणकाययोगी और अनाहारक जीबोंके जानना वादिए ।

२७३ शुक्ललेश्याबालोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकघायविषयक असंख्यात

भागहानि संख्यातभागहानि भौर संख्यातगुणहानि किसके होती हैं १ अन्यतर मिथ्यादृष्टि या

सम्यम्दृष्टिके दोती हैं । असंख्यातगुणद्ञानि किसके होती है ९ सम्यग्दष्टिके होती है । अनन्तासुबन्धी

चतुष्कका अवक्तव्यभंग ओघके समान है । सम्यक्टव और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार बृद्धियाँ अवस्थान

शौर अवक्तव्य किसके होते हैं सम्यग्टष्टिके प्रथण समयमे होते हैं । चार द्वानियाँ किसके होती

हैं ९ भिथ्याटष्टि या सम्बग्ष्िके होती हैं । सासादनसम्यस्दष्टियोंमें अद्टाईस प्रकृतियोंकी असंख्यात

भागद्दानि किसके हाती है १ अन्यतरके दोती है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें अट्ठाईस प्रकृतियोंकी तीन

हानियाँ किसके द्वोती हैं ९ सम्यग्मिथ्यादृष्टिके हाती हैं ।

इस प्रकार स्वामित्वानुगम समाप्त हुआ।

9 ता० प्रतौ असंखेष्जगुणहाणी इति पाठः । ॥ हि

Page 183:

९६४ जंयधवलासहिदे कसायपाहुडे छ्विदिविद्दत्ती ई

एगजीवेण कालो

२७४ एगजीवसंबं धिकारो चुचदि त्ति भणिदं होदि ।

मिच्छुत्तस्स तिविहाए वडीए जहरणेण एगसमओ ।

२७५ तं जदाअद्धाक्लएण संकिलेसक्खएण वा अप्पणो संतकम्मस्सुवरि

एगसमयं वड्डिदण बंधिय विदियसमए अप्पद्रे अवद्काणे बा कदे असंखेज्जभागवड्डि

संखेज्जभागबड्डिसंखेज्जगुणवड्डीणं कालो जहृण्णेण एगसमओ होदि ।

उक्कस्लेण वे समया ।

२७६ तं जहाएइंदिओ एगट्टिदिं बंधमाणों अच्छिदो तदो तिस्से ट्विदीए

अद्धाक्खएण एगसमयमसंखेज्जभागवड्डिबंधं कादूण पुणो विद्यसमए संकिलेसक्खएण

असंखेज्जभागव्डिबंधं कादूण तदियसमए अप्यदरे अवद्ठिदे वा कदे असंखेज्जमागत्र्डीए

उकस्सेण वे समया लड़ा होंति। जधा एडंदियमस्सिदूण अद्भासंकिलेसक्खएण असंखेज्ज

भागवड्डीए विसमयपरूवणा कदा तथा बेइंदियतेइंदियचदुरिंद्यअसण्णिपंचिंदियसण्णि

पंचिंदिए वि अस्सिदृण सत्थाणे चेव वेसमयपरूवणा कायव्या अद्धाक्खएणेव संकिलेस

क्खएण वि असंखेज्जभागबड़ीए संमवादो । वेइंदिओ संकिलेसक्खएण एगसमयं

संखेज्जभागबड्डिबंधं कादूण पुणो अणंतरसमए कालं कादूण तेइंदिण्सुप्पज्जिय पहमसमए

तप्पाओग्गजहण्णट्टिदिबंधनो जादो । ताघे संखेज्जभागवड्डीए बिदिओ समओ लब्भदि

अब एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं।

२७४ अब एक जीवसम्बन्धी कालका कथन करते द यह् इस सूत्रे कहनेका तात्पये हे ।

क मिथ्यात्वकी तीन इद्धियोंका जघन्य काल एक समय हे । ह

२५४ जो इस प्रकार हैजिसने अद्धाक्षय या संक्लेशक्षयसे अपने सत्कर्मके ऊपर एक

समय तक स्थितिको बढ़ाकर बधा और दूसरे समयमें अल्पतर या अवस्थान किया उसके

असंरूयातभागदद्धि संख्यावभागवृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य काल एक समय होता है।

इल्छृष्ट काल दो समय है ।

२७६ जो इस प्रकार हैजो एकेन्द्रिय एक स्थितिको वांता हुआ विद्यमान है तदनन्तर

जिसने उस स्थितिका अद्धाक्षयस्े एक समय तक असंख्यातभागबृद्धिरूप बन्ध किया पुनः दुसरे

समयमें संक्लेशक्षयल्रे असंख्यातभागवृद्धिरूप बन्ध करके तीसरे समयमें अस्पतर या अवस्थित

बन्ध किया उसके असंख्यातभागवृद्धिका उत्कृष्ट काल दो समय प्राप्त होता है । जिस प्रकार एकेन्द्रियकी

अपेक्षा अद्धाक्षय और संक्लेशक्षयस्रे असंख्यातभागबृद्धिके दो समयोंका कथन किया उसी श्रकार

दीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अर्सज्षी पंचेन्द्रिय ओर संज्ञी पंचेन्द्रियकी अपेक्षा भी स्वस्थानमें

ही दो समयोंका कथन करना चाहिये क्योंकि वहाँ पर अद्भाक्षयके समान संक्लेशक्षयसे

भी असंख्यातभागवृद्धि सम्भव है। कोई द्वीन्द्रिय संक्लेशक्षयले एक समय तक संख्यातभागवृद्धि

रूप बन्ध करके पुनः अनन्तर समयमे मरकर त्रीन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर प्रथम समयमें

तस्पायोग्य जघन्य स्थितिका बन्ध करनेवाला हो गया । उस खमय संख्यातभागबृद्धिका दूसरा

भ्ा० अरतौ काले इति पाडः । ८4 है

Page 184:

यां० हैरे बद्डिपरूपणाए कालो १६५

बीइंदियट्विदिसंतादो रीईदिएसुप्पण्णपढमद्िदिसंतस्स देष्षणदुगुणत्ुबरमादो । बेइंदिय

अपज्जत्तयस्स॒ उकस्सट्ठिदिबंधादो तेइंदियअपज्जत्तयस्स उकस्सद्धिदिवंधो दुगुणो होदि

तस्स जहण्णड्विदिबंधादोी वि एदस्स जहण्णद्विदिबंधो दुशुणो होदि। तेण कारणेण

बीइंदियउकस्सट्विदिबंधं पेक्खिदूण तीईंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णट्विदिबंधो संखेज्जभाग

उमदिओ । बीईंदियअपज्जत्तवस्स जहण्णट्वि दिसंतादों पलिदो० संखेज्जभागब्भहिय

समुकस्सट्विदिसंतं पेक्खिदूण दीईंदियअपज्जत्तजहण्णट्विदिसंतादो संंखे०पलिदोवमेद्ि

अब्भहियतेइंदियजहण्णट्टिदिबंधोी संखेज्जमागब्भहिओ चति भणिदं होदि। बेइंदिण्सु

सत्थाणे चेव संखेज्जमागवड्ढीए मण व कण्ण लब्भंति १ ण एस दोसो अद्धाकखएण

असंखेन्जभागवड्धिवंधं मोत्तण सेसबल्डिबंधाणमभावादो । संकिलेसक्खएण संखेन्जमाग्

बड्ढीए स॒त्थाणे चेव वैसमय। क्ष्ण १०००५ १ ण एगसमए संकिलेसक्खए जादे पुणो

अंतोम्ुहृत्तेण विणा संखेज्जमागवड्डिबंधपाओग्गसंकिलेसाणं गमणासंभवादो ।

२७७ अधवा तेइंदिएण सत्थाणे चेव संकिलेसक्खएण एगसमयं कदसंखेजमाग

बड्ट्टिदिबंधिण विदियसमए कालं कादूण चउरिंदिएसुप्पाजय पढमसमए जहण्णद्धिदिवधे

पबद्धे संखेज़मागवड्टीए वे समया लब्भंति महाबंधम्मि विगलिंदिएसु सत्थाणे चेव

संकिलेसक्ख रण संखेजभागवद्डिबंधस्स वे समया परूविदा तब्बलेण कसायपाहुडस्स ण

पडिबोहणा काउं छुत्ता तंतंतरेण भिण्णपुरिसकएण तंतंतरस्स पडिबोयणाणुबबत्तीदों ।

समय प्राप्त द्वोता है क्योंकि द्वीन्द्रिके स्थितिसत्त्वसे त्रीन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर जो प्रथम

स्थितिसत्त्व होता हे वह कुछ कम दूना पाया जाता है। द्वीन्दिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट

स्थितिबन्धसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्ध दूना होता है। तथा उसके जघन्य स्थित्तिबन्धसे

भी इसके जघन्य स्थितिबन्ध दूना होता है इसलिये द्वीन्द्रयके उत्कृष्ट स्थितिबन्धकी अपेक्षा त्रीन्द्रय

अपर्याप्रकके जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातर्वे भाग अधिक होता है। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य

स्थितिसन्त्रसे पलल््योपमके संख्यातर्वें भाग अधिक अपने उत्कृष्ट स्थितिसत्त्वकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय

अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिसत्तसे संख्यात पल्य अधिक न्नीन्द्रियका जघन्य स्थितिबन्ध संख्याते

भाग अधिक द्वोता है यद उक्त कथनका तासय है।

शंङ्ादीन्द्रयोमिं स्वस्थानमें ही संज्यातभागबृद्धिके दो समय क्यों नहीं प्राप्त होते हैं ९

समाधानयह कोई दोष नहीं हेक्योंकि अद्धाक्षयसे असंख्यातभागवृद्धि रूप बन्धको छोड़कर

शेष वृद्धिरूप बन्धोंका अभाव है ।

शंकासंक्लेशक्यसे स्वस्थानमें द्वी संख्यातभागबद्धिके दो समय क्यों नहीं प्रात होते हैं ९

समाधाननहों क्योंकि एक समयमें संक्लेशक्षय दो जाने पर पुनः अन्तमुंहू्त कालके

बिना संख्यातभागवृद्धिरूप बन्धके योग्य संक्लेशकी प्राप्ति दोना सम्भव नहीं है ।

२७५ अथवा जिख त्रीन्द्रियने स्वस्थानमें ही संक्लेशक्षयसे एक समयतक संख्यातभाग

बृद्धिरूप स्थितिबन्धको किया है उसके दूसरे समयमे मरकर ओर चतुरिन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर प्रथम

समयमें जघन्य स्थितिबन्धके करने पर संख्यातभागबूद्धिके दो समय प्राप्त दयते हैँ । मद्दाबम्धमें

विकलेन्द्रियोंमें स्वस्थानमें दी संक्लेशक्षयले संख्यातभागबृद्धिरूप बन्धके दो समय कहे हैं। उसके

घलसे कषायपाहुडको समना ठीक नहीं है क्योंकि भिन्न पुरुषके द्वारा किये गये प्रन्थान्तरसे भन्था

न्तरका इन नहीं दो सकता है। 4 ५ 52

Page 185:

१६६ जयधवलाखदिदे कसायपाहुडे दिद्विहत्ती है

२७८ सण्णिमिच्छाइड्िगा तप्पाओग्गअंतोकोडाकोडि ट्विदिसंतादो संकिलेसं

पूरेदूण संखेजगुणवड़ीए एगसमयं वड्डिदण बंधिय विदियसमए अबड्विदबंधे अप्पदरबंधे

वा कंदे संखेजगुणवड्डीए एगसमओ लब्भदि सत्थाणे वे समया ण रूब्भंति चेष अंतो

चतरं मोत्तण संखेजगुणवड्डिपाओग्गपरिणामाणं णिरंतरं दोसु समएस गमणाभावादो ।

तेणेत्थ वि परत्थाणं चेव अस्सिदृण विसमयाणं परूबणा कायव्या । तं जहाएइंदिओ

कालं कादृण एगविग्गदेण सण्णिपंचिदिणएसु उववण्णो तस्स पढमसमए संखेज्ञगुणवड्ढी

होदि तत्थासण्णिपंचिंदिय ट्विदिबंधस्स संभवादो । विदियसमए सरीरं वेचृण संखेजगुण

बड करेदि तस्थ अंतोकोडाकोडिसागरोवम मे्तट्वि दिबंधुवलंभादो ।

असंखेज्न भागहाणीए जहर्णेण एगसमओ ।

२७९ तं जद्दासमझ्टिदि बंधमाणेण पुणो संतकम्भस्स हेड्ठा एगसमयमोसरिद्ण

बंधिय तदो उवरिमसमए संतसमाणे बद्धे असंखेजमागहाणीए जदण्णेण एगसमओ होदि।

उक्कस्सेण तेवहिसागरोंवमसर्द॑ सादिरेयं ।

२८० तं जहाएगो वड्ढीए अबड्डाणे वा अच्छिदो पुणो सब्युकस्समंतोमहुत्त

कालमप्पद्रविहत्तिओ होदूगच्छिय बेदगसम्मत्तं पडिषण्णो । पुणो वेछाबड्िघागरोबमाणि

भमिय तदो एकत्तीसघागरोवमिएसु उपज्िय मिच्छन्तं गंतूण देवाउअमणुपालिय कालं

२७८ किसी संज्ञी मिथ्यादृष्टिने तद्योग्य अन्तःकोडकोड़ी सागरप्रमाण स्थित्तिसतत्वसे

संक्लेशको पूराकर एक समयतक संख्यातगुणबृद्धिरूपसे स्थितिको बढ़ाकर वन्ध किया पुनः दुसरे

समथमें अवस्थितवन्ध या अल्पतरबन्धके करने पर संख्यातगुणवृद्धिका एक समय प्राप्त होता है।

स्वस्थानमें दो समय प्राप्त दते दी नहीं क्योंकि अन्तमुंहते अन्तरके बिना निरन्तर दो समय तक

संख्यातगुणबृद्धिके योग्य परिणामोंकी प्रति नदीं होती है अतः यहाँ पर भी परस्थानकी अपेक्षासे

ही दो समयोंका कथन करना चाहिये । जो इस प्रकार हैएक एकेन्द्रिय मरकर एक विग्रहसे संज्ञी

पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ उसके प्रथम समयमे संख्यातगुणवृद्धि होती है क्योंकि बहाँ पर असंज्ञी

पंचेन्द्रियका स्थितिबन्ध सम्भव है । तथा दूसरे समयमे शरीरको प्रद्ण करके संख्यातगुणबृद्धिको

करता है क्योंकि वहाँ पर अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थितिबन्ध पाया जाता है।

मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल ऐक समय है ।

२७६ जो इस प्रकार हैसमान स्थितिको बाँधनेवाले किसी जीवने सत्कर्मसे एक समयं

कम बन्ध किया तदनन्तर अगले समयमें सरकमेके समान बन्ध किया तो उसके असंख्यातभाग

दानिश्न जवन्य कालं एक समय होता है ।

उत्कृष्ट काल साधिक एक सौ त्रेसड सागर है ।

8 २८० जो इस प्रकार हैकोई एक जीव वृद्धि या अवस्थानमें स्थित है पुनः वई सबसे

उत्कृष्ट अन्तमुंहूर्त काल तक अल्पतर विभक्तिवाला होकर रहा और वेदकसम्यक्त्वकों श्राप्त हुआ।

पुनः एक सो बत्तीस सागर तक परिश्रमण करके तदनन्तर इकतीस सागरप्रमाण आयुबाले देवोंमें

उत्पन्न होकर और मिथ्यात्वक़ो प्राप्त दोकर उसके साथ देवायुका उपभाग करके मरा और पूर्व

ता प्रतौ कोडाकोड़ि क्ति सागरोबम इति पाड ।

Page 186:

गा० २२ ब्डिपरूवणाए कालो १६७

कादण पुव्वकोडाउअमणुस्सेसुप्पज्िय मणुस्साउअम्मि अंतोुहत्ते गदे संकिलेसं परेदूण

भ्ुजगारदििदिबंध गदो । तम्हा तेबद्धिस।मरोवमसद अंतोष्हुततेण सादिरियमसंखेजभाग

हाणीए उकस्सकालो होदि। तिपलिदोवमिएसु उप्पाइ्य तेबह्धिसाणरोवमसदं तीहि

पलिदोवमेद्दि सादिरेयं किण्ण महिदं १ अप्पदरस्स कारो उकस्सओ होदि एत्तिओ

णासंखेजभागहाणीए तिण्णि पलिदोवमाणि देशणाणि असंखेजभागद्ाणीए गमिय पणो

अंतोमुहृत्तावसेसे आउए पढमसम्मत्तप्र प्पाएंतेण संखेजमागहाणीए कदाएं असंखेजमाग

हाणीए पकंताए विणासप्पसंगादो ।

२८१ तेबद्टिसागरोबमसदमंतो हुत्तेण सादिरेयमिदि जं चं तं थोरुचएण बुत्त

मिदि तण्ण घेत्तव्वं पणो कथं वेष्पदि ति दुत्त बुचदेमोगभूमोए वेदयपाओग्गदीहु

व्वेकणकालमेत्ताउए सेसे पढमसम्मत्त पेत्तण पुणो अतो हुत्तेण मिच्छत्त गंतूण अप्पदरेण

पलिदोवमस्स असंखेजभागमेत्तकालं गमिय पुणो अवसाणे वेदगसम्मत्त घेच्ण देवेसु

प्पजिय पृव्य॑ व तेवड्ठिसागरोवमसदं भमिय श्ुुजगारे कदे पलिदोवमस्स असंखेजमगेण

व्महियतेतट्टिसागरोवम सदमसंखेजभागहाणीए उकस्सकालो ।

संखेञ्न भागदहाणीए जदण्णेण एगसमओ ।

कोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और वहाँ मलुभ्यायुमेते अन्तयहूतं कालके व्यतीत होने

पर संक्लेशको प्राच होकर भ्ुजगारस्थितिका बन्ध किया अतः असंख्यातभागद्दानिका अन्तमुहूते

अधिक एक सौ त्रेसठ सागर उत्कृष्ट काल द्वोता है।

शंकौतीन पर्य प्रमाण आयुवाले जीबोंमें उत्पन्न कराके असंख्यातभाग्षनिका उत्कृष्ट

काल तीन पल्य अधिक एक सौ त्रेसठ सागर क्यों नहीं रहण किया है ९

समाधानयद ठीक है कि इस प्रकार अल्पतर स्थिति विभक्तिका इतना उच्छष्ट काल

ग्राप्त होता है । पर इससे असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल नहीं प्राप्त हो सकता है क्योंकि कुछ

कम तीन पल्य असंख्यातभागद्वानिके साथ व्यतीत करके पुनः आयुके अन्तर्महूते प्रमाण शेष रने

पर प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्न करनेवालेके संख्यातमागहानि होने लगती है अतः प्रारम्भ की गई

असंख्यातभागद्वानिका विनाश प्राप्त होता है । ॥

२८१ दूखरे संख्यातभागद्वानिकरा उत्कृष्ट काल जो अन्तमुहूर्त अधिक एक सौ त्रेसठ सागर

कदा है बह स्थूल रूपसे कद्दा हे अतः उसका प्रहण नहीं करना चाहिये।

शंकातो फिर कौनसे कालका किस प्रकार ग्रहण करना चाहिये ९ ही

समाधानभोगभूमिमें वेदकके योग्य दीघं उछरलना कालग्रमाण आयुके शेष रहने पर

प्रथम सम्यक्त्वकों ग्रहण करके पुनः अन्तमुंहूर्त कालके द्वारा मिथ्याध्वक्नो प्राप्त होकर अल्पतर

स्थितिविभक्तिके साथ पट्योपमके असंख्यात भागप्रमाण कालको व्यतीत करके पुनः अन्तर्मे

बेदकसम्यकत्वको प्रहण करके और देवोंमें उत्पन्न होकर पहलेके समान एक सौ त्रेसठ सागर काल

तक परिभ्रमण करके भुजगारस्थितिविभक्तिके करने पर असंख्यातभागहानिका पल्योपम्रका

असंख्यातबाँ भाग अधिक एक सौ त्रेसठ सागर उत्कृष्ट काल प्राप्त होता है ।

मिथ्यात्वकी संख्यातभागदानिका जघन्य काल एक समय है ।

Page 187:

१६९ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविषती ३

२८२ तं जहादंसणमोहक्खवणाए् अण्णस्थ वा पलिदोषमस्स संखेजमागमेत्त

दिदि कंडण घादिदे संखेजभागहाणीए जहण्णेण एगसमओ होदि ।

उक्स्सेण जहण्णमसंखेज्ञयं तिरूवृणयमेक्तिए समए ।

ः २८३ तं जद्दादंसगमोहक्खबवणाए मिच्छत्तसस चरिमट्विदिकंडए हदे उदया

चलियाए उकस्ससंखेजमेचणिसेगट्विदीसु सेसासु संखेजभागहाणीए आदी होदि । तत्तो

पहुडि तान संखेजमागहाणी होदि जाब उदयावलियाएं दो णिततेग्धिदीओ तिसमय

कालाओ द्िदाओो त्ति तेण जदण्णपरिततासंखेजयम्मि तिरूवृणम्मि जत्तिया समया

तत्तियमेत्तो संखेज़मागद्दाणीए उकस्पकालो त्ति मणिदं ।

संखेज्जगुणहाणिअसंखेज्नगणहाणीणं जहण्णुकर्लेण एगसमओ ।

२८७ तं जहादंसणमोहक्खब्रणाए पलिदोवमद्धिदिसंतक्रम्मप्पहुडि जाब द्राव

किड्टिद्िदो चेदि ताव एस्थंतरे पदमाणद्विदिखंडएसु पदंतेसु संखेजगुणहाण होदि ।

त्स्सि वि कारो एगस्मओ चेव चरिमफालिं मोत्तण अण्णत्थ संखेजगुणहाणीए

अभावादो । संसारावत्थाष् वि संखेजगुणदाणीए एगसमओ चेव दोदि सत्तरिसागरोवम

कोडाकोडीणं संखेजेखु भागेषु घादिदेस घादिजमाणेसु तस्स ट्विदिखंडयस्स चरिमफालीए

चेव संखेजगुणहाणीए उबलंभादो । द्रावक्रिडिद्विदिप्पहुडि जाब चरिमिद्धिदिखंडयचरिमि

फालि त्ति स्थते ट्विदिखंडए्सु पदमाणेसु असंखेजगुणहाणी होदि । एदिस्से वि कारो

एगसमओ द्िदिखंडयाणं चरिमफालीपु चेव असंखेजगुणहीणत्तबलंभादो ।

२८२ जो इस प्रकार हैदर्शनमोहनीयकी क्षपणामें या अन्यत्र पल््योपमके असंख्यातवें

भागप्रमाण स्थितिकाण्डकके घात करने पर संख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय द्वोता है।

उत्कृष्ट काल तीन कम जघन्य परीतासंख्यातके जितने समय हों उतना है।

२८३ जो इस प्रकार हैदर्शंनमोहनीयकी क्षपणामें मिथ्यात्वके अन्तिम स्थितिकाण्डक

का घात करने पर उद्यावलिमें निषेकस्थितियोंके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण शेष रहनेपर संख्यात भाग

हानिका प्रारम्भ होता है। यहाँसे लेकर तीन समयकाल स्थितिवाले दो निषेकोंके शेष रहनेतक

संख्यातभागद्दानि होती है । अतः तीन कम जघन्यपरीतासंख्यातमें जितने समय हों उतना संख्यात

भागद्दानिका उत्कृष्ट काल है ऐसा कहा है।

मिथ्यात्वकी संख्यागुणहानि और असंख्यातगुणदानिका जघन्य और उत्कृष्ट

काल एक समय हे

२८४ जो इस प्रकार हैदशेनमोहनीयकी क्षपणामें पल्यप्रमाण स्थितिसष्क्मसे लेकर

दूरापकृष्टिपमाण स्थितिके शेष रहने तक इस अन्तदालमें प्राप्त होनेवाले स्थित्तिकाण्डकोकि पतन होने

पर खंख्यातगुणदानि होती है उसका भी काल एक समय ही है क्योंकि अन्तिम फालिको छोड़कर

अन्यत्र संख्यातगुणद्वानि नहीं होती है । संसार अवस्थामें भी संख्यातगुणद्वानिका काल एक समय

दी प्राप्त होता है क्योकि सत्तरकोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण स्थितियोंके संख्यात बहुभागके घात द्वोते हुए

चात होनेवाले काण्डकोंमें उस स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिमें द्वी संड्यातगुणहानि पाई जाती है ।

तथा दूरापक्ृष्टि स्थितिसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालितक इस बीच स्थिति

काण्डकके पतनमें असंख्यातगुणद्दानि होती है। इसका भी काल एक समय है क्योंकि स्थिति

काण्डकोंकी अन्तिम फालिमे ही असंख्यातगुणद्वानि पाई जाती है ।

Page 188:

गाठ २२ ब्डिपरूवणाए कालो १६४

अवहिदहिदिविहत्तिया केवचिरं कालादो होति ।

२८५ सुगममेदं ।

जहण्णेण एगसमओ । मत

२८६ भ्रुजगारमप्पदरं वा इणंतेण एयसमयमवडटिदं को दण बिदियसमणए झुजगारे

अप्पदरे वा कदे जदण्णेण अवद्िदस्ष एगसमओ ।

उक्षस्सेण अंतोमुह॒त्तं ।

२८७ तं जहाबड्डिं हार्णि वा काऊण अवदह्काणम्मि पडिय अतोहं तत्थ

ठाइदूण शेजगारे अप्पद्रे वा कदे अबद्टिदस् अंतोम्नहत्तमेत्ती उकस्सकालो होदि ।

सेसाण पि कम्माणएमेदेण बीजपदेण शेदव्वं ।

२८८ दण वयणेण सुततस्स देसामासियत्त जेण जाणाविद् तेण चण्डं गईणं

उत्तुघचारणाबलेण एलाइरियपसाएण य सेसकम्माणं परूवणा करद् कालाणुगमेण

विदो िदेषोओषे आदेसे० । ओघे० मिच्छत्त० तिण्णि बड्धि जह० एगसमओ

उक० वे समया । असंखेजमागहाणी जद० एगसमओ उक तेबह्िसागरोवमसदं

सादिरेयं । संखेजमागदाणी जह० एयसमओ उक्त उक्स्पसंखेजं दुरुवूणयं । संखेज

गुणदाणी असंखेजगुणहाणी ० जदण्णुक० एगसमओ । अवद्ध जह ० एगस ० उक०

अंतोघ्० । एवं तेरसक ० । णवरि असंखेजमागवद्खीए जद ० एगसमओ उक्त सत्तारस

मिथ्यास्वकी अवस्थित स्थितिविभक्तिका कितना काल दै १

२८५ यह सूत्र सुगम है।

जघन्य काल एक समय है।

२८६ भुजगार या अल्पतरको करनेवाले किसी जीवके एक समयतक अवस्थित करके

दूसरे समा भरुजगार या भल्पतरके करनेपर अबस्थितस्थितिविभक्तिका जघन्य काल एक समय

प्राप्त होता है ।

उत्कृष्ट काल अन्तप्रुहृत है ।

२८७ जो इस प्रकार हैबृद्धि या दानिको करके और अवस्थिते पड़कर तथा अन्तमुहूत

कालतक वहाँ रहकर भुजगार या अल्पतरके करनेपर अवस्थितका उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त

प्राप्त होता है ।

ॐ शेष कर्मोकी भी बुद्धि आदिका काल इसी बीजपदके अलुसार जान लेना चाहिये।

२८८ इस वचनसे चू कि सूत्रका देशामपेकपना जता दिया अतः उच्चारणाके बलसे और

एलाचायके प्रसादे चारों गतियोंमें शेष कर्मोकी प्ररूपणा करते हैंकालानुगमकी अपेक्षा निर्देश

दो प्रकारका हैओघनिदेश और आदेशनिदेश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्वक्ी तीन बृद्धियोंका

जघन्य काल एक समय है तथा उत्कृष्ट काल दो समय है। असंख्यातभागद्दानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल साधिक एक सौ त्रेसठ सागर है। संख्यातभागहानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल दो कम उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण है । संख्यातगुणदानि और असंख्यातगुण

हानिका जघन्य श्नौर उक्ष काल एक समय है। अवास्थतका जवन्य काल एक समय और उत्क्ष्ट काल

अन्तमुंहूत दै । इसी प्रकार तेरह कषायोंका जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यात

क्म्

Page 189:

१७० जयधबलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविह्ती है

समया । अणंताणु०चउक्क० अवच्तव्व० जहण्णुक० एगस० । पिण्णिसंजलणणो

कसायाणं एवं चेव णः । णवरि संखेजभागहाणी जदण्णुक् एगस ० सगसगद्धिदीए संखेजे

भागे धादिदे भागदाणीए् उवलंभादो । दुरूवृणुकस्ससंखेजमेत्तकालो एदार्सि

पयडीणं संखेजमागहाणीए किण्ण रुद्धो १ ण अंतरकरणे कदे पढमट्ठिदीए विणा तिदिय

द्विदीण च ट्विदाग चरिमकंडयचरिमफालीए पदिदाए संतीए उदयावलियाए समयूणा

वलियमेत्तद्टिदीणं सेसक्सायाणं अणुवर्लंभादो ।

२८९ इत्थिपुरिसवेदाणं संखेजमागव्डिकालो जदण्णुकस्सेण एगसमओ। वे समया

ण रब्मंति । छुंदो १ बेइंदियाणं तीइंदिए्सु तेहदियाणं चउरिंदिए्सु उप्पज्ममाणाणमप्पणो

आउअचरिमसमए णबंसयवेदं मोत्तण अण्णवेदाणं ब॑धाभावादो । कदो जम्मि जादीए

उप्पजदि तजादिपडिषद्धवेदस्सेव यंजमाणाउअस्स चरिमअंतोप्नुदृत्तम्मि णिरंतरबंधसंभ

वादो । तेण इत्थिपुरिसवेदाणं सगसगद्धिदिसंतकम्मादो संखेजमागब्भहियं कसायद्विर्दि

बंधाविय बंधावलियादिकंत बज्ञमाणित्थिपुरिसवेदेस संकामिदेस संखेजमागवड्डीए

एगसमओ चेव लब्भदि। सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं चत्तारिङ्किदोहाणिअवद्धिद

अवत्तव्वाणं जदण्णुक एगसमओ । असंखेज्ञमागहाणीए जह ० एगसमओ । तं जहा

समयादियजदण्णपरित्तासंखेजमेचसेसाए सम्मत्तसम्मामि०पटमद्धिदीए चरिषुव्बेह्टण

मागधिका लघन्यकाल्ञ एक समय है और उत्कृष्ट काल सत्रह समय है । अनन्ताुबन्धीचतुष्ककी

अवक्तन्यस्थितिविभक्तिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । तीन संज्वलन ओर नौ

नोकषायोंका इसी प्रकार जानना चादिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातभागद्वानिका जघन्य

ओर उत्कृष्ट काल एक समय है क्योंकि अपनी अपनी स्थितिके संख्यातवें भागका चात होने

पर संख्यातभागद्वानि पाई जाती है ।

शंकाइन प्रकृतियोंकी संख्यातभागद्ानिका दो कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण काल क्यों नहीं

प्राप्त होता है ९

संमाधान नदी क्योकि अन्तरकरण करने पर प्रथम स्थिति के बिना दूसरी स्थितिमें

स्थित कर्मोके अन्तिमकाण्डककी अन्तिम फालिके पतन होते हुए शेष कषायोंके समान इन कर्मोकी

उद्यावलिमें एक समय कम आवलिप्रमाण स्थितियाँ नहीं पाई जाती हैं ।

२८६ खीवेद और पुरुषवेदकी संख्यातभागबृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

दो समय काल नहीं प्राप्त दोता है क्योकि जो द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रियोंमें ओर त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रियोंमें

उत्पन्न होते हैः उनके अपनी आयुके अन्तिम समयमें नपुंसकवेदको छोड़कर अन्य वेदका वन्ध नहीं

होता है क्योंकि जो जीव जिस जातिमें उत्पन्न होता है उसके उस जातिसे सम्बन्ध रखनेवाले वेदका

दी भुज्यमान आयुके अन्तिम अन्तमुंहुतेमें निरन्तर बन्ध सम्भव है। इसलिये खवेद अौर पुरुषबेद

की अपने अपने स्थितिसत्कर्म से संख्यातर्वें भाग अधिक कषायकी स्थितिका वन्ध कराके बन्धा

ब्रलिके बाद बंधनेवाले ज्रीवेद और पुरुषवेदमें उसके संक्रान्त हं।नेपर संख्यातभागबृद्धिका एक समय

द्वीश्राप्त दोता है। सम्यक्त्व और सम्यम्सिथ्यात्वकी चार बृद्धि दो हानि अवस्थित और

अचवक्तव्यका जघन्य ओर उत्कृष्ट काल एक समय है ॥ असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक खमय

है। जो इस प्रकार हैसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिक्री एक समय अधिक जघन्य

3 भा० प्रतौ चेहिदार्ण इति पाठः ।

Page 190:

गा० रर् वड्डिपरूवणाए कालो १७१

कंडयचरिमफालीए उच्वे्िदाए एगसमयमसंखेजमागहाणी होदि तत्थाणंतस्समए

संखेल्मागदाणीए पारंभदंसणादो । उक वेाबह्िसागरोबमाणि सादिरेयाणि ।

संखेजमागदाणीए मिच्छत्तमंगो । एवं तसतसपज्ञ ०णचुंसयवेदअचक्खुभवसिद्धि०

आहारि त्ति। णवरि णबुंसयवेदेस असंखेज़मागद्ाणीए जह एगस० उक० तेत्तीसं

सामरो० देखुणाणि। सम्मच०सम्मामि० असंखेजभागद्वाणी० तेत्तीसं सामरो० सादिरे

याणि लोमसंजल० संखेजमागहाणी० जहण्णुक० एगस० । आहारीसु संखेजगुणवड्डीए

जहण्णुक ० एयसमओ ।

परीतासंख्यातप्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर अन्तिम उद्देलनाकाण्डककी अन्तिम फालिकी उद्वलनमें

एक समय तक अखंख्यातभागहानि दोती है क्योंकि वहाँ अनन्तर समयमे संख्यातभागहानिका

प्रारम्भ देखा जाता है। श्रसंख्यातमागहानिका उत्कृष्ट काल साधिक एक खौ बत्तीस सागर है। तथा

संख्यातभागदानिका भंग मिथ्यात्वके समान है । इस प्रकार त्रस त्रसपर्याप्त नपुंसकवेदी अचक्षु

द्शनबाले भव्य और आद्वारक जीवो जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदियों में

असंख्यातभागदानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर हे।

सम्यक्त्व शरोर सम्यग्यिध्यात्वकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है।

लोभसंज्वलनकी संख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। तथा भाहारकोमिं

संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य भौर उत्कृष्ट काल एक खमय हे ।

विशेषार्थपदले युजगार विभक्ति लो भुजगार ओर चस्पतरका काल बतलाया है बह

यहाँ घटित नहीं होता क्योकि वहाँ बृद्धि और द्वानियोंके अवान्तर भेद न करके वह काल कदा है

और यहाँ अवान्तर भेदोंकी अपेक्तासे काल कहा है अतः दोनोंके कालोंमें फरक पड़ जाता है ।

अब यहाँ जिसका खुलासा स्वयं वीरसेन स्वामीने किया है उसे छोड़कर शेषका खुलासा करते हैं।

सोलद्द कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि का उत्कृष्ट काल सत्रह समय है क्योंकि

झुजगारविभक्तिमें सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी भुजगारस्थितिका उत्कृष्ट काल जो १६

समय बतलाया है उसमेंसे अद्धाक्षयसे प्राप्त दोनेबाले सुजगारके सत्रह समय ले लेना चाहिये क्योंकि

अद्धाक्षयसे असंख्यातभागबृद्धि ही होती है । यद्यपि सामान्यसे संख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल दो

समय कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण बतलाया है पर क्रोधादि तीन खंज्वलन और नो नोकषायोंमें यद

काल घटित नहीं होता क्योकि इनकी प्रथम स्थितिका द्वितीय स्थितिके रहते हुए दी अभाव दो

जाता है । संख्यातभागवृद्धिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय है। जो इस प्रकार

हैकिसी द्ीन्द्रिय या त्रीन्द्रिय जीवने संक्लेशक्तयसे एक समय तक संख्यातभागवृद्धि रूप बन्ध करके

पुनः अनन्तर समयमें मर कर एकेन्द्रिय अधिकवाले जीवों अर्थात् तेइन्द्रिय या चोइन्द्रियोंमें उत्पन्न

होकर प्रथम समयमें तलायोग्य जघन्य स्थितिका बन्ध किया उघ जीवके संख्यातभागवृद्धिका

उत्कृष्ट काल दो समय पाया जाता है । परन्तु पुरुषबेद और ख्रीवेदकी संख्यातभागबृद्धिकां उत्कृष्ट

काल एक ही समय कदा है। उसका कारण यह है कि जो हीन्द्रियसे तेइन्द्रियमें ओर तेइन्द्रियसे चतु

रिन्द्रियमें उत्पन्न होते हैँ उनके अपनी आयुके अन्तिम अन््तमुंहू््तमें नपुंसकवेदके अतिरिक्त अन्य

बेदका बन्ध नहीं दता क्योंकि तेइन्द्रिय या चतुरिन्द्रिय जीव जिनमें बद् उत्पन्न द्वोंगे नियमसे नपुंसक

बेदी हते हैं और सामान्य नियम यह है कि जा जाव जिस जातिमें उत्पन्न होता है उसक उव

ज्ञाते सम्बन्ध रखनेबाले वेदका दी भुज्यमान आयुके अन्तिम अन्तमुहूतेमें निरन्तर बन्ध सम्भव

Page 191:

१७२ जयधवलांसदिदे कंसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

२६० आदेसेण णेरइएसु मिच्छतसोलसक०णवणोक० असंखेजभागबड्ि

अव्डि० ओघं । असंखेज्ञभागह्ाणी ० जद० एगसमओ उक्क० तेत्तीसं सागरो० देख

णाणि। दो बड़ी दो हाणी० जह्णुक० एगस० । णवरि अणंताणु०चउक० संखेज

भागहाणिअसंखेजगुणहा णिअवत्तव्वाणमोघं । सम्मत्तसम्प्रामिच्छत्ताणमोधभंगो । णवारि

असंखेजभागहाणी जह० एगसमओ उक्क० तेत्तीसं सामरो० देखणांणि एवं सब्ब

पोरह्याणं । णबरि सगट्टिदी देखणा ।

है। इसलिये स््रीवेद या पुरुषवेदका जितना स्थितिसत्त्व है उससे संख्यातवें भाग अधिक स्थिति

बाले कषायका बन्ध कराकर बन्धावलीके पश्चात् स्त्रीवेद या पुरुषवेदमें संकान्त होने पर उक्त दोनों

वेदोंकी संख्यातभागवृद्धिका काल एक समय ही प्राप्त द्वोता है। सम्यक्स और सखम्यग्मिथ्यात्वकी

चारों इद्धियोँ अवस्थित और अवक्तव्य ये सम्यग्दृष्टिके प्रथण समयमे ही होते हैं अतः इनका

जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय का । तथा इनकी अखंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय

है क्योंकि जब अन्तिम उद्रूलनाकाण्डककी अन्तिम फालिकी उद्वेलना हो जाने पर इनकी प्रथम

स्थिति एक समय अधिक जघन्य परीत्ताघंख्यात प्रमाण शेष रहती है तब इनकी असंख्यातभागद्वानि

एक समय तक देखी जाती है । इनकी उत्कृष्ट ह्मनिका उत्कृष्ट काल साधिक एक सौ बत्तीस सागर है

सो मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिके उत्कृष्ट कालका खुज्ञासा जिस प्रकार पहले किया है उसी

प्रकार यहाँ भी समर लेना चादिये। शेष कथन सुगम है । यह् मोघ प्ररूपणा मूलमें गिनाई गई

चख आदि कुछ अन्य सार्गगाओंमें मी अविकल बन जाती दै अतः उनके कथनकों ओघके समान

कहा है। किन्तु नपुंसकवेदमें सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल नरकमें ही सम्भव

है अतः यहाँ असंख्यातभागद्वानिका उत्क्रष्ट काल ओघके समान न जानकर कुछ कम तेतीस सागर

जानना चाहिये। इससे नपुंसकोंके सम्यक्व भौर सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट

काल भी कुछ कम तेतीस सागर प्राप्त दता है अतः उसका निवारण करनेके लिये इनकी असंख्यात

भागद्वानिका उत्क्रष्ट काल साधिक तेतीस सागर कहा है। नपुंसकवेदकी उद्यव्युच्छित्ति नोते गुणस्थानमें

ही हो जाती है और नोंबे गुणस्थानमें लोभ संज्वलनकी संल्यातभागदानिका उत्कृष्ट काल नहीं प्राप्त

होता वह तो दसवें गुणस्थानमें प्राप्त दोता है । इसके पहले तो अन्तिम फालिके पतनके समय

संख्यातभागद्दानिका एक ही खमय प्राप्त होता हे अतः नपुंसकोंके लोभसंज्वलनकी संख्यातभाग

हानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय ही समना चाहिये। तथा यद्यपि संख्यातगुणबृद्धिका

उत्कृष्ट काल दो समय बतलाया है सो एक समय संक्लेशक्षयत्रे प्राप्त होता है और दूसरा समय

एकेन्द्रियके द्वीन्द्रियादिकमें और द्वीन्द्रियादिकके पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर प्राप्त द्वोता है । पर

इस दूसरे समयमें जीव अनाहारक रहता है । इसलिये अःद्वारकोंके संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय सममना चादिये ।

२६० आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी

असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितका काल ओघके समान है । असंख्यातभागहानिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीख सागर है । दो बृद्धि और दो हानियों का जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी संख्यातभागद्दानि

असंख्यातगुणदानि और अवक्तव्यका काल ओघके समान है। सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वका

अंग ओघके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय

ओर उत्कृष्ट काल छुछ कम तेतीस सागर है । इसी प्रकार सब नारकियोंके जानना चाहिए । किन्तु

Page 192:

गा० २२ बद्डिपरूवणाएं कालो १७

२६१ तिरिक्खेसु छव्बीसं पयडीणं तिण्णिव्डी अवद्धिदमोघं । असंखेजमांग

हाणी जह० एगस० उक० तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि । दोहाणी० जहप्णुक०

एगस० । णवरि अणंताणु०चउक० संखेजमागहाणी० असंखेजगुणदहाणी अवच्तव्ब०

ओघं । सम्मत्तसम्मामिच्छन्ताणं सव्वपदा० ओघं । णवरि असंखेजमागहाणी जह०

एगस ० उक ० तिण्णि पलि० देखणाणि । एवं पंचिंदियतिरिक्खतियस्स वत्तव्वं । णवरि

छन्वीसं पयडीणं संखेजमागवड़ी संखेजगुणवड़ी जदण्णुक्त एगसमओ । णवरि दस्स

इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी अपनी स्थिति कनी चादिए ।

विशेषाथओघसे मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी अखंख्यातभागबद्धिका

जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कदा है । तथा अवस्थितविभक्तिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ठ काल अन्तमुंहूर्त कद्दा है । नरकमें भी यह् कान इसी प्रकार बन जाता है अतः

इनके कालको ओघके समान कदा है । उक्त प्रकृतियोकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक

समय ओपघके समान यहाँ भी घटित कर लेना चाहिये । तथा उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर

है क्योंकि जो नरकमें उत्पन्न होकर अन्तमुंहूतेमें सम्यग्दष्टि हो जाता है और नरकसे निकलनेके

अन्तमुंहूते काल पहले तक सम्यग्टष्टि बना रहता है उसके कुछ कम तेतीख सागर काल तक

असंख्यातभागद्वानि देखी जाती है। तथा उक्त श्रकृतियोंकी संख्यातभागदानि संख्यातगुणद्वानि

संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है क्योकि यहाँ

संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणब॒द्धि संक्लेशक्षयसे दी द्वोती है अत्तः इन दोनोंका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय ही प्राप्त होता है । तथा उक्त दो हानियाँ स्थितिकाण्डकक्की अन्तिम फालिके

पतनके समय ही दोती हैं इसलिये इनका भी जवन्य और उत्कृष्ट काल एक समय प्राप्त दोता है ।

किन्तु अनन्ताचुबन्धीचदुष्ककी संख्यातभागदानिके कालमें कुछ विशेषता है । बात यदै कि

नारकी जीव भी अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करते है । और विसंयोजनामें संख्यातमागदानिका

उत्कृष्ट काल दो समय कम दल्कृष्ट॒संख्यातप्रमाण प्राप्न होता है जो कि नरकमें भौ सम्भव है अतः

नरकमें अनन्तालुबन्धीकौ संख्यातमागदानिका काल ओके समान कहा है । तथा नरकमें अनन्तालु

बन्धकी असंख्यातगुणहानि अर अवक्तन्यविमक्ति भी होती हैं । फिर भी इनके कालमें ओधसे

कोई विशेषता नहीं है अतः इनके कालको भी ओघके समान कदा है । भव शेष रहीं दो प्रकृतियाँ

सो इनकी असंख्यातभागहानिके उत्कृष्ट कालको छोड़कर शेष खब कथन ओघके समान बन जाता

है। किन्तु असंख्यातभागह्ानिका उत्क्ष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर प्राप्त होता है । इसका खुलासा

पहलेके समान है। प्रथमादि नरकोंमें भी इसी प्रकार जानना चाहिये किन्तु असंख्यातभागहानिका

उत्कृष्ट काल सवेत्र कुछ कम अपनी श्रपनो उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है ।

२८१ तिमे छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन इंडियों और अवस्थितका काल ओघके समान

है। असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्क्ष्ट काल साधिक तीन पल्य है। दो

द्वानियोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय दे । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी संख्यातभागद्वानि असंख्यातशुणदानि और अवक्तव्यका काज ओघके समान है।

सम्यक्त्व और सरम्यग्मिथ्यात्वके सब पद ओघके समान हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यात

भागदानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल कुछ कम तान परस्य है । इसी प्रकार पंचेन्द्रिय

तियंचनत्रिकके कहना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके छब्बीस प्रकृतियोंकी संख्यातभाग

बृद्धि और संख्यातगुणबुद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक खम्य है। इसमें इतनी विशेषता और है

Page 193:

९७४ जयधंबला तदिद कसायपाहुडे दिदिविदत्ती

रदिअरदिसोगइरिथिपुरिसणवुंसयवेद ० संखेजगुणवड़ी ० जह० एगसमओ उक०

बे समया ।

२९२ पंचिंदियतिरिक्खमणुस्सअपजत्ताणं छव्यीसं पयडीणं पंचिदियतिरिक्खमंगो।

णवरि असंखेजमागहाणी जह० एगस० उक० अंतोघ॒हुत्त । णवरि अणंताणु०चउक०

असंखेजगुणहाणी अवतच्तव्वं च णत्थि । संखेजमागदाणी ० जशण्णुक ० एयस० । सम्मत्त

सम्भामिच्छत्ताणमसंसेज्ञमागहाणी जह ० एयसमओ इक० अतोहं । विण्णि

हाणी ओधं ।

कि दास्य रति अरति शोक खीवेद पुरुषेद और नपुंसकवेद्की संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय है ।

विशेषार्थतियेचोंमें २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल जो साधिक तीन

पल्य कह दै इसका कारण यद दै कि भोगभूमिमें यदि प्रथमोपशम सम्यक्त्वको नहीं श्राप्त करता

है तो उक्त प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदानि होती रहती है। इसलिये तीन पल्य तो ये हुए। तथा

इसमें पूर्व पर्यायका अन्तमुहूतंकाल और मिला देना चाहिये इस प्रकार तिर्यश्वगतिमें उक्त भक

तियो का असंख्यातभागद्वानिका साधिक तीन पल्य काल प्राप्त हो जाता है । तथा यहाँ सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिध्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पस्य है । कारण यह है

कि सम्यक्त्व और सम्यम्सिथ्यात्वकी दीघेकालीन अ्रसंख्यात्भागहानि सम्यग्दृष्टि के ही बन सकती

है । भिथ्यादष्टिके तो इनका अन्तमुंहू्तेके बाद स्थितिकाण्डऋूषात होने लगता है। पर वेदक

सम्यग्टष्टि जीब मर कर तिय॑बोंमें नहीं उत्पन्न होता और यहाँ ऋतकृत्यवेदककी विवज्षा नहीं है। अतः

जो जीव उत्तम भोगभूमिमें तियंच हुआ और कुछ कालके बाद वेदकसम्थक्तवको प्राप्त करके जीवन

भर उसके साथ रहा उसके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल छुछ

कम तीन पर्य पाया जाता दै । पञ्चेन्द्रिय ति्य॑द्वत्रिकके हास्य रति अरति शोक स्त्रीवेद पुरुषबेद्

ओर नपुंसकवेद् की संख्यातगुणबृद्धिका उलछृष्ट काल दो समय बतलाया है सो इसका कारण यह्

है कि जिसन भवके पहले समयमे परस्थानकी अपेक्षा संख्यातगुणबृद्धि की है और दूसरे समयमें

संक्लेशक्षयसे संख्यातगुरएवरद्धि की है बह एक आवलिके बाद कपायकी उक्त स्थितिका इन प्रकृ तियोमे

दो समय तक संक्रमण करता है अतः उक्त प्रकृतियोंमें संख्यातगुणबृद्धिका उत्क्ष्ट काल दो समय

प्राप्त होता है। ५

२६२ पंचेन्द्रिय तियंच अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्त जीवोके छब्बीस प्रकृतियोंका भंग

पंचेन्द्रिय तियंचके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू्त है । किन्तु इसमें भी इतनी विशेषता है कि इनके अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककोी असंख्यातगुणद्ञानि और भवक्तन्य नहीं हैं । संख्यातभागद्दानिका जघन्य और उत्कषठ

काल एक समय है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अखंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल अम्तमुंह॒ते है । तथा तीन हानियोंका काल ओघके समान है ।

विशेषार्थपंचेन्द्रिय ततियंच लब्ध्यपर्याप्त और मनुष्य लब्ध्यपर्याप्तका उक्कृष्ट काल अन्तमुंडूते

है इसलिये इनके सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल अन््तमुेहूते का । इन

जीबोंके अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना नहीं होती इसलिये इनके अनन्तानुचन्धी चतुष्ककी असंख्यात

गुणद्वानि और अबक्तव्य स्थितिका निषेध किया । तथा इसकी संख्यातभागद।नका जघन्य और

उष्छृष्ट काल एक समय कदा ।

Page 194:

शा० २२ चश्षिपरूषणाए काले २७२

8 २९३ मणुसतिय० पंचिदियतिरिक्सर्भगो । णवरि मिच्छत्तबारसक०अवणोक०

आर आप ओं

संखजजभागहाणी असंखेजगुणहाणी ० ओषं ।

२६४ देवाणं णेरह्यमंगो । णवरि सन्ेसिमसंखेजमागहाणी० जह ० एयध०

उक ० तेत्तीसं सागरो० संपृण्णाणि । एवं भवणादि जाव सदस्सार त्ति । णवरि सगद्टिदी ।

अप

आणदादि जाव णवगेवज्ञ त्ति मिच्छत्तवारसक०णवणोक० असंखेजञमागहाणी० जह०

अंतोषु० उक सगद्धिदी । संखेजमागहाणी जहण्णुक० एगसमओ । सम्मत्त

सम्मामि० ओघं । णवरि असंखेजभागहाणी ० जह ० एयसमओ उक्ष ० सगद्धिदी ।

अबह्िदं णत्थि । अणंताणुचउक असंखेजमागहाणी० जह० एगस० उक ०

सगट्टिदी । तिण्णिहाणी अवत्तव्वं ओघं । अणुदिसादि जाव सच्टषिद्धि त्ति मिच्छत्त०

सम्मामि ०बारसक ०णवणोक ० असंखेजमागहाणी जह ० अंतोघ॒हृत्त उक ० सगड्डिदी ।

संखेजमागहाणी ० जहण्णुक० एयस० । सम्मत्त असंखेजभागद्दाणी० जह० एस ०

५ त

उक० सगद्टिदी । संखजभागदाणी संखेजगुणहाणी० ओघं अणंताणु ०चउक०

असंखेजमोगहाणी जह० अवलिया जदृण्णपरित्तासंखेज़णूणा उक० सभद्िदी । तिण्णि

द्वाणी० ओघं।

२६३ मलुष्यत्रिकमें पंचेन्द्रियतियंचके समान भंग है। किन्तु इतनी विशेषता है कि

मिथ्यास्व बारह कषाय और नो नोकषायोंकी संख्यातभागहानि और असंख्यातगुणद्वानिका काल

आओपघके समान है ।

२६४ देवोंमें नारकियोंके समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता है कि सभी भ्रकृतियोंकी

श्रसंख्यातमागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पूरा तेतीस सागर है । इसी प्रकार

भवनवासियोंसे लेकर सद लार कल्प तक जानना चाहिए किन्तु इतनी विशेषताह कि अपनीअपनी स्थिति

कनी चाहिए । आनतसे लेकर नौ प्रैवेयक तकके देवोमे मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकप्रायोंकी

असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल अन््तमुंहू्ते ओर उत्क्रष्ट काल अपनीअपनी स्थितिप्रमाण है।

संख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । सम्यक्त्व अर सम्यग्मिथ्यात्वका काल

ओपघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागदानिका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है। यहाँ अवस्थित पद नहीं है। अनन्ताुबन्धीचतुष्ककी

असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है। तथा तीन

हानि और अ्रवक्तव्यका काल ओघके समान है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थेसिद्धि तकके देवोंमें

मिथ्यात्व सम्यग्सिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंस्यातभागदानिक्रा जघन्य काल

अन्तमुहू्त और उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है । संख्यातभागदानिका जवभ्य और उत्कृष्ट कान

एक समय है। सम्यक्त्वकी असंख्यातभागद्ानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अपनी

स्थितिप्रमाण है। संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणदानिका काल ओघके समान है। अनन््तानु

बन्धौ चतुष्ककी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल जघन्य परीतासंख्यात कम एक आवलिप्रमाण

है ओर उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है । तथा तीन द्वानियोंका काल ओघके समान है।

विशेषार्थदेवों में सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है सो

यह देबोंके उत्करष्ट कालकी अपेक्षासे जानना चादिए। आनतादिकसे लेकर मिथ्यात्व ऋ्ादि २२

प्रकृतियोंकी अल्पतरविभक्ति ही द्वोती है । किन्तु यदि यहाँ स्थितिकाण्डकघात दोता है तो अअसंख्यात

Page 195:

१७६ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहती ३

२९५ इंदियाणवादेण एटंदिषएसु मिच्छत्तसोरसक०णवणोक ०असंखेजभागवड़ी ०

जह एगसमओ उक ० वे सत्तारस समया । अवद्धिद० जह ० एयसमओ उक ०

9 9 असंखेजदिभागं

अंतोघुहु । असंसेजञमागहाणी जह ० एगस० उक पलिदो० ग ।

संखेजमागद्दाणी संखेजगुणहाणी ० जहण्णुक० एगस ० । सम्मत्त सम्मामि असंखेज

भागहाणी जह ० एगस ० उक पलिदो० असंखेजदिभागो। संखेजञमागहाणी० जह ०

। आज 9 9 प ऋ

एगस ० उक उकस्स संखज दुरूबूण संखजगुणहाणी ० असंखजगुणहाणी जहण्णु ०

एगसमओ । एवं बाद्रेहदियसुदमेईदियपढवि बादरपुटवि ०सुहुमपुढति ०आउ०

बाद्रभाउ ०सुहुमआड ०तेड ०बादरतेड ० सुहुमतेड ०बाउ ० गद्रवाड ०सुहुमबाउ ०

चणप्फदि ०बाद्रवणप्फदि सुहुमवणष्फदि ०णिगोद् बाद्रणिगोद् ०सुहुमणिगोद ०

बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरा चि ।

२९६ बादरेइंद्यपज्जत्ताणमेइंदियभंगो । णवरि अट्टावीसपयडीणमसंखेज्जभाग

९ ५

हाणी० जह ० एम्समओ उक संखेज्जाणि बाससहस्साणि । एवं बादरपुढविपञ्ज०

भागदानिका काल अन्तमुहूते प्राप्त होता है । अन्यया पूरी पर्याय भर असंख्यातभागद्वानि दती

रहती है । यदी कारण है कि आनतादिकमें उक्त बाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागहानिका जघन्य

काल अन्तसुहूत ओर उत्कृष्ट काल अपनीअपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण कदा है । किन्तु नो अनुदिश

दिते सम्यग्दृष्टि जीव दी होते हैं अतः वहाँ सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदानि और संख्यात

भागद्दानि दी सम्भव हैं जिनका काल उक्त प्रमाण प्राप्त दोता है। तथा नौ अनुदिश आदिमें अन

न्तामुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल जघन्य परीतासंख्यातसे कम एक आवलि

है क्योंकि विसंयोजनामे अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिके पतनके वाद् जव एक आवलि

स्थिति शेष रह जाती है तब जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण स्थितिके शेष रहने तक असंख्यातभाग

हानि ही दोती है ओर इसके बाद संख्यातमागदानि होने लगती है । शेष कथन सुगम है ।

२६५ इन्द्रियमागंणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोल कषाय और नौ नोक

चार्योकी असंख्यातमागव्रद्धिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट वाल मिथ्यात्वका दो समय और

शेषका सत्रह समय है। अवस्थितका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तसुंहूते है। असं

ख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल पलल््योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। खम्यक्त्व और

सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातमागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्यक्रे असंख्या

तवे भागप्रमाण है। संख्यातभागद्ानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो कम उत्कृष्ट

संख्यातप्रमाण है । संख्यातगुणद्दानि और असंख्यातगुणद्दानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय

है। इसी प्रकार बादर एकेन्द्रिय सदम एकेन्द्रिय प्रथिवीकायिक वादर प्रथिबीकायिक सूक्ष्म

एथिवीकायिक जलकायिक बादर जलकायिक सूक्ष्म जलकायिक अप्रिकायिक बादर अप्निकायिक

सूक्ष्म अभ्रिकायिक वायुकायिक्र बादर वायुकायिक सूकरम वायुकायिक वनस्पतिकायिक बादर

बनस्पतिकायिक सूक्ष्म बनस्पतिकायिक निगोद बादर निगोद सूक्ष्म निगोद और बादर वन

स्पति प्रत्येकशरीर जीबोंके जानना चाहिये।

२६६ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्रकोंके एकेन्द्रियोंके समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता है

कि अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागदानिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात

Page 196:

ग्रा० २२ चड्डिपरूवणाए कालो ९५७

बादरआउपज्ज बादरतेऽषन्ज ०बादरवाउ ०पञ्ज ०बादरवणप्फदिपज्ज ०बादरवणप्फदि

कक ईटि ५ इंदिः जत्तमंगो

पत्तेय ०पज्जत्त ति । बादरेइंदियअपज्जताणं बादरेइंदियपज । णवरि अदड्डाबीस

पयडीणमसंखेज्जभागदहाणी ० जह० एगस० उक अंतोमुहु० । एवं सुहुमेइंदियपज्ज ०

सुहमेइंदियअपज्ज ० वाद्रपुढविअपञज ०सुहुमपुटविपज्ज ०सुहुमपुटविअपज्ज ०बाद्रआउ

अपज्ज ०सुहुम आउपज्ज ० सुहुमआउअपज्ज ०बादरतेउ अपज्ज ०सु हुमतेउपज्ज ० सुहमतेउ

अपन्ज० बाद्रवाड अपज्ज ० सुहुमवाउपज्ज ० सुहमवाउअपन्ज ०बादरवणप्फ्दिअपज्ज ०

सुष्ुमचणप्फदिषञ्ज०सुहुमवणप्कदिअपज्ज ०बादरणिगोदपज्जत्तअपज्जतसुहुमणिमोद

पज्जत्तसुहम णिगोद्अपज्जत्तबादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्त त्ति।

२६७ बेइंदियबेइंद्यपज्ज ०तेइंद्यतेइंद्यिपज्ज०चउरिंद्यचउरिंद्यिपज्ज ०

मिच्छत्० असंखेज्जमागवड़ी जह० एगसमओ उक० वे समया संखेज्जभागवड्डी ०

जहण्णुकु एगस०। असंखेज्जमागहाणी० जह० एगसमओ उक्क० अंतोषुहु ।

भ प ५

संखेज्जाणि वाससहस्साणि किण्ण रब्भंति ण सण्णिट्टिदिसंतकम्मियवियलिंदियस्स

वि संखेज्जमागद्दणिकंडए पादिदे पुणो अंतोप्र॒हुत्तण णियमेण संखेज्जमागदाणि

कंडयस्स पदणुवएसादो ।

हजार वर्ष है। इसी प्रकार बादर प्रथिवीकायिक पर्या बादर जलकायिकरपर्याप्त बादर अभिकायिक

पर्याप्त बादर वायुकायिकपर्याप्त बादर बनस्पतिकायिकपर्याप्न चौर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक

शरीर पर्याप्त जीवोंके जानना चाहिए । वाद्र एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके वाद्र एक्रेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान

अङ्ग है। किन्तु इतनी विशेषता है कि अद्ठाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागद्वानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूते है । इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त

बादर प्रथिबीकायिक अपर्याप्त सूम प्रथिवीकायिक पर्याप्त सूक्ष्म प्रथिवीकायिक अपयरप्त बादर

जलकायिक अपर्याप्त सदम जलकायिक पर्याप्त सदम जलकायिक्र अपर्याप्र बादर अभ्निकायिक

अपर्याप्त सूच्म अभिकायिक पर्याप्त सूच्म अभिकायिक अपर्याप्त बादर बायुकायिक अपर्याप्त सदम

बायुकायिक पर्याप्त सूदम बायुकायिक पर्याप बादर बनस्पतिकायिक अपर्याप्त सुम वनस्पति

कायिक पर्याप्त सूददम बनस्पतिकायिक अपर्याप्त बादर निगोद पर्याप्त वाद्र निगोद अपर्याप्त सूक्ष्म

निगोद पर्याप्त सूक्ष निगोद अपर्याप्त और बादर बनस्पतिकायिक अश्रत्येकशरीरश्रपर्याप्त जीबोंके

जानना चाहिए।

२९७ द्वन्दरिय द्वीन्द्रिय पर्याप्त त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पर्याप्त चतुरिन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय

पर्याप्त जीवोंके मिथ्यात्वकी असंख्यातभागबृद्धिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय

है । संख्यात्तमागवृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय दै । असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूते है।

शंकाअसंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वषे क्यों नहीं पराप्त दोता है ९

समाधाननहीं क्योकि संज्ञीकी स्थितिसत्कर्मवाले विकलेन्द्रियके भी संख्यातभाग

द्वानिकाण्डकका पतन दने पर पुनः अन्तमुंहूततकालके द्वारा नियमवे संख्यातभागदानिकाण्डकके

पतनका उपदेश पाया जाता है।

ता० आ प्रत्योः असंखेज्जभागदाणिकंडएु इति पाठः ।

२३

Page 197:

श्ड्प जयघवलासहिदे कसायपाहुडे छिद्िविद्दत्ती हे

२९८ संखेज्जमागद्दाणी० संखेज्जगुणहाणी० जदण्णुक एगस० । अवद्ध

ओघं। सोलसक०णवणोक० असंखेज्जभागवड्डढी जद एगस० उक० सत्तारस समया

9 ५ ५

संखेज्जभागवड्डी ० जदण्णुक एयस० । अवद्ध ओघं । असंखेज्जभागद्वाणिसंखेज्ज

भागदाणिसंखेज्जगुणदाणीणं मिच्छत्तमंगो । सम्मत्तसम्मामि० असंखेज्जञभागहाणी०

जह० एयस० उक ० संखेज्जाणि वाससहस्साणि संखेज्जमामहाणी जह ० एयस ०

उक० उक्षस्ससंखेज्जं दुरुतूणं । संखेज्जगुणहाणिअसंखेउनगुणदाणी ० जहण्णुक ० एयस०।

एवं बेइंदियअपज्ज ०तेइंद्यअपज्ज ० चउरिंदियअपज्जत्ताणं । णवरि सम्मचसम्मामिच्छ

चाणमसंखेज्जमागहाणी ० जह० एयस० उक्क० अंतोम्ु० ।

२६८ संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणदानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ॥

अवस्थितका काल ओघके समान है । सोद कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातमागवृद्धिका

जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल सतन्नह्द समय है । संख्यातभागवृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल

एक समय है । अवस्थितका काल ओघके समान है। असंख्यातभागदानि संख्यातभागद्ानि और

संख्यातगुणद्वानिका भंग मिथ्यात्वके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभाग

इानिका जघन्य काल एक समय दे और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है। संख्यागभागहानिका

जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट कात् दो कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण है । तथा संख्यातगुणहानि और

अखंख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्छृ्ट काल एक समय है। इसी प्रकार दद्धि अपर्याप्त

त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्रकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

अन्तमुंहूर्त है ।

विशेषाथदीन्द्रियादिक उपयुक्त मार्गगाओंका उत्कृष्ट काल संख्यात इजार वे है इसलिये

इनमें मिथ्यात्व आदि २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काज संख्यात हजार वर्ष प्राप्त

होना चाहिये था। पर यहाँ यह काल अन्तमुंहू्ते बतलाया है। बीरपेन स्वामीने इसका एक समाधान

किया है। वे लिखते हैं कि जिन विकलेन्द्रियोंके संज्ञीके योग्य स्थिति सत्कर्म दै उनके संख्यात

मागहानिप्रमाण काण्डकके पतनके बाद अन््तमुहूर्तके भीतर नियमवे संख्यातमागदानित्रमाण

काण्डकके पतनका उपदेश आगममें पाया जाता है । इससे माल्म होता है कि असंख्यातभागद्वानिका

उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू्ते है। पर इस खमाधानकरे बाद भी एक प्रश्न खड़ा ही रहता है। कि जिन

बिकलेन्द्रियोंके संज्ञीके योग्य स्थितिसत्कमे नहीं है उनके असंख्य।तभागहानिका उत्कृष्ट काल संख्यात

हजार वपै क्यों नहीं कहा । यद्यपि इसका सन्तोषकारक समाधान करना तो कठिन है फिर भी चूँकि

यहाँ असंख्यातभागदह्वानिका उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त बतलाया है और विकलेन्द्रिय जीव संख्यात

भागद्वानिका प्रारम्भ कर सकते हैं ऐसा नियम है । इससे सात्यम होता हे कि जिन बिकलेन्द्रियोंके

संज्ञीके योग्य स्थितिसत्कमे न भी दो वे भी अन्तमुंहूतमें संख्यातभागद्वानि करते हैं अतः असंख्यात

भागद्वानिका उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूते प्राप्त होता है । किन्तु इन मार्गणाओं में सम्यकत्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका डल्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष दी है । तथा इन दीन्द्रियादिक

अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट काल श्रन्तमुंहूत है अतः इनमें असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल अन्तश

कदा । शेष कथन सुगम है ।

Page 198:

गा० २२ बड्डिपरूतण।ए कालो १७६

२६९ पंचिदियपंचिदियपज्जत्ताणमोषं । णवरि संखेज्जमागगुणवड़ीए जहण्णु०

एगसमओ। वे समया णत्थि किंतु हस्सरदिअरदिसो गिस्थिपुरिसणवुंसयवेदाणं संखेज्ज

गुणबड्डीए उक्त वे समया । पंचिदियअपञ्ज ०तसअपज्ज० पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्त

भगो । णवरि तसअपज्ज ० मिच्छत्तसोलसक०मयदुगुं दोडी ओघं ।

३०० जोगाणुबादेण पंचमण पंचबचिजोगीसु मिच्छत्तसोरघक०णवणोक०

असंखेज्जमागवड्डि ०अवद्धि० ओधं । संखेज्जमागवड्डिसंखेज्जगुणबद्धि ० जहण्णुक ०

एगस० । असंखेज्नजागहाणी जदह ० एगस ० उक्क० अतोहं । संखेज्जमागहाणि

संखेञ्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणहाणीणमोषं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमोधं । णवरि

असंखेज्जभागहाणी जह एयस० उक्क० अंतोज्ठ० ।

३०१ कायजोगिओरालियकायजोगीसु मिच्छचसोलूसक ०णवणोक ०

असंखेजभागवड्डिसंखेजभागबड्डिसंखेजगुणवड्डिअबद्धि० ओघं । णवरि ओरालियकाय

जोगीसु संखेज्ञमागवड्धसंखेजगुणवङ्ीणं वे समया णत्थि एगसमओ चेव । अंखेज

भगहाणी जह० एयस ० उक्ष पलिदो असंखेजदिभागो । णवरि ओराङियकाय

जोगीखु वाबीसवाससदस्साणि देषणाणि । संखेजमागदहाणिसंखेजगुणदाणिअसंखेज

युणदहाणीणमणताु चउकष अवत्तव्वस्स च ओघं । सम्मत्त ०सम्भामि० सव्वपदाण

२६९ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीबोके ओघके समान जानना चाहिए । किन्तु इतनी

बिशेषता है कि संख्यातभागवृद्धि ओर संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय दे । दो

समय नहीं है । किन्तु हास्य रति चरति शोक खेद पुरुषवेद ओर नपुंसकवेदकी संख्यातगुणबृद्धिका

उत्कृष्ट काल दो समय है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और चस अपर्याप्त जीबोंके पंचेन्द्रिय तियच अपयप्तकोंके

समान भंग है । किन्तु इतनी विशेषता दै कि तरल अपर्याप्तकोंके सिथ्यात्व सोलद कषाय भय और

जुगुप्साकी दो वृद्धियोंका काल ओघके समान दे ।

३०० योगमार्गणाके अजुबादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों बचनयोगियोंमें मिथ्यात्व

सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितका काल अचरे समान

है । संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणबद्धिका जघन्य और उल्छष्ट काल एक समय हैं। असंख्यात

भागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन््तमुहूत है। संख्यातमागहानि संख्यात

गुणानि ओर भसंख्यातगुणदानिका काल ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका

कथन ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागदानिका जघन्य काल एक समय

और उष्छृष्ट काल अन्तमुंहूत हे ।

३०१ काययोगी और भरीदारिककाययोगी जीवो मे मिथ्यात्व सोल कषाय और नौ नोकषा

योंकी असंख्यातभागवृद्धि संस्यातभागबृद्धि संख्यातगुणबुद्धि और अवस्थितका काल ओऔघके समान

है । किन्तु इतनी विशेषता है कि औदारिकक्राययोगियोंमें संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिका

काल दो समय नहीं है किन्तु एक समय ही है । असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक खसय ओर

उत्कृष्ट काल प्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। किन्तु इतनी विशेषता है कि ओऔदारिककाययोंगियोंमें

कुछ कम बाईस हजार वषे है । संख्यातभागहानि संख्यातगुणद्वानि और असंख्यातगुणद्ानिका चथा

अनन्ताजुबन्धौचलु्कके अवक्तव्यका काल ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदों का

Page 199:

१८० जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विद्विहत्ती ६

मोषं । णवरि असंखेजभागहाणी० जह० एगस० उंक० पलिदो० असंखेजदिमामो ।

ओरालिय०जोगीसु बाबीसवाससहस्साणि देखणाणि । ओरालियमिस्स० छव्बीसं पयडीणं

तिण्णिव डितिण्णिहाणिअबड्डाणाणं पंचिंदियतिरिक्खअपजत्तमंगो । णत्ररि इत्थिपुरिस

वेदवजाणं सव्वकम्भ णं संखेजमागवड्डीए जह० एगस० उक्क० वे समया । सम्मत्त

सम्मामि० चदुण्दं हाणीणं पंचिदियतिरिक्खअपञत्तभंगो ।

३०२ वेडव्वियकाय० छन्वीषं पयडीणं तिण्णिबड्डितिण्णिहाणिअबड्ठाणा्

विदियपुढबिभंगो । णवरि असंखेज्जमागहाणी० जह० एगस० उक्क० अंतोघुहु० ।

अणं॑ताणु०चउक ० असंखेज्जगुणहाणी अवक्तव्ब॑ ओधं । सम्मत्तसम्भामि० सब्वपदाण

मोषं । णवरि असंखेज्जमागहाणी० जह० एगस० उक० अंतोप्न॒हु० । वेडव्वियमिस्स०

ओरालियमिस्स०भंगो । णवरि छव्बीस पयडीणं संखेज्जभागबड़ीए सत्तणोकसायार्ण

संखज्जयुणबड्डीए च वे समया णत्थि । सम्मत्त ०सम्मामि० चहुण्ह॑ हाणीणमोरालिय

मिस्स ०भंगो ।

३०३ कम्मश्य० छव्बीसं पथडीणमसंखेज्जमागबड्डिअवद्डाणाणं जह० एगस०

उक० वेसमया । वेबड्डिदोहाणीणं ज० उक० एगस० । असंखेज्जभागहाणी० ज०

एगंसमओ उक्क० वे समया । सम्मत्त ०सम्मोमि० चदुण्णं दणीणप्रोधं । णवरि असं

कथन ओघके समान हं । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागदानिका जघन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल पल्यकरे असंख्यातबें भागप्रमाण है। औदारिककाययोगियोंमें कुछ कम

बाईस हजार वर्ष है। ओऔदारिकमिश्रकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंक्री तीन वृद्धि तीन द्वानि और

अवस्थानका भंग पंचेन्द्रिय तियेंच अपर्याप्तकोंके समान है। शन्तु इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद

और पुरुषबेदसे रदित शेष सब कर्मोदी संख्यातवृद्धिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

दो सन है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी चार द्वानियोंका भंग पंचेन्द्रिय तियेच अपर्याप्तरोंके

समान है ।

३०२ वैक्रियिककाययोगिर्यो र छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन वद्धि तीन द्वानि और अब

स्थानका भंग दूसरी प्रथिवीके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागद्वानिका

जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल अन्तञ्हूते दै । चअनन्तानुदन्धी चतुष्ककी असंख्यात

शुणदानि और अवक्तव्यकरा काल ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सव पदोका

कथन ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक

समय ओर उत्कृष्ट काल अन्तञुहूतं है । वेक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका भंग ओऔदारिकमिश्रकाय

योगियोंके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि छब्बीस प्रकृतियोंकी संख्यातभागवृद्धिका और

सात नोकषायोंकी संख्यातगुणब्ृद्धिका काल दो समय नहीं है। सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

चार हानियोका भंग ओऔदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान है ।

३०३ कार्मेणकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकतियोंकी असंख्यातभागबवृद्धि और अवस्थानका

जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल दो समय है । दो वृद्धि और दो द्वानियोंका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय है। अखंरूयातभागद्ानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो

समय दै। सम्यक्त्व और सम्यम्मिध्यात्वकी चार दानियोंका काल ओघके समान है । किन्तु इतनी

Page 200:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए कालो १८९

खेऽजमागहाणिसंखेन्जमागदहाणीणं जह० एणसमओ उक ० वे समया । एवमणा

इारीणं । आहार ० अट्डात्रीसपयडीणमसंखेज्जमागद्ाणी० ज० एगस० उक ० अतो ।

आहारमिस्स असंवेज्जमागहाणी जहण्णुक० अंतोघ्ु० ।

३०४ वेदाणुवादेण इत्थि मिच्छत्तसोलसक ० णवणोक ० असंखेज्जभागबड़ि

अवद्ध ओषं । संखेज्जमागवड्डिसंखेज्जगुणवड्डीणं पढमपुढविभंगो णवरि हस्सरदि

अरदि सोगइत्थिपुरिसणबुंसयवेदाणं संखेज्जगुणवड्डीए उक वे समया । असंखेज्जमाग

हाणीए ज० एगसमओ उक ० पणवण्णपलिदो देखणाणि संखेज्जमागहंणिसंखे

ज्जगुणहाणिअसंदेज्जगुणहाणीणमोधं । णवरि लोमसंज० संखेञ्जमागहाणीए जदृण्णुक०

विशेषता है कि असंख्यातभागद्वानि और संख्यातभागहानिका जवन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट

काल दो समय है। इसी प्रकार अनादारकोंके जानना चाहिए । आद्वारककाययोगियोंमें अ्रद्टाईस

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूते दै ।

आदारकमिश्रकाययोगियों में असंख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तमुहूत है ।

बविशेषार्थपाँचों मनोयोग और पाँचों वचनयोगोका उत्कृष्ट काल अन्तमुहू्त हे अतः

इनमें सब प्रकृतिर्योकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू्त कहा । औदारिककांययो गियों में

संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिके उत्कृष्ठ काल जो दो समयोंका निषेध किया सो इसका

कारण यह है कि यह् उत्कृष्ट काल अपर्याप्त अवस्थामें प्राप्त होता है पर ओऔदारिककाययोग पर्याप्त

अवस्थामें होता है। एकेन्द्रियोंके एक काययोग ही होता है और उनके असंख्यातभागहानिका

उत्कृष्ट काल पल्यक्रे असंख्यातर्वें भागप्रमाण बतला आये हैं अतः काययोगमें भी असंख्यातभाग

हानका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है । किन्तु औदारिककाययोगका उत्कृष्ट काल कुछ कम बाईस

हजार वपे हे अतः इसमें सब भ्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है ।

ओदारिकमिश्रकाययोगमें जो स्रंवेद और पुरुषवेदकी संख्यातभागश्ृृद्धिके उत्कृष्ट काल दो समयका

निषेध किया सो इसका कारण ओघके समान यहाँ भी सममना चाहिये। अर्थात् संख्यातभागवृद्धिका

दो समय काल जो दोइन्द्रिय तेइन्द्रियोंमें और तेइन्द्रिय चौइन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हँ उनके प्राप्त होता

है पर वहाँ भवके अन्तम ्लीवेद् जीर पुरुषवेदका बन्ध सम्भव नहीं अतः बहाँ ख्ीवेद् ओर पुरुष

वेदकी संख्यातभागबृद्धिका उत्कृष्ट काल दो समय सम्भव नदीं है । वैक्रियिककाययोगक। उत्कृष्ट काल

अन्तमुहू्ते है अतः इसमें सब अ्रक्ृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्ते कद्दा है ।

छब्त्रीस भ्रकृतियों की संख्यातभागवृद्धिका और सात नोकषायोंकी संख्यातगुणबृद्धिका उत्कृष्ट काल दो

समय ओदारिकमिश्रकाययोगमें ही बनता है अतः इसका वैक्रियिकमिश्रकाययोगमें निषेध किया है

३०४ वेदमार्गणाके अनुवादसे स््रीवेदियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी

असंख्यातभागवृद्धि ओर अबस्थितका काल ओघके समान है। संख्यातभागवृद्धि और संख्यात

गुणबृद्धिका काल पहली प्रथिवीके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि हास्य रति अरत्ति

शोक स्त्रीवेद पुरुषबेद ओर नपुंसकवेदकी संख्यातगुखबृद्धिका उत्क्रष्ट काल दो समय है । असंख्यात

भागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उक्छृढ काल कुछ कम पचवन प्य है। संख्यातभागदानि

संख्यातगुणदानि और असंख्यातगुणद्वानिका काल ओघके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि

लोभ संबलनकी संख्यातभागद्दानिका जघन्य और उत्कृष्ट कोल एक समय है । अनन्तानुबन्धी

Page 201:

१८२ जयधर्वलाखदिदे कसायंपाहुडे द्िदिविदत्ती है

एगसमओ । अणंताणु अवत्तव्ब० शधं । सम्मत्तसम्मामि ० चत्तोरिवड्ितिण्णिदाणि

अबड्टाणअवत्तव्वाणमोघं । असंसेज्जभागहाणी० ज० एगप्रमओ उक्र पणवण्ण

पलिदोवमाणि पलिदो० असंखेञ्जदिमागेण सादिरियाणि । पुरिसवेद० अद्भावीसं पयडीणं

सव्वपदाणमोधं । णवरि छव्बीसं पयडीणं संखेज्जभागवड़ी० मिच्छन्तसोलसक०मय

दुमुछाणं संखेजजगुणवड्ीए च जदण्णुक० एगस । लोभसंजल० संखेज्जगुणदाणीए

इत्थिभंमो । अवगद ० मिच्छत्त ० पम्मत्तसम्मामि असंखेज्जमागदाणीए जह ० एगस ०

उक० अंतोघु० । संखेज्जमागहाणी जहण्णुक० एगस० । एषमडूकसायाणं । सत्तणो

कसायाणमसंखेज्जभागदाणी ० ज० एगस० उक० अंतोघ्ठ० । संखेज्जमागहाणि

संखेऽजगुणदहाणी जहण्णुक एगस० । एवं चदुण्हं संजलणाणं । णवरि छोभसंज०

क 4 ५ गि

संखेज्जभागद्दाणी ० ओघं । इत्यिणबुंसयवेदाणमइकसायभंगो ।

चतुष्कक अवक्तव्यका काल ओघके समान दै । सम्यक्त्थ और सम्यग्मिथ्यात्वक्री चार वृद्धि तीन

हानि अवस्थान च्यौर अवक्तव्यका काल ओघके समान है। असंख्याततमागदानिका जघन्य काल

एक समय ओर उत्कृष्ट काल पलल््योपसमका असंख्याववाँ भाग अधिक पचत्रन पल्य है। पुरुषवेदियोंमें

अद्वाईस प्रकृत्तियोंके सब पदोंका काल ओबके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि छब्बीस

प्रकृतियोंकी संख्यातभागबृद्धिका और मिथ्यात्व सोलह कषाय भय ओर जुग॒ुप्खाकी संख्यात

गुणवृद्धिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। लोभसंज्वलनकी संख्यातगुणहानिका भंग

स्ल्ीवेदियोंके समान है । अपगतवेदियोंमें मिथ्यात्व सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उस्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त है। संख्थातभागहानिका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय है । इसी प्रकार आठ कषायोंका जानना चाहिए। सात नोकषायोंकी असंख्यात

भागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ठ काल अन्तसुंहूते है। संख्यातभागद्दानि और

संख्यातगुणद्वानिका जधघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । इसी प्रकार चारों संज्वलनोंका जानना

चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि लोभ संज्वलनकी संख्यातभागद्दानिका काल ओघके समान है ।

खीवेद चौर नपुंसकवेदका मंग आठ कषायोंके समान है।

विशेषार्थदस्यादि सात प्रकृतियोंकी संख्यातगुणबृद्धिके उत्कृष्ट काल दो समयका कारण

पहले बतला माये हैं उसी प्रकार खीवेदियोके मी समझना चाहिये। यद्यपि खीवेदीका उत्कृष्ट काल

सौ पल्य प्रथक्त्व है तथापि इनके २६ प्रकृतियोंक्री निरन्तर असंख्यातभागहानि सम्यक्स दशामें दी

सम्भव है ओर स्त्रीवेदमें सम्यक्त्वका उत्कृष्ट काल कुछ कम पचवन पल्य है अतः यहाँ २६ प्रकृतियों

की असंख्यातभागद्दानिका उत्क्रष्ट काल उक्त प्रमाण कद्दा है । लोभ संज्वलनकी संख्यातभागदानिका

उत्कृष्ट काल दसवें गुणस्थानमें प्राप्त होता है । अन्यत्र तो एक समय ही बनता है । पर दसवेंमें

स्वेद नदीं होता अतः स्वीवेदममें लोभसंज्वलनकी संख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल

एक समय कहा है । जो स्त्रीवेदी पल्य असंख्यातवें भाग कालसे सम्यक्त्व और सम्यम्मिध्यात्वकी

असंख्यातभागहानि कर रहा है वह यदि इस कालके भीतर पचवन पल्यशी आयुवाली देवियोंमें

डत्यज्न हो जाय और वौ वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त करके जीवन भर उसके साथ रहे तो उसके भी

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानि सम्भव है अतः इनकी असंख्यातभागहानिका

उत्कृष्ट काल पल््यका असंख्यातवाँ भाग अधिक पचवन पस्य कहा है । छब्बीस प्रकृतियों की संख्यात

भागवृद्धिका उच्छृ काल दो समय तथा मिथ्यात्व खोलद कषाय भय और जुग॒ुप्साकी घंख्यात

Page 202:

गा० २२ बड्डिपरूवणाए कालो शत

8 ३०४ कसायाणुवादेण चदुण्णं कसायाणमोधं । णवरि अड्डाबीसं पयडीणमसंखे०

भागहाणीए जह० एगस० उक० अंतोष्ठ० कोधमाणमायकर्सासु लोभसंजलणस्स

संखे०मागहाणीएं जदण्णुक एगस०। अकसा चडवीसपयडीणमसंखेज्जमागद्दाणीए

जह० एगस० उक अंतोग्म० । एवं जहाकखाद० ।

३०६ णाणाणुवादेण मदिसुदअण्णाणीसु छच्चीसं पयडीणं तिण्णिवड्डिअवड्ठा

णाणमोषं । असंखेज्जमागदहाणीए जह ० एगसमओ उक एकत्तीसं सागरो सादिरे

याणि । संखेज्जमागद्दाणिसंखेज्जगुणहाणीणं जदण्णुक० एग । सम्मत्तसम्मामि

असंखेज्जमागहणीए जह ० एगस० उक ० ० पलिदो० असंखेज्जदिभागो । तिण्हं हाणीण

गुणबृद्धिका उत्कृष्ट काल दो समय नपुंसकवेदमें ही बनता है अतः पुरुषवेदमे इनका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय कहा है । अपगतत्रेदका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल अन्तमुहूते

है अतः इसमें दशनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंकी असंख्यातमागद्वानिका जधन्य काल एक समय

ओर उत्कृष्ठ काल अन्तमुंहूर्त कद्दा है। अपगतबेदमें दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंकी संख्यात

भागहानि स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय होती है अतः इसका जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय कहा है । अपगतबेदमें आठ कषायोंकी असंख्यातभागहानि और संख्यात

भागहानि होती हैं सो इनका काल पूर्वोक्त प्रमाण है । इसी प्रकार स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके सम्बन्ध

में समझना चादिये। अब रहीं सात नोकषाय और चार संज्वलन सो इनकी तीन हानियाँ दोती

हैं । सो इनके जघन्य और उषध्कृट्ट कालका खुलासा सुगम है

३०४ कषायमार्गणाके अनुबादसे चारों कषायवालोंका काल ओघके समान है। किन्तु

इतनी विशेषता है कि अद्ाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्ानिका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त है। क्रोध मान और मायाकषायवाले जीबोंमें लोभसंज्वलनक्ी संख्यात

भागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। कषायरद्वित जीवोंमें चौबीस प्रकृतियोंकी

असंख्यातभागद्वानिका जधन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त है। इसी प्रकार यथा

ख्यातसंयत जीवोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थचारों ऋषायोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त है इसलिये

इनमें सब प्रकृतियों की असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुहूते

कदा है। स्वयं असंख्यातभागद्वानिक्ना भी जघन्य काल एक समय है इसलिये भी यहाँ असंख्यात

भागद्वानिका एक समय काल बन जाता है। लोभकी संख्यातभागद्दानिका उत्कृष्ट काल दसवेमे होता

दै अन्यत्र तो एक ही समय प्राप्त दोता है और दसवत क्रोध मान अर सायाका उद्य नहीं है

अतः इन तीनों कषायोंमें लोभसंज्वलनकी संख्याततभागहानिक्ा जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय

कहा है । अकषायी और यथाख्यातसंयतोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुहू्त है

अतः इनमें २४ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

अन्तमुहूत कदादै

३०६ ज्ञानमार्गेणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी

तीन बृद्धि और अवस्थानका काल ओघके समान है। असंख्यातभागहानिका जवन्य काल एक

समय और उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागर है। संख्यातभागद्दानि ओर संख्यातगुणद्दानिका

जघन्य और उत्क्रष्ट काल एक समय है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका

जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल पलल््योपमके भसंख्यातवं भागप्रमाण है। तीन ह्मनियोंका

Page 203:

१८४ अयधवबलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहक्ती ३

मों । एषं विहंगणाणो० णवरि छव्बीसं पयडीणमसंखेज्जमागहाणी ० जद ० एगसमओ

उक० एकत्तीस सागरो० देखणाणि। संखेज्जभागवह्डिसंखेज्जगुणवड्डीण् जहण्णुक

एयस० ।

३०७ आभिणि०सुद छव्वीसं पयडीणमसंखेज्जभागहाणी जह० अंतोमु०

जक्क ० छावट्टिसागरो० सादिरेयाणि अंतोम्न॒हुत्तण । णवरि मिच्छत्त ०अणंताणु ०चउकक ०

अहक जह० आवलिया जदण्णपरित्तासंखेज्जेणूणा एदपत्थपदयुवरि वि जद्दासंभर्द

जोजेयव्बं । अथवा एदं पि अंतोघ्नदृत्तमेवे ति सव्वत्थ णेदव्वं । संखेज्जमागहाणिसंखेज्ज

मुणदाणिअसंखेज्जगुणदाणीणमोघ॑ । सम्भत्तसम्मामि० तिण्हं दणीणमो्घ । सम्मत्त

असंखेज्जभागहाणीए जह० अंतोघु० सम्भामि० आवलिया परितासंखेज्जेणूणा उक०

दोण्ह पि छावट्टिसागरो० सादिरेयाणि । एवमोद्िणाण० सणपज्जव० अड्डाबीसपय

डीणमसंखेज्जभागद्ाणी जद० अंतोघु० । अथवा छब्बीसपयडीणमेयसमओ ।

उक० पुव्वकोडी देखणा । संखेज्जमागद्दाणिसंखेज्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणदाणीणं

काल ओघके समान है । इसी प्रकार विभंगज्ञानियोंके जानना चादिएट। किन्तु इतनी विशेषता है कि

छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्ानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम

इकतीस सागर है। संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य और उत्क्ष्ट काल

एक समय है।

विशेषार्थनौवे प्रैवेयकका उत्कृष्ट काल ३१ सागर है और वहाँ मिथ्यादृष्टि जीव भी दते हैं

अत कुमतिज्ञान और कुश्रुतज्ञानमें असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागर कदा ।

यहाँ साधिकसे पिछले भवका कुछ काल लिया है। किन्तु विभन्ञज्ञान अपर्याप्त अबस्थामें नहीं होता

अतः इसमें असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल कुछ कम इकतीस सागर कहा । तथा तीनों अज्ञानों में

सम्यक्ल और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काल पल्य असंख्यातवें भाग

प्रमाण है चद स्पष्ट दी है क्योंकि मिथ्यादृ्िके इससे अधिक काल तक इनकी खत्ता नहीं रहती ।

३०७ आभिनिवोधिकल्ञानी और श्रतज्ञानी जीवों छब्बीस प्रकृतियोकी श्रसंख्यातमाग

हानिका जघन्य काल अन्तमं और उत्कट काल अन्तमुहूत अधिक छथासठ सागर है। किन्तु

इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी चतुष्क चौर आठ कषायोंकी असंख्यातभागद्वानिका

जघन्य काल जघन्य परीतासंख्यात कम एक आवलिप्रमाण है। यह अथैपद् यथासम्भव आगे भी

लगा लेना चादिये। अथवा यदह भी अन्तसुहूर्त दी है इस प्रकार सवेत्र कथन करना चादियें।

संख्यातभागद्वानि संख्यातगुणदानि और असंख्यातगुणद्ानिका काल श्रोघके समान है

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन दहानियोंका काल ओघके समान है । सम्यक्त्वकी असंख्यात

भागद्वानिका जघन्य काल अन््तमुंहूते है। सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल

परीतासंख्यात कम एक आवलिप्रमाण है। दोनोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल साधिकर छयासठ सागर है।

इसी प्रकार अवधिज्ञानियोंके जानना चादिए । मनःपर्येयज्ञानियोंमें अद्ठाइंस प्रकृतियोंकी असंख्यात

भागहानिका जघन्य काल अन्तं है । अथवा छव्वीख प्रकृतियोंका जघन्य काल एक समय दे

ओर उत्कृष्ट काल कुड कम एक पूर्वकोटि है । संख्यातभागद्दानि संख्यातगुणदहानि और असंख्यातगुण

ता प्रतौ चउचीक्ष इति पाठः ।

Page 204:

ग।० २२ बद्टिपरुवणाए कालो १८४

जहण्णुक ० एगसमओ । एवं संजदाणं णवरि मणपञ्जवणाणी संजदेखु च णवणोक०

तिसंजलणदिरित्तपयडीणं संखेज्जमागहाणीए ओषं । सामाइयछेदो० एवं चेव । णवरि

लोभसंजल ० खेज्जभागहाणी जदण्णुक० एगसमओ ।

२०८ परिहार ० अ्रहावीसपयडीणमसं वेञजमागदाणी जह० अंतोम्मु० उक्क०

पुव्वकोडी देखणा। मिच्छन्तम्मत्तसम्मामि ०अणंताणुचउक ० तिण्हं हाणीणमोषं ।

हानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय दै । इसी प्रकार संयतोके जानना । किन्तु इतनी विशे

षता है कि मनःपर्ययज्ञान और संयतोंमें नौ नोकषाय और तीन संज्बलनोंसे रित शेष प्रकृतियों की

संख्यातभागहानिका काल ओघके समान है । सामायिकसंयत और छेदोपस्थापनासंयत जीचोंके

इसी प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि लोभसंज्वलनकी संख्यातभागहानिका जघन्य

। और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

विशेषाथेअभिनित्रोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानका जघन्य काल अन्छुहते और उत्कृष्ट काल

साधिक छथासठ सागर है इसलिये इनमें २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल अन्तमुहूर्त

और उत्कृष्ट काल साधिक छथासठ सागर कदा है । किन्तु मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी चार और आठ

कषाय इनके अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिके पतन होने पर जव एक आ लप्रमाण स्थिति शेष

रह जाती है तब जघन्य परीतासंख्यात कम एक आब ल काल तक इनकी असंख्यातमागद्ानि ही

होती है अतः इनकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल अन्तयुंहूते न कहकर उक्त प्रमाण कहना

चाहिये। अन्यत्र जिन जिन मार्गणाओंमें यह काल सम्भव हो वहाँ मी इसी प्रकार कथन करना

चाहिये। वैसे सामान्यरूपसे देखा जाय तो यह काल भी अन्न्तमुंहूतमें गर्भित है इसलिये

इसे अन्तमुहूर्त कहनेमें भी कोई आपत्ति नहीं है । यहाँ इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभाग

द्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल तथा सम्यक्त्वकी असंख्यातभागहानिका केवज्ञ उत्कृष्ट काल

घटित कर लेना चाहिये। किन्तु सम्यक्त्वकी असंख्यातभागदानिके जघन्य कालमें कुछ

विशेषता है । बात यह है कि क्तकृत्यवेदकसम्यक्त्वके बाद जीवके अन्तमुंहूर्त काल तक सखम्यक्त्वकी

असंख्यातभागद्दानि दी होती है इसलिये इसका जघन्य काल अन्तमुंहूर्त कदा है। इसी प्रकार

अवधिज्ञानमें जानना चाहिये । मनःपर्येयज्ञानका जघन्य काल अन्तमुंहूत और उत्कृष्ट काल कुछ कम

पुवेकोटिवरषेप्रमाण है अतः इसमें सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल

उक्त प्रमाण कडा है । यहाँ पर प्रकारान्तरसे मनःपर्ययज्ञानमें २४ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्दानिका

जघन्य काल एक समय भी बतलाया है सो यह जिस जीवके अन्य हानिके वाद् एक समय तक

असख्यातभागहानि हुईं और दूसरे समयमे मर गया उसकी अपेक्षासे जानना चाहिये। इसी

प्रकार संयतोंके जानना चाहिये। यहाँ पर मनः्पर्येयज्ञान और संयतोंके नो नोकषाय और तीन

संज्वलनोंको छोड़कर शोष प्रकृतियोंकी संख्यातभागहानिका काल ओघके समान कहा है सो इसका

इतना दी मतलव है कि इनका यहाँ जघन्य काल एक समय और उच्छृष्ट काल दो समय कम उत्कृष्ट

संख्यातप्रमाण है क्योंकि मनःपयेयज्ञानी और संयतोके दर्शनमोह्द और चारिमोहकी क्षपणा होती

है। तीन संज्वलन और नो नोकषायोंकी संख्यातभागहानिका जघन्य व उत्कृष्ट काल एक समय ही

है। सामयिक्त और छेदोपस्थापनामें भी इस प्रार् जानना चाहिये। किन्तु ये दोनों संयम

नोवे गुणस्थान तक ही होते हैं अतः इनमें लोभी संख्यातभागदानिका जघन्य और उत्कृष्ट

काल एक समय ही प्राप्त दोता है ।

३०८ परिद्ारविशुद्धिसंयतोंमें अद्ठाईंस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्दानिका जघन्य

काल अन्तमुंहूर्ते और उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटि है। मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और

रथ

Page 205:

एतद जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हदिविहत्तौ ३

बारसक०णवणोक संखेज्जभागहाणी ० जहण्णुकत० एगसमओ । सुहुमसांपराय ०

चउबीसपयडीणमसंखेज्जमागहाणो जह० एगसमओ उक ० अंतो हत्त । दंसणतिय

लोभसंजलणाणं संखेज्जभागदाणी जहण्णुक्क एगस । णवरि लोभसंज० जह०

एगस० उक उकस्ससंखेज्ज दुरूवू्ण लोभषंज ० संखेञ्जगुणहाणी जहत्णुक०

एगस । संमदासंजद् ० पर्दिरसंजद्मगो । असंजद० छब्वीसं पयडीणं तिण्णिवड्डि

अवड्डाणाणमोघं । असंवेजजमागहाणी जह ० एगस ० उक तेत्तीसं सागरो सादिरे

याणि । संखेन्जगुणहाणी ओघं । एकवीसपयडीणं संखेज्जमागहाणी० जहण्णुक्ष

एगस । मिच्छत्त०अणंताणु संखेज्जमागहाणिअसंखेज्जगुणदाणी सम्मत्त०

सम्मामि० सव्वपदाणमणंताणु अवत्तव्वस्सत च ओषधं णवरि सम्भ ०सम्मापरिर

असंखेउजमागहाणी उक ० तेत्तीसं सागरोषमाणि सादिरेयाणि ।

अनन्ताजुवन्धीचवुष्कङी तीन दानियोंक। काल ओघके समान है । वार्ह कषाय और नो नोकषायों की

संख्यातभागदानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । सूदमसांपरायिकसंयतोमें चौबीस

प्रक्तियोंकी असंख्यातभागहानि घ जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहृत है । तीन

दर्शनमोहनीय और लोभसंञवलनकी संख्यातभागडानिक्ा जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि लोभसंञ्वलनक्री अपेक्षा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो

कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण है। तथा लोभसंब्वलनकी संख्यातगुणहानिक्रा जघन्य और उत्कृष्ट काल

एक समय है। संयतासंयतोंका भंग परिद्दारविशुद्धिसंयत्तों के समान है । असंयतोंमें छब्बीस भक्ति

योंकी तीन वृद्धि और अवस्थानका काल ओघके समान है । असंख्यातमागहानि शा जघन्य काल

एक समय ओर उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है। संख्यातगुणदानिका काल ओघके समान

है। इकरीस प्रकृतियों की संख्यातभागहानिका जघन्य और उत्क्रष्ट काल एक समय है। मिथ्यात्व

और अनन्तालुबन्धीचतुष्ककी संख्यातभागद्दानि और असंख्यातगुणद्वानिका काल तथा सम्यक्सव

ओर सम्यम्मिथ्यात्वके सब पदोंका काल तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्करी अवक्तव्यस्थितिविभाक्तका

काल ओघने समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागहानिका उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है ।

विशेषा्थपरिद्धारविशुद्धिसंयमका जघन्य शल अन्तमु हूते और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक

पूवंकोटिबषप्रमाण है इसलिये इसमें सब प्रकृतियोंकी असंख्यातमागहानिका जघन्य काल अन्त

मु हूते ओर उत्कृष्ट काल कुछ कम पूव॑ंकोटिवर्षप्रमाण कहा है । सूक्ष्म सम्परायसंयमका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमु हूतं है इसलिये इसमें २४ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका

जघन्य ओर उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है। सर्वार्थेसिद्धिमें तेतीस सागंरतक छब्त्रीस प्रकृतियों

की और सम्यक्स व् सम्यग्मिथ्याखकी असंख्यातभागहानि सम्भव है और यह जीव जब अन्य

पर्यायमें आता है तब भी कुछ कालतक यह पाई जाती है अतः असंयतोंक्रे असंख्यातभागद्वानिका

उत्कृष्ट काल साधिक तेतास सागर कदा है। असंयतोंके चारित्रमोहनीयकी क्षपणा सम्भव नदीं इसलिये

इनके २१ प्रकृतियोंकी संख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्क्रष्ट काल एक समय कहा है क्योंकि

इनमेंसे कुछ प्रकृतियोंकी संख्यातभागहानिका अधिक काल चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें ही सम्भव

है शेष कथन सुगम है ।

Page 206:

गा० २२ बड्डिपरूबणाए काली १८७

३०६ दंषणाणु्रादेण चक्खुदंसगीसु ओघं । णवरि संखेउजमागवड़ी वे समया

णत्थि । ओहिदंसणी ० ओदिणाणिभंगो ।

३१० किण्हणीलकाउलेस्सासु छव्बीसं पयडीणं तिण्णिवड्डिअवड्डाणाणमोघ॑ ।

असंखेज्जमागहाणी ० जह ० एगस ०उक्क ० तेत्तीस सत्तारष सत्त सागरो ०देखणाणि संखेज्ज

भागदाणि ० संखेज्जगुणदाणी जहण्णुक ० एगस० णवरि अणंताणु ०चउक संखज्जमाग

दाणिअसंखेज्जगुणदाणिअवच्तव्वाणमोघं । सम्मत्त सम्मामि चत्तारिव्डिअबड्ढा

णाणमोघ॑ । असंखेज़ भागदहाणी ० जह० एगस० उक्क० तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरो०

देखणाणि । संखेज्जमागहाणिसंखेज्ञगुणदाणिअसंखेज्जगुणहाणिअवत्तव्वाणि ओघं ।

३११ तेऽपम्मलेस्सा० तिण्णिवष्डिअवड्ठाणाणं सोहम्ममंगो । अद्डाबीसं पयडीण

मसंखेज्जभमागहाणीए जह० एगसमओ उक तेउलेस्साए अड्डाइज़सागरोबमाणि

पम्मलेस्साए अड्ारस सागरो सादिरेयाणि । मिच्छत्तबारसक०णवणोक० संखेज

भागदहाणिसंतेजगुणहाणी जहण्णुक एगस ० । णवरि मिच्छ संखेजमागदाणीए

असंखेजगुणहाणीए च ओघं । अणंताणु चउक० संखेजभागहाणिसंखेज्जगुणदाणि

असंखेज्जगुणदाणिअवत्तव्वराणमोधं । सम्मत्त०सम्मामि० चत्तारिवद्धिठिण्णिहाणि

३०६ दशनमागंणाके अनुबादसे चलुदशेनवाले जीबोंमें ओघके समान जानना चादिए। किन्तु

इतनी विशेषता दै कि संख्यातभागबुद्धिका दो समय काल नहीं है । अवधिदशंनवाले जीबोका भग

अवधिज्ञानियोंके समान हे ।

विशेषार्थजो तेइन्द्रिय जीव चौइन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनमें संख्यातभागबृद्धिका दो

समय तक द्वोना सम्भव है । परःस्वस्थानकी अपेक्षा बह एक समय तक ही होती है इसलिये चहल

दर्शनवाले जीबोंमें संख्यातभागवृद्धिके दो सम्योका निषेध किया है । शेष कथन सुगम है ।

३१० छष्ण नील और कापोतलेश्यावाले जीबोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन वृद्धि और

अबस्थानका काल ओघके समान दै । असंख्यातमागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट

काल कुछकम तेतीस कुछकम सत्रह और कुछकम सात सागर है। संख्यातभागद्दानि और संख्यात

गुणहानिका जवन्य श्रौ८ उत्कृष्ट काल एक समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तालुबन्धी

चलुष्ककी संख्यातभागदानि असंख्यातगुणदानि और अवक्तव्यका काल ओघके समान दे।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि और अवस्थानका काल ओघके समान है । असंख्यात्त

भागहानिशा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ऋमसे कुछकम तेतीस कुछकम सत्रह ओर

कुछ कम सात सागर है। संख्यातभागद्वानि संख्यातगुणद्वानि अ संख्यात्तगुणदानि श्रौर अवक्तव्यका

काल ओघके समान है ।

३११ पीत और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें छब्ब्रीस प्रकृतियोंकी तीन बृद्धि और अवस्थानका

भंग सौधर्म स्वर्मके समान है । अद्ठ।ईथव प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय

और उत्कृष्ट काल पीतलेश्यामें ढाई सागर तथा पद्मलेश्यामें साधिक अठारह सागर है। मिथ्यात्व

बारह कषाय और नो नोकषायोंकी संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणदानिका जघन्य और उत्कृष्ट

काल एक समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वकी संख्यातभागद्दानि और असंख्यात

ग़ुणहानिका काल ओघके समान है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी संख्य।तभागदानि संख्यातगुण

शानि असंख्यातगुणद्ञानि और अवक्तब्यका काल ओघके समान है। सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यास्वकी

Page 207:

जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती है

अव्टि ०अवत्तव्वाणमोघं । सुकले० छव्बीस॑ पयडीणमसंखेज्जमागहाणी ० जद एग

समओ उक० तेत्तीसं सागरो सादिरेयाणि । तिण्णिहाणी ओघं । सम्मत्तसम्मामि

चत्तारिवड्डिचत्तारिहाणिअवत्तव्बअवड्डाणाणि ओघं । णवरि असंखेज्ज धागहाणी ० उक्त ०

तेत्तीसं सागरो० सादिरियाणि ।

३१२ भवियाणुवादेण अभव॒० छब्परीसं पयडीणं तिण्णिवड्डिदोहाणिअबड्ढा

णाणमोघ॑ । णवरि संखेज्जभांगहाणी जह्णुक० एगस० । असंखेञनमागहाणी ० जह०

एगस० उक ० एकत्तीससागरो० सादिरेयाणि ।

३१३ सम्मत्ताणुबादेण सम्मादि० आभिणि०भंगो। वेदग० मिच्छत्तसम्मत्त

सम्मामि० असंखेज्नमागदाणी० जह० अंतोघ्म ० उक्क० छावट्विसागरो देखणाणि ।

चार बद्ध तीन दानि अवस्थित और अवक्तव्यका काल ओघके समान है । शुकलेश्यावाले जीबोंमें

छब्बीस प्रकृतियोंकी असंस्यात्तमागदहानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल साधिक

तेतीस सागर है। तीन द्वानियोंका काल ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

वृद्धि चार हानि अवक्तव्य और अवस्थितका काल ओघके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है

कि असंख्यातभागद्दानिका उत्क्रष्ट काल साधिक तेतीस सागर है ।

विरोषार्थयद्यपि छृष्ण नील और कापोत लेश्याओंका उत्कृष्ट काल क्रमशः साधिक तेतीस

सागर साधिक सत्रह सागर और साधिक सात खागर है तथापि इनमें सम्यग्दष्टियोंके ही २६

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्ानि निरन्तर बन सकती है। अब यदि सम्यग्द्शनकी अपेक्षापे इन

लेश्याओंमें कालका विचार करते हैं तो वह क्रमसे कुलं कम तेतीस सागर कुछ कम सन्नद सागर

और छुछ कम सात सागर प्राप्त होता है इसलिये इनमें उक्त प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका

उक्त प्रमाण काल कहा है। इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्दानिका उत्कृष्ट

कालजानना चाहिये । पीतलेश्याक्ा उक्कृ् काल ढाई सागर और पद्मलेश्याका साधिक अठारह

ह सागर हे इसलिये इनमें रम प्रकृतियोंढी असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है ।

शेष कथन सुगम दे। शुक्तलंश्याका उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है इसलिये इसमें सब

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्ानिका उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर कदा है । शेष कथन सुगम है।

३१२ भव्य मागेणाके अनुवादसे अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन वृद्धि दो हानि और

अवस्थानका काल ओघके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यतभागदहानिका जघन्य

और उत्कृष्ट कालएक समय है। असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

खाधिक इकतीस सागर है।

विशेषार्थमिथ्यादृष्टि जीवके अधिक काल तक असंख्यातभागदानि नौचें भेवेयकमे पाई

जाती है। अब यदि कोई मिथ्यादृष्टि जीव नोबें प्रैबेयकर्में उत्पन्न होता है तो पूर्व पर्यायमें अन्तमें

भी कुछ काल तक उसके असंख्यातभागद्वानि सम्भव है । यदी कारण है कि अभव्योंक्रे असंख्यात

भागद्वानिका उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागर कदा है । शेष कथन सुगम दै ।

३१३ सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दष्टियोंका भंग आभिनिबवोधिकज्ञानियोंके समान

है। वेदकसम्यस्टृष्टियोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातमागहानिका जघन्य

काल अन््तमुंहूत और।उत्कुष्ट काल छुछकम छघासठ सागर है। संख्यातभागहानि संख्यातगुणद्वानि

Page 208:

गा० ररे बह्टिपरूबणाए काली १६६

संखेज्जमभागहाणिसंखेज्जगुणहाणिअसंखेज्जयुणहाणी ० ओघं । एवमणंताणु्चड

करप । बारसक०णवणोक० असंखेज्जमागहाणी ० जह ० अंतोश्च० उक्त छावड्टि

है रि ५

सागरोबमाणि देखणाणि संखेज्जभागहाणिसंखेज्जगुणहाणी जदण्णुक एगस० ।

खय ० एकवीसं पयडीणमसंखेज्जमागहाणी जद ० अंतोम्म ० उक० तेत्तीसं सागरो

सादिरेयाणि तिण्णिहाणी० ओघं उवसमसम्माइड्टी ० अट्डाबीसं पयडीणमसंखेज्जमाग

हाणी ० जहण्णुक० अंतोग्मु० । संखेज्जभागहाणी जहण्णुक्ष० एगस । श्रणंताणु०

चउक० संखेज्जगुणदाणिअसंखेज्जयुणहाणि०संखेजमागह्णीणमोघ॑ सासण०

अट्टाबीसपथडीणमसंखेज्जमागहद्दाणा ० जद एगस० उक्क० छ आवलियाओो समऊ

णाओ। सम्मामि० अट्टाबीसपयडीणमसंखेज्जभा गह।णी० ज० एगस्० उक्क० अंतो

छृतं । संखेज्जभागद्दाणिसंखेज्जयुणहाणी ० जहण्णुक० एगसमओ । मिच्छाइड्डी०

छब्बीसं पयडीणं तिण्णिबड्डिअबड्ठाण।णमोघं । असंखेञ्जमागहाणी जह० एगस०

उक्क० एकत्तीस सागरो सादिरेयाण । संखेज्जभागहाणिसंखेज्जगुणहाणी जहण्णुक्क ०

एगस० । सम्मत्तसम्मामि असंखेज्जभागदाणी ज० एगतमश्नो उक्क० पञिदो

५ ५ ॥

असंखेज्जदिभागो । संखेज्जमागदाणिसंखज्जगुणद्वाणिअसंखज्जघुणद्वाणी ओघं

और असंख्यातगुणहानिका काल ओघके समान ह । इसी प्रकार अनन्तालुवन्धीचतुष्ककी अपेक्षा

जानना चादिर बारह कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल अन््तमुंहू्ं

आर उत्कृष्ट काल कुछ कम छुघासठ सागर है। संख्यातभागद्वानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य

ओर उत्कृष्ट काल एक समय है। क्ञायिकसम्यग्द॒ष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वान

का जघन्य काल अन्तमु हूतें और उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है। तीन हानियोंका काल

ओघके समान है । उपशमसम्यम्दष्टियोंमें अद्ठाईस श्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य

और उत्कृष्ट काल अन्तमु हू है। संख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

अनन्तानुचन्धी चतुष्ककी संख्यातगुणहानि असंख्यातगुगहानि और संख्यातभागहानिका काल

श्रावक समान है सासादनसम्यस्टरष्टियोंमें अद्ठाईल प्रकृतियोंक्ी असंख्यातभागहानिका जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्ट काल एक समय कम छद़आवली है। सम्यस्मिथ्याहंध्टयोंमें अहारः

प्रकृतियोंकी असंख्यात॒मागद्दानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तमु हूते है।

संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय हैं। मिथ्यादष्ट

योंमें छच्बीस प्रकृतियोंकी तीन दद्धि और अवस्थानका काल ओघके समान् है। असंख्यातभाग

हानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागर है। संख्यातभागदानि

ओर संख्य।तगुणदानिका जघन्य और इछ काल एक समय है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

असंख्यातभागहानका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातबें भागप्रमाण

है। संख्यातभागद्वानि संल्यात्तगुणएदानि ओर असंख्यातगुणद्वानिका काल ओघके समान है।

विशेषोर्थवेदकसम्धक्त्थका जघन्य काल अन्तमुहूर्त और उत्कृष्ट काल कुछ कम छथासठ

सागर है अतः इनमें असंख्यातभागद्वानिका जघन्य ओर उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कदा है। क्षायिक

सम्यक्त्वका काल ता सादिअनन्त है पर संसार अबस्थाकी अपेक्षा अघन्य काल अनन््तमुहूर्त और

उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है। अतः इसमें असंख्यातभागद्वानिका जवन्य और उत्कृष्ट काल

Page 209:

१६० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

३१४ सण्णियाणु० सण्णीणमोघं । णवरि संखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणवद्डीए

च णत्थि वे समया । सत्तणोकमायःणं संखेज्जगुणवड्डीए अस्थि वे समया । असष्णीषु

न्वं संपयडीणमसंखेज्जभागब्डिसंखेज्ज भगवड्डिअचड्ठाणाणि ओघं । संखेज्जगु णजड्डी ०

जहण्णुक ० एगस ० संखेज्जमागहाणिसंखेज्जगुणदाणी जहण्णुक एगस ० । असंखेज्ज

मागह।णो ० ज०। एगस ० उक पलिदा० असंखेज्जदिभागो । सम्भत्त०सम्मामि०

प

असंखेज्ञमागद्दाणी जह ० एगस उक पलिदो० असंखेज्जदिमागो । तिष्णिहाणी

ओधं । आहाराणुबादेण आहारीसु ओघं । णवरि संखेऽजगुणवङ्खीए वे समया णत्थि ।

सत्तणोकसायाणमत्थि ।

एवं कालाणुगमो समत्तो

उक्त प्रमाण कहा है । उपशमसम्यक्ट्वका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू््ते हैं अतः इसमें सच

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूते कद्दा है। यढाँ अनन्तानुबन्धी

की विसंयोजना हाती है इस अपेक्षासे इसमें अनन्तानुबन्धीकी सब हानियाँ बतलाई हैं। यद्यपि

सासादनका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल छह आबलि है तो भी स्वस्थानकी अपेक्षा

यहाँ असख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल एक समय कम छई आवलि

प्राप्त होता है अयिः नहीं । सम्याम्मथ्य।सवका यद्यपि जघन्य चौर उत्कृष्ट काल अन्तमुहूते है तथापि

असख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय यहाँप्राप्त हो सकता है अतः यहाँ असंख्यात

भागदहानिका जव५ काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल अन्तमुंहू्त कहा है। मिथ्यादृष्टियों के असंख्यात

भागद्वा।नका उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागर अभव्योंके समान घटित कर लेना चाहिये। किन्तु

सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्व॒की असंख्यातभागहानिका उस्छृष्ट काल पल्यक्रे असंख्यातर्वें भाग

प्रमाण ही है । कारण स्पष्ट हे ।

३१४ संज्ञामागणाके अनुवादसे संज्ञियोंके ओघके सम।न काल है । किन्तु इतनी विशेषता

है कि संख्यातभागवाद्ध और संख्यातगुणबुद्धाका दो समय काल नहीं है । खात नोकषायोंक्री

संख्यातशुभन्रद्धका दा समय काल है। असंज्ञियामें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि

संख्यातभागश्वंद्ध और अवस्थानका काल ओघके समान है। संख्यातगुणवृद्धिका जधन्य और

उच्छष्ट काल एक समय हे । संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट काल

एक समय है । असंख्यातभागद्वानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल प्यके असंख्यातवें

भाग प्रमाण है। सम्यक्त्व यौर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहा।नकरा जघन्य काल एक समय

और उत्कृष्ट खाल पस्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । तथा तीन हानियोंका काल ओघके समान

है। आह।रमार्गणाके अनुवादे आद्वारकोंमें ओघके समान काल है। किन्तु इतनी विशेषता है कि

संख्यातगुणबुद्धिका दो समय काल नहीं है तथा सात नोकषायोंकरी संख्यातगुणबृद्धिका दो

खमय काल हं ।

विशेषार्थसंख्यातभागबृद्धिका उत्कृष्ट काल दो समय च्रसंक्ञियोके दी प्रप्त होता है चौर

संख्यातगुबा द्धका उत्कृष्ट काल दो समय जा एकेन्द्रिय व विकलत्रय जीव संज्षियोंमें उत्पन्न दोता है

उसके दाता हे अतः संज्ञयोंक इसका रिध किया है । हाँ सात तोकषायोंकी सरूयातगुणब्राद्धका दो

समय काल संक्षियोंके भी बन जाता है । इसका विशेष खुलास पहलेके समान यहाँ भी कर लना

चाहिये । एकेन्द्रियोंम असंख्यातभागदानिकाण्डकवातकाः उत्कृष्ट काल पल्यके श्रसंख्यातवं भाग

Page 210:

गा० २२ बष्टिपरूवणाएं अंतर

एगजीवेण अंतरं ।

३१५ सुगममेदं ।

मिच्छत्तस्स असंखेज्न भामवङ्भिअवट्राएदिदिविहत्तियंतरं केवचिरं

कालादो दोदि १

३१६ सुगममेदं ।

जहण्णेण एगसमयं ।

३१७ तं जहाअसंखेज्जमामवड्िम्डाणं च पुथ ए कुणमाणदोजीवेहि

विदियसमए अप्पिदपदविरुद्धपदम्सि अंतरिय तदियसमए अप्पिद्पदेणेव परिणदेदि एग

समयमंतरं होदि त्ति मणेणावहारिय एगसमओ त्ति मणदं

उक्कस्सेण तेवष्टिखागरोवमखदं तीहि पलिदोवमेहि सादिरेयं ।

३१८ इदो १ असंखेज्जभागद्ाणिसंखेज्जमागहाणीणम्ुकस्सकालेहि अंतरिय

अप्पिदपदेण परिणदाणं तदुब॒लंभादो ।

संखेज्ञ भागवड्डि हाणिसंखेज्जगुणवड्डिहाणिद्विदिविहत्तियंतरं जह

गणेण एगसमओ हाणी० अंतोख॒हुत्तं ।

प्रमाण है अततः असंज्ञियोंमें सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्यानिका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाणकहा है।

संख्यातगुणबृद्धिके दो समय केवल आद्वारक अवस्थामें नहीं प्राप्त होते इसलिये इनका आदह्ारकके

निषेध किया है। तो भी जैसा कि पहले घटित करके बतला आये हैं तदनुसार सात नोकषायों की

संख्यातगुणब॒द्धिका उत्कृष्ट काल दो समय आहारकोंके भी बन जाता है।

इस प्रकार कालानुगम समाप्त हुआ

अब एक जीवकी अपेक्षा अन्तराचुगमका अधिकार है ।

३१५ यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यात्वकी असंख्यातभागवृद्धि और अबस्थानस्थितिविभक्तिका अन्तर

काल कितना है १

३१६ यह सूत्र सुगम है ।

जघन्य अन्तरकाल एक समय हे ।

३१७ जो इसप्रकार हैअसंख्यातभागबृद्धि और अवस्थानको अलगअलग करनेवाले

दो जीव दूसरे समयमें विर्वाक्षत पदोंसे विरुद्ध पदद्वारा अन्तर करके तीसरे समयमे पुनः विवज्षित

पदोंसे ही परिणत होगये तो एक समय अन्तर होता है ऐसा मनमें निश्चय करके उक्त दोनों पदोंका

जघन्य अन्तर एक समय है ऐसा कहा है ।

उस्क्ृष्ट अन्तरकाल तीन पल्य अधिक एफसौ प्रेसड सागर है ।

३१८ क्योंकि असंख्यातभागद्दनि और संख्य तभ गान उत्कृष्ट कालकी अपेक्षा

अन्तर करक बिवज्षित पदों परिणत हुए जीबोंके उक्त अन्तर काल पाया जाता है ।

मिथ्यात्वकी संख्यातभागबृद्धि संख्यातमागहानि संख्यातगुणब द्धि और

संख्यातगुणद्ानिस्थितिविभक्तियों मेंसे ब्ृद्धियोंका जघन्य अन्तर एक समय और द्वानियोंका

जघन्य अन्तर अन्तपुंहूतत है ।

Page 211:

१६२ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे छिदिविद्दत्ती ३

३१६ तं जहाबेइंदिओ सत्थाणे चेव संखेउजभागङ्धिमिगममयं कादुण पुणो

विदियसमए अवद्टिदवेधं करिय तदिथसमण तेहंदिएसुप्पज्जिय संखेज्जभागवड्डीए कदए

लड्धमंतरं होदि। संपद्दि संखज्जगुणवड्डीए जहण्णमंतरं बुचदे तं जहाएइंदिर्ण दो

बिग्गह कादृण प्रण्णीसुप्यण्णेण पढ़मविग्गहे संख्ेज्जगुणवड्डिं करिय विद्यिविग्गहे अवद्धिदं

करिय तदियसमए सरीरं घेत्तण संखेज्जगुणवड्डीए कदाए लड्धमेगसमयमंतरं । संखेज्ज

भागहाणीए उच्चदे । तं जहा पलिदोवमह्ठिद्सिंतकम्मस्सुवरिमदुचरिमट्टि दिकंडयच रिभ

फालियाए पदिदाए संखेज्ज पागहाणी होदि। तदो असंखेज्जभागहाणीए अंतोपहृत्त

मंतरिय 0 आप ५ ७ मत्त

मंतरिय चरिमकंडयचरिमफालीए पदिद्।ए॒संखेडजभागहाणीए जदण्णमंतरमंतोुहुत्तमेत्तं

होदि । संखेञजगुणहाणीए बुचदे । तं जहा दूरचकिडटद्धिदिसंतकम्मस्मुवरिमदूचरिम

ट्विदिकंडयचरिमफालियाए संखञ्जगुणहाणीए आदिं कादृण पणो अंतोहुत्तकालम

संखेज्जभागहाणीए अंतरिय चरिमद्धिदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए संखेञ्जगुणदाणीए

जहण्णेण अंतोरहुत्तमंतरं होदि ।

उकस्सेण असंखेज्ता पोग्गलपरियट्ठा ।

३२० इदो १ सण्पिपंचिदिएस दोण्डं बड़िहाणीणमादि कादृण पृणो एडंद्ए्सु

आवलियाए असंखेज्जदि मागमेत्तपोगगशरपस्यिङ्ाणि भयिय तदो सण्णिपंचिदिएसुप्पज्जिय

दोबड्डिहाणीसु कदासु चदुण्ह पि असंखेज्जपोग्गलपरियइमेचं लद्धमंतरं होदि । एदीए

३८६ जो इसप्रकार हैकोई द्वीन्द्रिय स्वस्थानमें ही एक समयतक संख्यातभागवबृद्धिको

करके पुनः दूसरे समयमे अवस्थितबन्धको करके तीसरे समयमे त्रीन्द्रियोंम्ें उत्पन्न हुआ तब उसके

संख्यातभागबृद्धिके करनेपर संख्यातभागबुद्धिका एक समय जघन्य अन्तर प्राप्त दाता है। अब

संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर कहते हैं । जो इसप्रकार हैजो एक्ेन्द्रिय दो विप्र करके संज्षि

योंमें उत्पन्न हुआ है वह प्रथम विग्नदमें संख्यातगुणब्रद्धिका करके दूसरे विग्रदमें अवस्थितस्थिति

विभक्तिको करके तथा तीसरे समयपें शरीरको ग्रदण करके संख्यातगुणबृद्धिको करता है तब उसके

संख्यातगुणब॒द्धिका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त द्वोता है। अब संख्यातभागदानिका जघन्य अन्तर

कहते हैं। जो इस प्रकार हेपल्यप्रमाण स्थितिसत्कमंकी उपरिम द्विचरमस्थितकाण्डकी अन्तिम

फालिकरे पतनके खमय संख्यातभागहानि होती है । तदनन्तर एक अन्न्तमुंहूततक असंख्यातभाग

हानिक्रे द्वारा अन्तर करके अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिके पतन होनेपर संख्यातभागहानिका

ज्ञघन्य अन्तर अन्तमुंहूते प्राप्त होता है। अब संख्यातगुणद्वानिका जघन्य अन्तर कहते हैं। जो

इस प्रकार दैदुरापक्रष्टि स्थितिसत्कर्मकी परिम अर्थात् दूरापक्रष्टि स्थिति समेते पूर्व

द्विचरमस्थिण्काण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय संख्यातगुणहानिको करके पुनः अन्तमुंहू्ते

काल तक असंख्यातभागद्वानिसे अन्तर देकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतन

॥ होनेपर संख्यातगुणदानिक्रा जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते दोता हे ।

उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात पृद्दलपरिवतनप्रमाण दै ।

३२० क्योंकि जिन जीबोंने संञा पचेन्द्रयोंमें रहकर उक्त दो बृद्धि और दो हानियोंका

प्रारम्भ किया पुनः वे आवलिके असंख्यात्तवें भागके जितने समय हों उतने पुद् गल परिवर्तेतकाल तक

एकेन्द्रियोंमें परिभ्रमण करके तदनन्तर संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए और वहाँ पुनः दो बृद्धि और

Page 212:

गा० २२ वड्डिपरूबणाए अंत १६३

अंतरपरूबणाए जाणिज्जदि जहा सण्णिट्टिद्संतकम्मियएइंदिओ वि पलिदो० संखेज्जदि

मागमेत्तं संखेज्जपालिदोवममेत्त बा ट्विदिकंडयं ण गेण्डदि त्ति।

असंखेञ्नयुणहाणिदिदिविहत्तियंतरं जहण्णुक्रस्सेण अंतोसुदुत्त ।

३२१ इदो १ दरावकिड्िट्टिदिसंतकम्मस्स दुचरिमफारीए पदिदाए असंखेज

गुणहाणीए आदिं काद्ण असंखेज्मागहाणीर् सव्वजदण्णमंतो्ुद्ुत्तमंतरिय पणो चरिम

कंडयचरिमफालीए पदिदाए जहण्णमंतरं होदि दूरावकिट्विट्टिदीए पदमह्धिदिकंडयचरिम

फालीए पदिदाए असंखेज्ञगुणहाणीए आदिं कादृण पुणो असंखेजमागहाणीए सब्बुकस्सु

कीरणद्धमेत्ताए अंतरिय बिदियट्विदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए रद्धषठकस्समंतरं ।

असंखेज्भागदाणिष्िदिविहत्तियंतरं जदर्णेण एगसमओ ।

३२२ इदो १ असंखेजमागहाणि करेंतेण एगसमयमसंखेजमागव्डि कादृण पणो

विदियसमए असंखेजभागहागीए् कदाए एगसमयअंतरुवलंभादो ।

दो दानियोंको किया । इसप्रकार उक्त चार बृद्धिहानियोंका असंख्यात पुद्रलपरिवतेनप्रमाण उत्कृष्

अन्तर प्राप्त दोता है । इस अन्तरप्ररूपणासे जाना जाता है कि संज्ञीकी स्थितिसत्कमेबाला एकेन्द्रिय

जीव भी पल्यके संख्याते भागप्रमाण या संख्यात पल्यप्रमाण स्थितिकाण्डकको ग्रहण नहीं करता है ।

विशेषार्थएकेन्द्रियोंका उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गलपरिवतैनप्रमाण बतलाया है और

यहाँ दो ब्रांड और दो द्वानियोंका उत्कृष्ट अन्तर काल भी उक्त प्रमाण बतलाया है जा अन्तर काज

एकेन्द्रियोंमें दी प्राप्त होता है। अब यदि एकेन्द्रिय जीव संख्यातभागद्दानि ओर संख्यातगुणद्वानिका

प्रारम्भ करते होते तो दो दानियोंका उत्कृष्ट अन्तर काल असंख्यात पुदूगलपरिवतैनप्रमाण न कह

कर कुछ कम कहना चाहिये था। पर ऐसा न करके यहाँ उक्त दो बुद्धि ओर दो द्वानियोंका उक्ष

अन्तर काल पूरा असंख्यात पुदूगलपरिवतेनप्रमाण बतलाया है इससे प्रतीत द्वोता है कि एकेन्द्रिय

जीव संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणद्वानिका प्रारम्भ नहीं करते हैं ।

५ मिथ्यात्वकी अषंख्यातगुणहानिस्थितिविभक्तिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर

काल अन्तघ्ुहूतं है ।

३२१ क्योंकि दूरापकृष्टि स्थितिसरकमेकी ट्विचस्मफालिके पतन होते खमय असंख्यात

राणदानि होती है । अनन्तर सबसे जघन्य अन्तयुहूतं कालतक अ संख्यातभागहानिके द्वारा अन्तर

करके पुनः अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिके पतनके समय असंरयातगुणदानि होती है । इस

प्रकार असंख्यातगुणइानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते प्राप्त हुआ । दूरापकृष्टि स्थितिके प्रथम स्थिति

काण्डककी अन्तिम कालिके पतन होते समय भ संख्यातराएहानिका प्रारम्भ किया । पुनः सर्वोत्कृष्

उत्कीर्ण काल तक असंख्यातभागद्वानिके द्वारा अन्तर करके दूसरे स्थितिकाण्डककी अन्तिम

फालिके पतनके समय चर संख्यातगुणहानि की । इस प्रकार असंख्यातगुणद्वानिका उत्क्ृष्ठ अन्तर

ग्राप्त हुआ । ॥

मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय है ।

३२२ क्योंकि असंख्यातभागद्वानिको करनेवाले जीवने एक समय तक असंख्यातभाग

वृद्धिको करके पुनः दूसरे समयमें असंख्यातमागहानिको किया तब असंख्यातभागहानिका जघन्य

अन्तर एक समय प्राप्त होता हे ।

१ ता० प्रतौ च इति पाठः ।

गष

Page 213:

१६४ जयधवलासहिदे कस्रायपाहुडे हिदिबिहन्ती ३

उक्छस्सेख अंतोस॒हुत्तं ।

३२३ इदो १ असंखेजभागदाणीए अच्छिदजीषेण अबद्िदबंधं गंतूण सब्बुकस्स

मंतोम्नहृत्तद्धमच्छिदेण असंखेज़मागहाणीए कदाए उकस्समंतरुवलंभादो ।

सेखाणं कम्माणमेदेण बीजपदेण अरएमग्गिदच्वं ।

३२४ एदेण देसामासियत्तमेदस्स जाणाविदं तेणेत्थ उचारणं भणिस्सामों ।

अंतराणुगमेण दुविहों णिदेसोओबे० आदेसे० । तत्थ ओघेण मिच्छत्तबारसक०

णवणोक० असंखेज्मागवङ्िअवद्धि जद० एगस० उक्क० तेबद्धिसागरोवमसदं तीहि

पलिदोबमेहि सादिरेयं । असंखेजमागहाणी० जह० एगसमओ उक्क० अंतोम्नहु० ।

दोबड्डी० जह० एगस० । दोहाणी० जह० अंतोम्न॒हु०ण। उक्क० चदुण्डं पि अणंतकाल

मसंखेजपोग्गलपरियइं । असंखेजगुणहाणी जहण्णुक० अंतोघ्रहु० णवरि इत्थिपुरिस

वेदाणं संखेज़मागवद्डिअंतरमेगसमओ ण होदि कि तु अंतोम्॒हृत्त इदो १ तेइंदिए्सु

प्यज्ञमाणवेइंदियस्स इत्थिपुरिसवेदाणं बंधाभावादों। अंतोुहृ्त॑तरलहणकमो बुच॒ह ।

तं जहाबेइंदिओ तेडंदिए्सुप्पण्णपपडमसमए कसायद्िदिसंतकम्सेण संखेजभामवड्डीए

आदिं कादृण पणो अंतोम्न॒हृत्तेण संकिलेसं पूरेदण संखेज़मागबड्ीए ट्विदिबंधिण कदाए

सद्धमंतोष्ठहुत्मेत्तमं तरं संखेजमागवङ्खीए । अणंताणु चऽक ० एवं चेव णवरि असंखेज

उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तघहूतं है ।

३२३ क्योकि असंख्यातभागहानमें स्थित जो नीव अवस्थितबन्धको प्राप्त होकर और

सर्वोत्कृष्ट अन्नमुंहूते काल तक वहाँ रहकर अनन्तर असंख्यातभागद्दानिको करता है उसके असं

ख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त पाया जाता है ।

शेष कर्मोकी असंख्यातभागवृद्धि आदिका अन्तरकाल इस बीज पदके अलुसार

विचारकर जानना चाहिये ।

३२४ इस वचनके द्वारा इसका देशामषेकपना जता दिया अतः यहाँ उच्चारणाका कथन

करते हैंअन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनिदेश और आदेशनिर्देश । उनमेंसे

ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागवृद्धि और अवस्थित

स्थितिविभक्तिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर तीन पल्य अधिक एकसोौ त्रेसठ

सागर है ॥ असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्त

मुहूत है । दो बद्धियोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय दो हानियोंका जघन्य अन्तरकान

अन्तमुंहूर्ते और चारोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद् गलपरिवर्तनप्रमाण है।

असख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तमुंहूते है। किन्तु इतनी विश्वेषता है कि

ख्रीवेद और पुरुपवेदकी संख्यातभागइद्धिका जघन्य अन्तर् एक समथ नहीं है किन्तु अन्तमुंहूर् है

क्योकि जो द्वीन्दरिय त्रीन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके खीवेद चौर पुरुषवेदका बन्ध नहीं होता।

अब अन्तमुंहू्ते अन्तरकी प्राप्तिका क्रम कहते हैं । जो इस प्रकार हैकषायकी स्थितिसत्कृमंवाला

जो द्वीन्द्रिय जीव त्रीन्द्रियोंमें उत्पन्न दोनेके प्रथम समयमें संख्यातभागबृद्धिका प्रारम्भ करतां दे पुनः

अन्तमुहूते कालमें संकशको प्राप करकं स्थितिबन्धके द्वारा संख्यातभागबृद्धिको करता है उसके

संख्यातभागबृद्धिका अन्तमुंहूर्त अन्तर प्राप होता है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा भी इसी

Page 214:

गा० २२ वड्िपरूवणाए अंतर १६५

भागहाणीश जह ० एगस० उक ० वेछावष्टिसागरो० देश्वणाणि । असंखेजगुणहाणि

अवेत्तव्वाणमंतरं जद अतो उक ० उबडपोग्गरपरियद्धं । सम्मत्तसम्मामि

तिण्णिवड्डितिण्णिदाणिअवद्ठिदाणमंतरं जद ० अंतोप्ठुहु० । असंेजभागहाणी ० नह

एगसमओ । असंखेजगुणवड्िअवत्तव्वाणमंतरं जद पलिदो० असंसेज्ञदिभागो । उक

सब्वेसिस्न॒वड्डपोग्गलपरियड ।

प्रकार जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिरा जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कष्ट अन्तर कुछ कम एकसौ बत्तीस सागर ह । असंख्यातगुणहाणि और अव्क्तव्यका जघन्य

अन्तर अन्तरत भौर उत्कृष्ट अन्तर कुछकम अर्थुद् गलपरिवर्तनग्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वकी तीन वद्धि तीन हानि रौर अवस्थानका जघन्य अन्तर अन््तमुहू्त असंख्यातभाग

हानिका जघन्य अन्तर एक समय असंख्यातगुणब॒द्धि और अवक्तव्यका ज वन्य अन्तर पस्योपमके

अखंख्यातवें भागप्रमाण तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर छुद्धकम अधंुद् गलपरिवतनप्रमाण है ।

विशेषार्थसतिवृषभ आचार्यने अपने चार्णिसत्रोंमें ओघसे मिथ्यात्वकी तीन बृद्धि चार

द्वानि ओर अवस्थित स्थितिविभक्तिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर काल बतलाया है । तथा बीरसेन

स्वामीने श्रपनी टीकामें वह अन्तर काल कैसे प्राप्न हाता है इसका विस्तृत विवेचन किया है ।

किन्तु शेष कर्मो वृद्धि हानि और अवस्थित स्थितिविभक्तियोंके अन्तरकालका यतिवृषभ आचायेने

प्रथक् प्रथक् उल्लेख न करके केवल इतना ही कहा है कि इस बीजपदसे शेष कर्मोंकी वृद्धि आदिका

अन्रकाल जान लेना चाहिये इस प्रकार हम देखते हैं कि यतिंवषम आचायेके चूणिसत्रोंमें हमें

मिध्यात्वकी वृद्धि आदिके अन्तरका ही उल्लेख मिलता है शेष कर्मोंकी वृद्धि आदिक अन्तरका

नहीं । तथापि इसकी पूर्ति उच्चारणासे हो जाती है। उच्चारणामें सब कर्मोंडरी वृद्धि आदिके

अन्तरका प्रथक् पथक् निर्देश किया हे जो मूलमें निबद्ध है ही । उसमेंसे जिन कर्मोंको वृद्धि आदिका

अन्तर मिथ्यात्वकी वृद्धि आदिके अन्तरते विशेषता रखते हैं उनका यहाँ खुलासा किया जाता है

स्त्रीवेद ओर पुरुषवेदकी संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय न श्राप्त द्ोकर अन्तसुंहूर्ते प्राप्त

होता है। इसका वीरसेन स्त्रामीने जो खुलासा क्रिया है उसका भाव यह है कि जो दोइन्द्रिय आदि

जीव मर कर तीन इन्द्र आदि होते हैं वे अपना पर्याये अन्तमं अन्तमुंहूर्त कालतक ख्रावेद और

पुरुषवेदका बन्ध नदीं करते । इसलिये ऐसा जीव लो जो दोइन्द्रिय पर्यायसे तेइन्द्रिय पर्यायमें उत्पन्न

हुआ दो ओर जिसके ख्रवेद ओर पुरुषवरदकी स्थिति कपायक स्थति समान हो । अब उसने उत्पन्न

होनेके पहले समयमे संख्यातभागबृद्धिरूपल्ले स्त्रीवेद या पुरुषबेदका बन्ध किया। पुनः अन्तञुहूतं

कालके बाद दूसरी बार इसी प्रकार चन्ध किया तो इस प्रशार खीवेद् चोर पुरुषबेदकी स्थि।तकी

संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमुदूते प्राप्न हा जाता है। अनन्ताजुबन्धाचतुष्कका और

सब कथन तो मिथ्यात्वके समान है। किन्तु अखंख्यातभागद्दानि और असख्यातगुणदानिके

उत्कृष्ट अन्तर कालमें विशेषता दै । बात यह है कि जिसने अनन्तानुबन्धी की विसंयोज्ञना की है उसके

पुनः अनन्तानुबन्धोका सत्त्व सम्भव है और अनन्तानुबन्धीका सत्व होनेपर असंख्यातभागद्वानि

नियमसे द्वोती दै । किन्तु इसका पुनः सच प्राप्त करनेमें सबसे अधिक काल कुछ कम एकसौ बत्ताख

सागर लगता है अतः अनन्तामुबन्धीकी असंख्यातभागहानि क्ता उत्कृष्ट अन्तर काल कुड कम एकसौ

बत्तीस सागर कहा दे । तथा असंख्यातगुणदानि अनन्तानुबन्धीकी बिसंयोजनाके समय प्राप्त होती

है। इसमें असंख्यातगुणहानका जघन्य अन्तरकाल तो पूर्ववत् है। किन्तु उत्कृष्ट अन्तरकाल

कुछ कम अधैपुद्दलप रिवर्तनप्रमाण दै क्योंकि अर्धपुद्गलप।रवतंनके प्रारम्भ में और अन्तम जिसने

Page 215:

१६६ जयधंबलासदिदे कसांयपाहुडे हिदिविहत्ती हे

३२५ आदेसेण णेरइएसु मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखेजभागवड्डि

अवड्डिद ० जह एगसमओ । दोषड्डिदोहाणीणं जह० अंतोम्न॒हु० । उक्क० सव्वेसिं पि

तेत्तीसं सागरो० देखणाणि । असंखेजमागहाणी० ओघं । सम्मत्तसम्मामि तिण्णिवड्डि

दोदाणिअबदह्टिदाणं जह० अंतोमुहृत्त । असंखेजभागहाणी जह० एगसमओ ।

असंखेजगुणवड्डिअसंखेजगुणद्ा णिअवत्तव्य जदह ० पलिदो ० असंदेजदिभागो उक०

सव्वेसिं पि तेत्तीसं सागरो० देखणाणि । अणंताणु०चउक० असंखेजमागवड्डिअसंखेज

मागहाणिअवद्विद ० जह० एगस ० । दो वड्डितिण्णिहाणिअवत्तव्य ० जह ० अंतोघ्ु०

अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना की है उसके उसकी असंख्यातगुणहानिका दक्त प्रमाण अन्तरकाल

प्राप्त होता है। तथा अनन्तालुबन्धीकी अवक्तव्यस्थितिविभक्ति भी होती है जिसका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यातगुणद्वानिके समान प्राप्त होता है । अब रहीं सम्यक्त्व और सम्यम्मि

थ्यात्व ये दो प्रकृतियाँ सो इनकी तीन बृद्धि तीन द्वानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त

है। खुलासा इस प्रकार हैबृद्धि सम्यक्ट्ब श्राप्तिके प्रथम समममें होती है। अब जिस बृद्धिका

अन्तर प्राप्त करना हो अन्तमुंहूर्तके अन्दर दो बार खम्यक्त्व प्राप्त कराके दोनों वार सम्यक्व प्राप्त

द्वोनेके श्रथम समयमें उसी बृद्धिको प्राप्त कराओ इस प्रकार तीन वृद्धियोंका जघन्य अन्तर अन्तमु

हृत प्राप्त दोजाता है। इसी प्रकार अबस्थितविभक्तिका जघन्य अन्तर प्राप्त करना चाहिये। संख्यात

भागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ये तीन दानियाँ अपने योग्य स्थितिकाण्ड ककी

अन्तिम फालिके पतनके समय होती हैं । किन्तु एक काण्डकक्रे पतनके बाद दूसरे काण्डकके

पतनमें अन्तमुंहूर्त काल लगता है अतः इनका भी जघन्य अन्तर अन्तमु हूर्त प्राप्त हो जाता है।

तथा सम्यक्त्व ओर सम्यर्मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणबृद्धि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर प्यके

असंख्यात्तवे भागग्रमाण है । बात यह है कि ये दो विभक्तियाँ प्रथमोपशम सम्यक्त्वके प्राप्त होनेके

प्रथम समयमे सम्भव हैं । किन्तु एक बार प्रथमोपशम सम्यक्त्बको प्राप्त करके पुनः दूसरी वार उसके

प्राप्त करनेसें कमसे कम पस्यका असंख्यातवां भाग काल लगता है अतः इनका जघन्य अन्तर

पल्यका असंख्यातवां भागश्रमाण प्राप्त होता है । यह तो हुआ सब विभक्तियोंका जघन्य अन्तर।

अब यदि इन सब विभक्तियों के उक्छष्ट अन्तरका बिचार करते हैं तो बह कुछकम अधेपुद्गलपरि

चतेनप्रमाण प्राप्त होता है क्योंकि जिसने सम्यक्त्थ और सम्यम्मिथ्यात्वकी सत्ता प्राप्त करके

उनकी इद्ध लना कर दी है बह कुछ कम अधेधुद्गलपरिवतेन काल तक उनके बिना रह सकता है ।

३२४ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंख्यातभागवृद्धि और अबस्थितका जघन्य अन्तर एक समय तथा दो बृद्धि और दो द्वानियोंका

जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते ओर सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछकम तेतीस सागर है । असंख्यातभाग

हानिका अन्तर ओघक समान है। सम्यक्स और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि दो हानि भौर

अवस्थानका जघन्य अन्तर अन्तसझुंहूत असंख्यातभांगहानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा

असंख्यातगुणबृद्धि भसंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जधन्य अन्तर पल्योपमके अखंख्यात्ें

भागप्रमाण है और सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है। अनम्तानुबन्धी चतुष्कक्की

असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागद्दानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय तथा दो

त० अरतौ पि इति पाठो नास्ति ।

Page 216:

गा० २२ बट्टिपरूवणाए अंतर १६७

उक स्वे पि तेत्तीसं सागरो० देखणाणि । एवं सत्तसु पुदवीसु। णवरि

सगसगह्िदी देखणा ।

३२६ तिग्क्विषु भिच्छत्तारसक०णवणोक० असंखेज मागवडि अघद्धि जह ०

एगसमओ उक ० परिदो असंखेज०भामो । दोबड्डितिण्णिहाणी ओषं । सम्मत्त०

बृद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त है और समीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ

कम तेतीख सागर है। इसी प्रकार सातों प्रथिवियोंमें जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि

कुछकसम अपनी अपनी स्थिति कनी चाहिए।

विशेषार्थनरकमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि

ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय है क्योंकि जिसने उक्त प्रकृतियोंके असंख्यातभागबृद्धि

या अवस्थित पदको किया है वह दूसरे समयमे अन्य पदको करके पुनः तीसरे समयमे यदि इन

पदोंको करता है तो इनका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त दो जाता है। संख्यातभागवृद्धि और

संख्यातगुणव्ृद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमुहू्ते है क्योंकि संख्यातभागबृद्धि या संख्यातगुणबृद्धिके

योग्य परिणामोंके एक बार होनेके बाद पुनः उनकी प्राप्ति अन्तमुंहूर्तसे पदले सम्भव नदी । संख्यात

भागद्वानि और संख्यातगुणदहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूतं है क्योंकि इनके योग्य एक स्थिति

काण्डकके पतनके बाद दूसरे काण्डकके पतनमें अन्तयुंहूतं काल लगता है । तथा इन सब स्थिति

विभक्तियोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीख सागर है क्योंकि सम्यम्दष्टि नारकीके कुछ कम

तेतीस सागर तक एक असंख्यातभागद्दानिका पाया जाना सम्भव है जिससे इनका अन्तरकाल उक्त

प्रमाण प्राप्त होता है । किन्तु उक्त प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उस्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते ओघके समान नरकमें भी बन जाता है अतः इसके अन्तरको ओघके

समान कदा है। सम्यक्त्व अरर सम्यग्सिथ्यात्वके सब पदोंके जघन्य अन्तरका खुलासा जिस प्रकार

ओघग्ररूपणामें किया है उसी प्रकार यहाँ भी कर लेना चाहिये । केवल असंख्यातगुणद्वानिके जघन्य

श्मन्तरके कालमें फरक है । बात यह है कि नरकमें इन कर्मो असंख्यातगुणदानि इद्र लनामें प्राप्त

होती है । अब यदि दूसरी बार असंख्यातगुणद्वानि प्राप्त करना हो तो इन श्रकृतियोंकी सत्ता प्राप्त

कराके पुनः उद्व लना कराना होगी जिसमें कम से कम पल्यका असंख्यातवाँ भाग काल लगता है अतः

नरकमे च संख्यातगुणदानिश्ना जघन्य अन्तरकाल पल्यके अ संख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त दोत्ता है । तथा

उत्कृष्ट अन्तर जो कुछ कम तेतीस सागर बतलाया है उसके दो कारण हैंएक तो यद कि जिस वेदक

सम्यग्दृष्टि नरकीके छुछ कम तेतीस सागर काल तक असंख्यातभागहानि दी होती रहती है उसके

उतने समय तक अन्य कोई स्थितिविभक्ति नदीं होती और दूसरा यह कि नरकमें जाकर जिसने

उद्यलना कर दी है और अन्तमें पुनः उनको प्राप्त कर लिया है उसके मध्यके कालमें कोई भी स्थिति

विभक्ति नहीं दोती । किन्तु अपने अपने पदके अन्दरकालको लाते समय प्रारम्भे चौर अन््तमें

उस पदकी प्राप्ति करानी चादिये। दमने या स्थूल रूपसे ही निर्देश किया दै। तथा इसी

प्रकार अनन्तानुबन्धीके सब पदोंका भी जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर काल विचार कर घटित कर

लेना चादिये। सातों नरकोंमें भी इसी प्रकार समझना चाहिये किन्तु सब प्रकृतियोंके खब पदोंका

जो उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस खागर कहा है उसके स्थानवें कुछ कम अपनी अपनी उत्कृष्ट

स्थिति कहनी चाहिये। यहाँ इतना निर्देश कर देना आवश्यक है कि आगे अन्य सार्गेणाओं मे सब

पदोंके अन्तरका खुलासा न करके जिन पदोंके अन्तरमें विशेषता होगी उन्हींका खुलासा करेगे ।

३२६ तिर्य॑चोमे मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि और

अबस्थितका जघन्य अन्तर एक समय ओर उच्छृ अन्तर पल््यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। दो

Page 217:

श्त जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविद्दत्ती ३

सम्प्रामि० सब्बपदाणमोघं । णवरि असंखेजगुणहाणी जह पलिदो० असंखेजदिभामौ ।

उक० उबड्डपोग्गलपरियईं । अणंताणु ०चउक० असंखेजभागव्धिअवष्ठि जद ० एगस ०

उक ० पलिदो० असंखेजदिभागो । असंखेजमाणहाणी० जह ० एगस० उक ० तिण्णि

पलिदो० देष्णाणि । सेसपदा ओघं

३२७ पंचिंदियतिरिक्खतियम्मि मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखेज

मागवड्डिअवद्लि० जह० एमसमओ । संखेजभागव डिसंलेजपुणव डि सखेजगुणदाणीणं

जह ० अंतोम्न ० उक सव्वेसिं पि पृव्वकोडिपुधत्त । असंखेजभागहाणी० जह ० एगस०

उक्क० अंतोश्ु । संखेज्ञभागहाणी जह अंतोम्रु ० उक्० तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि ।

बृद्धि और तीन हानियोंका अन्तर ओघके समान दै । सम्यक्त्व और सम्मम्मिथ्यात्वक्रे खब पदोंका

अन्तर ओघके समान है। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणदानिका जघन्य श्रेन्तर

पस्यके असंख्यातवें भागप्रमाण और उत्कृष्ट अन्तर कुद्धकम अर्धपुद्गलपरिवतेन प्रमाण है । अनन्ता

चुबन्धीचतुष्ककी अखंख्यातभागवृद्धि और अवस्थितका अघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ठ

अन्तर पल््यके असंख्यात भागप्रमाण है। असंख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर छुछ कम तीन पल्य है । शेष पद् ओघके समान है।

विशेषाथेतिर्यचों मे मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषा्योकी असंख्यातमागदानिका

उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातर्वें भागग्रमाण है अतः यहाँ उक्त प्रकृतियोंकी असंख्यातसागवृद्धि व

अबस्थितका उत्कृष्ट अन्तरकाज्ञ उक्त प्रमाण प्राप्त होता है । यद्यपि तीन पट्यक्री आयुवाले तियंचमें

तीन पस्य तक असंख्यातभागद्वानि होती है परन्तु ऐसे जीवके तिर्येचगतिमें दुबारा असंख्यात

भागवृद्धि व अबस्थान नदीं होता अतः यद काल न ग्रहण कर एकेन्द्रियोंकी अपेक्षा पल्यका

असंख्यातवाँ भाग ही ग्रदण करना चाहिए। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वक्री असंख्यातगुणहानिका जघन्य

अन्तर काल पल्यके असंख्यातरवे भागप्रमाण है। जिसका खुलासा नारकियोंक़े समान यहाँ भी कर

लेना चाहिये । तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवतेनप्रमाण है। बात यह है कि

तिर्य॑च पर्यायमें निरन्तर रदनेका उक्छृष्ट काल असंख्यातपुदूगलपरिवतेन है । किन्तु जिसने सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी सत्ता प्राप्त कर ली है वह संसारम श्र्थपुद् गलपरिवर्तनसे अधिक काल तक

नहीं रहता । अब ऐसा तिर्य॑च लो जिसने प्रारम्भमें उक्त प्रकृतियोंकी उद्रो लना करते हुए असंख्यात

गुणद्दानि की । पुनः वह कुछ कम अधेपुद्गलपरिवर्तेन काल ८क संसारम घूम्ता रहा ओर कुछ

कालके शेष रह जाने पर उसने उपशमसम्यक्त्वपूर्वक पुनः सम्यक्त्व भौर सम्यम्मिथ्यात्वकी सत्ता

प्राप्त की तथा मिथ्यात्व में जाकर उद्ब लना द्वारा दूसरी बार असंख्यातगुणद्वानि की इस प्रकार उक्त

दो प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणहाानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अधपुदुगलपरिवतेनप्रमाण प्राप्त

हो जाता है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन

पल्यप्रमाण है सो यंह तियचोंमें अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजनाके उत्कृष्ट काल की अपेक्षासे कहा

है । शेष कथन सुगम है ।

३२७ पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त और योनिमती इन तीन प्रशमे तियंचोंमें मिथ्यात्व

बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागवुद्धि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय

तथा संख्यातभागबृद्धि संख्यातगुणबृद्धि और संख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त है तथा

सभीका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि प्रथक्स्व है। असंख्यातभागदानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ठ अन्तर अन्तमुंहूर्ते है। संख्यात॒भागहानिका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूते और उत्कृष्ट अन्तर

Page 218:

गा० २२ बह्टिपरूवणाए अंतरं १६६

एवमणंताणु चउक्ष । णवरि असंखेजभामहाणी० तिरिक्लोधं । संखेजगुणहाणी जह०

अतोष्ठु० उक तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि असंखेज्गुणहाणिअवत्तव् जह ०

अंतो्० उक तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वको डिपुधत्तेण सादिरियाणि। सम्मत्त

सम्मामि तिण्णिवड्ि०दोहाणी जह अंतामु० । असंखेज्ञमागहाणी जदह ० एगस०

असंखेजगुणव ड्विअसंखेजगुणहाणिअवत्तव्व ० जह ० परलिदो० असंखेजदिभागो ।

उक्क० सव्वेसिं तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तेण सादिरेयाणि । अब्ष्टि० जह० अंतोु०

उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

३२८ पंचिदियतिरि०अपज०मणुसअपज छन्वीसं पयडीणमसंखेजमागवड्ि

साधिक तीन पल्य है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि असंख्यातभागद्वानिक अन्तर सामान्य तिर्यचोके समान है संख्यातगुणद्ानिका जघन्य

अन्तर अन्तमुहते और उत्क्रष्ट अन्तर साधिक तीन पल्य है । असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका

जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिप्रथकत्व अधिक तीन पस्य है । सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन बृद्धि और दो दानियोंका जघन्य अन्तर अन्तञहूते असंख्यातभाग

हानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा असंख्यातगुणबृद्धि असंख्यातगुणद्दानि और अवक्तन्यका

जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिप्रथकत्व

अधिक तीन पस्य दै। अवस्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्व॑

कोटिप्थक्त्व है । वि

विशेषा्थे तीन प्रकारके तियचोंका उत्कृष्ट काल पूवेकोटिष्रथक्त अधिक तीन पल्य है । अब

यहाँ मिथ्या बारह कषाय ब्मौर नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि अवस्थित संख्यातमागनबद्धि

संख्यातगुणबृद्धि और संख्यातगुणहानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल प्राप्न करना है । किन्तु उक्त तियंचोंका

जो उत्कृष्ट काल है वह इन पदों का उत्कृष्ट अन्तरकाल नहीं हो सकता क्योकि उत्तम भोगभूमित ये पद

सम्भव नहीं हैं और संज्षियोंमें पृरथक्त्वपूर्वकोदि तक निरन्तर असंख्यातमागदानि दोना भी सम्भव

नहीं है क्योकि इतने काल वह निरन्तर खम्थग्दष्टि नहीं रह सकते । परन्तु असंज्षियोंमें संज्ञीकी स्थिति

चातको अपेक्षाखे असंख्यातभागहानि व संख्यातभागहानि प्रथक्त्वपू्वंकोटि काल तक सम्भव है चौर

उसके बाद संक्ञियोँमे उत्पन्न होकर उक्तपद् भी सम्भव हैं अतः उत्तम मोगमूमि और संज्ञोके कालके

कम कर देने पर जो पृवेकोटिप्ृथक्त्व असंज्ञीका उत्कृष्ट काल शेष रहता है बह इन पदोंका उत्कृष्ट

अन्तरकाल प्राप्त होता है। तथा उक्त प्रकृतियोंडी संख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक

तीन पर्य है क्योकि संख्यातभागह्यानि भोगभूमिमें भी सम्भव है अतः उक्त श्रकृतियोंकी संख्यात

भागदानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक त्तीन पस्य कहा है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

संख्यातगुणद्दानिका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तीन पल्य प्राप्त होता है। तथा अनन्तानुबन्धीकी

असंख्यातगुणदानि धौर अवक्तव्यका उत्कृष्ट अन्तरकाल वरि पथक्त्व अधिक तीन पल्य है जो उक्त

तीन प्रकारके तिर्यचोकि अपने अपने कालके प्रारम्भमें और अन्तमें ही अनन्ताचुवन्धीकी विसंयोजना

करानेसे प्राप्त दोता है । ऐसे जीब मध्यके कालम मिथ्यादृष्टि रहते हैं । इसी प्रकार सम्यक्त्व श्रौर्

सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित पदको छोड़कर शेष सब पदोंके उत्कृष्ट अन्तरकालकों अपने अपने पद्का

विचार करके घटित कर लेना चाहिये। किन्तु भोगमूमिमें अचस्थित पद् सम्भव नहीं है अतः उसका

उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिप्रथक्त्ब प्राप्त होता है। रोष कथन सुयम है ।

३२८ पंचेन्द्रिय तियेंच अपर्याध्र और मनुष्य अपर्याप्रकोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी

Page 219:

२०० जयघवलासहिदे कसायपाहुडे दविदिविदत्ती हे

असंखेज़भागहाणिअवड्डि जह० एगस० उक्क० अंतोघरहु । दोवड्डिदोहाणीणं जहण्ण

मुकस्सं च अंतोमुहु० । सम्मततसम्मामि० असंखेजमागहाणी० जहण्णुक० एगसमओ ।

तिष्णिहाणी णत्थि अंतरं ।

३२९ मणुसतिय० मिच्छत्तबारसक०णवणोऋ० पंचि० तिरिकिलभंगो । णवरि

जम्हि पृुव्वक्रोडिपुध्त तम्हि पृव्वकोडी देखणा। असंखेजगुणहाणी० जहण्णुक०

अतो । सम्मत्तसम्भामि० पंचि०तिरिक्खभंगो । णवरि असंखेजगुणहाणी० जह०

अंतोमहु० उक० तं चेव । अणंताणुचउक पंचि०तिरि०भंगो । णवरि जम्हि पुव्व

कोडिपुधत्तं तम्हि पुव्यकोडी देखणा ।

असंख्यातभागबृद्धि असंख्यात भागानि ओर अवस्थितका जवन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर अन्तमुहूर्त है। दो वृद्धि और दो हवानियोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंह॒ते है।

सम्यकत्व और सम्यग्मिथ्यास्वकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है।

तथा तीन द्वानियोंका अन्तर नहीं है ।

विशेषार्थपंचेन्द्रिय तियंच लब्ध्यपर्याप्तत और मनुष्य लब्ध्यपर्याप्तक जीबोमें २६ प्रकृतियों

का यदि अविवज्षित पद एक समयके लिये दोता है तो असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागदानि

और अवस्थित पदका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है और यदि अविवज्षित पद् अन्तमुंह्ते

तक होता है तो इनका उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते प्राप्त होता है । तथा शेष दो वृद्धि भौर दो द्वानियों

मेंसे प्रत्येक वृद्धि या द्वानि अन्तसुहूर्तके पहले प्राप्त नहीं होती और उक्त मार्गगाओंका उत्कृष्ट काल

अन््तमुंहूते है इसलिये इनमें उक्त पदोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते प्राप्त दोता है। अब

रहीं सम्यक्त्व श्नौर सम्यग्मिथ्यात्व ये दो प्रकृतियाँ सो इनकी इनमें चार हानियाँ द्ोती दँ । इनमेंसे

संख्यातभागद्वानि आदि पदोंका तो यहाँ अन्तर सम्भव नहीं है क्योंकि इनका यहाँ दो बार प्राप्त

होना सम्भव नहीं है । हाँ जब असंख्यातभागद्वानि इनमेंसे किसी एक पद्के द्वारा एक समयके लिये

अन्तरित हो जाती है तब उसका अवश्य जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल एक समय प्राप्त होता है ।

३२९ सामान्य सलुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी इन तीन प्रकारके मनुष्योंमें मिथ्यात्व बारह

कषाय और नो नोकषायोंका भंग पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके समान है । किन्तु इतनी विशेषता दे कि जहाँ

पूवेकाटिप्रथक्त्व॒ कदा है वहाँ कुछ कम पूवकोट कहना चादिये । असंख्यात्तगुणहानिका जघन्य भौर

उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहू्े है। सम्यक्त्व चनौर खम्यग्मिथ्यात्वका भंग पंचेन्द्रिय तियचोंके समान है । किन्तु

इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते ओर उत्कृष्ट अन्तर वही हे ।

अनन्तालुबन्धीचतुष्कका भंग पंचेन्द्रिय तियेचोंके समान दै । किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ

पूवकोटिष्रथक्स्व कहा हे वहाँ कुछ कम पूर्वकोटि जानना चादिए।

विशेषाथेंपंचेन्द्रिय तियंचोंके २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि अवस्थित संख्यात

भागबृद्धि संख्यातगुणबृद्धि और संख्यातगुणद्वानिका उत्कृष्ट अन्तर काल पूर्वकोटि प्रथक्त्बप्रमाण

बतलाया है सो यदं तीन प्रकारके मलुष्योंके यह अन्तर कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण जानना चादिये।

उक्त पदोंका उत्कृष्ट अन्तर वहाँ पर ही सम्भव है जहाँ पर उतने काल तक असंख्यातभागदानि

निरन्तर होती रहे। मनुष्योंमें तो सम्यक्त्व अवस्था ऐसी है जहाँ पर उक्त पदोंकी निरंतर असंख्यात

आगद्दानि होती रहती दे ओर यह काल कमेभूमिके मलुष्योंमें कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है अतः उक्त

पदोंका अन्तर् छलं कम पूवेकोटि कहा है। भागमूमिज मनुष्योंमें असंख्यातभागवृद्धि आदि उक्त पद्

सम्भव नहीं दै अतः तीन पट्य अन्तर नहीं कदा । तिय॑चोंमें असंज्ञी भी दोते दै ।जनका उत्कृष्ट

Page 220:

गा० २२ बड्डिपरूवणाए अंतरं २०१

३३० देवगदीए देवेसु मिच्छस्तबारसक ०णवणोक० असंखेजमागवड्धअवद्धि

जह० एगसमओ । संखेजमागव ड़ संखेजगुणवड्डिसंखेजगुणद्ाणी जद ० अंतोध्रु० ।

उक० सब्वेसि पि अद्रारस सागरो सादिरेयाणि । अषंखेजमागहाणी जह०

एगसमओ उक्क० अंतोघ्चहु० । संखेजमागहाणी० जद० अंतोषहु० उक्क० एकत्तीसं

सामरो० देखणाणि। एवमणंताणु चडक ० । णवरि असंखेज्ञमागहाणी ० जह ० एगस० ।

तिष्णिह्ाणिअवन्तव्वं जह० अतो । उक सब्वेसि पि एकत्तीससागरो ० देखणाणि।

सम्भत्तसम्भामि तिण्णिवड्डिदोदाणी जह० अंतोषुहु । असंखेज्ञमागहाणी जह

एगस ० । असंखेजगुणव इअसंतेज्ञगुणहाणि अवत्तव्य जह ० पलिदोब ० असंखेज्ञदिमागो ।

उक्ष ० सब्ब एकत्तीसं सागरो० देष्ठणाणि । अबद्धि जद्द० अंतोषठहु० उक०

काल प्रथक्त्नकोटिपूव है अतः जो संज्ञी तिर्य॑च अपने योग्य उत्कृष्ट स्थितिसत्त्वके साथ असंज्ियोंमें

उत्पन्न होकर वहाँ पर पूर्वकोटिप्रथक्त्त काल तक असंख्यात व संख्यातभागहानि द्वारा उत्कृष्ट स्थिति

को घटाता रदा डसके उक्त पदोंका उत्कष्ट अन्तर प्रथक्त्वपूर्ैकाटि दत्ता है । भनुष्योंमें असंज्ञी नहीं

होते अतः मनुष्योंमें पूवेकोटिप्रथक्थ अन्तर संभव नहीं है। तथा मलुष्योंके इन प्रकृतियोंकी

असंख्यातगुणहानि भी होती है सो इसके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरका खुलासा जिस प्रकार ओघमें

किया है उषी प्रकार यहाँ भी कर लेना चादिये । यहाँ सम्यक्त्व और सम्यग्सिध्यात्बका और सब

कथन तो पंचेन्द्रियतियंचोंके समान है किन्तु असंख्यातगुणदानिके जघन्य अन्तरकालमें कव

विशेषता है । बात यद है कि उक्त तीनों प्रकारके मनुष्य दर्शनमोद्दनीयकी क्षपणा भी करते हैं अतः

इनके सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातराणदानिका जघन्य अन्तर अन्तयुहूतं प्राप्त दो

जाता है। तथा इसका उत्कृष्ट अन्तर वही है जो तिर्यचोके बतलाया है। इसका खुलासा पहले

किया दी है। इसी प्रकार अनन्तानुवन्धीका भी खव कथन यहाँ पंचे्द्रयतियेचोंके समान है ।

किन्तु विशेषता इतनी है कि पंचेन्द्रियतियंचोंके जो अनन्तानुवन्धीकी असंख्या तभागवृद्धि भव

स्थित संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूवेकोटिप्थक्त्ब बतलाया

है बह यहाँ कुछ कम पूर्वकोटि होता है।

३३० देबगतिमें देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभाग

द्धि चौर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय तथा संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि और

संख्यातगुणद्वानिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूर्त है । तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारद्द सागर

है । असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है। संख्यातभाग

हानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकतीस सागर है । इसी प्रकार

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभाग

द्वानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा तीन द्वानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और

सबका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकतीस सागर है । सम्यक्त्व चौर सम्यम्मिथ्यात्वक्षी तीन वृद्धि

ओर दो द्वानियोंका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्तं असंख्यातभागह्वानिका जघन्य अन्तर एक समय

तथा असंख्यातगुणवृद्धि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यात्वें

भागप्रमाण है तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुदं कम इकतीस खागर है। अवस्थितका जघन्य

भा० प्रतो जह० पगस असंखेजगुणवड़ी असंखेजगुणहाणी अवत्तव्व॑ जह० अंतोम्रु० । उक्र

एकत्तीससागरो० इति पाठः ।

२६

Page 221:

२०२ जयघवलासद्दिदे कसायपाहुडे दविद्विदत्ती ३

अड्डारम सागरो० सादिरेयाणि एवं भवणादि जाव सहस्सारो त्ति। णवरि सगसगु

कस्सट्टिदी वत्तव्वा ।

३३१ आणदादि जाव उवरिमगेवज्ञो त्ति मिच्छत्तबारसक ०णवणोक० असंखेज

भागहाणी० जहण्णुक ० एगस० । संखेज़मागहाणी० जह ० अंतोग्रहुं उक्ष० सगड्ठिदी

देखणा । सम्मत्तसम्मामि० असंखेजभागवड्डिसंखेज़मागदाणी० जद अंतोध्ुहु० ।

असंखेज्जमांगहाणी ० जह० एगस० । तिण्णिवड्डिदोहाणिअवत्तव्व ० जह० पलिदो०

असंखेज्जदिमागो । । उक० सव्वेसिं पि सगट्ठिदी देखणा । अणंताणु चउक् असंखेज्ज

मागहाणी जह ० एगध० । त्िण्णिहाणिअवत्तव्ब जह ० अंतोमुहुण । उक ० सब्वेसि

पि सगड्डिदी देखणा। अणुदिसादि जाव सब्बड्डसिद्धि ति मिच्छत्तबारसक णवणोक०

असंखेजजमागहाणी ० जहण्णुक० एगस । संखेउत्भागदाणी जहण्णुक० अतोुहु ।

एवं सम्मामि० । सम्मत्त एवं चेव णवरि संखेज्जगुणहाणीए णत्थि अंतरं । अणंताणु०

चउक० असंखेज्जभागहाणी जहण्णुक एगस ० । तिण्णिहाणी ० जहण्णुक० अंतोष्चु ।

अन्तर अन्तमुहूते और उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारद सागर है। इसी प्रकार भवनवासिरय चे लेकर

सहस्तार कल्पतक जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति

कदनी चाहिये।

३३१ आनतकल्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयक तकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नो

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल एक समय है। संख्यात

भागद्वानिका जघन्य अन्तरकाल अन््तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल छुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण

है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर

अन्तर्मुहूते असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा तीन वृद्धि दो दानि नौर

अवक्तन्यका जघन्य अन्तर पस्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ

कम अपनी स्थितिप्रमाण है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर एक

खमय तथा तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त है और समीका उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण है। अनुदिशसे लेकर सर्वाथेसिद्धतकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह

कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है।

संख्यातभागदानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहुते है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्की अपेक्षा

जानना चादिए । सम्यक्त्वकी अपेक्षा भी इसी प्रकार जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि

संख्यातगुणहानिका अन्तर नहीं है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर एक समय है तथा तीन ह।नियोंक जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त है।

विशेषाथदेवॉमें २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्धि संख्यातभागबृद्धि संख्यातगुणबद्धि

संख्यातगुणद्ञानि और अवस्थित ये पद वारव कस्पतक ही दते हैं अतः इनका उत्कृष्ट अन्तरकाल

साधिक अठारह खागर कदा है। तथा इनकी संख्यातमागहानि नोवे ग्रेेयक तक दोती है इसलिये

इसका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम ३१ सागर कदा है। यहाँ अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना भी होती

है अतः अनन्तानुबन्धीकी असंख्यातभागद्दानि आदि चार द्वानि और अवक्तव्यका उत्कृष्ट अन्तर

काल कुछ कम इकतीस सागर प्राप्त द्वोता है। इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके अब

स्थितपदकों छोड़कर शेष सब पदोंका उत्कृष्ट अन्तरकालः कुछ कम इकतीस स्रागर घटित कर लेना

Page 222:

भा० रर बेंड्डिपंरूबणाए अंतरं २०३

३३२ इंदियाणवादेण एइंदिए्सु असंखेज्जभागवड्डिअव्धि० जद एगस ०

उक० अंतोघ्ठ्हु० । शएवमसंखेज्जमागहाणीए वि वत्तव्वं । संखेज्जभागहाणिसंखेज्जगुण

हाणीणं णत्थि अंतरं पंचिंदिण्सु आदचट्टिदिकंडएसु एहंदिएणु पदमाणेसु संखेज्जमाग

हाणिसंखेन्जगुणहाणीणं तत्युवलंमादो । मिच्छतसोरसक ०णवणोकसायाणमेसा

9 ०

परूबणा । सम्मत्तसम्मामि असंखेज्जमागहाणो जहण्णुक एगस । असखज्ज

गुणहाणी० णस्थि अंतरं । संखेज्जमागदाणिसंखेज्जगुणदाणीणं जदृण्णुक० पलिदो०

असंखेञ्जदिमागो । इदो पंचिदिश्ण आरड्ह्विदिकंडएण एइंद्एस बादिय संखेज्जभाग

५ त

हाणिसंखेज्नगुणदाणीणमादि कादूण भसंखेज्जभागहाणीए अंतरिय जदण्णदी हुव्वेषटण

क त

करेहि सम्मत्तसम्मामिच्छताणि उन्वेल्लिय उकस्ससंखेज्जमेत्तणिसेगेस सेतेसु संखेज्ज

भागहाणीए लद्धमंतरं । दोसु णिसेगेस एगणिसेगे गलिदे संखेञ्जगुणहाणीए लड्धमंतरं

9 कका 9 3 बादरेदं 9

जेण तदो पलिदो० असंखेञजदिभागमेत्तमंतरं सिद्धं । एवं दियसुहमेइंदियपुढबि ०

बादरपुढविसुहुमपुठति ०अआउ ०बादरआउ ०सुहुमआउ ०ते3 ० बादरतेउ ०सुहुमतेउ ०

चाहिये । किन्तु अवस्थित पद् बारहवें स्वगे तक ही पाया जाता है आतः उसका उष अन्तरकाल

साधिक अठारद सागर कदा है । रोष कथन सुगम है । भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार तक थद श्रोघ

प्ररूपणा बन जाती है अतः उनके कथनको सामान्य देवोंके समान सममना चाहिये। किन्तु उत्कृष्ट

अन्तरकाल जहाँ साधिक अठारह सागर या कुछ कम इकतीस सागर कदा है वहाँ कुछ कम अपनी

अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण कहना चाहिये। इसी प्रकार आगेके कस्पोमे भी यथायोग्य बरही

विशेषताओंको ध्यानमें रखकर अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिये ।

३३२ इन्द्रियमार्गंणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें असंख्यातभागबृद्धि ओर अवस्थितका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुंहू्त है। इसी प्रकार असंख्यातभागद्वानिका

अन्तर भी कहना चाहिये। संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदानिका अन्तर नहीं है क्योंकि

जिन्होंने स्थितिकाण्डकोंका आरम्भ कर दिया है देवै जो पंचेन्द्रिय एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके

ही संख्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानि पाई जाती हैं। यह प्ररूपणा मिथ्यात्व सोल कषाय

और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा की है। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यासवकी असंख्यातभागद्वानिका

अधन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है । असंख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है । संख्यातभागहांनि

और संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर प्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है क्योकि

पंचेन्द्रियके द्वारा आरम्भ किये गये स्थितिकाण्डकका एकेन्द्रियमें आकर घात किया और इस प्रकार

संख्यातभागहानि तथा संख्यातगुणद्वानिका प्रारम्भ किया अनन्तर असंख्यातभागद्दानिके द्वारा अन्तर

करके जघन्य और उत्कृष्ट उद्वेलनाकालके द्वारा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्देलना करते हुए

जब उनके निषेक उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण शेष रद जायें तब पुनः संख्यातभागद्ानि दती है ओर इस

प्रकार चूँ कि संख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर प्रा्च होता है। तथा अन्तमं शेष रहे

दो निषेकोंमेंसे एक निषेकके गलित होनेपर चकि संख्यातगुणदानिका अन्तर प्राप्त होता है अतः

दोनोंका अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध हुआ। इसी प्रकार बादर एकेन्दरिय

सूम एकेन्द्रिय प्रथिबीकायिक बादर प्रथिवीकायिक सूक्ष्म प्रथिवीकायिक जलकायिक बादर जल

कायिक सूद्दम जलकायिक अभिकायिक बादर अपिकायिक सूस अप्िकायिक वायुकायिक

श्रा० प्रतौ संलेजमागहाणीणमादिं इति पाठः

Page 223:

२०४ जयघबलासहिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

बाउ०बादरबाउ ०सुहुमवाउ ०वणप्फद्बादरवणप्फद्् ०सुहुमबणप्फदि ० णिगोद

वादरणिगोदसुहम णिमोदबादरवणप्फदिपत्तयसरीरा तति ।

३३३ बादरएडंरियपज्जत्तएस मिच्छत्तसो लसक ०णवणोक ० असंखज्जमागव्लि

असंखेज्जमागहाणिअबद्विद ० जह० एगस० उक्क० अंतोम्रहु० । संखेऽजमागहाणि

संखेज्जगुणदाणीणं णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि० असंखेज्जभागहाणी ० जहण्णुक०

9 ५ कप णीर्ण ० क्प

एगस० । संखेजजभागहाणिसंखेञ्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणहाणीणं णत्थि अंतरं संखेज्ज

वस्प्सहस्समेत्तपज्जत्तड्टिदीदो उच्वे्ठणकारस्स बहुत्तादो। एवं बादरेइंदियअपज्ज०

सुहमेइंदियपजत्तापज्त्तबादर पुट विअपज्ञ ०सुहुमपुटविपज्त्तापज्जत्बादरआउअपज्ञ ०

सुहुमआउपज्जत्तापज्जत्तबादरतेउअपज्ज ०सुहुमतेउपज्जत्तापज्जचबादरवाउ अपञ्ज ०

सुहुमबाउपज्जत्तापज्जत्तबादरवणप्फदिअपज्ज ०सुहमबणप्फदिपज्जत्तापज्चबादरणिगोद

अपज्ज ०सुहुमणिगोद्पज्जचापञ्जत्तबाद्रवणष्फदि पत्तेयसरीरअपञ्ज ०बाद्रपुढविपज्ज ०

बादरआउपज्ज ०बादस्ते उपज्ज ०बादरवाउपज्ज ०बादरवणप्फद्पिज्ज ०बाद्रणिगोद

पज्ञ०बाद्रवणप्फद्िपत्तयसरीरपज्जते त्ति। सब्वविगलिंदियाणमसंखेज्जमागवड्डि

असंखेज्जभागहाणिअवद्विदाणं जह० एगसमओ उक० अंतोघ्रहु० । संखेज्जमागवड्ि

संखेज्जमागद्दाणीणं॑ जहण्णुक० अतोहं । संखेज्जगुणहाणीए णत्थि अंतरं । छब्बीस

पयडीणमेसा परूवणा । सम्मत्तसम्भामि० असं खेज्जमागहाणी जदण्णुकक एगस० ।

बादर वायुकायिक सदम वायुकायिक बनस्पत्तिकायिक बादर वनस्पतिकायिक सूक्ष्म बनस्पतिकायिक

निगोदबादर निगोद सूक्ष्म निगोद और वाद्र वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके जानना चाहिए ।

३३३ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नो नोकषायोंकी

असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर अन्तममुहू् है । संख्यातभागदानि और संख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है। सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्ानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है। संख्यातभाग

हानि संख्यातगुणद्ञानि और असंख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है क्योंकि पर्याप्तककी संख्यात हजार

वर्षप्रमाण स्थितिसे उद्देलनाका काल बहुत है। इसी प्रकार बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय

पर्याप्त और अपर्याप्त बादर प्रथिवीकायिक अपर्याप्त सूच्रम प्थिवीकायक पर्याप्त और अर्पाप्त बादर

जयकायिक अपर्याप्त सदम जलकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त बादर अभिकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म अपि

कायिक पर्याप्त और अपर्याप्त बादर बायुकायिक अपर्याप्त सूदम वायुकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त बादर

बनस्पतिकायिक अपर्याप्त सूइ्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त बादरनिगोद् अपरयाप्त सूद्म

निगोद पर्याप्त और अ्रपर्याप्त बादर बनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त बादर प्थिवीकायिक पर्याप्त

याद्र जलकायक पर्याप्त बादर अप्निकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक

पर्याप्त बादरनिगोद पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीबोंके जानना चादिए। सब

बिकलेन्द्रियों में असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागद्दानि और अवस्थानका जघन्य अन्तर एक समय

ओर उत्कृषट अन्तर अन्तमुंहूते है। संख्यातभागशृद्धि और संख्यातभागद्वानिक्रा जधन्य और उत्कृष्ट

अन्तर अन्तमुंहूते है। संख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है। यद्द भ्रूपणा छब्बीस प्रकृतिर्योकी

क्षपेक्षासे की टै । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर

Page 224:

गा० २२ बह्डिंपरूवणाए अंतर २०४

संखेज्जमागहाणिसंखेज्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणहाणीणं णत्थि अंतरं ।

३३४ पंचिदियपंचि पञ्जत्तण्सु मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखेञ्जमाग

बड्डिअवदि ० जह ० एमसमभो उक्त तेबट्टिसागरोवमसदं अंतोप॒हुत्तब्महियतीहि

पलिदोबमेदि सादिरेयं । असंखेन्जमागहाणी० जद ० एगस० उक ० अंतोघुहु० ।

संखेज्जगुणवड़िसं खेज्जगुणदहाणीणं जह अंतोषठहु० उक्ष ० तेबद्धिसागरोवमसदं दोहि

अंतोम्न॒हुत्तद्द अभ्महियतीहि पलिदोवमेहि सादिरेयं । संखेज्जभागवड्डिसंखेज्जभाग

हाणौणमेवं चेव । णवरि संखेञ्जभ।गहाणीए पलिदो० असंखेज्जभागेणन्महियतेवह्धि

सागरोवमसदं । असंखेज्जयुणहाणीए जदण्णुक ० अंतोम्न॒हु० । एवमणंताणु चक ० ।

णवरि असंखेज्जभागहाणीर जह० एगस० उक ० वेछाबह्टिषामरो० देष्णाणि ।

असंखेज्जगुणहाणिअजवत्तव्वाणं जह अंतोघुहुत्तं उक ० सागरोवमसहस्पं पुव्बकोडि

पृधत्तेणब्भहियं सागरोवमसदपुषततं । सम्मत्तसम्मामि तिण्णिवड्डितिण्णिहाणि ०अवद्धि

जह अंतोघुहु० । असंखेज्जमागहाणी० जह० एगस ० असंखेज्जगुणव डि अवत्तच्वं

जह ० पलिदो० असंखेज्जदिभागो। उक सव्वेभिं पि सागरोबमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तण

ब्महियं सागरोवमसदयपुधततं देखण । एवं तसकाइयतसकाध्यपज्जत्ताणं । णवरि सगसमु

कस्सट्ठिदी वत्तव्वा। संखेज्जभागवड्डिसंखेज्जगुणवड्डीणं जदण्णंतरस्त ओघपरूबणा

क् समय है । संख्यातभागदानि संख्यातशुणदानि ओर असंख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है।

३३४ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय श्रौर नो नोकषायोंकी

असंख्यातभागबवृद्धि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहू्ते

और तीन पल्य अधिक एकसौ त्रेसठ सागर है । असंख्यातभागदहानिका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ठ अन्तर अन्तमुंहूत हे । संस्यातगुणढरद्धि मौर संख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर अन्तु

हूते और उत्क्ृष्ठ अन्तर दा अन्तमुहूत और तीन पल्य अधिक एकसो त्रेसठसागर है । संख्यात

भागनरद्ध ओर संख्यातभागदानिका अन्तर इस प्रकार जानना चादिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि

संख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तर पस्यका असंख्यातवाँ भाग अधिक एकसो त्रेसठ सागर है।

असखंख्यातगुणदानिका जघन्य ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त है। इसी भकार अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी अपेक्षासे जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता हे कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर

एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एकसो बत्तीस सागर है। असंख्यातगुणहानि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते और उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्बकाटप्रथक्व अधिक हजार

सागर और सौ सागरप्थक्त्व है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि तीन हानि और अवब

स्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुहूते असंख्यातभागदहानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा असंख्यात

गुणबृद्धिऔर अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। तथा सभीका उत्क्षष्ट अन्तर

क्रमशः कुछ कम पूववेकाटिप्रथक्त्बसे अधिक एहज्ार सागर और कुछ कम सो सागरप्रथक्स्व है। इसी

प्रकार त्रसकायिक ओर त्रसकारयिकपर्याप्त जीवोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि

अपनीअपनी उत्कृष्ट स्थिति कदनी चादिये। संख्यातभागबृद्धि और संख्यावगुणबद्धिके जघन्य अन्तरकी

ओषघके मान प्ररूपणा करना चाहये । पंचेन्द्रियअपर्याप्त और त्रसअपर्याप्त जीबोंके पंचेन्द्रियतियेंच

३ ता० अरतौ भवदहि० भ्षंतरोमु० इति पाठः ।

Page 225:

२०६ अयधवलासहिदे कंसायपाहुडे हिदिंनिहत्ती ३

कायव्या । पंचिदियअपज्ज ०तसअपज्जत्ताणं पंचिं०तिरिक्खअपज्जत्तभंगो । णवरि तस

अपज्ञज० दोबड्डी० जह० एगसमओ ।

३३५ जोगाणुत्रादेण पंचमण०पंचवचि० असंखेज्जमागवड्डि ०असंखेज्जभाग

हाणिअवड्विदाणं जद० एगसमओ उक्ष अतो । संखेज्नभागव ड संखेज्जमागदहाणि

अपयाप्तकोंके समान भंग द्वे। किन्तु इतनी विशेषता है कि त्रस अ्रपर्याप्तकोंके दो बृद्धियोंका

जघन्य अन्तर एक समय है ।

विशेषाथे यदो ओघसे यद्यपि मिथ्यात्य बारह कषाय और नो नोकपायों की अ संख्यात

भागवृद्धि और अवस्थित पद्का उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन पल्य अधिक एकसौ त्रेसठ सागर बतलाया है

पर यद समान्य निर्देश है। विशेषनिर्देशकी अपेक्षा तो इसमें एक अन्तमुंहूते काल और मजाना

चाहिये क्योंकि उपरिम प्रवय रुसे च्युत होकर को।टपूवै आयुबाले मनुष्यामें उत्पन्न होनेवाले जीबके

एक अन्तमुंहूर्त कालतक असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितपद नहीं होता इसलिये यहाँ पंचे

न्द्रिय और पर्याप्तकोंके उक्त प्रकृतियोके उक्त दो पदोंका उष्छष्ट॒ अन्तरकाल अन््तमुंहूतें और

तीन पस्य अधिक एकसो त्रेलठ सागर कदा है। इसी प्रकार संख्यातगुणबछ और सख्यातगुण

इानिका उत्कृष्ट अन्तर जा दो अन्तमुहूत और तीन पस्य अधिक एकसौ त्रेसठ सागर कहा है वहाँ

भी तीन पल्य अधिक एकसो त्रेलठ सागर कालके प्रारम्ण और अन्तमें प्राप्त होनेबाला अन्तरका

एकएक अन्तमुहूत काल ओर बढ़ा लेना चाहिये क्योंकि भोगभूममे उत्पन्न देनेवाले जीवके

कमस कम एक अन्तमुहू्त काल पहलेसे संख्यातगुणब्ृद्धि और संख्यातगुणद्वानि नदीं होती और

नोवे प्रवेयकसे च्युत हुए जीवके भी कमसे कम एक अन््तमुंहूर्त कालतक ये पद् नहीं दोते ।

संख्यातभागदानिका उस्कृष्ट अन्तर काल जो पल्यके असंख्यातवेंभाग अधिक एकसो त्रेसठ सागर

बतलाया है सा इस अन्तरका कारण असंख्यातभागद्वानिका उत्कृष्ट काल जानना चाहये जिसका

बिस्तारसे विवेचन काल प्ररूपणामे किया दी है । अनन्ताजुतन्धोकी विसंयोजनाके वाद् पुनः उसके

संयुक्त होनेमे सबसे अधिक काल छू कम एकसौ वनत्तास सागर लगता है अतः यहाँ अनन्ताु

बन्धकी असंख्यातभागद्वा।नका उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्त प्रमाण बतलाया है । पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय

पर्याप्रकोंका उत्कृष्ट काल क्रमशः पूवको टि प्रथक्त्व अधिक एक हजार सागर और सो सागरप्रथक्टव

है । अब यदि इन जीवने अपने अपन कालक प्रारम्भे मौर अन्तमें अनन्तानुवन्धीकी बिसंयीजना की

और विसंयोजनाके बाद यथायाग्य उससे संयुक्त हुए तो इनके अनन्ताजुबन्धीकी असंख्यातगुणहानि

और अवक्तव्यका उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्त प्रमाण प्राप्त दोता है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब

पदोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी अपना विशेषताका विचार करके इसी प्रकार घटित कर लेना

चादिये। पश्चेन्द्रिय ओर पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान चसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकोंके कथन

करना चादिये। किन्तु जहाँ जहाँ पंचेन्द्रथ ओर पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट स्थिति कही दो वहाँ

बहाँ त्रसकायिक ओर त्रसकायिकपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट स्थिति लेनी चाहिये। तथा त्रसोंमें विकल्त्रय

जीव भी सम्मिलत हैं अतः इनके संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणव्रद्धिका जघन्य अन्तर

ओघके समान बन जाता दै । त्रस अपर्याप्तकोंके दा ब्रद्धियोके जघन्य अन्तर एक समय बतलानेका

भी यही कारण है । शेष कथन सुगम है ।

३३४ योगमार्गणाके अजुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों बचनयोगी जीवों असंख्यात

भागवृद्धि असंख्यातभागद्वानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

अन्तसुंहते है । तथा संख्यातभागबृद्धि संख्यातभागद्वाति संख्यातगुणवृद्धि संख्यातगुणदानि और

Page 226:

शा०२२ चद्डिपरूवणाए अंतरं २०७

संखेज्जगुणव ्िसंखेजजगुणहाणिअसंखेज्जगुणाणीणं णत्थि अंतरं । एसा पर्वणा

छव्बीसपयडीणं दडुव्वा । अणंताणु ० च उक ० अवत्तव्व ० णत्थि अंतरं । छुदो १ अणंनाणु

बंधिविसंजोहदसम्भाहट्टी संजतो होदण जदण्णमिच्छततद्धमच्छिय पणो सम्मत्त चेत्तण

सच्बजङण्णेण कालेण अणंताणु० विसंजोहय पुणो जाव संजुत्तो होदि ताव ॒एगजोगस्स

अवद्काणामावादो । सम्पत्तसम्मामि असंखेज्जमागहाणीए जह ० एगसमओ उक्क०

अंहु । चत्तारितष्टि ०तिण्णिद्याहि ०अयडि ०अवन्तव्वाणं णत्थि अंतरं ।

३३६ कायजोगि मिच्छत्तबारसक ०णवणोक० असंखेज्जभागवङ्िअवद्धि ०

जह० एगस ० उक० परिदो० असंखेज्जदि पागो । संखेज्जभगबड्डिसंखेज्जगुणवड्डीणं

जह० एगस ० । इत्थिपुरिस० संखज्जभागवड्डीए जह अषु । संखेज्जमागहाणि

संखेज्जगुणहःणंणं जह ० अंतोषुद । उक ० सव्वेसिं परि असंखेज्जा पोग्गलपरिय्टा

असंखेज्जभागहाणीए जह० एगस० उक अंोदु । असंखेज्जगुणहाणीए णर्थि

अंतरं । एवमणंताणु चउकस्स । णवरि अवत्तव्व० णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि०

चत्तारिबड्डिअवद्टि ०अवत्तव्वाणं णस्थि अंतरं । असंखेजजभागहाणी० जह ० एगस ०

५ अप का

उक० अंतोम्महुण । कदो १ चरिमफारि पादिय असंखेज्जमागदाणीए् कायजोगेण अंतरं

कादृण गिस्संतकम्मिभो होदृण अणियद्धिकरणद्धाए अब्भंतरे अंतोम्नहृत्तमेत्तमंतरिय

कायजोगदुचरिमसमए सम्मतं चेत्तण अवत्तव्बेणंतरिय चरिमसमए असंखेज्जभागद्दाणीए

अखंख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है। यह १रूपणा छब्बीस प्रकृतियोंकी ज्ञाननी चाहए। अनन्तानुबन्धी

चतुष्कके अवक्तव्यका अन्तर नहीं है क्योंकि अनन्तालुबन्धीचतुष्ककी विसंयोजना करनेबाला

सम्यग्टष्टि जीब मिथ्यात्वमें जाकर और अनन्तानुबन्धीपे संयुक्त होर तथा सबसे जघन्य काल तक

मिथ्यात्वमें रह कर पुनः सम्यक्स्वको अहण करके और सबसे जघन्य कालके द्वारा अनन्तानुबन्धीकी

विसंयोजना करके पुनः मिथ्यात्वमें जाकर जबतक अनन्तानुबन्धीसे संयुक्त होता है तबतक एक

योगका अवस्थान नहीं रहता है । सम्यक्त्व श्रौर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य

अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूतं है । चार बृद्धि तीन हानि अवस्थित ओर अब

क्तव्यका अन्तर नहीं है ।

३३६ काययोगियोंमें मिथ्यात्ब बारह कषाय और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि

और अवस्थिता जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

संख्यातभ।गबृद्धि और संख्यातगृणबृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय तथा ख्रीवेद और पुरुषवेदकी

संख्यातभागबृद्धिका जघन्य अन्तर अन््तमुंहूर्त तथा सबकी संख्यातमागहानि सौर संख्यातगुणहानिका

जघन्य अन्तर अन्तमुहूतते है और सभीका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवतेनममाण है।

असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहू्ते है। तथा असंख्यात

गुणदानिका अन्तर नहीं है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु

इतनी विशेषता है कि अवक्तव्यका अन्तर नहीं है । सम्यत्त्व चौर सम्यम्मिथ्यात्वकी चार बृद्धि

अवस्थित और अवक्तव्यका अन्तर नहीं है । असंख्यातभागदहानिका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूतै है क्योंकि अन्तिम फलिका पतन करके और काययोगके साथ

असंख्यातभागद्वानिका अन्तर करके पुनः निःसत्तवकमेबाला होकर अनिच्त्तिरूरणके कालके भीतर

अन्तमुंहू्ते प्रमाण अन्तरके बाद काययोगके द्विचरमसमयमें सम्यक्त्वको ग्रहण करके और अवक्तव्य

Page 227:

र्ण्प जयघवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

कदाए अंतोझ्॒ दृत्तमेत्तंतरुवलंभादो । दोण्डं हाणीणं जह अंतोघ्म॒हु० उक्क० पलिदो०

असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जगुणहाणीए णत्थि अंतर ।

३३७ ओरालियकाय० मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० असंखेज्जभांगव्डि

अबद्ध ०असंखेज्जभागदहाणी जह ० एगस० उक० अंत । दोण्णिवड्डितिण्णि

हाणौणं णत्थि अंतरं । अणंताणुचउक अवत्तव्व० णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि

चत्तारिव्डि ०अव्ि ०अवत्तव्वाणं णत्थि अंतरं । असंखेज्जभागहाणी० जद ० एग ०

उक० अंतोम्न॒हु० । तिण्हं हाणीणं णत्थि अंतरं । ओरालियमिस्स० छन्बीसं पयडीणम

संखेज्जमागवड्असंखेज्जमागहाणिअवदह्िदाणं जह एगस ० उक० अंतोघ्ठ० । दोबडि

दोदाणीणं जण्णुक अंतोम्महु० । णवरि इत्थिपुरिसवेदधञ्जाणं संखेज्जमागत्रड्डी० जह०

एयस० । हस्परदिअरदिषोगइत्थिपुरिसणवंसयवेद संखेज्जगुणबड्डीए जदण्णमंतर

मेगसमओ । सम्मत्तसम्भामि० असंखेज्जमागहाणी जदेण्णुक एगसमओ । संखेज्ज

भागदाणिसंखेज्जगुणहाणी जहण्णुक ० अंतोषहु अथवा णत्थि अंतरं । असंखेज्ज

गुणहाणी णत्थि अंतरं ।

३३८ वेउव्विकाय० छन्ीसं पयडीणमसंखेजमागवडि अवटटिद् असंखेज्ञभाग

हाणीणं जह ० एगस० उ अंतो्हुचं । दोबड़िदोहाणीणं अणंताणुचउक ० असंखेजगुण

दाणीए अवत्तव्वं णत्थि अंतरं । सम्मत्तसम्मामि चत्ता रिव्डिअवष्टि ०अवत्तव्वाणं णत्थि

स्थितित्रिभक्तिका अन्तर करके अन्तिम समयमें असंख्यातभागहानिके करनेपर असंख्यातभागद्वानिका

अन्तमुंहूर्तप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर पाया जाता है। दो ह्वानियोंका जघन्य अन्तर अन्तसुहूतं ओर

उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवेंभागप्रमाण है। असंख्यातगुणद्वानिका अन्तर नहीं है ।

३३७ ओदारिककाययोगी जीबोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंख्यातभागवृद्धि अवस्थित ओर असंख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर अन्तमुंहूते है। दो वृद्धि और तीन ह्वानियोंका अन्तर नहीं है। अनन्तानुबन्धीचतुष्कके

अवक्तब्यका अन्तर नहीं है। सम्यक्व चौर सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका

अन्तर नहीं है। असंख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर एक खमय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त

है। तथा तीन द्वानियोंका अन्तर नहीं है। ओौद्ारिकमिश्रकाययोगियोमे छब्बीस प्रकृतियोंकी

असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागद्वानि ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर अन्तमुंहूर्त हे। दो बृद्धि मौर दो द्वानियोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूत्त है।

किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद ओर पुरुषवेदके चिना शेष प्रकृतियोंकी संख्यातभागवबृद्धिका

जघन्य अन्तर एक समय है। हास्य रति अरति शोक खीवेद पुरुषबेद और नपुंसकवेदकी

संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय है । सम्यक्त्व च्रौर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभाग

इानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय हे । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणद्वानिका जघन्य

और उत्क्रष्ट अन्तर अन्तमुहूत है । अथवा अन्तर नहीं है । असंख्यातगुणहानिक्रा अन्तर नहीं है ।

३३८ वैक्रियिककाययोगियों में छब्बीस श्रकृतियोंक्ी असंख्यातभागबृद्धि अवस्थित और

असंख्यातभागद्दानिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुहूत है । दो बद्धि और दो

हानियोंका तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका अन्तर नहीं है।

Page 228:

गा० २२ बद्टिपरूवणाए अंतरं २०६

अवरं । असंखेजञभागदाणी० जह० एयस० उक्क० अतो । षण्डं हाणीणं णत्यि

अंतरं। वेउब्वि०मिस्स० ओरालियमिस्स म॑मो । णवरि छव्बीसं पयडीणं संखेजमागवड्ढीए

सत्तणोक ० संख्ेज्जगुणबड्डीए च जहण्णमंतरमेगसम ओ णत्यि । किंतु अतोहं । कम्मइ्य ०

अद्टाबीसं पयडि ०सव्बपदाणं णत्थि अंतरं। एवमणाहारीणं । आहार ० आहारमिस्स सव्वाधि

पयडीणं असंखेजमागहाणीए णत्थि अंतरं। एवमकसा०नहाक्खाद ०सासण दिद्धि चि।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका अन्तर नहीं द ।

असंख्यातमभागदानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अतर अन््तमुहते हे । तीन हानि

योंका अन्तर नहीं ह वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोका भंग ओदारिकमिश्रकाययोगियोके समान

है। कितु इतनी विशेषता है कि छब्बीस प्रकृतिर्योको संख्यातमागबृद्धिका तथा सात नोकषा

योंकी संख्यातगुणवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय नहीं है किन्तु अन्तत ह । कार्मेणकाय

योगियोंमें जडवाईस प्रकृतियोंके सब पदोंका अन्तर नहीं ह । इसी प्रकार अनाहारकोंके जानना

चादिए । आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें सब ग्रकृतियोंकी असंख्यात

भागहानिका अन्तर नहीं ह । इसी प्रकार अकषायी यथाख्यातसंयत और सासादनसम्यम्दृष्टि

जीवोंके जानना चाहिए ।

विशेषार्थ चारों मनोयोग और चारों वचनयोगोंमें २६ प्रकरतियोंकी असंख्यातभागहानि

असंख्यातभागवृद्धि ओौर अवस्थित पदोंका अन्तरकाल तो बन जाता ह क्योंकि ये पद् कमसे कम

एक समयके अन्तरसे भी होते हैं इसलिये यहाँ इनका जघन्य जन्तरका एक समय और उत्कृष्ट

अन्तरकाल अन्तमुंहृ्ते कहा । किन्तु शेष पदोंका अम्तरकार नहीं बनता क्योकि उक्त मनोयोगोंके

कारसे शेष पदोंके अन्तरकाछका प्रमाण अधिक है । यहाँ अनन्ताजुबन्धीकी अवक्तव्यवृद्धिका

अन्तरकाछ कयो नहीं बनता इसका कारण मूख बतछाया ही है। उक्त योगबालोंमेंसे कोई एक

योगवाछा जीव सम्यक्त्व या सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि कर रहा है। अब दूसरे

समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त करके उसने अन्य पदों द्वारा असंख्यातभागहानिको अन्तरित कर दिया

और तीसरे समयमें वह् पुनः असंख्यातभागहानिको प्राप्न दौ गया तो असंख्यातभागहानिका

जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है । तथा कोई एक एेसा जीव है जो उक्त योगोंमेंसे विवश्चित

योगके कारके भीतर सम्यक्त्व और सम्यगम्मिथ्यात्वकी उद्ठेलना करता है तथा अन्तसुहूतैमे ही

सम्यक्त्वको प्राप्त करके पुनः इनकी सत्ताको प्राप्त होकर दूसरे समयसे असंख्यातभागहानि करने

कगता है तो उसके असंख्यातभागहानिका उत्क्रष्ट अन्तरकाछ अन््तमुहत प्राप्त होता द । यहाँ

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके शेष पदोंका अन्तरकाक नहीं बनता क्योंकि उक्त योगोंके कासे

शेष पदोंका जघन्य अन्तरकाल भी बड़ा है। असंख्यातभागहानिकाण्डकघातका उत्कृष्ट काल

पल्यके असंख्यातबें भागप्रमाण है अतएव काययोगमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषा

योंकी असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थित पदका उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण

कहा । काययोग का उत्कृष्ट काठ असंख्यात पुदूगछपरिवतेन है इसलिये इसमें उक्त प्रकृतियोंकी

संख्यातभागबृद्धि संख्यातगुणबुद्धि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका उत्कृष्ट अन्तरकाछ

उक्त प्रमाण बन जाता दै । कोई एक काययोगी जीव है जो सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

उद्देलना कर रहा ह । प्रारम्भमें और अन्तमें उसने इनकी संख्यातभागहानि और संख्यातगुण

हानि की तो इनका उत्क्रष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ प्रासम्भमें

स्थितिकाण्डकघातसे संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि प्राप्त करना चाहिये। और अन्तमें

जब जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण स्थिति शेष रह जाती है तब संख्यातभागहानि होती दे । तथा

२७

Page 229:

३१० लयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविद्व्ती ३

३३६ बेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु मिच्छत्तसो लसकऋ०णव्रणो० असंखेजमागबहि

असंखेजमागद्दाणिअवष्टि० ज० एगसम भो । संखेजभागव ड़ संखेज्ञमागहाणि संखेजगुण

हाणीणं जह० अंतोधु ० उक० सव्पेक्ि पि पणवण्णपल्दोवमाणि देष्ठगाणि । णवरि

अणनणु०्च उकयजञाणमसंखेजमागद्णो अंतोपुहृत्त । संखेजगुणगहीए संखेजमाग

बह्डिमंगो णवरि सत्तणोकसायाणं संखेजगुणबड्डीए जहण्णंतरमेगसमओ । असंखेज

गुणहाणीए जहण्णुक० अंतेषु । अणंताणुचउक ० असंखेजगुणहाणिअवत्तव्ब० ज०

दो निषेकोंके शेष रह जानेपर संख्यातगुणहानि दोती है। ओदारिकमिश्रकाययोगमें

२६ प्रकृतियोमेसे खीवेद और पुरुषवेदके बिना जो शेष प्रकृतिर्योकी संख्यातभागहानिका जघन्य

अन्तर एक समय बतराया है बह जो रूब्ध्यपर्याप्क दो इन्द्रिय स्वस्थानमें संख्यातभागवृद्धि

करता है और दूसरे समयमे अवस्थितविभक्तिको करके तीसरे समयमें औदारिकमिश्रयोगके

साथ तेइन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर संख्यातभागबृद्धिको करता है उसके प्राप्त होता है। इसी प्रकार

छब्ध्यपर्याप्तक तेइन्द्रियको चौइन्द्रियमें उत्पन्न कराके भी संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर एक

समय प्राप्त किया जा सकता है। तथा हास्य रति अरति शोक खीवेदः पुरुषवेद और नपुंसक

वेदकी संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर जो एक समय बतलाया है वह् इस प्रकार प्राप्न होता

हैजिसके सोछह कषाय और नौ नोकषायोंकी स्त्वस्थिति एकेद्रियके योग्य है ऐसा कोई एक

एकेन्द्रिय जीव सं्ञियोमे उत्पन्न हुआ। इसके अभी हास्यादिकमेंसे विवक्षित प्रकृतिका वन्ध नहीं

हो रहा है। अब शरीरअहण करनेके कुछ काठ बाद ओदारिकमिश्रकाययोगके रहते हुए

उसने जिसका अन्तरकाल प्राप्त करना हो उसकी पहले समयमें बन्ध द्वारा संख्यातगुणबृद्धि की

दूसरे समयमें अवस्थितविभक्ति की और तीसरे समयमें संक्लेशक्षयसे संख्यातगुणबद्धि की तो

इस प्रकार उक्त प्रकृतियोंमें संख्यातगुणवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त हो जाता है।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी संख्यातभागह्ानि और संख्यातगुणद्ानिका जघन्य और उत्कृष्ट

अन्तर कार अन्तुहूते बतलाया दे। इस प्रकार हैअन्तरकाछ जो अन्तमुंहूर्ते बतछाया है

बह स्थितिकाण्डक घातकी अपेक्षासे बतछाया दहै । पर ओदारिकमिश्रकाययोगमे इस प्रकारकी

स्थिति अधिकतर प्राप्त नहीं होती अतः इनका निषेध किया। ओौदारिकभिश्रकाययोगमें

जो दोइन्द्रिय तीन इन्द्रियॉमें और तीन इन्द्रिय चार इन्द्रियोंमें उत्पन्न होते

हैं उनके संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है। तथा जो केन्द्रिय या

विकलेन्द्रिय संज्ञियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके सात नोकषायोंकी संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर

एक समय प्राप्त होता है पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंसें इसप्रकार जीवोंका उत्पाद नही होता

अतः यहाँ उक्त पदोंका जघन्य अन्तर एक समय नहीं कहा । शेष कथन सुगम है ।

३३९ वेदमागंणाके अनुवादसे ख्रोवेद्योंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय तथा संख्यात

भांगवृद्धि संस्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूते है। तथा समीका

उत्कृष्ट अन्तर कुछकम पचवन पल्य है। किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्कके

बिना शेष भ्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूतै है । तथा संख्यातगुणबृद्धिका

भंग संख्यातभागबृद्धिके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि सात नोकषार्योको संख्यात

गुणबुद्धिका जघन्य अन्तर एक समय दै। असंख्यातगुणद्ानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्व

सह ह । अनन्तादुबन्धो चदुष्ककी असंख्यातगुणद्वानि और अवक्तव्यकाजघन्य अन्तर अन्तर्मुहृते

Page 230:

गो० ३२ बंड्िपरूवणाए अंतर २११

अंतोधु० उक० पलिदोबमसदपुधत्त सम्मत्तसम्मामि० तिण्णिवड्डिअवड्डाणा्ं जद ०

अंतोष्ठ० । असंखेजमागद्दाणी० जह० एगसमओ । असंखेजगुणवड्डिअवत्तव्वाणं जह०

५ ५ न

पलिदो० असंखेजञदिमामो। असंखेजगुणहाणीए जद ० अंतोधर ० उक सब्वेसि पि पलिदो

बमसदपुधत्तं देष्णं । संखेजभागदाणिसंखेजगुणहाणीणं ज० अतो उक्त पलिदो

वमसदपुधत्त देखणं । इदो १ पुरिसिवेदो णवुंसयवेदो वा सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि

उन्वेकममाणो अच्छिदो इत्थिवेदेसु उप्पण्णविद्यिसमए संखेजञमागदाणिसंखेलगुणदाणीगो

काऊण तदियसमए णिस्संतत्तणेण संखेजगुणद्वाणीए च अंतरिय पलिदोवमसदपुधततं संतेण

विणा अच्छिदूण अवसाणे सम्मत्त घेत्तण संखेज भागहाणिसंखेजगुणदाणौष कया

पलिदोवमसदपुधत्तंतरस्ुवरंभादो ।

३४० पुरिसवेदेस मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखेज्जमागव्डि अवष्ठि ०

जह० एगसमओ उक० तेबट्टिसागरोबमसदं तीदि पलिदोवमेद्दि सादिरेयं। असंखेज्ज

और उत्क्रष्ट अन्तर सौ पल्यप्रथक्त्व प्रमाण ह । सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी तीन बद्धि और

अवस्थानका जघन्य अन्तर अन्तसुंहूते असंख्यातभागद्वानिका जघन्य अन्तर एक समय असंख्यात

गुणबृद्धि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण तथा असंख्यातगुणहानिका

जघन्य अन्तर अन्तमुँहूर्ते है। तथा सभीका उत्क्रष्ट अन्तर कुछकम सौ पल्यप्रथक्त्व दै । संख्यात

भागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर अन्तसुंहूते और उत्कृष्ट अन्तर कछुछकम सौ पल्य

परथक्त्व है क्योकि एक पुरुपवेदी या नपुंसकवेदी जीव सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

उद्देलना कर रहा है पुनः उसने खीवेदियोमे उत्पन्न होनेके दूसरे समयमे संख्यातभागदानि ओौर

संख्यातगुणदानिको करके तीसरे समयमे उक्तकर्मोको निःसत्त्व करके संख्यातगुणहानिका अन्तर

किया। पुनः सौ पल्यघ्रथक्त्वतक सम्यक्त्व और सम्यग्मिश्यात्वके स्तवक बिना रहकर अन्तमं

उसके सम्यक्त्वको रहण करके संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदानिके करनेपर सौ पल्यघ्रथक्स्व

प्रमाण उत््ष्ट अन्तर प्राप्त होता द ।

विशेषा्लीवेदमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यावभागहानिका

उत्कृष्ट काल कुछ कम पचवन पल्य बतला अये हैं अतः यहाँ उक्त प्रकृतियोंकी असंख्यात भागवृद्धि

अवस्थित संख्यातभागबृद्धि संख्यातगुणबृद्धि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदानिका उत्कृष्ट

अन्तर कुछ कम पचवन पल्य कहा । यहाँ अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करके उसके अभावका भी

उत्कृष्ट काछ छुछ कम पचवन पल्य प्राप्त होता है अतः अनन्तानुबन्धीकी असंख्यातभागहानिका

उत्कृष्ट अस्तर काल मी उक्त प्रमाण कहा तथा खीवेदका उत्कृष्ट काल सौ पल्यप्रथक्त्व है । अब

यदि किसी जीवने प्रारम्भं जौर अन्तमं अनन्ताचुबम्धीकौ विसंयोजना की और तदनन्तर वद्

अन्तु कालके भीतर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ तो अनन्ताजुबन्धीकी असंख्यातगुणहानि और

अवक्तव्यका उत्कृष्ट अन्तर काछ सौ पल्यघ्रथक्त्वम्रमाण प्राप्त होता द । इसी प्रकार सम्यक्त्व

ओर सम्यम्मिथ्यात्वके सब पदोंका यथासम्भव उत्कृष्ट अन्तरकाल घटित करना चाद्ये ।

इसी प्रकार पुरुषवेदमे भी सब प्रकृति्योके यथासम्भव सब पदक अन्तरकालका विचार

कर लेना चाहिये। आगेकी मार्गणामिं भी इसी प्रकार काछ आदिको विचार कर अन्तरकाढ

घटित कर लेना चाहिए।

३४० पुरुषवेदियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय ओर नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि

और अबस्थितका जघन्य अतर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर तीन पल्य अधिक एकसौ त्रेसठ सागर

Page 231:

रेश्र जयध वलाखदिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती ३

भागहाणि जह० एगसमओ उक्क० अंतोमरु० । दोवड्डिदोहाणीणं जद ० अंतोम्रु० ।

णवरि सत्तणोकसायाणं संखेज्जगुणबड्डीए जहण्णंवरमेगखम ओ उक ० सव्वेिं पि तवद्ध

सामरोवमसदं तीहि पलिदोवमेहि सादिरेयं । णवरि संखेज्जमागहाणीए तेवद्धिसागरो

९ रेयं। असंखे ॥

समसदं पलिदो० अपंखे०भागेण सादिरेयं। असंखेयुणदाणी जहण्णुक० अंतोम्मु । एव

मणंताणु णचरि असंखेज्जभागदाणी जद० एगस ० उक० वेछावट्ठिप्तागरों ०

देखणाणि असंखेज्जगुणहाणिअवत्तव्व जह ० अंतोघ्म० उक ० सागरोबमसदपुधत्तं

५ ५ य

देखणं । सम्मत्तसम्मामि० तिण्णिवडितिण्णिहाणिअवड्टि ज० अंतोश्च । असंखेञ्ज

भागहाणी जह ० एयस ० असंखेज्जगुणवड्डिअवत्तव्य ज ० पलिदो ० असंखेज्जदिभागो।

उक ० सव्वेसि पि सागरोवमसदपुधत्तं देष्णं ।

३४१ णबुंसयवेदेषु मिच्छत्तबारसक०णवणोक असंखेज्जमागवड्डिअवष्ठि ०

जह ० एगस ० उक तेचीसं सागरो देखणाणि । असंखेज्जमागहाणी जह एस ०

उक ० अतो । दोबड्डिदोहाणी० ज० एगस० अंतोश्च । णवरि इत्थिपुरिस०

संखेज्जभागवड्डी अंतोु । उक स्वेति पि अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियहू ।

असंखेज्जगुणदाणी जहण्णुक्र० अंतोष्चु । एवमणंताणु चडक० । णवरि असंखेज्ज

भागहाणी ज० एगस ० उक्क० तेत्तीसं सागरो देखणाणि। असंखोज्जगुणहाणिअव

है। असंल्यातमागदानिका जन्य अन्तर एक समय और जक अन्तर नवसु है। दी

बृद्धि जौर दो हानियोंका जघन्य अन्तर अतमुहूर्त है। किन्तु इतनी विशेषता है कि सात नोक

षायोंकी संख्यातगुणब्॒द्धिका जघन्य अन्तर एक समय है। तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर तीन पल्य

अधिक एकसौ त्रेसठ सागर है । किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तर

पल्यका असंख्यातवाँ भाग अधिक एकस त्रेसठ सागर दै । असंख्यातगुणहानि का जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षासे जानना चाहिए। किन्तु

इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम एकसौ बत्तीस सागर है। असंख्यातगुणदानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन््तमुंहूते

ओर उत्क्ष्ट अन्तर कुछ कम सौ सागरप्थक्त्व है 4 सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन बृद्धि

तीन हानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुदूर्व असंख्यातभागद्ानिका जघन्य अन्तर एक

समय तथा असंख्यातगुणब्द्धि ओर अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम सौ सागर प्रथक्त्व है ।

३४१ नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय ओर नौ नोकषायोंकी असंख्यातमागबृद्धि

ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर दै । असं

ख्यातभागदानिका जवन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुदूते है। दो बृद्धि और दो

हानियोंका जघन्य अन्तर एक समय ओर अन्तयुहूतं ड । किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद

और पुरुषवेदुकी संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूते है । तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर

अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवतेनप्रमाण है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुह॒ते है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षासे जानना चाहिए । किन्तु

इतनी विरेषता दै कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ

कम तेतीस सागर दै । असंख्यातगुणदानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन््तर्मु हूत और

Page 232:

गा० रे२ बड्डिपरूबणाए अंतर २९३

त्तव्ब० ज० अंतोम् ० उक ० अद्भपोग्गलपरियं देष्णं । सम्मत्तसम्मामि० तिण्णिवड्डि

तिण्णिहाणिअवष्टि० ज० अंतोम् ० । असंखेज्जमागद्ाणी० ज० एगस० । असंखेज्ज

गुणबष्डिअवत्तव्ब ० ज० पलिदो० असंखेज्जदिभागो। उक सब्बेसिस्ुवड्ड पोग्गलपरियई ।

३४२ अबगद० चउबीसपयडीणमसंखेज्जभागहाणीए जहण्णुक्क० एगस० ।

दंसगतियअड्डकसायइत्थिणबुंसयवेदां संखेज्जमागहाणीष जहण्णुक० अंतोठहु ।

सेसाणं पयडीणमसंखेज्जमागहाणिसंखेज्जगुणहाणीणं जहण्णुक ० अंतोघुटुत्ं ।

३४३ कसायाणुवादेण कोधकपाईसु मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० असंखेज्ज

भागवड्डिअसंखेज्जभागद्गाणिअवद्ठि ० जद ० एगस ० उक० अंतोणु ० । संखेज्जमागबड्डि

संखेज्जगुणबड़ी ० जह एगस० उक अंतोम्म॒ुहु । णवरि इत्थिपुरिस० संखेज्जमाग

बड्डीए जहण्णंतरं अंतोुहु । संखेज्जमागद्राणिसंखेज्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणहाणीणं

जहण्णुक ० अंतोम्॒हुत्त एगकसायुदयकारो दोवडितिण्णिहाणीणमंतरादो बहुओ त्ति

दो णव्बदे कोधकसायोदएण खबगसेढिं चढाविय तदुदयकरालब्भंतरे संखेऽजसदस्स

ड्विदिकंडयपरूवयक्खवणसुत्तादो अणंताणु० अवत्तव्ब णत्थि अंतरं। सम्मत्तसम्मामि०

चत्तारिवष्टिअव्टि ०अवत्तव्व ० णत्थि अंतरं । असंखेऽजमागहाणी० जह० एगस०

उक० अतीद । संखेज्जभागद्वाणिसंखेज्जयुणहाणिअसंखेज्जगुणहाणी जहण्णुक०

उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अधंपुद्गकपरिवतैनप्रमाण हद । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वद्धि

तीन हानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय तथा असंख्यातयुणवद्धि ओर अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातबें भागप्रमाण है

तथा समीका उत्कृष्ट अन्तर उपार्धपुदूगछपरिवर्तनप्रमाण हे ।

३४२ अपगतवेदियोंमें चौबीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट

अन्तर एक समय है । तीन दशेनमोहनीय आठ कषाय खीवेद और नपुंसकवेदकी संख्यातभाग

हानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन््तमुंहू्ते दे ॥ शेष प्रकृतियोंकी संख्यातभागदानि और

संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते है ।

३४३ कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले जी वोम मिथ्यात्व सोलह कषाय और

नो नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि ५ असंख्यातमागदानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तु है । संख्यालमागबृद्धि और संख्यातगुणबद्धिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते हे । किन्तु इतनी विशेषता ह कि खीवेद् और

पुरषवेदकी संख्यातभागव्रद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्ते है । तथा संख्यातभागदानि संख्यात

गुणदानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहते है ।

शंका एक कषायका उदयकाक दो बृद्धि और तीन हानियोंके अन्तरसे अधिक है यह्

किंस प्रमाणसे जाना जाता है

५ समाधानक्रोधकषायके उद्यसे क्षपकश्रेणी पर चढ़ाकर उसके उद्यकालके भीतर

संख्यात हजार स्थितिकाण्डकोंकी क्षपणाके प्ररूपण करनेवाले सूत्रसे जाना जाता हे ।

अनन्तानुबन्धी चतुष्कके अवक्तव्यका अन्तर नहीं है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका अन्तर नहीं है। असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर

एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है । संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यात

Page 233:

२ जयेधवंलासदिदे कंसायपाहुडे दविदिविद्दत्ती ३

अंतोम्ुहु० । एवं माणभायालोभाणं पि वत्तव्वं ।

३४४ णाणाणुवादेण मदिअण्णागिसुद अर्णा ० मिच्त्त०सोलसक०णवणोक ०

असंखेज्जभागवड्डिअव्टि० अद ० एगस ० उक एकत्तीससागरो० सादिरेषाणि ।

कभ भ्त क्प

संखेञ्जमागवडिसंखेञ्जयुणवडधी जह ० एगस० । णवरि हत्थिपुरिस० संखेज्जमाग

बड्डो० जद अंतोष्ठु । संखेजमागदहाणिसंखेजगुणहाणी ज० अंतोषु० उक

सव्वेसिं पि असंखेजपोग्गलपरियट्ठा असंखेज्ञभागहाणी जद ० एगसमओ उक०

अंतोघ्ु० । सम्मत्तसम्मामि असंखेजमागहाणी जदण्णुक एगस ० । संखेजमागहागि०

संखेजगुणदाणी जह ० अतो ० उक दोण्हं पि पलिदो असं वेज्ञदिभागो । असंखेज

गुणहाणी ० णत्थि अंतर । एवं मिच्छादिद्वीणं विहंगणाणी० मिच्छचसोलसक ०णव

णोक० असंखेज़मागव ड्िअसंखेजमागद्ाणिअवट्टि० जइ एगस० उक्त ० अंतोघु० ।

संबेज्ञमागवड्डिसंखेजगुणवद्धिदोह्णीणं जहण्णुक० अंतोघ्ु० । सम्मत्तसम्मामि०

असंखेज्ञमागहाणी जहण्णुक ० एगस० । संखेज़मागद्दाणि संखेजगुणहाणी ज अंतोघु ०

उक पलिदो० असंखेजदिभागो । असंखेज़गुणहाणी णत्थि अंतरं ।

३४५ आभिणि०सुद ०ओहि मिच्छत्तबारसक ०णवणोक असंखेज़मागहाणी

जहण्णुक० एगस०। संखेजमागहाणिसंखेजगुणहाणो० जह० अतो ० उक्क०

गुणद्यानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते है । इसी प्रकार मान माया और खोम

कषायवाले जीवोके भी जानना चादिए ।

३४४ ज्ञानमागेणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों मिथ्यात्व सोलह

कषाय ओर नौ नोकषायोंकी जसंख्यातभागवृद्धि ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर साधिक इकतीस सागर है । संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर

एक समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि स््रीवेद और पुरुपवेदकी संख्यातभागबृद्धिका जघन्य

अन्तर अन्तमुंहू्त है । संख्यातभागद्दानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते है ।

तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यातपुद्गछपरिवतेन है। असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहू्ते है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागहानिका जघन्य और उच्छृ अन्तर एक समय है । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका

जवन्य अन्तर अन्तमुहूते और दोनोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

असंख्यातगुणहानिका अन्तर नहीं है। इसी प्रकार मिथ्यादृष्टि जीवोके जानना चाहिये।

विसंगज्ञानियोंमें मिथ्यात्व सोछह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागइद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तयुहूते है ।

संख्यातभागबृद्धि संख्यातगुणइद्धि और दो हानियोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहू्ते है ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्क्ष्ट अन्तर एक समय द।

संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूते और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके

असंख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातगुणहानिका अन्तर नहीं है ।

३४५ आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय

और नो नोकषायोंकी असंख्यातभागद्वानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय दै । संख्यात

Page 234:

गा० २२ घट्टिपरूषणाए अंतर १४

छाबवट्टिसापरो० देखणाणि णवरि बारसक०णवणोक० संखेजमागहाणीएं णवणउदि

सागरो० सादिरेयाणि। असंखेजगुणदाणीए जहण्णुक० अंतोम्मु । एवमणंताणु०

चउक० णवरि संखेजञमागद्ाणिसंखेजगुणहाणीणं मिच्छत्तमंमो । सम्पत्तसम्मामि०

अमंखेज़मागद्दाणी० जहण्णुक एगस० । संखेज़ञमागदाणिसंखेज़युणहाणी ० जह

अंतोघ्म ० उक० छावट्डिसामरो० देखणाणि अप्तंखज्जगुणहाणी जहण्णुक अंतोम्ु ० ।

एचमोहिदंसणसम्मादिद्ठणं ।

३४६ मणपज्ज० मिच्छत्तब्रारसक ०णबणोक० असंखेज्जभागद्वाणी ० जहण्णुक ०

एगस० । संखेज्जमागदाणिसंखेज्जगुणहाणी ० ज० अंते ० उकक० पुव्वकोडी देखणा ।

णवरि एदार्सि पयडीणं संखेज्जगुणद्ाणीए उक० अंतोघ॒हु । असंखेज्जगुणदाणीए

संखज्जगुणद्ाणिमंगो अणंताणु चउक् असंखेज्ञमागद्दाणा० जहण्णुक्क० एगस० ।

संखेज्ञभागहाणिसंखेजगुणहाणिअसंखेन्जगुणहाणीणं जहण्णुक अंतोपु०। सम्मत्त

सम्मामि मिच्छत्तमंगो । ह

३४७ संजमाणुवादेण संजदसामाइयछेदो संजदाणं मणपज्ञवर्ंगो ।

णवरि अणंताणु०चउक० संखेजमागहाणीए उकस्संतरं पुव्चकरोडी देखणा। इदो

पढमसम्पत्तेण संजमं पडिवज्ञगो मुदृत्तव्भंतरे एयंताणुवड्ीए सव्वकम्माणं संखेजभागहणि

भागहानि और संख्यातगुणद्ञानिका जघन्य अन्तर अन्तमुहूते और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छथासठ

खागर है । किन्तु इतनी विशेषता है कि बारह कषाय और नौ नोकषा्योकी संख्यातभागहानिका

साधिक निन्यानवे सागर है । असंख्यातगुणदानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूते है। इसी

प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातमागदानि

और संख्यातगुणहानिका भंग मिथ्यात्वके समान द । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है । संख्यातभागहानि और संख्यातरुणदानिका

जघन्य अन्तर अन्तमुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छचासठ सागर है। असंख्यातगुणहानिका

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त है। इसी प्रकांर अवधिद्शनवाले और सम्यण्दष्टि

जीवोकि जानना चाहिए ।

३४६ मनःपययज्ञानियोंसें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यात

भागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है । संख्यातभागहानि ओर संख्यातगुणहानिका

जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूब॒ंकोटि है। किन्तु इतनी विशेषता है कि

इन प्रकृतियोंकी संख्यातगुणद्वानिका उत्क्रष्ट अन्तर अन्तमं ह । असंख्यातगुणहानिका भंग

स॑ख्यातगुणहानिके समान है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागहानिका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर एक समय । संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुण

हानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तयुहूत है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका भंग

मिथ्यात्वके समान ड ।

३४७ संयम मार्गणाके अनुबादसे संयत सामायिकसंयत और छेदोपस्थापनासंयत

जीबोंका भंग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

संख्यातभागद्दानिका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूवेकोटि है क्योंकि प्रथमोपश्चम सम्यक्त्वके साथ

संयमको प्राप्त द्वोनेवाले जीवके एक मुहूर्तकाछके भीतर एकान्तानुवृद्धिके द्वारा सब कर्मोकी संख्यात

Page 235:

२१९ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविदत्ती ३

कादूण पुणो अंतोम्नहृत्तावसेसे आउए अणंताणु० विसंजोएंतस्स सव्वकम्माणं संखेज्ञ

भागहाणीए उवरंमादो । णेदं मणपलवणाणी लब्भदि उवसमसम्मत्तद्धाए उवसमसेढि

वजाए मणपजवणाणाणुप्पत्तीदो ।

३४८ परिहाससुद्धि ० मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामि ०अणंताणु चउकाणं

मणपज़ञ० गो । बारसॐ०णवणोक० एवं वेव । णवरि संखेजगुणदहाणिअसंखेजञ

गुणहौणीओ णत्थि । सुहुमसांपराय० बीसं पयडीणमसंखेज्भागहाणी णत्थि अंतरं ।

दं्षणतियलोभसंनल ० असंखेजमागहाणी० जदण्णुक्त एगस० । संखेजभागहाणी

जहण्णुक्ष अंत । लोमसंजल संखेजगुणहाणी एवं चेव । संजदासंजद् संजद्

भगो । णवरि बारसक०णवणोक० संखेजगुणदाणिअसंखेज्ञगुणहाणीओ णत्थि ।

३४६ असंजद् मिच्छत्त वारसक० णवणोक ० असंसेज्ञमागवड़अबद्धि

जह० एगस० उक० तेत्तीसं सागरो देखणाणि। संखेजमागवड्डिसंखेजगुणवड्डि

दोहाणीणमोधं । मिच्छत्त० असंखे गुणहाणी जहण्णुक ० अतोभ्रु । संखेज्ञगुणहाणी

जद ० एगस० उक ० अंतोप्ु । अणंताणु०चडउक मिच्छत्तमंगो णवरि असंखेज

भागहाणी० जह० एगस० उक तेत्तीसं सागरो० देखणाणि। अवक्तव्वमोषं ।

सम्मत्त ०सम्मामि० ओघमभंगो ।

मागहानि करके पुनः आंयुके अन्तमुहूते शेष रहने पर अनन्तानुवन्धीकी विसंयोजना करते हुये

सब कर्मक संख्यातभागहानि पाई जाती है किन्तु इस अन्तरको मनःपययज्ञानी नहीं प्राप्त

करता ह क्योकि उपशमश्रेणीको छोड़कर उपशमसम्यक्त्वके काठ मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति

नहीं होती है ।

३४८ परिहारविशुद्धिसंयतोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व ओर अनन्ताजुबन्धी

चलुष्कका मंग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान हे । बारह कपाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा इसी

प्रकार जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि

नहीं हैं । सूक्ष्मसांपरायिकसंयतोंसें बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहों है । तीन

दृशनमोहनीय और छोभसंज्वलनकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय

है। संख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन््तमुंहते है । छोभसंज्वलनकी संख्यात

गुणदानिका अन्तर इसी प्रकार है। संयतासंयतोंका भंग संयतोंके समान है। किन्तु इतनी

विशेषता है कि बारह कपाय और नौ नोकपायोंकी संख्यातगुणहानि और असंख्यात

गुणहानि नहीं हैं ।

३४९ असंयतोंमें भिथ्यात्व वारहकषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि और

अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है । संख्यात

भागवबृद्धि संख्यातगुणबद्धि और दो हानियोंका अन्तर ओघके समान है । मिथ्यात्वकी असंख्यात

गुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तयुदूते ह । संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तह् तै है । अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग मिथ्यात्वके समान है।

किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम तेतीस सागर है । अवक्तव्यका अन्तर ओघके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वका भंग ओघके समान है ।

Page 236:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए अंतरं २१७

8 ३५० दंसणाणुवादेण चक्खु तसपजत्तमंगो । णवरि संखेजभामबड़ीए जदद०

एगसपओ णत्थि अचक्ुदंसणीणमोषं । लेस्साणुवादेण किण्हणीलकाउ ० असंखेज

भागवड्डिअवद्टि० जह० एगस० उक० तेत्तीससत्तारस सत्तसागरो० देखणाणि ।

असंखेज्जमागहाणी ० जह० एगस० उक्क० अंतोघ्म० । दोबङ्िदोहाणीणं जहण्णमोधघं

उक्क० तेत्तीससत्तारतसत्ततागरो० देखणाणि एसा परूवणा मिच्छत्तबारसक०

णवणोकमायाणं । एक्मणंताणु०चउक० । णवरि असंखेज्जमागहाणी जह० एगस०

उक ० तेत्तीससत्तारससत्तमागरो० देखणाणि। असंखेज्जगुणहोणिअवत्तव्य ० जह ०

अंतंधु० उक तेत्तीससत्तारससचसागरो ० देसुणाणि । सम्मत्तसम्पामि० तिण्णिबड्डि

दोहाणिअपद्डि० जह० अंतो्ु । असंखेज्जगुणबड्डिअसंखेज्जगुणद्ाणिअवत्तव्ब रण

जह ० पलिदो० असंखेजदिभागो । असंखेजमागहाणी जह ० एगप ० उक्क० सब्वेसि पि

सगद्ठिदी देखणा ।

३४१ तेडपम्मरेस्सा मिच्छत्त ० बरारसक०णवणोक० असंखेजजमागवड्धि

अद्धि जह ० एगस० । दोबह्धिदोहाणी ० जह ० अंतोप्ु० उक ० सव्वेतिं पि वेअड्ड रस

सागरोवमाणि सादिरेयाणि । असंखेज्जभागहाणी० जह ० एगस० उक ० अंताग्मु० ।

३५० दशेनमार्गणाके अनुवादसे चह्॒ुदशंनवाले जीवोका भंग त्रसपर्याप्तकोंके समान

है। किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातभागबृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय नहीं ह्ै।

अचश्लु शनवाले जीवोके ओघके समान जानना चाहिए। लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कऋष्ण नील

और कापोत लेश्यावाले जीवोंमें असंख्यातभागब्ृद्धि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर क्रमसे कुछ कम तेतीस कुछ कम सत्रह और कुछ कम सातसागर

है। असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूत है।

दो वृद्धि और दो हानियोंका जघन्य अन्तर ओघके समान है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम

तेतीस कुछ कम सत्रह और कुछ कम सातसागर दै । यह प्ररूपणा मिथ्यात्व बारह कषाय

ओर नौ नोकषायों की अपेक्षासे की है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

क्रमसे कुछ कम तेतीस कुछ कम सत्रह और कुछ कम सातसागर है । असंख्यातगुणहानि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तरअन्तमुहूते और उत्कृष्ट अन्तर क्रमसे कुछ कम तेतीस कुछ कम सत्रह

और कुछ कम सातसागर है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि दो हानि और अव

स्थितका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त असंख्यातगुणबुद्धि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य

अन्तर पल्यके असंख्यातवेंभागप्रमाण तथा असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय है

और सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अपनी अपनी स्थितिप्रमाण है ।

३५१ पीत और पद्नलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यात्व बारह कपाय और नौ नोकषार्योकी

असंख्यातभागबद्धि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय दो बृद्धि और दो हानियोंका जघन्य

अन्तर अन्तसुहू्ते तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर साधिक दो सागर और साधिक अठारदद सागर है ।

असंख्यातभागद्दानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहू्त है। मिथ्यात्वकी

२८

Page 237:

२१८ ज्ञयधवलाखदिदे कसायपाहुडे द्िदिविहत्ती है

मिच्छत्त असंखेज्जगुणद्ाणी० जहण्णुक्ष अतो । अणंताणु चउक्त० सब्बपदाणं

मिच्छत्तमंगो । णवरि असंखेज्जमागहाणी ० जद एगस० । अंखेज्जगुणहाणि

अवत्तव्व० जह ० अंतोपरु० उक० तिण्हं पि वेअद्ठारससागरो० सादिरेयाणि ।

सम्पत्त० सम्मामि तिण्णिवड्डिअवष्टि ० तिण्णिदाणी ० जदृ० अंतोश्ु० । असंखेञ्न

गुणबड्डिअव्तव्य० जदह पलिदो० असंखेज्जदिभागो असंखेज्जमागहाणी जह०

एगस० । उक ० सब्वेसि पि बेअद्धारससागरो सादिरेयाणि ।

२५२ सुकले० मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० असंखेज्जभागद्दाणी ० जहण्णुक ०

एगस० । संखेज्जभागहाणी जह० अंतोम्म० उक० एकत्तीसं सागरोवमाणि देखणाणि।

संखेज्जगुणदाणिअसंखेज्जगुणद्णी ० जहण्णुक० अंतोधु० अण॑ताणु०चउक ०

असंखेज्जमागहाणी० जह० एगस० । तिण्णिहाणि ०अवत्तच्च० जह० अंतेन््ठ ०

उक० सब्वेसिमेकत्तीससागरो० देखूणाणि। सम्मत्तसम्मामि० तिण्णिवड्टितिण्णि

दाणो० जह० अंतोु । असंखेज्जमांगद्णी० जह० एगस० । असंखेज्जगुणवड्डि

अवत्तव्व ० जह० पलिदो० असंखेज्जदिभागो । । उक० सब्वेसि पि एकत्तीससागरों ०

देखूसाणि । णवरि तिण्णं हाणीणं सादिरेयाणि । अवह णत्थि अंतरं।

३५३ भवियाणु भवसि० ओघभंगो । अमवसति० छब्बीसं पयडीणभसंखेज्ज

असंख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंह॒र्त है। अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सब पदोंका

भंग भिथ्यात्वके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन््तमुहते तथा तीनोंका उत्कृष्ट

अन्तर साधिक दो और साधिक अठारह सागर है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि अवस्थित

और तीन हानियोंका जघन्य अन्तर अन्तमुंहू्त है। असंख्यातगुणबृद्धि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर

पल्यके असंख्यातवें भागप्रसाण और असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय है। तथा

सभीका उत्कृष्ट अन्तर साधिक दो और साधिक अठारह सागर दै ।

३५२ शुक्लेश्यावाले जीवॉमें मिथ्यास्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यात

भागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है । संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर अन्तम

हूतं तथा उत्क्ष्ट अन्तर छुछ कम इकतीस सागर द । संख्यातगुणहानि और जसंख्यातगुणहानिका

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते है। अनन्ताजुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागदानिका जघन्य

अन्तर एक समय तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्ते तथा सभीका उत्कृष्ट

अन्तर कुछ कम इकतीस सागर दै । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि ओर तीन हानियोंका

जघन्य अन्तर अन्तमुहूतै असंख्यातमागहानिका जघन्य अन्तर एक समय असंख्यातगुणबृद्धि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण और सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम

इकतीस सागर दै । किन्तु इतनी विशेषता हे कि तीन हानियोंका साधिक इकतीस सागर उत्कृष्ट

अन्तर हे । अबस्थितका अन्तर नहीं हे ।

३०३ भव्यमार्मणाके जनुवादसे भव्योंमें ओघके समान भंग है। अभव्य जीवोंमें छब्ब्रीस

ता प्रतौ वे सत्त अद्दारससागरो० इत्ति पाटः ।

Page 238:

गा० २२ बड्डि परूवणाए अंतर २१९

भागवड्डिअबरष्टि० ज एगस० उक्क० एकत्तीस सागरो सादिरेयाणि । असंखेज्ज

भागहाणी० ज० एगस० उक्त० अंतोघ्म० । दोषड्ीणं ज० एगसमओ। इत्यि

पुरिस० संखेज्जभागवड्डीए ज० अंतोघ्०। दोण्डं हाणीणं ज अंतोघ्०। उक्क०

चदुण्डं पि असंखेज्जपोग्गलपरियड् ।

३५४ सम्मत्ताणु० वेदगसम्मा० मिच्छत्त ०सम्मत्त सम्परामि०अणंताणु०

चउक० असंखेञ्जमागहाणी ० जहण्णुक० एगस० । संखेज्जभागहाणी ० ज० अंतोष्ठु०

उक छावट्डिसागरो० देखुणाणि । एवं संखेज्जमुणहाणीए वत्तव्वं । असंखेज्जगुण

हाणीए जहण्णुक अतो । बारसक०णवणोक० असंखेज्जभागदहाणी जहण्णुक०

एगस० । संखेऽजभागहाणी० जह० अंतोघ्म० उक ० छावद्टिसागरो० देष्णागि ॥

संखेज्जगुणहाणी जहण्णुक अंतो्च० । खश्यसम्माइड्टी० एकबीसपयडीणमसंखेज्ज

भागहाणी० नहण्णुक एगस । संखेऽजभागहाणी जह ० अंतोष्हुत्तं उक तेत्तीसं

सागरो सादिरेयाणि । संखेऽनगुणदहाणिअसंखेञ्जगुणहाणीणं जहण्णुक० अंतोघु० ।

उवसमसम्मादड़ी अड्ावीसं पयडीणमसंखेज्जमामहाणी ० जदण्णुक्त एगस ० ।

संखेज्जमागहाणी ० अणंताणु ०४ संखेज्जगुणहाणिअसंखेज्जगुणदाणी जदण्णुक्

अतो । सम्मामि० अद्काबीसपयडोणमसंखेज्जमागहाणी ० जहण्णुक्त ० एगस०

संखेज्जभागद्दाणि ० संखेन्जगुणहाणी ० जहण्णुक ० अंतोधु ।

भरक्ृतिर्योकी असंख्यातभागब्रद्धि और अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

साधिक इकतीस सागर है । असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

अन्तमुहूते द । दो ब्रद्धयोका जघन्य अन्तर एक समय तथा सखीवेद् और पुरुषवेदकी संख्यात

भागबद्धिका जघन्य अन्तर अन्तञहूते हे । दो हानियोंका जघन्य अन्तर अन्तसुंहूत हे । तथा चारोंका

उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुदूगछूपरिबतेन द ।

३५४ सम्यक्स्वमागेणाके अनुवादसे वेदकसम्यम्टष्टियोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मि

श्यात्व ओर अनन्ताजुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातभागदहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय

दै । संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्क्रष्ट अन्तर कुछ कम छथासठ सागर

हे । इसी प्रकार संख्यातगुणहानिका अन्तर कहना चाहिये। असंख्यातगुणहानिका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुहूते है । बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और

उत्कृष्ट अन्तर एक समय ह । संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर अन्तु और उत्कृष्ट अन्तर

कुछ कम छथासठ सागर दै । संख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्ुहू्व है।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक

समय है । संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागर

है। संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुंहृ्त है।

डपशमसम्यग्दष्टियोंमें दास प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहादिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक

समय हे । संख्यातभागहानिका तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी संख्यातगुणहानि और असंख्यात

गुणहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्त्मुहूर्त है । सम्यम्मिथ्यादृष्टियोंमें अद्टाईस प्रक्रतियोंकी

असंख्यातभागहानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय है । संख्यातभागहानि और संख्यात

गुणदानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते है ।

Page 239:

२२० यघवलांसदिदे कंसायपाहुडे छ्विदिविदत्ती ३

३४४ सण्णियाणु० सण्णीसु मिच्छत्तबारसक०णबणोक० असंखेज्जमागचड्डि

अब्धि जह० एगस० । संखेज्जमागव्डिसंखेज्जगुणबड्डी ० जद० अंतोष्ठ । णवरि

इत्थिपुरिस० णंन ०हस्सरदिअरदिसोग ० संखेज्जगुणबड्डीए जह० एगस ० । संखेज्ज

भागहागिसंखेज्जगुणहाणीणं जह० अंतोष्ठ० उक्क० सब्वेसिं तेबद्ठिसागरोबमसदं तीहि

पलिदोवमेहि सादिरेयं । णवरि संखेज्जमागद्णीए पलिदो० असंखेज्जदिभागेण सादिरेयं

असंखेज्जगुणहाणीए जहण्णुक अंतोघ्ठु० । असंखेज्जभागहाणीए जह ० एगसमओ उक ०

अत ष्च । एवमणंताणुच उक्त ० । णवरि असंखेजजभागहाणी उक ० वेछाबद्ि

सागरो देखणाणि । असंखेज्जगुणहाणिअवततन्ब ज ० अंतोघ्ठु० उक ० सागरोवम

सदपृषत्तं देखणं। सम्मत्तसम्मामि० तिण्णिबड्टितिण्णिहाणिअबद्विदाणं ज०

अतो कप 0 4

० । असंखेज्जमागहाणी० ज ० एगस० । असंखज्जगुणव्डिअवत्तव्वाणं जद

पलिदो० असंखेन्जदिभागो । उक० सव्वेसि पि सागरोबमसदपुध्त देशं ।

३४६ असण्णि मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० असंखेज्जमागवड्डिअवष्ठि ०

ज० एगख० उक पलिदो० असंखेज्चदिमागो संखेज्जभागवड्डी० ज० एगस० ।

इत्थिपुर्सि० अंतो्ु । संखेज्जमागहाणी० ज० अतोधुहुततं । उक्क० दोण्हं पि अणंत

कारमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । संखेज्जगुणवड्ढी० ज० खुदाभवम्गहणं समयुणं उक

३५५५ संज्ीमागणाके अनुवादसे संज्षियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकषायोंकी

असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितका जधन्य अन्तर एक समय तथा संख्यातभागबृद्धि और

संख्यातगुणबृद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमुहू्त है। किन्तु इतनी विशेषता है कि स््रोवेद पुरुषवेद

नपुंसकवेद हास्य रति अरति और शोककी संख्यातगुणब॒द्धिका जघन्य अन्तर एक समय है।

संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर अन्तु द । तथा सभीका उत्कृष्ट

अन्तर तीन पल्य अधिक एकसौ त्रेसठ सागर है । किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातभागहानिका

उत्क्रष्ट अन्तर पल्यका असंख्यातवाँ भाग अधिक एकसौ त्रेसठ सागर है । असंख्यातगुणहानिका

जघन्य और उत्क्ष्ट अन्तर अन्तमुंहू्ते हे। असंख्यातभागहानिका जघभ्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते है। इसीप्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि असंख्यातभागहानिका उत्कृष्ट अन्तर कुछकम एकसौ बत्तीस सागर ह । असंख्यात

गुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तमुहू्त और उत्कृष्ट अन्तर कुछकम सौ सागर प्रथक्त्व

है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी तीन वृद्धि तीन हानि और अवस्थितका जघन्य अन्तर

अन्तमुंहूते असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय तथा असंख्यातगुणवृद्धि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवेंभागप्रमाण है । तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर कुछकम

सौ सागर प्रथक्त्व हे ।

३५६ असंक्षियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि

ओर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्यका असंख्यातवां भाग है ।

संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय है । पर स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी संख्यातभागवृद्धिका

जघन्य अन्तर जन्तशहूत है। संख्यातमागहानिका जघन्य अन्तर अन्तमुंहूर्त है तथा दोनोंका उत्कृष्ट

अन्तर अनन्तकाल है जो असंख्यात पुदूगछपरिवतेनप्रमाण है । संख्यातगुणबुद्धिका जघन्य अन्तर

Page 240:

गाण ररे बद्धिपरूवणाए अंतर २२१

अणंतकालमसंखेज्ञा पो परिया । संखेजगुणहाणीए णत्थि अंतरं । असंखेज्जभागहाणी ०

ज० एगस०उ० अंतोष्रु० । सम्मत्त ०सम्भामि असंखेञजभागहाणीए जहण्णुक एगस ० ।

संखेज्जमागहाणो ० जह० अंतोशु० उक पलिदो० असंखेज्जदिभामो । संखेज्जगुणदाणी ०

क 3 का

जहण्णुक० पलिदो० असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जगुणहाणी णत्थि अंवरं

३५७ आहाराणु आहारीसु मिच्छन्तबारषक०णवणोङ० असंखेज्जभागव ड्वि

अवद्ध जह ० एगस० उक तेवद्टिसागरोवमसदं तीहि पलिदोबमेहि सादिरेयं ।

संखेज्जगुणवड्कसंखेञ्जगुणहाणिसंखेजजभागहाणी ज० अंतोशुृत्तं । संखेज्जमागवड्डी ०

ज० एगस० हत्थिपुरिस० अतो ० उक सब्वेसिमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

असंखेज्जभागहाणी ० ज ० एगस० उक अंनोु । असंखेज्जगुणहाणी जहण्णुक०

अंतोष । एचमर्णताणु ०चउक ० । णवरि असंखेज्जभागहाणी ज० एगस० उक्क०

वेछावद्विसागरो० देखणाणि । असंखेज्जगुणहाणि अवत्तव्ब० ज० अंतोधु० उक ०

अंग्ुलस्स असंखेज्जदिभागो सम्मत्त ०सम्मामि० तिण्णिव्डितिण्णिहाणिअब्ठि ०

जह० अतो । असंखेज्जभागहाणी० जह० एगस० । असंखेज्जगुणव्डिअबत्तव्व ०

जह० पलिदो असंखंज्जदिभागो । उक० सब्वेसिमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

एवमंतराणुगमो समत्तो ।

एक समय कम क्षुल्लक भवग्नहण है तथा उत्कृष्ट अन्तर अनन्तकाल है जो असंख्यात पुदूगछपरि

वतेनप्रमाण है । संख्यग्तयुणदानिका अन्तर नहीं है । असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूत है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिश्यात्वको असं ख्यातभाग

हानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर एक समय ह । संख्यातभागदानिका जघन्य अन्तर अन्तयुहूते

और उत्कृष्ट अन्तरः पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण दै । संख्यातगुणदहानिका जघन्य और उत्कृष्ट

अन्तर पल्यके असंख्यातवें मागप्रमाण हे । असंख्यातगुणहानिका अन्तर नहीं है ।

३५७ आदारकमागेणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि जौर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर तीन

पल्य अधिक पकस त्रेसठसागर है। संख्यातगुणवृद्धि संख्यातगुणदानि और संस्यातभागदानिका

जघन्य अन्तर अन्तयुहूते संख्यातभागवृद्धिका जघन्य अन्तर एक समय है पर स्त्रीवेद और पुरुषवेद

की संख्यातभागद्रद्धिका जघन्य अन्तर अन्तमहूते ह तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके

असंख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

अन्तहूतै हे । असंख्यातगुणहयानिका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूते है । इसी प्रकार

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता हे कि असंख्यातमागहानिका

जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर् छ कम एकसौ बत्तीस सागर है । असंख्यातगुण हि

हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर अन्तत और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भाग

प्रमाण है । सम्यकत्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी तीन बृद्धि तीन हानि और अवस्थितका जघन्य

अन्तर अन्तमुंहूर्ति असंस्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और असंख्यातगुणबृद्धि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण ह तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तर

अंगुलके जसंख्यातवें भागप्रमाण ह । ह

इस प्रकार अन्तरानुगम समाप्त हुआ ।

Page 241:

२य्२् जयघवलासदिदे कसायपाहुंडे द्विदिविदत्ती ३

३५८ णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुविहो णिदेसोओबेण आदेसेण ।

ओषेण छन्बीसं पयडीणमसंखेज्जभागवड्डिहाणिअवड्धिदाणि णियमा अत्थि। इदो

अणतेसु एंदिएसु उबलब्भमाणत्तादो । सेसपदा भयणिञ्जा । इदो १ तसेसु संमवादो ।

भंगा वत्तव्वा। सम्मत्तसम्मामि असंखेज्जमागदहाणी णियमा अत्थि । सेसपदा

भयणिज्जा । भंगा वत्तव्वा। एवं तिरिक्खकायजोगिओरालियकाय जोमिणुंखयवेद

चत्तारिकसायमदिषुदअण्णाणिअसंजद ०अचक्खुदंस ० किण्दणील का उ मवसि०

मिच्छादिद्टिआहारि त्ति।

३४६ आदेसेण णेरहएसु छब्बीसं पयडोणं असंखेउजमागहाणी अवद्डिदं णियमा

अत्थि । सेसपदां भयणिज्जा। सम्मत्त ०सम्मामि० ओघं॑। एवं सब्यणिरयसब्वपंचिंदिय

३५८ नाना जीबोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमसे विचार करने पर निर्देश दो प्रकारका

हैओघनिर्देश और आदेशनिर्देश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोकी असंख्यात

भागवृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थित नियमसे हैं क्योंकि ये पद् अनन्त एकेन्द्रियोंमें

पाये जाते हैं। शेष पद भजनीय हैं क्योंकि शेष पद् त्रसोंमें संभव हैं । भंग कहने चाहिये ।

सम्यक्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि नियमसे हे । शेष पद् भजनीय हैं। भंग

कहने चाहिये। इसी प्रकार सामान्य तिर्यच काययोगी औदारिककाययोगी नपुंसकवेदवाले

क्रोधादि चारों कषायबाले मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी असंयत अचछ्ष॒दशनवाले ऋष्णलेश्यावाले नीक

लेश्यावाले कापोतलेश्यावाले भव्य मिथ्यादृष्टि और आहारक जीबोंके जानना चाहिए।

विशेषार्थमोहनीयकी २८ प्रकृतियाँ हैं । इनमेंसे २२ प्रकृतियोंके आठ पद हैं जिनमें

तीन धुव और पाँच भजनीय है । मूलमें धुवपद् गिनाये ही हैं । इससे भजनीय पदोंका ज्ञान अपने

आप हो जाता हे । पाँच भजनीय पदोंके एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा कुछ भंग २४२ होते

हैं। इनमें एक धुव भंगके मिला देनेपर २२ मेंसे प्रत्येक प्रकृतिके कुछ भंग २४३ होते हैं। अनन्तानु

बन्धी चतुष्कके नौ पद हैं । इनमें तीन ध्रुव और छह भजनीय हैं । छह भजनीय पदोंके एक जीव

और नाना जीबोंकी अपेक्षा कुछ भंग ७२८ होते हैं। इनमें एक ध्रुव भंगके मिला देनेपर अनन्तानु

बन्धी चतुष्कमेंसे प्रत्येक प्रकृतिके कुछ भंग ५९९ होते हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके

कुछ दस पद हैं । इनमे एक ध्रुव और नौ भजनीय हैं। नौ भजनीय पदोंके एक जीव और नाना

जीबोंकी अपेक्षा कुछ भंग १९६८२ होते हैं और इनमें एक ध्रुव भंगके मिला देनेपर सब भंग

१९६८३ होते हैं। तिये आदि और जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भी इसी प्रकार समझ

लेना चाहिये । इसका यह मतलब है कि इन मागेणाओंमें २६ प्रक्रतियोंके तीन ध्रुव पद हैं और

शेष भजनीय पद् हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका एक धुव पद है और शेष भजनीय ।

। अव किस मा्गेणामें किस भ्रकृतिके कख कितने पद् है इसका विचार करके अलग अलग भंग ले

आना चाहिये । भंग छानेका तरीका यह है कि जहाँ जितने भजनीय पद् हों उतनी जगह तीन

रख कर परस्पर गुणा करनेसे कुछ भंग आते है । इनमेसे एक कम कर देने पर भजनीय पढोंके

भंग होते है । और भजनीय पदोंके भंगोंमें एक मिला देनेपर कुछ भंग होते दै ।

३५९ आदेशसे नारकियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और अवस्थितपद

नियमसे हैं। शेष पद् भजनीय हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान हे ।

Page 242:

गा० २२ वद्धिपरूवणाए भंगविचओ २२३

तिरिक्खमणुसमणुसपज्ज ०मणुसिणीदेवभवणादि जाय सहस्सार ०पंचिंदिय

पंचिं०पञज्ज ०तसतसपज्ज०पंचमण ०पंचवचि ०वेउव्वियकाय ०इत्थिपुरिस ० विहंग

णाणि०चक्खुदंस ०तेउपम्म ०सण्णि त्ति। मशुसअपज्ज० सब्बपयडीणं सव्बपदाणि

मर्याणज्जाणि ।

३६० आणदादि जाव उवरिमगेवज्ज मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० असंखेज्ज

भागहाणी णियमा अत्थि संखेज्जमागहाणी भयणिञ्जा । सिया एदे च संखेज्ज

भागहाणिविहक्तियो च । सिया एदे च संखेञ्जमागहाणिविहत्तिया च । धुवपदेण सह

तिण्णि भंगा। सम्मत्त ०सम्पामि०अणंताणु चउकाणमसंखेज्जमागहाणी णियमा

अस्थि । सेषपदा भयणिज्जा । अणुदिसादि जाव सब्बइसिद्धि त्ति मिच्छत्तबारसक०

णवणोक० आणदमंगो । सम्मामि मिच्छत्तमंगो सम्भत्तअणंताणु चउक ० असंखज्ज

मागहाणी णियमा अस्थि सेसपदा भयणिज्जा ।

इसी प्रकार सब नारकी सब पंचेन्द्रिय तियच सामान्य मनुष्य मनुष्य पर्याप्त मनुष्यिनी सामान्य

देव भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार स्वगेतकके देव पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियप्याप्त चस तरसपर्याप्त

पाँचों मनोयोगी पाँचों बचनयोगी वैक्रियिककाययोगी खीवेद वाके पुरुषवेदवाले विभंगज्ञानवाले

चक्लुदशनवाले पीतलेश्यावाले पद्मलेश्यावाहें और संज्ञी जीवोंके जानना चाहिए। मनुष्य

अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद् भजनीय हैं।

विशेषार्थ नारकियोंमें रर प्रकृतियोंके सात पद् हैं। जिनमें दो भुव और पाँच भजनीय

हैं। कुछ भंग २४३ होते हैं। अनन्तानुबन्धीचतुष्कके नौ पद हैं। जिनमें दो ध्रुव और सात

भजनीय हैं । कुछ भंग २१८७ होते हैं । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके दस पद हैं। जिनमें एक

ध्रुव और नो भजनीय हैं। कुलभंग १९६८३ होते हैं। मम सव नारकौ आदि और जितनी

मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें भो इसी प्रकार जानना चादिये । इसका यह मतख्व है कि इन

मार्गणाओंसें २६ प्रक्ृतियोंके दो पद ध्रुव हैं और शेष भजनीय है । तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वका एक पद ध्रुव और शेष भजनीय दै । तदनुसार जिस मागेणामें जिस प्रकृतिके जितने

पद् हों उनका विचार करके भंग ले आने चाहिये। छब्ध्यपयाप्तक मलुष्योंके २६ प्रकृतियोंके सात

पद् है पर वे सब भजनीय हैं अतः इनके कुछ भंग २१८६ होते हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वके चार पद् हैं । ये भी सब भजनीय हैं अतः इनके कुछ भंग ८० होते हैं ।

३६० आनतकल्पसे लेकर उपरिम ग्रेवेयकतकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानि नियमसे है । संख्यातभागहानि भजनीय है । कदाचित् असंख्यात

भागहानिवाले जीव होते है और संख्यातभागहानि स्थितिविमक्तिवाका एक जीव द्वोता है।

कदाचित् असंख्यातभागहानिवाले जीव होते हँ और संख्यातभागद्ानि स्थितिविभक्तिवाले नाना

जीब होते हैं । इनमें ध्ुवपदके मिध देनेपर तीन भंग होते हैं। सम्यक्त्व सम्यम्मिथ्यात्व और

अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातभागहानि नियमसे है शेष पद् भजनीय हैं। अलुदिशसे

छेकर सर्वोर्थसिद्धितकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंका भंग आनतकल्पके

समान है । सम्यम्मिथ्यात्वका भंग मिथ्यात्वके समान है । सम्यक्त्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

असंख्यातभागहानि नियमसे है शेष पद भजनीय है ।

विश्षेषार्थआनतसे छेकर उपरिम ग्रेवेयक तकके जीबोंके २२ प्रकृतियोंके तीन भंग तो

Page 243:

२२४ लयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविद्दत्ती ३

३६१ इंदियाणुवादेण एइंदिएसु छब्बीसं पयडीणं असंखेज्जभागवड्डि हाणिअवहिद्०

णियमा अस्थि । संखेज्जमागहाणिसंखेज्जगुणदाणी भयणिज्जा तसेहि आठत्तद्ठिदिकंड

यणमेइंदिएस पदमाणाणं तसरासिपडिभागततादो। सम्मत्तसम्मामि० असंखेज्जमागद्दाणी

णियमा अस्थि। सेसतिण्णिहाणीओ मयणिज्जाओ । एवं बादरेइंदियबादरेइंदिय

पज्जत्तापज्जचसुहुमेइं दिय सुहुमेइंदियपज्तत्तापज्जत्तपुटवि ० बादरपुढवि ० बादर

पुठचि० पज्जचापज्जत्तसुहुम पु व सुहमपुटविपज्ञत्तापज्जचआउबादरआउ ० बादर

आउपज्जत्तापज्जत्तसुहुमआउ ०सुहुम आउ पज्जत्ता पज्जत्ततेउ ० बादरतेड ०बादरतेउ

पज्जत्तापज्त्तसुद्दमते 3० न्सुहुपतेड पज्ञत्तापञ्जत्तवाउ ०बादरवा उ ०बादरवाउपज्जचापज्जत्त

सुहमबाउ ०सुहुमवा उपज्जचापज्जत्तवणप्फदि बादरवणप्फदि ०बादरवणप्फदिपजत्ता

पज्जत्तसुदृमवणप्फदि ०सुहु मवणप्फद्पिज्जत्तापज्जत्तणिगोद बादरणिगोद बादर

शिगोदपज्जत्तापज्जत्तसुहृमणिगोदसुहुमणिगोदपज्जचापज्जत्तबाद्रवणप्फद्पितेय ०

बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर॒पज्जत्तापज्जत्ता त्ति। णवरि चत्तारिकायबादरपज्जत्तबादर

भ बतलाये ही हैं। अव रहीं शेष छट प्रकृतिर्या इनमेंसे अनन्तालुबन्धी चतुष्कके पाँच पद

होते हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके नौ पद होते हैं। इन दोनों स्थानोंमें एक धुव और

शेष भजनीय पद हैं। भंग क्रमसे ८१ और ६५६१ होते हैं। अलुदिशसे लेकर सर्वाथेसिद्धितकके

देवोंके २३ प्रकृतियोंके तीन भंग हैं जो आनतादिकके समान है। शेष रहीं पाँच प्रकृतिर्या सो

इनमेंसे अनन्तानुबन्धी चतुष्कके चार पद् और सम्यक्स्वके तीन पद होते हैं। इनमेंसे एक धुवपद्

और शेष भजनीय पद् हैं । भंग क्रमशः २७ और ९ होते हैं ।

३६१ इन्द्रियमागंणाके अनुवादसे एकन्द्रियोंमें छब्बीस प्रकतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थित पद नियमसे हैं तथा संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि

भजनीय है क्योकि जो तसपयोयमें स्थितिकाण्डकघातका आरम्भ करके एकनिद्रयोंसें उत्पन्न हुए

हैं उनका प्रमाण त्रसराशिक प्रतिभागसे रहता है। अतः उक्त दो पदोंको एकन्द्रियोंमें

भजनीय कहा है। सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि नियमसे है शेष तीन

हानियाँ भजनीय हैं। इसी प्रकार बादर एकेन्द्रिय बादर एकन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त सूक्ष्म

एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त प्रथिबीकायिक बादर प्रथिवीकायिक बादर

पृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त सूक्ष्म प्रथिवीकायिक सूक्ष्म प्रथिवीकायिक पर्याप्त और

अपयाप्त जलकायिक बादर जलकायिक बादर जलकायिकपर्याप्त और अपर्याप्त सूक्ष्मजलछकायिक

सूक्ष्म जलकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त अभ्रिकायिक बादर् अभिकायिक बादर अभिकायिक पर्याप्त

अर अपयाप्त सूक्ष्म अग्रिकायिक सूक्ष्म अम्निकायिक पर्यौप्त और अपर्याप्त वायुकायिक बादुर

वायुकायिक बादर वायुकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त

और अपयाप् वनस्पतिकायिक बादर वनस्पतिकायिक बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपरया

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्योप्त और अपर्याप् निगोद वाद्र निगोद

बादर निगोदपर्याप्त और अपर्याप्त सूक्ष्मनिगोद् सूक्ष्म निगोद् पर्याप्त और अपर्याप्त वाद्र वनस्पति

कायिक प्रत्येक शरीर बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त और अपर्याप्र जीबोंके जानना।

१ ता प्रतौ अत्यि असंखेज्जमागह्माणी इति पाठः

Page 244:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए भंगविचओ २२५९

वणप्फदिपचेयपज्ज ० असंखेज्जभागबड़ी ० भयणिज्जा ।

३६२ बीईंदिय० असंखेज्जभागहाणी अबड्डाणं णियमा अत्थि । असंखेज्जभाग

बड्डी संखेज्जमागवड्डी संखेज्जभागहाणी संखेन्जगुणहाणी भयणिज्जा एवं सन्बविग

लिंदियाणं । पंचिं०अपज्ज ०तसअपज्ज० पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ।

३६३ जोगाणुवादेण ओरालि०मिस्प० छव्बीसपयडीणं असंखेज्जमागवड्डि

हाणी अबड्डाणं णियमा अत्थि । संखेज्जभागवड्डिदाणी संखेज्जगुणबड्डिहाणी भय

णिज्जा । सम्पत्त सम्माभि० असंखेज्जमागहाणी णियमा अत्थि। सेसपदा भय

णिज्जा वेउज्वियमिस्स० सब्बपयडीणं सच्रपदानि भयणिज्जाणि । एवमाहार०

आहारमिस्स ० अवगद् ० अकसा ० सहुमसांपराय ०जहाक्खाद ०उवसम सम्प्त्त सासाण ०

सम्पामिच्छादिद्वि त्ति। णवरि जत्य जत्तियाणि पदाणि णादव्वाणि कम्महय ओरा

किन्तु इतनी विशेषता है कि चार स्थावरकाय बादर पर्याप्र और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक

शरीर पर्याप्त जीवोंके असंख्यातभागबृद्धि भजनीय है ।

३६२ द्वीन्द्रियोंमें असंख्यातभागहानि और अवस्थान नियमसे है। असंख्यातभागवृद्धि

संख्यातभागवृद्धि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि भजनीय हैं। इसी प्रकार सब

विकलेन्द्रिय जीवोंके जानना चाहिए। पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और चस अपर्याप्त जीबोंमें पंचेन्द्रिय

तियच अपर्याप्तकोके समान भंग है ।

विशेषार्थएकेन्द्रियोंमें २६ प्रकृतियोंके पाँच पद होते हैं। इनमेंसे तीन भ्रुव और दो

भजनीय हैं । कुछ भंग नौ होते हैं । तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके चार पद् होते हैं।

जिनमें एकं ध्रुव और तीन भजनीय पद हैं। कुछ भंग २७ होते हैं । यह व्यवस्था एकेन्द्रियोंके

अवान्तर भेदोंमें और पांचों स्थावरकायोंमें भी बन जाती है । किन्तु इसका एक अपवाद है।

बात यह् है कि चारों स्थावरकाय पर्याप्क और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्रक इन

पाँचोंमें २६ प्रकृतियोंका असंख्यातभागवृद्धि ष मी भजनीय है इस प्रकार यहाँ भजनीय पद

तीन हो जाते हैं अतः कुछ २७ भंग प्राप्त होते हैं बिकलेन्द्रियोंमें २६ प्रकृतियोंके छह पद् होते है ।

जिनमें दो ध्रुव और चार भजनीय हैं। कुछ भंग ८१ होते हैं। तथा सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्या

स्वका कथन एकेन्द्रियोंके समान है । अतः एकेन्द्रियोंके इन दो प्रकृतियोंकी अपेक्षा जो २७ भंग

पहले बतलाये हैं वे ही यहाँ भी समज्ञना चाहिये ।

३६३ योग मार्गणाके अनुवादसे औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें छब्बीस भ्रकृतियोंकी

असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थान नियमसे हैं । संख्यातभागबृद्धि संख्यात

भागहानि संख्यातगुणबृद्धि और संख्यातगुणहानि भजनीय हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

असंख्यातभागहानि नियमसे है । शेष पद् भजनीय हैं । वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें सब प्रकृ

तियोंके सब पद भजनीय हैं । इसी प्रकार आहारककाययोगी आहयारकमिश्रकाययोगी अपगत

वेदी अकषायी सूक्ष्मसांपरायिकसंयत यथाख्यातसंयत उपशमसम्यम्टृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ जितने पद हौ उनके

अनुसार जानना । कार्मणकायोगियोंका भंग औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान है । किन्तु इतनी

२९

Page 245:

२२६ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

लियमिस्समंगो । णवरि सम्मत्तसम्ममिच्छत्त ० सव्वपदा भयणिज्जा । एवमणाहारि ।

३६४ णाणाणुवादेण आमभिणि० सबव्वपयडीणमसंखेज्जमागहाणी णियमा

अस्थि । सेससव्बपदा भयणिज्जा । एवं सुद ०ओदि ०मणपज्ज ० संजद् ०सामाइयछेदो ०

परिहार ०संजदासं जद ०ओहिदंस ०सुकले० सम्मादिद्टि ०वेदग ० खद्य दिद्टि ति । अस

ण्णि० छष्वीसं पयडीणमसंखेज्जमागवडिहाणी ।अवड्टाणं णियम। अस्थि संखेज्जभागबड्डि

हाणी संखेज्जगुणवड्धिहाणो भयणिजञ्जा । सम्मत्तसम्मामि० असंखेज्डभागदाणी

णियमा अस्थि । तिण्णिहाणी भयणिज्जा। एवममवसिद्धिय ० । णवरि सम्मत्तसम्मामि०

णत्थि । एवं णाणाजीवेदि भंगविचयाणुगमो समत्तो ।

विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिश्यात्वके सव पद् भजनीय हैं । इसी प्रकार अनादारकोके

जानना चाहिए ।

विशेषाथओऔदारिकमिश्रकाययोगमें २६ प्रकृतियोके सात पद होते हैं। जिनमें तीन

धुब और चार भजनीय हैं। कुछ भंग ८१ होते हैः । तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके चार

पद होते हैं । जिनमें एक ध्रुव और तीन भजनीय हैं । कुछ भंग २७ होते दै । वैक्रियिकमिश्रकाय

योग यद् सान्तर मागेणा है इसलिये इसमें सब पद भजनीय हैँ । यहाँ २६ प्रकरतियोंके सात पद

होते हैं अतः इनके कुछ भंग २१८६ होते दै । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके चार षद् होते हैं

अतः इनके कुछ भंग ८० होते हैं। बैक्रियिकसिश्रकाययोगके समान आहारककाययोग आदि

मार्मणाओंमे भी कथन करना चाहिये । इसका यद् अभिप्राय है कि इन मार्गणाओंमेंसे जिसमें

जितने पद हैं वे सब भजनीय हैं । यहाँ मंग भी तदनुसार जानना चाहिये। कार्मेणकाययोगमं

२६ परकृतिरयोके सात पद हैं। जिनमें तीन ध्रुव और चार भजनीय दँ । कुछ भंग ८१ होते हैं। तथा

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके चार पद हैं जो सब भजनीय हैं। कुछ भंग ८० होते हैं । संसारमें

कार्मणकाययोग और अनाहारकअवस्थाका सहचर सम्बन्ध है अतः अनाहारकोंका कथन कार्मेण

काययोगके समान है । दि

३६४ ज्ञानमार्गणाके अनुबादसे आभिनिब्रोधिकज्ञानियोंमें सब प्रकृतियोंकी असंख्यात

भागहानि नियमसे है। शेष सब पदं भजनीय हैं। इसी प्रकार श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी

संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहारविश्वुद्धिसंबत संयतासंयत अवधिदशेनी

शुक्ललेश्यावाले सम्यम्द्रष्टि वेदकसम्यग्टष्टि और क्ञायिकसम्यग्दष्टि जीवोंके जानना चाहिए

असंक्षियोंमें छत्बीस प्रकृतियों की असंख्यातभागबृद्धि असंस्यातभागहानि और अवस्थान नियमसे दै ।

संख्यातभागबृद्धि संख्यातभागहानि संख्यातगुणवृद्धि ओर संख्यातगुणहानि भजनीय हैं। सम्यक्त्व

ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि नियमसे है । तीन हानियां भजनीय हैं। इसीप्रकार

अभव्योंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके सम्यक्त्व सम्यम्मिथ्यांत्व नहीं हैं ।

विशेषार्थआमभिवोधिकज्ञानमें सब प्रकृतियोंके चार पद होते हैं जिनमें एक घ्रुव और तीन

भजनीय द । कुछ भंग २७ होते हैं। इसी प्रकार श्रुतज्ञान आदि सार्गणाओंमें भी जानना चाहिये ।

किन्तु पद विशेषोंको जानकर कथन करना चाहिये। असंज्षियोंके २६ प्रकरतियोंके सात पद हैं।

जिनमें तीन ध्रुव और चार भजनीय हैं। कुछ भंग ८१ होते हैं। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्यात्वके चार पंद हैं जिनमें एक धुव और तीन भजनीय दै । कुछ भंग २७ होते हैं। अभव्योंके

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी सत्ता नहीं है। शेष २६ प्रकृतियोंका कथन असंज्ञियोंके समान दे ।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगस समाप्त हुआ ।

Page 246:

र२ बड्डिपरूणाए भागाभागों २२७

३६५ भागाभागाणुगमेण दुविहो णिदेसोओघेण आदेसेण । ओषेण छन्बीसं

पयडीणमसंखेज्जभागवड्डिविहत्तिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो १ असंखेज्जदिभागों

अवष्टि संखेज्जदिभागो । असंखेजमागदाणि संखेज्जा भागा सेसपद्विह० अणंतिम

भागो । सम्मत्त ०सम्मामि० असंखेज्जभागहाणि० सब्वन्नी० केव० भागो १ असंखेजा

भागा । सेसपदवि० असंखेज्जदिमागो । एवं तिरिक््खएडुंदियबादरेइंदिय ०बादरेइंदिय

पज्ञत्तापजत्तसुहुमेहं दियसुहुमेईद्यपजतापज त्बणप्फदि ०बादरवणप्फदिसुहुमवणप्फदि

पज्ञत्तापजक्तणिगोद बादरणिगोद सुहुम णिगोदपञजत्तापज्ञ चकाय जोगि ० ओराजि०

ओरालि ०मिस्स ०ऊम्मइ य ० णबुंस ०चत्तारिकसाय ०मदिसुद्अण्णाणि ०असंजद ०

अचकु ० किण्हणीलकौउ ०मवसि ०अभवसि ० मिच्छादि ०असण्णिआहा रिअणाहारि

त्ति। णवरि अभव० सम्मत्त षम्मामि णत्थि ।

३६६ आदेसेण णेरइय० छन्बीसं पयडीणमसंखेजजमागदाणिवि ० संखेजा

भागा अबह्टिदवि संखेजदिमामो । सेसपद्वि० असंखेज्ञदिभागो । सम्मत्तसम्मामि

ओधं । एवं स्बणेरद्यसन्वपंचि तिरिक्खमणुसमणुसअपज०देवभवणादि जाव

सहस्सारसव्बविगरङिदियपंचिदिय पंचि ० पञ्ज ०पंचि अपज्ज ०सब्बचत्तारिकाय

बादरब्रणप्फदिपत्ते यसरीरपज्जत्त।पज्जत्ततसतसपज्ज तसअपञ्ज पंचमण पंचवचि ०

३६५ भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हेओघनिर्देश और आदेश

निर्देश । उनमेंसे ओघकी अपेक्षा २६ प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबइद्धि स्थितिविभक्तिवाले जीव

सब जीवोंके कितने भाग हैं। असंख्यातवें भाग हैं। अवस्थित स्थितिविभक्तवाले जीव संख्यातवें

भाग हैं। असंख्यातभागहानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातबहुभाग हैं। तथा शेष पद

स्थितिविभक्तिवा छे जीव अनन्तवेंभाग हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा हि असंख्यात

मागद्ानि स्थितिविभक्तिवाखे जीव सब जीवक कितने भाग ह १ असंख्यात बहुभाग हैं। शेष पद्

स्थितिविभक्ति वाले जीव असंख्यातवं भाग दैः । इसी प्रकार नियचः एकेन्द्रिय बादर एकेम्द्रिय

बाद्र एकेन्द्रिय पर्याप्त ओर अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकन्द्रिय पर्याप्त और अपयोध्त बनस्प

तिकायिक बादर वनस्पतिकायिक सूक्ष्मवनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपयाप्र निगोद बादरनिगोद

बादर निगोद पर्याप्त ओर अपर्याप्न सूक्ष्म निगोद सूक्ष्म निगोद् पर्याप्त और अपर्याप्त काययोगी

ओदारिककाययोगो ओदारिकमिश्रकाययोगी कार्मणकाययोगी नर्पुसकवेदवाले क्रोघादि

चारों कपायवाले मत्यज्ञानी श्रुवाज्ञानी असंयत अचझ्ष॒ुदशनी ऋष्णलेश्यावाले नीछलेश्या

वाटे कापोत्त छेश्यावाछे भव्य अभव्य मिथ्यादृष्टि असंज्ञी आहारक और अनाहारक जीवोंक

जानना चाहिए किन्तु इतनी विशेषता है कि अभव्योंमें॥सम्यक्व्व और सम्यग्मि्यात्व नहीं है ।

३६६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें छब्बीस प्रक्ृतियोंकी अपेक्षा असंख्यातभागहानि स्थिति

विभक्तिवाले जीव संख्यातबहुभाग द । अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्याते भाग हैं ।

शेष पद् स्थितिविभक्तिवांले जीव असंख्यातवें भाग ह । सम्यक्त्व् ओौर सम्यग्मिथ्यात्वका कथन

ओघक समान है। इसी प्रकार सव नारकी सव पूंचेन्द्रिय तियंच मनुष्य सनुष्य अपर्याप्त

सामान्य देव भवनवासियोंसेछेकर सखार स्वगेतकके देव सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय

पर्याप्त पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सव चार स्थावरकाय बाद्रवनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त

और अपर्याप्त चस त्रस पर्याप्त चस अपयाप्र पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी वैक्रियिक

Page 247:

२९८ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विद्विहत्ती हे

वेउव्विय ० वेउव्वियमिस्स० इत्थि पुरिस विहंग प ० चक्खु ० तेउ०पम्म ००

सण्णि त्ति।

३६७ मणुसपज्ज० मणुसिणी ०सव्वट ०देव० अद्धावीसं पयडी० असंखेज्ज

आकर ण्ण

भागहाणिवि० संखेज्जा भागा सेसपदवि० संखेज्जदिभागो । एवमवगद् मणपन्ज ०

संजद्०सामाइयछेदो परिहार ०सुहूमसां परायसंजदै त्ति । आणदादि जाव अवराइद

त्ति अद्काबीसं पयडी असंखेज्जमागदहाणि केव० १ असंखेज्जा मागा । सेसपदवि०

असंखेज्ञदिमागो । एवमाभिणि ०सुद ०ओहि ०संजदासंजद ०ओहिदंस ० सुकले ० सम्मा

दि०वेदम उवसम ० खह्टय ०सम्मामिच्छादिद्धि त्ति । आहारआहारमिस्स० णत्थि

भागाभागं । एवमकसा जहाक्खाद् ०सासणसम्भादिद्टि तति ।

एवं मागामागाणुगमो समत्तो ।

३६८ परिमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसोओघे० आदेसे० । ओघेण छब्बीसं

पयडीणमसंखेज्जमागवड्डिदाणिअवद्धिद्वि० केत्ति० १ अणंता । सेसपद०बि० असंसेजा ।

णवरि मिच्छत्तबारसक०णवणोक ० असंखेज्जगुणहाणिवि० संखेज्जा । सम्मत्तसम्मामि ०

॥ सव्वपदषषि० असंखेज्जा । एवं कायजोगीसु ओरालि०णबुंसयवेद्० चत्तारिक ०अचबखु

दंस ० मवसि ०आहारि त्ति ।

काययोगीः वैक्रियिकमिश्रकाययोगी खीवेदवाके पुरुषबेद्वाले विभंगज्ञानवाले चल्लुद्शनवाले

पीतलेश्यावाले पद्मलेश्यावाले और संज्ञो जीवोकि जानना चादिए ।

३६७ मलुष्य पर्याप्त मनुष्यनी और सर्वाधेसिद्धिके देवोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी अपेक्षा

असंख्यातमागहानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात बहुभाग हैं । तथा शेष पद स्थितिविमक्ति

बाले जीव संख्यातवें भाग है । इसी प्रकार अपगतवेदवाले मनःपर्ययज्ञानवाले संयत सामा

यिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहारविश्वुद्धिसंयत और सूक्ष्मसांपरायिकसंयत जीवोंके जानना

चाहिए। आनतकल्पसे लेकर अपराजित तकक देवॉंमें जाई प्रकृतियो की अपेक्षा असंख्यातभागहानि

स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हें असंख्यात बहुभाग है । तथा शेष पद् स्थितिविभक्तिवाले जीव

असंख्यातवें भाग है। इसी प्रकार आभिनिवोधिकज्ञानीः श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी संयतासंयत अवधि

दशेनवाले शुक्कलेश्यावाले सम्यग्ट॒ष्टि वेदकसम्यग्दष्टि उपशमसम्यग्द्रष्टि क्षायिकसम्यग्टष्टि और

सम्यम्मिथ्यादृष्टियोंके जानना चाहिए । आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें भागा

भाग नहीं है । इसी प्रकार अकषायी यथाख्यातसंयत और सासादनसम्यम्दृष्टियोंके जानना चाहिए।

इस प्रकार भागामागाद्धगम समाप्त हुआ

३६८ परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ।

उनमेंसे ओघकी अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागब्ृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने हैं अनन्त हैं। तथा शेष पद् स्थितिविभक्तिवाले जीव

असंख्यात हैं। किन्तुष्टतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असं

ख्यातगुणहानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात हैं। सम्यक्त्व और सम्यस्मिथ्यात्वकी सब पद

स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यात हैं। इसी प्रकार काययोगी ओदारिककाययोगी नपुंसक

वेदवा क्रोधादि चारों कपायवाले अचक्षुद्शेनवाले भव्य और आहारक जीवोके जानना चाहिए ।

Page 248:

२०२२ बड्धिपरूवणाए परिमाणं । २२५

३६९ आदेसेण णेरइएसु अड्डावीसं पयडीणं सब्बपदवि० असंखेज्जा । एवं

सब्वणेरइयसव्वपंचिंदियतिरिक्खमणुधअपज्ज देव मवणादि जाव णत्रगेवज्ज ०

सव्वविगिदियपं चि ० अपज्जसव्वचत्ता रिकायबादरवणप्फदिपत्तेय ० सरीरपज्जत्तापज्जत्त

तसअपज्ज ० वेउव्विय ०वेड ०मिस्स ०विहंगणाणि त्ति ।

३७० तिरिक्खेसु सव्बपयडीणं सव्वपदवि० ओघं । एवं सब्बएइंदियसव्ववणप्फ

दि०सन्धणिभोद् ०ओरालि मिस्सकम्मइयमदिसुद अण्णाणअसंजद ० किण्दणीलकाउ ०

मिच्छादि ०असण्णिअणाहारि त्ति ।

३७१ मणुस्सेसु छब्बीस्स पयडीणं सव्वपदवि० असंखेज़ा । णवरि असंखे०

गुणद्वाणि० अणंताणु चउकक० अवत्तव्ब०विहृत्तिया च संखेज्जा । सम्मत्तसम्मामि०

चत्तारिबष्डिअव्ठिदअवत्तव्ववि० संखेज्जा । चत्तारिद्वाणि० केत्तिया १ असंखेज्जा ।

मणुसपज्ज०मणुसिणी ०सब्बट्ड ०देवाणं अट्टावीसपयडीणं सब्बपदा संखेज्जा । अणुदि

सादि जाब अबराइदं ति अड्टावीसपयडीणं सव्वपदा असंखेज्जा। णवरि सम्मत्त संखें०

गुणहाणिवि संखेज्जा ।

३७२ पंचिदियपंचि ०पञ्ज० अद्कावीसरं पयडीणं सव्वपदवि० के १ असंखेज्जा

णवरि वावीसं पयडीणमसंखेजगुणहाणिवि संखेज्जा । एवं तसतसपज्ज ० पंषमण

३६९ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें अद्दाईस प्रकृतियोंकी सब पद स्थितिविभक्तिवाले

जीव असंख्यात हैं। इसी प्रकार सब नारकी सब पंचेन्द्रिय तियंच मनुष्य अपर्याप्त सामान्य

देव भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रेवेयकतकके देव सब विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपयौप्त सब

परथिवी आदि चार स्थाचरकाय बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्योप्त और अपर्याप्त त्रस

अपर्याप्त वैक्तियिककाययोगी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और विभंगज्ञानी जीवोके जानना चाहिए ।

३७० तियचोंमें सब प्रकतियोंकी सब पद् स्थितिविभक्तिवाले जीव ओघके समान हैं ।

इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय सब वनस्पतिकायिक सब निगोद औदारिकमिश्रकाययोगी कार्मेण

काययोगी मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी असंयत ऋष्णलेश्यावाले नीछलेश्यावाले कापोतलेश्यावाले

मिथ्यादृष्टि असंज्ञी और अनाहारक जीवोकि जानना चाहिए।

३५१ मलुष्योंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी सब पद् स्थितिविभक्तिवाले जीव असंख्यात ह ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि स्थितिविभक्तिवाले और अनन्ताजुबन्धी चतुष्ककी

अवक्तव्यस्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात दे । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित

और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिबाले जीव संख्यात हैँ । चार हानि स्थितिविभक्तिवाले जीव कितने

दं १ असंख्यात हँ । मलुष्यपर्याप्त मलुष्यनी और सर्वाथसिद्धिक देबोंमें अङ्काईस प्रक्ृतियोंकी

सब पद् स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात हैं । अज्ुद्शिसे लेकर अपराजिततकक देबोंमें अद्दाईस

प्रकृतियोंकी सब पद स्थितिविभक्तिवाे जीव असंख्यात हैं। किन्तु इतनी विशेषता है कि

सम्यक्त्वकी संल्यातगुणदानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात हैं ।

३५२ पंचेन्द्रिय और पंचेद्विय पयौप्तकोमें जद्धाईस प्रकृतियोंकी सब पद् स्थि तिविभक्ति

बारे जीव कितने हैं १ असंख्यात दै । किन्तु इतनी विशेषता है कि बाईस प्रकृतियोकी असंख्यात

Page 249:

२३० जयधवलासदिदे कसायपांहुडे द्विदिविहत्तो ३

पंचवचि०इत्थिपुरिस ०चकखु ०सण्णि त्ति। आहार आहारमिस्स सगसव्बपयडी०

असंखेज्ञमागद्दाणिवि० संखेज्जा । एवमकषा ० जहाकदसंजदे त्ति । अवगद० सग

सव्वपयडी० सव्वपदवि० संखेज्जा। एवं मणपज्जय०संजद् ०सामाईइयछेदो ० परिहार ०

सुहुमसांपरायसंजदे त्ति ।

३७३ आमिणि०सुद ०ओोहि० अद्धावीसं पयडी सन्वपदवि असंखेज्जा ।

णवरि चउवीसं पयडीणं असं खेजगुणहाणिवि संदेउजा । एवमोहिदंस०सम्मादिद्टि

त्ति। संजदासंजद० जङ्कावीसं पयडीणं स॒ब्वपद्वि० असंखेज्जा। णवरि दंसणतिय०

संखेज्ञगुणहाणि असंखेजगुणहागिवि० संखेज्जा । एवं वेदग० । णवरि सब्बपय०

संखेज्जगुणदाणि० असंखेज्जा । सुकले० सब्वपयडीणं सच्वपदृविं० असंखेज्जा ।

णवरि वावीसं पयडीणमसंखेजगुणहाणिवि० संखेज्ञा । तेउपम्म० अट्टाबीसं पयडीणं

सव्वपद्वि० असंखेज़ा । णवरि भिच्छत्त० असंखेजगुणहाणिवि० संखेज्ञा । खश्य ० एक

वीसपय० असंखेजभागहा० असंखेज्ञा । सेसपदवि० संखेज्ञा । उवसमसम्भादिद्ि०

सासण० सम्मामि सगपदबि० असंखेज्ञा । अमव छब्बीसं पयडीणमोघमंगो । णवरि

असंखेज्ञगुणहाणी णत्थि । एवं परिमाणाणुगमो समत्तो ।

गुणानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात ह । इसी प्रकार त्रस त्रस पर्याप्त पाँचों मनोयोगी पाँचों

वचनयोगी खीवेद्वाले पुरूषवेदवारे चक्षुदशनवाले और संज्ञो जीवक जानना चादिए । आदा

रककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीबोंमें अपनी सब प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि

स्थितिबिभक्तिवाले जीव संख्यात हैं। इसी प्रकार अकषायी और यथाख्यातसंयत जीरके

जानना चाहिएे। अपगतवेदियोंमें अपनी सब प्रकृतियोंकी सब पदस्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात

हैं। इसी प्रकार मनःपयेयज्ञानीः संयत सामायिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहारविशुद्धिसंयत

और सूक्ष्मसांपरायिकसंयत जीवोंके जानना चाहिए

३७३ आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञान ओर अवधिन्ञानी जीवोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी

सब पद्स्थितिविभक्तिवारे जीव असंख्यात हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि चौबीस प्रकृतियोंकी

असंख्यातगुणहानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात दै । इसी प्रकार अवधिद्शनबाले और

सम्यग्टृष्टियोंक जानना चाहिए । संयतासंयतोंमें अद्स्ाईस प्रकृतियोंकी सब पद्स्थितिविभक्तिबाले

जीव असंख्यात हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि तीन दृशेनमोहनीयकी संख्यातगुणहानि और

असंख्यातगुणदानि स्थितिविभक्तिबाखे जीव संख्यात हैं। इसी प्रकार वेदकसम्यग्दष्टियोंके जानना

चाहिएं। किन्तु इतनी विशेषता है कि सब पदोंकी संख्यातगुणह्ानिस्थि तिविभक्तिवाले जीव असंख्यात

हैं। शुल्हछेश्यावाढोंमें सब प्रकृतियोंकी सब पद् स्थितिविभक्तिवारे जीव असंख्यात हैं। किन्तु

इतनी विशेषता है कि वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातरुणदानि स्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यात

हैं। पीत और पद्मलेश्यावालोंमें अद्ाईस प्रकृतियोंके सब पद्स्थितिविभक्तिबाले जीव असंख्यात

हैं। किन्तु इतनी विशेषता दै कि मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणहानि स्थितिविभक्तिबाछे जीव

संख्यात है। क्षायिकसम्यग्ष्टियोमें इकीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिवाछे

जीव असंख्यात हैं। तथा शेष पद् स्थिति बिभक्तिवाले जीव संख्यात है। उपशमसम्यम्टृष्टि

सासादनसम्यग्दष्टि ओर सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें अपने पदस्थितिविभक्तिवारे जीव असंख्यात

हैं। अभव्योंमें छब्बीस श्रकृतियोंका भंग ओघके समान दै । किन्तु इतनी विश्वेषता है कि

असंख्यातगुणहानि नहीं है । इस प्रकार परिमाणानुगम समाप्त हुआ ।

Page 250:

गा० २२ बड्टिपरूवणाए खेत्तं २३१

३७४ खेत्ताणुगमेण दुविहों णिदेसोओषे आदेसे० । ओघेण छब्बीस पय

डीणमसंखेजभागवह्डिहाणिअवद्विदाणि के० चेत्ते १ सव्बलोगे। सेसपदवि० लोग०

असंखेजदिभागे। सम्मत्त ०सम्मामि सव्वपदवि लोग असंखेजदिभागे । एवं तिरिक्ख

सब्वेइंदिय परुढवि ०बादरपुढवि ०बादरपुढविअपज्ञ ०आउ ० बाद्रआउ ०बादरआउअपज०

तेउ०ादस्तेड ०बादरतेउअपज्ञ ०वाउ ०बादरवाउ ०बादरवाउअपज ०सव्ववणप्फदि ०

सब्बणिगोदकायजोगिओरालियओरालियमिस्सकम्मइय ०णबुंस ०चत्तारिकसायमदि

सुदअण्णाण ० असंजद ०अचबखु ०किण्हणी लका उ ०भवसिद्धि ०अभवसि ० मिच्छादि ०

असण्णि०आहारिअणाहारि त्ति। णवरि अभव० सम्म०सम्मामि० णत्थि । सेस

मग्गणास अड्डाबीसं पयडीणं सव्यपद्वि० लोगस्स असंखेजमागे । णत्ररि छव्बीस पय

असंखेजभागव ड्डिहाणिअचट्टिदवि० बादरवाउकाइयपजतता लोगस्स संखेज़दिभागे ।

एवं खेत्ताणुगमों समचो

३७४ क्षेचाजुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका दहै ओघ और आदेश । ओघकी

अपेक्षा छव्वीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अबस्थितका क्षेत्र

कितना है सब रोक है । तथा शेष पदस्थितिविभक्तियोंका क्षेत्र लोकका असंख्यातवां भाग है ।

सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वके सब पदस्थितिविभक्तयोँका क्षेत्र लोकका असंख्यातवाँ भाग हे ।

इसी प्रकार तिर्यच सब एकेन्द्रिय प्रथिवीकायिक बादरप््थिवीकायिक बाद्रप्रथिबीकायिक

अपयोप्त जलकायिक वादरजलछकायिक बादरजलकायिक अपयोप्त अग्निकायिक बादर

अग्निकायिक बादरअग्निकायिक अपर्याप्त वायुकायिक बादरवायुकायिक बादरवायुकायिक

अपर्याप्र सब वनस्पति सब निगोद काययोगी औदारिककाययोगी औदारिकमिश्रकाययोगी

कार्मणकाययोगी नपुंसकवेदवाले क्रोधादि चारों कथायवाले मत्यज्ञानी श्रताज्ञानी असंयत

अचक्षुदर्शनवाले कष्णलेश्याबाले नीललेश्याबाले कापोतलेश्यावाले भव्यअमव्य मिथ्यादृष्टि

असंज्ञी अहारक और अनाहारक जीबोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि

अभेव्योंमें सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यात्व नहीं हैं। शेष मार्गणाओंमें अद्दाईस प्रकृतियोंके सब

पद्स्थितिविभक्तिबाले जीवोका क्षेत्र लोकका असंख्यातवाँ माग है। किन्तु इतनी विशेषता है

कि छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि ओर अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले

बादरवायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र छोकका संख्यातवाँ भाग है । ॥

विशेषाथओघसे छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थितपद॒वाले जीवोंका प्रमाण जनन्त है और वे सब लोकमें पाये जाते हैं क्योंकि इन पदोंको

एकेन्द्रियादिक सब जीव प्राप्त होते हैं अतः इनका क्षेत्र सब लोक कहा । किन्तु शेप पदवालछे जीव

स्वल्प हैं अतः उनका क्षेत्र छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कदा । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

सत्तावाले जीव भी थोड़े होते हैं अत इनका सब पदोंकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

क्षेत्र कहा । तियंच आदि और जितनी मार्मणाओंका सब रोक क्षत्र दै उनमें यद् ओघ प्ररूपणा

बन जाती है अतः उनके कथनको ओधके समान कहा । किन्तु जिनमागेणाओंका क्षेत्र सब लोक

नहीं है किन्तु लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है उनमें सब पदोंका क्षेत्र छोकके असंख्यातवें

भेगप्रमाण कद्दा । हाँ वायुकायिक पर्याप्त जीवोका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण है। और

इनमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागब्रृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितपदवाले जीव

बहुतायतसे पाये जाते हैं इसलिये पर्याप्त बायुकायिकोंमें इन पद्वाछोंका क्षेत्र छोकके संख्यातवें

भोगप्रमाण कहा । इस प्रकार क्षेत्रानुग॒म समाप्त हुआ ।

Page 251:

र्देर् जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

३७५ पोसणाणु० दुविहों णिदेसोओघे० आदे० । ओघेण छब्बीसं पयडीणं

असंखेजभागवड्डिहाणिअवट्टि० केव० खेत्त पो० सब्बलोगो दोवड ०दोहाणिवि०

केव० पो ० लोग० असंखेजदिभागो अट्ट चो० देखणा सव्यलोगो वा। असंखेज गुणदा णिवि ०

खेत्तमंगो । णवरि अणंताणु चउक्क० असंखे०गुणहाणिअवत्तव्ब० अट्टचोह० देखणा ।

हत्थिपुरिस० दोवड्डि ० लोग० असंखेजदिमागो अड बारह चोदषभागा वा देखणा।

एइंदिएसु विगलिंदियपंचिदिएसु कदोववादेसु संखे०गुणवड्डिविहत्तियाणं विगलिं

दियसंतादो संखेडज्रमागहीणद्धिदिसंतकम्मियणएईदिएसु विगलिंदिएसुप्पण्णेसु संखे०भाग

बड्डिविहृतत्तियाणं च सव्वलोगो किण्ण लब्भदे १ ण एत्थ उववादपदविवक््खाभावादों ।

सम्मत्तसम्मामिच्छताणं चत्तारिवष्टिअव्धिदअवत्तव्ब० के० खे० पो० १ लो०

वी पु यो भ

असंखे ० भागो अड चोद्० देखण। । चत्तारिद्णि० के खे० पो० १ लो० असं ग्मागो अद्र

चोद्० देखणा सव्बलोगो वा। एवं कायजोगि ०ओरालिय ०णबुंस० चत्तारिक०असं

जद०अचक्खु ०भव्रसि०आहारि चि । णवरि ओरालियकायजोगीसु छब्बोसं पयडीणं

दोबड्डिदोहाणीणं लोग असंखेग्मागो सब्बलोगो वा। अणंताणु०चउक्क०

३७५ स्पशेनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघसे और आदेशसे। ओघकी

अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि ओर अवस्थित स्थिति

विभक्तिवाले जो्वोनि कितनेश्ेचरका स्परीन किया है सव लोकका स्पशन किया है । दो बृद्धि और

दो हानि स्थितिविभेक्तिवाले जीवॉने कितने क्षेत्रका स्पशेन किया है । कोकके असंख्यातवे भाग

क्षेत्रका स्पशेन किया है। तथा त्रसवालीके चौदह मागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग क्षेत्रका और सब

लोक क्षेत्रका स्पशेन किया ह । असंख्यातगुणहानिस्थितिविभेक्तिवालोंका स्पशेन क्षेत्रके समान हे ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य स्थिति

विभेक्तिका स्पशेन त्रस नारीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग है। तथा स्त्रीवेद और

पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंका स्पशेन लोकका असंख्यातवाँ भाग ओर चस नालीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम आठ और बारह भाग है।

शंका एकेन्द्रियोंके विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर संख्यातगुणबुद्धिस्थिति

विभक्तिवालॉंका और विकलेन्द्रियोंके सत्त्वसे संस्यातभागहानि स्थितिसत्कमंवाले एकेन्द्रियोंके

विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने पर संख्यागभागबृद्धिस्थितिविभक्तिवाले जीवोंका स्पशेन सब छोक

क्यों नहीं प्राप्त होता हे १ रा

समाधान नही क्योंकि यहाँ उपपादपद्की विवक्षा नदीं हे ।

सम्यक्टव और सम्यग्मिथ्यास्वकी चार वरद्धिभजवस्थित और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवों ने

कितने क्षेत्रका स्पदोन किया है १ छोकके असंख्यातवें भाग और त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम

आठ भाग कषेत्रका स्पशेन किया है । चार हानि स्थितिविभक्तिवाल जीरवोने कितने क्षेत्रका स्पशेन किया

है छोकके असंख्यातवें माग त्रस नालीके चौद॒ह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सव लोक

क्षेत्रका स्पशेन किया है । इसी प्रकार काययोगी औदारिककाययोगी नपुंसकवेदवारे क्रोधादि

चारों कषायवारे असंयतअचक्षुद्शनीभव्य और आहारक जीवोके जानना चादिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि औदारिककाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी दो वृद्धि जौर दो हानियोंका स्पशन

छोकका असंख्यातवाँ साग और सब लोक है । तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणद्वोनि

Page 252:

गा० २२ बड्डिपरूवणाए फोसणं २३३

असंखे० मुणहाणिअवत्तव्वा्णं इत्थिपुरिस दोवड्धीणं च लोग० असंखे भागो ।

सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिवड्डिअवड्डि अवक्तव्य ० लोग ० असं मागो । चत्तारिदाणि

लो० असंख ०भागो सव्वलोगो वा । ओरालियभ्मि बुत्तविसेसौ चेव णञुंसयवेदे । णवरि

इत्थिपुरिस दोबड्डीणं लोगस्स असंखे० भागो छचोदसभागा वा देखणा । असंजदेसु एक

बीसपयङीणमसंखे गुणद्वाणी णत्थि एत्तिओ चेव विसेसो ।

और अवक्तव्यका तथा सखरीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धियोका स्पशीन छोकका असंख्यातवाँ भाग

है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका स्पशेन छोकक

असंख्यातवाँ भाग है तथा चार हानियोंका स्पशेत लोकका असंख्यातवाँ भाग और सब लोक

है। औदारिककाययोगमें जो विशेषता कदी है वह नपुंसकवेदर्मं जानना चाहिए। किन्तु इतनी

विशेषता दै कि खीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंका स्पर्शन लोकका असंख्यातवाँ भाग और

श्रस नालीके चौदह भागोमेसे कुछ कम छह भाग दै । असंयतोंमें इक्ीस प्रकृति्योकी असंख्यात

गुणानि नहीं हे बस इतनी विशेषता है ।

विशेष।्थ छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभेगवृद्धि असंख्यातभेोगहानि और अवस्थित

पद् एकेन्द्रिय आदि सभी जीबोंके सम्भेव हैं इसलिए इनका सर्वलोकम्रमाण स्पशेन कहा है ।

संख्यातभोगवृद्धि ओर संख्यातभागहानि स्वस्थानकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय आदिकके तथा संख्यात

गुणबृद्धि और संख्यातगुणहानि स्वस्थानकी अपेक्षा संज्ञी पद्नेन्द्रियके सम्भव हैं और इनका वर्तेमान

स्पदीन लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण दै इसलिए इस अपेक्षासे यह् उक्त माण कहा है। तथा

संज्ञी पच्चन्द्रियके स्वस्थान विहार आदिके सम्रय भी ये वृद्धियाँ और हानियाँ सम्भेव हैं इसलिए

इस अपेक्षासे यह् स्पशन कुछ कम आठ बटे चौदह राजु प्रमाण कहा दै । तथा जो एकेन्द्रिय आदि

द्वीन्द्रिय आदिकमें उत्पन्न होते हैं उनके परस्थानकी अपेक्षा ये वृद्धियाँ और हानियाँ सम्भेव हैं और

ऐसे जीवोका स्पशेन सर्वलोकप्रमाण है इसलिए इस अपेक्षासे इनका सर्बेछोकप्रमाण स्न कहा

है । इन प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणहानिका स्पशन क्षेत्रके समान है यह स्पष्ट ही है। मात्र यहाँ

उक्त प्रकृतियोंमेंसे कुछ प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कुछ विशेषता है। यथाअनन्ताजुबन्धी चतुष्कको

असंख्यातगुणहानि ओर अवक्तव्यपद देबोंके भी विहारादिके समय सम्भेव हैं इसलिए इनके इन

दो पदोंकी अपेक्षा स्पशेन कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण कहा ह । खीवेद और पुरुषवेदकी

संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणब्र॒द्धि जिन जीवॉके होती है उनका वर्तेमान स्पशेन लोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण होनेसे यह उक्त प्रमाण कहा है । देवोके विहारादि पदको अपेक्षा यद्

कुछ कम आठ वदे चौदह राजुप्रमाण होनेसे उक्त प्रमाण कदा है । तथा नीचे छह और ऊपर छह्

इस प्रकार कुछ कम बारह वटे चौदह राजु प्रमाण प्राप्त होनेसे यह उक्त प्रमाण कहा दै । यहाँ

डपपादपद्की विवक्षा होने पर इन वृद्धियोंका सब लोकप्रमाण स्पशेन बन सकता ह पर उसकी

विवश्चा नहीं होनेसे नहीं कहा है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार ब्रद्धिर्यो अवस्थित और

अवक्तव्यपद जो मिथ्यादृष्टि सम्यग्दर्टि होते हैं उनके सम्भेव है और इस अपेक्षासे बर्तेमान स्पशेन

लोकके असंख्यातवें सागप्रमाण और अतीत स्पशेन कुछ कम आठ वटे चौदह राजुप्रमाण प्राप्त

होनेसे यह् उक्त प्रमाण कटा है। तथा इनकी चार हानियाँ सबके सम्भव हैं इसलिए इनका

वतेमान स्पशेन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण विहारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौद

राजुप्रमाण और मारणान्तिक व उपपादपदकी अपेक्षा सर्वछोकप्रमाण कहा है। यहाँ मूलमें

काययोगी आदि अन्य जितनी मागेणादे गिनाई हैं उनमें यह ओघमप्ररूपणा अविकछ बन जाती है

इसलिए उनके कथनको ओघके समान कहा है। मात्र औदारिककाययोग नारकियों और देवोंके

३३०

Page 253:

२३४ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

३७६ आदेसेण णेरइएसु छब्बीस पयडीणं तिण्णिवड्डितिण्णिदाणिअवड्डिद्०

के० लो असंखे० भागो छचोद० देखणा । सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिहाणि० लोग०

असंखे ० भागो छचोदस० देखणा । चत्तारिषड्डिअवट्डि ०अवत्त व्व० अणंताणु०चडक्क०

असंखे ० गुणहाणिअवत्तव्ब ० के० १ लोग० असंखे०भागो । विदियादि जाव सत्तमित्ति

एवं चेव । णवरि अप्पणो रज्ज् णायव्वा । पठमपु०वि० खेत्तभंगो ।

नहीं होता इसलिए इसमें छब्बीस प्रकृतियोंकी दो वृद्धियों और दो हानिर्योका स्पशेन छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण और सब छोकप्रमाण कहा है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यात

गुणददानि ओर अवक्तव्यपदका तथा खीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंका स्पशेन लोकके असंख्या

तवे भागप्रमाण कहा है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार बृद्धियाँ अवस्थित और अवक्तव्य

पदका स्पशेन भी छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा दै । तथा चार हानियोंका स्पशन छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण और सव छोक प्रमाण कहा है। यहाँ औदारिककाययोगमें जो विशेषता

कही है वह नपुंसकवेदमें अविकल बन जाती है। यद्यपि नपुंसकवेद नारकियोंके होता है पर

उससे उक्त विशेषतामें कोई अन्तर नहीं पड़ता है। हाँ खीवेद और पुरुषवेदकी दो इड्धियोंके

स्पशेनमें अन्तर आ जाता है क्योकि जो नारकी तिर्यञ्चो और मनुष्योंमें मारणान्तिक समुद्घात

करते हैं उनके भी स््रीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धियाँ सम्भव हैं अतः नपुंसकोंमें इन दो वेदोंकी

दो बृद्धियोंका स्पशेन छोकके असंख्यातबें भेगप्रमाण और कुछ कम छह वटे चौदह राजुप्रमाण

कहा है । इक्कीस प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणहानि चारित्रमोहकी क्षपणाके समय होती है इसलिए

यहाँ असंयतोंमें इसका निषेध किया है ।

३५६ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें छब्बीस प्रकृतिर्योकी तीन ब्ृद्धि तीन हानि और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीबॉने कितने क्षेत्रका स्पदोन किया है छोकके असंख्यातवें भाग

और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया ह । सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानिस्थितिविभक्तिवाले जीर्वोने लोकके असंख्यातवं भाग और

श्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागग्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया है । चार वद्धि

अवस्थित और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोने तथा अनन्ताुबन्धीचतुष्ककी असंख्यात

गुणहानि और अवक्तव्य स्थितिविभेक्तिवाले जीवोने कितने क्षेत्रका स्पशेन किया है १ छोकके

असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्पशेन किया है । दूसरीसे लेकर सातवीं प्रथिवीतक इसी प्रकार जानना

चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता दै किः अपने अपने राजु जानना चाहिए। तथा पहली प्रथिवीमें

स्पशेन क्षेत्रके समान है ।

विशेष थे सामान्यसे नारकियोंके स्पशेनको ध्यानमें रखकर यहाँ छब्बीस प्रकृतियोंकी

तीन बृद्धियाँ तीन हानियाँ और अवस्थितपद॒का सरन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और कुछ

कम छह बटे चौदह राजुप्रमाण कहा दै । इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

द्वानियोंका उक्त स्पशेन घटित कर लेना चाहिए। पर इनकी चार वृद्धियाँ अवस्थित और अब

क्तव्यपद् तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपद् मारणान्तिक समुद्रात

और उपपादपदके समय सम्भेव न होनेसे यह स्पशन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण कहा है।

द्वितीयादि प्रथिवियोंमें यद स्पशेन इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए । मात्र कुछ कम छह बटे

चौदह राजुप्रमाण स्पशेनके स्थानमें अपना अपना स्प्शन कहना चाहिए । पहली प्रथिवीमें स्पशेन

क्षेत्रके समान है यह स्पष्ट ही है।

ता भरतौ अप्पणा रज्जू इति पाठः ।

Page 254:

गा० २२ वड्धिपरूवणाए फोसणं २३५

३७७ तिरिक्खेसु छब्बीसं पयडीणं असंखे०भागवड्डिद्णिअवद्ठि० ओधं ।

दोवड्डिदोहाणि० लोग० अखंखे०भागो सव्वलोगो बा । णवरि अणंताणु०चउक्क ०

असंख ० गुणहा णिअवत्तव्व० इत्थिपुरिस० दोबड्ि छोग० असंखे०भागो सम्मत्त

सम्मामि० चत्तारिह्ाणि० लो० असंखे०भागो सव्बलोगो वा। सेसपदाणं खेत्तभमो ।

पंचि०तिरिक्खतियस्मि छब्बीसं पयडीणं सब्बपदाणं लो० असंखे०भागों सब्बलोगो

वा। णवरि अणंताणु०चउक्क० असंखे गुणहाणिअवतव्व० इत्थिपुरिस० तिण्णि

बड्डिअवद्टि लो० असंखे०मागो । सम्मत्तसम्मामि० तिरिक््खोघं । पंचि०तिरि०

अपज्ज ०मणुसअपज्ज ० अद्कावीसं पयडीणं सव्वपदवि० रोग असंखे०भागो

सब्वलोगो वा। णवरि इस्थिपुरिस तिण्णिबड्धिअवट्धि लो असंखे०भागो ।

एवं पचि ०अपज्ज ०तसअपज्जत्ताणं । मणुसतियम्मि छन्धीसं पयडीणं सब्बपदवि०

पचि ज म कप

दियतिरिकिखभंगो । णवरि असंखेगुणदाणि लोग० असंख०भागो । सम्मत्त

सम्मामि० पंचिर तिरिक्खभंगो ।

६ ३७५ तियचोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभेगब्ृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थितका भंग ओघके समान है। दो बृद्धि और दो हानि स्थितिविभक्तिवाले जीवॉने छोकके

असंख्यातवे भाग और सब छोक क्षेत्रका सरन किया है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्ता

उबन्धीचलुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिबाले जीवने तथा ल्लीवेद और

पुरुषवेदकी दो वृद्धि स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्पशेन किया है ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार हानिस्थितिविभक्तिवाले जीबॉने छोकके असंख्यातवें भाग

्षे्रका ओर सब लोक क्षेत्रका स्पशेन किया है । शेष पदोंका भंग क्षेत्रके समान है । तीन प्रकारके

पंचेन्द्रिय तियचोंमें छब्बीस प्रकृतियोंके सब पदोंका स्पशेन छोकका असंख्यातवाँ भाग और सब

कोक है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अब

क्तव्यका स्पशेन तथा खीवेद और पुरुषवेदकी तीन वृद्धि और अवस्थितका स्पशेन लोकका असंख्या

त्वो भाग हे । सम्यक्स्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा स्पशेन सामान्य तियचोंके समान है।

पंचेन्द्रिय तिर्य॑च अपयोप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें अद्वाईस प्रकृतियोके सब पद् स्थितिविभक्ति

वालेन लोकके असंख्यातवें भाग और सब खोकका स्पशेन किया है । किन्तु इतनी विशेषता है

कि सवेद और पुरुषवेदकी तीन ब॒द्धि और अवस्थितस्थितिविभक्तिका स्परोन छोकका असंख्यातवाँ

भाग है । इसी प्रकार पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और चस अपयीप्त जीवॉके जानना चाहिए। तीन प्रकारके

मनुष्योंमें छब्बीस प्रक्ृतियोंके सब पदोंका भंग पंचेन्द्रिय तियचोके समान है। किन्तु इतनी

विशेषता है कि असंख्यातगुणहानिका स्पशेन लोकका असंख्यातवाँ भाग है। सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वका भंग पंचेन्द्रिय तियचोंके समान है ।

विशेषाथ तियेच्रोमे छच्वीस प्रकृतियोंकी असंख्यावभागबद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थितपद सब एकेन्द्रियादि जीवोंके सम्भव होनेसे इनका स्पशेन ओघके समान सब छोकप्रमाण

कहा है । इन प्रकृतियोंकी दो बृद्धियाँ औरईदो हानियाँ ऐसे जीवक ही सम्भव हैं जिनका वर्तेमान

स्पशन लोकके असंख्यातबें भागप्रमाण और अतीत स्परोन सब छोकप्रमाण होता है अतः यह्

चक्तप्रमाण कहा है । मात्र अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपदका तथा

१ अआ भरतौ तिण्गिवद्वतिण्णिहयणिभवदधि इति बाढः

Page 255:

२३६ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

३७८ देवेसु मिच्छत्तबारसक० सत्तणोक० सव्वपद्वि० छो० असंखे०भागो

अड्डणवचोद० देखणा । अणंताणु०चउक० असंखे०गुणहाणिअवत्तव्व इत्थिपुरिस०

तिण्णिवड्डिअव्डि सम्मत्तसम्मामिच्छन्ताणं चत्तारिवड्डिअवद्धि ०अवत्त लो०

असंखे ० भागो अट्डचोद० देखणा । सेसपद्वि० अट्ठणवचोह० देखणा । एवं भवणादि

जाव सहस्सार त्ति । णवरि सगपोसणं वत्तव्वं। आणदादि जाब अच्चुद् तति अद्गाबीसं

पयडोणं सब्बपदबि० लोग० असंखे०भागो छचोदस देखणा। उवरि खेत्तमंगो ।

खीवेद् और पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंका स्पशेन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह स्पष्ट ही है।

सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी चार हानियाँ उन सब जीवोंके सम्भव हैं जो इन प्रकृतियोंकी

सत्ताके साथ एकेन्द्रियादिमें उत्पन्न होते हैं ॥ यतः इनका वतेमान स्पशेन लोकके असंख्यातबें भाग

प्रमाण और अतीत स्पशेन सब छोकप्रमाण है अतः यह स्पशन उक्त प्रमाण कहा है । यहाँ इन दो

प्रक्रतियोंके शेष पदोंकी अपेक्षा स्पशेन क्षेत्रके समान है यह स्पष्ट ही हे । पञ्चेन्द्रिय तियेब्त्रिकमें

छब्बीस प्रकृतियोंके सम्भव सब पदोंका स्वामित्व ओघके समान होनेसे उनकी अपेक्षा स्पशेन

खोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब छोकप्रमाण कहा है। मात्र ू अनन्तानुबन्धीचतुष्क

स्लीवेद और पुरुषवेद् इसके अपवाद हैं इसलिए इन प्रकृतियोंके जिन पदोंके स्पशेनमें विशेषता है

उसे अछगसे स्पष्ट किया है । इनमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंका स्पशेन सामान्य

तिर्यच्रोके समान प्राप्त होनेसे वह उनके समान कहा ह । पञ्चेन्द्रिय ति्यच्च अपर्याप्त और मनुष्य

भपर्याप्तकोंमें खीबेद ओर पुरुषबेदकी तीन बुद्धि जौर अवस्थितपदके स्पशेनमें ही विशेषता द । शेष

ध्पशेन इन दोनों मार्गणाओंके स्पशेनके समान ही है । इसी प्रकार पंचेन्द्रिय अपयाप्त और त्रस

पर्याप्त जीवोंमें जानना चाहिए । एकेन्द्रिय आदिमें मारणान्तिक समुदूघात करनेवाले इन जीवोके

याजो एकेन्द्रिय आदि जीव मर कर इनमें उत्पन्न होते हैं उनके सत्रीबेद और पुरुषबंदकी तीन

वृद्धियाँ और अवस्थित पद् नहीं होते इसलिए इनमें इन प्रकृतियोंके उक्त पदोंका स्पशेन छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । मनुष्यत्रिक्मं और सब स्पशेन तो पंचेन्द्रिय तिरयच्चोके समान

बन जाता दै । मात्र इनमें भिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी भी असंख्यातगुणहानि

सम्भव है इसलिएणं इनमे छब्बीस प्रकतियोंकी असंख्यातगुणहानिका स्पशेन छोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण कहा हे

३७८ देवोंमें मिश्यात्व बारह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद् स्थितिविभक्तिवाले

जीवनि लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम

नौ भाग क्षेत्रका स्पशेन किया है । अनन्ताजुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका

स्ीवेद और पुरुषवेदकी तीन वृद्धि और अवस्थितका तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार बृद्धि

अवस्थित और अवक्तव्यका स्पशेन छोकका असंख्यातवाँ भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम आठ भाग है। तथा शेष पदोंका स्पशेन त्रसनालीके चौदद् भागोंमेंसे कुछ कम आठ

और कुछ कम नौ भाग है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सहखार कल्प तक जानना चाहिए।

किन्तु इतनी विशेषता है कि अपना अपना स्पशेन कहना चाहिए। आनत कल्पसे लेकर च्युत

कल्प तकके देवोंमें अद्दाईस प्रकृतियोंके सब पद् स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें

भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भोगम्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया हे । इसके

ऊपर स्पशेनका भंग क्षेत्रके समान है ।

विशेषाथदेवोंमें अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपद

स्लीवेद और पुरुषवेदकी तीन बृद्धियाँ और जवस्थितपद् तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

Page 256:

गा० २२ चड्डिपरूवणाए फोसणं २३७

३७६ इंदियाणु० सव्वेहदियाणं छञ्ोसं पयडीणमसंखे भागवड्डिहाणि

अवद्ध के० खेत्तं पोसि्दं सव्वलोगो । दोदाणि० लोगस्स असंखे मागो सच्वनोगो

वा। सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिहाणि खो असंखेरमामो सव्वल्लोगो बा । एवं

पढवि ०बादरपुढवि बादरपुढविअपज्ज ०सुहुमपुटवि ० सुहुम पु विषज्जत्तापञ्जत्आउ ०

बादरआउ ०बादरआउअपज्ज ०सुहुमआउ ०सुहुम आउपज्जत्तापज्जत तेउ ०बादरते उ ०

बादरतेउअपज्ज सुहुमतेऽ ० सुहुमते उपज्जचापज्जत्तबाउबाद्र॒बाउ ०बाद्रबवाउअपज त्र०

सुहुमचाउ ०सुहुमवाउपज्जत्तापज्जत्त सव्ववणप्फदिसव्बणिगोदा त्ति ।

३८० सब्वविगलिंदियाणं छब्बीसं पयडीणमसंखे०भागवड्डि दाणिसंखे०भाग

चार वृद्धियाँ अवस्थित और अवक्तव्य पद् यथासम्भेव मारणान्तिक समुद्घातके समय और

एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्ूघातके समय नहीं होते अतः इनकी अपेक्षा स्पदीन छोकके असं

ख्यातवें भगप्रमाण ओर कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण कहा है । तथा शेष स्पर्शन सामान्य

देवोंके स्पशैनके समान कहा है। भेवनवासी आदिमे सामान्य देवोंके समान स्पर्शन घटित हो जाता

है इसलिए वह् उनके समान कहा है। मात्र जिसका जो स्परदीन हो वह् लेना चाहिए। आगे आन

तादिकमें उनके स्पशैनको ध्यानम रखकर स्पशेन कहा है क्योकि वहाँ जिन प्रकृतियोंके जो पद्

सम्भ॑व हैं उनका उक्त प्रमाण सपरन प्राप्त होनेमें कोई बाधा नहीं आती ।

३५९ इंन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे सब एकेन्द्रियोंमें छब्बीस प्रक्रतियोंकी असंख्यातभाग

वृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले जी वोन कितने क्षेत्रका स्पशेन किया हे

सब लोककां स्पशेन किया है । दो हानिवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें भाग ओर सब छोकका

स्पदोन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी चार हानिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें

भाग ओर सब छोकका स्पशैन किया है। इसी प्रकार प्रथिवीकायिक बाद्र प्रथिबीकायिक बादर

प्रथिवीकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म प्थिवीकायिक सूक्ष्म प्रथिवीकायिक पर्याप्त और अपयाप्त जल

कायिक बाद्र जलकायिकबादर जलकायिक अपयाप्त सूक्ष्म जठकायिक सूक्ष्म जलकायिक पर्याप्त

और अपयौप्त अभिकायिकः बादर अग्निकायिक बादर अग्निकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म अभिकायिक

। सूक्ष्म अभ्रिकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त वायुकायिकःवाद्र वायुकायिकःबादर वायुकायिक अपर्याप्त

सूक्ष्म वायुकायिक सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त ओर अपयोप्त सब वनस्पतिकायिक और सब निगोद्

जीवोंके जानना चाहिए ।

विशेषाथं एकेन्द्रियोंमें सबके छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभाग

हानि और अवस्थित पद सम्भव हें इसलिए इनकी अपेक्षा सब रोक प्रमाण स्यान कहा है ।

दो हानियाँ ऐसे एकेन्द्रियोके दी सम्भव हैं जो संज्ञी पश्चेन्द्रियोंमें इन हानियोंके योग्य स्थिति

काण्डकोंको प्रारम्भ कर और मरकर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं। यतः ऐसे जीवॉका वर्तमान स्पर्शन

छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पशेन सब छोकप्रमाण है अतः इन पदोंकी अपेक्षा

उक्त प्रमाण स्पशेन कहा है। इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार हानियोंकी अपेक्षा

स्पशन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब लोकप्रमाण घटित कर ठेना चाहिए। यहाँ

पृथिवीकायिक आदि अन्य जितनी मागेणाएं गिनाई हैं उनमें यह व्यवस्था बन जाती है अतः

उनकी प्ररूपणा एकेन्द्रियोंके समान कही है ।

३८० सब विकलेन्द्रियोंमें छब्बीस प्रकृतियोकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि

Page 257:

२३८ जयधवरासदिदे कसायपाहुडे ट्विद्विहत्ती ३

वड्डिहाणिसंखे ० गुणदाणिअव्टि ० लोग असंखे०भागो सव्वलोगो वा । णवरि इत्थि

पुरिस० दोवड्डिअवद्धि छोग० असंखे०भागो । सम्मत्तसम्मामि० चदुण्णं हाणीण

मोघं ।

३८१ पंचिंदियपंचिं०पतञ्ञ ० मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० सव्वपदबि० लोग०

असंखे ०भागो अ्डचोद सभागा वा देखणा सव्वलोमो वा। असंखे०गुणद्वाणि० खेत्तभंगो।

णवरि अणंताणु असंखेगुणहा णिअवत्तव्व अड्डचोदस० देखणा । इत्थिपुरिस ०

तिण्णिव ड्विअवष्टि० लोग० असंखेग्मागो अड्डबारहचोद० देखणा । सम्मत्तसम्मामि०

चत्तारिवड्डिअवद्टि अवत्तव्व ० लोग० असंखे०भागो अइ्बचोदस० देखणा । चत्तारि

पु ५

हाणि० लोग० असंखे० भागो अइचोद० देश्षणा सब्बलोगो वा । एवं तसतसपज्ञ ०

पंचमण०पंचवाचि ०चक्खुदंस ०सण्णि तति ।

संख्यातभागबृद्धि संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि और अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोंने

छोकके असंख्यातवें भाग और सब लोकका स्पशेन किया है । किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद

और पुरुषवेदकी दो बृद्धि और अवस्थितका स्पर्शन छोकका असंख्यातवां भाग है । तथा सम्यक्त्व

ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानियोंका स्पर्शन ओघके समान हे ।

विशेषार्थ विकलेन्द्रियोंका जो स्पर्शन दै वह इनमें छब्बीस प्रक्ृतियोंकी दो बुद्धि तीन

हानि और अवस्थान पदमे भी सम्भव है इसलिए यह् उक्त प्रमाण फटा है। मात्र खरीवेद् और

पुरुषवेदकी दो इद्धि ओर अवस्थान पदके समय नपुंसकवेदियोंमें मारणान्तिक समुद्धात सम्भव

नहीं है तथा विकलन्रयोमे उपपाद्पद् भी सम्भव नहीं है इसलिए इनकी अपेक्षा स्प्शन छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण कदा है । इनमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके चार पदोकी अपेक्षा

स्पशेन ओघके समान है यह स्पष्ट ही है ।

३८१ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीबोमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायों

के सब पद्स्थितिविभक्तिवाले जीबोंने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालछीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम आठ भाग और सब छोक प्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया है तथा असंख्यातगुणहानिका

अंग क्षेत्रके समान है। किन्तु इतनी विशेषता दै कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यात

गुणानि और अवक्तव्यका स्पशेन त्रसनारोके चौद॒ह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण द

तथा खरवद् और पुरुषवेदकी तीन वृद्धि और अवस्थितका स्पशेन छोकका असंख्यातवाँ भाग ओर

श्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम बारह भाग है। सम्यक्त्व और सम्यग्मि

थ्या्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यस्थितिबिभक्तिवाले जीबोंने लोकके असंख्यातवें

भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा चार

हानिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग ्रसनारीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग

और सब कोक क्षेत्रका स्पशन किया है। इसी प्रकार अस त्रसपर्याप्त पांचों मनोयोगी पाँचों

बचनयोगी चश्चुद्दौनवाङे और संज्ञी जीवोंके जानना चाहिए ।

विशेषाथे पंचेन्द्रियद्धिकका स्पेन लोकके असंख्यातं भाग प्रमाण कुछकम आठबटे

चौदह राजुप्रमाण और सब कोक प्रमाण है। वह यहाँ छब्बीस प्रकृतियोंके सब पदोंका सम्भव

होनेसे उक्त प्रमाण कहा है । अनन्तानुवन्धीचलुप्कके सिवा इन प्रकृतियोंको असंख्यातगुणहानि

क्षपणाके समय होती दै इसलिए इस अपेक्षा स्पशेन क्षेत्रके समान कहा है यह् स्पष्ट ही ह्टै।

अनन्तानुबन्धौचुष्कको असंख्यातगुणद्ञानिऔर अवक्तव्यपद बिद्दारादिके समय भी सम्भव हें

Page 258:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए फोसणं २३६

३८२ बादरपुढनिपज अद्धावीसं पयडीणं सगपदवि रोग असंखे०भागों

सश्वरोगो वा । णवरि इत्थिपुरिस० असंखे०भागवड्डिअव्धि० छोग० असंखे० मागो

एवं बादरआउ०तेउ०बराउ०बादरवणप्फदिपत्तेयपजत्ताणं णवरि बादरबाउ०पजञ्ञ ०

लोग० संखे०भागो सब्वलोगो वा। इत्थिपुरिस० असंखे०भागवड्डिअवद्धिद्विद्द०

लोग० संखे०भागो ।

इसलिए इनकी अपेक्षा स्पशेन कुछकम आठबटे चौदह राजुप्रमाण कहा है। स््रीवेद और पुरुषवेद

की तीन बुद्धिर्यो ओर अवस्थितपद स्वस्थानके समय विहारादिके समय तथा देवों और नारकियोंके

तियेज्लो और मलुष्योमें मारणान्तिक समुद्घातके समय भी सम्भव हैं इसलिए इन प्रकृतियोंके

उक्त पदोंकी अपेक्षा स्पर्शन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण

और कुछ कम बारह वटे चौदह राजुप्रमाण कहा है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

बृद्धियाँ अवस्थित और अवक्तव्यपद स्वस्थानमें और विदारादिके समय ही सम्भव हैं इसलिए

इन दो ग्रकृतियोंके उक्त पदोंकी अपेक्षा स्पर्शन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और कुछ कम आठ

बटे चौदह राजुप्रमाण कहा है। इन दो प्रकृतियोंकी चार हानियोंका स्पशन खोकके असंख्यातवें

भागप्रमाणः कुछ कम आठ वटे चौदह राजुप्रमाण और सब लोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है क्योंकि

ये चारों हानियाँ उद्देलनामें भी सम्भव होनेसे उक्तप्रमाण स्पर्शन बन जाता हे । यहाँ त्रस आदि

अन्य जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें यह व्यवस्था बन जाती है इसलिए उनके कथनको पंचे

न्द्रियद्विकके समान कहा है ।

३८२ बादर प्रथिवीकायिक पर्याप्तको में अद्वाईस प्रकृति्योके सब पद् रिथतिविभक्तिवाके

जीर्वोने छोकके असंख्यातवें भाग और सव खोक क्षेत्रका स्पशैन किया है । किन्तु इतनी विशेषता

है कि ख्ीवेद और पुरुषवेदकी असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितका सरन छोकका असंख्यातवाँ

भाग है। इसी प्रकार बादर जलकायिक पर्याप्त बादर अभ्रिकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक

पयौप्त और बादर वनस्पतिकायिक श्रत्येकशरीर पर्यौप्त जीवोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी

विशेषता ह कि बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंने छोकृका संख्यातवाँ भाग और सब छोकका

स्पशन किया है तथा खीवेद ओौर पुरुषवेदकी असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितस्थितिविभक्ति

वालोंने छोकके संख्यातबें भाग क्षेत्रका स्मरन किया है ।

विशेषार्थ बादर प्रथिबीकायिक पर्याप्त जीबोंका स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

और सब लोकप्रमाण है । अतः यहाँ अह्वाईस प्रकृतियोंके जो पद् सम्भव हैं उनका यड् स्पर्शन

बन जाता है इसलिए वह उक्तप्रमाण कहा है । मात्र स्रीवेद और पुरुषवेदकी असंख्यातभागवृद्धि

और अवस्थितपद इसके अपवाद हैं। बात यह दै कि जो उक्त जीव नपुंसकोंमें मारणान्तिक

समुद्वात करते हैं उनके ये पद् नहीं होते इसलिए इन दो श्रक्ृतियोंके उक्त दो पदोंकी अपेक्षा

स्पेन रोकके असंख्यातवें मागप्रमाण कदा है । यहाँ अन्य जितनी मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें यह

व्यवस्था बन जाती है इसलिए उनमें बादर प्रथिवीकायिक पर्याप्त जीबोंके समान स्पशन कह्दा है ।

मात्र बादर वायुकायिक पर्याप्त जीबोंका स्पशेन छोकके संख्यातवें भागप्रमाण और सब छोकप्रमाण

होनेसे इनमें सब भ्रकृतिर्योके सम्भव पदोंकी अपेक्षा यह स्पशेन जानना चाहिए। किन्तु ख्रीवेद

और पुरुषवेदकी असंख्यातभागबृद्धि और अवस्थितपद्की अपेक्षा यह स्पशंन छोकके संख्यातवें

भागप्रमाण ही जानना चाहिए। कारण स्पष्ट ही है।

ला प्रतौ असंखे०भागो इति पाठः । २ ता० प्रतौ असंखे०भागो इति पाठ ।

Page 259:

२७४० जयघवछासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती दे

३८३ ओरालियमिस्स छब्बीसं पयडीणं असंखे०भागवड्डिहाणिअवष्ि ०

के० १ सब्बलोगो । दोवडिदोहाणि० केव० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।

इत्थिपुरिस० दोवड्डि० रो असंखे०भागो । सम्मत्तसम्मामि० चदुष्डं दाणीणमोषं ।

8 ३ ८ वेउव्विय० छब्बीसं पयडीणं असंखे० मागवड्डिहाणि०दोबड्डिदोहाणि

अबद्ध लो० असंखेजदिमागो अइ्तेरदचोह० भागा वा देक्षणा । णवरि इत्थिपुरिस॒०

तिण्णिबड्डि अव्टि० लोग० असंखे मागो अ्बारहचोद देखणा । अणंताणु०चउक०

असंखे ० गुणहाणि०अवत्तव्व ० सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिव्डिअवद्टि० अवत्तव्ब॑ च

अट्डचोदस देघणा । सम्मत्तसम्मामि० सेसपदाणं लोग० असं०भागो अदट्तेरह०

देखणा। वेउव्वियमिस्स० अट्टावीसं पयडीणं सव्वपदबि० लोग० असंखे०भागो ।

वि ३८३ ओदारिकमिश्रकाययोगि्योमे छव्वीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यात

भागहानि और अवस्थितस्थितिविभक्तिवाङे जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पशेन किया है सब टोकका

स्पशैन किया है । दो बृद्धि ओर दो हानिवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है १ छोकके

असंख्यातवें भाग और सब लोक क्षेत्रका स्पशेन किया है । पर खीवेद और पुरुषवेद की दो

वद्धियोका स्पेन छोकका असंख्यातवाँ भाग है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार हानियोंका

स्पशेन ओघके समान हे ।

विशेष।थ औदारिकमिश्रयोगी जीव सब छोकमें पाये जाते हें इसलिए इनमें छब्बीस

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितपदका स्पशेन सब छोकप्रमाण

कहा है। इनमें दो बृद्धि ओर दो हानियोंका वतेमान स्पशन तो लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

ही है परन्तु अतीत स्पशेन सब छोकप्रमाण बन जाता है इसलिए यह् लोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण ओर सब छोकप्रमाण कहा है । मात्र खीवेद ओर पुरुषवेदकी दो वृद्धियाँ न तो एके

निद्रयोंमें सम्भव हैं और न नपुंसकोंमें मारणान्तिक समुद्रात करनेवाछोंमें सम्भव हैं जन्यत्र

यथायोग्य होती हैं अतः इन दो ग्रकृतियोंके उक्त पदोंका स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

३८४ वैक्रियिककाययोगियोमे छब्बीस प्रकति्योकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यात

भागहानि दो ब्रद्धि दो हानि ओर् अवस्थितस्थितिविभक्तिवाले जीवोने लोकके असंख्यातवें भाग

और त्रस नाछीके चौदद् भागोंमेंसे छुछ कम आठ और कुछ कम तेरह भाग क्षेत्रका सपर्यन किया

दै । किन्तु इतनी विशेषता है कि स्रीवेद ओौर पुरुषवेदकी तीन ब्रद्धि ओर अवस्थितका स्पशेन

छोकका असंख्यातवाँ भाग और त्रसनाखीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम

बारह भाग है । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका तथा सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका स्पशन त्रस नाछीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम आठ भाग है तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके शेष पदोका स्पशेन छोकका असंख्या

त्वो भाग और त्रस॒नाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम तेरह भाग है।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोमे अड प्रकृतियोंके सब पद् स्थितिविभक्तिवाले जीवॉने लोकके

असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्परोन किया है।

विशेषार्थजैक्रियिककायोगियोंमें स््रीवेद और पुरुषवेदकी तीन वृद्धिरयो ओर अवस्थित

पद् स्वस्थानमें विहारादिके समय तथा नारकियों और देवोंके तिर्यञ्चो जोर मनुष्योंमें मारणान्तिक

Page 260:

गा०्शर ब्धिपरूवणाए पोसणं । २४१

३८५ कभ्मइय छब्पीसं पयडीणमसंखे मागघडि दाणिअबह्धि० केव० १

सव्बलोगो । दोवड्डिदोहाणि० केव० १ लो० असंखे मागो सव्वछोगो वा । णवरि

इत्थिपुरिस०दोवड्डि० लोग०असंखे ० भागो बारहचोहस० देखणा । सम्मत्तसम्मामि०

ओधं । णवरि पदविसेसो णायव्वो । एवमणाहारीणं ।

३८६ आहारआहारमिस्स सव्वपयडीणं सव्बपद्वि० लोग० असंखे० मागो ।

एवमवगद ०अकसा ०मणपज ०संजद० सामाइयछेदो परिदार सुहुमसां १० जहाक्खाद्

संजदे त्ति। रा ह

समुद्गातके समय सम्भव होनेसे इन प्रकृतियोंके उक्त पदोंकी अपेक्षा स्पशन छोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और कुछ कम बारह वटे चौदह राजुप्रमाण

कहा है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जसंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपद् तथा सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धियाँ अवस्थित ओर अवक्तव्यपद् मारणान्तिक समुदूघात आदिके

समय सम्भव नहीं हैं इसलिए इनका स्पशेन कुछ कम आठ वटे चौदद् राजुप्रमाण कहा दै । सब

प्रकृतियोंके शेष पदोंका स्पशेन वैक्रियिककाययोगके समान दी दै। वैक्रियिकमिश्रकाययोगका

स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है इसलिए इसमें सब प्रकृतियोंके सव पदोंका सपरन

उक्त प्रमाण कहा है। हा

३८० कार्मणकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि

और अवस्थित स्थितिविभेक्तिवाले जीववोने कितने क्षेत्रका स्पशो किया है सब छोक क्षेत्रका

स्पशे किया है। दो वृद्धि ओर दो हानिवाले जीवने कितने क्षेत्रका स्पशे किया है छोकके

असंख्यांतवें भागप्रमाण और सब छोकप्रमाण क्षेत्रका स्पशं किया है । किन्तु इतनी विशेषता ह

कि खीवेद् और पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंका स्पश छोकका असंख्यातवाँ भागप्रमाण और त्रसनालीके

चौदह भागोंमेंसे कुछ कम बारह भागप्रमाण है । तथा सम्यक्सव ओर सम्यग्मिथ्यात्वका स्पश

ओघके समान है। किन्तु पद विशेष जानना चाहिये। इसी प्रकार अनाहारकोंके जानना

चाहिए।

विशेषार्थकार्मणकाययोगका स्पशन सब छोकप्रमाण है इसलिए इसमें छब्बीस भर

तियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थित पद्का स्पदोन उक्तप्रमाण कहा है।

इन प्रक्ृतियोंकी दो बद्धि और दो हानिमेंसे यथासम्भव द्वीन्द्रियादिक जीबोंके बृद्धियाँ और काण्डक

घातके साथ संज्ञियोंके एकेन्द्रियादिकमें उत्पन्न होनेपर द्वानियाँ होती हैं। ऐसे जीवोंका वर्तमान

स्पशेन रोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पशेन सब लोकप्रमाण होने से यह उक्तप्रमाण

कदा है । मात्र खीवेद् और पुरुषवेदको दो बृद्धियाँ जो ख्लीवेदी और पुरुषवेदियोमें उत्पन्न होते

हैं उन्दीके यथासम्भव होती हैं अतः इनका स्पशेन छोकके असंख्यातं भागप्रमाण और कुछ

कम बारह बटे चौदह राजुप्रमाण कदा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

३८६ आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद

स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशो किया है । इसी प्रकार अप

गलवेदी अकषायी मनःपर्येयज्ञानी संयत सामाचिकसंयत छेदोपस्थापनासंयत परिहारविशवद्धि

संयंतसूक्ष्मसांपरायिकसंयत और यथाख्यातसंयत जीर्वकि जानना चाहिए।

१

Page 261:

२४२ जयधवलासदिे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ड

३८७ इत्थिवेद् छब्बीसं पयडीणमसंखे०भागवड्डिहाणि० संखेजभागवड्ि

हाणि संखे०शुणबड्डिदाणिअब्टि० लोग० असंखे०भागो अट्टचोदस० देखणा

सब्वलोगो वा । णवरि इृत्थिपुरिस० तिण्णिवड्डिअवद्डि० लोग० असंखे०मागो अइ

चोद०भागा वा देखणा । सव्वकम्माणमसंखे ० गुणद्याणि ० लो० असंखे ० भागों अणंताणु ०

चउक० असंखे०गुणदाणिअवत्तव्य रो० असंखे०भागो अद्डचोद० देखणा।

सम्मत्तसम्भामि० चत्तारिव्डिअवष्टि ०अवत्तव्ब० केव० १ लो० असंखे०भागो

अट्डचोदह० देखणा। चत्तारिद्ाणि०ण लोग० असंखे०भागो अट्ट बोइ० सब्बलोगो बा ।

पुरिसवेदे इत्यिवेदमंगो ।

विशेषार्थआहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंका स्पशेन लोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण है इसलिए इनमें सब ग्रकृतियोंके सब पदोंका स्पदोन उक्तप्रमाण कहा है ।

यहाँ अपगतबेदी आदि अन्य जितनी सार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें इसीप्रकार स्परोन घटित होता हेः

इसलिए उनके कथनको आद्वारककाययोगीडहिकके समान जाननेकी सूचना की हे ।

३८७ ख्लीवेदियोंयें छब्बीस प्रकतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि संख्यात

भागवृद्धि संख्यातभागहानि संख्यातगुणबृद्धि संख्यातगुणहानि ओर अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले

जीवोंने छोकके असंख्यातवें भागः त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और

सब छोक क्षेत्रका स्पश किया है । किन्तु इतनी बिशेषता दै कि खत्रीवीद और पुरुषवेदकी तीन

इद्धि ओर अवस्थितका स्पशे लोकका असंख्यातवाँ भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ

कम आठ भाग है । तथा सब कर्मोकी असंख्यातगुणहानिका सपर छोकका असंख्यातवाँ भाग ओर

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपदका स्पश लोकका असंख्यातवाँ भाग

और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग है । सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

वृद्धि अवस्थित और अवक्तभ्य स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका सरं किया है लोकके

असंख्यातवें भाग और त्रसनाछी के चौदह भेदोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशे किया

है। चार हानिवाले जीवोने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण त्रसनालीके चौदद् भागोंमेंसे कुछ

कम आठ भागप्रमाण और सब छोकप्रमाण क्षेत्रका स्पशौ किया है। पुरुषवेदियोंमें खीवेदियोके

समान भंग है ।

विशेषार्थल्लीवेदियोंका वर्तेमान स्पशेन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण और अतीत

स्पशन कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और सब लोकप्रमाण है । इन सब स्पशेनोंके समय

छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन बुद्धियाँ तीन हानियाँ और अवस्थितपद् सम्भव हें इसलिए यह् सपशन

उक्तप्रमाण कहा है । मात्र खीवेद और पुरुषवेदकी तौन बृद्ध्या ओर अवस्थित पदका वर्तमान

स्परीन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत सदन कुछ कम आठ वटे चौदह राजुप्रमाण

द । यहाँ उपपाद पदक विवक्षा नहीं होनेसे अन्य स्पशेन नहीं कहा दै । अनन्तानुबन्धीचतुष्कके

सिवा पूर्वोक्त बाईस प्रकृतियोंको असंख्यातगुणहानि उनकी क्षपणाके समय होती है इसलिए इसकी

अपेक्षा स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा ह । तथा अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी असंख्यात

गुणहानि और अवक्तव्य पद् की अपेक्षा वर्तमान स्पशेन छोकके जसंख्यातवं भागप्माण है

क्योंकि चारों गतिके संज्ञी पद्नेन्द्रिय सम्यग्दष्टि जीव इसकी विसंयोजना करते हैं और ऐसे

Page 262:

भा रै३ ब्िपरूगाए पौसणं रेड

२३८८ मदिसुद्अण्णाणी हव्बीसं पयडीणमसंखेमागवड्धिदाणिअवद्टि केब ०

पो० १ सब्बलोगो । दोवड्डिदोहाणि० केव पो० १ लो० असंखे०मागो अट्डचोद्स ०

सन्वलोगो वा। णवरि इत्थिपुरिस दोवड्डि० लोग० असंखे०भोगो अड्डबारहचोद०

देखणा। सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिहाणि० लोग० असंखे ० भागो अट्डचोाइस ० सब्बलोगो वा।

३८९ विहंगणाणी छब्बीसं पयडीणं तिण्णिवड्डितिण्णिहाणिअवद्डि० लोग०

असंखे०भागो अडचो६० सब्बलोगो बा । णवरि इत्थिपुरिस० तिण्णिवद्धिअब्ठि ०

जीवोंने अतीत कालमें कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया है इसलिए यह

उक्त प्रमाण कहा है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार बृद्धि अवस्थित और अवक्तव्य पद्

सम्यग्दषटि होते समय होते हैं अतः इनकी अपेक्षा वतेमान स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

और अतीत स्पशन कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण कहां है। तथा इन दोनों प्रकृतियोंकी

चार द्वानियाँ एकेन्द्रियादि सबके सम्भेव हैं इसलिए इनकी अपेक्षा स्पशेन छोकके असंख्यातबें भाग

प्रमाण कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और सब छोकप्रमाण कहा है। पुरुषवेदियोंमें

स्लीवेदियोंके समान सदन बन जाता हैः अतः उनका भङ्ग स्रीवेदियोंके समांन जाननेकी

सूचना की है।

३८८ मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीबोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी जसंख्यातभागवृद्धि असं

ख्यातभागहानि और अवस्थित स्थितिविभेक्तिवाले जीवॉने कितने क्षेत्रका स्पश किया ह १ सब छोक

क्षेत्रका स्पश कियदै। दो वृद्धि और दो हानिवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पश किया है १ छोकके

असंख्यातवें भाग त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सब छोक क्षेत्रका खरो

किया है । किन्तु इतनो विशेषता है कि खीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धिवाले जीवोने छोकके

असंख्यातवें भाग और चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम बारह भाग क्षेत्रका स्परो

किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानिवाले जीवोंने लोकके असंख्यातवें भांग

चरसनारीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सब छोक क्षेत्रका सरो किया है ।

विशेषार्थ मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंका सब छोकप्रमाण स्पशेन होनेसे इनमें

छब्बीस प्रकृति्योकी असंख्यातभागव्द्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितपदकी अपेक्षा स्पशेन

सब छोकप्रमाण कहा द । तथा इनकी दो बृद्धियों और दो हानियोंका प्रारम्भ ऋ्रमसे द्रीन्दरियादि

ओर संज्ञी पद्नेन्द्रिय करते हैं और ऐसे जीवॉका वर्तमान स्परौन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण

विद्ारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और मारणान्तिक व उपपाद पद्की

अपेक्षा सब लोक प्रमाण होनेसे यड स्पशेन उक्त प्रमाण कहा है। दो हानियाँ एकेन्द्रियों में भी

सम्भव हैं इसलिए भी सब छोक प्रमाण स्पशैन बन जाता ह । सारकियोंके तिद्ध ओर मनुष्यों

में मारणान्तिक ससुद्घात और उपपादपदके समय तथा देबोंके स्वस्थान विद्वारादिके खमय खीवेद्

और पुरुषवेदका बन्ध सम्भव है ओर इनका यह सम्मिलित स्पदौन कुछ कम बारहबटे चौदह राजु

प्रमाण दै अतः खीवेद् और पुरुषवेदका दो बृद्धियोंका स्पशेन कुछ कम बारह बटे चौदह राजुप्रभाण

कदा है । शेष कथन सुगम है क्योंकि उसका पहले अनेक बार स्पष्टीकरण कर आये हैं।

३८९ विभंगज्ञानियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन बृद्धि तीन हानि ओर अवस्थितस्थिति

विभक्तिवाले जीवने रोकके असंख्यातवें भ्राग और त्रसनाखीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ

Page 263:

२४७ ज्यधवलासदिदै कसायपाहुडे छ्विद्विंहत्ती है

लोग० असंखे० भागो अद्भबारदचोदस० देखणा। संम्मत्तसम्मामि० चत्तारिहणि०

लोग० असंखे०भागो अड चोद्० सब्बलोगो वा ।

३९० आभिणि०सुद ओहि छब्बीसं पयडीणं अर्सखे ०भागहाणिसंखे ० भाग

हाणिसंखे गुणहाणि० लोग० असंखे०भागो अडचोद० देखणा । असंखे०गुणहा०

लोग ० असंखे ० भागो णवरि अणंताणु०चउक० असंखेरगुणदहाणि अट्टचोइसभागा

देखणा । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणिसंखे०भागद्वाणिसंखे ०ग्रुणद्ाणि० लोग ०

असंखे०भागो अड्डचोद ० देखूणा। असंखेगुणहाणि लोग० असंखे०भागों

एवमोहिदंस०सुकले ०सम्मादिद्टि त्ति। णवरि सुकले० छचोदस० देखणा । सम्मत्त

सम्मामि० अवष्टिद० खेत्तमंगो । चत्तारिवष्डिअवत्तव्य ० अणंताणु चउक ० अवत्तव्ब०

लोग० असंखे० भागो छचोदसभागा वा देखणा ।

आग और सब लोक क्षेत्रका र्पशन किया है। किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद और पुरुष

वेदकी तीन बृद्धि ओर अवस्थितविभक्तिवाछोंने ठछोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह

भांगोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम बारह भाग क्षेत्रका स्पशे किया है। सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानिवाले जीवॉने छोकके असंख्यातवें भाग तसनाछीके चौदह भागोंमेंसे

कुछ कम आठ भाग और सव छोक क्षेत्रका स्पश किया है ।

विशेषार्थविभज्ञज्ञानी जीव वर्तमानमें सब छोकमें नहीं पाये जाते क्योंकि संज्ञी

पब्चेन्द्रियोंमें ही कुछके यह ज्ञान होता है इसछिए इनमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थितपदकी अपेक्षा बतेमान स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

और अतीत स्पशेन कुछ कम आठबटे चौद॒ह राजु और सब छोकप्रमाण कदा दै । शेष सब विचार

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंके समान कर छेना चाहिए। मात्र यहाँ सब लोकप्रमाण स्पशेन

मारणान्तिक समुद्धातके समय कहना चाहिए।

३९० आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीबोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी

असंख्यातभागहानि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिवाले जीवॉने छोकके असंख्यातवें

भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग क्षेत्रका सरो किया है । असंख्यात

गुणहानिवाले जीवने छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका सदयं किया है । किन्तु विशेषता यह है

कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानिवालोंका सपर त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ

कम आठ भागप्रमाण है । सम्यक्त्व ओर सम्यग्सिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि संख्यातभाग

हानि और संख्यातगुणहानिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह

भागोंमेंसे छुछ कम आठ भाग क्षेत्रका स्पशे किया है । असंख्यातगुणहानिवाले जीवोने छोकके

असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्परोन किया है। इसी प्रकार अवधिद्शेनवाले शुक्ललेश्यावाले और

सम्यग्टष्टि जीबोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि शुक्कलेश्यावालोंने ्रसनालीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ क्रम छह भाग क्षेत्रका स्पेन किया है सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अवस्थित

स्थितिविभक्तिका भंग क्षेत्रके समान है। चार वृद्धि और अवक्तन्य स्थितिविभक्तिवालोंने तथा

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अवक्तव्य स्थित्तिविभक्तिवालोंने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाछीके

चौद॒ह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशन किया है ।

Page 264:

गा० २२ बड्डिपरूबणाए पोसर्ण २४५

३९१ संजदासंजद अद्धावीसं पयडीणमसंखे मागहाणिवि लोग० असं०

भागो छचोदस० देषणा । संखे भागहाणि लोग० असंखेमागो । मिच्छत्तसम्मत्त

सम्मामि०अणंताणु ० चउक० संखे गुणहाणिअसंखेगुणहाणि लोग असंखे०भागो ।

३९२ किण्णणीलकाड छन्पीसं पयडीणमसंखे ०भागवड्डिहाणि ० अवष्टि ०के० १

सन्बलोगो । दोवड्डिदोहाणिबि० केव० १ छो० असंखे०भागो सन्वलोगो बा । अणंतोशु

चउक० असंखे गुणदाणिअवत्तव्ब लो० असंखे भागो । इत्पिपुरिस० दोवड्डि ०

लोग० असंखे०भागो वेचत्तारिछचोदसभागा वा देखणा। सम्पत्तसम्मामि चत्तारि

विशेषार्थआभिनिवोधिकज्ञानी आदि तीन ज्ञानियोंमें अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सिवा

सब प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणहानि क्षपणाके समय होती है इसलिए इसकी अपेक्षा छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण स्पशेन कदा है । शेष सब स्पशेन इन सार्गणाओंके स्पशनके समान घटित

होनेसे वह उक्तप्रमाण कहा है। यहाँ अवधिदशनी शुक्ललेश्यावाले और सम्यण्टष्टि ये तीन

मार्गणाएँ गिनाई हैं उनमें यद् प्ररूपणा अविकछ घटित हो जाती है इसलिए उनके कथनको

आभिनिवोधिकज्ञानी आदिके समान कहा है। मात्र शुक्कलेश्याका अतीत स्पशेन कुछ कम

छह बटे चौदह राजु प्रमाण होनेसे इसमें कुछ कम आठ वटे चौदह राजुप्रमाण स्पदोनके

स्थानमें यह स्पशेन जानना चाहिए। साथ ही झुक्कलेश्यामें अनन्ताजुबन्धीचतुष्क सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वके जो अतिरिक्त पद होते हैं जो कि पूर्वोक्तं मागेणाओंमे सम्भव नहीं उनका

सूलमें कहे अलुसार स्पशेन अछगसे घटित कर लेना चाहिए। कोई वक्तव्य न होनेसे यहाँ हमने

उसका अछगसे स्पष्टीकरण नहीं किया ह ।

३९१ संयतासंयतोंमें अद्ठाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदानिविमक्तिवाङे जीवने

छोकके असंख्यातवें भाग और ्रसनारीके चौदह भागोमेसे कुछ कम छह भाग क्षेत्रका स्पशेन

किया दै । संख्यातभागहानिवाले जीर्ोने छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्पशेन किया है ।

मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व ओौर अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी संख्यातगुणदानि और असंख्यात

ग्रुणहानिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्पशेन किया ह ।

विशेषार्थसंयतासंयतोंका वर्तमान स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत

स्पशेन कुछ कस छह बटे चौदद् राजुप्रमाण दै अद्ठाईस प्रकृृतियोंकी असंख्यातमागहानिकी

अपेक्षा यह स्पशेन बन जाता है अतः यह उक्तप्रमाण कहा है । पर इन श्रकृृतियोंकी यथासम्भेव

शेष हानियोंकी अपेक्षा छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही स्पशेन प्राप्त होता है अतः यह उक्त

प्रमाण कहा है। कारण स्पष्ट है ।

३९२ कृष्ण नील और कापोत लेश्याबालोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थित स्थितिविभेक्तिवालोंने कितने क्षेत्रका स्पशेन किया है सब

छोकका स्पशेन किया है। दो वृद्धि और दो हानि स्थितिविभक्तिवाले जीवोने कितने क्षेत्रका स्पशेन

किया है १ छोकके असंख्यातवें भाग और सब रोक क्षेत्रका स्पशेन किया है। अनन्तायुबन्धी

चतुष्ककी असंख्यातगुणदानि ओर अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवाले जीबोने लोकके असंख्यातवें भाग

क्षेत्रका स्पशेन किया है । ख्रीवेद और पुरुषवेदकी दो बृद्धिबाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग

Page 265:

२४६ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

व्डिअबष्टि ०अवत्तव्व ० लोग० असंखे मामो । चत्तारिहाणि० छोग० असंखे०भागो

सब्बलोगो वा।

३६३ तेउ० छब्बीसं पयडीणमसंखे ० मागवड्डिहाणिसंखे ० भागवड्डिहाणि

संखेजगुणवड्डिदाणिअवद्डि० छोग० असंखे०भागो अट्डणबचोइस० देखणा। णवरि

इत्थिपुरिस ० तिण्णिवड्डिअबद्धि रोग० असंखे०भागो अड्डचोहसभागा वा देघणा ।

अण॑ताणु०चउक ० असंखे०गुणद्वाणिअवत्तव्यण लोग० असंखे०भागो अइचोदस०

देखणा । मिच्छत्त० असंखेगगुणहाणिवि० लोगस्स असंखे०भागो । सम्मत्तसम्मामि०

तथा चसनालछीके चौदह भागोंमेंसे क्रमसे कुछ कम दो कुछ कम चार और कुछ कम छह भाग

क्षेत्रका स्पशेन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार दद्धि अवस्थित और अवक्तव्य

स्थितिविभक्तिवाले जीवॉने छोकके असंख्यातवें भाग जका सपरन किया है । तथा चार हानिवाले

जीवॉने लोकके असंख्यातवें भाग और सव रोक क्षेत्रका स्पशेन किया है ।

विशेषा्थकष्णादि तीन छेश्याओंका वर्तमान स्पशेन सर्वेछोकप्रमाण हे । यहाँ छब्बीस

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितपद्की अपेक्षा यह् स्पशेन बन

जाता है अतः यह उक्त प्रमाण कहा द मात्र इन प्रकृतियोंकी दो बृद्धियों और दो हानियोंका

बर्तेमान स्प्शन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण होकर भी अतीत स्पशेन सब छोकप्रमाण है

इसलिए यद् उक्त प्रमाण कहा है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यपद्

संज्ञी पत्चेन्द्रियोंके ही होते हैं और ये पद मारणान्तिक समुद्गात आदिके समय नहीं होते अतः

इनकी अपेक्षा छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण स्पशेन कटा द । खीवेद् और पुरुषवेदकी दो

बुद्धियाँ दीन्द्रियादिकके दी होती हैं जिनका वर्तमान स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है तथा

खीवेदी और पुरुषवेदियोंमें ऋष्णादि लेश्यावालोंका मारणान्तिक समुद्धात द्वारा स्यशेन कुछ कम

छह बटे चौदद् राजु कुछ कम चार बटे चौद॒ह राजु ओर कुछ कम दो वटे चौदह राजुप्रमाण है

अतः य् स्पदौन उक्तप्रमाण कहा है । इन लेश्याओंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

बृद्िरयो अवस्थित ओर अवक्तव्यपद् सम्यक्त्वके समय होते हैं और ऐसे जोबोंका स्पर्शन छोकके

असंख्यातबें भागप्रमाण है अतः यह् उक्तप्रमाण कहा है । तथा इनकी चारों हानियाँ किसीके

भी सम्भव हैं इसलिए इनकी अपेक्षा स्पर्शन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण और सब

लोकप्रमाण कष्टा है ।

३९३ पीतलेश्यावाछोंमें छब्बीस प्रकृतिर्योकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि

संख्यातमागवृद्धि संख्यातभागदानि संख्यातगुणब॒द्धि संख्यातगुणहानि और अवस्थित स्थिति

बिभक्तिवाले जीवॉने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ

और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका पदौ किया है । किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद और

पुरुषवेद की तीन बृद्धि ओर अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोनि लोकके अखंख्यातवें भाग जौर त्रस ह

नाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग प्रमाण क्षेत्रका स्परौ किया हे। अनन्तानुबन्धी

अतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य स्थितिविभक्तिवालोंने लोकके असंख्यातवें भाग

और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्प किया है। सिथ्यात्वकी

असंख्यातगुणहानि स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्पशे किया दे ।

Page 266:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए पोसणं सथ

चत्तारिष्िअवद्धि ०अवत्तव्व ० लोग० असंखे०भागो अवोद देख० । चत्तारिदाणि०

लोग० असंखे०भागो अट्टणब्रचोदस ० देखू० एवं पस्म ० । णवरि णबचोद्सभागा णत्थि।

३8४ अभवसिद्धि० छब्बीसं पयडीणं असंखे० भागवड्डिदाणि०अव्ठि सब्ब

लोगो दोवड्डिदोहाणि० केव० लोग० असंखे०भागो अद्ध बोदस० सब्बलोगो

वा । इत्थिपुरस० दोवड्डि ० लोग० असंखे० भागो अहरह चोदसमागा वा देखणा ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि अवस्थित और अवक्तज्य स्थितिविभक्तिवाले जीवनि

छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग प्रमाण क्षेत्रका

स्यौ किया है। तथा चार हानिवाले जीबोंने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाछीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पदौ किया है। इसी प्रकार

पद्मलेश्यावाले जीवोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके तच्रसनाछीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ कम नौ भागप्रमाण सदो नहीं है।

विशेषा्थपीतलेश्याका वतेमान स्पशन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण विह्रादिकी

अपेक्षा कुछ कम आठ वटे चौदह राजुप्रमाण और मारणान्तिक समुद्धातकी अपेक्षा कुछ कम नौ वदे

चौदह राजुप्रमाण है। यहाँ छब्बीस प्रकृतियोंकी तीन बृद्धि तीन हानि ओर अवस्थितपदकी

अपेक्षा यह स्पर्शन बन जाता है अतः यह उक्तप्रमाण कहा है। मात्र खीवेद् और पुरुषवेवकी

तीन वृद्धि ओर अवस्थितपदकी अपेक्षा कुछ कम नौ वटे चौदह राजुप्रमाण स्पशन नहीं बनता

क्योंकि एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्रात करनेवाले इन जीबॉके इन दो प्रक्रतियोंका बन्ध न

होनेसे वहाँ इनकी तीन वृद्धियाँ और अवस्थान सम्भव नहीं इसलिए इन दो प्रकृतियोंके उक्त

पदोंकी अपेक्षा स्पशेन छोकके असंल्यातवें भेगप्रमाण और कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण

कहा है। इसीप्रकार जनन्तानुवन्धी चतुष्ककौ असंख्यातगुणदहानि और अवक्तव्यपदकी अपेक्षा

स्पदोन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और कुछ कम आठ बटे चौदद् राजुप्रमाण घटित कर लेना

चाहिए । मिथ्यात्वकी असं्यातगुणहानि क्षपणाके समय ही द्वोती है इसलिए यहाँ इसकी अपेक्षा

स्पशन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी चार बुद्धि

अवस्थित और अवक्तव्यपदकी अपेक्षा स्पशेन जो मूलमें कहा है उसका स्पष्टीकरण अनन्तानु

बन्धीकी असंख्यातगुणहानिके स्पश नके समान कर छेना चाहिए क्योंकि दोनोंका स्पशेन एक

समान है । इन दो प्रकृतियोंकी चार हानियाँ एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्धातके समय भी होती

हैं इसलिए इनकी अपेक्षा स्पशेनलोकके असंख्यातबें भागप्रमाण कुछ कम आठ वटे चौदह

राजुप्रमाण और सब्र छोकप्रमाण कहा है। पद्मलेव्यामें कुछ कम नो बटे चौदह राजुप्रमाण स्पशेन

नहीं है क्योंकि वे एकेर्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नदीं करते । शेष सब कथन पीतलेश्याके

समान है ।

३९४ अभव्योंमें छब्बीस प्रकृतियोको असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवाले जीवोंने सब छोकका स्पर्श किया है। दो इद्धि और दो द्वानिवाले

जीवॉने कितने क्षेत्रका स्पर्श किया है छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाली के चौदह भागों

में से कुछ कम्त आठ भागप्रमाण ओर सबेलोक क्षेत्रका स्पर्श किया है। ख्रीवेद और पुरुषवेदकी

दो बद्धिवाले जीवॉने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाली के चौदह भागोंमेंसे कुछ कम

Page 267:

२४८ जयधवखासदिदे कसायपाहुडे ट्विदिविद्त्ती ३

३९५ वेदगसम्मादिद्ीस अट्टावीसपयडीणमसंखे०भागहाणिसंखे०भागहाणि

9 शक

संखे ०गुणदाणि० रोग० असंखेमागो अद्ध चोद् ० देष्णा । मिच्छचसम्मत्तसम्मामि०

असंखे०गुणदाणि० लोग० असंखे०भागो। अणंताणु०चउक० असंखे०गुणद्ाणि०

लोग० असंखे०मागो अट्टचोदस० देखणा।

३९६ खश्यसम्माइड्टी एकवीसपयडीणमसंखेज्जमागहाणि लोग० असंखे०

भामो अड्डचोद० देखणा । संखेज्जमागहाणिसंखेज्नगुणक्षणिअसंखेज्जयुणदाणि

लोग० असंखेज्जदिभागो ।

आठ और कुछ कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पदौ किया द ।

विशेषार्थअमव्योंका वर्तमान स्पशेन सवे लोक है अतः इनमें छब्बीस प्रकृतियोंकी

असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागदानि ओर अवस्थितपदकी अपेक्षा सरन सवं छोकप्रमाण कहा

है। इनकी दो बृद्धि और दो हानिवाले जीवोंने बर्तेमानमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण

विदारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और अन्य प्रकारसे सवे छोकप्रमाण

क्षेत्रका स्पशेन किया है इसलिए यह स्पदौन उक्त प्रमाण कहा है ।

३९५ वेद्कसम्यस्दष्टियोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी अखंख्यातभागहानि संख्यातभागहानि

और संख्यातग़ुणद्वानि स्थितिविभक्तिवाले जीवोनि छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके

चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पश किया है। मिथ्यात्व सम्यक्त्व ओर

सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणद्यानिवारोने लोकके असंख्यातवें माग क्षेत्रका स्पर्श किया दै।

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानिवालेनि लोकके असंख्यातबें भाग और त्रसनाछीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका सदौ किया है ।

विशेषार्थवेदकसम्यम्दष्टियोंका बर्तेमान स्वशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और

विहारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ वदे चौदह राजुप्रमाण स्पशेन है । इनमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी

तीन हानियोंकी अपेक्षा और अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानिकी अपेक्षा यद् स्पशेन

बन जाता है अतः यद उक्त प्रमाण कहा दै। पर इनमें मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व ओर सम्यक्त्वकी

असंख्यातगुणहानि क्षपणाके समय होती हे अतः इसको अपेक्षा स्पेन छोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण कहा है ।

३९६ क्षायिकसम्यग्दष्टियों में इक््क्रीस प्रक्रतियोंकी असंख्यातभागहानि स्थितिविभक्तिवाले

जीवनि छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागश्रमाण

क्षेत्रका स्पेन किया हे । संख्यातभागहानि संख्यातगुणह्ानि और असंख्यातगुणहानिवाले जीवोंने

छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रकां स्पशन किया है ।

विशेषार्थक्ायिकसम्यक्त्वका वर्तेमान स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और

विहारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण है। इनमें इकीस प्रकृतियोंकी असंख्यात

सागहानिकी अपेक्षा यह स्पशन बन जाता है अतः बह उक्त प्रमाण कहा दै । इनमें इन प्रकृतियों

की शेष हानियाँ क्षुपणाके समय होती हैं अतः उनकी अपेक्षा छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण

स्पशन कहा है ।

Page 268:

गा० २२ वड्डिपरूवणाए पोसण्ण २४५

३९७ उवसमंसम्मा अद्धावीसं पयडीणमसंखेज्जभागहाणिसंखेज्जभागहाणि ०

अणंताणु चउक संखेञ्जगुणदाणिअसंखेउजगुणदाणि लोग० असंखेउजदिमागो अद्

चोहस० देखणा। सम्मामि अट्टाबीसं॑ पयडीणमसंखेज्जमागदाणिसंखेञ्जभागदाणि

संखेज्जगुणदाणि लोग० असंखेज्जद्भागो अट्डचोह० दै्णा ।

३९८ सासणसम्माइड्टी० अडावीसं पयडीणमसंखेज्जमागहाणि ० लोग०

असंखेज्जदिभागो अट्ठबारहचोदह० देखणा ।

३६६ मिच्छाइड्री० छब्बीसं॑ पयडीणमसंखेज्जमागबड्डिहाणि०अव्ि ०

सव्बलोगो । दोवड्डिदोहाणि० केव लोग० असंखेन्जदिभागो अद्डचोइस० देखणा

सब्वलोगो वा। णवरि इत्थिपुरिस० दोवड्डि० छोग० असंखेज्जदिभागो अड्डबारहचोद०

३९७ उपशमसम्यग्दष्टियोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और संख्यात

भागहानिवाले जीवोंने तथा अनन्तालुबन्धी चतुष्ककी संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिवाले

जीबोंने छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण

क्षेत्रका स्पशेन किया है । सम्यग्मिथ्यारष्टियोंमें अदास प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि संख्यात

भागहानि और संख्यातगुणहानिवालले जीबोंने छोकके असंख्यातवें भाग ओौर त्रसनाछीके चौदह

भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशन किया है।

विशेषार्थ उपशमसम्यस्दष्टियोंमें वर्तेमान स्पर्शन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण और

विहारादिकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण है । इनमें अद्ठाईस प्रकृृतियोंके यथा

सम्भव पदोंकी अपेक्षा यह् स्पशन बन जाता है अतः वह उक्त प्रमाण कहा है। इसी प्रकार

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें स्पशेन घटित कर छेना चाहिए ।

३९८ सासादुनसम्यस्दष्टियोंमें अहस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिवाले जीवोंने

छोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम

बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पशेन किया है।

विशेष।र्थ सासादनसम्यक्स्वमें अद्वाईस प्रकतियोंकी एक असंख्यातभागहानि होती है

ओर बह सासादनसम्यग्दश्टियोंकी सब अवस्थाओंसें सम्भव है अतः यहाँ इस पदकी अपेक्षा

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कुछ कम आठ बटे चौदह राजुप्रमाण और कुछ कम बारह बटे

चौदह् राजुप्रमाण स्पर्शन कहा है ।

३९९ सिथ्यादष्टियोंमें छब्बीस प्रकृतियोकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोंने सब छोकका स्परशैन किया है। दो बृद्धि और दो हानिवालोंने

कितने क्षेत्रका स्पशन किया है छोकके असंख्यातवें भाग त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम

आठ भाग और सब छोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। किन्तु इतनी विशेषता है कि खीवेद

और पुरुषवेदकी दो बृद्धिवाङे जीवोंने लोकके असंख्यातबें भाग ओर त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे

छुछ कम आठ और कुछ कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पद्रौन किया है । सम्यवत्व और सम्यग्मि

१ ताश्राप्रत्योः सव्वलोगा वा दोवड्टि इति पाटः ।

३२

Page 269:

२५० जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

देखणा । सम्मत्तसम्मामि चत्तारिहाणि० छोग० असंखेज्जदिभागों अह्डचोद० देष्रणा

सव्वलोगो वा ।

४०० असण्णि० छब्बीसं पयडीणमसंखेज्जभागव्डिहाणि०अवद्डि ० केव ० ९

सब्बलोगो । दोहाणि संखेज्जमागवड्डिसंखेज्जगुणवड्धि ० ठोग० असंखेज्जदिभागो सब्ब

लोगो वा। णवरि इत्थिपुरिस० दोबड्डि० लोग० असंखेज्जदिभागो । सम्भत्तसम्भामि०

चत्तारिहाणि लोग० असंखेज्जदिभागो सब्वलोगो वा ।

एवं पोस्णाणुगमो समत्तो ।

थ्यात्वकी चार हानिवाले जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग त्रसनाछीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम

आठ भाग और सब छोक क्षेत्रका स्पशन किया हे ।

विशेषा्थमिथ्यादृष्टियोंका वर्तमान स्प्ीन सर्व छोकप्रमाण है । इनमें छब्बीस प्रकृतियों

की असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितपदके समय यद् स्पशन सम्भव होनेसे

यह उक्त प्रमाण कट्या है । किन्तु इन प्रकृतियोकी दो वृद्धि ओर दो हानियोंकी अपेक्षा वतेमान

स्पशेन छोकके असंख्यातवें भागप्रमाण विहारादिकी अपेक्षा छुछ कम आठ वटे चोद् राजुप्रमाण

और अन्य अपेक्षासे सवे छोकप्रमाण ग्राप्त होनेसे वह उक्त प्रमाण कहा है इसी प्रकार सम्यक्व

ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी चार हानियोंकी अपेक्षा स्परीन घटित कर लेना चाहिए । मात्र स्रीवेद और

पुरुषवेदकी दो बृद्धियोंकी अपेक्षा स्पशेन छोकके असंख्यातबें भागप्रमाण कुछ कम आठ वटे

चौदह राजुप्रमाण और कुछ कम बारह वटे चौदह राजुप्रमाण जानना चाहिए। स्पष्टीकरण

पहले कर आये हैं।

४०० असंज्षियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थित स्थितिविभक्तिवालोंने कितने क्षेत्रका स्पशन किया है १ सब छोकका स्पशन किया है ।

दो हानि संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबुद्धिवाले जीवॉने लोकके असंख्यातवें भाग और सत्र

लोकका स्पशन किया द्वै। किन्तु इतनी विशेषता है कि स्रीवेद ओर पुरुषवेदकी दो बृद्धिवाले

जीवोंने छोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रका स्परौन किया है। तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

चार हानिवाले जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सब छोकका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ असंज्ञियोंका वतेमान स्पर्शन सवे छोकप्रमाण है। इनमें छब्बीस प्रक्तियोंकी

असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थित पदके समय यह सपरन सम्भव है अतः

वह दक्तप्रमाण कहा है । किन्तु इनकी दो हानि और दो बृद्धियोंकी अपेक्षा वर्तेमान स्पशन छोकके

असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पशन सब छोकप्रमाण प्राप्त होनेसे वह उक्तप्रमाण कहा है ।

इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानियोंकी अपेक्षा वह स्पर्शन घटित कर लेना

चाहिए । इनमें खीवेद जौर पुरुषवेदकी दो हानियोंकी अपेक्षा स्पशेन छोकके असंख्यातवें भाग

प्रमाण है यह स्पष्ट ही है ।

इस प्रकार स्पर्शनाञुगम समाप्त हुआ ।

१ श्रा प्रतौ सव्वलोगो । दोवड्टी दोणी इति पाठः ।

Page 270:

गा० २२ बड्डिपरूवणाए कारो २५१

६ ४०१ कालागुगमेण दुविहों णिदेसोओघे० आदेसे० । ओघेण छब्मीसं पय

डीणमसंखे ० भागवड्डिअसंखे ० भागहाणिअवद्डि० केवचिरं कालादो होति सब्बद्धा।

दो १ एहंदियरासिस्स आणंतियादो । दोवड्डिदोहाणि० अण॑ताणु०चउक्क ०

असंखे गुणहाणिअवचव्वं च ज० एगसमओ उक आवलि० असंखे०भागो ।

सेषकम्माणमसंखे गुणहाणि ज० एगसमओ उक ० संखे समया । सम्मत्तसम्मा

मिच्छत्ताण पसंखे मागहाणि सव्वद्धा । सेसपदवि० ज० एकस० उक ० आवलि०

असंखे ०भागो । एवं कायजोगिओराल्ि ०णवुंस ०चत्तारिक ०अचक्खु ०भवसि०

आहार त्ति ।

४०२ आदेसेण णेरइणसु छब्बीसं पयडीणमसंखे०भागदहाणिअवष्टि० सम्मत्त

सम्मामिच्छत्ताणमसंखे ० भागहाणि० च सब्बद्धा। सेध्रपद्वि० जदह० एगसमओ उक०

४०१ काछानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हेओघसे और आदेशसे । ओघकी

अपेक्षा छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातमागहानि और अवस्थितरिथतिविभक्ति

का कितना काल है सब काल है क्योकि एकेन्द्रिय जीवराशि अनन्त है। दो वृद्धि दो हानि

और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य काछ एक समय और

उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण है। शेष कर्मोंकी असंख्यातगुणद्वानिका जघन्य

कार एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागहानिका काल सवेदा है। तथा शेष पद्विभक्तियोंका जघन्य काछ एक समय और उत्कृष्ट

काल आबलीके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार काययोगी औदारिककाययोगी नपुंसक

बेदबाले क्रोधादि चारों कपायवाले अचक्लुद्शनवाले भव्य और आहारक जी वोके जानना चाहिए।

विशेषार्थ ओघसे छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और

अवस्थितपद्का कार स्वेदा क्यों कहा है इसका स्पष्टीकरण खयं वीरसेनाचार्येने किया है । इनकी

दो बृद्धि और दो हानि तथा अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य

काछ एक समय हे क्यों एक समयके लिए ये होकर द्वितीय समयमें न हों यह् सम्भव है। उत्कृष्ट

काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है क्योकि निरन्तर नानां जीव इन बृद्धियों और हानियोंको

यदि प्राप्त हों तो इतने काल तक ही प्राप्त हो सकते हैं। शेष कर्मोकी असंख्यातगुणहानि क्षपणाके

समय प्राप्त होती दै अतः इसका जघन्य काक एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा

है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी सत्ता सदा है और उसकी सदा असंख्यातभागहानि होती

रहती हे इसलिए उसका कार सर्वदा कहा है । तथा इसके शेष पद कमसे कम एक समय तक

और अधिकसे अधिक आवलीके असंख्यातबें भागप्रमाण कार तक होते हैं अतः उनका जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्ट का आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कदा दे । काययोगी आदि

सार्गणाओंमें यह काल बन जाता है ।

४०२ आदेशकी अपेक्षा नारकियों में छब्बीस प्रकृति्योकी असंख्यातमागहनि और

अवस्थितका काछ तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका कार सर्वदा १

तथा शेष पद् विभक्ति्योका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट कार आवरीके असंख्यातवें

Page 271:

५ जयघवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

आवलि० असंखे०भागो । एवं सब्बणेरहयसव्वपंचिंदिय तिरिक्ख ०देवभवणादि जाव

सहस्सार ०पंचिंदिय अपज्ज ०तसअपज्ज ०वेउव्विय णजोगि त्ति। तिरिक््खेस ओघ॑।

णवरि मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० असंखे गुणहाणी णस्थि ।

४०३ मणुस्तेसु छन्बीसं पयडीणं पंचिंदियतिरिकिघभंगो । णवरि असंखें०

गुणहाणी अणंताणु ०चठक० अवत्तव्ब जह एगसमओ उक संखेजा षमया । सम्मत्त

सम्माभिच्छन्ताणं चत्तारिवड्डिअवष्टि० अवत्तव्वं च ज एगसमओ उक० संखे० समया ।

चत्तारिदहाणिवि० ओघं । एवं मणुसपज्नत्तमणुसिणीणं । णवरि जम्हि आवलियाए

असंखेभागो तम्दि संखे समया । किंतु भिच्छत्तसम्मचसम्मामि ० तेरसक०

संखेमागहाणि० ज० एगसमओ उक ० भावलि० असंखे मागो । मणुसअपज० छन्धीसं

पयडीणमसंखे ०भागद्वाणिअवष्ठि सम्मत्तसम्मामि असंखे ०भागहाणि० ज एगसमओ

उक्क पलिदो० असंखे भागो । सेसपदवि० जह ० एगसमओ उक ० आवलि०

असंखे मागो

४०४ आणदादि जाब णवगेवज्ञ० अट्टाबीसं पयडीणमसंखेमागहाणि

सच्बद्धा । सेषपदवि ज० एयसमओ उक० आवजि० असंखे मागो अणुदिसादि जाव

अवराद त्ति एसो चेव भंगो । णवरि सम्मत्त संखे गुणहाणि जह एमस ० उक ०

मागध्रमाण द । इसी प्रकार सब नारकी सव पंचेन्द्रिय तियच सामान्य देव भवनवासियोंसे छेकर

सहस्रार कल्पतकके देव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अस अपर्याप्त और वैक्रियिककाययोगी जीवोंके जानना

चाहिए । तियचोंमें सब पदोंका काल ओघके समान है किन्तु इतनी विशेषता है कि इनमें

मिथ्यांत्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातगुणहानि नहीं हे ।

४०३ मनुष्योंमें छब्बोस प्रकतियोंका भंग पंचेन्द्रिय तिय॑चोके समान दे । किन्तु इतनी

विशेषता है कि इनमें असंख्यातगुणहानिका और अनंतायुबन्धीचलुष्ककी अवक्तव्यविभक्तिका जघन्य

काठ एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि

अवस्थित और जअवक्तव्यका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय है । तथा

चार हानिस्थितिविभेक्तियोंका काठ ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मलुष्यि

नियोंमें जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ आवरीके असंख्यातवें भागप्रसाण काछ

कहा है वहाँ संख्यात समय कार कहना चाहिए । किन्तु मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और

तेरह कषायोंकी संख्यातभागहानिका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट कार आवलिके असंख्या

तवे भागप्रमाण है । मनुष्य अपर्याप्तकोमे छच्वीस प्रकृतियोकी असंख्यातभागहानि और जवस्थितका

तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट

कारु पल्यके असंख्यातवें भागग्रमाण है । तथा शेष पद् स्थितिविभक्तियोंका जघन्य कार एक समय

और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हे ।

४०४ आनतकल्पसे लेकर नौग्रेवेयक तकके देवोमे अद्वाईस प्रकृतियोंकी जसंख्यातभागदा

निका कार स्वेदा है तथा शेष पद्स्थितिविभैक्तियोंका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुद्शिसे लेकर अपराजित तकके देवोंमें यही भंग है ।

Page 272:

गा० २२ चड्डिपरूवणाए काछो २५३

संखेजा समया एवं सच्वटं । णवरि संखेजा समया सम्मत्तअणंताणु ० संखेमाग

इाणिवि० ज० एगस ० उक ० आवलि० असंखे०भागो ।

४०५ इंदियाणुवादेण सव्वए्ड दियाणमसंखे० भागवड्डि ०द्वाणिअवष्ठि छब्बीसं

पयडीणं सब्बद्धा। संखे०भागद्वाणिसंखे०गुणदाणीणं जद्० एगस ० उक्त० आवलि०

असंखे०भागो । सम्पत्तषम्मामि असंखे०भागहाणिवि० सन्नद्धा । सेसपदवि० ज०

9 हु

एगसमओ उक० आवलि० असंखे०भागो। एवं पुढति०बरादरपुढवि०बादरपुदबि

अपज्जञ ० सुददमपुठविसुहू पद विपज्जत्तापज्जत्तआउ ० वादरआउ०बादर आउ अपज्ज ०

सुहुमआउ ०सुहुमआउपज्जत्तापज्जत्तते ०ब्रादरतेउ ०बादरतेउअपज्ज ०सु हुमतेउ ०

सुहुमतेउपजत्तापज्तवाउ ० बादरवाउ० बादरवाउअपज्ञ ० सुहुमवाउ ०सुदुमवाउ

पज्त्तापजत्तसव्ववणप्फद् ०सव्वणिगोदा त्ति। बादरपुदविआदिपजत्ताणमेवं चेव ।

णवरि छब्बीसं पयडीणमसंखे ०भोगवद्डि० जद एगस ० उक० आवलि० असंखे०भागो।

४०६ सन्वविगलिदिएसु छन्धीसं पयडीणमसंखे ०भोगहाणिअबह्ठि ० सब्वद्धा ।

असंखे० भागवड्डिसंखे ० भागवड्डिसंखे ० भागद्वाणिसंखे गगुणहाणि ज एगस० उक

किन्तु इतनी विरोषता है कि सम्यक्त्वकी संख्यातगुणदानिका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इसी प्रकार सवौ्थसिद्धिे जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता

है यहां संख्यात समय काल द । तथा सम्यक्त्व और अनन्ताचुबन्धी चतुष्ककी संख्यातमागहानि

स्थितिविभक्तिका जघन्य काक एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४०५ इन्द्रिय मामेणाके अनुवादसे सब णकेन्द्रियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यात

भागबूद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका काठ स्वेदा है। संख्यातभागहानि और

संख्यातगुणदानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

है। सम्यक्त्वे और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानि स्थितिविभक्तिका कार सर्वदा है।

तथा शेष पद्स्थितिविभक्तियोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें

भागप्रमाण है । इसी प्रकार प्रधिवीकायिक बाद्र प्थिवीकायिक बादर प्रथिवीकायिक अपयांप्त

सूक्ष्म प्रथिवीकायिक सूक्ष्म ए्थिवीकायिक पर्याप्त और जपर्यौप् जल्कायिक वादर जलकायिक

बादर जलकायिक अपयाप्त सूक्ष्म जलकायिकः सूक्ष्म जलकायिक पर्याप्त और अपयोत अग्निकायिक

वादर अग्निकायिक बादर अग्निकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायिक सूक्ष्म अभिकायिक पर्याप्त और

अपर्याप्त वायुकायिक बादर वायुकायिक बादर वायुकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक सूक्ष्म

वायुकायिक पर्यौप्त और अपयोप्त सब वनस्पति और सब निगोद जीवोंके जानना चाहिए । बादर

प्रथिवी आदि पर्याप्त जीबोंके इसी प्रकार जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता हे कि इनमें

छब्बीस प्रकतियोंकी असंख्यातभागवृद्धिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ अबलिके

असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

४०६ सब विकलेन्द्रियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और अवस्थितका

कार सर्वदा है। असंख्यातभागबृद्धि संख्यातभागव्रद्धि संख्यातभागहानि और संख्यात

गुणहानिका जघन्य काक एक समय और उ्छृष्ट कार आवलिके असंख्यात भागप्रमाण है ।

Page 273:

२५४ जयधवङासदिदै कसायपाहुडे हिदिविद्ती ३

आवलि असंखे मागो । सम्मत्तसम्मामि ०असंखे मागहाणि सब्वद्धा । । सेसहाणि०

ज० एगस् ० उक० आवलि० असंखे ० भागों ।

४०७ पंचिदियपंचिन्पज छब्बीस पयडीणमसंखेजमागदाणिअवबदह्धि

सब्बद्धा तिण्णिवड्डिदोहाणि० ज एगस ० उक० आवलि० असंखे मागो असंखे०

ग्रुणदाणि० ज० एगस० उक्क० संखेज़ा समया अणंताणु ०चउक० असंखे ० गुणद्ाणि

अवत्तव्च ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०

भागहाणि० सब्बद्धा चत्तारिब्डितिण्णिहाणिअबद्ठि०अवत्तव्ब ज० एयस० उक्त ०

आवलि० असंखे०भागो । एवं तसतसपजञ्ञ ०पंचमण ०पंचवचि०इहत्थि पुरिस ०

चक्खु ०सण्णि त्ति

४०८ ओरालियमिस्स० छन्बीसंपयडीणं असंखे०भागव्डिद्वाणिअबब्ठि ०

सव्वद्धा । दोवड्डिदोह्दणि० ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो । सम्मत्त

सम्मामि० असंखे०भागहाणि० सब्बद्धा। तिण्णिद्णि० ज० एंगस० उक० आवलि०

असंखे ०भागो । गमस

४०६ वेउव्वियमिस्स छब््रीसं पयडीणमसंखे०भागहाणिअवद्धि ज०

एगस० उक पलिदो० असंखे मामो । तिण्णिवड्डिदोह्ाणि० ज० एगस० उक्ष

आवलि असंखे०भागो सम्मत्तसम्मामि० असंखे० मागहाणि जह० एगस० उक०

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका कार सवेदा द । तथा शेष हानियोंका

जघन्य कार एक समय और उत्क्ष्ट काल आवलिके जसंख्यातवें भागप्रमाण दै ।

४०७ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंमें छब्बीस प्रक्रतियोंकी असंख्यातभागहानि

और अवस्थितका कार सवदा है । तीन वृद्धि ओर दो हानियोंका जबन्य काठ एक समय और

उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य काछ एक समय

और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय ह । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य

का जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काठ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द । सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदानिका काल सर्वदा हे । चार वृद्धि तीन हानि अवस्थित

और अवक्तव्यका जवन्य कार एक समय और उत्क्रष्ट काछ आबलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है

इसी प्रकार चस त्रसपर्याप्त पांचों मनोयोगी पांचों बचनयोगी ख््रीवेदवाले पुरुषवेदवाले

चक्षुदशेनी और संज्ञी जीवक जानना चाहिए।

४०८ ओऔदारिकमिश्रकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यात भागवृद्धि असंख्यात

भागदानि और अवस्थितका कार सवेदा है । दो बृद्धि ओौर दो हानियोंका जघन्य कारु एक समय

और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी

असंख्यातभागदानिका कार सवेदा है । तथा तीन हानिर्योका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागग्रमाण है ।

४०९वेक्रियिकमिश्रकाययोगियों में छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागहानि और अवस्थित

का जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काछ पल्यकरे असंख्यातवें भागप्रमाण है। तीन बुद्धि और

दो हानियोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काछ एक समय और उत्कृष्ट

Page 274:

गा० २२ वड्डिपरूणाए कालो २५५

परिदो० असंखे०भागो । तिण्णिहाणि० ज० एगस ० उक० भावि असंखे०भागों ।

४१० कम्महय छब्दीसं पयडीणमसंखे०भागवड्डिदाणिअवद्ठि सब्बद्धा ।

दोषड्डिदोहाणि० ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०प्रागो सम्मत्तसम्मामि०

चत्तारिदहाणि० ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो । एवमणादारीणं ।

४११ आहार ० अद्भावीसं पयडीणमसंखेभागहाणि ज० एगस० उक

श्तोश्च । आहारमि० अट्धावीसं पयडीणमसंवेज्जमागदाणी जहण्णुक० अंतोध्ु ० ।

४१२ अवगदवेद् च ऽवौसं पयडोणमसंखे०भागद्वाणि० जह ० एयस ० उक०

अंतोम्म० । संखे०भागदाणिसंखे गुणदाणि जद ० एगस ० उक ० संखेजा समया ।

णवरि दंसणतियअद्रक इत्थि ०णवुंस संखेज गुणहाणी णत्थि । लोमसंजल०

संखे०भागहाणि जह० एगस ० उक ० आवि असंखे मागो । अक्सा० चउवीसं

पयडीणमसंखे ०भागदाणि० जदह एगस० उक० अंतोम्म० । एवं जदाक्खाद्० ।

४१२ मदि०षुद० अखे भागवड्िहाणिअवद्टिदं च छब्बीसं पयडीणं

रुष्बद्धा। दोवड्डिदोहाणि० जद एगस० उक आवलि० असंखे० मागो । सम्मत्त

सम्मामि० असंखे० मागद्वाणि० सव्बद्धा । सेसहाणि० जह एगस ० उक० आवलि०

काल पल्यके असंख्यातवें भेगप्रमाण है। तथा तीन हानियोंका जघन्य काछ एक समय और

उत्कृष्ट काठ आवलिके असंख्यतवें भागप्रमाण हे ।

४१० कर्मणकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभाग

हानि और अवस्थितका का स्वेदा है। तथा दो बृद्धि ओौर दो हानियोंका जघन्य काल एक समय

और उत्कृष्ट कारु आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण दै । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार

हानियोंका जघन्य कार एक समय और उक्ष काक आबलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ह । इसी

प्रकार अनाहारकोंके जानना चाहिए।

४११ जादारककाययोगियोमि अटद्टाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य

कार एक समय और उच्छृ काठ अन्तसुहूत है । आदारकमिश्रकाययोगियमिं अडाईस प्रकृतियों

की असंख्यातभागहानि का जघन्य और उत्कृष्ट काछ अन्तमुहते है ।

४१२ अपगतवेदियोंमें चौबीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य कार एक

समय और उत्कृष्ट काल अन्तमुंहूर्त ह । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय है। किन्तु इतनी विशेषता है कि तीन द्शनमोहनीय

आठ कषाय खीवेद् यर नपुंसक्वेदकी संख्यातगुणदानि नहीं हे । छोभसंज्वछनकी संख्यात

भागदानिका जघन्य काल एक समय ओर उच्छृष्ट काल आबलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

अकषायी जीवम चौबीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदहानिका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काछ अन्तमुंहूर्त है । इसी प्रकार यथाख्यातसंयत जीवों के जानना चाहिए ।

४१३ मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागबृद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थितका कार स्वेदा हे। दो इंद्धि और दो हानियों का जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्थ और

सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिक्रा काल सवेदा है । तथा शेष हानियोंका जघन्य काल

Page 275:

२०६ जयघधवलासहिदे कसायपाहुडे ह्विदिविहन्ती ३

असंखे०भागो । विहंगणाणी० छन्रीसं पयडीणमसंखे मागहाणिवद्ि सब्बद्धा।

रिष्णिवड्िदोह्ाणि जह ० एगस० उक० आवलि० असंखे भागो । सम्मत्त

सम्मामि० असंखेमागहाणि सव्बद्धा । सेसदाणि ज० एणस० उक ० आवि

असं मागो ।

४१४आमिणि०सुद ०ओहि० अद्धावीसं पयडीणमसंवे ० भागदाणि सब्वद्धा ।

संवे०मागद।णिसंचे ग्युणहाणि ज० एगस० उक० आबकि० असं ०मागो ।

अशंताणुचउक० असंखे०गुणदाणि० ज० एगस० उकं० आवलि० असंखे०मागो ।

सेसकम्माणमसंखे ० गुणदाणि० ज० एगक्त० उक संखेजञा समया । एवमोदिदंस०

सम्मादिद्धि त्ति । मणपज्ञव० अद्धानीसं पयडीणं असंवेजञमागहाणि सब्बद्धा । संखे०

भोगहाणिसंखेजगुणद्ञाणिअसंखे गुणहाणि ज ० एगस ० उक संखे० समया। णवरि

मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामि तेरसकसायाणं संखे मागदाणि जद एमस ० उक्

आवलि० असंखे० भागो । एवं संनद् ०सामाश्यखेदो संजदे त्ति । णवरि सामाहय

छेदो० लोभसंजल० संखे भागहा जह एगस ० उक ० संखेजा समया ।

४१५परिहार० अड्डाबीसं पयडीणमसंखे मागहाणि सब्यद्धा संखे ० प्रागहाणि०

जह० एगस ० उक ० संखे समया । णवरि मिच्छत्तसम्मत्तसम्भामि ०अणंताणु ०

एक समय और उत्क्ष्ट काछ आवचछके असंख्यातवें भागप्रमाण दै । विभंगज्ञानियोमे छब्बीस

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और अवस्थितका कारु सवेदा हे । तीन बृद्धि और दो हानियों

का जघन्य कार एक समय और उत्क्ष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण दै । सम्यक्स

और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका कार सवेदा है । तथा शेष हानियोंका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट कार आबलिके असंख्यातवें सेगप्रमाण है ।

४१४ आभिनिवोधिकज्ञानीः श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें अद्टाईस प्रकृतियोंकी

असंख्युतभागहनिका काल अबंदा है । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काछ भावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनन्तालुवन्धी चलुप्ककी

असंख्यातगुणहानिका जघन्य कार एक समय और उचछ कार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

द । शेष कर्मोकी असंख्यातगुणहानिका जघन्य काल् एक समय और उत्कृष्ट काक संख्यात समय हे ।

इसी भ्रक़्ार जवधिदशेनवाडे और सम्यण्ड्ट जीर्वोकं जानना चाहिए। मनःपर्ययज्ञानियोमे अद्टाईस

प्रकृतियोकी असंख्यातभागदानिका काक सवेदा है। संख्यातमागहानि संख्यातगुणहानि और

असंख्यातगुणद्यानिका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय दै । किन्तु इतनी

विशेषता है कि मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और तेरह कषायोंकी संख्यातभागदानिका

जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हे । इसी प्रकार संयतः

सामायिकसंयत और छेदोपस्थापनासंयत जीवोंके जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि

सामायिकसंयत और छेद्ोपस्थापनासंयत जीवोंमें छोभ संज्वलनकी संख्यातभागहानिका जघन्य

कार एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

४१५ परिहारविशुद्धिसंयतोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदानिका कार स्वेदा

है । संख्यातभागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय है । किन्तु

Page 276:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए वडढीए कारो २५७

चउक० संखेभागहाणि ज० एगस ० उक ० आवलि० असंखे भागो । मिच्छन्त

सम्मत्तसम्मामि०अणंतागुचउक० संखेगुणहाणिअसंखेगुणदाणि ज० एगस

उक० संखे समया ।

४१६ सुहुमसांपराय० चउवीसंपयडीण मसंखेमागहाणि ज० एगसमओ

उक० अतो । दंसणतिय० संखे मागहाणि जह ० एयस० उक ० संखे समया ।

रोभसंजल ० सखि भभागहा० संखे नयुणहाणि ज जह० एगस० उक ० संखेजञा समया ।

णवरि संखे भागहाणीए उक्क० आवलि० असंखे०भागो ।

४१७ संजदासंजद्० अदावीसंपयडीणमसंखेमामहाणिवि सव्वद्धा ।

संखे०भागहाणिवि० ज० एगस० उक ० आवलि० असंखे०भागो। मिच्छन्तसम्मत्त

सम्मामि संखेगुणहाणिअसंखे गुणहाणि जह एगस० उक्क संखेजा

समया । अणेताणु चउक० संखेगुणहाणिअसंखेगगुणहाणि जह एगस०

उक० आवलि असंखेभागो ।

४१८ असंजद् छन्बीसंपयडीणमसंखे भागवड़िहाणिअवद्िद सब्बद्धा।

दोबड्डिदोहाणि० ज० एगस० उक ० आवलि० असंखे भागो अणं॑ताणु०चउ क०

असंखे ०गुणहाणिअवत्तव्व ० जह० एगस० उक्क० आवलि० असंखे०भागो । मिच्छत्त ०

असंखे०गुणहाणि० ज० एगस० उक० संखेजा समया। सम्मत्तसम्भामि० असंखे०

इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व ओर अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

संख्यातमागहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग

प्रमाण है। मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तालुबन्धीचतुष्ककी संख्यात

गुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय दे

४१६ सूक्ष्मसांपरायिक संयतोंमें चौबीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागदह्ानिका जघन्य

कार एक समय ओर उत्क्ष्ट काल अन्तमुंहूर्त है । तीन दशनमोहनीयकी संख्यातभागहानिका

जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय द । लोभसंञ्बलनकी संख्यातभाग

हानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य काछ एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय है ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातभागहानिका उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें

भागप्रमाण है ।

४१७ संयतासंयतोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका कार सर्वदा है।

संख्यातभागहानिका जघन्य काछ एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

है। सिथ्यात्व सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी संख्यातगुणदानि और असंख्यातगुणाहानिका

जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय दै । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी संख्यात

गुणहानि और असंख्यात॒गुणहानिका जघन्य काठ एक समय और छतछष्ट का आवलिके

असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४१८ असंयतोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातमागहानि

और अवस्थितका कार सर्वदा है। दो इद्धि और दो हानियोंका जघन्य काठ एक समय और

उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनन्तानुन्धी चतुष्ककी असंख्यातगुणहानि

और अवक्तन्यका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल आबलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणदानिका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

२३

Page 277:

२५८ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

मागहाणि सबव्वद्भा । तिण्णिहाणिचत्तारिवड्डि अवद्धि ०अवत्तव्व० ज० एगस०

उक० आवलि० असंखे०भागो ।

४१९ किण्डणीलकाड छव्बीसं पयडीणमसंखे ०भागवड्डिहाणिअव्डि ०

सच्वद्धा । दोवड्डिदोहाणि० ज० एगस ० उक० आवलि० असंखे०भागो । अणंताणु ०

चउक० असंखे गुणहाणिअवत्तव्व जह ० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो ।

सम्मत्तसम्मामि० सन्वपदवि ओघं ।

४२० तेठपम्म० छब्बीसंपयडीणमसंखे मागहाणिअवह्ि० सम्मत्त

सम्भामिच्छत्ताणमसंखे ० भागहाणि० च सव्वद्धा । तिण्णिवड्डिदोहाणि० जह० एगस०

उक्क ० आवलि० असंखे०भागो । अणंताणु०चउ क० असंखेगुणहाणिअवत्तव्व जह

एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो मिच्छत्त० असंखे०गुणहाणि० ज० एगस०

उक्ष संखेजा समया। सम्मत्तसम्मामि० चत्तारिवड्डितिण्णिहाणिअवष्टि ०अबत्तच्ब०

ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो ।

8 ४२१ सुक अड्टावीसं पपडीणमसंखे ० भागहाणिवि सब्बद्धा । संखे मागहाणि

संखे०मुणहाणि० ज० एगस० उक ० आवलि० असंखे०भागो । असंखे०गुणहाणि०

जह० एगस० उक० संखे० समया । णवरि अणंताणु चउक असंखे०गुणहाणि

सम्यक्त्व और सम्यग्सिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका काल सर्वदा है । तीन हानि चार

इद्धि अवस्थित और अवक्तव्यका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके

असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४१९ क्ृष्ण नील और कापोतलेश्यावालोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागइद्धि

असंख्यातभागहानि और अवस्थितका काल सर्वदा है। दो बृद्धि और दो हानियोंका जघन्य

काल एक समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी असंख्यातगुणदहानि और अवक्तव्यका जघन्य कार एक समय और उत्कृष्ट काल

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ह । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके सब पद्वालोंका काल

ओघके समान है ।

४२० पीत और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि

और अवस्थितका कार तथा सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिकाका ल

स्वेदा है । तीन इद्धि और दो हानियोंका जघन्य कार एक समय और उत्क्ष्ट काछ आवलिके

असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका

जघन्य काछ एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । मिथ्यात्वकी

असंस्यातगुणहानिका जघन्य काठ एक समय और उत्कृष्ट काछ संख्यात समय दै । सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि तीन हानि अवस्थित और अवक्तव्यका जघन्य काठ एक

समय और उत्कृष्ट काछ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । दि

४२१ शुक्ललेश्यावालोंमें अद्ाईस प्रकृतियोकी असंख्यातभागहानिका ऋल सवेदा है।

संख्यातभागह्ानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल आवलिके

असंख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य कारु एक समय और उत्कृष्ट काल

संख्यात समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी असंख्यातगुणहानि

Page 278:

गा० २२ दिदिविहत्तीए बड़ढीए काछो २५९

अवत्तव्व० ज० एगस ० उक० आवलि० असंखेभागो । सम्मत्तसम्मामि० चत्तारि

बड्डिदोहाणिअवष्टि ०अवत्तव्व ० ज० एगस० उक आवलि० असंखे मागो

४२२ अभवसि० छब्बीसंपयडीणमसंखे०भागवड्डिहाणि०अव्टि० सब्बद्धा ।

दोवड्डिहाणि० जह० एगस ० उक० आवलि० असंखे०भागो ।

४२३ वेदग० अड्कावीसपयडीणमसंखेभागदहाणि सब्वद्धा । संखे०भाग

हाणिसंखे०गुणहाणि० ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो। मिच्छत्त

सम्मत्तसम्मामि० असंखेगुणहाणि ज० एगस० उक्क० संखे० समया । अणंताणु

चउ क० असंखे गुणहाणि० ज० एगस० उक० आवलि० असंखे०भागो ।

४२४ खदय० एकवीसंपयडीणमसंखे०भागहाणि० सब्बद्धा । संखे०भाग

हाणिसंखे ० मुणहाणिअसंखे ०मुणहाणि० ज० एगस० उक० संखे समया

णवरि अह्कसायलोभसंजलणाणं संखेजभागहाणि० ज० एगस० उक० आवलि

असंखे ० भागों ।

४२५ उवसम० असंखेजभागहाणि० अद्वावीसंपयडीणं जह० अंतोग्य०

उक० पलिदो० असंखे०भागो। संखेभागदाणि ज० एगस० उक

आवलि० असंखे०भागो । अणंताणु चउक ० संखेगुणहाणिअसंखे गुणहाणि० ज०

एगस० उक आवलि० असंखे भागो ।

और अवक्तव्यका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

है। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी चार वृद्धि दो हानि अवस्थित और अवक्तव्यका

जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंस्यातवें भागप्रमाण है ।

४२२ अभव्योमे छब्बीस प्रकृतियोकी असं ख्यातभार्रद्धि असंख्यातमागहानि

और अवस्थितका काल सव॑दा है। दो बद्धि और दो हानियोंका जघन्य कार एक समय और

उत्कृष्ट कार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द ।

४२३ वेदकसम्यम्टष्टियोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागदहानिका काक सर्वदा

दै । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काछ

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ह । मिथ्यात्व सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

गुणदानिका जघन्य काल एक समय ओर उत्कृष्ट काल संख्यात समय दै । अनन्तानुबन्धो

चतुष्ककी असं यातगुणहानिका जघन्य कारु एक समय और उत्कृष्ट काठ आवलिके असंख्यातवें

भागप्रमाण है ।

४२४ क्षायिकसम्यण्टश्ियोमे इच्षीस प्रकृतियोकी असंख्यातभागदानिका काल

सवेदा दे । संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य काल

एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । किन्तु इतनी विशेषता है कि आठ कषाय और

लोभ संज्वलनकी संख्यातभागहानिका जघन्य कार एक समय ओर उत्कृष्ट काल आवलिके

असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४२५ उपशमसम्यम्दष्टियोंमें अद्वाईस प्रकरतियोंकी असंख्यातभागहानिका जघन्य काल

अन्तमुंहूर्त और उत्कृष्ट काछ पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। संख्यातभागदानिका जघन्य

कार एक समय ओर उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

संख्यातगुणहानि ओर असंख्यातगुणहानिका जघन्य का एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके

Page 279:

२६० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

४२६ सासण० अट्टाबीसंपयडीणमसंखे ०भागहाणि० जह० एगस० उक

पलिदो० असंखे०भागो । सम्मामि० अद्भावीसंपयडीणं असंखे भागहा० ज० एगस०

उक्क० पलिदो० असं०भागो । संखेभागहाणिसंखेगुणहाणि ज० एगस० उक्क०

आवलि० असंखे०भागो । मिच्छाइड्टी छव्वीसंपय० असंखे ०भागबड्डिहाणिअवहि०

सव्बद्धा । दोबड्डिदोहाणि० जह० एगस० उक० आवलि० असं०भागो। सम्मत्त

सम्मामि० एडंदियभंगो । असण्णि० मिच्छाइट्टिमंगो ।

एवं कालाणुगमो समत्तो ।

४२७ अंतराणुगमेण दुविहों णिदेसोओघे० आदेसे० । ओघेण मिच्छत्त ०

बारसक ०णवणोक ० असंखे ०भागवड्डिहाणिअवष्धडि० णत्थि अंतरं । दोवड्डिदोहाणि०

ज० एगस० उक्क० अंतोमु० । असंखेगुणहाणि ज० एगस० उकक० छम्मासा ।

एवमणंताणु च क । णवरि असंखे गुणहाणिअवत्तव्व जह० एगस ० उक्क० चउबीस

महोत्तरे सादिरेगे । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चत्तारि

बड्डितिण्णिहाणिअवत्तव्व ज० एगस ० उक ० चउवीसमहोरते सादिरेभे । अबद्धिद०

जह० एगस० उ क ० अंग्रुलस्स असंखेभागो । एवमचक्खु ०भवसि०आहारि ति ।

असंख्यातवें भागभ्रमाण है । ह

४२६ सासादनसम्यग्हष्टियोमे अडहाईस प्रकृतियोंकी असंयातभागहानिका जघन्य

कार एक समय और उत्कृष्ट काछ पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोमें

अट्ठाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागद्ानिका जघन्य काक एक समय और उत्कृष्ट काछ पल्यके

असंख्यातवें भागप्रमाण है । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदहानिका जघन्य काल एक

समय ओर उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । मिथ्यादृष्टियोंमें छब्बीस

प्रकृतियोंकी असंख्यातभागनरद्धिः असंख्यातभागहानि और अवस्थितका काल सर्वदा हे ।

दो द्धि भौर दो हानिर्योका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

भागप्रसाण है । सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वका भंग षकेन्द्रियोके समान है । असंज्ञियोंका भंग

मिथ्यादृष्टियोके समान हे ।

इस प्रकार कालानुगम समाप्त हुआ

४२७ अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघसे और आदेशसे ओघकी

अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय ओर नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागवृद्धि असंख्यातभागहानि

ओर अवस्थितका अन्तर नदीं है। दो इद्धि ओर दो हानियों का जघन्य अन्तर एक समय

ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूतं है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए।

किन्तु इतनी विशेषता दै कि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिन रात है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यात

भागहानिका अन्तर नहीं दै । चार इद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिन रात है । अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंस्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अचश्ष॒ुद्शनवाले भव्य और

आहारक जीवोंके जानना चादिए

Page 280:

गा० २२ हविदिविहत्तीए बड्ढीए अंतर २६१

४२८ आदेसेण णेरइएस भिच्छ चबारसक०णवणोक० असंखे ०भागहाणि

अवहि० णत्थि अंतरं । सेसपदवि ज० एगस० उक० अंतोम्म० । एवमणताणु०

चउक० । णवरि असंखेगुणहाणिअवत्तव्य ज० एगस० उ क० चडवीसमहोरत्त

सादिरेगे । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चच्तारिवह्कितिण्णि

हाणिअवत्तव्व जह एगसमओ उक चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । अवद्ध जह०

एगस० उक० अंगुल० असंखेभागो । एवं सन्वणेरहयपंचि तिरिक्खतिय०

देवभवणादि जाव सहस्सार ति ।

४२९ तिरिक्खेस अद्धावीसंपयडीणं सव्वपदवि० ओघं । पंचि०तिरि०

अपञज्ञ अदकावीसंपयडीणं जाणि पदाणि अस्थि तेसिं पदाणं णेरदय्॑मो । एवं

पंचिदियअपज्ञ०तसअपलजत्ताणं ।

४३० मणुसतिण्णि मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखे०भागहाणि

अवष्टि० णत्थि अंतरं । सेसपदवि ज० एगस० उक० अतो । असंखे०गुणहाणि०

ज० एगस० उक छम्मासा । णवरि मणुसिणीसु वासपुधत्त अणंताणु चउक०

सम्मत्त सम्मामिच्छत्ताणं णिरोधं । मणुसअपज्ञ० अट्टावीसंपयडीणं सबव्वपदवि०

जह० एगस ० उक ० पलिदो० असंखे०भागो ।

४२८ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोकी

अजंस्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है। शेष पदविभक्तियोंका जघन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तञुहूे है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षासे

जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर

एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है। सम्यकत्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी

असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । चार बृद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरास है। अवस्थितका जधन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सब

नारकी तीन प्रकारके पंचेन्द्रिय तिरयच्व सामान्य देव भवनवासियोंसे लेकर सहस्नार कल्पतकके

देवोंके जानना चाहिए ।

४२९ तियंचोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी सब पदस्थितिविभक्तियोंका अन्तर ओघके

समान दै पंचेन्द्रिय तियंच अपर्याप्तकोंमें अद्वाईस प्रकृतियोके जो पद् हैं उन पदोंका भंग

नारकियोंके समान है। इसी प्रकार पंचेन्द्रिय अपयोप्त और त्रसअपर्याप्त जीबोंके जानना चाहिए ।

४३० तीन प्रकारके मनुष्योंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यात

भागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है। शेष पद्विभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुहूतं है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर छह महीना ह । किन्तु इतनी विशेषता हैः कि मनुष्यनियोंमें वर्षप्रथ्यक्त्व अन्तर

दै । अनन्तानुबन्धीचतुष्क सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा सामान्य नारकियोंके

समान जानना चाहिए। मनुष्य अपरयाप्तकोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी सब पदविभक्तियोंका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

Page 281:

२६२ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

४३१ आणदादि जाव णवगेवज्ञ छव्वीसंपयडीणमसंखे०भागदाणि

णत्थि अंतरं । संखे भागहाणि जह एगससओ उक ० सत्त रादिंदियाणि सादिरे

याणि । संखे ०भागहाणीए सादिरेयसत्तरादिंदियाणि अंतरमिदि जं भणिदं तण्ण घड़दे

आणदादिसु किरियाविरदिदस्स हिदिखंडयघादाभावादो । ण चाणंताणुबंधिविसंजोयणाए

सम्मत्तगहणकिरियाणए च सत्तरादिंदियमेत्तसं तरमत्थि तत्थ चउवीस

अहोरत्तमेत्तअंतरपसूवणादो त्ति १ ण एस दोसो सुकलेस्सियमिच्छाइड्रीस विसोहि

मावूरिय हिदिकंडयघादं इणमाणेसु संखे०भागहाणीए सत्तरादिंदियमेचंतरुवलंभादो ।

संखेजगुणहाणिमाणदादिदेवा किण्ण कुणंति १ ण तारिसविसिटविसोहीए तत्था

मावादो । तं पि दो णव्वदे १ णएदम्हादो चेव उचारणुबदेसादो । अणंताणुचडक

संखे गुणहाणिअसंखे गुणहाणिअवत्तव्व जह ० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ताणि

सादिरेयाणि । सम्मत्तसम्मामि असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चत्तारिड्डि

तिण्णिहाणिअवत्तव्य जह एगस ० उक चउवीसमहोरत्ताणि सादिरेयाणि । अणु

दिसादि जाव सब्वइसिद्धि त्ति अद्वावीसपय० असंखे०भागहाणि० णस्थि अंतरं ।

४३१ आनत कल्पसे लेकर नौ भ्रेवेयेकतकके देचोंमें छच्बीस प्रक्रतियोंकी असंज्यात

भागहानिका अन्तर नहीं है । संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

साधिक सात रातदिन है ।

शंकासंस्यातभागदानिका जो साधिक सात दिनरात अन्तर कहा है वह नहीं बनता

है क्योकि आनत आदिकमें क्रियारहित जीवके स्थितिकाण्डकवात नहीं होता है।

यदि कहा जाय कि अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना और सम्यक्त्वके ग्रहण करने रूप क्रियामें सात

दिनरात अन्तर द्ोता है सो भी बात नदीं है क्योंकि इस विषये चौबीस दिनरात प्रमाण

अन्तर कहा है ।

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योकि वि्युद्धिको पूरा कर स्थितिकाण्डकघात

करनेवाले शुङक्दयावाटे मिथ्यारृष्ियोमे संख्यातभागहानिका सात दिनरात अन्तर

पाया जाता है। ह

शंकाआनत जादि कल्पोके देव संख्यातगुणहानिको क्यों नहीं करते हैं

समाधान न्दी क्योकि उस प्रकारकी विशिष्ट विद्धि वहाँ पर नहीं दै ।

शुंंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानउच्चारणाके इसी उपदेशसे जाना जाता हे ।

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी संख्यातगुणहानि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस ंदन रात है। सन्यक्तव ओर सम्य

ग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं दै । चार इद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका

जघन्य अन्तर एक समय और डत्क्ष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

अनुद्शिसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देबोंमें अद्वाईस प्रकृतियोंकी असंख्यातमागद्दानिका

ता० अतौ मत्थि चडवीस इति पाठः ।

Page 282:

गा० २२ ड्िदिविहत्तीए वड्ढीए अंतरं २६३

संखे भागहाणि सम्मत्तस्स संखे०गुणहाणि० अणंताणुन्चडक० संखे०गुणहाणि

असंखेगुणदाणीणमंतरं जह एगस० उक वासपुधत्तं । सब्बइसिद्धिम्मि

पलिदो० संखेमागो ।

४३२ हंदियाणुवादेण एइंदिएस मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० असंसे०

तरं । संसेखभागहाणिसंसे

भागबड्डिहाणिअवहि ० णत्थि अंतरं । संखेजञभागहाणिसंखजगुणहाणि जह एगस०

उक ० अंतोु । सम्मत्तसम्मामि० असंखे भागहाणि णत्थि अंतरं । संखे भागहा ०

संखे ० गुणहा ०असंखे गुणहाणीणं ज० एगस ० उक० चडवीसमहोरत्ताणि सादिरेयाणि ।

एहंदियाणमसंखे ० भागवड्डिहाणिअवड्टाणाणि तिण्णि चेव होति। तत्थ कथं

संखे०भागहाणिसंखे ०मुणहाणीणं संभवो १ किं च उव्वेष्टणकंडयाणमायामो सु

महंतो वि पलिदो० असंखे०भागमेत्तो चेव । तं इदो णव्वदे १ उ्वेन्नणक्रालस्स

पलिदो० असंखेमागपमाणत्तण्णहाणुववत्तीदो । एवं संते कथं संखे०भागहाणिसंखे ०

गुणहाणीणं संभवो त्ति ण सम्मत्त सम्मामिच्छत्तेस उव्वे्निदेसु उदयावलियब्भंतरे

पविसिय संखेजदिदिसेसेखु तासि दोण्ह॑ हाणीणमेइंदिएस उवलंभादों । अडावीससंत

कम्मिएसु जीवेसु सण्णिपंचिदिएसु सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि उव्वेन्नमाणेखु विसोहि

अन्तर नहीं है । संख्यातर्भागहानिका सम्यक्त्वकी संख्यातगुणहानिका तथा अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उक्ष

अन्तर वर्षप्रथक्त्व है । सवौ्थसिद्धिमें पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण अन्तर हे ।

४३२ इन्द्रियमार्मेणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषोय और नौ

नोकषायोकी असंख्यातभागव्रद्धि असंख्यातभागहानि ओर अवस्थितका अन्तर नहीं है । संख्यात

भागहानि और संख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूत

है। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नदीं दहै । संख्यातभाग

हानि संख्यातगुणहानि ओौर असंख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अम्र साधिक चौवीस दिनरात है ।

शंकाएकेन्द्रियोंके असंख्यातभागइद्धि असंख्यातभागदानि और अवस्थित ये तीनों

ही पद होते हैं अतः वहाँ संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि कैसे संभव हैं दूसरे

उद्देलनाकाण्डकका आयाम बहुत दी बड़ा हुआ तो पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता

है। यदि कहा जाय कि यह किस प्रमाणसे जाना जाता है तो इस पतिशंकाका उत्तर यह है कि

एकेन्द्रियोमिं उदधेलनाकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्यथा बन नहीं सकता है इससे

जाना जाता है कि उद्रेलनाकाण्डकका आयाम पल्यके असंख्यातवें भागग्रमाण है और ऐसा

रहते हुए संख्यातभागद्ानि ओर संख्यातगुणद्वानि कैसे बन सकती हैं

समाधाननहीं क्योकि सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्ेलना करते समय उनके

उद्यावलिके भीतर प्रवेश करके संख्यात स्थितियोंके शोष रहने पर उक्त दोनों हानियाँ एकेन्द्रियोंमें

पाई जाती हैं। तथा अहा प्रकृतिसत्कमंवाले जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीब सम्यक्त्व और

१ ता० प्रतौ मायामे सुद्दु इति पाठः ।

Page 283:

२६४ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविदत्ती ३े

माबूरिय सगसग्डिदीणं संखे०भागं संखेजे भागे च ट्विदिकंडयसरूवेण घेत्तण एडंदिए

सुबवण्णेस सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं दोष्टं हाणीणमवलंभादो च। जदि एत्य दो

हाणीओ लब्भंति तो सेसकम्माणं व अंतोमुहुत्त मेत्तमंतरं किण्ण उच्चदे १ ण सम्मत्त

सम्मामिच्छत्तड़िदिसंतकम्मियाणं जीवाणं गहिदह्विदिकंडयाणमेइंदिएसु उबवजमाणाणं

बहुआणमभावादो । तं छदो णव्वदे ओघम्मि सम्मत्तसम्मामि० संखे०भागहाणि

संखे ०गुणहाणोणं चउवीसमहोरततमेततं तरपरूबण ण्णहाणुववत्तीदों एवं सव्बएइंदिय

पुढविबादरपुढवि ०बादरपुटविपजत्तापजत्तसुहुमपुढवि ०सुहमपुटविपज्ञत्तापज्त्तआउ ०

बादरआउ०बादरआउ पज्त्तापजत्तसुहुमआउ ० सुहुमआउपजत्तापजञततेउ ०बादर

तेड०बादरतेउ पजतापजतसुहुमतेउ ०सुहुमतेउपजञत्तापज़त्तबाउ ०बादरबाउ ०बादर

वाउपजत्तापजत्तसुहुमवाउ ०सुहुमबाउ पजत्तापज्तसव्ववणप्फदिसव्वणिगोदा त्ति।

णवरि बादरपुढविपज ० बाद्रआउपल ०बादरतेउपज ०बादरवाउपज ०बादरवणप्फदि

सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्ठेलना करते हुए विज्वद्धिको पूरा करके अपनी अपनी स्थितिके संख्यातवें भाग

और संख्यात बहुभागको स्थितिकाण्डकरूपसे प्रहण करके एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए हैं उनके एके

निद्रय प्यौयमें सम्यक्त्व जौर सम्यग्मिथ्यात्वकी उक्त दोनों हानियाँ पाई जाती है।

क्ंकायदि यहाँ दो हानियाँ पाई जाती हैं तो शेष कर्मोके समान अन्तसुहूतेभमाण

अन्तर क्यों नहीं कहा ध

समाधान नर्द क्योकि सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यास्वस्थितिसत्कमेवाठे संज्ञी जीव

स्थितिकाण्डकोंको ग्रहण करके एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हुए बहुत नहीं पाये जाते हैं ।

शुंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानओघमें जो सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी संख्यातभागद्ानि और

संख्यातराणदानिका चौबीस दिनरात प्रमाणं अन्तर कहा है वह अन्यथा बन नहीं सकता

इससे जाना जाता है कि स्थितिकाण्डकोंका घात करते हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियोंमें

बहुत नदीं उत्पन्न होते हैं ।

इसी प्रकार सब एंकेन्द्रिय प्रथिवोकायिक बादरप्रथिवीकायिक बादर प्रथिवीकायिक

पयौप्न मौर अपर्याप्त सूक्ष्म प्रथिवीकायिक सूक्ष्म प्रथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त जलकायिक

बादर जलकायिक बादर जलकायिक पयाप्त और अपर्याप्त सूक्ष्म जलकायिक सूक्ष्म जलकायिक

पयाप्त और अपयोप्त अग्रिकायिक बादर अभ्रिकायिक बादर अस्निकायिक पर्याप्त और अपयात

सूद्म अभ्निकायिकः सूक्ष्म अग्निकायिक पर्याप्त और अपयाप्त वायुकायिक बादर वायुकायिक बादर

वायुकायिक पयौत और अपयांप् सूक्ष्म बायुकायिक सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त

सब वनस्पतिकायिक और सब निगोद् जीवक जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता ह कि बादर

प्रथिवीकायिकपयोप्त बादर जलकायिक पर्याप्त बादर अभिकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक

पर्याप्त और बादर बनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीबोंकी असंख्यातभागवृद्धिका जघन्य

१ ता प्रतौ दो हाणीओ ल्ब्भदि तो इति पाठः॥ २ ता० प्रतौ व च अंतोमुददत्त

इति पाठः । ३ ता० प्रतौ चडवीसरपंतरमेत्तपरूवणा इति पाठः ।

Page 284:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए बड्ढीए अंतरं २६५

पत्तेयसरीरपलत्ताणमसंखेजभागव ह जह एगस ० उक ० अंतोभु ।

४३३ विगलिंदिएसु मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० असंखेमागहाणि

अवद्टि० णत्थि अंतरं । असंखे०भागबड्डिसंखे ० भागवड्डिसंखे ० भागहाणिसंखे ०शुण

हाणीणं जह० एगस० उक० अंतोम्म । सम्मत्तसम्मामि असंखे ०भागहाणि

णस्थि अंतरं । तिण्ह॑ हाणीणं जह० एयस० उक० चडवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

४३४ पंचिंदियपंचिंग्पज० मिच्छन्त ०बारसक ०णवणोक ० असंखे०भाग

हाणिअवष्टि० णत्थि अंतरं तिण्णिवड्डि० दोणं हाणीणं जह० एगस० उक्त०

अंतोमु० । असंखेगुणहाणि ज० एगस० उक० छम्मासा एवमणंताणुचउक० ।

णवरि असंखेगुणहाणिअवत्तव्च० जह ० एगस० उक० चउवबीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चत्तारिबड्डितिण्णिहाणि

अवत्तव्व जह एगस उक० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । अबद्ध ज० एगस०

उक० अंगुलस्स असंखे मागो । एवं तसतसपज़त्ताणं ।

४३५५ जोगाणुवादेण पंचमण ० पंचचचि मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ०

असंखेमागहाणिअवद्टि णस्थि अंतरं । असंखेजभागवड्डिसंखे ० भागवड्डिसंखे ०

भागहाणिसंखे ्गुणवड्धिसंखे गुणहाणि ज० एगसमओ उक्क० अंतोम्म० । असंखे०

अन्तरकार एक समय और उतछ्ष्ट अन्तरकाल अन्त्यं दै ।

इ ४३३ विकलन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातमाग

हानि और अवर्थितका अन्तर नहीं है । असंख्यातभागब्द्धि संख्यातभागब्द्धि संख्यातभागहानि

और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहुतं है । सम्यक्त्व

और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है। तीन हानियोंका जघन्य अन्तर

एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

४३४ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीबोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है । तीन वद्धि ओर दो हानियोंका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है । असंख्यातगुणहानिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका

जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिन रात है । सम्यकत्व और

सम्यम्मिथ्यात्वकी असंज्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । चार इद्धिः तीन हानि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्क्रष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इसीप्रकार चख और त्रसपर्याप्त जीवोंके जानना चाहिए।

४३५ योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीरवोमें

सिथ्यात्य बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागह्ानि और अवस्थितका

अन्तर नहीं है। असंख्यातभागबृद्धि संख्यातभागदद्धि संख्यातभागहानि संख्यातगुणबृद्धि

और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहू्त है । असंख्यात

देधे

Page 285:

२६६ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

गुणहाणि० जह० एगस० उक्त छम्मासा । एवमणंताणु०चउक० । णवरि असंखे०

गुणदाणिअवत्तव्व जह ० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । सम्मत्त

सम्मामि० असंखेभागहाणि णत्थि अंतरं । चत्तारिबड्डितिण्णिहाणिअवत्तव्व ०

ज० एगसमओ उक० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । अवदि ज० शएगस ० उक०

अंगुल० असं भागो । एवं कायजोगिओरालियकायजोगीणं । णवरि असंखे०भाग

बड़ीए णत्थि अंतरं ।

४३६ ओरालियमिस्स० मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० असंखे०भागवड्ि

हाणिअवहि० णत्थि अंतरं । संखे०भागबड्डिहाणिसंखे ०मुणवड्डिहाणि० ज० एगस०

उक० अंतो॒० । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । तिष्णिहाणि०

जह० एगस० उक० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

४३७ बेउव्विय० मिच्छत्त बारसक०णवणोक ० असंखे ०भागहाणिअवह्िि ०

णत्थि अंतरं । सेसपदवि० जह० एगस० उकक० अंतोम्ु० । एवमणंताणु०चउक०

शवरि असंखे०गुणहाणिअवत्तव्व ज० एगस० उक० चउचीसमहोरत्ते सादिरेगे।

सम्मत्त ०सम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चत्तारिबड्डितिण्णिहाणि

अवत्तव्वं जह ० एगसमओ उक ० चठवीसमहोरत्ते सादिरेभे । अवष्डि० जह०

गुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । इसीप्रकार

अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणदानि

और भवक्तन्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात हे ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदानिका अन्तर नहीं दै । चार वद्धिः तीन हानि

और अवक्तन्यका जन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

अवस्थिततका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवं भागप्रमाण दै ।

इसीप्रकार काययोगी ओर औदारिककाययोगी जीवक जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है

कि असंख्यातभागदृद्धिका अन्तर नहीं है ।

४३६ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यात्व सोलह् कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंस्यातमागब्द्धि असंख्यातभागदहानि ओर अवस्थितका अन्तर नहीं है । संख्यातभागबृद्धि

संख्यातभागदानि संख्यातगुणद्रद्धिः और संख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्ते द्ै। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदानिका

अन्तर नहीं है । तीन हानियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस

दिनरात है ।

४३७ वैक्रियिककाययोगियोमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यात

भागानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है। शेष पद्विभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर अन्तयुहूतं है । इसीप्रकार अनन्ताजुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा जानना चादिए ।

किन्तु इतनी विशेषता दै कि असंख्यातगुणहानि ओर अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंरयात

भागदहानिका अन्तर नहीं है । चार वृद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक

१ आ तप्रौ एगसमओ चडबीसमहोरत्ते इति पाठः ।

Page 286:

गा० २२ ्िदिविहत्तीए बड़ढीए अंतरं २६७

एगस० उक० अंगुरू० असंखेभागो ।

४३८ बेउव्वियमिस्स० मिच्छत्त ०सोलसक०णवणोक० तिण्णिवड्डितिण्णि

हाणिअवष्टि० जह० एगस० उक० बारस मुहुत्ता । सम्मत्त सम्मामि० असंखे०भाग

हाणि० ज० एगस० उक्क० बारस मुहुत्ता तिष्णिहाणि ज० एगस० उक्क० चउ

चीसमहोरते सादिरेगे ।

४३९ कम्मइय० मिच्छत्तसोलसक०णवणोक० असंखे०भागवड्डिहाणि

अवष्ठि० णत्थि अंतरं । संखे०भागवड्डिहाणिसंखेजगुणवड्धिहाणि० जह० एगस०

उक्क० अंतोभ्ु । सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भागहाणि० ज० एगस० उक०

अंतोम्म० । संखे०भागहाणिसंखे ०गुणहाणिअसंखे ० गुणहशाणि० जह० एगसमओ

उक्त० चउबीसमहोरत्ते सादिरेगे एवमणाहारीणं पि वत्तव्वं ।

४४० आहार०आहारमिस्स० अह्वाबीसं पयडीणमसंखे०भागहाणि० जह०

एगस० उक० वासपुधत्त । एवमकसा ०जहाक्खाद् । णवरि चउबीसं पयडोीणं

ति वत्तव्वं ।

४४१ बेदाणु इत्थि मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखे०मागहाणि

अवदि णत्थि अंतरं । तिण्णिवड़धिदोहाणि ज० एगसमओ उक ० अंतोसु० ।

समय ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४३८ वेक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यात्व सोर कषाय और नौ नोकषायोंकी

तीन इद्धि तीन हानि जौर अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर बारह

मुहूर्त दै । सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यावभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है । तीन दानि्योंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

साधिक चौबीस दिनरात दै ।

४३५ कार्मेणकाययोगियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यात

भागवद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है। संल्यातभागद्द्धि और

संख्यातभागहानिका तथा संख्यातगुणइद्धि और संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिश्यात्वकी असंख्यांतभाग

हानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहर्ते है। संख्यातभागहानि

संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक

चौबीस दिनरात है । इसीप्रकार अनाहारकोंकी अपेक्षा कहना चाहिए।

४४० आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें अद्ठाईस प्रकृतियोंकी

असंख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्त्व है । इसी

प्रकार अकषायी और यथाख्यातसंयतोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनके

चौबीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा अन्तर कहना चाहिए।

४४१ वेदमार्गणाके अनुवादसे खीवेदियोमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं हू। तीन इद्धि औरोदी

Page 287:

२६८ जयधवरासादिदे कसायपाहुडे डिदिविहत्त ३

असंखे गुणहाणि जह एगस उक्त० वासपुधत्तं । एवमणंताणु चउक्ष० । णवरि

असंखे गुणहाणिअवत्तव्व ओषं । सम्मत्तसम्मामि असंखे मागहाणि णत्थि

अंतरं । चत्तारिवड़ितिष्णिहाणिअवत्तव्य० ज० एगस० उकक० चडवबीसमहोरत्ते

सादिरेगे । अवष्टि० ज० एगस० उक ० अंगुरस्स असंखेभागो । एवं णवुंस० ।

णवरि असंखे०भागक्ड्ीए वि णत्थि अंतरं ।

४४२ पुरिस० मिच्छत्तबारसक णवणोक असंखे ० भागहाणिअवट्टि णत्थि

अंतरं । तिण्णिवड्डिदोहाणि० ज० एगस० उक० अंतोगु । असंखेगुणहा जह

एगंस० उक वासं सादिरेयं । णवरि मिच्छत्त० छम्मासा । एवमणंताणु चउक० ।

णवरि असंखे गुणहाणिअवत्तव्ब० ज० एगस ० उक ० चउबीसमहोरत्त सादिरेगे ।

सम्मत्तसम्मामि० ओघषमभंगो ।

४४३ अवगद० मिच्छत्त सम्मत्तसम्मामिच्छत्त अदकसायदत्थिणवुंस

असंखे०भागहाणिसंखे भागहाणि० ज० एगस० उक वासपुधत्त । सत्तणोकसाय

चदुसंजलणाणमसंखे ० भागहाणिसंखे मागहाणिसंखेगुणहाणि ज० एगस० उक्त०

छम्मासा । णवरि सत्तणोकसायाणं वासपुधत्तं ।

४४४ कसायाणु कोधक मिच्छन्तबारसक णवणोक ० असंखे ०भागवड्डि

हानियोंका जयन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तयुहूर् है । जसंख्यातगुणदानिका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर वर्ष प्रथकत्व दै । इसीप्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी

अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि ओर अवक्तव्यका

अन्तर ओघके समान दै । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदानिका अन्तर

नहीं है । चार इद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय ओर उक्ष

अन्तर साधिक चौबीस दिनरात डैः । अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार नपुंसकवेदीकी अपेक्षासे जानना चादिए । किन्तु

इतनी विशेषता है कि असंख्यातभागबृद्धिका भी अन्तर नहीं हे ।

४४२ पुरुषवेदियोमे मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषार्योकी असंख्यातभाग

हानि और अवस्थितका अन्तर नहीं ह । तीन बृद्धि और दो हानियोंका जघन्य अन्तर एक

समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त ह । असंख्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर एक समय

ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक वषे है । किन्तु इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वका उक्ृत्ट्ट अन्तर

छह महीना है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककौ अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि और अजवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

साधिक चौबीस दिनरात दै । सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान हे ।

४४३ अपगतवबेदियोंमें मिथ्यात्व सम्यकत्व सम्यग्मथ्यात्व आठ कषाय स्त्रीवेद् और

नपुंसकवेदकी असंख्यातभागदहानि और संख्यात्तभागदानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर वषेष्रथक्त्व दै । सात नोकषाय और चार संज्वलनोंकी असंख्यातभागहानि संख्यात

भागहानि और संस्यातगुणदानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना ह ।

किन्तु इतनी विशेषता है कि खात नोकषायोंकी अपेक्षा उलछृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्स्व दे ।

४४४ कषायमागणाके अनुवाद्से क्रोधकषायवालोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और

Page 288:

गा० २२ द्िदिविदततीए बड्ढीए अंतरं २६९

हाणिअबदह्टि णत्थि अंतरं । दोबड्डिदोहाणि० ज० एगस० उकक० अंतोञु ।

असंखेगुणहाणि ज० एगससओ उक ० वासं सादिरेयं । णवरि मिच्छत्त ०

छम्मासा । एवमणंताणु चउक० । णवरि असंखे गुणहाणिअवत्तव्व जह ० एगस ०

उक चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । सम्मत्तसम्मामि० असंखेमागहाणि णत्थि अंतरं ।

चत्तारिवड्डितिण्णिहाणिअवत्तव्य ० ज० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

अवष्टि० ज० एगस० उक ० अंगुरु असंखेजञ भागो । एवं माणमायालोभाणं ।

णवरि लोभक० असंखे गुणहाणीए छम्मासा ।

४४५ णाणाणुवादेण मदि०सुद मिच्छन्त सोलसक०णवणोक० असंखे०

भागवड्डिहाणिअव्डि० णत्थि अंतरं । दोबड्िदोदाणि ज० एगसमओ उक्क०

अंतोग्० । सम्मत्तसम्मामि असंखे०भागहाणि० णस्थि अंतरं । तिष्णिहाणि ज०

एगस० उक ० चउवीस अहोरचे सादिरेगे । विहंगणाणी० मिच्छ सोकसक०णव

णोक० असंखे भागहाणिअवद्धि णत्थि अंतरं । सेसपदवि० जह एगस० उक

अ तोु । सम्मत्त सम्मामि असंखेभागहाणि णत्थि अ तरं । तिण्णिहाणि० ज०

एगसमओ उक० चउवीस अहोरत्ते सादिरेगे ।

४४६ आभिणि०सुद०ओहि० छब्बीसं पयडीणमसंखे०भागहाणि० णत्थि

नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागशइड्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है ।

दो बृद्धि और दो हानियोंका जघन्थ अन्तर एक समय और उत्क्रष्ट अन्तर अन्तमुंह्त है।

असंख्यातगुणद्ानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्क्रष्ट अन्तर साधिक एक वपे है। किन्तु

इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । इसी प्रकार अनन्तानु

बन्धीचलुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि और

अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागदहानिका अन्तर नहीं है। चार बृद्धि तीन

हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर खाधिक चौबीस दिन

रात है । अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें

भागप्रमाण है । इसी प्रकार मान साया और छोम कषायवालोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि छोभकषायकी असंख्यातगुणहानिका उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है ।

४४५ ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीबोंमें मिथ्यात्व सोलह

कषाय ओर नौ नोकषायोंकी असंश्यातमागन्रद्धि असंख्यातसागहानि और अवस्थितका अन्तर

नहीं हे। दो ब्रद्धि ओर दो हानियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तग अन्तुहूत

ह । सम्यक्त्व और सम्यग्भिश्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । तीन हानियोंका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । विभंगज्ञानियोंमें

मिश्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातमागहानि ओौर अवस्थितका अन्तर

नहीं है । शेष पद विभक्तियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूते है ।

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । तीन हानियोंका जवन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

४४६ आमिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी ओर अवधिज्ञानियोंमें छब्बोध्ष भ्रकृतियोंकी

Page 289:

२७० जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

अंतरं । संखे०भागहाणिसंखे गुणदाणि जद ० एगस० उक० चउबीसमहोरते

सादिरेगे। असंखेगुणहाणि० जह ० एगस० उक्त छम्मासा । णवरि अणंताणु०

चटक ० असंखेगुणहाणि ज० एगस० उक० चउवीस अहोरत्ते सादिरेभे । सम्मत्त

सम्मामि० असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । संखे मागहाणिसंखेयुणहाणि ज०

एगस० उक० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । असंखेगगुणहाणि ज० एगस० उक

छृम्म।सा । एवमोहिदंसणसम्माईटि ति ।

४४७ मणपज़रवणाणी अद्टावीसं पयडीणमसंखे ० भागद्याणि० णत्थि अंतरं ।

संखे०भागहाणि० ज० एगसमओ उक चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । संखेगुण

हाणिअसंखे ० गुणहाणि० ज० एगक्त० उक वासपुधत्तं । णवरि अणंताणु चउक०

संखेगुणहाणिअसंखे गुणदाणि ज० एगस० उक० चउवीसमदहोरत्ते सादिरेभे ।

णवरि दंसणतियस्स छम्म।सा । एवं संजदसमाइयछेदो संजदे ति । णवरि चउवीसं

पयडीणं संखे गुणहाणिअसंखेगुणहाणि उक छम्मासा ।

४४८ परिदार० अहाबीसं पयडीणमसंखे ० भागहाणि० णत्थि अंतरं । संखे०

भागहाणि० ज० एगस० उक ० चउवीस अहोरते सादिरेगे । अणंताणुचउक संखे०

गुणहाणिअसंखे गुणहाणि जह० एगस० उकं ० चडबीस अदहोरत्ते सादिरेभे ।

असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणदहानिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात दैः । असंख्यातगुणहानिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना इ । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस

दिनरात है । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है।

संख्यातभागहानि ओर संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक

चौबीस दिनरात ह । असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्क्रष्ट अन्तर छह

महीना है । इसी प्रकार अवधिद्शनवाले और सम्यग्टृष्टि जीवोंके जानना चाहिए ।

४४७ सनःपर्येयज्ञानियोंमें अद्वाईस अकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं

है। संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस

दिनरात है । संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय

और उत्कृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्त्व द । किन्तु इतनी विशेषता है कि अनन्ताजुबन्धीचतुष्ककी

संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उद्ष्ट

अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । किन्तु इतनी विशेषता है कि तीन दशेन

मोहनीयकी अपेक्षा छह महीना उत्कृष्ट अन्तर दै । इसी प्रकार संयत सामायिकसंयत ओर

छेदोपस्थापनासंयत जीबोंके जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता है कि चौबीस प्रकृतियोंकी

संख्यातगुणद्वानि और असंध्यातगुणह्वानिका उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है।

४४८ परिह्ारविशुद्धिसंयतोंमें अद्वाईस प्रकृतिर्योकी असंख्यातभागहानिका अन्तर

नहीं है। संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस

दिनरात है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी संख्यातगुणद्ञानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य

Page 290:

गा० २२ द्िदिविदहत्तीए वडढोए अंतर २७१

मिच्छत्तसम्मत्तसभ्मामि संखेगुणहाणिअसंखे गुणहाणि ज० एगस० उक०

छम्पासा ।

४४९ सुहमसांपराइय० तेवीसं पयडीणमसंखे भागहाणि दंसणतियस्स

संखे०भागहाणि० ज० एगस० उक वासपुधत्तं । लोभसंजल० असंखेभागदाणि

संखे०भागहाणिसंखे ० गुणहाणि० जहं० एगस० उक० छम्मास्रा

४५० संजदासंजद ० मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामिच्छन्तबारसक०णवणोक ०

असंखे ० भागहाणि० णत्थि अंतरं । संखे०भागहाणि० ज० एगस० उक० चडउवीस

महोरत्त सादिरेभे । मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामि० संखेगुणहाणिअसंखे ० गुणहाणि ०

जह० एगस० उक छम्मासा । अणंताणुचउक ० कसायभंगो णवरि संखे०

गुणहाणिअसंखे ० मुणहाणि ० जह ० एगस्रमओ उक चडउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

४५१ असंजद० भिच्छनतबारसक ०णवणोक ० असखे०भागवड्डिहाणि

अवट्टि० णस्थि अंतरं । दोवड्डिदोहाणि० जह एंगस० उक अंतोयुहत्तं । मिच्छत्त ०

असंखेगुणहाणि० ज० शएगस ० उक ० छम्मासा । एवमणंताणु चउक ० । णवरि

असंखे गुणहाणिअवत्तव० जह ० एगस ० उक ० चउवीसमहोरत्त सादिरेगे । सम्मत्त

सम्मामि असंखे०भागहाणि० णत्थि अंतरं । चत्तारिवष्डितिण्णिहाणिअवत्तव्व ०

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । मिथ्यात्व सम्यक्त्व ओर

सम्यग्मिथ्यात्वकी संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणदहानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर छह महीना दे ।

४४५ सुद्मसांपरायिक संयतोंमें तेईस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानि और तीन

दरोनमोहनीयकी संख्यातभागदानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर वर्षप्रथक्त्व

है । लोभसंज्वलनकी असंख्यातभागद्ानि संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है ।

४५० संयतसंयतोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व सम्यम्मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है। संख्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । मिथ्यात्व सम्यक्व और सम्य

स्मिथ्यात्वकी संस्यातगुणदानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर छह महीना है। अनन्तानुबन्धी चतुष्कका भंग कषायके समान है । किन्तु इतनी

विशेषता है कि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

४५१ असंयतोंमें मिश्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि

असंरुयातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है । दो इद्धि और दो हानियोंका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है। मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणहानिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना दै । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

अपेक्षासे जानना चाहिए । किन्तु इतनी विशेषता दे कि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । सम्यक्त्व और सम्य

ग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है । चार इद्धि तीन हानि और अवक्तव्यका

Page 291:

२७२ जयधवलासहिदे कसायपाहृडे हिदिविहत्ती ३

ज० एगस० उक० चउबीसमहोरत्ते सादिरेगे अवद्ध जह ० एगस० उक० अंग्रुल०

असंखे०भागो ।

४५२ दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं पंचिंदियभंगो । लेस्साणुवादेण किण्ह ०

णीलकाउ मिच्छत्तबारसक०णवणोक० असंखे ०भागवड्डिहाणिअवट्टि० णत्थि

अंतरं । दोबड्डिदोहाणि० ज० एगस० उक्क० अतोग्मृ०। एबमणंताणु०चउक० ।

णवरि असंखे०गुणहाणिअवत्तव्य० ज० एगस० उक्क० चडवीसमहोरते साबिरेगे।

सम्मत्तसम्मामि० असंखे०भाणहाणि० णत्थि अतरं । चत्तारिबड्डितिण्णिहाणि

अवत्तव्व ज० एगस० उक चउबीस अहोरत्त सादिरेगे। अवहि० ज० एगस०

उक० अगुलस्स असंखे०भागो ।

४५३ तेउ०पम्म मिच्छत्तबारसक ०णवणोक्र० असंखे ० भागहाणिअवट्ि ०

णत्थि अतरं । तिण्णिबड्डिदोहाणि०ण ज० एगस० उक० अततोमहुत्त ।

मिच्छत्त० असंखे ०म्रणदाणि० ज० एगस० उक० छम्मासा एवमणंताणुचउक्क० ।

णवरि असंखेगुणहाणिअवत्तव्व ज० एगस० उक० चवीसमहोरत्ते सादिरेगे।

सम्मत्तसम्मामि० असंखे ०भागहाणि० णत्थि अ तरं । चत्तारिबड्डितिण्णिहाणिअवत्तव्ब ०

ज० एगस० उक० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे अवहि० ज० एग० उक० अगुलस्स

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है। अवस्थितका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४५२ दशनमार्गंणाके अनुवादसे चक्छुदशेनवालोंका भंग पंचेन्द्रियोंके समान है।

छेश्यामार्गणाके अनुबादसे कृष्ण नीक और कापोत लेश्यावालोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और

नौ नोकषायोंकी असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर नहीं है।

दो इृद्धि और दो हानियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंहूर्त है। इसी

प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुण

हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात

है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है। चार वृद्धि तीन

हानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात

है। अवस्थितका जघन्य अन्तर एक समय और उक्ृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें

भागप्रसाण है ।

४५३ पीत और पद्मलेश्यावाले जीवोमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंख्यातभागहानि और जवस्थितका अन्त्र नहीं है। तीन इद्धि ओर दो हानियोंका जघन्य

अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुहूर्त है । मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणहानिका जघन्य

अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुप्कको

अपेक्षा जानना चाहिए। किन्तु असंख्यातगुणहा।नि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और

उर््श्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातभाग

हानिका अन्तर नहीं है । चार वृद्धि तीन हानि और अवक्तन्यका जघन्य अन्तर एक समय

ओर उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है । अवस्थितका जघन्य अन्तर एक सयय और

Page 292:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीण बड़ढोए अंतर २७यद्

असंखे भागो ।

४५७ सुक०ले० मिच्छत्त बारसक०णवणोक० असंखे भागहाणि णत्थि

अतरं । संखे भागहाणिसंखे गुणदाणि ज० गस ० उक० अ तोभु । असंखे०

गुणहाणि० जह ० एगस० उक० छम्मासा । एबमणंताणु०चउक॒० । णवरि असंखे०

गुणहाणि ०अवत्तव्व जह ० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ते सादिरेभे । सम्मत्त

सम्मामि० असंखेमागहाणि णत्थि अतरं । चत्तारिबड्डितिण्पिहाणिअवत्तव्ब०

ज० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । अवड्टिद ० ओषभंगो ।

४५५ भवियाणुवादेण अभवसिद्धिय मिन्छन्तसोरुसक०णवणोक असंखे ०

भागवड्डिहाणि०अव्ठि णत्थि अ तरं । दोवड्डिदोहाणि० ज एगस० उ० अतोग्ु ।

४५६ सम्मत्ताणुवदेण वेदग० मिच्छत्तसम्मत्त सम्मामि ०सोलसक ०

णवणोकृ० असंखेमागहाणि० णत्थि अतरं । संखेभागहाणिसंखेगुणदाणि

ज० एगस० उक ० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे । भिच्छत्त सम्मत्तसम्मामि असंखे०

गुणहाणि ज० एगस० ठक ० छम्मासा । अणंताणु चउक असंखेगुणहाणि ज०

एगस० उक ० चउवीसमहोरत्त सादिरेगे ।

४५७ खहय एकबीसपयडीणमसंखे मागहाणि णत्थि अंतरं । संखे०

भागहाणिसंखे ०गुणहाणिअसंखे गुणहाणि ज० एगस० उक्क० छम्मासा । उवसम०

जत्क्ृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

४५४ शुक्ल लेश्यावालोंमें मिध्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी असंख्यातभाग

हानिका अन्तर नहीं है । संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय

ओर उत्कृष्ट अन्तर अन्तसुहूतं हैः । असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय ओर उत्कृष्ट

अन्तर छह महीना है । इसप्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । किन्तु इतनी

विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि भौर अवक्तन्यकरा जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर साधिक चौबीस दिनरात दै । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यास्वकी असंख्यातभागदहानिका

अन्तर नहीं है । चार वद्धि तीन दानि और अवक्तव्यका जघन्य अन्तर एक समय और

उत्क्रष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिन रात है । तथा अवस्थितका अन्तर ओघके समान है ।

४५५५ भव्यमार्गणाके अनुवादसे अभव्यो मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी

असंख्यातभागबृद्धि असंख्यातभागहानि और अवस्थितका अन्तर् नहीं दै । दो इद्धि और दो

हानियोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अन्तमुंह्े है ।

४५६ सम्यक्त्वमागेणाके अनुवादसे वेदकसम्यग्टृष्टियोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व

खम्यग्मिथ्यास्व सोछह कषाय और नौ नोककषायोंकी असंख्यातभागहानिका अन्तर नहीं है ।

संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर

साधिक चौबीस दिनरात हे । मिथ्यात्व सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यांत्वकी असंख्यातगुणहानिका

जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर छह महीना है। अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी

असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात है ।

४५७ क्षायिकसम्यस्दृष्टियोंमें इक्कीस प्रकृतियोंकी असंख्यातभागहानिका अन्तर

नहीं है । संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणद्ानिका जघन्य अन्तर एक

३५

Page 293:

२७४ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ह्विदिविहत्ती ३

अड्डावीस॑ पयडीणमसंखे ० भागहाणिसंखे ० भागहाणि० अण॑ताणु०चउक्क० संखे०गुण

हाणिअसंखे ०गुणहाणि० ज० एगस० उक्क० चउबीसमहोरत्ते सादिरेगे सासण०

अहावीसं पयडीणमसंखेजभागहाणि० ज० एगस० उक्त पलिदो० असंखे०भागो ।

सम्मामि० असंखे०भागहाणिसंखे ० भागहाणिसंखे ०मुणहाणि० ज० एगस० उक्त

पलिदो० असं०भागो । मिच्छाइड्टी ० मिच्छत्तसोलसक ०णवणोक० तिण्णिवड्डितिण्णि

हाणिअक्ट्विदाणमोघं । सम्मत्तसम्मामि० चदुण्हं हाणीणमोधं ।

४५८ सण्णियाणु० सण्णि० चक्खुदंसणिभंगो असण्णि० मिच्छत्तसोलसक ०

णवणोक० असंखे०भागवड्डिहाणिअव्टि० णत्थि अ तरं । संखे०भागवड्डिहाणि

संखे०गुणबड्डिहाणि० ओघं । सम्मत्तसम्मामि० चदुण्हं हाणीणमोघं॑ ।

एवमंतराणुगमो समत्तो

४५९ भावोसव्वत्थ ओदइओ भावो । एवं जाव० ।

अप्पावहु्ं

४६० सुगममेदं अहियारसंभालणफलत्तादो ।

भिच्ुत्तस्स सच्वत्थोवा अस खेलन गुणएहाणिकम्मसिया ।

समय और उत्क्ष्ट अन्तर छह महीना है । उपशमसम्यण्षियोमे अद्टाईस प्रकतियोंकी असंस्यात

भागहानि और संस्यातभागहानिका तथा अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी संख्यातगुणदहानि और

असंख्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात

दै । सासादनखम्यण्टष्ियोमें अडाईख प्रकृतियोंकी असंस्यातभागहानिका जघन्य अन्तर एक

समय और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । सम्यग्मिथ्यारृषटियोमें असंस्यात

भागहानि संस्यातभागहानि और संस्यातगुणहानिका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट

अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । मिथ्यारृष्टियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ

नोकषायोंकी तीन इद्धि तीन हानि जौर अवस्थित का अन्तर ओघके समान ह । सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानिर्योका अन्तर ओघके समान है ।

४५८ संज्ञी सागेणाके अनुवादसे संज्ञियोमें चश्चुदशंनवालोके समान भंग है । असंज्ञियोमि

मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ नोकपार्योको असंख्यातभागच्द्ध असंख्यातमागदहानि और

अवस्थितका अन्तर नहीं है । संख्यातभागत्र द्वि संख्यातभागहानि संर्यातगुणबृद्धि और

संस्यातगुणहानिका अन्तर ओघके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी चार हानियोंका

अन्तर ओघके समान है ।

इसप्रकार अन्तरालुगम समाप्त हुआ ।

४५९ भाव सर्वत्र ओदयिक द । इस प्रकार अनाहारक सार्गणा तक जानना चाहिए ॥

इस प्रकार मावानुगम समाप्त हुआ।

अब अरपबहुत्वानुगमका अधिकार ह ।

४६० यह सूत्र सुगम है क्योकि इसका फल केवर अधिकारकी सम्हाल करना है ।

क मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं ।

Page 294:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए बड़्ढीए अप्पाबहुअं २७५

४६१ इदो द॑ंस्णमोहक्खवगाणं संखेजत्तादो । णेमो हेयू असिद्धो मणुस

पजत्तरासिं मोत्तण अणत्थ तक्खवणामावादो । ण च मणुसपज्त्तरासी सव्यो पि

दंसणमोदणीयं खवेदि अटूठुत्तरछस्सदमेत्तजीवाणं चेव तक्खवणवरंभादो । ण च ते

सव्वं एगसमयमसंखेगगुणहाणि करंति अटूटुत्तरसयजीवाणं चेव एगसमए असंखे०

गुणहाणि इणंताणमुवरंभादो । अणियद्धिकरणद्धाए संखे सहस्समेत्ताणि असंखेनगुण

हाणिट्विदिकंडयाणि । तेसु कंडएसु एगसमयम्मिः वडूमाणणाणाजीवे घेचण असंखे०

गुणहाणिद्धिदिविहत्तिया जीवा सन्धत्थोवा त्ति भणिदा ।

संखञ्नणदाणिकम्मंसिया असंखेज्ज गुणा ।

६ ४६२ इदो १ सण्णिपजत्तापजत्ताणं जगपदरस्स असंखे०भागमेत्ताण

मसंखे ० भागत्तादो । तेसिं को पडिभागो १ अंतोुहृतं । छस्समयाहियअसंखे ० भागहाणि

अबद्टिदाणमद्धाओ ति वुत्तं होदि ।

संखेज्न भागहाणिकम्मंसिथा सखेस्नगुणा ।

४६३ इदो १ तिव्वविसोहिए परिणदजोवेहिंतो मज्झिमविसोहीए परिणद्

जीवाणं संखेजगुणत्तादो । का विसोही णाम १ ट्विदिखंडयघादहेदुजीवपरिणामा

विसोही णाम तासि कि पमाणं १ असंखेररोगमेत्ताओ जहण्णविसोहिप्पहुडि

४६१ क्योकि दर्शनमोइनायकी क्षपणा करनेवाङे जीव संख्यात है । यद हेतु जसिद्ध

नहीं है क्योकि मनुष्य पर्याप्राशिको छोड़कर अन्यच मिथ्यात्वका क्षय नहीं होता डे ।

उसमें भी सभी मजुष्यपर्याप्तराशि दर्शनमोहनीयका क्षय नहीं करती है क्योंकि छह सौ आठ

जीव ही उसका क्षय करते हुए पाये जाते है । उसमें भी वे सब जीव एक समयमें असंख्यातगुण

हानि नहीं करते हैं क्योंकि एक समयमें अधिकसे अधिक एक सौ आठ जीव ही असंख्यात

गुणहानि करते हुए पाये जाते है । अनिश्वत्तिकरणके कारम संख्यात हजार असंख्यातगुणहानि

स्थितिकाण्डक होते हैं । उन काण्डकोंमें एक समयमें विद्यमान नाना जीवोंकी अपेक्षा असंख्यात

गुणहानि स्थितिविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं यह उक्त सूत्रका अभिध्राय है ।

ॐ संख्यातमुणहानिकर्मवाले जीव असंर्यातगुणे हैं ।

४६२ क्योंकि ये जीव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण संज्ञी पर्याप्त ओर अपयीप्तकों

के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । यह् प्रमाण छानेके लिए प्रतिभाग क्या है अन्तर्यहूर्तकाल

प्रतिभाग है । असंख्यातभागहानि और अवस्थितके कालमें छह समय मिला देने पर यह् काल

होता है यह इसका तात्पये है ।

संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

४६३ क्योंकि तीन्न॒ विशुद्धिसे परिणत हुए जीवोंकी अपेक्षा मध्यम विशुद्धिसे परिणत

हुए जीव संख्यातगुणे होते दै ।

शंकाविशुद्धि किसे कहते हैं

समाधानस्थितिकाण्डकके घातके कारणभूत जीवोंके परिणामोंको विद्धि कहते हैं ।

शैकाइन विशुद्धियोंका प्रमाण कितना है

वि १ ताप्रतौ तेसिसुदएसु एगसमयम्मि इति पाठः १ २ आऽप्रतौ छ्मासाहियञ्रसंखे० इति पाठः ।

Page 295:

२७६ जयघवलासाहिदे कसायपाहुडे ट्विद्विदत्तो ३

समयाविरोहेण छवड्डमरवगयाओ कजभेदेण चउब्मेद्ससुवगयाओ । काणि ताणि

चत्तारि कज़ाईं अधड्िदिगरुणा असंखे०भागहाणीए ट्विदिखंडयघादो संखे०भाग

हाणीए हिदिखंडयषादो संखेजगुणहाणीए ट्विदिखंडयधादो चेदि । तत्थ एगभवम्मि

संखे गुणहाणिहेदुपरिणामेसु परिणमणवारा एगजीवस्स थोवा । संखे भागहाणिहेदु

विसोहिट्ठाणेसु परिणमणवारा संखेगुणा संखेजगुणहाणिहेदुविसोटिड्णेरहितो संखे ०

भागहाणिहेदुविसोहिद्दाणाणं संखेगुणत्तादो थोबजत्तेण पाविज्ञमाणत्तादो वा । असंखे०

भागहाणीए ट्विदिखंडयघादणवारा संखे गुणा । कारणं पूव्यं व ॒वत्तव्वं । अधहिदि

गाख्णवारा असंखे ० गुणा सगद्िदिसंतादो हेट्टिमद्विदिबंधहेदुपरिणामाणमसंखे गुणत्तादो ।

तेण संखेजगुणहाणिविहत्तिएहिंतो संखेज्ञजभागहाणिविद्दत्तिया संखेग्गुणा त्ति सिद्धं ।

संखे गुणहाणि सण्णिपंचिदिया चेव कणति । संखेजमागहाणि पुण सण्णिपंचिदिया

असण्णिपंचिदिया चउरिंदियतीइंदियबीईंदिया च क्णंति । तेण संखेजगुणहाणि

विहत्तिएर्हितो संखेज्जभागहाणिविहत्तिएहिं असंखेजगुणेहि दोदव्वमिदि ण पंचिदिषए

हिंतो तसरासीए असंखेजगुणत्तामावादो । सण्णिपंचिदियाणं संखेजगुणहाणिविहत्ति

समाधानइनका प्रमाण असंख्यात छोक दै । जो जघन्य विशुद्धिसे लेकर यथाझास्र

छह बृद्धियोंको प्राप्त होती हुई कार्यभेदसे चार प्रकारकी है ।

शंंकाये चार काय कौनसे हैं

समाधानअधःस्थितिगछना असंख्यातभागहानिके द्वारा स्थितिकाण्डकघात संख्यात

भागहानिके द्वारा स्थितिकाण्डकघात और संख्यातगुणहानिके द्वारा स्थितिकाण्डकघात ये

चार कायं है ।

इनमें एक भवमें एक जी वके संरू्यातगुणहानिके कारणभूत परिणामोमे परिणमन करनेके

बार सबसे थोड़े है । इनसे संख्यातभागहानिके कारणभूत विशुद्धिस्थानोंमें परिणमन करनेके

बार संख्यातगुणे हैं क्योंकि संख्यातगुणहानिके कारणभूत विशुडिस्थानोंसे संख्यातभागहानिके

कारणभूत विशुद्धिस्थान संख्यातगुणे होते हैं। अथवा संख्यातभागहानिके कारणभूत विद्ुद्धिस्थान

अल्प यत्नसे प्राप्त होते हैं इसलिये संख्यातगुणहानिके कारणभूत बिशुद्धिस्थानोंसे ये संख्यातगुणे

होते हैं । इनसे असंख्यातभागदानिके द्वारा होनेवाले स्थितिकाण्डकघातके बार संख्यातगुणे हैं ।

यहाँ भी कारण पहलेके समान कहना चाहिये । इनसे अधःस्थितिगछनाके बार असंख्यातगुणे हैं

क्योंकि अपने स्थितिसत्त्वसे अधस्तन स्थितिबन्धके कारणभूत परिणाम असंख्यातगुणे होते हैं ।

इसलिये संख्यावगुणहानिविभक्तिवाले जीवोंसे संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे

होते हैं यह सिद्ध हुआ। षि

शंंकासंख्यातगुणहानिको संज्ञी पद्नेन्द्रिय ही करते हैं । परन्तु संख्यातमागहानिको

संज्ञी पंचेन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय चौइन्द्री तीन्द्रिय और दोइन्द्रिय जीब करते हैं अतः

सृंख्यावयुगद्ानिविभक्तिचाले जीबोंसे संख्यातभागहानिविभक्तिवाङे जीव असंख्यातगुणे

होने ॥

द समाधान नदी क्योकि पंचेन्द्रिय जीवोंसे त्रसजीवराशि जसंख्यातगुणी नदीं हे।

संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें संख्यातगुणहानिस्थितिविभक्तिबाले जीवोसे वहीं पर संख्यातभाग

१ ताण््रतौ छवद्धिुवगयादो ओ इति पाठः

Page 296:

बा० २२ ट्विदिबिदत्तीए बड़ढीए अप्पाबहुओं २०७

एहिंतो तस्थेव संखेजभाणदाणिविहत्तिया संखे०गुणा । असण्णिपंचिंदिएसु संखे०भाग

हाणिविहृत्तिया संखे०गुणा । सण्णिपंचिंदिएहिंतों असंखे०गुणेस असण्णिपंचिंदिणसु

सत्थाणे संखे०गुणहाणिविवजिएसु संखे ० भागहाणिविहत्तिए द्वि असंखे गुणेहि होदव्वं ।

ण च सण्णीहिंतो असण्णीणमसंखेज गुणत्तमसिदधं । सव्वत्थोवा सण्णिणबुंसयवेदगब्भो

वक्व तिया । सण्णिपुरिसबेदगन्भोवक्यं तिया संखेज्जगुणा सण्णिहत्थिवेद्गम्भोयक्कं

तिया संखेगुणा । सण्णिणवुंसयवेदसम्युच्छिमपजत्ता संखे यगुणा । सष्णिणवुंसयवेद

सम्मुच्छिमअपजत्ता असंखेगुणा । सण्णिहस्थिपुरिसवेदगट्मोवक्कंतिया असंखे०

वस्साउआ दो वि तुला असंखेगुणा। असण्णिणवुंसयवेदगव्भोवक्कंतिया संखे ०शुणा ।

असण्णिपुरिसवेदगव्भोवक्कंतिया संखे०गुणा । असण्णिहत्थिवेदगन्मोवक्कंतिया संखे०

गुणा । अस्रण्णिणवुंसयवेदसम्बुच्छिमपजत्ता संखेगुणा । असण्णिणवुंसयवेद

सम्मुच्छिमअपजत्ता असंखेजगुणा त्ति एदम्हादो खुदार्॑धसुत्तादो असंखे०गुणत्त

सिद्धोए १ण एस दोसो जदि वि सण्णिपंचिंदिएहिंतो असण्णिपंचिदिया असंखेगुणा

होंति तो वि संखेजमागहाणि विहत्तिया संखेज्जगुणा चेव तिव्वविसोहीए जीवाणं

तत्थ बहुआणमभावादो बहुआ णत्थि त्ति इदो णव्वदे १ संखे०गुणहाणि

हानिस्थितिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें खंख्यातभागहानिस्थिति

विभक्तिवाले जीव संथ्यातगुणे हैं ।

शुंकाचूँकि संज्ञी पंचेन्द्रियोंसे असंख्यातगुणे असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव स्वस्थानमें

संख्यातगुणहानिसे रहित हैं अतः उनमें सख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिवाले जीव स ख्यात

भागहानिस्थितिविभक्तिवाले संज्ञी जीवसे असख्यातगुणे होने चाहिये यदि कहा जाय

कि सज्ञियोंसे असंज्ञी अस स्यातगुणे हैं यह बात असिद्ध है सो भी बात नहीं है क्योंकि

गर्मसे उत्पन्न हुए नपुसकवेदी सज्ञी जीव सबसे थोड़े हैं। गर्भेसे उत्पन्न हुए पुरुषबे्दी सज्ञी

जीव सयातगुणे हैं । गर्भसे उत्पन्न हुए खीवेदी सज्ञो जीव सख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदी

सज्ञी सम्मूछेन पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदी समूच्छेन अपर्याप्त सज्ञी जीव

अस ख्यातगुणे हैं। गर्भसे उत्पन्न हुए ख्रीवेदी ओर पुरुषवेदी असख्यातवर्षकी आयुवाले

दोनों ही समान होते हुए असख्यातगुणे हैं। गर्भसे उत्पन्न हुए नपुःसकवेदी असज्ञी

जीव सख्यातगागे है । गर्भसे उत्पन्न हुए पुरुपवेदी असज्ञी जीव सख्यातगुणे हैं । गर्भसे

उत्पन्न हुए ख्रीवेदी असज्ञी जीव स ल्यातगुणे हैं। असज्ञी नपुसकवेदवाले संम्मूछेन पर्याप्त

जीब संख्यातमुणे हैं। असज्ञी नपुंसकवेद्वाले समूच्छेन अपयाप्त जीव जस ख्यातगुणे हैं।

इस प्रकार खुदाबन्धके इस सूत्रसे स ज्ञियोंसे असज्ञी जीब असख्यातगुणे हैं यह बात सिद्ध

हो जाती है

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि यद्यपि सज्ञी पंचेन्द्रियोंसे असज्ञी पंचेन्द्रिय

जीव अस ख्यातगुणे होते हैं तो भी सख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीव सख्यातगुणे ही होते

होते हैं। क्योंकि वहाँ पर बहुत जीवोंके तोत्र विशुद्धि नहीं पाई जाती है ।

शंकावे बहुत नहीं हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता दै ९

समाधानस ख्यातगुणद्वानिविभक्तिवालों से स ख्यातभागदानिविभक्तिवाछे जीव

Page 297:

२७८ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

विहत्तिएदिंतो संखे०भागहाणि विहत्तिया संखेजगुणा त्ति चुण्णस॒त्तादो णव्वदे ।

चउरिदिए्सु संखे मागहाणिवि० विसेसाहिया । तीइंदिएस संखेमागहाणिवि ० विसे० ।

बीइंदिएसु संखे०भागहाणि० वि ० विसेसाहियकमेण रासीणमवहाणादो । तदो संखे०

गुणहाणिविहत्तिएहिंतो संखेभागहाणि विहत्तियाणं सिद्ध संखेजगुणततं ।

संखेल्न गुणवङड्धिकम्मंसिया असखेञ्नगु णा ।

४६४ एदस्स सुत्तस्स अत्थो घुचदे । तं जहासंखेजगुणबड्ी सण्णिपंचिंदिण्सु

चेव होदि ण अण्णत्थ संखेजगुणवड्िकारणपरिणामाणमण्णस्यामावादो । तं पि

कदो सामावियादो । ते च तत्थतण संखे०गुणवड्डिविहत्तिया जौवा संखे ०गुणहाणि

विहत्तिएहि सरिसा । तं कदो णव्बदे १ विदियादिपुढवीसु सोहसम्मादिकप्पेसु च संखेज

गुणवड्डिसंखे०गुणहाणिकम्मंसिया दो वि सरिसा त्ति उचारणवयणादौ णब्वदे । एवं

संते संखे०गुणहाणिविहत्तिण पेक्खिदूण संखेगगुणसंखे भागहाणिनिदत्तिए दितो

संखेजगुणवह्धिविहत्तियाणमसंसेगुणत्तं ण॒ घडदि तति ण ॒पचबड्ेयं एइंदिएहिंतो

स ख्यातगुणे हैं इस चूर्गिसूत्रसे जाना जाता दै ।

चलुरिन्द्रयोमे ख ख्यातमागदानिविभक्तिवाढे जीव विशेष अधिक दै । तेइन्द्रियोंमें

सख्यावभागहानिविभक्तिवाले जीव विशेष अधिक है । दोडन्द्रियोमें ख यातमागदानिविभक्ति

वाछे जीव विशेष अधिक हैं क्योकि ये राशियाँ उत्तरोत्तर विशेष अधिक क्रमसे अवस्थित है ।

अतः सख्यातगुगहानिस्थितिविभक्तिवालोंसे सख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिवाले जीव

स ख्यातगणे हैं यह बात सिद्ध हुई ।

संख्यातगुणबद्धिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

४६७ अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। जो इस प्रकार हैस र्यातगुणबद्धि सज्ञी

पंचेन्द्रियोंमें हो होती है अन्यत्र नहीं होती क्योंकि अन्यत्र सख्यातगुणवृद्धिके कारणभूत परिणाम

नहीं पाये जाते ।

शंकाऐखा क्यों होता है

समाधानस्वभाव से होता है ।

और वे सर्यातगुणबद्धिस्थितिविभक्तिबाले जीव वहींके सख्यातगुणहानिस्थिति

विभक्तिवाले जीवोंके समान होते हैं ।

कंकायद किस प्रमाणसे जाना जावा हे

समाधान दूखरौ आदि प्रथिवि्योमे और सौधमादि कल्पो सख्यातगुणबद्धि

और स ख्यातगुणद्वानि कर्मवाले दोनों प्रकारके जीव समान हैं इस प्रकारके उच्चारणावचनसे

जाना जाता है ।

शंकाऐसा रहते हुए संख्यातगुणहानिविभक्तिवाले जीवोंको देखते हुए संख्यात

गुणानि और संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीवोंसे संख्यातगुणबद्धिविभक्तिवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं यह बात नहीं बनती है

समाधानऐसा निश्चय नहीं करना चाहिए क्योकि जो एकेन्द्रियोंमेंसे विकलेन्द्रिय

Page 298:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीए वड्ढीए अप्पाबहुओं २७९

विगलिंदियसण्णिअसण्णिपंचिंदियपजत्तापज त्तेसुप्पजमाणाणं विगलिंदिए हिंतो

सण्णिअसण्णिपंचिंदियपजत्तापजत्तएसुप्पजमाणाणं च संखेजगुणवड्डिं कुणंताणं संखेज

भागहाणिविहत्तिए हिंतो असंखे०मुणाणमुवलुंभादो। तेसिसुप्पज़माणाणं संखेजमाग

हाणिविहत्तिएहिंतो असंखेज गुणत्तं कुदो णव्वदे एदम्हादो चेच जइबसहाहरियमसुह

कमरुविणिग्गयचुष्णिसुत्तादो । सुत्तमण्णहा किण्ण होदि ण रागदोसमोहाभावेण

पमाणत्तसुवगयजश्वसहवयणस्स असचत्तविरोहादो । जुत्तीदो वा णव्बदे । तं जहा

बीइंदियादितसरासिमेक्ट करिय तिण्ं बह्ीणं तिष्ट हाणीणमवहाणस्स य अद्धा

समासेण मागे हदे संखे मागहाणिबिदत्तियः हति एगसमयसंचयत्तादो । संखे ०गुण

हाणिविदत्तिया वि एगसमयसंचिदा चेव होदृण संखे०भागहाणिविहृत्तिएहिंतो संखेज

गुणदीणा जादा सण्णिपंचिंदिश्सु चेव संखेगगुणहाणीए संमवादो । तत्थ बि संखेमाग

हाणिं संखेज्ञवारं कादृण पणो एगवारं सव्वक्षण्णिपंचिदियजीबाणं संखेगुणहाणि

कुणमाणाणञ्चवंभादो च । संखेजञमागहाणिविहत्तिया पुण तत्तो संखेगगुणा होति

सव्वतसरासीसु संभवादो संखेजञभागहाणिषाओम्गपरिणामेसु बहुवारं परिणदभावुव

लंभादो च । संपहि तसरासिमावलियाए असंखे०भागेण सगुवकमणकाकेण खंडिदे

और सज्ञो व असज्ञी पंचेन्द्रिय पयाप्त और अपर्याप्त जीवो मे उत्पन्न होते हैं और जो विकले

निद्रयॉमेंसे संज्ञी भौर असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्यौप्त और अपर्याप्रकोंमें उत्पन्न होते हैं जो कि

संख्यातगुणश्द्धिको करते हैं वे संख्यातभागहानिविभक्तिवाल्योंसे असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

शंकाये उत्पन्न होनेवाले जीव संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीबोंसे असंख्यात

शाणे होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ९ कभ

समाधानयतिजषभ आचार्ये सुखकमछसे निकले हुए इसी चूर्णिसूजसे जाना

जाता है ।

शंकासूत्र अन्यथा क्यो नहों होता है १

समाधान नही क्योंकि रागः देष और मोदसे रहित दोनेके कारण यतिद्ृषभ

आचाय प्रमाणभूत हैं अतः उनके वचनको अस्य माननेमें विरोध आता है ।

अथवा संख्यातमागदानिविभक्तिवालोसे संख्यातगुणबृद्धिविभक्तिवाले जीव असंख्यात

राणे हैं यह वात युक्तिसे जानी जाती है। जो इस प्रकार ददेीन्द्रियादिक त्रसराशिको

एकत्र करके उसमें तीन वृद्धि तीन हानि और अवस्थानके कालोंके जोड़का भाग देने पर

संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीव होते हैं क्योंकि इनका संचय एक समयमें होता है।

संख्यातगुणदानिविभक्तिवाले जीव भी एक समयद्वारा ही संचित होते हैं फिर भी वे संख्यात

भागहानिविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणे हीन होते हैं क्योंकि संख्यातगुणहानि संज्ञो पंचेन्द्रियोंमें

ही संभव है । और वहांपर भी सब संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव संख्यातभागहानिको संख्यात बार

करके पुनः एक बार॒संख्यातगुणदानिको करते हैं। संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीव तो

इससे संस्यातगुणे होते हैं क्योंकि सब त्रस राशियोंमें संख्यातभागद्दानि संभव है और

संख्यातभागद्दानिके योग्य परिणाम बहुतबार होते हुए पाये जाते हैं। अब त्रसराशिको

जावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अपने उपक्रमणकालके द्वारा खण्डित करनेपर संख्यातगुणइद्धि

Page 299:

२८० जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

संखे०गुणवड्डिविहत्तिया असंखेगगुणा होंति । को गुणगारो संखेजभागहाणिविहत्ति

याणमंतोहुत्त मागहारे संखेजगणवड्डिविहत्तियाणं भागहारेण आवलियाए असंखे०

भागेण भागे हिंदे जं लद्धं सो गुणगारो । तसद्विदें समाणिय एइंदिएसु उप्पज्ञमाणतस

काइया तसरासिस्स असंखे०भागमेत्ता । तेसिं भागहारो पलिदो० असंखे०मभागो । तं

जहाअंतोुहुत्तकाठन्भ॑तरे जदि आवलियाए असंखे०भागमेत्तो उवकमणकालो

लब्भदि तो तसट्विदीए कि लभामो त्ति पमाणेण फलगरुणिदिच्छाए ओबद्डिदाए

पलिदोवमस्स असंखे भागमेत्तौ उवकमणकालो लब्भदि । पुणो एत्तियमेत्तउवकमण

कालम्हि जदि तसरासिस्स संचओ लब्भदि तो एगसमयम्मि कि लभामो त्ति तसो

वकमणकालेण तसरासिम्दि ओवह्टिदे एइंदिएड्ितो तसकाइएसु उष्पज्ञमाणरासी होदि

आयस्स वयाणुसारित्तादो । दद् णायमसिद्धो तसरासीए णिम्मूलक्खयाभावेण तस्स

सिद्धीदो । एदे संखेजगुणवड्डिविहत्तिया संखे०शुणहाणिविहत्तिएहिंतो असंसेजगुण

हीणा तब्भागहारं पेक्खिय असंखेजगुण भागहास्तादो । तेण संखे०भागहाणि

विहत्तिएदिंतो संखेजगुण बड्धिविहत्ति याण मसंखेगुणत्तं ण॒ षडदि त्ति १ ण एवं

संते बिगरिदियरासीणं पंचिंदियअपजत्तरासोए पंचिंदियसंखेजबस्साउअपजत्तरासीए

विभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं ।

शंकाशुणकार क्या है

समाधानसंख्यातभागहानिविभक्तिवालोंके अन्तसुहूरतेश्रमाण भागहारमें संख्यात

गुणबुद्धिविभक्तिवालोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहारका भाग देनेपर जो लब्ध

आवे वह गुणकार है।

त्रसोकी स्थितिको समाप्त करके णकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले त्रसकायिक जीब

बत्रसराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और उनका भागहार पल्यके असंख्यातवें

भाग प्रमाण है। जो इस प्रकार हैअन्तसुहूर्त कालके भीतरयदि आवलिके असंख्यातवें भाग

प्रमाण उपक्रमण काल प्रात होता है तो सब त्रसस्थितिकालमें कितना उपक्रमणकाल प्राप्त

होगा । इस प्रकार फलगुणित इच्छाराशिको प्रमाण राशिसे भाजत करने पर पल्य का

असंख्यातवां भाग उपक्रमणकाद प्राप्त होता है। पुनः इतने उपक्रमण कारम यदि त्रस

राशिका संचय प्राप्त होता है तो एक समय में कितना प्राप्त होगा इस प्रकार ्रसरारिके उप

क्रमण कालसे त्रसराशिके भाजित करने पर एकेन्द्रियोमेसे चसकायिकोमें उत्पन्न होनेबाली राशि

प्राप्त होती है क्योंकि आय व्ययके अनुसार होती है। यह हेतु असिद्ध नहीं है क्योंकि

च्रसराशिका समूल नाश नहीं होता । अतः उसकी सिद्धि हो जाती है ।

शंकाये संख्यातगुणब्द्धिवाे जीव संख्यातगुणहानिविभक्तवाले जीवोंसे असंख्यात

गुणे दीन होते हैं क्योकि संख्यातगुणइद्धिवालोंके भागहारको देखते हुए संख्यातगुणहानि

विभक्तिवालोंका भागहार असंख्यातगुणा बड़ा द । अतः संख्यातभागहानिविभक्तिवारोंसे

संख्यातगुणदद्धिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं यह बात नहीं बनती है

समाधाननहीं क्योंकि ऐसा माननने पर विकलेेन्द्रिय जीवराशि पंचेन्द्रिय अपर्याप्त

जीवराशि आर पंचेन्द्रिय संख्यात वर्ष आयुवाली पर्याप्त जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरमें पल्यके

Page 300:

गा० २२ द्विद्विहत्तोण बड़ढडोए अप्पाबहुज २८१

व॒ जगपद्रं पलिदो०असंखे०भागमेत्तपदरंगुलेहि खं डिदणएगखंडपमाणत्तप्पसंगादो ।

तम्हा तप्पाओग्गसंखेजावलियमेत्तकालब्भंतरुवकमण कालसं चिदेण तसरासिणा होदव्वं

अण्णहा तेसिं पदरगुलस्स असंखे०भागेण संखे०भागेण संखेजपदरंगुरेहि य ॒खंडिद

जगपदरपमाणसविरोहादो । तसवियकिदियपंचिदियद्िदीओ समा्णेतजीवाणं पउर

मसंभवादों च आयाणुसारी वओ त्ति कटं तसकाईणदितो एटदिएसु आगच्छता जग्

पदरमावलियाए असंखे०भागमेत्तपदरंगुलेहि खंडिदेयखंडमेत्ता देति । पणो

एडंदिएहिंतो तत्तियमेता चेव ॒तसेसुप्पजंति तेण संखेजमागदहाणिविहत्ति एहिंतो

संखेगुणवड़विहक्तियाणमसंखेज्गुणत्तं वडदि त्ति येत्तव्वं ।

संखेञ्न मागवड्धिकम्मंसिया संखेज्नगुणा

४६५ सत्थाणे संखे भागदाणिविहत्तिए हितो संखे ०भागवड्डधिविहत्तिया सरिसा ।

कुदो १ संखेज़भागहाणिणिमित्तविसोहीहिंतो संखे०भागवड्डिणिमित्त संकिलेसाणं

सरिसत्तादो। एवं संते संखेज्जभागहाणिविहत्तिएहिंतो असंखे०गुणसंखे०गुणबड्डि

विहत्तीण पेक्खिदूण कथं संखेजभागवड्डिविददत्तियाणं संखेगुणत्तं यडदे १ ण एस दोसो

संकिलेसेण विणा जादिविसेसेण वड्डिदसंखेज्जभागवड्डिविहत्तीए पेक्खिदूण संखेज

असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतरांगुलोंका भाग देनेपर जो भाग जावे उतना प्राप्त होता है । इसलिए

तस्प्रायोग्य संख्यात आवलिकारनिष्पन्न उपक्रमण कालके द्वारा संचित त्रसराशि होनी चाहिए।

अन्यथा उनका प्रमाण जगघ्रतरमें प्रतरांगुछके असंख्यातवें भाग प्रतरांगुलके संख्यातवें भाग और

संख्यात प्रतरांगुलका भाग देने पर जितना प्राप्त हो उतना होनेमें विरोध आता है। और चरस

विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंकी स्थितिको समाप्त करनेवाले प्रचुर जीवोका पाया जाना संभव नहीं

है । अतः आयके अनुसार व्यय होता है ऐसा समझ कर त्रसकायिकोंमेंसे एकेन्द्रियोंमें आनेवांले

जीवोका प्रमाण जगप्रतरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतरांगुललोंका भाग देने पर जो एक

भाग श्राप्त होगा उतना होता है। पुनः णकेन्द्रियोंमेंसे उतने ही जीव ज्रसोंमें उत्पन्न होते

हैं अतः संख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिवाछोंसे संख्यातगुणबृद्धिस्थितिविभक्तिवाले जीव

संख्यातगुणे बन जाते हैं ऐसा दण करना चाहिए ।

क संख्यातभागब॒द्धिकरंवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

५६५ स्वस्थानमें संख्यातभागहानिरविभक्तिवालोंके संख्यातभागव्रद्धिविभक्तिवाले जीव

समान है क्योकि संख्यातभागदहानिकी निमित्तभूत विञ्चद्धिसे संस्यातभागडद्धके निमित्तभूत

संक्छेश परिणाम समान हैं ।

शंकाऐसा रहते हुए संख्यातभागहानिविभक्तिवालोंसे असंख्यातगुणच्द्धि और

संख्यातरुणच्द्धिविभक्तिवरे जीवॉको देखते हुए संख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीवोंसे

संख्यातभागबृद्धिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे कैसे बन सकते हैं ।

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि संक्लेशके बिना जातिविश्येषसे इद्धिको प्राप्त

हुए संख्यातभागव्द्धिविभक्तिवाले जीवको देखते हुए उनके संख्यातगुणे होने में कोई विरोध

१ ता प्रतौ विहतियाण संखेन्नगुणत आ० प्रतौ विहत्तिएण संखेनगुणत्तं इति पाठः

३8

Page 301:

२८२ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

गुण पडि विरोहाभावादो। एवं पि संखेजभागवड्डिविहत्तिएहिंतो संखे०शुणबड्डि

विहत्तिया संखेगुणा । कुदो १ एगजादीदो विणिग्गयजीवाणं जादिवसेण संचिदजीवपडि

भगेण विहंजिदूण गमणुवरंभादो । तंजहाबीइंदिएहिंतो विणिग्गंतूण सण्णिपंचिदिषएसु

उपज्माणा सव्वस्थोवा । असण्णिपंचिदिएसु उप्पज्रमाणा असंखेनज्जगुणा । चउरिंदिण्सु

उष्जमाणा विसेसाहिया तीइंदिएस उप्पज्साणा विसे० । एइंदिएसु उष्पजमाणा

असंखेज्जगुणा । एवं तीइंदियचउ रिंदियअसण्णिपंचिंदियसण्णिपंचिदियएइंदियाणं

च वत्तव्वं तत्थ बीइंदियाणं तीईंदिण उप्पण्णाणं संखे०भागवड़ी चेव पणुवीस

सागरोवमद्िदीए सह तीइंदिएसु उप्पण्णाणं पि अपज्जत्तकाले पंचाससागरोवममेत्तट्टिदि

बंधाभावादों ण च जहण्णड्डिदीए सह तीइंदिएसुप्पण्णबीईंदियाणं पि संखेजगुणवड़ी

अत्थि पलिदोवमस्स संखे०भागेणूणपणुवीससागरोवमेहिंतो तीइंदिएसु वड्डिदपणुवीस

सागरोवमाणं पलिदो ०संखेभागेणूणाणं देखणत्तुवलंभादो। तम्हा तीइंदिएसुप्पण्णवीइंदियाणं

संखे०भागवड्ी चेव । चउरिदिएसु असण्णिपंचिदिएसु सण्णिपंचिंदिण्सु च उप्पण्णबीइंदियाणं

संखे०गुणवड़ी चेव । तीईंदियाणं चउरिंदिएसुप्पण्णाणं संखे०भागवड्ी असण्णिपंचिंदिएसु

सण्णिपंचिंदिण्सु च उप्पण्णाणं संखे०गुणवड्डी । असण्णिपंचिंदियाणं सण्णीसुप्पण्णाणं

शंकाऐसा रहते हुए भी संख्यातभागदरड्धिविभक्तिवालछोंसे संख्यातगुणबृद्धिविभक्ति

वाले जीव संस्यातगुणे होते हैं क्योंकि जातिवशसे संचित जीवराशिरूप प्रतिभागसे विभक्त

करनेपर जितना प्रमाण आवे उतने जीव एक जाति से निकलकर दूसरी जातिमें जाते हुए

पाये जाते हैं । खुलासा इस प्रकार हैद्वीन्द्रियोंमेंसे निकलकर संज्ञो पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होने

वाले जीव सबसे थोड़े देँ । असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंस्यातगुणे हैं ।

चौइन्द्रियोंमें उत्पन्न दोनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। तीनइन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव

विशेष अधिक हैं । एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार तीनइन्द्रिय

चौइन्द्रिय असंझी पंचेन्द्रिय संज्ञी पंचेन्द्रिय और एकेन्द्रिय जीवॉका कथन करना चाहिये।

जनमें जो द्वीन्द्रिय जीव तीनइन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके संख्योतभागब्॒द्धि ही पाई जाती है

क्योंकि पच्चीस सागर स्थितिके साथ तीनइन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेबाले जीवोके भी अपर्याप्तकालमें

पचास सागर स्थितिबन्ध नहीं होता। ओर जो द्वीन्द्रिय जीब जघन्य स्थितिके साथ तीन

इन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके भी संख्यातगुणबृद्धि नहीं होती है क्योकि पल्यके संस्यातवें

मागकम पच्चीस सागरसे तीन इन्द्रियोंमें बढ़ाई गई पल्यके संख्यातवें भागकम पच्चीस सागर

स्थिति संख्यातगुणी न होकर कुछ कम संख्यातगुणी होती है । इसलिये जो द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रियोंमें

उत्पन्न होते दै उनके संख्यातभागर्बद्धि ही होती है । तथा जो दीन्द्रियजीब चौइन्द्रिय असंज्ञी

पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके संख्यातगुणबृ॒द्धि ही होती है । तथा जो

तीनइन्द्रिय जोब चौइन्द्रियोंमें उत्पन्न होते है उनके संख्यातमाग्द्धि ओौर जो असंज्ञी पंचेन्द्रिय

और संज्ञी पद्ेन्द्रियोमें उत्पन्न होते हैं उनके संख्यातगुणबद्धि होती है । तथा जो असंज्ञी

पंचेन्द्रिय जीव संज्ञी पश्न्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके संख्यातगुणव्द्धि होती हे । इस प्रकार

9 ता० पूतौ पेक्खिदूख कथं संखेजगुणत्त इति पाठः ।

Page 302:

गा० २२ ह्िदिविहत्तीए बड़ढीए अप्पाबहुअं र८३े

संखे०गुणवड़ी होदि । एवं होदि त्ति कादूण संखे०भागबड्डिविह्तिएहिंतो संखे०गुण

बड्डिविद्दत्तिया संखे०गुणा त्ति १ ण एस दोसो बीइंदियतोइंदियचउरिंदियपंचिंदिए हिंतो

णिप्पिडिदूण तसकाइएसु संचरंतजीवे पेक्खिदूण एइंदिएस पविद्वजीवाणमसंखे०

गुणत्तादो । ण च एहंदिएहिंतो आगंतूण णिप्पिदिदपडिभागेण सगसगजादीस

उप्पजमाणजीवाणं मज्झे संखेजभावड्डिविहत्तिएहिंतो संखे०गुणवड्डिविहत्तियाणं

बहुत्तमत्थि संखे०भागवड्डिविसयद्धिदीहि सह णिप्पिदमाणएइंदिए पेक्खिदूण संखे०

गुणवड्डिविसयह्धिदीहि सह णिप्पिद्माणएडंदियाणं संखेजगुणहीणत्तादो । बीईंदियाणं

संखे०भागवड्डिविसओ देखणपणुबीससागरोबमाणमड्मेत्तद्िदीओ। ताओ चेव

एगसागरोबमेण ऊणाओ संखे०गुणवड्डिविसओ । तीईंदियाणं संखे०भागवड्डिबिसओ

देदणपंचाससागरोवमाणमद्धमेत्तदिदीओ । ताओ चैव॒ एगसागरोवमेणूणाओ तेसिं

संखे०गुणबड्डिविसओ । चढरिंदियाणं संखेजमभागवड्डिविसओ देखणसागरोबमसदस्स

अद्धमेत्तद्विदीओ। ताओ चेव एगसागरोवमेणृणाओ तेसं संखेज

शुणवड्धिविसओं । असण्णिपंचिदियाणं संखेजभागवङ्िविसओ देखणसागरो

वमसहस्सस्स अद्भमेत्तड्डिदीओ । ताओ चेव एगसागरोबमेणूणाओ तेसिं संखे०गुणब्डि

विसओ । सण्णिपंचिंदयाणं संखेजमागवड्डिविसओ अंतोकोडाकोडिसारोबमाणमद़मेत्त

हिदीओ । ताओ चेव एगसागरोवमेणूणाओ तेसं संखेज़ गुणवश्डिविसओ । एवं वुत्तकमेण

बृद्धियाँ होती हैं ऐसा समझकर संख्यातभागबृद्धिवाले जीवसे संख्यातगुणइड्धिवाले जोव

संख्यातगुणे होने चाहिये

समाधान यदह कोई दोष नदीं है क्योंकि इन्द्रियः त्रीनिद्रय चतुरिन्द्रिय ओर पंचेन्द्रियों

मेंसे निकलकर त्रसकायिकोंमें संचार करनेवाले जीबोंको देखते हुए एकेन्द्रियोंमें प्रवेश करनेवाले

जीव असंख्यातगुणे होते है । ओर एकेन्द्रियोंमेंसे आकर प्राप्त हुए प्रतिभागके अनुसार अपनी

अपनी जातियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीबोंमें संख्यावभागब्द्धिविभक्तिवाछोंसे संख्यातगुणबद्धि

विभक्तिवाले जीव बहुत नहीं हैं क्योकि संख्यातभागइद्धिकी विषयभूत स्थितियोंके साथ

निकछनेवाले एकेन्द्रियोंको देखते हुए संख्यातगुणबृद्धि की विषयभूत स्थितियोंके साथ निकलने

वाले एकेन्द्रिय जीव संख्यातगुणे दीन होते हैं ।

शंकाीन्द्रियोंके संख्यातभागवृद्धि की विषयभूत कुछ कमर पच्चीस सागरकी आधी

स्थितियाँ हैं उनके वे ही एक सागर कम संख्यातगुणब्॒द्धिकी विषय हैं । तीन इन्दियोंके संख्यात

भागबृद्धिकी विषय कुछ कम पचास सागर की आधो स्थितियाँ हैं। वे ही एक सागर कम

होकर उनके संख्यातगुणदद्धिकी विषय होती हैं। चौइन्द्रियोंके संख्यातभागद्ृद्धिकी विषय

कुछ कम सौ सागरकी आधी स्थितियाँ हैं। वेदी एक सागर कम होकर उनके संख्यात

गुणबृद्धिको विषय हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके संख्यातभागइद्धिकी विषय कुछ कम एक हजार

सागरकी आधी स्थितियाँ हैं। वे ही एक सागर कम होकर उनके संख्यातगुणवृद्धिकी विषय

हैं। संज्ञी पंचेन्द्रियोंके संख्यातमागव्द्धिकी विषय अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरकी आधी स्थितियाँ हैं ।

५ आ० प्रतौ णूणाओ संखेज्ज इति पाटः ।

Page 303:

२८४ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे छ्विदिविह्ती ३

संखेजगुणवड्िविसयादो संखे०भागवद्डिविसए विसेसादिए संते कथं संखेजगुणवद्धि

विहत्तिएहिंतो संखे०भागवड्डिविहत्तियाणं संखेजगुणतं धड्दे १ ण च जादिं पडि

विणिम्गयजीवपडिभागेण पवेसो णस्थि ति वोचु न्तं बीइंदियादिरासीणं क्सिसाहियत्तं

फिट्टिदृण अण्णावत्थावत्तीदो एसो वि ण दोसो जदि वि संखेजगुणवड्डिविसयादो

संखेजभागवद्डिविसओ विसेसाहिओ चेव तो बि संखेजगुणवड्डिविहत्तिएहिंतो

संखेजमागवड्डिविहत्तिया संखेजगुणा संखे मागवड्डिविसर्य पबिस्समाणजीवेहिंतो

संखेजगुणवड्डिविसर्य पविस्सभाणजीवाणं संखेजशुणहीणत्तादो । संखेज़भागवड्डिविसयादो

चेव बहुआ जीवा पल्नद्धिदृण सगसगजादिं पविसंति त्ति इदो णव्बदे १ एदम्हादों चेव

जइबसहमुद्दविणिग्गयअप्पाबहुअसुत्तादो । असंखे ०पोग्गलपरियट्डसंचिदा वितिचढु

पंचिंदियजीवा एइंदिए्सु पादेकमणंता अस्थि संखे०शुणवड्धिपाओग्गा । संखेजभाग

वड्डिपाओग्गा पुण असंखेज्ा चेव पलिदो० असंखे०भागमेत्तकालेण संचिदत्तादो ।

तेण संखेजभागबड्डि विहत्तिए हिंतो संखेजगुणवड्डिविहत्तिए हि असंखेजगुणेहि होद्व्वमिदि १

ण आयाणुसारिवयस्स णायत्तादो ण विवरीयकप्पणा शुदे अव्ववत्थावत्तीदो ।

वे ही एक सागर कम होकर उनके संख्यातगुणबद्धिकी विषय हैं। इस प्रकार उक्त ्रमसे संख्यात

गुणवद्धिके बिषयसे संख्यातभागब्नद्धिका विषय विशेष अधिक रहते हुए संख्यातगुणबुद्धिविभक्ति

बालोंसे संख्यातमागच्द्धिविभक्तिवके जीव संख्यातगुणे कैसे बन सकते हैँ १ और जातिकी

अपेक्षा निकलनेबाले जीवक प्रतिभागके अनुसार प्रवेश नहीं दे ऐसा कहना युक्त नहीं दे क्योंकि

ऐसा मानने पर दीन्द्रियादिक राशियोंकी विशेष अधिकता नष्ट होकर अन्य अवस्था प्राप्त होती दै

समाधानयह भी दोष नहीं दैः क्योंकि यद्यपि संख्यातगुणबद्धिके विषयसे

संख्यातभागजृद्धिका विषय विशेष अधिक ही है तो भी संख्यातगुणबद्धिविभक्तिवालोंसे

संख्यातभागबू द्धिविभक्तिवके जीव॒ संख्यातगुणे होते हैं क्योकि संख्यातभागवृद्धिके

बिषयमें प्रवेश करनेवाले जीवसे संख्यातगुणबृद्धिके विषयमें प्रवेश करनेवाले जीव संख्यात

गुणे दीन होते हैं ।

शंकासंख्यातभागइद्धिके विषयसे ही छौटकर बहुत जीव अपनी अपनी जातिमें

प्रवेश करते हैं यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है

समाधानअतिशषभ आचायेके मसुखसे निकले हुए इसी अल्पबहुत्व सूत्रसे

जानी जाती है । ॥

शंकाअसंख्यात पुद्गकपरिववनोके द्वारा संचित हुए द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय

और पंचेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियोंमें प्रत्येक अनन्त दै जो कि संख्यातगुणवृद्धिके योग्य हैं। पर

संख्यातभागवबृद्धिके योग्य असंख्यात ही जीव हैं क्योंकि ये पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके

द्वारा संचित हुए हैं। अतः संस्यातभागदर्द्धवालोंसे संख्यातगुणबरद्धिबिभक्तिवाडे जीब

असंख्यातगुणे होने चाहिये ९

समाधाननहीं। क्योंकि आयके अनुसार व्यय होता है ऐसा न्याय है। और

१ तारत अणवल्थावक्तोदो इति पाटः ।

Page 304:

गा० २२ द्विदिविदत्तीए बड्ढीए अप्पाबहुअं २८५

५६६ बेइंदियाणं तेइंदिएसु उष्पण्णाणं संखेजमागवड्खी ण होदि किंतु संखेज

गुणवड्डी चेव होदि एदंदियसंुततं बंधमाणाणं चेव बीइंदियाणं पणुवीससागरोचम

मेचुकस्सहिदिबंधदंसणादो । तं इदो णव्वदे संकिठेसप्पाबहुअवयणादो । तं जहा

सव्वत्थोवो सण्णिपंचिदियपजत्तणामकम्मसंजुक्तो वंधसंक्रिरेसो । असण्णिपंचिदिय

पजत्तणामकम्मसंज॒त्तो बंधसंकिलेष्ठो अणंतगुणो । चउरिंदियपजत्तणामकम्मसंजुत्तो

बंधसंकिलेसो अणंतगुणो । तेइ दियपज्त्तणामकम्मसंजुत्तो बंधसंकिलेसो अणंतमुणो ।

बेइंदियपजत्त णामकम्मसंजुत्तो बंधसंकिलेसो अणंतगुणों बादरेइ दियपज त्त णामकम्म

संजुचो बंधसंकिलेसो अणंतगुणो । सुहुमेइंदियपज्त्तणामकम्मसंजुत्तबंधस्स संकिलेसो

अणंतगुणो । सण्णिपंचिंदियअपजत्तणामकम्मसंजुत्तबंधस्स संकिलेसो अणंतगुणो ।

असण्णिपचिंदिय अपजत्तणामकम्मसंजुत्तबंधस्स संकिरेसो अणंतगुणो । । चउरिंदिय

अपजत्तणामकम्मसंजुत्तबंघस्स संकिलेसो अणंतगुणो । तेइंदियअपजत्तणामकम्मसंजुत्त

वंधस्स संकिलेसो अणंतगुणो । बेइंदियअपजत्तणामकम्मसंजुत्तबंधस्स संकिलेसो अणंत

गुणो । बादरेइंदियअपजत्तणामकम्मसंजुत्तबंधस्स संकिलेसो अणंतगुणो । सुहुमेइंदिय

3 है 3 न ५ ५

अपजत्तणामकम्मसंजुत्तवंधस्स संकिलंसो अणंतयुणो त्ति। तेण कारणेण बेइंदिय

पजत्तयस्स वेदं दियपजत्तसंजत्तं बंधमाणस्स सगउकस्सद्टिदि्ंधादो पलिदो०

विपरीत कल्पना युक नहीं है क्योकि विपरीत कल्पना करने पर अव्यवस्था प्राप्त होती है ।

५६६ दोइन्द्रिय जीव तीन इन्द्रिय जीबोंमें उत्पन्न होते हैं उनके संख्यातभागबृद्धि

नहीं होती । किन्तु संख्यातगुणबुद्धि ही होती है क्योकि एकेन्द्रिय नामकर्मका बंध करनेवाले

द्वीन्द्रिय जी्वोके ही पच्चीस सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध देखा जाता है । यदि

कहा जाय कि यह किस प्रमाणसे जाना जाता है तो उसका उत्तर यह है कि यह संक्टेश

विषयक अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । जो इसप्रकार हैसंझञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त नामकर्म संयुक्त

बन्धका कारण संक्लेश सबसे थोड़ा है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त नामकमंसंयुक्त बन्धका

कारण संक्क्लेश अनन्तगुणा है। चौइन्द्रिय पर्याप्त नामकर्मसंयुक्त बन्धका कारण संक्ठेश

अनन्तगुणा द्वे । तीनइन्द्रिय पर्याप नामक कमेसंयुक्त बन्धका कारण संक्लेश अनन्तगुणा है।

दोइन्द्रिय पर्याप्त नामकर्मसंयुक्त बन्धका कारण संक्लेश जनन्तरुणा है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

नामकर्मसंयुक्त बन्धका कारण संक्लेश अनन्तगुणा द । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त नामकर्मसंयुक्त बन्धका

कारण संक्लेश अनन्तगुणा हे । संज्ञी पंचेन्द्रिय अपयोध नामकर्मसंयुक्त वन्धका कारण संक्लेश

अनन्तगुणा है । असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त नामकर्मसंयुक्त बन्धका कारण संक्लेश अनन्तगुणा है ।

चौदिन्द्रिय जपयौप्त नामकर्म संयुक्त बन्धका कारण संक्लेश अनन्तगुणा है। तीन इन्द्रिय अपर्याप्त

नामकर्मसंयुक्त बन्धका कारण संक्छेश अनन्तगुणा द । दोइन्द्रिय अपयोध नामकमसंयुक्त बन्धका

कारण संक्लेश अनन्तगुणा है। बादर एकेन्द्रिय अप्या नामकमेसं युक्तं बन्धका कारण संक्लेरा

अनन्तगुणा दै । सुक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त नामकमंसंयुक्त बन्धका कारण संकलेश यनन्तगुणा दै ।

इसलिए दोइन्द्रिय पर्याप्रसंयुक्त बन्ध करनेवाले दोइन्द्रिय पर्याप्त जीवकी स्थिति अपने उत्कृष्ट

१ आग्रतो सब्बत्थोवा इति पाठ २ ता०प्रती असण्णिपंचिंदियणामकम्मसंजत्तबंधस्स इतति पाठः

Page 305:

२८६ जयधवलासदिदे कसायपाहृडे हिदिविहत्ती ३

असंखे ० भागेण संखेनज्जदिभागेण वा उणो । बेइंदियपजत्तस्स तेह दियपजत्तसंजु्तं

बंधमाणस्स वि सगउकस्सट्िदिवंधादो परक्दो० असंखे०भागेण संखे०भागेण वा

ऊणो एवं तेइंदियपजत्तस्स वि चउरिंदियपजत्तसंजुत्त बधमाणस्स ऊणत्तं

वत्तव्यं संपहि एदेहि वेहि वियप्पेहि बेइदियउकस्सट्टिदिमूणं काऊण पणो

तेइदिएसु प्पण्णपटमसमण संखे०शुणवड़ी चेव होदि पलिदो० असंखे०भागेण

संखे०भागेण वा ऊणबेइंदियपणुवीससागरोबमहिदिबंधादों पलिदो० असंखे०भागेण

संखे०भागेण वा ऊणतेइंदियपण्णारससागरोवमट्टिदिबंधस्स दुगुणत्तुबलंभादो त्ति के वि

आइरिया भणति तण्ण घडदे । तं जहाण ताव बेइंदियाणं तेइंदिएसुप्पण्णपढमसमए

पलिदो० असंखे०भागेणूणो पण्णारससागरोबममे त्त दिदिब धो दोदि पञतुक्कस्स्टिदि

बंधादों अपजत्तुकस्सड्डिदिब धस्स असंखे०भागहीणत्तसमाणत्तविरोहादो सण्णिपंचिदिय

अपजत्ताणं सण्णिपंचिंदियपजत्ताणसुकस्सद्डिदिब धादो संखे गुणदीणसगुकस्सद्भि दिबंधस्स

उबलंभादो चवय दुमुणवीचारहाणेदि ऊणपण्णारससागरोवम मेत्तहि दि

बंधो वि णेतत्थ होदि जेण दुगुणतं होज सगसगपजत्ताणमुकस्सबीचारड्ठाणाणं

संखेजेदि भागेहि ऊणस्स अपजत्तुकस्सद्विदिबंधस्सुबलंभादों। कथमेदं णव्वदे १

सण्णिपंचिदिणसु तहोवलंभादो वेयणाए बीचारदाणाणमप्पाबरहगादौ च । तदो बीइंदियाणं

स्थितिबन्धसे पल्यका असंख्यातवाँ भाग या संख्यातवां भाग कम होती है तीनइन्द्रिय पयाप्तसंयुक्त

बन्ध करनेवाले दोडन्द्रिय पर्याप्त जीवकी भी अपने उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे पल्यके असंख्यातवे भाग या

संख्यातवें भाग कम स्थिति होती द । इसी प्रकार चौइन्द्रियपयाप्तसंयुक्त बन्ध करनेवाले तीन इन्द्रिय

पर्याप्त जीवकी मी ऊन स्थिति कनी चाहिये । इस प्रकार इन दो विकल्पोसे दोइन्द्रियोंकी उत्कृष्ट

स्थितिको कम करके पुनः तीनइन्द्रिय जीवोमिं उत्पन्न होनेके पहले समयमें संख्यातगुणब॒द्धि ही होती

हैक््योंकि दोइन्द्रियोंके पल्यके असंख्यातबें भाग या संख्यातवें भाग कम पञ्चीस सागर स्थितिबन्धसे

तेइन्द्रियोंके पल्यके असंख्यातवें या संख्यातवें भाग कम पचाससागर स्थितिबन्ध दूना पाया जाता

है ऐसा कितने दी आचाये कहते हैं। पर उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता। जिसका

विवरण इस प्रकार हैदोइन्द्रियोंके तीन इन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें पल्यका

असंख्यातवाँ भाग कम पचाससागरप्रमाण स्थितिबन्ध नहीं होता क्योकि पर्याप्तके उत्कृष्ट स्थिति

बन्धसे अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध असंख्यात भाग कम या समान होता दे इसमें विरोध ह

तथा संज्ञी पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके उख स्थितिबन्धसे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट स्थिति

बन्ध संख्यातगुणा दीन पाया जाता दै । तथा दोइन्द्रियोंके वीचारस्थानोंसे गुने बीचारस्थान

कम पचास सागरप्रमाण स्थितिबन्ध भी वहाँ नदीं होता जिससे दनी स्थिति होवे क्योकि अपने

अपने पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट बौ चारस्थानोंके संख्यातवहुमाग कम अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध

पाया जाता है ।

शंकायह किस प्रमाण से जाना जाता है

समाधानक्योंकि संज्ञ पंचेन्द्रियोंमें उस प्रकार पाया जाता है। तथा वेदनाअनुयोग

द्वारे आये हुए वी चारस्थानोंके अल्पबहुत्वसे जाना जाता है ।

१ आ० प्रतौ असंखे० भागेणणा इति षाठः ।

Page 306:

गा० २२ द्विदिविदत्तीए बड़ढीए अप्पावहूज २८७

तीइंदिएस उप्पण्णाणं पटमसमण संखेभागवड़ी चेव ण संखे०गुणवद्धि त्ति

सिद्धं । कि च बेइंदियपजत्तो सुहमेइंदियपजत्तसंजुत्तं बंधमाणो वेइंद्यउकस्सद्विदिं

वंधिदृण पडिहग्गो होदूण तेइंदियसंजुत्तमंतोमुहुत्तं बंधिय पुणो कालं कादूण तेईंदिएसु

प्पण्णपपढमसमणए वि संखे०भागवड़ी होदि त्ति संखे०गुणवड़ी चेव होदि ति एयंतर्गाह

मोसारिय णियमेण संखेजभागवड़ी चेव होदि त्ति वेत्तव्वं ।

असंखेव्न मागवद्िकम्मसिया अणंतगुणा

५६७ कदो १ तसरासीए असंखे०भागमेत्तसंखेजभांगवड्डिविहत्तीण पेक्खिदूण

सव्वजीवरासीए असंखे भागमेत्तअसंखे ० भागवड्डिविहत्तियाणमणंतगुणतं पडि

विरोहाभावादों । असंखे०भागबड्डिविहत्तिया सव्वजीवरासीए असंखे०भागो त्ति इदो

णब्बदे दुसमयसंचिदत्तादो ।

अवहटिदकम्मसिया असंखेज्जगुणा

५६८ इदो अंतोम्म॒हुत्तसंचिदत्तादो एड दियरासीश संखेजदिभागत्तादों वा ।

संखे०भागत्तं इदो णव्वदे एडई्दियाणं वड्डिहाणिअवहिदद्धाणं समासं कादृण अंतो

श्रहुत्मेत्तअवह्टिदद्धाए ओवट्टिय लद्धसंखे ०रूवेहि सव्वजीवरासिम्हि ओवड्टिदाए अवब्ठिद

अतः जो दोइन्द्रिय तीनइन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके प्रथम समयमें संख्यावभागबृद्धि हो

होती है संख्यातगुणबृद्धि नहीं होती यह सिद्ध हुआ। दूसरे जो दोइन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय

परयोप्तसंयुक्त बन्ध करता हुआ दोइन्द्रियोंकी उत्क्रष्ट स्थितिको बांधकर और प्रतिभम्न होकर अन्त

संहते तक तीनइन्द्रियसंयुक्त बन्ध करके पुनः मरकर तेइन्द्रियोंमें उत्पन्न होता है उसके उत्पन्न होनेके

प्रथम समयमें भी संख्यातभागव्द्धि होती है । अतः सं्यातगुणबृद्धि ही होती है ऐसे एकान्त

आग्रहको छोड़कर नियमसे संख्यातभागबृद्धि होती है ऐसा अहण करना चाहिये ।

असंख्यातभागबद्धि क्मघाले जीव अनन्तगुणे हैं ।

५६७ क्योकि त्रसराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण संख्यातभागवृद्धिविभक्तिवाले

जीवोंको देखते हुए सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातभागइड्धिवाले जीवोंके

अनन्तगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शंकाअसंख्यातभागवृद्धिविभक्तिवाले जीव सब जीवराशिके असंख्यातवें भागग्रमाण हैं

यह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानद। समय द्वारा संचित होनेसे जाना जाता है ।

अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५६८ क्योंकि इनका संचयकाल अन्तमुंहुते है । या ये एकेन्द्रियजीवराशिके संख्यातवें

भागप्रमाण हैं ।

शंकाथे एकेन्द्रियरा शिके संर यातवें भाग हैं यह् किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानए केन्द्रियोंके वृद्धि हानि और अवस्थितकालोंका जोड़ करके और उसमें

अन्तमुंहू्तेप्रमाण अवस्थितकालका भाग देकर जो संख्यात अङ्क ख्य आयें उनका सब जीब

Page 307:

२८८ जयधवरासदहिदे कसायपाहुडे हिदिविह्ती

विहत्तियाणं पमाणुप्यत्तीदो ।

असंखलज्न भागदाणिकम्मंसिया संखेज्नगुणणा । डि

९५६९ इदो १ ह्िदिसंतसमाणवंधगद्धादो दिदिसंतादो हेड्डिमद्रिदि

बंधगद्धाए संखेजगुणत्तादो । तं कदो णच्बदे एदभ्हादो चेव अप्पाबहुगादो ।

एवं चारसखकसायएवणोकसायाणं ।

६ ५७० जहा मिच्छत्तस्स बड्डिहाणिअवह्ाणाणमप्पाबहुअपरूबणा कदा तहा

बारसकसायणवणोकसायाणं कायव्वा । णवरि बिगरिदिणसुप्पज्ञमाणणए्डदियाणं

चरिमअंतोहुत्तकालम्मि इस्थिपुरिसवेदाणं णत्थि बंधो णवुंसयवेदो चेव बज्ञ्दि

विगलिंदिएसु णबुंसयवेदवदिरित्तवेदाणमुद्याभावादों । तेणेइंदियार्णं विगलिंदिण्सु

प्पण्णपठमसमए संखे गुणवड़ी इत्थिपु रिसवेदाणं होदि । विगलिंदिएसुप्पण्णपढमसमए

बज्ज्षमाणित्थिवेदपुरिसवेदद्विदिब धादौ संखेऽजभागदीणदिदिसतिणुपपण्णाणं संखे मागः

बड़ी वि होदि । विगलिंदियाणं पुण विगलिंदिएसुप्पण्णाणमित्थिपुरिसवेदाणं संखे०

भागवड्डी चेव संखे०गुणबड्डी णत्थि कारणं जाणिदृण वत्तव्वं एड दियदिदिसंत

कम्मेण एडदिएडिंतो आगंतूण विगलिंदिश्सुप्पजिय अंतोम्नहत्तकार् णबुंसयवेद चेव

राशिमें भाग देने पर अवस्थितविभक्तिवालोंका प्रमाण प्राप्त होता दे ।

असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

५६९ क्योकि स्थितिसत्त्वके समान बन्धकालसे स्थितिसत्त्वके नीचेकी स्थितिबन्धका

काल संख्यातगुणा पाया जाता है ।

शंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानइसी अल्पबहुत्वसूत्रसे जाना जाता है ।

इसी प्रकार बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा प्ररूपणा करनी चाहिये ।

7 ५७० जिस प्रकार मिथ्यात्वकी वृद्धि हानि और अवस्थितके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा

की उसी प्रकार बारह कपाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा करनी चादिए । किन्तु इतनी विशेषता

है कि विकलेन्द्रियोमें उत्पन्न होनेवाले एकेन्द्रियोंके अन्तिम अन्तसुहूतकालमें स्रीवेद और पुरुष

चेदका बन्ध नहीं होता एक नपुंसकवेदका ही बन्ध होता है क्योकि विकलेन्द्रियोंमें नपुंसकवेदके

अतिरिक्त वेदका उदय नहीं पाया जाता । इसलिये जो एकेन्द्रिय विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं

उनके प्रथम समयमें स्रीवेद और पुरुषबेदकी संख्यातगुणबृद्धि होती है । तथा विकलेन्द्रियोंमें

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमे बंधनेवाले खीवेद और पुरुषवेदके स्थितिबन्धसे संख्यातभागद्दीन

स्थितिसत्त्वके साथ उत्पन्न होनेबाले जीवोंके संज्यातभागवद्धि भी होती दै। परन्तु जो

विकलेन्दिय जीव विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं उनके खीवेद ओर पुरुषवेदकी संख्यातभाग

बृद्धि ही होती है । संख्यातगुणबृद्धि नहीं होती । कारणका जानकरकथन करना चाहिये ।

शंकाजो जीव एकेन्द्रियके स्थितिसत्कमके।साथ। एकेन्द्रियोंमें से जाकर और विकले

निद्रियोंमें उत्पन्न होकर अन्तसुंहूर्त काल तक नपुंसकवेदका ही बन्ध करता है उसके प्रतिभम्न

Page 308:

गा० २२ ट्विदिविहत्तीण बड़्ढ़ोए अप्पाबहुअ २८९

बंधिय पडिहम्गपठमसमए वि इत्थिपुरिसवेदाणं संखेजगुणवड्डी सत्थाणे किण्ण

चुच्चदे ण एइदियहिदिसंतं पेक्खिदूण जादसंखे ०गुणवड्ढीए सत्थाणवद्धित्तविरोहादो ।

सम्मत्तसम्माभिच्छुत्ताणं सव्वत्थोवा असंखेञ्न गु णएणहाणिकम्मंसिया ।

५७१ इदो १ चरिव्वेष्टणकंडयचरिमफारिं धादिय समऊणुदयावलियाए

पवेसिदटिदि संतकम्माणमसंखे ०शुणहाणिदंसणादो । चरिघव्वेल्लणकंडयस्स चरिमफाली

वि एगवियप्पां ण होदि किंतु असंखेजवियण्पा । तं जहा सच्वजदण्णुव्वेन्नणकंडयम्मि

एगो चरिमफाकिवियप्पो । समयुत्तरउन्वेज्लणकंडयम्मि विदिओ चरिमफालिवियप्पों ।

एवं विसमयु त्तरादिकमेण णेदव्वं जाव उकस्सफालि त्ति। उच्बेन्लणकंडयजहण्णफालीदो

उ कस्सफाली असंखे०गुणा । असंखे गुणत्तं दो णव्वदे सुत्ताविरुद्धाइरियवयणादो ।

एदाओ चरिमफालीओ पलिदो० असंखे भागमेत्ताओ पादिय ट्विद्सव्बजीबे घेत्ण

असंखे०मुणहाणिविहत्तिया सव्वत्थोवा त्ति भणिदं। एकम्ह समए फालिट्ठाणमेत्ता

असंखे ० शुणहाणिकम्मंसिया कि लब्भंति आहो ण लब्भंति ति वुत्ते णत्थि एत्थ अम्हाण

विसिट्टोवएसो किंतु एकेकम्दि फ़ालिह्ाणे एको वा दो वा उकस्सेण असंखेजञा वा जीवा

होनेके प्रथम समयमें भी स्वस्थानमें स्लीवेद और पुरुषवेदकी संख्यातगुणब्ृद्धि क्यों नहीं कही

समाधाननहीं क्योकि यहाँ एकेन्द्रियोंके स्थितिसक्त्को देखते हुए जो संख्यात

गुणवृद्धि हुई उसे स्वस्थानबरद्धि माननेमे विरोध आता है । ९

सम्यक्त्व और सम्यग्मिभ्यात्रके असंख्यातगुणहानिकमेवारे जीव सबसे

थोड़े दै ।

५७१ क्योंकि अन्तिम उद्वेलनाकाण्डककी अन्तिम कालिका घात करके जिन्होंने एक

समयकम उद्यावखिमिं स्थितिसत्कर्मोको प्रवेश कराया है उनके असंख्यातगुणहानि देखी जाती

है। अन्तिम उद्देलनाकाण्डककी अन्तिम फालि भी एक प्रकारकी नहीं होती किन्तु असंख्यात

भ्रकारकी होती है । खुलासा इस प्रकार हैसबसे जघन्य उद्देलनाकाण्डकमें अन्तिम फालिका

एक विकल्प होता है । एक समय अधिक उद्रेलनाकाण्डकमें अन्तिम फालिका दूसरा विकल्प

होता है । इसी प्रकारः दो समय अधिक आदि क्रमसे उत्कृष्ट फाली तक छे जाना चाहिये ।

उद्वेलनाकाण्डककी जघन्य फालिसे उत्कृष्ट फालि असंख्यावगुणी है ।

शंकाअसंख्यातगुणी है यह किस प्रमाणसे जाता है १

समाधानखत्रके अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता ह ।

पल्यके असंस्यातवें भागप्रमाण इन अन्तिम फालियोंको गिरा कर स्थित हुए सब

जीवोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिविभक्तिबवाले जीव सबसे थोड़े हैं ऐसा कदा। एक

समयमे जितने फालिस्थान हैं उतने असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव क्या प्राप्न होते हैं या

नहीं प्राप्त होते हैं ऐसा पूछने पर आचार्य वीरसेन कहते हैं कि इस विषयमें हमें विशिष्ट उपदेश

प्राप्त नहीं हैं। किन्तु एक एक फाल्त्थानमें एक या दो और उतछष्ट रूपसे असंख्यात जीव होते है

ताग्जा प्रत्योः पदेसिदद्धिदि इति पाठः

३७

Page 309:

२९० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदह्ती ३

हति त्ति अम्हाण णिच्छयो सव्वत्थ आवलियाए असंखे ० भागमेत्तमुण गारपरूवणादो ।

अवद्िदकम्मंसिया असंखेज्जगुणा ।

५७२ कुदो सम्मत्तद्विदेसंतं पेक्खिदूण समयु त्तरमिच्छत्तद्विदिसंतकम्मिय

मिच्छाइटिणा बेदगसम्मत्ते गहिंदे सम्मत्तस्स अवद्धिदटि दिसंतकम्मसमुप्पत्तीदो ।

चरिमफारि्र णमेत्तवियप्पेसु द्िदअसंखेजगुण हाणि कम्मंसिएहितो कथमेग

वियप्पदहिदअवदि द्कम्मंसियाण मसंखे०गुणत्तं १ ण एस दोसो फालिडट्ठाणेहिंतो

अवहिदवियप्पाणमसंखे ०गुणतुवरंमादो तं जहाबेदगपाओग्गमिच्छाइड्टिणा

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि उन्वेक्ममाणेण विसोहीए मिच्छत्तसस सब्बुकस्सकंडयघादं

करेतेण मिच्छत्तेण सह सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं द्विदिखंडयधादं कादूण तिण्दं कम्माणं

ट्विदिसंतकम्मे सरिसत्तमुवगए वेदगसम्मंत्त पडिवण्णे पटमो अवब्विद्वियप्षों। पुव्वहिदि

संतादो समयुत्तरसम्मचद्विदिसंतकम्मेण कालदो मिच्छत्तद्वेदिसमाणेण णिसेगे पडुच

मिच्छत्त णिसेगेहिंतो रूवृणेण काकतालीयणाएण ह्विदिखेंडयघादसस॒प्पण्णेण सह वेद्ग

सम्मत्ते गहिदे विदियों अवब्टिद्वियप्पो। णएदम्हादो समयुत्तरसम्मत्तहि दिसंतकम्मेण

कालदो मिच्छत्तटि दिसमाणेण णिसेगेहिंतो रूवृणेण खललविकछतसंजोगो व ट्विदिखंंडयघाद

सम्प्पण्णेण वेदगसम्मत्ते गहिदे तदिओ अवब्डिद्वियप्पो । एवं णेदव्वं जाव अंतो

ऐसा हमारा निश्चय है क्योंकि सर्वत्र आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कहा है ।

9 अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५७२ क्योंकि सम्यक्त्वके स्थितिसत्त्वको देखते हुए एक समय अधिक मिथ्यात्वकी

स्थितिसत्कर्मवाले मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा वेदकसम्यक्त्वके ग्रहण करने पर सम्यक्त्वके अवस्थित

स्थितिसत्कर्मंकी उत्पत्ति होती दे ।

शंकाअन्तिम फालिस्थानप्रमाण विकल्पोंमें स्थित असंख्यातगुणहानिकर्मबाले जीवोंसे

एक विकल्पमें स्थित अवस्थितकर्मवाले जीव असंस्याबगुणे कैसे हो सकते हैं

समाधानयह कोई दोष नहीं हे क्योंकि फालिस्थानोंसे अवस्थित विकल्प असंख्यात

शुभे पाये जाते हैं । खुलासा इस प्रकार हैसम्यक्त्ब और सम्यग्मिथ्यात्वकी उठ्ठेलना करनेवाला

और विशुद्धिके बलसे मिथ्यात्वके सबसे उत्कृष्ट काण्डकघातकों करनेवाला कोई वेदक

सम्यक्त्वके योग्य मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वके साथ सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वके स्थिति

काण्डकघातको करके जब तीन कर्मोके स्थितिसत्कर्मको समान करके वेदकसम्यकत्वको श्राप्त

होता है तब उसके पहला अवस्थित विकल्प होता है। पूर्व स्थितिसन््वसे जिसके सम्यक्त्वका

स्थितिसत्कर्म एक समय अधिक है कालकी अपेक्षा जिसके सम्यकत्वकी स्थिति मिथ्यात्वकी

स्थितिके समान ह और निषेकोंकी अपेक्षा जिसेके सम्यक्त्वके निषेक मिथ्यात्वके निषेकोंसे

एक कम हैं उसके काकतालीय न्यायानुसार स्थितिकाण्डकघातके साथ वेदकसम्यक्त्वके प्रहण

करने पर दूसरा अवस्थितविकल्प होता है । सम्यक्त्वके इस स्थितिसत्त्वसे जिसके सम्यक्त्वका

स्थितिसत्कम एक समय अधिक है काछकी अपेक्षा जिसके सम्यक्त्वकी स्थिति मिथ्यात्वके

समान है और निषेकोंकी अपेक्षा जिसके सम्यक्त्वके निषेक मिथ्यात्वके निषेकोंसे एक कम है

Page 310:

गा० २२ द्िदिविहत्तीए वडढी ए अप्पाबहुओं ९१

अदत्तणसत्तरिसागरोषमकोडाकोडिमेत्तसम्मच्द्विदि त्ति । जेणेवमवद्िदस्स संखेज्ज

सागरोवममेत्तवियप्पा पलिदोवमस्स असंखे०मागमेत्त असंखेजगुणहाणिवियप्पेहिंतो

असंखेजगुणा तेण तत्थ ट्विदअवद्विदकम्मंसिया वि जीवा तत्तो असंखेजगुणा त्ति

सिद्धं । अदि वि संखेजसागरोवममेत्ता अवदिदकम्पंसियहिदिषियप्पा लब्भंति तो वि

ण तेसु सब्वेस ट्विदिवियप्पेस बड्माणद्धाए अवटिदविहत्तिया जीवा संभवंति

तेसिं पकिदो असंखे मागमेत्तपमाणत्तादो । तदो असंखेजगुणहाणिविहततियं व

अवह्टिद विहत्तिया जीवा वइमाणद्भधाए पलिदो० असंखे०भागमेत्तड्डिदीस चंच

संभवंति त्ति अवहिदबिद॒त्तियाणमसंखेजमुणहाणिविहत्तिएहिंतो असंखेगुणत्तं ण

णव्वदि त्ति ण एस दोसो पलिदो० असंखेभागत्तणेण जदि विदोहि वि

विह त्तिएहि वइमाणद्वाएं पडिग्गहिदहिदीणं सरिसत्तमत्थि तो वि विसेसे अवरंबिज

मणे ण तेति पडिगहिदं ट्विदिवियप्पाणं सरिसत्तं थोवविसए बहुविसए च

अवहिदजीवाणं सरिसत्तविरोहादो । अथवा मिच्छततद्धिदीए समाणसम्मत्तद्विदि

संतकम्मिया मिच्छादिद्धिमो बहुवारं होंति विसोदीएट मिच्छत्तड्िदिकंडए

पदमाणे सम्मत्तसम्मामिच्छततद्धिदीणं पि मिच्छत्तद्विदिकंडयस्स अंतोपविहाणं

घादुवलंभादो । ण चेसो उवलंभो असिद्धो अक्खवणाए मिच्छत्तद्विंदिसंतादो सम्मत्त

उसके खल्वाटके बेखके संयोगके समान स्थितिकाण्डकघातके साथ वेदकसम्यक्त्वके ग्रहण करने

पर तीसरा अवस्थितविकल्प दोता है । इस प्रकार अन्तमुहूर्तकम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण

स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। चूंकि अवस्थितके इस प्रकार संख्यात सागरप्रमाण

विकल्प असंख्यातगुणहानिके पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण बिकल्पोंसे असंख्यातगुणे होते

हैं इसलिये वहाँ स्थित अवस्थितकर्मबाे जीव भी असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीबोंसे

असंख्यातगुणे होते हैं यह सिद्ध हुआ ।

शंकायद्यपि अवस्थितकमेवालोंके संख्यात सागरप्रमाण स्थितिविकल्प

प्राप्त होते हैं तो भी वतमान समयमे उन सब स्थितिविकल्पोंमें अवस्थित स्थिति

बिभक्तिवाले जीव संभव नहीं हैं क्योकि वेदकसम्यग्दृष्टि जीब पल्यके असंख्यातवेंभागप्त माण

होते हैं । अतः वतमान समयमें असंख्यातगुणहानिविभक्तिवालोंक समान अवस्थितविभक्तिवाले

जीव पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोंमें ही संभव हैं अतः अवस्थितविभक्तिवाले जीव

असंख्यातगुणद्वानिविभक्तिवाछोंसे असंख्यातगुणे होते हैं यह् बात नहीं जानी जाती है

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागसामान्यकी अपेक्षा

यद्यपि दोनों ही विभक्तिवाले जीबोंके बर्तेमानकालमें महण की गई स्थितियोंकी समानता है तो

भी विशेषका अवलम्ब करनेपर उन ग्रहण की गई स्थितिविकल्पोंकी समानता नहीं है क्योंकि

स्तोक विषय और बहुत विषयमें अवस्थित जीवोको समान माननेमें विरोध आता है।

अथवा मिथ्यात्वकी स्थितिके समान सम्यक्त्वकी स्थितिसत्कर्म॑वारे मिथ्यादृष्टि जीव बहुत

बार होते है क्योंकि विश्वुद्धकि बलसे मिथ्यात्वके स्थितिकाण्डकके पतन होनेपर मिथ्यात्वके

स्थितिकाण्डकके अन्तःप्रविष्ट सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी स्थितियोंका भी घात पाया

जाता है। और इसश्रकारकी उपलब्धि असिद्ध भी नहीं है क्योंकि ऐसा नहीं मानने पर

क्षपणासे रहित अवस्थामें मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वसे सम्यक्त्व और सम्यम्सिथ्यात्वका स्थितिसत््व

Page 311:

२९२ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्त

सम्माभिच्छत्ता्णं दिदिसंतस्स बहुप्पसंगादो। ण च णवं सम्मत्तसम्मामिच्छत्तेसु

मिच्छादिद्विगुणद्वाणे मिच्छत्तस्सुवरि समहिदीए संकममाणेस वि सरिसत्तविरोहादो ।

तदो मिच्छादिद्विम्मि मिच्छत्ट्धिदिकंडए णिबदमणि णियमा सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं

पि इिदिकंडयमणियदायामं ददि । सम्मत्त सम्मामिच्छतताणं ट्विद्केंडए णिनि

मिच्छततद्टिदिकंडयधघादो भयणिज्ञो त्ति पेत्तव्वं । तेण मिच्छनुकस्सड्िदिसतकभ्मय

मिच्छादिद्िणा वेदगसम्मत्ते पडिवण्णे दंसणतियस्स सरिसं ड्विदिसंतकम्मं होदि ।

पणो डिदिखंडयघादेण विणा तप्पाओग्गसम्मत्तद्ूं गमिय मिच्छत्त गंतूण

दिदिकंडयषादेण विणा अंतोसुहुत्तकालमच्छमाणो जदि सम्मत्तं पडिवजदि तो

सम्मत्तस्स अवद्िदकम्मंसियो चेव होदि सम्मचणिसेगेहिंतो मिच्छन्तणिसेगाणं

सवा्ियततुवलंभादो । विसोदीए मिच्छतद्विदिं घादेदुण वेद्गसम्मत्ं पडिवजमाणो

वि सस्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमवहिदकम्मंसिओ चेव होदि मिच्छत्ते घादिज्जमाणे

घादिदसम्म्सम्मामिच्छतद्धिदित्तादो । एवं सव्वस्थ सम्मत्त पडिवजमाणस्स अवब्विद

कम्मं सियत्तं परूवेदव्य जा उच्बेरलणाए ण पारंभो होदि । उव्बेल्लणाएण पारमे संते

वि जाव पदुव्वेदणकंडयं ण पददि ताव तत्थ वेदगसम्मत्त पडिवजमाणों वि

अवड्विदकम्मंसिओ चेव होदि वड्रीए कारणामावादो । उच्बेल्लणकंडए पुण पदिदे

अवड्टिदकम्मंसियत्तस्स ण पाओग्गो तत्थ बेदगसम्मत्तं पडिवजमाणस्स असंखेजभाग

बड्डिदंसणादो । पणो अंतोश्नहुत्कालेण मिच्छत्तस्स आुजगारबंध कादूण विसोहिसुवणमिय

बहुत प्राप्त होता है । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा माननेपर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके मिथ्यात्वमें समान स्थितिरूपसे संक्रमण होनेपर भी समानतामें

विरोध आता है। इसलिए मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें मिथ्यात्वके स्थितिकाण्डकोके पतन होनेपर

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके अनियत आयामवाले स्थितिकाण्डकोंका पतन नियमसे होता है ।

तथा सम्यक्त्व और सम्यम्सिथ्यात्वके स्थितिकाण्डकके पतन होनेपर मिथ्यात्वका स्थितिकाण्डक

चात भजनीय है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अतः मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिसत्कमंबाछे

मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा वेदकसम्यक्त्वके अहण करनेपर तीन दृशनमोहनीयका स्थितिसत्कर्म

समान होता है। पुनः स्थितिकाण्डकघातके बिना तत्म्रायोग्य सम्यक्त्वके काछकों गसाकर

और सिथ्यात्वमें जाकर स्थितिकाण्डकघातके बिना अन््तसुहूरतकालतक रहकर यदि सभ्यक्त्वको

प्राप्त होता है तो वह सम्यक्त्वका अवस्थितकर्मबाछा ही होता दैः क्योंकि यहाँपर

सम्यकस्वके निषेकोंसे मिथ्यात्वके निषेक एक अधिक पाये जाते हैं। तथा विश्वुद्धिके बलसे

मिथ्यात्वकी स्थितिका घात करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाछा जीव भी सम्यक्व और

सम्यम्मिथ्यात्वके अवस्थितकर्मेवाला ही होता है क्योंकि मिथ्यात्वका वात करने पर

सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी स्थितिका घात होता ही है । इसप्रकार सवत्र उद्देलनाके प्रारम्भ

होनेतक सम्यक्त्वको भ्राप्त दोनेबाले जीवके अवस्थितकमेपनेका कथन करना चाहिये।

उद्देलनाके प्रारम्भ होनेपर भी जब तक प्रथम उद्देलनाकाण्डकका पतन नहीं दोता है तबतक

वहाँ वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाला जोव भी अवस्थितकर्मबाला ही होता है क्योंकि यहाँ

वृद्धिका कोई कारण नहीं द । परन्तु उद्ेलनाकाण्डकके पतन हो जानेपर जीव अवरिथतकमेपनेके

योग्य नहीं रहता है क्योंकि वहाँ वेदकसम्यकत्वको प्राप्त होनेवाले जीवके असंख्यातभागबृद्धि

Page 312:

गा० २२ द्िदिविहत्तीए बड़ढीए अप्पाबहुअं २०३

सम्मत्तसम्मामिच्छत्तेहि सह मिच्छत्तस्स ट्विदिघादं कादृण वेदगसम्मत्तं पडिवजमाणो

अवहिदकम्मंसिओ होदि । एवं णेदव्वं जाव अण्णगम्नव्वेलणकंडयं ण ॒पददि त्ति।

पुणो तम्मि पदिदे असंखेभागवड़ीर विसओ होदि जाब अंतोमुहुत्तकालं । पुणो वि

मिच्छन्तस्स शजमारं कादृण विसोहिसवणमिय तिसु हाणीसु अण्णदरहाणीए ट्विदिकंडय

घादे कदे अवहिदपाओग्गो होदि । एवं णेदव्वं जाव धुब्धिदि त्ति । अंतोहुत्तेणावस्सं

द्िदिखंडयधादो होदि त्ति इदो ण्वदे १ शगजीवंतरसुचादो । एवमेगो जीवो

अंतोहुत्तमं तोहुत्तमंतसिय णियमेण अवड्डिदपाओग्गो होदि जाव अंतोहुत्तकालं ।

एवं सब्वअड्डाबीससंतकम्मियमिच्छाइड्रीणं वत्तव्वं । असंखेजगुणहाणोए पुण

पलिदोबमस्स असंखे०भागमेत्तं कालं गंतूण एगवारं चेव पाओग्गो होदि । एवं जेणेगो

जीवो बहुवारमवद्टिदकम्मंसियपाओग्गो होदि जेण च बहुआ तप्पाओग्गजीवा तेण

असंखेगुणदहाणिकम्मं सिए हिंतो अवदिद्कम्मं सिया असंखेजगुणा ।

असंखेञ्न भागव ङ्धिकम्मंसिया असंखेज्तगुणा।।

५७३ कदो १ अवदिदविह्तिपाओग्गणएगेगह्टिदीए उवरि पकिदो ०असंखे०

भागमेत्तद्िदीणमसंखे ० भागवड्डिपाओग्गाणमुवर्ंमादो कर्थ वि पलिदोवमस्स असंखे०

भागमेत्ताणुवलंमादो का । त॑ जहाअबड्विदस्स एगं ट्विद्सिंतकम्ममस्सिदृण एगो चेव

देखी जाती द । पुनः अन्त्य् त कालके द्वारा मिथ्यात्वका भ्रुजगारबन्ध करके और विश्ञद्धिको

प्राप्त होकर सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके साथ भिथ्यात्वका स्थितिघात करके वेदकसम्यक्वको

प्राप्त होनेवाला जीव अवस्थितकमेवाा होता दै इसप्रकार एक दूसरे उद्देलनाकाण्डकके

पतन होने तक कथन करना चाहिये । पुनः उसका पतन होनेपर अन्तमुंहूर्त काछतक असंख्यात

भागवृद्धिका विषय होता है । पुनरपि मिथ्यात्वका मुजगारबन्ध करके और विश्वुद्धिको श्राप्त

होकर तीन हानियोंमेंसे किसी एक हानिके द्वारा स्थितिकाण्डकघातके करनेपर अवस्थितविभक्तिके

योग्य होता है। इसप्रकार धुवस्थितिके प्राप्त होनेतक कथन करना चाहिये ।

शंकाअन्तमुहतेकालके द्वारा स्थितिघात अवश्य होता दै यह किस प्रमाणसे

जाना जाता है

समाधानएक जीवके अन्तरका प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे जाना जाता है।

इस प्रकार एक जीव अन््तमुंहृर्त अन्तमुंह्ते कालका अन्तर देकर अन्तमुहूतेकाल तक

नियमसे अवस्थितस्थिति विभक्तिके योग्य होता है। इसी प्रकार अद्वाईस सत्कर्मचाले

सभी मिथ्यादृष्टि जीबोंके कहना चाहिये। परन्तु असंस्यातगुणहानिके योग्य तो पल्यके

असंख्यातवें भागप्रमाण काछके जाने पर एक बार होता दैः । इस प्रकार चूँकि एक जीव बहुत

बार अवस्थितकर्मके योग्य होता हैः और चूँकि तत्प्रायोग्य जीव बहुत हैं अतः असंख्यातगुणहानि

कर्मबाछोंसे अबस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैँ ।

असंख्यातभागबृद्धिकमवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५७३ क्योकि अवस्थितस्थितिविभक्तिके योग्य एक एक स्थितिके ऊपर पल्यके

असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितियां असंख्यात भागबद्धिके योग्य पाई जाती हैं । अथवा कहीं

पर पल्यके जसंख्यातवे भागप्रमाण नहीं भी पाई जाती हैं। खुलासा इसप्रकार हैअवस्थितके

Page 313:

२९४ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती ३

वियप्यो लब्भदि । सम्मत्तधुव्धिदीए उवरि समयुत्तरमिच्छत्तट्धिदिसंतकम्मिएण

वेदगसम्मत्ते गहिदे सम्मत्तस्स अवद्विदविदत्तिदंसगादो । पुणो णदं धुवह्धिदिमस्सिदूण

अण्णो अबब्विद्वियप्पोण लब्भदि। पुव्वद्धिदीदों समयुत्तरं मिच्छत्तड्िदिं बंधिदण

सम्मत्ते गहिदे पढमो असंखेजमागवड्डिवियप्पो होदि । दुसमयुत्तरं बंधिदृण सम्मत्ते

गहिदे विदिओ असंखेभागवड्डिवियप्पो । तिसमयुत्तरं बंधिदृण सम्मत्ते गहिदे तदिओं

असंखे०भागवड्डिवियप्पो एवं चदुसमयु तरादिकमेंण असंखे०भागवड्डिवियप्पा

वत्तव्वा जाव णिरुद्धह्िंदिं जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्ता ट्विदि

वियप्पा बड्डिदा त्ति। एवं पटमअवद्टिदविहत्तिपाओग्गहटिदिमस्सिदृण असंखे०

भागवड्डिपाओर्गट्टिदीणं परूवणा कदा । एवं संखेजसागरोबममेत्त अवद्धिद्पाओग्ग

ट्विदीओ अस्सिदृण पुध असंखे०भागवड्डिपाओग्गद्धिदीणं परूवणा कायव्वा ।

जम्हा अवष्टिदविहत्तिविसयादों असंखे०भागवड्डिविसओ असंखे०गुणो तम्हा

अबद्टिद विहत्तिएिंतो असंखे०मागवड्डिविहत्तिया असंखेजगुणा ।

असंखेज्जगुणवड्डिकम्मंसिया असंखेज्जगुणा

५७४ इदो पलिदो०असंखे०भागमेत्तकालसंचिदत्तादो तं जदामिच्छत्त

धुवद्धिदिसंतकभ्मे जहण्णपरित्तासंखेजेण भागे दिदे तत्थ भागलड्धद्विदिसंतकम्ममार्दि

कादृण समऊणादिकमेण हेट्ठा ओदारेदव्वं जाव सच्वजदण्णायामचरिमुव्वेख्छण

एक स्थितिसत्कमंका आश्रय लेकर एक स्थितिविकल्प प्राप्त होता है क्योकि सम्यक्त्वकी

ध्रुवस्थितिके ऊपर एक समय अधिक मिथ्यात्वकी स्थितिसत्कर्मवाले जोवके बेदकसम्यक्त्वके

ग्रहण करने पर सम्यक्टवकी अवस्थितविभक्ति देखी जाती है। पुनः इस ध्ुबस्थितिका आश्रय

लेकर अन्य अवस्थितविकल्प नहीं प्राप्त होता है। तथा पूर्वस्थितिसि एक समय अधिक

मिथ्यात्वकी स्थितिको बांध कर सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर असंख्यातभागबृद्धिका पहला विकल्प

होता है। दो समय अधिक बांधकर सम्यक्त्वके ग्रहण करने पर असंख्यातभागबृद्धिका

दूसरा विकल्प होता ड । तीन समय अधिक बांधकर सम्यक्स्वके अहण करने पर असंख्यात

भागबृद्धिका तीसरा विकल्प होता है। इसग्रकार विवक्षित स्थितिको जघन्य परितासंख्यातसे

खण्डित करने पर जो एक खण्डप्रसाण स्थितिविकल्प आते हैं उतने बिकल्पोंकी वृद्धि होने तक

चार समय अधिक आदिके क्रमसे असंख्यातभागवृद्धिके विकल्प कहने चाहिये। इस प्रकार

प्रथम अवस्थितविक्तिके योग्य स्थितिका आश्रय लेकर असंख्यातभागबृद्धिके योग्य स्थितियोंका

कथन किया । इसीप्रकार संरूयात ल्ागरश्रमाण अवस्थितविभक्तियोंके योग्य स्थितियोंका आश्रय

लेकर अछग अलग असंख्यातभागबृद्धियोंके योग्य स्थितियोंका कथन करना चाहिये। चूंकि

अवस्थितविभक्तिके विषयसे असंख्यातभागबृद्धिका विषय असंख्यातगुणा दै इसलिये अवस्थित

विभक्तिवांछोंसे असंख्यातभागबृद्धिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे है ।

असंख्यातगुणबद्धिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५७४ क्यो कि उनका संचय पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके द्वारा होता है ।

खुलासा इस प्रकार द्ैमिथ्यात्वकी भुवस्थितिसत्कर्ममें जघन्य परीतासंख्यातका भाग देने

पर जो एक भागप्रमाण स्थितिसत्कर्म लब्ध जावे उससे लेकर एक समय कम आदि क्रमसे

Page 314:

गा० रर हिदिविहत्तीए वड्ढीए अप्पाबहुओं २९५

कंडयचरिमफालि त्ति । एदिस्ते ट्विदीए जो उन्वेरलणकालो सो पलिदो० असंखे०

भागमेत्तो । पलि० असंखे मागमेनुववेन्नणकंडयस्स जदि अंतोमुहुत्तमेत्ता उक्रीरणद्धा

लब्भदि तो असंखे०गुणवड्डचिपाओग्गपलिदो० संखे मागमेत्तदिदौणं किं लभामो त्ति

पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्डिदाए पलिदो० असंखे०भागमेत्तुव्बेललणकालवलंभादो ।

एदेण कालेण संचिदजीवा वि पलिदो० असंखेभागमेत्ता होंति । चउवीसमहोरत्ताणि

अंतरिय जदि असंखेगुणवड्िपाओग्ग्िदीणमन्भंतरे पविसमाणे जीवा पलिदो०

असंखे ०भागमेत्ता लब्भंति तो पुव्छुत्तजबेब्ललणकालस्संतो केत्तिए रुभामो त्ति पमाणेण

फरगुणिदिच्छाए ओबद्िदाए पलिदो० असंखे मागमेत्तजीवाणञुवसं मादो । असंखे०

भागवड्डिपाओग्गजीवा पुण अंतोहु्संचिदा मिच्छत्तधुबदिदिसमाणसम्मत्तधुवद्टिदीदो

उवरिमसम्मत्तद्धिदीणं मिच्छन्त हटि दीदो असंखे भागहीणाणमंतोगहुत्तमेत्तकाटवरंमादो ।

तं पि इदो णव्वदे असंखे०भागहाणिह्विदिसंतकम्मे अवहिदद्विदिसंतकम्मे च

अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो भिच्छादट्िणो जीवा संखे०भागवड्डि संखे०गुणवह्डि च

णियमेण इणंति त्ति चुण्णिसुत्तोवएसादो । असंखे०भागवड्डिकालेण वि संचिदजीवा

पठ्दो असंखे ० भागमेत्ता हों ति। चडवीसअहोरत्त मेत्ते पवेसंतरे संते अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे

सबसे जघन्य आयामवाङे अन्तिम उद्धेलनाकांण्डककी अन्तिम फालितक उतार कर

जाना चाहिये । इस स्थितिका जो उद्देलनाकाल है वह पल्यके असंख्यातवें मागप्रमाण है ।

पल्यके असंख्यातबें भागप्रमाण उद्रेलनाकाण्डकका यदि अन््तसुंहूर्तप्रमाण उत्कीरणाकार प्राप्त

होता है तो असंस्यातगुणच्रद्धिके योग्य पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोंके कितने उत्कीरणा

काल प्राप्त होंगे इस प्रकार फलराशिको इच्छाराशिसे गुणित करके उसे प्रमाणराशिसे भाजित

करनेपर पल्यके असंख्यातवे भागप्रमाण उद्धेखनाकाल ग्राप्त होता है ॥ तथा इस कालके द्वारा

संचित हुए जीव भी पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होते हैं । चौबीस दिन रातका अन्तर

देकर यदि असंख्यातगुणबद्धिके योग्य स्थितियोंके भीतर प्रवेश करनेपर जीव पल्यके असंख्यातवें

माग्रमाण प्राप्त होते दै तो पूर्वोक्त उद्देलनाकालके भीतर कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फछराशिसे

इच्छाराशिको गुणित करके ओर उसे श्रमाणराशिसे भाजित करनेपर पल्यके असंख्यातबें भाग

प्रमाण जीव प्राप्त होते हैं। परन्तु असंख्यातभागबृद्धिके योग्य जीव अन्तमुहूर्ते कालके द्वारा

संचित होते हैं क्योकि मिथ्यात्वकी धुवस्थितिके समान सम्यत्वकी ध्रुवस्थितिसे उपरिम सम्यक्त्व

की स्थितियोंका जो कि मिथ्यात्वकी स्थितिसे असंख्यातवें भागहीन दै काक अन्तमुंहूतश्रमाण

पाया जाता है ।

शंकायह किस प्रमाण से जाना जाता है ९

॥ समाधानअखंख्यातभागहानिस्थितिसत्कमं और अवस्थितस्थितसत्करममे अन्तमुहूत

काङतक रहकर पुनः मिथ्यादृष्टि जीव नियमसे संख्यातभागबृद्धि और संख्यातगुणबृद्धिको करते

हैं इस प्रकार चूर्णिसूत्रके उपदेश से जाना जाता है । असंख्यातमागषद्धिके कालके द्वारा भी

संचित हुए जीव पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । प्रवेशके अन्तरकालके चौबीस दिनरात

प्रमाण रहते हण अन्तमुंहूर्ते कारके भीतर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीर्वोका संचय नहीं

Page 315:

२९६ जयघवलासहिदे कसायपाहुडे छ्विदिविहत्ती ३

संचओ णत्थि त्ति णासंकणिजं सव्वत्थुकस्संतरस्स संभवाभाबेण अवलि० असंखे०

भागमेत्तंतरेण नि संचयस्पुबलंमादो। ण च चउवीसअहोरत्तमेत्तो चेव

अंवरकालो त्ति णियमो अस्थि एगसमयमादिं कादूण एगुत्तग्वड़ीए गंतूण उकस्सेण

सादिरेगचडवीसअहोरत्तमेत्ततरस्स परूविदत्तादो । जम्हा असंखे०भागव्डिविहत्तिया

अंतोखुहुत्तकालसंचिदा तम्हा पलिदो० असंखे ० भागमेत्तकालसंचिदअसंखे ० गुणबड्डि

विहत्तिया असंखे०गुणा त्ति सिद्धं ।

संखेज्नगुणवड्धिकम्मंसिया असंसेज्नगुणा ।

8 ५७५ इदो १ पलिदो० संखे०भागेणूणसंखे ०सागरोवममेत्त धुवद्धिदीए

उवेरकणकारसंचिदत्तादो तं जहा्रुबह्टिदीए हेट्टिमअसंखे०भागो असंखे०गुण

वड्डिविसओ उवरिमो मागो सव्यो वि संखेज गुणबड्धिविसओ संखे०सागरोवममेत्तधुवद्टिदिं

बंधिदूण धुवदिदीए अब्भंतरहिद्सम्मत्तसंतकम्मिएण सम्मत्ते गहिदे संखेयुणयद्विदंसणादो

एदेसि संखेजसागरोवमाणसुव्वेनज्लणकालो पलिदो० असंखे०भागमेत्तो । पलिदो०

असंखे ० भागाया मेगुव्वेर्लणकंडयस्स जदि अंतोमहुत्तमेता उकीरणद्भा लब्भदि तो

संखे०सागरोवमाणं कि लमामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवद्डिदाए पलिदो०

असंखे०मागमेत्व्बेखलणकालवरंभादो। एसो कालो असंखे०शुणवद्जिउच्बेककणकालादो

संचेजरयुणो । एदग्हि काले संचिदजीवा असंखे०गरुणबड्डिकालसंचिदजीबेहिंतो संखेज

होता है यदि कोई ऐसी आशंका करे तो उसकी ऐसी आशंका करना ठीक नहीं है क्योकि

सर्वत उत्कृष्ट अन्तर संभव नहीं होने से आवलि के असंख्यातबें भागप्रमाण अन्तरके द्वारा भी

पल्यके असंख्योतवें भागप्रमाण जीबॉंका संचय पाया जाता है। और चौबीस दिनरात प्रमाण

ही अन्तर काल होता द ऐसा नियम नहीं है क्योकि एक समयसे लेकर उत्तरोत्तर एकएक

समय बढ़ाते हुए उत्कृष्ट अन्तर साधिक चौबीस दिनरात कहा द । चूंकि असंख्यातभागबृद्धि

विभक्तिवाले जीव अन्तुहूत कालके द्वारा संचित होते हैं इसलिये पल्यके असंख्यातवें भाग

प्रमाण कालके द्वारा संचित हुए असंख्यावगुणबद्धिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं यह्

सिद्ध हुआ । बारे

संख्यातगुणबृद्धिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५७७ क्योकि इनका संचय पल्यके संख्यातवें भाग कम संख्यात सागरभ्रमाण घुवस्थितिके

उद्देलनाकालके द्वारा होता दै । खुछासा इस प्रकार हैध्रुवस्थितिके नीचेका असंख्यातवां भाग

असंख्यातगुणबृद्धिका विषय है । तथा सब उपरिम भाग भी संख्यातगुणबृद्धिका विषय है क्योंकि

संख्यात सागरप्रमाण धुवस्थितिको बांधकर धरुवस्थितिके भीतर स्थित हुए सम्यक्त्व सत्कमंवाले

जीवके सम्यक्टवके महण करनेपर संख्यातगुणबृद्धि देखी जाती है । इन संख्यात सागरोंका दि

डद्देलन काछ पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है तथा पल्यके असंख्यातबें भाग आयामवाले एक

उद्देलनाकाण्डकका यदि अन्तमुंहूर्त्रमाण उत्कीरणाकाल प्राप्त द्योता है तो संख्यातसागरका कितना

उत्कीरणाकाल प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित करके ओर उसमें प्रमाण

सादिका भाग देने पर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उद्ठेलनाकाल प्राप्त होता है ।

शंकायदह कार असंस्यातगुणबद्धिके उद्देलनाकालसे संख्यातगुणा दै । ओर इस

Page 316:

गा० २२ हिदिविदत्तीए वड्ढीए अप्पाबहुअं २९७४

गुणा । असंखेज़शुणवड्डिपाओग्गद्विदिउष्वेन्लणकालसंचिदजीवेहिंतो संखे०गुणवड्डि

पाओग्गद्िदिउव्वेरलणकालसंचिदजोषेखु संखेजगुणेस संतेखु कथमसंखेजगुणवर्डि

विहत्तिएदितो संखेजगुणवड़विहत्तियाणमसंखेजगुणत्तं १ ण एस दोसो असंखेजगुणबड्ि

पाओग्ग्टिदिं धरेदृण द्िदजीवेसु सम्मत्तं पडिवज़माणेहिंतो संखेजशुणवड्डिपाओग्गट्विदिं

धरेदृण सम्मत्त पडिवजमाणाणमसंखेजगुणत्तादो। तं पि कदो १ सम्मतं वेतृण

मिच्छतं पडिवजिय बहुअं कालं मिच्छत्तेणच्छिदेहिंतो सम्मतं गेण्हमाणा सुटूढ़ थोवा

पणहसंसकारत्तादो। अवरे बहुभ अविणइसंसकारत्तादो । एदं कदो णव्वदे १ एदम्हादो

चेव सुत्तादो । जहा कम्मणिज़रामोक्खेण आसण्णा कम्मपरमाणू अविणद्संसकारत्तादो

कम्मपोगगलपरियड्व्भंतरे लहुं कम्मभावेण परिणमंति तहा सम्मत्तादो मिच्छत्तं

गद्जीवा वि थोवमिच्छत्तद्धाए अच्छिदूण सम्मत्त पडिवजमाणा बहुआ ति

येत्तव्वं । अथवा सण्णिपंचिंदियमिच्छाइड्टिणो मिच्छत्त धुवद्िदीदो उवरि ठविद

सम्मत्तद्विदिसंतकम्मिया एत्थ पहाणा तेसिं चेव बहुल सम्मत्तरगदणसंभवादो ।

मिच्छ्तधुबद्धिदीदो उवरिमद्िदीख अद्ावीससंतकम्मियमिच्छादिदहीणमच्छणकालो

कालम संचित हुए जीव असंख्यातगुणन्रद्धिके काठ द्वारा संचित हुए जीवोंसे संख्यातगुणे हैं ।

इस प्रकार असंख्यातगुणबृद्धिके योग्य स्थितिके उद्धेलनाकालमें संचित हुए जीवोंसे संख्यात

गुणबृद्धिके योग्य स्थितिके इद्रेखनाकाल्े संचित हए जीव संख्यातगुणे रहते हुए असंख्यात

गुणबृद्धिविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणबुद्धिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे कैसे दो सकते हैं

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योकि असंख्यातगुणवृद्धिके योग्य स्थितिमें रहने

बाले जीवोंमें से सम्यक्त्वको प्राप्न होनेवाले जोबोंसे संख्यातगुणबृद्धिके योग्य स्थितिको

प्राप्त करके सम्यक्स्वको प्राप्त होनेवाले जीव असंरूयातगुणे हैं ।

शंकायह मी किस प्रमाणसे जाना जाता है ९

समाधानसम्यक्त्वको ग्रहण करके जो जीव मिथ्यात्वको श्राप्त हुए हैं वे यदि बहुत

काल तक मिथ्यात्वमें रहते हैं तो उनमेंसे सम्यक्त्वको ग्रहण करनेवाले जीव बहुत थोड़े होते

हैं क्योकि उनका संस्कार नष्ट हो गया है। पर दूसरे अर्थात् मिथ्यात्वे जाकर पुनः अति

शीघ्र सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीव बहुत होते हैं क्योंकि उनका संस्कार नष्ट

नहीं हुआ है ।

शैंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानइसी सूत्रसे जाना जाता है। जिस प्रकार कर्मनिर्जराके द्वारा मुक्त होकर

समीपवर्ती कर्म परमाणु अविनष्ट संस्कारबाले होनेसे कर्मपद्रलपरिवर्वनके भीतर अतिशी

कमेरूपसे परिणत होते दै उसी प्रकार सम्यक्त्वसे मिथ्यात्वमें गये हुए जीव भी थोड़े काल

तक सिथ्यात्वमें रहकर सम्यक्त्वको प्राप्त होते हुए बहुत होते हें ऐसा यहाँ महदण करना

चाहिये । अथवा मिथ्यात्वकी ध्रुवस्थितिसे जिनकी सम्यक्स्वकी स्थिति अधिक है ऐसे

संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव यहाँ प्रधान हैं क्योकि उन्हींका प्रायः कर सम्यक्त्वका ग्रहण

करना संभव है । मिथ्यास्वकी भरुवस्थितिसे उपरिम स्थितियोंमें अद्वाईंस सत्करममवाठे मिथ्या

३८

Page 317:

२९८ जयधवलासहिदे कसायपाहृडे हिदिविहनत्ती ३

पलिदो० असंखेमागमेत्तो । तत्थ एगेगजीवस्स संखेजगुणवह्दीए बंधवारा असंखेजा

अंतोधरहुम्मि जदि एगो संखेजगुणवड्वारों लब्भदि तो पलिदो० असंखे०भाग

मेत्तकालम्मि कि लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्डिदाए असंखेज

वारूबरंभादो । असंखेगुणवदीएः पुण सव्वे जीवा एगवारं चेव पाओग्गा होति तेण

असंखेज्गुणवदहिविहत्तिएहितो संखेजगुणवडिविहत्तिया असंखेजगुणा ।

संखेज्नभागवड्डिकम्मंसिया संखेज्न गुणा ।

५७६ अद्ावीससंतकम्मियमिच्छादृ्रीसु संखेजवारं संखेजभागवदिं कादृण

सदं मिच्छत्तसंखेजगुणवह्ििकरणादो । संखेजगुणवर्डि बहुवारं किण्ण इणंति १ ण

तिव्वसंकिलेसेण पठरं परिणमणसत्तीए अभावादो । सम्मत्तद्विदिसंतादो संखेल

गुणमिच्छत्तद्विदिसंतकम्मिएहिंतो संखेजभागव्भहियमिच्छत्तट्टिदिसंतकम्मिया जेण

संखेजगुणा तेण संखेजगुणबह्विसंतकम्मिएहिंतो संखेजभागवहिसंतकम्मिया संखेजगुणा

त्ति सिद्ध । मिच्छत्तधुबद्धिदिसमाणसम्मत्तद्विदिसंतादो हेट्विमट्ठिदीहि सह सम्मत्त

गेण्हमाणेसु संखे०भागवद्धिविहत्तिएहिंतो संखेजगुणवद्चिविहत्तिया बहुआ असंखेज

गुणवष्धिपाओग्गड्टिदीणं बहुत्तादो संखेजभागवडिपाओग्गटिदीसु एगजीवस्सच्छणकालं

पैक्खिदूण संखेजगुणवडिपाजोग्गद्िदीरु अच्छणकालस्स बहुत्तादो वा । तेण संखेज

इृष्टियोंके रहनेका काल पल्यके असंख्यात भागप्रमाण दे और वहाँ एक एक जीवक

संख्यातगुणबृद्धिके बन्धवार असंख्यात हैं। इस प्रकार यदि अन्तमुंहूर्तकालमें एक संख्यातगुण

बृद्धि बार प्राप्त होता हैः तो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके भीतर कितने बन्ध वारः प्राप्न

होगे इस प्रकार फलछराशिसे इच्छाराशिकों गुणित करके और उसमें प्रमाणराशिका

भाग देने पर असंख्यातबार प्राप्त होते हैं । परन्तु सब जीव असंख्यातगुणबृद्धिके योग्य एक बार

ही होते हैं इसलिये असंख्यातगुणबद्धिविभक्तिबालोंसे संख्यातगुणब्द्धिविभक्तिवाले जीव

असंख्यातगुणे होते हैं ।

9 संख्यातभागबृद्धिकमंवाले जीव संख्यातगुण हैं ।

५७६ क्योंकि अद्ठाईस सत्कर्मवाले मिथ्यादृष्टि जीव संख्यात बार संख्यातभागबृद्धिको

करके एक बार भिथ्यात्वकी संख्यातगुणबृद्धिको करते हैं ।

शंंकासंख्यातगुणबृद्धिको बहुत बार क्यों नहीं करते हैं १

समाधान न्दी क्योंकि तीज्र संछेशके कारण प्रचुरमात्रामें परिणमन करनेकी शक्तिका

अभाव है।

सम्यक्त्वके स्थितिसत्त्वसे संख्यातगरुणे मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मवाले जीवोंकी अपेक्षा

संख्यावभाग अधिक मिथ्यात्वके स्थितिसत्कमंवाले जीव चूँकि संख्यातगुणे हैं अतः संख्यावगुण

बृद्धिसत्कर्मबाले जीवोंसे संख्यातभागबृद्धसत्कर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं यह सिद्ध हज ।

शंकामिथ्यात्वकी ध्रुवस्थितिके समान सम्यक्त्बके स्थितिसत्त्वसे नीचेकी स्थितियोंके

साथ सम्यक्त्वको ग्रहण करनेवाले जीवोंमें संख्यातभागव्रद्धिनिमक्तिवालोंसे संख्यातगुणब्रद्धि

वाले जीव बहुत हैं क्योकि असंख्यातगुणबद्धिके योग्य स्थितियाँ बहुत हैं अथवा संख्याभाग

बृद्धिके योग्य स्थितियोंमें एक जीवके रहनेके कारुको देखते हुए संख्यातगुणबृद्धिके योग्य

Page 318:

गा० २२ द्विदिविदत्तीए बड्ढीए अप्पाबहुओं २९९

भागवड्डिविहत्तिएहिंतो संखेगुणवहिविहत्तिएहि रंखेगुणेहि दोदव्वमिदि १ ण

सण्णीणं मिच्छत्तधुवट्टिदीदो हेद्डिमसम्मत्तद्विदिसंतकम्मेण सम्मत्तं पडिवजमाणेर्दितो

उवरिमद्िदिसंतकम्मेण सम्मतं पडिवजमाणाणमसंखे गुणतादो धक वि आइरिया

एवं भणंति जहा मिच्छचधुवद्ठटिदिसमाणसम्मत्तद्विदिसंतादो उवर्स्मिद्ठिद्सिंतकम्मेहि

सम्मत्तं पडिवजमाणेस संखेजगुणवहिविहत्तिएदिंतो संखेजमागवदधिविहसिया संखेज

गुणा होतु णाम किंतु ते अप्पहाणा अंतोहु्संचिदत्तादो धुवद्डिदीदो हेह्ठिमद्विदीस

संखेजभागवडिविहत्तिया पाणा पलिदो० असंखे मोगसंचिदत्तादो मिच्छत्तण

चिरकालमवड्िदत्तादो च एदेहिंतो संखेज्ञगुणवहिविहत्तिया संखे०गुणा पुव्विल्लाण

म॒ब्वेछणकालादो एदेसिसुव्वेलणकालस्स संखे०गुणतादो मिच्छत्तेण॒ बहुकाल

मबद्ठिदत्तादों च एसो अत्थो जश्बसहाइरिएण हिदिसंकमे परूबिदो दोण्हं वक्खाणाण

मत्थित्तजाणावणहं ।

संखेज्नगुणहाणिकम्मंसिया संखेज्जगणा ।

५७७ कुदो सम्मत्तस्स॒संखेजगुणदाणिकदासेसजीवाणं गणहादो । तं

जहा जेहि सम्मत्तस्स गुणहाणो कदा तेसिं संखेभागमेत्ता जीवा वेदगसम्मत्तं

घेत्तण सम्मत्ष्िदीण संखेजगुणवह्डिं संखे०भागवर्डि च कुणंति सब्वेसि सम्मत्तग्गहण

स्थितियोंमें रहनेका काल बहुत है । अतः संख्यातभागबृद्धि विभक्तिवालोंसे संख्यातगुणबृद्धिवाले

जीव संख्यातगुणे होने चाहिये

समाधाननहीं क्योकि संज्ञियोंकी मिथ्यात्व सम्बन्धी धुवस्थितिसे अधस्तन सम्यक्त्व

स्थितिसत्कर्मके साथ सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीसे उपरिम स्थितिसककमेके साथ सम्यक्व

को प्राप्त होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

कितने ही आचार्य इस प्रकार कहते हैं कि सिध्यात्वकी भुवस्थितिके समान

सम्यक्स्वके स्थितिसत्त्वसे उपरिम स्थितिसस्कर्मके साथ सम्यक्त्वको भ्रा दोनेबाले जीवॉमें

संख्यातगुणबृद्धिविभक्तिवाछोंसे संख्यातभागश्वद्धिविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे होवें किन्तु वे

अप्रधान हैं क्योकि उनके संचित होनेका काछ अन्तमुंहर्त दै । हाँ शुवस्थितिसे अधस्तन

स्थितियोंमें संख्यातभागबृद्धि विभक्तिवाले जीव प्रधान हैं क्योंकि उनके संचित होनेका का

पल्यका असंख्यातवाँ भाग है और मिथ्यात्वके साथ ये चिरकाल तक ववि रहते हे

तथा इनसे संख्यातगुणबृद्धिविभक्तिवाके जीव संख्यातगुणे हैं क्योंकि पूर्वके जीवोंके उद्ेलना

काछसे इनका उद्देलनाकाछ संख्यातगुणा है और ये मिथ्यात्वके साथ बहुत काल तक अवस्थित

रहते हैं। दोनों उयाख्यानोंके अस्तित्वका ज्ञान करानेके लिये यह अथं यतिदृषभ आचायने

स्थितिसंक्रममें कहा है ।

9 संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

५७७ क्योंकि जिन्होंने सम्यक्टवकी सख्यातगुणहानि की है ऐसे सब जीवोंका यहाँ

प्रहण किया है । खुलासा इस प्रकार देजिन्होंने सम्यक्स्वको गुगदानि की है उनके संख्यातवें

मागप्रमाग जोव वेदकधम्यक्त्वको अहण करके सम्यक्स्वकी स्थितिकी संख्यातगुणबृद्धि या

Page 319:

३०० जयघवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती हे

संभवाभावादो । एदं कुदो णव्वदे णएदम्हादो चेव अप्याबहुगादो । तेण संखेजमाग

वड्डिविहत्तिएहिंतो संखेजगुणहाणिविहत्तिया संखेजगुणा त्ति येत्तव्वं ।

संखेञ्नभाग हाणिकम्मंसिया संखेज्जगुणा

५७८ इदो संखेजवारं संखे०भागहाणिं कादृण सहं संखेजगुणहाणिकरणादो ।

अवत्तव्वकम्मंसिथा असंखेज्जगुणा ।

५७९ कदो एगसमएण मिच्छन्तं पडिवजमाणरासिस्स असंखेजमागत्तादो ।

जदि सखम्मत्तादो भिच्छ्तं गंतृण तत्थ थोवकालमबहिदा पउरं सम्मतं गेण्हंति तो

अवत्तव्वविहत्तिएहि संखेजभागवड्डिविहत्तिणहिंतो थोवेहि दोदव्वं १ ण च एवं

संखेजभागवदहिविहत्तिएहितो अवत्तव्वविहत्तिया असंखेजञगुणा त्ति सुत्तम्हि उबहइत्तादो

तति १ ण एस दोसो जेसिं जीवाणं सम्मत्तस्स ट्विदिसंतकम्ममत्थि ते अस्सिदृण तदा

परूविदत्तादो । ते अस्सिदृण परूविद्मिदि इदो णव्वदे १ असंसेजगुणवदिविहत्तिए्दितो

संखेजमुणवद्धिविहत्तिया असंखेजञगुणा त्ति रुत्तादो णव्बदे । अण्णहा संखेजगुणा

दोज असंखेअगुणवड़िपाओगगद्िदीहिंतो संखेजगुणवह्िपाओग्गदिदीणं संखेजगुणत्तादो

संख्यातभागबृद्धिको करते है क्योकि सवका सम्यक्त्वका ग्रहण करना संभव नहीं है ।

शंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानइसी अन्पबहूत्वसे जाना जाता है ।

इसलिए संख्यातभागबृद्धिविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणहानिविभक्तिवाले जीव संख्यात

गाणे हैं ऐसा ब्रहण करना चाहिये ।

9 संख्यातभागहानिकमवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

५७८ क्योकि संख्यात बार संख्यातभागहानिको करके जीव एक बार संख्यातगुण

हानिको करता है । मति

अवक्त जीव असंख्यातगुणे है ।

५७९ क्योकि एक समयमे मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाली जीवरारिके वह् असंख्यातवें

भागभ्रमाण है ।

शंकायदि सम्यक्त्वसे मिथ्यात्वमें जाकर और वहाँ स्तोक का तक अवस्थित रहकर

प्रचुर जीव सम्यक्वको ग्रहण करते हैं तो अवक्तव्यविभक्ति वाके जीव संख्यातभागबृद्धिविभक्ति

वाले जीवोंसे थोड़े होने चाहिये परन्तु ऐसा है नहीं क्योकि संख्यातभागबृद्धिविभक्तिवालोंसे

अवक्तव्यविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुण हैं ऐसा सूत्रमें उपदेश दिया है

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि जिन जीवोंके सम्यक्त्वका स्थितिसत्कम है

उनकी अपेक्षा उस प्रकार कथन किया है ।

शंकाउनकी अपेक्षा कथन किया है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है

समाधानअसंख्यातगुणब्रद्धिविभक्तिवारेोसे संख्यातगुणब्द्धिविभक्तिवारे जीव

असंख्यातगुणे है इस सूत्रसे जाना जाता है। अन्यथा संख्यातगुणे होते क्योंकि असंख्यातगुण

इद्धिके योग्य स्थितियोंसे संरयातगुणनरद्धिके योग्य स्थितियों संख्यातगुणी हैं और उनमें संचित

Page 320:

गा० २२ ह द्िदिविदत्तीए बड्ढीए अप्पाबहुओं ३०१

तत्थ संचिदजीवाणं पि तेण सरूवेण अवहाणादो च । एगसमयम्हि जे मिच्छत्तमुवगया

सम्मादिष्िणो तेसिमसंखेजदिमागो चेव वेदगसम्मत्तं पडिव्जदि । तेसिं पि असंखे०

भागो असंखेयुणवद़ीए उवसमसम्मत्तं पडिवज्ञदि । सेसा असंखेजभागा सम्मत्त

सम्मामिच्छत्ताणि उव्वे्निय णिस्संतकम्मिया होति त्ति एसो भावस्थो । एदं कथं

दे १ पंचहि ५ बेहिंतो

णव्वदे १ पंचहि पयारेहि सम्मत्तं पडिवज्रमाणजीवेहिंतो अवत्तव्वनिदत्तिया असंखेज

गुणा ति सुत्तादो णव्वदे । ण च अवत्तव्वविहत्तिएसु अणादियमिच्छादिद्धीणं पदाणत्तं

तेसिमइुत्तरसयपरिमाणत्तादो णदं कुदो णव्वदे १ णिच णिगोदेिंतो चडगइणिगोदेसु

पविसंताणमणादियमिच्छादिद्रीणं सम्म्तं पडिवजमाणाणं चडउगइणिगोदेहिंतो सिज्ञ

माणाणं च पमाणसुकस्सेण अद्ु्तरसदमिदि प्रमगुरूबदेसादो णच्वदे । तेण सादिय

मिच्छादिद्टिणो तत्थ पहाणा त्ति सिद्धं। ते च एगसमएण मिच्छर्त गच्छमाण

जीवितो विसेसहीणा आयाणुसारिवयाभावे सादियमिच्छादिद्टीणं बोच्छेदप्यसंगादो ।

अवत्तव्वं दुणमाणजीवाणं कारो जदण्णेण एगसमओ उक ० आवलियाए असंखेजदि

मागमेत्तो । एदं पमाणं आवलि असंखेभागमेत्तसन्वोवकमणकंडयाणं जहण्णेण

एगसमयमुकस्सेण अंतोगुहत्ततराणं परूविदं एवं संचिदतचतादो । अवच्तव्वविहत्तिया

असंखेजगुणा त्ति किण्ण वुचदे १ ण सम्मत्त पडिवजमाणाणं सन्वेसि पि एदस्स

हुए जोर्वोका भी अवस्थान उसी रूप हे ।

५८१ एक समये जो सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्रात हुए हैं उनका असंख्यातवां

भाग ही वेदकसम्यक्त्वको ग्राप्त होता दै । तथा उनका भी असंख्यातवाँ भाग असंख्यातगुण

बृद्धिके साथ उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त द्योता है। तथा शेष अप्तंख्यात बहुभाग जीव सम्यक्त्व

और सम्यम्मिथ्यात्वकी उद्देलना करके निःसत्त्वकरमवाले होते हैं । यह इसका भावार्थ है ।

शंकायह कैसे जाना जाता है ९

समाधानभांच प्रकारसे सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीबोंसे अवक्तव्यविभक्तिवाले

जीव असंख्यातगुणे हैं इस सूत्रसे जाना जाता ह । और अवक्तव्यविभक्तिवाले जीवॉमें अनादि

मिथ्यादृष्टियोंकी प्रधानता नहीं हे क्योंकि उनका प्रमाण एक सो आठ है ।

शंकायह किस प्रमाण से जाना जाता है

समाधाननित्यनिगोदसे च तुगेतिनिगोदमे प्रवेश करनेवाले जीवोंका सम्यक्त्वको

प्राप्त दोनेवाले अनादि मिथ्यादृष्टि जीवोंका और चतुर्गतिनिगोदसे सिद्ध होनेवाले जीवोका

उत्कृष्ट प्रमाण एक सौ आठ है इस प्रकार परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है इसलिये सादि

मिथ्यादृष्टि जीव वहां षान हैं यह सिद्ध हुआ और वे एक समयमे मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले

जीवोंसे विशेष दीन हैं क्योंकि आयके अनुसार व्यय नहीं माननेपर सादि मिथ्यादृष्टियोके विच्छेद

का प्रसंग प्राप्त होता है। अवक्तव्यको करनेवाले जीवोंका जघन्य काछ एक समय और उत्क्रष्ट

काल अवछिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । यह प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सर्वोप

क्रमण काण्डकोंके जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अन्तमुहूतेप्रमाण अन्तरोका कहा है क्योंकि

इसी प्रकार उनका संचय होता है ।

शुंकाअवक्तव्यविभक्तिवाले जीव असंल्यातगुणे हैं ऐसा क्यों नहीं कहा १

Page 321:

३०२ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे छ्विदिविद्दत्ती हे

कालस्स साहारणत्तादो एदं इदो णब्वदे १ तिण्णिबड्डितिण्णिहाणिअबड्डाणाणं

कारो जह० एगसमओ उक० आवलियाए असंखे०भागमेत्तो त्ति महाबंधसुत्तण

मणिदत्तादो । ण त्त आवलि० असंखे०भागमेत्तेण अवत्तव्वस्स संच अत्थि

जहण्णुकस्सेण एगसमयसं चिदत्तादो ।

असंखेज्न भागद्ाणिकम्मंसिया असंखेञ्नगुणा ।

8 ५८० इदो सगअसंखे ०भागेणूणसम्मत्तसम्मामिच्छत्तसंतकम्मियाणं

सब्वेसि पि गहणादो ।

अणंताणुबं धीएं सव्व॒त्थोवा अवत्तव्वकम्मंसिया ।

५८१ कदो १ अणंताणुबंधिचउक॑ विसंजोहय मिच्छन्तं पडिवज्ञमाणजीवाणं

गहणादो ।

असंखेजगुणहाणिकम्मंसिया संखेज्नखुणा ।

५८२ कुदो १ संखेजसमयसं चिदन्तादो । अवत्तव्वनिहत्तिया एगसमयसंचिदा

एगसमयसंचिदअसंखेगुणहाणिकम्मं स्सिया सरिसा । दंसणमोहणीयं खवेमाणसंखेज

जीवेहि ऊणत्तस्स अविवक्खाए असंखेजगुणहाणिह्टिदिकंडयाणं पदणवारा जेण

संखेजञसहस्समेत्ता तेण तत्थ संचिदजीवा वि संखे०गुणा त्ति सिद्धं। एगसमएण

समाधान नदी क्योकि सम्यक्स्व को भ्राप्त होनेवाले समीके यद् काल साधारण हे ।

शंकायह किस प्रमाणसे जाना जाता दे ९

समाधान तीन इड्धि तीन हानि और अवस्थानका जघन्य काल एक समय और

उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें मागध्र माण है इस प्रकार महाबन्धके सूत्रमें कहा है इससे

जाना जाता है। और आवलिके असंख्यातवें भाग कालके द्वारा अवक्तव्यविभक्तिबालोंका

संचय नहीं होता क्योकि उनके संचित होनेका जघन्य और उत्कृष्ट कार एक समय ह ।

9 असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

६ ५८० क्योंकि जितने सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वसत्कर्मंबाले जीव हैं उनमेंसे

असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंको कम करके शेष सभी सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वसत्कमवाछे

जीवोंका ग्रहण किया है । ९

अनन्तालुबन्धीके अवक्तव्यकमंव ले जीव सबसे थोड़े है ।

५८१ क्योकि यहां अनन्ताठुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना करके मिथ्यात्वको प्राप्त

होनेवाले जीवोंका ग्रहण किया द ॥

असंख्यातगुणहानिकमवाले जोव संख्यातगुणे हैं ।

३ ५८२ क्योकि उनके संचित होनेका काल संख्यात समय दै । अवक्तन्यविभक्तिवाङे

जीव एक सभयके द्वारा संचित होते हैं जो एक समयमे संचित हुए असंख्यातगुणहानिवालोंके

समान हैं दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले संख्यात जीवोसे रहितपनेकी विवक्षा न करनेपर

चूंकि असंख्यातगुणहानिस्थितिकाण्डकोंके पतन होने के वार संस्यात हजार हैं इसलिये वहां

संचित हुए जीव भी संख्यातगुणे हैं यह सिद्ध हुआ । इसका यह भावाथ है कि एक समयमें

Page 322:

गा० २२ हिदिविहत्तीए बड़ढोए जप्पावहुजं ३०३

जक्तिया जोवा अणंताणुबंधिचडउकविसंजोयणमाटवेंति तत्तिया चेव ॒ एगसमयम्मि

असंखेजगुणहाणिमवत्तव्वं च कुणंति त्ति एसो भावत्थो ।

सेसाणि पदाणि सिच्छुत्त भगो ।

५८३ सेसाणं पदाणमप्पाबहुअं जहा मिच्छत्तस्स परूविदं तहा परूबेदव्वं ।

तं जहाअसंखेजगुणहाणिविहत्तियाणझुवरि संखे गुणहाणिकम्मंसिया असंखेजगुणा

जगपद्रस्स असंखे भागपमाणत्तादो । संखेजञमागहाणिकम्मंसिया संखेग्गुणा ।

संखेजगुणवड्डिकम्मंसिया असंखेगुणा । संखे०भागवड्डिकम्मंसिया संखे०गुणा ।

असंखेभागवष्टिकम्मंसिया अणंतगुणा । अब्िदविहत्तिकम्मंसिया असंखेगुणा ।

असंखे मागहाणिकम्मंसिया संखे०गुणा । एवं चुण्णिसुत्तत्थपरूबर्ण काऊण संपदि

उच्चारणा बुचदे ।

५८४ अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहों णिदेसोओघेण आदेसेण य । तत्थ

ओघेण मिच्छत्तबारसक०णवणोक० सव्वत्थोवा असंखे गुणहाणिकम्मंसिया । संखे०

गुणहाणिकम्मं सिया असंखेजगुणा । संखे०भागहाणिक० संखेगुणा । संखेगुणवहिक०

असंखेगगुणा । संखेभागव डिक० संखेगुणा । असंखेभागवडिक० अणंतगुणा ।

अवद्डिदक ० असंखे०गुणा । असंखेग्भागहाणिक० संखे०्मुणा अणंताणु

चउकस्स सब्वत्थोवा अवत्तव्वकम्मंसिया । असंखे०गुणहाणिक० संखे०गुणा। सेसं

जितने जीव अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजनाका प्रारंभ करते हैं उतने ही जीव एक समय

में असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्यको करते हैं ।

शेष पद मिथ्यात्व के समान हैं ।

५८३ शेष पदोंका अल्पबहुत्व जिस प्रकार सिथ्यात्वका कहा है उस प्रकार कहना

चाहिये । जो इस प्रकार हैअसंख्यातगुणहानिविभक्तिवाछोंसे संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं क्योंकि उनका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इनसे संख्यात

भागहानिकर्मबाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धिकमेबाले जीव असंख्यातगुणे

हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धिकमवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागबवृद्धि कर्मवाले

जीव अनन्तगुणे हैं । इनसे अवस्थितविभक्तिकर्मबाले जीव असंख्यातणुणे हैं । इनसे असंख्यात

भागहानिकर्मवाले जीव संख्यावगुणे हैं । इस प्रकार चूर्णिसूत्रोंके अथंका कथन करके अब उच्चारणा

का कथन करते हैं।

५८४ अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका हैओघ और आदेश ।

डनमेंसे ओघकी अपेक्षा मिथ्यात्व बारह कषाय ओर् नौ नोकषायोके असंख्यातगुणहानिकर्मवाे

जोव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणहानिकर्मवारे जीव असंख्यातगुणे ई । इनसे संख्यात

भागद्वानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे है । इनसे ख्यातगुणटृद्धिक्मेवारे जीव असंख्यातगुणे

है । इनसे संख्यातभागवृद्धिकमंबाले जीव संख्यातगुणे दै । इनसे असंख्यातभागबृद्धिकमंवाले

जीव अनन्तगुणे हैं । इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंस्यातभाग

हानिकमेवाठे जीव संख्यातगुणे है । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यकर्मवाल जीव

सबसे थोड़े हैं । इनसे असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। शेष भंग मिथ्यात्वके

Page 323:

३०छ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदस्ती ३

मिच्छत्तभंगो । सम्पत्तसम्मामिच्छन्ताणं सब्वत्थोवा असंखे०गुणहाणिकम्मंसिया ।

५ ५ असंखे त

अवद्िदक० असंखे गुणा । असंसेभागवहिक गुणा । असंखे गुणवद्धिक

असंखे गुणा । संखे गुणवहिक० ० असंखे ० गुणा । संखे भागवदिक संखे ०गुणा । संखे०

गुणहाणिक० संखेगुणा । संखे मागहाणिक० संखे गुणा । अवत्तच्वकम्मंसिया

असंखे०गुणा । असंखे मागहाणिक० असंखे०गुणा । गुणगारो पुण सव्बपदाणं पि

आवलि० असंखे० मागो ।

५८५ आदेसेण णेरइएसु मिच्छ्तबारसक०णवणोक० सन्वत्थोवा संखे०

गुणहाणिकम्मं सिया । संखेगुणवहिक ० विसेसादिथा । संखे ० भागवह्ििसंखे ० भागहाणि

कम्म॑सिया दो वि सरिसा संखेग्युणा । असंखे०भागवह्चिकम्मंसिया असंखेगुणा ।

अवड्टिदक० असंखेगुणा। असंखे ० भागहाणिक ० संखेजगुणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताण

मोघं । अणंताणुचउक सव्वत्थोवा अवत्तव्वकम्मंसिया । असंखेगुणदाणिक०

संखेजगुणा । संखे गुणहाणिक० असंखे०शुणा संखे गुणवद्धिक ० विसेसाहिया ।

सेखं मिच्छत्तमंगो । एवं पटमाणए । विदियादि जाव सत्तमि त्ति एवं चेव । णवरि

संखे गुणवडिसंखे गुणहाणिकम्मंसिया दो पि सरिसा ।

५८६ तिरिक्चेसु ओघं । णवरि बावीसपयडीणमसंखे गुणहाणी णत्थि ।

समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्याबगुणहानिकमवारे जीव सबसे

थोड़े है । अवस्थितकर्मबाले जीब असंश्यातगुणे हैं । असंख्यातभागबृद्धिकर्मंवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातगुणबृद्धिकमंबाले जीव असंर यातगुणे हैं। संख्यातगुणवद्धिकम

वाङे जीव असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागबद्धिकमंबाले जीव संख्यातगुणे है । संख्यात

गुणह्ञानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं।

अवक्तव्यकमंत्राठे जीव असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिकर्म वाले जीव असंस्यातगुगे

हैं । परन्तु समी पदोंका गुणकार आवलिके असंरतयातवें भागप्रमाण है ।

५८५ आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नो नोकषायोंकी

अपेक्षा संख्यातगुणहानिकरमंबाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणबृद्धिकमेवाले जीव

विशेष अधिक हैं । इनसे संख्यातभागबृद्धि और संख्यातभागहानि कर्मवाले जीव ये दोनों समान

होते हुए भी संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागबृद्धिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं।

इनसे अवस्थितकर्मवारे जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकमंबाले जीव

संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा ओघके समान भंग है । तथा अनन्तानु

बन्धीचतुष्कको अपेक्षा अवक्तव्यकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे असंख्यातगुणहानि

कर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे

संख्यातगुणबृद्धिकर्मवाले जीव विशेष अधिक हैं। शेष भंग मिथ्यात्वके समान है। इसी

प्रकार पहली प्रथिवीमें जानना चाहिये। दूसरीसे छेकर सातवीं प्रथिवी तक इसी प्रकार

जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता हे कि यहाँ संख्यातगुणबुद्धि और संस्यातगुणहानि

कमवाछे ये दोनों ही प्रकारके जीव समान हैं ।

५८६ तियश्चोमे ओधघके समान भंग दै । किन्तु इतनी विशेषता दै कि इनमें वाईस

प्रकृतियोंकी असंख्यातगुणदानि नदीं द । पंचेन्द्रिय तियेश्नत्रिकका भंग मारकियोंके समान है ।

Page 324:

गा० २२ ट्विदिविदृत्तीए बड़ढीए अप्पाबेंडुअं ३०५

पं्चिदियतिरिक्खतियस्स णेरइयभंगो । एडंदिएहिंतो पंचिंदियतिरिक्खतियम्मि उप्पजिय

संखे०गुणवर्डि संखे०भागवरड्डि च कुणमाणा जीवा कि वेप्यंति आहो ण वेप्पंति १

जदि ण वेप्पति तो वबिदियादिषुढविणेरइएसु व संखेगगुणवहिकम्मंसिया

संखेगगुणहाणिकम्मंपिएहि सरिसा होति । अह पेष्पंति संखे०मागदहाणिकम्मं सिएर्दितो

संखेगुणवद्िकम्मं सिया ओषधे इव असंखेजगुणा दज । ण च मग्गणविणासभएण

ण उप्पादजंति णेरदणएसु वि तहा पसंमादो त्ति । एत्थ परिहारो उचवदे ण तव ण

चेष्यति क्ति अथन्धुबगमादो । ण च संखेगुणदहाणिविहत्तिए हितो संखे०भागहाणि

विहत्तिएर्हितो च संखे०गुणवडिबिहत्तियाणमसंखेजगुणत्तं सत्थाणे संखे०गुणहार्णि

कुणमाणजीवाणमसंखे ०भागमेत्ताणं संखे मागमेत्ताणं वा एहडंदिएहिंतो पंचिंदियतिरिक्ख

तियम्मि उप्पत्तीदो । तेण कारणेण पंचिं०तिरि०तियम्मि संखे०शुणहाणिविहत्तिए हिंतो

संखे०गुणवद्िषिहत्तिया विसेसाहिया जादा । जदि एवं तो ओषम्मि कथं संखे ०भागहाणि

विहत्तिएहिंतो संखे०गुणवड्डिविहत्तियाणमसंखे युणत्तं १ ण एइंदिएहिंतो विगलिंदिए

सुप्पजिय संखेजगुणवदहिं कुणमाणजीवे पड़च तत्थ असंखेगगुणत्तं पडि विरोहाभावादो ।

संखे ०भागहाणिविहत्तिए हिंतो संखे ० भागवड्डिविद्दत्तियाणं तिरिक्खेसु कथं सरिसत्त१ कथं च

क्का ण्केनद्योमिसे पंचेन्द्रिय तियश्त्रिकमें उत्पन्न होकर संख्यातगुणबद्धि और संख्यात

भागबृद्धिको करनेवाले जीव यहाँ क्या महण किये हैं या नहीं ग्रहण किये हैं यदि ग्रहण

नहीं किये हैं तो द्वितीयादि प्रथिवियोंके नारकियोंके समान यहाँ भी संख्यातगुणबृद्धिकमेबाले

जीव संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीवोंके समान प्राप्न होते हैं। यदि महण किये हैं तो

संख्यातभागहानिकर्मवालोंसे संख्यातगुणबूद्धिकमबाले जीव ओघके समान असंख्यातगुणे हो

जायेंगे । और मार्गणाके विनाशके भयसे नहीं उत्पन्न कराते हैं सो भी बात नहीं है क्योंकि

नारकियोंमें भी उस प्रकारका प्रसङ्ग प्राप्त होता है ।

समाधानआगे इस शंकाका समाधान करते हुए आचाये कहते हैं कि नहीं ग्रहण

करते हैं यह पश्च इष्ट नहीं है क्योंकि इसे स्वीकार नहीं किया है। और संख्यातगुणहानि

विभक्तिवाढोंसे तथा संख्यातभागहा नविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणबृद्धिविभक्तिवाछे जीव

असंख्यातगुणे हैं नहीं क्योंकि स्वस्थानमें संख्यातगुणद्वानिको करनेवाले जीवोंके असंख्यातवें

भागमात्र या संख्यातवें भागमात्र जीव एकेन्द्रियोंमेंस पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमे उत्पन्न होते हैं

इसलिये पंचेन्द्रिय ति्यत्न्रिकर्में संख्यातगुणहानिविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणबद्धिविभक्तिवाले

जीव विशेष अधिक हुए।

शंकायदि ऐसा है तो ओघं संख्यातभागहानिविभक्तिवालोंसे संख्यातगुणबृद्धि

विभक्तिवाले जीव असंख्यातरुणे कैसे द्वोते हैं

समाधाननहीं क्योकि एकेन्द्रियोंमेंसे बिकलेन्द्रियोंमें उत्पनन होकर संख्यात

गुणवृद्धिको करनेवाले जीबोंकी अपेक्षा वहाँ असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंकासंख्यातभागद्ानिविभक्तिवालछों से संख्यातभागवृद्धिविभक्तिवके जीर्वोकी

पंचेन्द्रिय तिमिं समानता कैसे हे १

३९

Page 325:

३०६ जयधवलासदिदेः कसायपाहुडे दिदिविहत्ती ३

ण सरिसत्तं १ एहंदियविगलिंदिएहिंतो पंचिदियअपजत्तजहण्णट्विदिबंधादों संखे०

भागेणूणट्विदिसंतेण पंचिंदिएसुप्पण्णेस संकिलेसेण विणा जाइबलेणेब संखे०भागव्डि

दंसणादो ण सरिसत्त । ण विगलिंदिएहिंतो संखे०मागहाणिद्िदिकंडयमाटविय

पंचिदिएसुप्पण्णसंखे ० भागहाणिद्विदिविहत्ति याणं पुव्विल्लसंखे भागवडिट्विदिविहत्तिए

हितो सरिसत्तादो । एदमत्थपदमण्णत्थ वि वत्तव्वं ।

५८७ पंचिंदियतिरिक्खमणुस्सअपज० मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ० णेरइयमंगो।

अणंताणु चउक० णेरहयमिच्छतभंगो । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सब्बत्थोवा असंखे०

शुणहाणिसंतकम्मिया । संखे०गुणहाणिसंतक० असंखे०ग्रुणा संखे०भागहाणिसंतक०

असंखे०गुणा । चुण्णिसुत्ते संखेजगुणा तति भणिदं मज्ज्िमविसोदिवसेण पदमाणत्तादो ।

उचारणाए पुण असंसेजगुणतं वुत्तं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि मिच्छत्तादि

कम्मेहि सरिसाणि ण दति भिण्णजादित्तादो । तेण एदेसिं दोण्डं कम्माणं संखेज

गुणहाणिविहृत्ति एहिंतो संखे ० भागहाणिविद्दत्तिया असंखेगुणा होति चि उचारणाइरिएण

लद्धुवण्सो असंखेज भागहाणिक ० असंखे०गुणा । एवं पंचिदियअपजत्ताणं ।

च८८ सणुस्सेस बावोसं पयडीणं सव्वत्थोवा असंखे०शुणहाणिक० ।

प्रतिशंकासमानता क्यों नहीं है

शंकाकार पचेन्दरिय अपयाप्तकोंके जघन्य स्थितिबन्धसे संख्यातवें भागकम स्थिति

सत्त्वके साथ जो एकेन्द्रिय और विकरेन्द्रिय जीव पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते ह उनके संक्लेश

के बिना केवछ जातिके बलसे संख्यातभागवृद्धि देखी जाती है अतः समानता नहीं है १

समाधान नी क्योंकि विकलेन्द्रयोमे संख्यातभागहानि स्थितिकाण्डकको आरम्भ

करके पंचेन्द्रियोम उत्पन्न होनेवाले संख्यातभागहानिस्थितिविभक्तिवाटे जीव पूर्वोक्त

संख्यातभागव्द्धिस्थितिविभक्तिवारे जीवक समान होते हैं। यह अर्थपद अन्यत्र भी

कहना चादिये ।

६ ५८७ पचेन्द्रयतिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्त जीवोमें मिथ्यास्व बारह

कषाय और नौ नोकषायोंका भंग नारकियोके समान दै । अनन्तानुबन्धीचुष्कका भंग

नारकियोंके मिथ्यात्वके समान डे । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वको अपेक्षा असंख्यात्

गुणहानिसस्कर्मवाले जीव सबसे थोड़े है । इनसे संख्यातगुणहानिसत्कर्मंवाले जीव असंख्यातगुणे

है। इनसे संख्यातभागहानिसत्कर्गवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। वर्णिसूत्रमे इन्हें संख्यातगुणा

कहा है क्योकि मध्यम विशुद्धिके कारण उनका पतन हो जाता है। परन्तु उच्चारणामें असख्यात

गुणा कदा है । सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्व मिथ्यात्व आदि कर्मो के समान नहीं दोते क्योकि

इनकी भिन्न जाति है अतः इन दोनों कर्मोकी संख्यातगुणद्यनिविभक्तिवालोसे संख्यातभाग

हानिविभक्तिवाले जीव असंर्यातगुणे होते हैं उच्चारणासे इस प्रकार उपदेश प्राप्त हुआ इनसे

असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार पंचेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंके

जानना चाहिये । ति

५८८ मनुष्योंमें बाईस प्रकृतियोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिक जीव सबसे

Page 326:

गा० २२ हिदिविहत्तीए वड़्ढोए अप्पाबहुअ ३०७

संखे०गुणहाणिक० असंखे०गरुणा। संखे०गुणवहठिक० विसेसाहिया संसे०मागवहि

संखे०भागहाणिक० दो वि सरिसा संखे०गुणा । असंखे०भागवद्चिक० असंखे ०ग्रुणा ।

अवट्टि० असंखे०्गुणा। असंखेमागहाणिक० संखेजगुणा । अणंताणु०

चउक० णेरहयभंगो । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सब्बत्थोवा अवब्डि० ।

असंखेभागवडि० संखे गुणा । असंखेयुणवडि संखे०गुणा । संखे०गुणवड्डि०

संखेगुणा । संखे भागवषि संखे०्गुणा अवत्तव्च० संखेन्गुणा । असंखेगुण

हाणि० असंखेव्गुणा । संखेग्गुणहाणि असंखे०्युणा । संखे०भागहाणि०

असंखेगुणा जश्वसहुवएसेण संखेजगुणा । असंखेभागहाणि असंखेजगुणा ।

एवं मणुसपजत्त मणुसिणीणं । णवरि जत्थ असंखे गुणं तत्थ ॒संखेगुणं कायव्वं ।

५८९ देवाणं णेरहयभंगो । एवं भवणवासियवाणवेंतरदेवाणं जोडसियादि जाव

सहस्सारकप्पो ति विदियपुढविभंगो । आणदादि जाव णवगेवज्ञा त्ति बावीसं पयडीणं

सव्वत्थोवा संखे भागहाणिकम्मंसिया । असंखे०भागहाणिकम्मंसिया असंखेगगुणा ।

सम्मत्तस्स सब्बत्थोचा असंखे०गुणहाणिक० । संखे गुणहाणिक ० विसेसादिया ।

असंखेमागवद्िकम्मंसिया असंखेग्युणा । असंखे गुणवहिक० असंखे्युणा ।

थोड़े दै । इनसे संख्यातगुणदहानिकर्मवाके जीव॒ असंख्यातरुणे द । इनसे संख्यातगुणबृद्धि

कर्मवाङे जीव विशेष अधिक हैं । इनसे अंख्यातभागबवृद्धि और संख्यातभागद्वानिकमंबाले ये

दोनों परस्पर समान होते हुए भी संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यताभागबृद्धिकमंवाले

जीव असंख्यातग़ुणे हैं । इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंस्यातगुणे दँ । इनसे असंख्यात

भागहानिक् वाले जीव संख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग नारकियोंके समान है ।

सम्यक्त्त्र और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अवस्थितविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे

असंख्यातभागवृद्धिवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातगुणबृद्धिवाले जीव संख्यातगुणे

हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धिबाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातभागबृद्धिवाले जोव

संख्यातगुणे हैं। इनसे अवक्तव्यविभक्तिवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातगुणदानि

वाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणद्वानिवाले जीव असंख्यातगुणे हैँ । इनसे

संख्यातभागहानिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । पर यतिचृषभ आचार्यके उपदेशानुसार संख्यातगुणे

हैं। इनसे असंख्यातभागहानिविभक्तिवाले जीव असंख्यातगुणे दै । इसी प्रकार मनुष्यपयोप्त

ओर सनुष्यनियोंमें जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ पर असंख्यातगुणा

है वहाँ पर संख्यातगुणा करना चाहिये ।

५८९ देबोंका भंग नारकियोंके समान है। इसी प्रकार भवनवासी और व्यन्तर

देवों जानना चाहिये। तथा ज्योतिषियोंसे लेकर सदार कल्पतकके देबोंमें दूसरी

प्रथिवीके समान भंग है । आनत कल्पसे लेकर नौग्रेवेयकतकके देवोंमें बाईस प्रकरतियोंकी अपेक्षा

संख्यातभागहानिकमेवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जोव

असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वको अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकर्मबाले जीव सबसे थोड़े हैं।

इनसे संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव विशेष अधिक हैं। इनसे असंख्यातभागबृद्धिकर्मबाले जीव

असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातगुणइड्धिकर्मबाके जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसेः संख्यात

Page 327:

३०८ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे हिदिविहत्ती हे

संखे युणवड़िक असंखे०गुणा । संखे०भागवड्डिक० संखे गुणा । संखे ०मागहाणिक०

असंखेगुणा । अवत्तच्च असंखेगगुणा । ।असंखे०भागहा ०क ० असंखे०गुणा ।

एवं सम्मामिच्छन्तस्स वि वत्तव्वं । णवरि असंखे गुणदहाणिसंखे गुणहाणिक०

बे वि सरसा कायव्वा। अणंताणुन्चउक्० सव्वत्थोवा अवत्तव्व० ।

असंखेगयुणदाणि संखे ग्गुणा । संखे०गुणहाणि० संखेगुणा । संखेगमागहाणि

संखेगुणा। असंखे०भागहाणि० असंखेन्युणा । अणुदिसादि जाव अवराइदो

ति मिच्छन्तबारसक०णवणोक० आणदर्भगो । सम्मामि० मिच्छत्तमंगो । सम्मतत०

सव्वत्थोवा संखे गुणहाणि । संखे०भागहाणि० असंखेगुणा । असंखे०भागहाणि०

असंखेगुणा । अणंताणु चउक० आणदभंगो । णवरि अवत्तव्वं णत्थि । एवं सब्बई ।

णवरि संखे गुणं कायव्वं ।

५९० इदियाणुवादेण णंदिएसु भिच्छततसोलसक०णवणोक० सव्वत्थोवा

संखे गुणदाणिकम्मं सिया । संखे मागहाणिक ० संखे ० गुणा। असंखे ० भागवड्डिक ० अणंत

गरुणा। अवड्डविदक० असंखेग्युणा । असंखे०भागहाणिक० संखेजगुणा । सम्मत्त

सम्मामिच्छन्ताणं सव्वत्थोवा असंखे०शुणहाणिक० । संखे०गरुणदाणिक असंखे०

गुणबद्धिकमेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागबृद्धिकमंवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

इनसे संख्यातभागहानिकमेबाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे अवक्तव्यविभक्तिबाले जीव

असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागद्वानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार

सम्यग्मिथ्यात्वका मौ कथन करना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणहानि

ओर संख्यातगुणदानिकमेवाञे इन दोनोंको भी समान करना चाहिये। अनन्तानुबन्धी

चतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यविभक्तिवाले जीव सबसे थोड़े दै । इनसे असंख्यातगुणदानिवारे

जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातगुणद्वानिवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागदानि

वाले जीव सुंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागहानिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। अनुद्शिसे

छेकर अपराजित तकके देवोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंका भंग आनत

कल्पके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग मिथ्यात्वके समान है । सम्यक्त्वकी अपेक्षा

संख्यातगुणहानिवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यातभागद्वानिवाले जीव असंख्यातगुणे

हैं। इनसे असंख्यातभागद्दानिवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धी चतुष्कका भंग भानव

कल्पके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि वहाँ अवक्तव्य पद् नहीं है । इसी प्रकार

सर्वार्थंसिद्धिमें जानना चाहिये । किन्तु इतनी विशेषता है कि सर्वाथंसिद्धिमे सर्वत्र संख्यातगुणा

करना चाहिये ।

५९० इन्द्रियमार्गणाके अनुबादसे एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व सोलह कषाय और नौ

नोकषायोंकी अपेक्षा संख्यातगुणहानिकर्मंवाले जीव सबसे थोड़े दै । इनसे संख्यातभाग

हानिकमेवाके जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागबृद्धिक्मंबाले जीव अनन्तगुणे

हैं। इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागद्वानिकर्मबाले

जीव संख्यातगुण हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्यातगुणद्वानिक्मवाले

जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणद्वानिकर्मबाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यात

Page 328:

गा० २२ ॥ हिदिविदत्तीए बड़्ढीए अप्पाबहुअं ३०९

गुणा । संखे०भागहाणिक० असंखे०गुणा । असंखे०भागहा०क० असंखेगगुणा ।

एवं बादरसुहुमेइंदियपजत्तापजत्ताणं । विगलिंदिएस मिच्छत्तसोलसक णवणोक ०

सव्वत्थोवा संखे०गुणद्वाणिकम्मंसिया । संखे०भागव्डिहाणिकम्मंसिया दो वि

सरिसा संखे०गुणा । असंखेजमागवद्धिक० असंखे०गुणा । अबद्ध असंखे०गुणा।

असंखे०भागहाणि० संखे०शुणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सच्वत्थोवा असंखे०

गुणहाणिक० । संखे०गुणहाणिक० असंखे०गुणा । संखे०भागहाणिक० असंखे०

गुणा । असंखे०भागहाणिक० असंखे०गशुणा।

५९१ पंचिंदियपंचिं०पजत्तएसु मिच्छत्तबारसक०णवणोकसायाणं सब्वत्थोवा

असंखे०गुणहाणिक० । संखे०गुणहाणिक० असंखे०गुणा । संखे०गुणवद्डिक०

विसे । संखे०भागवड्डि० संखे०भागहाणिक दो वि तुल्ला संखे०्शुणा।

असंखे०भागवहिक० असंखेगुणा । अवहिदड्डिदिविहत्तियकम्मंसिया असंखे०

गुणा। असंखेभागहाणिक० संखे०्गुणा। अणंताणु वंधीणं सब्बत्थोबा

अवक्तव्वफम्मंसिया । असंखे ०गुणहाणिक० संखे०गुणा । सेसपदाणि मिच्छत्तभंगो ।

सम्मत्तसम्मामिच्छन्ताणं सव्वत्थोवा असंखे गुणहाणिक । अवहिदक० असंखे०

गुणा । असंखे०भागवड्डिक० असंखे०गुणा । असंखे०ग्रुणबड्डिक असंखेगुणा ।

भागहानिकर्मव के ज व असंख्यातगुणे है । इनसे अकंख्यातभागदानिकमेवाे जीव असंख्यात

गाणे हैं । इसप्रकार आदर ओर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पयीप्त ओर अपर्याप्न जी वमे जानना चाहिये ।

विकडेन्दरियोमे मिथ्यास्व सोलह कषाय और नौ नोकषा्योकी अपेक्षा संख्यातगुणहानि

कर्मवाके जीव सबसे थोड़े है । संख्यातभागगशद्धि और संख्यातभागहानिकर्मबाले ये दोनों

समान होते हुए भी संख्यातगुणे दै । इनसे असंख्यातभागबृद्धिकर्मंबाले जीव असंख्यातगुणे

है इनसे अवस्थितकमेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले

जीव संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्यातगुगहानिकमेवाङे

जीव सबसे थोड़े है । इनसे संख्यातगुणहानिकर्मताले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे

संख्यातभागहानिकमेवाञे जीव असंख्यातगुणे है । इनसे असंख्यातभागहानिकमंवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं ।

५९१ पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ

नोकषायोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकमवारे जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यात

गुणहानिकर्मवाछे जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धिकमंबाले जीव विशेष

अधिक हैं । इनसे संख्यातभागबृद्धि और संख्यातभागहानिकमंवाले ये दोनों तुल्य होते हुए

भी संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातमागरद्धि कर्म॑बारे जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे अवस्थित

स्थितिविभक्तिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यकमंवाले जीव सबसे थोड़े हैं।

इनसे असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं । शेष पदोंका भंग मिथ्यात्वके समान

है । सम्यक्त्व ओर सम्यम्मिथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े

हैं। इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हें। इनसे अर्संख्यातभागबृद्धिकमंबाले जीव

Page 329:

३१० जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती ३

संखे०गुणवड्डिक ० असंखे०गुणा । संखे०भागवड्डिक संखे०गुणा । संखे०गुण

हाणिकम्मंसिया संखे०गुणा । संखे०मागहाणिक असंखे०गुणा। जश्वसहाइरिय

उवएसेण संखे०गुणा । अवत्तब्बकम्मंसिया असंखे०गरणा । असंखे०भागहाणिक०

असंखे०गुणा ।

५९२ कायाणुवादेण सव्वचठकाएसु मिच्छन्तसोलसक ०णवणोकसाय

सव्वस्थोवा संखे गुणहाणिक० । संखे०भागहाणिक० संखेन्गुणा । असंखे०

भागवड्डिक असंखेगगुणा । अबदड्िदक० असंखे०गुणा । असंखे०भागहाणिक०

संखे०्युणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं एइंदियभंगो। एवं बादरवणप्फदि०पत्तेय

सरीराणं । सबव्ववणप्फदिसव्बणिगोदाणमेइंदियमंगो । तसकाइयतसका पजत्तएसु

पंचिदियभंगो । तसअपज़त्तएसु पंचिदियअपजत्तभंगो ।

५९३ जोगाशुबादेण पंचमण ०पंचयचिनोगीसु मिच्छत्तबारसक ०णवणोक०

सव्वत्थोवा असंखे०मुणहाणिकम्मंसिया । उवरि बिदियपुढविभंगो । अथवा

सब्वत्थोवा असंखे०गुणहाणिक० । संखे०गुणवड्धिक० असंखे०्युणा। संखे०गुण

हाणिक० विसेसाहिया खबगसेढीए संखेगुणहाणि कुणमाणजीवेहि । संखे०भाग

बहिक० संखेण्गुणा। संखेगमागहाणिक० विसेसा० खबगसेढीए संखे०भाग

असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातगुणबद्धिकमेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुण

बृद्धिकर्मबाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागबद्धिकमेबाले जीव संस्यातगुणे हैं ।

इनसे संख्यातगुणदयानिकमेवारे जीव संख्यातगुण है । इनसे संख्यातभागदानिकर्मवाले जीव

असंख्यातगुणे दै । पर यतिदृषभ आचार्यके उपदेशसे संख्यातगुणे हैं । इनसे अवक्तब्यकमेवाले

जीव असंख्यातगुण हैँ । इनसे असंख्यातभागह्ानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५९२ कायमागेणाके अनुवादसे प्रथिवी आदि चार कायवालोंके सब भेदोंमें मिथ्यात्व

सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा संख्यातगुणद्वानिकर्मबाले जीव सबसे थोड़े हं । इनसे

संख्यातमागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंखरूयातभागबृद्धिकमंबाले जीव

असंस्यातगुणे हैं। इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हं इनसे असंख्यातभागदानि

कर्मबाले जीव संख्यातगुणे है । सम्यक्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग एकेन्द्रियोंके समान द ।

इसी प्रकार बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके जानना चादिये । सब वनस्पतिकायिक

और सब निगोद जीबंका भंग एकेन्द्रियोंके समान दै । त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त

जीवॉका भंग पंचेन्द्रियोंके समान है । तथा त्रसअपयोप्तकोंका भंग पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके

समान है ।

५९३ योगमार्गणाके अनुबादसे पांचों मनोयोगो ओर पांचों बचनयोगी जीवोंमें मिथ्यात्व

बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकर्मबाले जीव सबसे थोड़े हैं ।

इसके आगे दूसरी प्रथिवीके समान् भंग दै । अथवा असंख्यातगुणद्वानिकर्मवाले जीव सबसे

थोड़े हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धिकमंबाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातगुणहानिकमेबाले

जीव क्षपकश्रेणीमें मात्र संख्यातगुणहानिको करनेवाले जीबोंकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं।

इनसे संख्यातभागद्द्धिकर्मवाके जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातमागहानिकमेव ङे जीव

Page 330:

गा० २२ हिदिविहत्तीए वडढीए अप्पाबहुअं ३११

हाणिं कुणमाणजीबेहि । असंखे०भागवड्डिक असंखेग्गुणा । अवद्धिद्क० असंखे०

भुणा । असंखेभागहा० संखे गुणा । अणंताणुबंधीणं सव्व॒त्थोवा अवत्तव्वकम्मंसिया ।

असंखेगुणहाणिक संखेग्युणा । संखेगुणहाणिसंखेगुणवड्िक० दो वि सरिसा

असंखे०गुणा । विसंजोयणाए संखे गुणहाणिकंडयजीवेहि हाणी विसेसाहिया त्ति

कण्ण भणिदा १ ण विदियादिपुटविणेरएसु विसेसादियत्तप्पसंगादो ण च

एवयुचारणाए तत्थ तासि सरिसत्तपरूवणादो । तत्थाहिप्पाओ जाणिय चत्तव्वो ।

संखे०भागहाणि०संखे ० भागव डिकम्मंसिया दो बि सरसा संखेन्गुणा। उवरि

मिच्छत्तमंगो । सम्मत्तसम्मामिच्छ्ताणं मूलोधभंगो।

५९४ कायज्ञोगीसु सव्वकम्मसव्वपदाणं मूलोधभंगो । ओरालिकायजोगीसु

मणजोगिभंगो । णवरि छब्बीसं पयडीणमसंखे भागवडि अणंतगुणा । ओरालिय

मिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा संखेगुणहाणिक० । संखे०भागहाणिक० संखेगुणा ।

संखे०गुणवहिक० असंखेगुणा । संखेमागव्टिक संखेगुणा । असंखे भागवडिक०

अणंतगुणा । अवहि० असंखेगुणा । असंखे ०भागहाणि० संखे०गुणा । एदमप्पाबहुओं

क्षेपकश्रेणीमे मात्र संख्यातभागदानिको करनेबाले जीवोंकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं। इनसे

असंख्यातभागबृद्धिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे

हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातराणे हें । अनन्तानुबन्धी दि चतुष्कको

अपेक्षा अवक्तव्यकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे असंख्यातगुणहांनिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धि और संख्यातगुणहानिकर्मबाले ये दोनों समान होते

हुए भी असंख्यातगुणे हैं । ।

शंकाविसंयोजनामें संख्यातगुणदानिकाण्डकवले जीवोंकी अपेक्षा हानि विशेष

अधिक है यह क्यों नहीं कदा ९ ह

समाधाननहीं क्योकि ऐसा कथन करनेसे दूसरी आदि प्रथिवियोंके नारकियोंमें

विशेषाधिकपनेका प्रसंग प्राप्त होता है। और ऐसा उच्चारणामें है नहीं क्योकि वहां उनकी

समानताका कथन किया है । अतः अभिप्राय समझकर यहां कथन करना चाहिये ।

इनसे संख्यातभागहानि और संख्यातभागवृद्धिकमेवक्े ये दोनों समान होते हुए

भी संख्यातगुणे हैं। ऊपर मिथ्यात्वके समान भंग है । तथा सम्यक्त और सम्यम्मिथ्यात्व

का भंग मूलोघके समान है ।

५९४ काययोगियोंमें सब कर्मोके सब पदोंका भंग मूखोघके समान है। ओदारिक

काययोगियोंका भंग मनोयोगी जीवोंके समान है । किन्तु इतनी विशेषता है कि इनमें छब्बीस

्रकृतियोकी अपेक्षा असंख्यातमागबृद्धिकर्मवाले जीव अनन्तगुणे हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें

संख्यातगुणद्वानिकमंवाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातभागंहानिकर्मेबाले जीव संख्यातगुणे

हैं । इनसे संख्यातगुणबृद्धिकमेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागबद्धिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागबृद्धि कमेवाले जीव अनन्तगुणे हैं। इनसे अवस्थितकर्मवाले

जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागद्ानिकमेबाले जीव संख्यातगुणे हैं । यह अल्पबहुत्व

Page 331:

३१२ जयधवलासदिदे कसायपाहडे द्विदिविद्दत्ती हे

छब्बीसं पयडीणं दड्वव्यं । व सव्वत्थोवा असंखेगगुणदाणि

क० । संखे०गुणदहाणिक० असंखेग्युणा संखे०भागहाणिक० उच्चारणाए अहिष्याएण

भरल जद जईवसहगुरूबणएसेण संखेजगणा असंखे ० भागहाणिक० असंखेगुणा ।

५९८ कायजोगीु मिच्छत्तबारसक०णवणोक० सब्वत्थोवा संखे०

गुणहाणि संखे ० गुणव्डिकम्मंसिया दो वि सरिसा । संखे०भागवह्डिसंखे०भागहाणि०

3 भ नि 8 र

दो वि सरिसा संखेगुणा । असंखे०भागवद्डि० असंखेगुणा । अवद्टि असंखे०

9 9 मूलोषभंगो

गुणा । असंखे०मागहाणि संखेगुणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं मूलोयभंगो ।

अगंताणुबंधोणं सव्वत्थोवा अवत्तव्व० असंखे०गुणद्वाणि० संखे०गुणा। संखे०

गुणवहि संखें०गुणहाणि० दो वि असंखें०गुणा। उवरि मिचत्तभंगो ।

५९६ वेउव्वियमिस्स० छव्वीसं पयडीणं सब्वत्थोवा संखे०गुणहाणि० संखे०

गुणव्टि० विसेसाहिया । संखे०भागवड्डि ०संखे०भागहाणि० दो वि सरिसा संखे०

गुणा । असंखे ०भागवड्डि० असंखे ०गुणा। अवद्धि असंखे०गुणा। असंखे०भागहाणि०

संखे०गुणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सव्वत्थोवा असंखे०गुणदाणिक० । संखे०गुण

दाणिक० असंखे०गुणा। संखे०मागदाणिक० असंखे०गुणा संखे०गुणा वा।

छब्बीस प्रकृतियोंका जानना चाहिए। सम्यवत्व और सम्यग्निथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्यात

गुणहानिकमेवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संस्यातगुणहानिकमवारे जीव असंख्यातगुणे

है । इनसे संस्यातभागहानिकर्मवाछे जीव उच्चारणाके अभिप्रायानुसार असंख्यातगुणे हैं। पर

यतिबृषभगुरुके उपदेशानुसार संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागद्धानिकमेवाङे जीव

असंख्यातगुणे हैं ।

५६५ वेक्रियिककाययोगियों में मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंको अपेक्षा

संख्यातगुणहानि और संख्यातगुणबृद्धिकमंबाले ये दोनों समान होते हुए भी सबसे थोड़े हैं।

इनसे संस्यातभाग्व्द्धि ओर संस्यातभागहानिकमेवाखे ये दोनों समान होते हुए भी संख्यातगुणे

हैं । इनसे असंस्यातमागन्रद्धिकर्मवाठे जीव असंख्यातगुणे दै । इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव

असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंस्यातभागहानिकर्मवाखे जीव संस्यातगुणे हैँ । सम्यक्टव और

सम्यग्मिथ्यात्वका भंग मूलोघके समान दै । अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यकमंबाले

जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे असंख्यातगुणहानिकमबाले जीव संख्यातगुणे हैं इनसे संख्यात

गुणबृद्धि और संख्यातगुणद्दानिकमंवाले जीव ये दोनों समान होते हुए भौ असंख्यातगुणे हैं ।

ऊपर भिथ्यात्वके समान भंग है

५९६ बेक्रियिकमिश्र काययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा संख्यातगुणहानिकर्म

वाले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणचद्धिकमेबाठे जीव विशेष अधिक है । इनसे

संख्यातभागवृद्धि जौर संख्यातमागहानिकमेवारे ये दोनों समान होते हुए भी संख्यातगणे हैं ।

इनसे जसंख्यातभागदद्धिकर्मेवांङे जीव असंख्यातगुणे है । इनसे अवस्थितकर्मवारे जीव

असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागहानिकमवाले जीव संख्यातगुणे दै । सम्यक्त्व और

सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकमेवार जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यात

गुणद्वानिकेबाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागहानिकमंबाे जीव असंख्यातगुणे

Page 332:

गा० २२ हिदिविहत्तीए बड़ढोए अप्पाबहुअं ३१३

असंखेमागहाणिक असंखेगुणा । ह

५९७ कम्मश्य०जोगीसु छब्बीसं पयडीणं सब्व॒त्थोवा संखे०गुणहाणिक० ।

संखे०भागहाणिक० संखे०गुणा । संखे०गुणवद्धि० असंखेयुणा । संख०भागवह्वि०

संखे०गुणा । असंखे०भागवद्धि० अणंतगुणा। अवदि असंखे०गुणा। असंखे०

भागहा० संखे०गुणा । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमोरालियमिस्स०भंगो । एवमणाहारीणं ।

8 ५९८ आहारआहारमिस्स० अद्कावोसं पयडीणं णत्थि अप्पाबहुअं एग

पदत्तादो । एव्मकसायजहाक्खाद ०सासणाणं ।

५९९ बेदाणुवादेण इस्थिपुरिसमेदणसु मिच्छत्तसोलसक ०णर्बणोक ०

सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं पंचिदियर्भगो । णउंसय० अड्भावीस पयडीणं मूलोधमंगो ।

वि ५

अवगदवेदणसु मिच्छत्तसम्म्तसम्मामि०अद्टकसाय इत्थिणवुंसयवेदाणं सन्वत्थोवा

संखे०भागहाणिकम्मंसिया । असंखे०भागहाणिक० संखे०गुणा । एवं सत्तणोकसाय

तिसंजलणाणं । णवरि संखे०गुणहाणी जाणिय वत्तव्वा । लोभसंजलणस्स सव्वत्थोवा

संखेग्गुणहाणि । संखेभागहाणि संखे०गुणा । असंखे ०भागहाणि०

संखे०गुणा । कसायाणुवादेण चदुण्हं कसायाणं मूरोष्भगो ।

६०० णाणाणुवदिण मदिञण्णाणिसुदजण्णाणीसु मिच्छत्तसोलसक०

हैं या संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागद्ानिकमेवाले जीबअसंख यातगुणे हैं। 0 कमजा

५९७ कार्मणकाययोगियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा संख्यातगुणदानिकमेवाखे जीव

सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यातभागदानिकमेवाखे जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणबृद्धि

कर्मवालछे जीव असंख्यातगणे हैं । इनसे संख्यातभागदृद्धिकमेवारे जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे

असंख्यातभागन्द्धिकमेवार जीव अनन्तगुणे हैं। इनसे अवस्थितकर्म वाले जी ब असंख्यातगुणे

हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मबाले जीव संख्यातगुणे हैं। सम्यकत्व और सम्यम्मिथ्यात्वका

भंग औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान है । इसी प्रकार अनाहारक जीवोंमें जानना चाहिए।

५९८ आहारककाययोगी और आहासकमिश्रकाययोगियोंमें अद्दाईस अकृतियोंकी

अपेक्षा अल्पबहुत्व नहीं है क्योंकि यहां असंख्यातभागहानिरूप केवछ एक पद् है। इसी

प्रकार अकषायी यथाख्यातसंयत और सासादनसम्यम्दष्टियोंमें जानना चाहिये ।

६५९९ चेदमार्गणाके अनुवादसे सखीवेदी ओर पुरुषबेदी जीबोंमें मिथ्यात्व

सोलह कषाय नौ नोकषाय सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका भंग पंचेन्द्रियोंके समान है।

नपुंसकवेदियोंमें अद्ाईस प्रकृतियोंका भंग मूछोघके समान है। अपगतवेदवाले जीवों

मिथ्यात्व सम्यवत्व सम्यम्मिथ्यात्व आठ कषाय खीवेद ओर नपुंसकवेदकी अपेक्षा संख्यात

भागहानिकर्मबाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं इसी प्रकार सात नोकषाय और तीन संज्वलनोंकी अपेक्षा जानना चाहिये।

किन्तु इतनी विशेषता है कि संख्यातगुणहानिका कथन जानकर करना चाहिये। छोभ

संज्वलनकी अपेक्षा संख्यातगुणहानिवाल्ले जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातभागदानिकमेवाले

जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागद्दानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। कषायमार्गणाके

अलुवादसे चारों कषायोंका भंग मूलोघके समान हे ।

६०० ज्ञानमार्गंणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यात्व सोलह

Page 333:

३१४ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविहती ३

णवणोक० सब्वत्थोवा संखे०गुणहाणिक० । संखे०भागहाणिकम्मंसिया संखे गुणा ॥

9 क्त् ध्य् भ्य

संखे ०गुणवड्डिक ० असख गुणा । संखे०भागवड्डिक ० सख ०गुणा ॥ असख०

भागबड्डिक० अणंतगुणा । अवद्धि असंखे०गुणा । असंखे०भागहाणि० संखे०गुणा ।

सम्मत्तसम्मामि सव्वत्थोवा असंखे०गुणहाणि०। संखे०गुणहाणिक० असंखे०

गुणा । संखे०भागहाणिक० असंखे०गुणा संखे०गुणा वा । असंखे०भागहाणि०

असंखे०गु णा । एवं मिच्छादि०असण्णीणं । विहंगणाणीसु छब्बीसं पयडीणं सव्वत्थोवा

संखे०गुणवड्डिहाणिकम्मंसिया सरिसा। संखे०भागवड्डिहाणिक० सरिसा संखे०

कप क्प क्प 9

गुणा । असंसखे भागवदहि असंखे०गुणा अवट असंखेगुणा । असंखे ०भागहाणि ०

संखे ० गुणा । सम्मत्तसम्मामि० मदिअण्णाणिभंगो ।

६०१ आभिणि०सुदओहिणाणीसु मिच्छत्तबारसक ०णवणोक ०

सव्वत्थोवा असंखे०गुणहाणिग्क०। संखेगुणहाणिक० असंखे ०गुणा ।

संखे०भागहाणिकम्मंसिया संखेग्गुणा । असंखे०भागहाणिक० असंखे ०गुणा ।

अणंताणुबंधीणं सव्व॒त्थोवा असंखे०ग्रुणहाणिक० । संखे०गुणहाणिक० विसंजोयण

आज है 9 9 णि ति

रासीए पदाणत्ते संखेजगुणा । महत्लह्विदीए सह सम्मतं घेत्तण संखे गुणहाणि करेमाण

कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव् खबसे थोदे है।

इनसे संस्यातभागहानिकर्मवङे जीव संख्यातगुणे दै । इनसे संख्यातगुणबुद्धि

क्वा जीव असंख्यातगुणे है । इनसे संख्यातभागबृद्धिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं।

इनसे असंख्यातभागबृद्धिकर्मवाले जीव अनन्तगुणे हैं। इनसे वस्थितकमेव ले जीव असंख्यात

गणे है । इनसे असंख्यातभागहानिक्मवारे जीव संख्यातगुण हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व

की अपेक्षा असंख्यातगु णहानिकमेवाखे जीव सबसे थोड़े दै । इनसे संख्यातगुणदानिकमवाठे

जीव असंख्यातगुणे दै । इनसे संख्यातभागहानिकर्मबाले जीव असंख्यातगुणे या संख्यातगणे

हैँ । इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार मिथ्यादृष्टि और

असंक्षियोंमें जानना चाहिये । विभंगज्ञानियोंमें छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा संख्यातगुणबृद्धि

और संख्यातगुणदानिकममवाङे जीव समान होते हुए भी सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यातभागइद्धि

और संख्यातभागहानिकमेबाले जीव समान होते हुए भी संख्यातगुणे है । इनसे असंख्यातभाग

वृद्धिकमेवाले जीव असख ख्यातगुणे हैं इनसे अवस्थितकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे

असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव॒ संख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग

सत्यज्ञानियोंके समान है ।

६०१ आभिनिबोधिवज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीबोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय

और नो नोकषायोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यात

गुणहानिकर्मवाले जीव अस ख्यातगुणे हैं। इनसे सख्यातभागहानिकर्मबवाले जीव सख्यात

गुणे हैं । इनसे असंख्यातभागद्वानिकमंबाले जीव अस ख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धियोंकी अपेक्षा

अस ख्यातगुणहानिकर्मवारे जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संस्यातगुणहानिकर्मवारे जीव

विसंयोजना जांवराशिकी प्रधानता रहते हुए सं ख्यातगुणे दै । पर बढ़ी स्थितिके साथ

सम्यक्त्वको ग्रहण करके संख्यातगुणदहानिको करनेवालो जीवराशिको प्रधानता रहते हुए

Page 334:

गा० रर ट्विदिविहत्तीए बड्ढीए अप्पाबहुअं ३१५

रासीए पहाणत्ते संते संखे०गुणा असंखे०गुणा वा दोण्हमेगद्रणिण्णयाभावादो ।

संखे ०भागहाणिक० संखे०गुणा । असंखे०भागहाणिक० असंखे०शुणा । सम्मत्त

सम्मामि० सव्वत्थोवा असंखे ० गुणहाणिक ० । संखेजगुणहाणिक० असंखेग्युणा । संखे०

भागहाणिक० संखे०शुणा । असंखे०भागहाणिक० असंखेज्लगुणा । एवमोहिदंस०

सम्मादिद्वीणं मणपज्ञवणाणीसु अडावीसं पयडीणं सब्वत्थोवा असंखे०मुणहाणि० ।

संखे०गुणहाणि० संखे०गुणा । संखे मागहा० संखेगुणा । असंखे०भागहा० संखे०

गुणा । एवं संजदसामाइयछेदो ०संजदाणं ।

६०२ संजमाणुबादेण परिहार० दंसणतिय अणंताणु चउक्ष० सन्वत्थोवा

असरंखेगुणहाणिक० । संखेगुणहाणिक० संखेजगुणा । संखे०भागहा० संखेगुणा ।

असंखे०मागहाणिक० संखेगुणा । एकवीसपयडीणं सब्वत्थोवा संखे०भागहाणि०

असंखे०भागहा० संखे०गुणा । सुहुमसांपराइय० लोभसंजल० सब्बत्थोवा संखे०गुण

हाणि० । संखे०भागहाणिक० संखे०ग्रुणा । असंखे०भागहा० संखे०शुणा । सेसपयडीणं

णत्थि अप्पाबहुअं । णवरि दंसणतियस्स सव्वत्थोवा संखे ०भागहाणि० । असंखे ० भागहा ०

संखे०गुणा । संजदासंजद्० दंसणतियस्स॒सव्वत्थोवा असंखे०गुणहाणिकम्मंसिया ।

संख्यातगुणे हैं या असंख्यातगुणे हैं क्योंकि दोनोंमेंसे किसी एकका निणेय नहीं किया जा सकता ।

इनसे संख्यातभागद्ानिकमंवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकमेबाले जीव

असंख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्व और सम्यस्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अप्ंख्यावगुणद्ञानिकरमेवाले जीव

सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे द । इनसे संस्यातभाग

हानिकमेवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इससे असंख्यातभागदानिकर्मवारे जीव असंख्यातगणे

है । इसी प्रकार अवधिदर्शनवांछे और सम्यम्दष्टि जीवोंके जानना चाहिये। सनःपर्येयज्ञानियोंमें

अट्ठाईस प्रकृतियोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणह्ानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे

संख्यातगुणहानिकर्मबाटे जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे दै । इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे दै। इसी प्रकार

संयत सामायिकसंयत ओर छेद्दोपस्थापनास यत जीवोंके जानना चाहिये ।

६०२ सयम सार्गणाके अनुवादसे परिहारविशु्धिसयतोंमें तीन दर्शनमोहनीय और

अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा अस ख्यातगुणहानिकर्मवाडे जीव सबसे थोड़े हे ॥ इनसे

सख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव स खुयातगुणे हैं । इनसे ख स्यातमागहानिकमवारे जीव

सल्यातगुणे है। इनसे असः स्यातमागदानिकमेवारे जीव स ख्यातगुणे दै । इकीस

प्रकृतिर्योकी अपेक्षा सख्यातमागहानिकर्मबाल जीव सबसे थोड़े दै । इनसे अखख्यातभाग

हानिकर्म वाले जीव संस्यावगुणे ह । सुदससांपरायिकसंयसेमिं छोभसंज्बलनकी अपेक्षा संख्यात

गुणद्ानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े दै । इनसे सख्यातभागहानिकर्मवाले जीव स स्यातगुणे दै ।

इनसे जस ख्यातभागहानिकर्मवाले जीव सख्यातगुणे दै । यहाँ शेष प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व

नहीं है । किन्तु इतनी विशेषता है कि तीन दशेनमोहनीयकौ अपेभ्वा सख्यातभागदानि

कर्मबाले जीव सबसे थोड़े हैः । इनसे असख्यातभागहानिकमेवाले जीव सख्यातगुणे दै ।

सयतासयतंमि तीन दर्शनमोहनीयकी अपेश्चा असख्यातगुणदानिकमेवाे जीव

Page 335:

३१६ जयघधवछासदिदे कसायपाहुडे छविदिविहत्ती ३

संखे०गुणहाणिक० संखेगुणा । संखे०भागहा० असंखे०गुणा । असंखे०भागहा०

असंखे०गुणा । अणंताणु०चउक० सव्वस्थोवा असंखे०गरुणहाणि० । संखे०गुणहा०

संखे०्युणा । संखे०भागहाणि० संखे०गुणा । असंखे०भागहाणि० असंखे गुणा ।

एकवीसपयडीणं सब्वत्थोवा संखे०भागहाणि० । असंखे०मागहाणि० असंखेजगुणा ।

असंजदेसु दंसणतियअणंताणुबंधिचउकाणं मूलोधभंगो । एकवीसपयडीणं पि मूलोघ

भंगो चेव । णवरि असंखेजगुणहाणी णत्थि ।

६०३ दंसणाणुवादेण चक्खु द॑सणीखु अहावीसं पयडीणं तसपजत्तभंगो ।

अचक्खुदंसणीणं मूलोघभंगो ।

६०४ लेस्साणुवादेण किप्हणीलकाउलेस्सिय० अद्भावीसं षयडीणं मूलोघ

भगो । णवरि वावीसं पयडीणमसंखेजगुणदाणी णत्थि । तेउपम्मलेस्सिय ० मिच्छत्त ०

सव्वत्थोवा असंखे०गुणहाणि० । संखे गुणवद्ि०संखेग्गुणहाणि दो वि सरिसा

असंखे०गुणा । संखे०भागवड्डिहाणि० दो वि सरिसा संखे०गुणा । असंखे भागवर््धि ०

असंखे०्युणा । अवट्ि असंखे०्युणा । असंखे०भागहाणि० संखेण्गुणा ।

कवीसपयडीणं 4 प अणंताणुवंधी 9

एवमे । णवरि असंखेगुणहाणी णत्थि । णं सन्वत्थोवा

सबसे थोडे दै । इनसे सख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सख्यातगुणे है । इनसे सख्यात

भागहानिकर्मवाले जीव असख्यातगुणे है । इनसे अस ख्यातभागहानिकर्म वाले जीब अस ख्यात

गणे है । अनन्तासुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा असख्यातगुणहानिकम वाले जीव सबसे थोड़े है ।

इनसे सख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सख्यातगुण है । इनसे सख्यातभागहानिकमंबाले जीव

सख्यातगुणे है । इनसे असख्यातभागहानिकमंवाले जीव असख्यातगुणे है। इच्तीस

प्रकृतियोंकी अपेक्षा सख्यातभागहानिकर्मंवाल जीव सबसे थोड़े है । इनसे अस ख्यातमाग

हानिकमेबाले जीव अस ख्यातगुण है । असयतोंमें तीन दशेनमोहनीय और अनन्तानुबन्धी

चतुष्कका भंग ओघके समान है। इक्तीस अकृतियोंका भी भंग मूलोघके समान है। किन्तु

इतनी विशेषता है कि यहाँ असख्यातगुणद्वानि नहीं है ।

६०३ दर्शनसार्गणाके अनुवादसे चश्षुदर्शनवालछोंमें अद्ाईस प्रकृतियोंका भंग त्रस

पर्याप्कोंके समान है। तथा अचछ्षुद्शेनवालोंका भंग मूछोघके समान दे ।

8 ६०४ छेश्यामार्गणाके अनुवादसे ऋष्ण नील और कापोतल शयावा जीवों

अद्वाईस प्रकृतियोंका भंग सूछोघके समान ह । किन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ बाईस

प्रकृतियोंकी जख ख्यातगुणद्वानि नहीं है। पीत और पद्मल श्यावालॉमें मिथ्यात्वकी अपेक्षा

अस ख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े दै । इनसे सख्यातगुणबृद्धि और सख्यातगुण

हानिकर्मवाले ये दोनों समान होते हुये भी अस ख्यातशुणे है। इनसे सख्यातभागइद्ध और

सख्यातभागहानिकर्मवार ये दोनों समान होते हुए भी संख्यातगुणे दै । इनसे असख्यातभाग

यृद्धिकम वाल जीव॒ असख्यातगुणे हैं। इनसे अवस्थितकमेबाले जीव असंख्यातगुण ह ।

इनसे असंख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार इकीस

प्रकृतियोंकी अपेक्षा जानना चाहिये। किन्तु इतनी विशेषता दे है कि यहाँ असख्यात

गुणद्यानि नहीं ह । अननन््तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यकर्मवाले जीव सबसे थोड़े

Page 336:

गा० २२ ट्विद्विहत्तीए वड्ढीण अप्पाबहुअं ३९७

अवक्तव्य । असंखे०गुणहा० संखेगुणा । संखे गुणवहिहाणि असंखेग्युणा ।

उवरि मिच्छत्त्भगो । सम्मत्त सम्मामि मूलोघभंगो । सुकलेस्साए मिच्छत्तबारसक०

णवणोक० सव्वत्थोवा असंखेगगुणहाणि० । संखे युणहाणि असंखे०गुणा । संखे०

भागहाणि संखेगुणा । असंखे०भागहा० असंखेगुणा । अणंताणुबंधोणं सच्वत्थोवा

अवत्तव्व ० । असंखे०गुणहाणि० संखेगुणा । संखे०गुणहाणि० संखेनगुणा । संखे०

मागहाणि संखेजगुणा । असंखे भागहा० असंखेगुणा । सम्मत्त० सव्वत्थोवा

अवद्विद० । असंखे गुणहाणिक० असंखेगुणा । संखेगुणहाणिक विसेसादिया ।

असंखे०भागवड्डि० असंखेगुणा । असंखे ०गुणवड्डि० असंखे गुणा । संखे गुणवदि

असंखेव्गुणा । संखे०भागवड्डि संखेजगुणा । संसेज्ञमागहाणि असंखे०गुणा ।

अवत्तव्व असंखेगुणा । असंखे०भागहा० असंखे०गुणा। एवं सम्मामिच्छत्तस्स वि।

६०५ भवियाणुबादेण भवसिद्धिय० मू रोध्भंगो । अभवसि छ्बीसं

पयडीणं सच्वत्थोवा संखे गुणहाणिक० । संखे०मागहाणिक० संखेगुणा । संखे०

गुणवदहिक० असंखेगुणा । संखे०भागवड्डिक० संखेगुणा । असंखे०भागवहिक०

है । इनसे असंख्यातगुणहानिकर्मेवाले जीव संख्यातगुणे है । इनसे संख्यातगुणबृद्धि और

संख्यातगुणदानिकमेबाले ये दोनों समान होते हुएभी असंख्यातगुणे हैं। ऊपर मिथ्यात्वके

समान भंग द्वै। सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वका भंग मूलोघके समान है।

शुक्लेश्याबालोंमें मिथ्यात्व बारह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा

असंख्यातगुणद्वानिकर्मंवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यातगुणहानिकमंबाले जीव

असंख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातभागहानिकमंवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यात

भागहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा अवक्तव्यक्मबाले

जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे असंख्यातगुणहानिकर्मबाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यात

गुणहानिकर्मेबाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागदानिक्मवाठे जीव संख्यातगुणे हैं।

इनसे असंख्यातभागहानिकर्म वाले जीव असंख्यातगुणे हैं। सम्यवत्वकी अपेक्षा अवस्थितकर्मेबाले

जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे असंख्यातगुणहानिकमंबाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे

संरुयातगुणहानिकरमवाले जीव विशेष अधिक हैं। इनसे असंख्यातभागबृद्धिकर्मवाले

जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातगुणवरद्धिकर्मवारे जीव अखख्यातगुणे हैं। इनसे

संख्यातगुणबृद्धिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे संस्यातभागन्रद्धिकमव ठे जीव संख्यात

गुणे हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे अवक्तव्यकर्मवाले

जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मंबाले जीव असंख्यातगुणे हैं । इसी

प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वका भी कथन करना चाहिये ।

६०५ भव्यसार्गणाके अलुवादसे भव्योंका भंग मूछोघके समान है। अभव्योंमें

छब्बीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा संख्यातगुणहानिकर्मवारे जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यात

भागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातगुणवद्धिकर्मवारे जीव असंस्यातगुणे

हैं । इनसे संख्यातभागव्ृद्धिकमंवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागवृद्धिकर्मवाले

Page 337:

३१८ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे द्विदिविद्दसी ३

अणंतगुणा । अवद्ठिद० असंखे०मुणा । असंखे०भागहा० संखे०गुणा।

६०६ सम्मत्ताणुवादेण वेदगसम्माद दीस मिच्छत्तसम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं

सव्वत्थोवा असंखेगुणहाणिक० । संखेगगुणहाणिक० असंखे गुणा । वेदगसम्भत्तं

घेत्तण अंतोहु्म्भ॑तरे संखेजगुणहाणिं कुणमाणअसंखे०जीवग्गहणादो । संखे०भाग

हाणि० संखेजगुणा अण॑ताणु ०बंधिचउक॑ विसंजोए माणेसु संखे ० भागहाणिं कुणमाणजीवा

असंखे०गरुणा किण्ण होति १ ण तेभि पमाणविसयउवणएसाभावेण तदग्गहणादो ।

असंखे०भागहाणि० असंखेगगुणा । एकवीसं पयडीणं सन्वत्थोवा संखेजगुणहाणि

कम्म॑सिया । संखे०भागहाणिक० संखेण्गुणा । असंखे०भागहाणि० असंखेगुणा ।

अणंताणुबंधीणं सव्वर्थोवा असंखेगुणदाणि ० । संखेगुणहाणि संखे ०शुणा असंखे०

गुणा वा। संखे०भागहाणि० संखेजगुणा । असंखेभागहाणि असंखेगुणा ।

खद्यसम्मादिद्दीसु एकवीसपयडीणं सब्वत्थोवा असंखे गुणहाणि । संखेगुणहाणि

संखे०्युणा संखेमागहाणि संखेगुणा । असंखे भागहा० असंसे गुणा ।

उवसमसम्मादिदीस अडवौसं पयडीणं सब्वत्थोवा संखे मागहाणिकम्मंसिया ।

जीव अनन्तगुणे दै । इनसे अवस्थितकमेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातमाग

हानिकर्मवाले जीव संख्यावगुणे हैं ।

६ ६०६ सम्यक्त्वमागैणाके अनुवादसे वेदकसम्यस्दष्टियोंमें मिथ्यात्व सम्यक्त्व और

सम्यम्मिथ्यास्वकी अपेक्षा असंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यात

गुणहानिकमेवाले जीव असंख्यातगुण दै क्योंकि यहाँ वेदकसम्यवस्वको ग्रहण करके अन्तमुंहू्तके

भीतर संख्यातगुणहानिको करनेवाले असंख्यात जीवोंका अहण किया है। इनसे संख्यातभाग

ह्वानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं ।

शंकाअनन्तानुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना करनेवाले जीवोंमें सख्यातभागहानिको

करनेवाले जीव असख्यातगुणे होते हैं ऐसा क्यो नहीं अहण किया १

समाधान नदी क्योंकि उनका कितना प्रमाण है इस प्रकारका कोई उपदेश नहीं

पाया जाता अतः उनका ग्रहण नहीं किया ।

इनसे असंख्यातभागहानिकमेवाले जीव ष असंख्यातगुणे हैं। इक्कीस प्रकृतियोंकी

अपेक्षा संख्यातगुणहानिकर्मबालें जीव सबसे मते थोड़े हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

सख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मबाले जीव असंख्यातगुणे हैँ। अनन्तायुबन्धी

चतुष्ककी अपेक्षा जसंख्यातगुःणहानिकर्मवारे जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे संख्यातगुणहानि

कमवाले जीव संस्यातगुणे हैया असंख्यातगुणे हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकर्मंबाले जीव असंख्यातगुणे हैं। क्षायिकसम्यम्दष्टियोंमें

इक्कीस प्रकृतियोंकी अपेक्षा असखंख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे

संख्यातगु णहानिकमंवाले जीव संख्यावगुणे हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानिकमंवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। उपशमसम्यम्टष्टियोंमें

अट्ठाईस प्रऋृतियोंकी अपेक्षा संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव सबसे थोड़े हैं। इनसे

Page 338:

गा० २२ हिद्विदत्तीए ट्विद्सिंतकम्मठ्ठाणपरूबणा २३१९

असंखे ०भागहा० असंखे ०गुणा। अथवा अणंताणुबंधीणं सन्वत्थोव्ा असंखे गुणदाणि ० ।

संखेगुणदाणिक० संखेगुणा । संखे मागहाणि संखेगुणा । असंखे भागहाणि

असंखे ०गुणा सम्मामि० सव्वत्थोवा संखे गुणहाणिकम्मंसि । संखेमागहाणि

संखे०गुणा । असंखेमागहाणि असंखेरगुणा । एसा परूवणा अद्रावोसं षयडीणं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं पुरिसवेदभंगो । आहारीणं भूलोषं ।

एवमप्पावहुञं समत्त ।

दिदिसंतकम्महाएणणं परूवणा अप्पाबहुअं च ।

६०७ ट्विदिसंतकम्मड्ाणाणं परूवणं तेसिं चेच अप्याबहुं च भणाणि तति

पदजासुत्तमेदं । सयुकित्तणा किण्ण उत्ता ण तिस्से एदेसु चेव अंतब्भावादो

सामथ्यलम्यत्वादा ।

परूवणा ।

होदि ६०८ दोसु अहियारेसु अप्पाबहुअं मोत्तूण परूव्ण भणिस्सामो ति उत्त

॥

भिच्छुत्तसस दिदिसंतकम्मट्ढाणाणि उक्कस्सिय ट्विदिमादिं कादूण

जाव पएहंदियपायग्गकम्न जहण्णयं ताव णिरंताराणि अत्थि ।

असंख्यातभागद्ानिकर्मबाछे जीव असंख्यावगुणे हैं। अथवा अनन्तानुबन्धीकी अपेक्षा

असंस्यातगुणदानिकर्मवाके जीव सबसे थोड़े हैं । इनसे संख्यातगुणहानिकर्मवाले जीव

संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागहानिकर्मबाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्या तभाग

हानिकरमंवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यादृटियोमें संख्यातगुणहानिकर्मवाङे जीव सबसे

थोड़े हैं। इनसे संख्यातभागहानिकर्मवाले जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंख्यातभागहानि

कर्मवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । यद् प्रूपणा अद्डाईस प्रकृतियोंकी जाननी चाहिये।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग पुरुषवेदके समान है । आहारकोंका भंग मूलोघके

समान दे। इस प्रकार अल्पबहुत्वाजगम समाप्त हुआ ।

अब स्थितिसत्कर्मस्थानोंकी प्ररूपणा और अव्पबहुत्व इनका अधिकार है ।

६०७ अब स्थितिसत्कर्म स्थानोंकी प्ररूपणाका और उन्हींके अल्पबहुस्वका कथन करते

हैं इस प्रकार यह् प्रतिज्ञासूत्र है ।

शंकासमुत्कीतेनाका कथन क्यों नहीं किया ९

समाधाननहीं क्योंकि उसका इन्हीं दो अधिकारोंमें अन्तभोव दो जाता है या वह

सामर्थ्यगम्य है इसलिये उसका अछगसे कथन नहीं किया ।

पहले प्ररूपणाका अधिकार हे ।

०८ दो अधिकारोंमें अल्पबहुत्वको छोड़कर पहले प्ररूपणाका कथन करते हैं यह्

इस सुत्रका तात्पयं है ।

मिथ्यात्वे स्थितिसत्कर्म उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर एकेन्द्रियके योग्य जघन्य

स्थितिसत्कर्म तक निरन्तर है। ॥

Page 339:

३२० जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ट्विदिविहत्ती ३

६०९ एदस्स सुत्तस्स प्ररूबणं कस्मामो । तं जहामिच्छत्तस्से ति बयणेण

सेसपयडिपडिसेहो कदो । हिदिसंतकम्महाणाणि त्ति वयणेण पयडिपदेसाणुभागसंत

कम्माणाणं पडिसेहो कदो । उकस्सियं ट्विदिमादिं कादूणे त्ति भणिदे सत्तरिसागरो

बमकोडाकोडिमेत्तद्टिदिसंतकम्ममादिं कादृणे त्ति भणिदं होदि । सत्तरिसागरोवमकोडा

कोडिमेत्तट्विदोओ मिच्छन्तस्सुकस्सद्िदिवंधो । कथं तस्स वंधपटमसमए वटमाणस्स

दिदिसंतववणएसो ण एस दोसो अत्थित्तविसिइट्टिदीए इडिदिसंते त्ति गहणादो ।

तेण भिच्छत्तस्स सत्तवाससहस्समावाहं काऊण सत्तरिषागरोवमकोडाकोडी बंधमाणस्स

तमेगं हाणं । समयुणं बंधमाणस्स विदियहाणं । एवं विसमयुणमादिं कादूण उकस्स

माबाहं धुवं कादूण ओदारेदव्यं जाव समयुणाबाहाकंडयभेततद्िदीओो ओदिण्णाओ

ति । पुणो संपुण्णाबाहकंडयमेत्तद्धितीओ ओसरिदूण बंधमाणो उकस्साबाहं समयुणं

कादूण कम्मक्खंधे णिसिंचदि तमण्णं हणं । एदेण कमेण जाणिदृण ओदारेदव्वं

जाव धुबह्िदिसण्णिदअंतोकोडाकोडि त्ति । णएदाणि वंधमासिदृण णिर॑तरं ट्विदिसंत

कम्मड्काणाणि लद्धाणि । णवरि एगेगावाधासमए क्षीयमाणे उवरि पलिदोवमस्स

असंखेज्ञदिभागपमाणमेभेगावाधाकंडयमेत्तट्िदीओ झीयंति । तस्स को पडिभागो १

उकस्साबाहासत्तवाससदस्साणं समए सगरिदियसत्तरिसागरोवमकोडाकोडीजो

६०९ अव इस सूत्रका कथन करते । जो इस प्रकार हैसूत्रमें मिच्छत्तस्स

इस बचनके द्वारा दूसरी प्रद्न तियोंका निषेध किया है । ट्विद्सिंतकम्मट्ठाणाणः इस वचनके द्वारा

प्रकृति प्रदेश और अनुभागसत्कर्मस्थानोंका निषेध किया है । उकस्सियं डिदिमादिं कादूण ऐसा

कहने पर उसका तात्पये सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिसत्कर्मंसे लेकर यद् है ।

शंकापूँकि मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सत्तर कोड़ाकोड़ीसागर स्थितिप्रमाण होता

है अतः बन्धके प्रथम समयमे उसे स्थितिसत्त्व यह संज्ञा कैसे प्राप्त होती है

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योकि अस्तित्वयुक्त स्थितिका स्थितिसत्त्वरूपसे

ग्रहण किया है ।

अतः मिथ्यात्वकी सात हजार वर्षप्रमाण आबाधा करके सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण

बाँधनेवाले जीवके वह पहला स्थान होता है । तथा एक समय कम बांधनेवाले जीवके

दूसरा स्थान होता है । इस प्रकार दो समय कमसे लेकर तथा उत्कृष्ट आबाघाकों भ्रुव

करके एक समय कम आवाधाकाण्डकप्रमाण स्थितियोंके कम होने तक घटाते जाना

चाहिये। पुनः संपूर्ण आबाधाकाण्डकप्रमाण स्थिवियोको घटाकर बाधनेवाखा जीव उत्कृष्ट

आबाधामें एक समय कम करके क्म॑स्करन्धोका बटवारा करता दै । यह् अन्य स्थान

होता है। इसी कमसे जानकर ध्रुवस्थिति संज्ञावाली अन्तःकोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण स्थितिके

प्राप्त होने तक घटाते जाना चाहिये। चन्धकी अपेक्षा ये निरन्तर स्थितिसत्कम स्थान

प्राप्त हुए। किन्तु इतनी विशेषता है कि आबाधाके एक एक समयके क्षीण होनेपर

ऊपरकी पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण एक एक आबाधकाण्डकप्रमाण स्थितियोंका क्षय

होता हैः । इसका अथौत् पल्यकरे असंर्यातवें भागप्रमाण आबाघाकाण्डकका प्रतिभाग क्या है

उत्कृष्ट आबाधाके सात हजार वर्षेके समयोंमें सकलेन्द्रियोंकी सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण

Page 340:

गा० २२ हिदिविहत्तीए हिविसंतकम्मह्ाणपरूबणा ३२१

समखंडं कादृण दिण्णे तस्थ एगखंडमावाहाकंडयमिदि भणिदं होदि । एत्थ

एगमाबाहाकंडयसमयुणं जाव ह्ीयदि ताव एगा चेव आबाहा होदि । संपुण्णे

झीणे आबाहा समयूणा होदि । णिसेगह्िदौ पण उमयत्थ समाणा ।

६१०९ आवराहदाए समयुणाए जादाए तम्मि चेव समए णिसेगहिदी

वि ववण पेक्खिदूण समयूणा होदि त्ति के वि भणति तण्ण

घडदे एगसमयम्मि दोण्ह॑ ह्िदीणं अधद्िदीए गलणप्पसंगादो । तेणेदं

मोचुण एवं पेत्तव्वं उकस्साबाधं धुवं कादृण वंधमाणो एगसमएण

एगाबाहाकंडयमेत्तद्डितीओ ओसकिदृण जदि वंधदि तो उकस्साबाहाचरिमसमयम्मि

पढमणिसेगं णिसिचिदृण उवरि णिरंतरं कम्मणिसेगं करेदि । दोण्णि ओदरिय

बंधमाणो उकस्साब्राधादुचरिमसमयप्पहुडि कम्मक्खंघे णिर्सिचदि । एवं गंतूण एग

चारेण उकस्सहिदीदों ओसरिदूण अंतोकोडाकोडिट्डिदि वंधमाणो अंतोञहु्तमानाधं

मोत्तूण कम्मणिसेगं करेदि ति । संपहि धुवष्डिदीदो हेद्टिमअंतोकोडाकोडिमे्डाण

वियग्पेसु णिरंतरसुप्पाइजमाणेसु जहा सण्णिकासम्मि सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं हृद

समुप्पत्तियकंडयमस्सिदूण णिरंतरं इाणपरूवणा कदा तथा एत्थ वि मिच्छत्तस्स णिरंतर

हाणपरूवणं कादृण ओदारेदव्वं जाव सागरोवममेत्तद्विदी वचेद्धिदा त्ति । पुणो एदिस्से

हेद्ा एइंद्यद्विंदें बंधमास्सिदृण समयूणदुसमयुणादिकमेण बंधाविय ओदारेदव्वं जाव

स्थितियोंके समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर वहाँ एक खण्डप्रमाण आबाधाकाण्डक प्राप्त

होता है यह इसका तात्पय है। यहाँ एक समय कम आवाधाकाण्डकप्रमाण स्थितियोंके

क्षीण होने तक एक ही आबाधा होती है। तथा एक आबाधाकाण्डकके पूरे क्षीण होने पर

आबाधा एक समय कम होती है । परन्तु निषेकस्थिति दोनों जगह समान रहती है ।

६१० यहाँ कितने ही आचाये ऐसा कथन करते हैं कि आबाधाके एक समय कम

हो जाने पर उसी समयमें निषेकस्थिति भी पहलेकी निषेक स्थितिको अपेक्षा एक समय कम

होती है। पर उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता क्योंकि ऐसा माननेमें दो स्थितियोंकी

अधःस्थितिगलनाका प्रसङ्ग प्राप्त होता है। अतः इस अथैको छोड़कर इस प्रकार ग्रहण करना

चाहिये कि उत्कृष्ट आवाधाको ध्रुव करके बाँघनेवाला जीव यदि एक समयके द्वारा एक

आबाघाकाण्डकप्रमाण स्थितियोंको घटाकर बाँधता दै तो उत्क्रष्ट आबाधाकेअन्तिम समयमे

प्रथम निषेकको देकर ऊपर कर्मनिषेकोंका निरन्तर बटवारा करता है। तथा दो आबाधा

काण्डक प्रमाण स्थितियोंकों घटाकर बाँधनेवाछा जीव उत्कृष्ट जावाधाके द्विचरम समयसे

लेकर कमस्कन्धोंका बटवारा करता है। इस प्रकार जाकर एक साथ त्कृष्ट स्थितिसे उतरकर

अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिका बन्ध करनेवाला जीव अन्तसुहूर्ते आबाधा छोड़कर

शेष स्थितिप्रमाण कर्मनिषेक करता है । अब धुवस्थितिसे नीचे अन्तःकोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण

स्थानविकल्पोके निरन्तर उत्पन्न करने पर जिस प्रकार सन्निकर्षोनुगमममें सम्यक्त्व ओौर सम्य

ग्मिथ्यात्वकी हतसमुत्पत्तिककाण्डकका आश्रय ठेकर निरन्तर स्थानप्ररूपणा की है उसी प्रकार

यहाँ भी मिथ्यात्वके निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा करके एक सागरप्रमाण स्थितिके शेष रहने

तक स्थिति घटाते जाना चाहिए। पुनः इस स्थितिके नीचे एकेन्द्रियके स्थितिबन्धका आश्रय

लेकर एक समय कम दो समय कम आदि क्रमसे बँधाकर पल्यके असंख्यातवें भाग कम एक

०

Page 341:

३२२ जयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिविहत्ती हे

पलिदो० असंखे०भागेणूणएगसागरोवम त्ति । । एवमेइंदियपाओग्गकम्मं जहण्णयं जाव

पावदि ताव णिरंतराणि इाणाणि उप्पाइंदाणि जेण तेणेदेसिमत्थित्तं सिद्धं संपहि

दंसणमोहक्खवणाए लब्भमाणट्टाणपरूवणहसु त्तरसुत्तं भणदि ।

अण्णाणि पुण दंसणमोहकखवयस्स अणियट्टिपविधस्स जमदि

ह्विदिसंतकम्ममेहदियकम्मस्स देवो जाद तत्तो पाए अंतजुहत्तमेत्ताणि

ट्विदिसंतकम्महा णापि लब्भंति ।

६११ एदाणि पलिदो० असंखे०भागेणूणेगसागरोवमपरिहीणसत्तरिसागरो

वमकोडाकोडिमेत्त ाणाणि मोत्तण अण्णाणि वि इाणाणि लब्भंति । अविसदो कत्थुव

लद्धो १ ण शुणसदस्स अविसदृद्ढे बइमाणस्स स॒त्तत्थस्सुवलंभादो ताणि कस्स

लब्भंति त्ति पुच्छिदे दंसणमोदक्खवयस्ते ति भणिदं अणियद्िपविदस्से ति णिद सो

अपुव्वादिपडिसेहफलो । जम्हि ट्विदिसंतकम्ममेइ दियद्विदिसंतकम्मस्स देइदो जादं ति

णिद्दे सो पुणरुत्तद्वाणपडिसेहफलो । अणियद्धिकरणन्भंतरे सागरोवममेन्तद्धिदिसंतकम्मे

दंसणमोहणीयस्स सेसे तक्खवओ पलिदो० संखे भागमेत्तद्धिदिकंडयभागाएदि तं

पुण एइदियवीचारद्ाणेहिंतों असंखेजथुणं तेधि पलिदो० असंखे०भागत्तादो ।

तस्स ट्विदिकंडयस्स जाव दुचरिमफाली पददि ताव पुणरुत्तहाणाणि

खागरप्रमाण स्थितिके प्राप्त होने तक स्थिति घटाते जाना चाहिये । चूँकि इस प्रकार एकेन्द्रियके

योग्य जघन्य कर्मके प्राप्त होने तक निरन्तर स्थान उत्पन्न किये अतः इनका अस्तित्व सिद्ध

होता ह अब दशनमोहनीयकी क्षपणामें प्राप्र होनेवाले स्थानोंकी श्ररूपणा करनेके लिये

आगेका सूत्र कहते हैं

दरशनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले अनिवर्तिकरणको ग्राप्त हुए जीवके जहाँ

स्थितिसत्कर्म एकेन्द्रियके योग्य कर्मसे नीचे हो जाता है बहाँसे लेकर अन्त्हूतेप्रमाण

अन्य स्थितिसत्कर्म प्राप होते हैं ।

६११ पल्यका असंख्यातवां भागकम एक सागर दीन सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरमप्रमाण

स्थानोंको छोड़कर ये अन्य भी स्थान प्राप्त होते हैं ।

शंका ययँ जपि शब्द कहाँसे प्राप्त हुआ ९

समाधाननहीं क्योंकि सृत्रमें अपिः शब्दके अर्थमे पुणः शब्द विद्यमान हे अतः

उसके साथ सूत्रका अर्थ घटित हो जाता है ।

ये स्थान किसके प्राप्त होते हैं ऐसा पूछनेपर दशशनमोहकी क्षपणा करनेवाले

जीवके प्रात होते हैं ऐसा कहा । सूत्रमें अणियट्टिपविद्धस्स इस प्रकारके निर्देशका फल अपूरव

करण आदि शोषका निषेध करना है। जम्हि टिद्सिंतकम्ममेइंदियद्धिदिसंतकस्मस्स

हेहददो जाद् इस प्रकारके निर्देशका फल पुनरुक्त स्थानोंके निषेधके व्यि किया हे । अनिडत्ति

करणके भीतर दर्शनमोहनोयके एक सागरप्रमाण स्थितिसत्कर्मके शेष रहने पर उसकी क्षपणा

करनेवाला जीव पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिकाण्डक करता है । परन्तु वह स्थितिकाण्डक

एकेन्द्रियोंके वीचारस्थानोंसे असंख्यातगुणा होता है क्योकि एकेन्द्रियोंके वीचारस्थान पल्यके

असंख्यातबें भागप्रमाण होते हैं । उस स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालिके पतन होने तक पुनरुक्त

Page 342:

गा० २२ द्विदिविहत्तीए ट्विद्संतकम्मद्ठाणपरूवणां ३२३

त्ति तेपि पडिसेहो एदेण परूवदो त्ति भावस्थो । ताए पदिदाए एइदिएसु

लद्धइाणेहिंतो असंखेगुणमंतरिय अपुणरुन्तटाणमप्पजदि तत्तो पाए अंतोयहुत्तमेत्ताणि

ट्विदिसंतकम्मद्माणाणि लव्म॑ति अधह्िदिगलणं मोत्तण अण्णत्थ तदुबलंभाभावादौ ।

जतो पाए एडंदियद्िदिसंतकम्मस्स हेड्ददो जादं तत्तो पाए जाव एगा इ्िदी दुसमय

काला जादा त्ति ताव फालिद्णिहि विणा अधड्विदिगलणाए सांतरणिरंतरद्ठाणाणि

अंतोझ॒हुत्त मेत्ताणि लब्भंति त्ति मणिदं होदि ।

सम्मत्तसम्मामिच्छुताएं ड्विदिसंतकम्मद्ाणाणि सत्तरिसागरोवम

कोडाकोडीओ अंतोखहृत्त णाओ ।

६१२ सम्मत्तसम्ममिच्छत्ताणं ति णिद् सो सेसकम्मपडिसेहफलो । एदासिं

दोणं पयडीणं ट्विदिसंतकम्मडाणाणि केतियाणि त्ति भणिदे अंतोम्नहत्तणाओ सत्तरि

सागरोवमकोडाकोडौओ ति भिदं । संपुण्णाओ किण्ण होति ण अंतोगुत्

णुकस्सष्टिदीए विणा उवरिमद्िदिवियप्पेहि सम्मत्तरणहणाभावादो । मिच्छत्तणिरंभणं

कादृण सण्णियासम्मि जधा सम्मत्तसम्मामिच्छनत्ताणं अंबोमुहुत्तूणसत्तरिसागरोवम

कोडाकोडिमेत्तद्विदिद्वाणाणं परूवणा कदा तथा एत्थ वि कायव्वा विसेखाभावादो ।

केवलेण अंतोभहुत्तेणेव उणाओो ण होति त्ति जाणावणट्युत्तरसुत्तं मणदि

स्थान होते हैं अतः जम्दि ट्विदिसंत इत्यादि पदक द्वारा उनका निषेध किया यह इसका

भावार्थ है। उस द्विचरमफालिके पतन हो जाने पर एकेन्द्रियोंमें प्राप्त होनेवाले स्थानोंसे

असंख्यातगुणा अन्तर देकर अपुनरुक्त स्थान प्राप्त होता है। बहाँसे लेकर अन्तमुहूतप्रमाण

स्थितिसत्करम प्राप्त द्योते हैं क्योंकि अधःस्थितिगछनाको छोड़कर अन्यत्र उनकी प्राप्ति नहीं

होती है । इसका तात्पय यह है कि जहाँसे एकेन्द्रियस्थितिसत्कमंके नीचे स्थान हो गये

वहाँसे लेकर दो समय कालप्रमाण एक स्थितिके प्राप्त होने तक फालिस्थानोंके बिना अधः

स्थितिगलनारूपसे सान्तरनिरन्तर अन्तमुंहूर्तप्रमाण स्थान ग्राप्त होते हैं । ९९

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मस्थान अन्त्हूतंकम सत्तर

कोड़ाकोड़ीसागरप्रभाण होते हैं ।

६१२ सूत्रमें सम्मत्तसम्मामिच्छत्ता्ण इस प्रक़ारके निर्देशका फल शेष कर्मोका निषेध

करना है। इन दोनों प्रकृतियोंके स्थितिसत्कर्म कितने हैं ऐसा कहने पर अन्तसुहूतेकम सत्तर

कोड़ाकोड़ीसागर प्रमाण हैं ऐसा कहा हे ।

शंकापरे सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण क्यों नहीं होते

समाधाननहीं क्योकि अन्तु तकम उलछष्ट स्थितिको छोड़कर ऊंपरके स्थिति

विकल्पोके साथ सम्यक्त्वका ग्रहण नहीं होता । मिथ्यात्वको रोककर सन्निकषौलुगममे जिस

प्रकार सम्यक्त्व और सम्यम्मिभ्यात्वके अन्तमुंहृर्तकम सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरप्रमाण स्थिति

स्थानोंका कथन क्रिया उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिये क्योकि दोनों कथनोंमें परस्पर कोई

विशेषता नहीं है ।

केबल अन्तसुंहृते दी कम नहीं होते हैं इस वातका ज्ञान करानेके लिय आगेका

सूत्र कहते हैं वि

Page 343:

श्२छ जयधवलासदिदे कसायपाहुडे ह्िदिविहत्ती ३

अपच्छमेण उच्वेललणकंडएण च ऊणाओ एत्तियाणि इणाणि ।

६१३ अपच्छिमेणुव्वेरलणद्धिदिकंडणएणूणत्तं किमदं बुच्चदे १ ण चरिमृच्वे

सलणकंडयचरिमफालीमेत्तद्टिदीगमकमेण पदंताणं इाणवियप्पाणुवरुंमादो । जदि

एवं तो सब्बुव्वेरलणखंडयाणं चरिमफालीओ अकमेण पदिदाभो त्ति सव्वत्थ सांतर

ह्ाणुप्पत्ती पावदे १ ण च एवं पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्तड्ाणप्पसंगादो १ ण

एस दोसो हिदिखंडयायामाणं णियमाभावेण उच्बेल्लणपारंभट्टाणस्स गियमाभावेण

विसोदिवसेण पदमाणाणं द्विदिखंडयायामाणं णियमाभाबेण च णाणाजीवे अस्सिदृण

सेसकंडए्सु णिरंतरद्वाणुवलंभादो ण च चरिमफालीए णिरंतरकमेण लब्भंति

सव्वजीवाणं सव्वजहण्णचरिमफालीए एगपमाणत्तादो । एत्तियाणि इाणाणि सम्मत्त

सम्मामिच्छन्ताणं होति त्ति पेत्तव्वं ।

जदा मिच्छृत्तस्स तदा सेसाणं कम्माणं ।

६१४ सोलसकसायणवणोकसायाणं मिच्छत्तस्सेव इाणपरूचणा कायव्वा

विसेसाभावादो । संपि एवं विहाणेणुप्पण्णद्िदिसंतकम्मटाणाणं थोव बहुच साहण

पदुष्पायणहयुत्तरसुत्तं मणदि

ॐ अभवसिद्धिथपाओरगे जसि कम्मंसाणमग्गदिदिसंतकम्मं ठुर्लं

वे स्थान अन्तिम उदधेलनाकाण्डकसे कम हैं । इतने स्थान होते ह ।

६१३ शंकायहाँ अन्तिम उद्ेलना स्थितिकाण्डकसे कम किसलिये कहा १

समाधान नदी क्योंकि अन्तिम इद्रेखनाकाण्डककी अन्तिम फालिप्रमाण स्थितियोंका

युगपत् पतन होता ह इसलिये वहाँ स्थानविकल्प नहीं प्राप्त होते ।

शंंकायदि एसा है तो सब उद्देलनाकाण्डकॉंकी अन्तिम फालियोंका अक्रमसे पतन

होता है अतः सर्वत्र सान्तर स्थानोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि

ऐसा मानने पर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंका प्रसंग प्राप्त होता है ।

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योकि स्थितिकाण्डकोंके आयामोंका नियम न होनेसे

उद्देलनाके आरस्म्भके स्थानका नियम न होनेसे और विशुद्धिके वशसे पतनको प्राप्त होनेवाले

स्थितिकाण्डकायामोंका नियम न होनेसे नाना जीवोकी अपेक्षा शेष काण्डकोंमें निरन्तर स्थान

पाये जाते हैं। परन्तु अन्तिम कालिके स्थान निरन्तर क्रमसे नहीं श्राप्त होते क्योंकि सब

जीवोंके सबसे जघन्य अन्तिम फालिका प्रमाण समान है ।

अतः इतने स्थान सम्यक्त्व और सम्यम्मिथ्यात्वके होते हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

ॐ जिस प्रकार मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मस्थान कटे उसी प्रकार शेष कर्मोके

कहने चाहिये।

६१४ सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी मिथ्यात्वके समान स्थानप्ररूपणा करनी

चाहिए क्योकि उसमें इससे कोई विशेषता नहीं है। अब इस प्रकारसे उत्पन्न हुए स्थिति

सत्कर्मस्थानोंके अल्पबहुस्वकी सिद्धिका प्रतिपादन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं

अभव्योंके योग्य जिन कर्मोका उत्कृष्ट स्थितिसत्कमं समान होता हुआ

Page 344:

गा० २२ हिदिविह्तीए द्विदिसंतकम्मद्ठाणपरूवणा ३२५

जहण्णगं हिदिसंतकम्मं थोव॑ तेसि कम्मं साणं दाणाणि बहुआणि ।

६१५ अभवसिद्धियपाओग्गे तति भणिदे मिच्छादिदििपाओग्गे त्ति येततव्वं ।

कथं मिच्छादिद्टिस्स अभव्वववण्सो १ ण उकस्सट्ठिदिअणुभागबंधे पड्च समाणत्तणेण

अभेव्वववएसं पडि विरोहाभावादो जेसि कम्माण्ुकस्सह्िदिसंतकम्मं सरिसं दोदृण

जदण्णह्टिदिसंतकम्मं सरिसं ण होदि किंतु थोब॑ तेसिं कम्मंसाणं ह्वाणाणि बहुआणि

हा बहुभणं हाणाणञ्वलंमादो । जेसि पण कम्म॑साणं ट्विदीओ उवरि बहुआओ

हेद्ठा जहण्णद्विदी जदि वि थोवा समा वा होदि तो वि तेसिं इणाणि बहुजाणि हेति

हेड्ोवरि लद् णिदि अन्मद्ियत्तादो । एदस्सुदाहरणं बुचदे । तं जहाएगो एइंदिओ

कसायहिदि सागरोवमचत्तारिसत्तमागमेत्तं पलिदो० असंखेभगेणुणं बंधमाणो

अच्छिदो तं बंधावलियादीद॑ तेण णवणोकस्तायाणुवरि संकामिदे कसायणोकसायाणं

डिदिसंतकम्महाणाणि सरिसाणि होति । पुणो बंधगद्धामेदेण सत्तणोकसायद्धिदिवंध

द्वाणाणं बहुत व्तदस्सामो तं जहाएड्ंदिएस कसायाणं जहण्णदिदिसंतकम्मे संते

पुरिसमेदे हस्सरदीणं तस्समए जुगवं बंधपारंमो कायव्वो । पारद्रपटमसमयप्यहुडि

हस्सरदिर्वधगद्धाए संखे०भागे अदिकंते पुरिसवेदबंधगद्धा थकदि । तत्थकाणंतरसमए

इत्थिवेद्बंधगड़ापारंभो कायव्वों एवं पारभिय पुणो इत्थिवेदहस्सरदीओ बंधमाणो

जघन्य स्थितिसत्कर्म अल्प होता है उन कर्मो के स्थान बहुत होते हैं ।

६१५ सूत्रमें अभवसिद्धिपाओग्गे ऐसा कहनेपर उसका अर्थ मिथ्यादृष्टिके योग्य ऐसा

लेना चाहिए ।

शंंकामिथ्यादृष्टिको अभव्य कहना कैसे बनता है

समाधाननहीं क्योकि उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा समानता

होनेसे मिथ्याहृष्टिको अभव्य कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

जिन कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिसल्कर्म समान होता हुआ जघन्य स्थितिसतकमं

समान नहीं होता है किन्तु थोड़ा होता है उन कर्मोके स्थान बहुत होते हैं क्योंकि

नीचे बहुत स्थान पाये जाते हैं। पर जिन कर्मोंकी स्थितियाँ ऊपर बहुत होती हैं और

नीचे जघन्य स्थिति यद्यपि स्तोक या समान होती है तो भी उनके स्थान बहुत होते हैं ।

क्योकि नीचे और ऊपर प्राप्त हुए स्थानोंकी अपेक्षा वे अधिक हो जाते हैं। अब इसका

उदाहरण कहते हैं। जो इसप्रकार द्वैकोई एकेन्द्रिय जीव कषायकी स्थितिको एक सागरके

सात भागोमेसे पल्यका असंख्यातवाँ भागकम चार भागप्रमाण बाँधकर स्थित छ्वे। उसके

बन्धावलिसे रहेत उस स्थितिके नौ नोकषायोंके ऊपर संक्रान्त करनेपर कपाय

और नोकपायोंके स्थितिसत्कर्म समान होते हैं। अब बन्धकालके भेदसे सात नोकषायोंके

स्थितिबन्धस्थानोंके बहुत्वको बतलछाते हैं। जो इसप्रकार द्वैएकेन्द्रियोंमें कषायोंकी जघन्य

स्थितिसत्कर्मके रहते हुए पुरुषवेद ओर हास्य रतिके घन्धका श्रारम्भ उसी समय एक साथ

करना चाहिए। पुनः प्रारम्भ किये गये पहले समयसे लेकर हास्य और रतिके बन्धकालके

संख्यातवें भागके व्यतीत हो जानेपर पुरुषवेदका बन्धकाछ समाप्त होता दै । पुनः पुरुषवेदके

बन्धकारके समाप्त होनेके अनन्तर समयमें स््रीवेदके वन्धकालका प्रारम्भ करना चाहिये।

इसप्रकार प्रारम्भ करके पुनः खीवेद और हास्यरतिका वन्ध करता हुआ वह जीव पूर्वेकाछसे

Page 345:

३२६ जयघवछासहिदे कसायपाहुडे दिदिविहत्ती ३

पुव्बिल्लद्भाणादो संखे०गुणमद्धा्ं गच्छदि । एवं गंतूण पुणो इत्थिवेदबंधो थकदि ।

तत्थकाणंतरक्षमण णवुंसयवेदवंधस्स पारंभो तदो णबुंसयवेदेण सह हस्सरदीओ

पृव्वागदंतोमुहुत्तादो संखेजयुणमंत्रोम॒हुत्त बंधदि । तदो हस्सरदीणं पि बंधगद्धा थकादि।

पणो अरदिसोगाणं बंधपारंभो होदि । एवं होदूण णबुंसयवेदेण सह अरदिसोगे

बंधमाणो देद्िमअद्धाणादो संखे०गुणमद्धाणम॒वरि गंतृण दोण्हं पि बंधगद्धाओ जुगबं

समप्पंति । तेण सव्वत्थोवा पुरिस०बंधगद्धा २ । इत्थि०बंधगद्धा संखे०्गुणा ८ ।

हस्सरदिबंधगद्धा संखे०गुणा ३२ । अरदिसोगबंधगद्धा संखे०्शुणा १९८ । णबुंस०

बंधगद्धा विसेसाहिया १५० । केत्तियमेत्तेण हस्सरद्दंधगद्धाएं संखेजामागमेत्तेण ।

एवं जेण कारणेण सत्तणोकसायट्टिदिबंधगद्धाओ विसरिसत्तेण ट्विदाओ तेणेदासिं

ट्विद्बंंधद्वाणाणि सरिसाणि ण होंति त्ति पेत्तव्वं ।

इमाणि अश्णाणि अप्पावहठुअस्स साहणाणि कायव्वाणि ।

६१६ पुव्वमेकेण पयारेण अप्पाबहुअसाहणं काऊण संपदि अण्णेण पयारेण

तस्स साहणाणि भणामि ति सिस्ससंबोदणा एदेण कदा ।

। 9 तं जहासखच्वत्थोवा चरित्तमोहणीयक्खचयरुस अणियदिअद्धा ।

६१७ उबरि मण्णमाणअद्धाहितो एसा चरित्तमोहणीयक्खवयस्स

संख्यातगुणे कार्तक बन्ध करता जाता द । इसप्रकार आकर पुनः खीवेदका बन्ध

समाप्त होता है । पुनः खीवेद्के बन्धके समाप्त होनेके अनन्तर समयमे नपुंसकवेदके बन्धका

भरास्भ करता है । तदनन्तर नपुंसकवेदके साथ हास्य और रतिको पहलेसे आये हुए

अन्तसुँहू तसे संख्यातगुणे अन्तसुहूर्तकाछतक बांधता है । तदनन्तर हास्य और र्तिका भी

बन्धकाल समाप्त होता द्वे। पुनः अरति और शोकका वन्ध प्रारम्भ होकर नपुंसकवेदके

साथ अरति और शोकका बन्ध करता हुआ नीचेके काछसे संख्यातगुणा कारु ऊपर जाकर

दोनोंके ही बन्धकालोंको एक साथ समाप्त करता दै । अतः पुरुषवेदका बन्धकाङ सबसे

थोड़ा २ है। स््रीवेदका बन्धका संल्यातगुणा २०८४८ है । हास्य और रत्तिका बन्धकाक

संख्यातगुणा ८०८४३२ ह । अरति और शोकका बन्धकार संख्यातगुणा ३२०८४ १२८

दै । नपुंसकवेदका बन्धकाल विशेष अधिक १२८ २२ १५० दै । विशेपका प्रमाण क्या

है हास्य ओर रतिके वन्धकाकका संख्यात बहुभाग विशेषका प्रमाण है ३२ २८

३२ १० २२ । इस प्रकार चूँकि सात नोकषायोंके स्थितिबन्धकाछ विसहशरूपसे स्थित हैँ

इसलिए इनके स्थितिबन्धस्थान समान नहीं होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिये ।

ह अब अस्पबहुत्वके साधनके ये अन्य प्रकार करने चाहिए ।

६१६ पहले एक प्रकारसे अल्पबहुस्वकी सिद्धि की है अब अन्य प्रकारसे उसकी

सिद्धिका कथन करते हैं । इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा शिष्यको संबोधन किया दै ।

9 अब उन्हीं अन्य प्रकारोंकों बतलाते हैंचारित्रमोहकी क्षपणा करनेवाले

जीवके अनिवृत्तिकाल सबसे थोड़ा हे ।

६१७ आगे कहनेवाले कालोंसे यह चारित्रमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके अनि

Page 346:

गा० २२ िदिविहत्तीए ट्विदिसंतकम्मद्ठाणपरूवणा ३२७

अणियद्धिकरणद्धा थोवा त्ति दडव्वा ।

अपुव्वकरणद्धा संखेज्न गुणा ।

६१८ चारित्तमोहणीयक्खवयस्से त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवइदे तेण चारित्त

मोहणीयक्खवयस्स अपुव्वफरणद्धा तस्सेव अणियद्धिकरणद्वादो संखेजगुणा त्ति सुत्तत्थो

वत्तव्यो । पुच्विर्छअणियष्टिसद्धो किण्ण करणपरो कदो १ ण एत्थतणकरणसदस्

सीहावलोयणेण तत्थाबट्टाणादो ।

चारिचमोदणीयउवसामयस्स अणियटद्टिअद्धा संखेज्ज गुणा ।

६१९ चारित्तमोहक्खवयस्स वुदासहं चारित्तमोहउबसामयस्से सि णिद्देसो

कओ । गुणगारपमाणं सव्वस्थ तप्पाओग्गाणि संखेजस्वाणि । सेसं सुगमं ।

अपुव्वकरणद्धा संखज्नग॒णा ।

६२० चारित्त मो््डवसामयस्से तति पुव्वसुत्तादो अशुबइदे । तेण चारित्त

मोहउवसामयस्स अपुव्वकरणद्धा तस्सेव अणियद्धिकरणद्धादो संखे०गुणा त्ति सुत्तत्थो

बत्तव्वों एवं वारसक०णवणोकसायाणं खंवगसेढिमस्सिदूण लब्भमाणडाणाणं साहणं

परूबिय संपदि दंसणमोदणीयतियस्स तक्खवणाए क्लन्भमाणद्धिदिसंतटाणाणं साहणद्भ

वृत्तिकरणका काट थोड़ा है ऐसा यहाँ जानना चाहिये ।

इससे अपूर्वकरणका काल संख्यातगुणा है ।

६१८ चारित्रमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवेः इस पदकौ पूर्वं सूत्रसे अनुचत्ति

होती ह । अतः चारित्रमोहनीयकी क्ष पणा करनेवाले जीवके अपूरतैकरणको काक उसीके अनि

बृत्तिकरणके कालसे संख्यातगुणा है इस प्रकार सूत्रका अथं कहना चाहिये ।

शंकापूर्व सूत्रम अनिवृकत्ति शब्दके आगे करण शब्द क्यो नहीं जोड़ा ।

समाधान नदी क्योंकि इस सूत्रम विद्यमान करण शब्द सिंहावलोकन न्यायसे पूर्व

सूत्रमें रहता द ।

इससे चारित्रमोहनीयकी उपशमना करनेवाले जोबके अनिृत्तिकरणका काल

संख्यातगुणा दे ।

६१९ पूरसूत्रसे अनुबरत्तिको प्राप्त होनेवाले चारित्र मोहक्खवयस्स इसके निराकरण

करनेके लिये चारित्तमोहउबसामयस्स इस पदका निर्देश किया । गुणकारका प्रमाण सवत्र उनके

योग्य संख्यात अङ्क जानना चाहिये । शेष कथन सुगम है।

इससे अपूर्वकरणका काल संख्यातगुणा हे ।

६२० इस सूत्रमें चारित्तमोहडबसामयरस इस पदकी पू सूत्र से जलुडृत्ति होती है।

अतः चारित्रमोहकी उपशमना करनेवाले जीवके अपूर्वकरणका कार उसीके अनिशृत्तिकरणके

कालसे संख्यातगुणा है ऐसा सूत्रका अथं करना चाहिये । इस प्रकार क्षपकश्नेणिकी अपेक्षा बारह

कषाय और नौ नोकपषायोंके प्राप्त होनेवाले स्थानोंकी सिद्धिका कथन करके तीन दर्शन

मोहनीयकी अपेक्षा उनकी क्षपणामें प्राप्त होनेवाले स्थितिसत्त्वस्थानोंकी सिद्धिके लिये

Page 347:

३२८ जयधवछासहिदे कसायपाहुडे हिदिविदहत्ती ३

युत्तरखत्तं भणदि

दंसणमोहणीयक्खवयस्स अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा ।

8 ६२१ चारित्तमोहडवसामयस्स अपुच्वकरणद्धादो दंसणमोहक्खवयस्स

अणियद्िजद्धा संखेन्युणा। को गुणगाये १ तप्पाओग्गसंखेजरूबाणि । इदो

साभावियादो ।

अपुव्वकरणद्धा संखेञ्ज गुणा ।

६२२ दंसणमोहक्खवयस्से त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवड्दे । तेण दंसणमोह

कखवयस्स अणियद्धिअद्धादो तस्सेव अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा त्ति वत्तव्वं संपि

अणंताणुबंधिचउकस्स ट्विदिबंधट्टाणाणं साहणपरूवणहम॒त्तरसुत्त भणदि

अणंताणुबंधीणं विसंजोएंतस्ख अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा।

8 ६२३ एत्थ करणसद्दो पुव्वुत्तरसुत्तेहिंतो अशुवद्दावेदव्बो अण्णहा अभिहेय

विसयबोहाणुप्पत्तीए । सेस सुगमं ।

अपुज्वकरणद्धा स खेज्नगुणा ।

६२४ अणंताणुरबधोणं विसंजोएंतस्से तति अणुवडदे । तेण तस्स अणियद्ि

अद्धादो तस्सेव अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा त्ति वत्तव्वं । जदि वि अपुव्वहिदिसंतङ्काणाणं

आगेका सूत्र कहते हैं

9 दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके अनिद त्तिकरणका काल संख्यात

गुणा है।

६२१ चारित्रमोहकी उपशमना करनेवाले जीवके अपूरवैकरणके कालसे दशेन

मोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके अनिवृत्तिकरणका काल संख्यातगुणा दे । गुणकारका

प्रमाण क्या है उसके योग्य संख्यात अङ्क गुणकारका प्रमाण है क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

8 इससे अपूर्वकरणका काल संख्यातगुणा है ।

६२२ इस सूत्रम दंसणमोहक्खबयस्स इस पदकी पूवं सूत्रसे अनु्त्ति होती दै ।

अतः दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके अनिशृत्तिकरणके कालसे उसीके अपूर्वकरणका

कार संख्यातगुणा है ऐसा कहना चाहिये। अब अनन्तानुबन्धीचतुष्कके स्थितिबन्धस्थानोंकी

सिद्धिका कथन करनेके आगेका सत्र कहते हैं ।

इससे अनन्तासुबन्धीकी विसंयोजना करनेवाले जीबके अनिवरत्तिकरणका

काल संख्यातगुणा है ।

६२३ यहाँ पर करण शब्दकी अनुवृत्ति पहलेके और आगेके सत्रसे कर लेनी चाहिये

अन्यथा अभिप्रेत अर्थका ज्ञान न हो सकेगा । शेष कथन सुगम ह । कि

इससे अमूर्वकरणका काल संख्यातगुणा हे ।

६२४ इस सूत्रम अणंताणुबंधीणं विसंजोएंतस्सः इस पदकी अलनुबृत्ति होती है अतः

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजना करनेवाले जीवके अनिदत्तिकरणके काछसे उसीके अपूर्व

करणका का संख्यातगुणा है ऐसा अथं यहाँ कहना चादिये । यद्यपि आगेके दो सूत्र अपू

Page 348:

म्ता० २२ ट्विदिविदत्तोए हिदिसंतकम्महाणयरूबणा ३२९

उवरिमबेपदाणि करणं ण होति तो वि अद्धामाहप्जञाणाबण परूबेदि उवरिमसुत्तं

दसणमोहणीयउवसामयस्स अशियट्रिअद्धा स खेज्न गुणा ।

६२५ अणादिओ सादिओ वा मिच्छादिदटी पटमसम्मत्तं पडिवजमाणो

दंसणमोदणीयडवसामओो त्ति मण्णदि उवसमसेढिसमारुहणईं दंसणतियञवसार्मेत

बेदगसम्माही संजदो वा । तस्स मोहणीयउवसामयस्स जा अणियद्धिकरणद्धा

संखे०गुणा । को गुणगारो संखेजरूबाणि । पु

अपुव्बकरणद्धा स खेज्जगुणा ।

६२६ दंसगमोहणीयउबसामयस्से त्ति अणुबइदे तेण तस्स अणियट्डिअद्भादो

तस्सेव अपुव्वकरणद्धा संखेज्ञगुणा त्ति सिद्धं । एवमप्पाबहुअसाहणेण सह परूवणा समत्ता।

एसो हिदिस तकस्महाणाणमप्पावहुआं ।

8 ६२७ एत्तो परूवणादो उवरि पुव्वं परूबिदद्धिदिसंतकम्महाणाणं थोव

बहुत्त मणिस्सामो त्ति आइरियपश्ज्ावयणमेय । ण वेदं णिप्फलं मंदबुद्धिविणेय

जणाणुग्गहहत्तादो ।

89 सञ्वत्थोवा अद्वण्ह कसायाणं दिदिस तकम्माह्टाणाणि ।

स्थितिसक्त्वस्थानोंके कारण नहीं होते तो भी अठ्धाके मादात्म्यका ज्ञान करानेके क्वि

आगेका सूत्र कहते हैं ॥

इससे दशनमोहनीयकी उपशमना करनेवाले जीवके अनिब्रत्तिकरणका काल

संख्यातगुणा हे ।

६२५ अनादि मिथ्यादृष्टि या सादि मिथ्यादृष्टि जीव प्रथम सम्यक्त्वको प्राप्त होता

हुआ दर्शनमोहनीयका उपशामक कटा जाता है। या उपदामश्रेणी पर आरोहण करनेके

छिये तीन दर्शनमोहनीयकी उपशमना रनेवाला वेदकसम्यग्हष्ठि संयत जीव दशेनमोदनीयका

डपशामक का जाता है

मोहनीयकी उपशमना करनेवाले उस जीवके जो अनिवृत्तिकरणका काल है वह संख्यात

गुणा हे । गुणाकारका प्रमाण क्या है संख्यात अङ्क गुणकारका प्रमाण है ।

इससे अपूर्वकरणका काल संख्यातगुणा है ।

दनो ६२६ यहाँ दंसणमोदणीयउवसामयस्स इस पदकी अलुबृत्ति होती है । अतः इस

दर्शनमोहनीयकी उपशामना करनेवाले जीवके अश्वित्तिकरणके कालसे इसीके अप्वेकरणका

काल संख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ । इस प्रकार अल्पबहुत्वकी सिद्धिके साथ प्ररूपणानुगम

समाप्त हुआ । ५

अब प्ररूपणाके आगे स्थितिसत्कर्मस्थानोंके अल्पबहुत्वका अधिकार है ।

६२७ यथँ से अर्थात् प्ररूपणानुगमके बाद पहले कदे गये स्थितिसस्कमस्थानोंके

अल्पबहुत्वको करगे इसप्रकार यद् यतिवृषभ आचायेका प्रतिज्ञावचन है । और यह निष्फढ

नहीं दै क्योंकि इसका फल मन्दबुद्धि शिष्योंका अनुग्रह् करना ह ।

आठ कपायोंके स्थितिसतकमंस्थान सबसे थोढ़े है ।

र्

Page 349:

३३० जयधवलासदिदे कसायपाहृडे द्विदिविंद्त्ती ९

६१८ चत्तालीससामरोवमकोडाकोडीसु एहंदियवीचारह्णपरिद्दीणसागरो

वमचत्तारिसत्तमागे अवणिय रूवे पक्खित्ते अभव्वसिद्धियपाओग्गाणि अ्डकसायह्ाणाणि

होंति। पणो खबगसेढिं चडिय अणियद्विअद्भाए चारित्तमोहणीयस्स एगसागरोवम

चढुसत्तभागमेत्ते ट्विदिसंतकम्मे सेसे पलिदो० संखे०भागमेत्त ट्विदिकंडयमागाणदि ।

तम्हि पादिदे सेसहिदिसंतकम्ममपुणरुत्तह्ाणं होदि पलिदो० संखे०

भागेणुणेगसागरोवमचदुसत्तभागपमाणत्तादो । एत्तो प्यहुडि अहकसायाणमपुणरुत्ताणि

चेव ट्विदिसंतकम्म्काणाणि उप्पञजति जाव एगा छ्विदी दुसमयकालपमाणा

चेडिदा त्ति । एदाणि खवगसेदीए लड्अंतोम्॒हत्तमेचह्विदिसंतकम्मइ्ाणाणि

पुच्विरराणेसु छुहेदव्वाणि । एवं संछुद्धे जेणड्रकसायाणं सव्वह्धिदिसंतकम्मङाणाणि

होति तेणेदाणि उवरि भण्णमाणड्डाणेहिंतो थोवाणि त्ति ।

इत्थिणवुसयवेदाणं ड्िदिसंतकम्मठाणाणि तुल्लाणि

विसेसाहियाणि ।

६२९ इदो अइ्डकसाएहि रद्धदि सेसटिदिसंतकम्मदाणाणि लदण

पणो अद्र कसायक्सीणपदेसादो उवरि जाविस्थिवेदक्खीणपदेसो त्ति तावेदम्मि

अद्भाणे अंतोहु्तप्यमाणे ज्तियमेत्ता समया अत्थि तत्तियमेत्द्विदिसंतकम्मद्ठाणेदि

अहियत्तादो । हत्थिवेदादो हहा णहणबुंसयवेदस्स ट्विदिसंतकम्मड्ठाणाणं कथमित्थि

वेदद्विदिसंतकम्मइाणेहि समाणत्त १ ण णबुंसयवेदोदएण खवगसेटिं चडिदजीवाणं

६२८ चालीस कोड़ाकोड़ी सागरमेंसे टकेन्द्रियके बीचारस्थानोंसे रहित एक सागरके

सात भागोंमेंसे चार भाग घटाकर जो शेष रहे उनमें एक मिला देने पर अभव्योंके योग्य

आठ कषायस्थान दोते हैं। पुनः श्चपकश्रेणिपर चढ़ा हुआ जीव अनिवृक्तिकरणके कालमें

चारित्रमोहनीयके एक सागरके सात भागोंमेंसे चार भागभ्रमाण स्थितिसत्कमे शेष रहने पर

पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिकाण्डकको प्राप्त करता दै उसके पतन करने पर शेष स्थिति

सत्कर्मसम्बन्धी अपुनरुक्त स्थान होता दै क्योंकि उसका प्रमाण एक सागरके पल्यका संख्यातवाँ

भाग कम चार भाग है । यहाँ से लेकर दो समय कालप्रमाण एक स्थितिके प्राप्त द्ोने तक आठ

कषायोंके अपुनरुक्त ही स्थितिसत्त्वस्थान उत्पन्न होते हैं । क्षपकश्रेणिमें प्राप्त हुए ये अन्तमुंहू्ते

प्रमाण स्थितिसत्क्स्थान पूबे स्थानोंमें मिला देना चाहिए। इस प्रकार इनके मिला देने

पे आठ कषायोंके सब स्थितिसत्कर्मस्थान होते हैं अतः ये आगे कटे जानेबाले स्थानोंसे

इनसे खोबेद और नपुंसकवेदके स्थितिसत्कर्मस्थान बराभर होते हुए भी

विशेष अधिक हैं ।

६२९ क्योंकि आठ कषायोंकी अपेक्षा जो सब स्थितिसत्कर्मेस्थान प्राप्त हुए वे आठ

कषायोंके क्षीण होनेके स्थानसे लेकर ख्रीवेदके शीण होनेके स्थान तक अन््तमुंह॒र्तेश्रमाण इस

अध्वानमें जितने समय प्राप्त होते हैं उतने स्थितिसत्कर्मस्थानोंसे अधिक होते हैं ।

शंकानएुंसकवेदका नाश ख््ीवेदके पहले दो जाता है अतः नपुंसकवेदके सत्कर्मस्थान

ग्पीवेदके सत्कर्मेस्थानोंके समान कैसे होते हैं १

Page 350:

गा० २२ हिविविहत्तीए हिदिसंतकम्मडाणपरूवणा ३३१

णलुंसयवेदस्स इत्थिबेदनिणदहाणे विणासुवंभादो एइंदिएस णबुंसयवेदपडिवक्ख

बंधगद्धादो हत्थिवेदपडिबक्खबंधगद्धां संखेज़गुणा तति। णथबुंसयवेदसंतकम्मद्ठाणेहिंतो

इत्थिवेदसंतकम्मट्टाणाणं विसेसाहियत्त किण्ण जायदे ण पडिवक्खबंधगद्धाओ

अस्सिदृण लद्रहाणाणमेत्थ विवक््खाभावादों तं छदो णब्बदे १ दोण्हं पि वेदाणं

इाणाणि तुस्लाणि त्ति सुत्तणिदेसादो । तेसिं बिवक्खा एत्थ किण्ण कदा अपुव्वकरणा

णियद्विअद्भाणं माहप्पजाणावणट् ।

छुण्णोकसायाणं हिदिसंतकम्मदाणणि विसेसाहियाणि ।

६३० इदो इत्थिणबुंसयवेदक्खविदद्वाणादों उवरि अतोहं गंतूण

छण्णोकसायाणं खवबणुवरंभादो । भयदुगुंछड्डाणेहि चदुणोकसायड्ठाणाणं कथं सरिसत्तं १

ण पडिवक्खबंधगद्धाहिंतो रद्वहाणाणं विवक्खाए अमाबादो ।

पुरिसवेदस्स ट्विदिसंतकम्महाणाणि विसेसाहियाणि ।

३३१ इदो छण्णोकसायाणं खीणुदेसादो समयू णदोआवलियमेत्तद्धाणं

समाधान न्दी क्योंकि जो जीव नपुंसकवेदके उदयसे क्षपकश्रेणि पर चढ़ते हैं उनके

नपुंसकवेदका नाश खीवेदके नाश दोनेके स्थाने प्राप्त होता है ।

शंकाएकेन्द्रियोंमें नपुंसकवेदके प्रतिपक्ष बन्धकालसे ख्ीवेदका प्रतिपक्ष बन्धकाल

संख्यातगुणा है अतः नपुंसकवेदके सत्कर्मस्थानोंसे स्रीवेदके सत्कर्मस्थान विशेष अधिक क्यों

नहीं दोतते है।

समाधान नदी क्योंकि प्रतिपक्ष बन्धकाख्के आश्रयसे प्राप्त हुए स्थानोंकी यहाँ

विवक्षा नहीं है। ।

शछंकायह किस प्रमाणसे जाना जाना है ९

समाधानसत्रमें दोनों ही वेदोंके स्थान तुल्य हैं ऐसा निर्देश किया है इससे जाना

जाता है कि यहाँ प्रतिपक्ष बन्धकालकी अपेक्षा प्राप्त होनेबाले स्थानोंकी विवक्षा नहीं है

शंकाउनकी यहाँ पर विवक्षा स्यो नहीं को ९

समाधानअपूवेकरण ओर अनिवृत्तिकरणके मादातम्यका ज्ञान करानेके लिए यहाँ

उनकी विवक्षा नहीं को ।

ॐ इनसे छह नोकषायोंके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

६३० क्योंकि स््रीवेद और नपुंसकवेदके क्षय होनेके स्थोनसे आगे अन्तमुंहूर्त जाकर छह

नोकषायोंका क्षय पाया जाता है ।

शंकाचार नोकषायोंके स्थान भय और जुगुप्साके स्थानोंके समान कैसे हैं ९

समाधाननहीं क्योंकि प्रतिपक्ष बन्धकालछोंकी अपेक्षा प्राप्त होनेवाले स्थानोंकी यहाँ

विवक्षा नहीं है ।

इनसे पुरुषबेदके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

६३१ क्योंकि जहाँ छह नोकषायोंका क्षय होता है वसि लेकर एक समयकम दो

Page 351:

उदय जयधवलासदिदे कसायपाहुडे हिदिविदत्ती हे

ंतूम णिल्लेविदत्तादो । विदियद्विदीए ट्विदपुरिसवेदद्धिदीए णिसेगाणं मलणमत्थि

तेण छण्णोक्रसायड्टाणेहिंतो पुरिसवेदद्वाणाणं सरिसत्तं किण्ण चुचदे ण णिसेमाणमेत्थ

पहाणत्तामाबादो । पहाणत्ते वा विदियट्टिदीए दिदउदयवक्ञिदसव्वपयडीणं इाणाणि

सरिसाणि होज । ण च एवं तहोवएसाभावादो ।

कोधसंजलणटिदिसंतकम्महाणाणि विसेसाहिाणि ।

६३२ केत्तियमेत्तेण १ हुसमयूणदोआवलियाहि परिहीणअस्सकण्णकरण

किट्टीकरणफोधतिण्णिकिट्टीवेदयकालमेचट्टिदिसंतकम्महाणेहि । णवरि णवकबंधमस्सियूण

उवरि वि दुसमयूणदोआवलियमेत्तसंतदाणाणि कोहसंजलणस्स लब्भंति ति

संपृण्णतिण्णिअद्धामेत्त संतकम्मद्वाणेहिं विसेसादियत्तमेत्थ दडव्वं ।

माणसंजलणस्स ड्िदिसंतकम्मह्ााणाणि विसेसाहियाणि ।

६३३ केचियमेत्तेण माणसंजलणतिण्णिकिट्टीबेद्यकालमेत्तेण ।

मायासंजमणस्स ट्विदिसंतकम्माइणाणि विसेसाहियाणि ।

६३४ केत्तियमेत्तेण मायासंजलणस्स तिण्हं किट्टीणं बेदयकालमेत्तेण ।

लोभसंजलणसुस हिदिसितकम्महाणाणि विसेसाहियाणि।

आवलिप्रमाण स्थान जाकर पुरुषबेदका क्षय होता है।

शंकाछितीय स्थितिमें स्थित पुरुषवेदकी स्थितिके निषेकोंका गलन नहीं होता है

अतः पुरुषवेदके स्थान छह नोकषायोंके समान क्यों नहीं कहे जाते हैं ९

समाधान नदी क्योंकि यहाँ निषकोंकी प्रधानता नहीं हे । यदि प्रधानता मान ली

जाय तो द्वितीय स्थितिमें स्थिति उदय रहित सब प्रकृतियोंके स्थान समान हो जायेंगे परन्तु

ऐसा है नहीं क्योंकि इसभ्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता ह ।

इनसे क्रोधसंज्वलनके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं।

६३२ शंकाकितने अधिक हैं

समाधानअश्रकर्णकरणकाल कृष्टिकरणकाल और क्रोधकी तीन क्ृष्टियोंका वेदफकाल

इनमेंसे कमसे कम दो समय कम दो आवलिप्रमाण कारके घटा देनेपर जितना शेष रहे उतने

स्थितिसत्कर्मस्थान अधिक हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि क्रोधसंज्वलनके नवकबन्धकी अपेक्षा

आगे भी दो समय कम दो आवलिप्रमाण सन्त्वस्थान प्राप्त होते हैं अतः यहाँ पूरे तीन स्थान

प्रमाण सत्त्वस्थान विशेष अधिक जानने चाहिये ।

इनसे मान संज्वलनके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

६३३ शुंकाकितने अधिक हैं

समाधानसानसंज्वछनकी तीन क्ृष्टियोंके बेदनका जितना काल है उतने अधिक हैं।

9 इनसे मायासंज्वलनके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

६३४ शुंकाकितने अधिक हैं

समाधानमायासंज्वछनकी तीन कष्ियोका जितना वेदनकार है उतने अधिक हैं।

क इनसे लोभसंज्वलनके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

Page 352:

गा० २२ ट्विदिविदद्तीए द्विदिसंतकम्मद्धाणपरूवणा ३२३

६२५ के० मेत्तेण १ कोघोदएण खवगसेटिं चडिदस्स दु समयुणदोजाबक्िय

परिहीणलोभवेदगद्धामेत्तेण ।

अणंताणुवंधीणं चदुण्ह दिदिस तकम्महाणाणि विसेसाहियाणि ।

६३६ कुदो अहकसायप्पहुडि जाव लोभसंजलणं ति ताव एदेसिं कम्माणं

खबणकालादो अणंताणुबंधिविसंजोयणकालस्स संखेजगुणत्तादो । संखेजगुणत्तं छुदो

णव्बदे हिंदिसंतकम्मइाणाणं थोवबहुत्जाणावणदं परूविदअद्धप्पाबहुअसुत्तादो ।

मिच्छत्तस्स दिदिसतकम्महाणणाणि विसेसाहियाणि ।

६३७ दो १ किंचृणसागरोवमचत्तारिसत्तभागेदि ऊणचत्तालीससागरोबम

कोडाकोडिमेत्तअणंताणुवधिचकटि दिसंतकम्मडएणाणमुवरि सागरोवमतिण्णिसत्तभागेदि

ऊणतीसंसागरोबमकोडाकोडीमेत्तद्विद्सिंतकम्महाणेदि अहियत्तुवलंभादों ।

सम्मत्तस्स दिदिस तकम्महाणाणि विसेसाहियाणि

६३८ के० मेत्तेण १ एड्ंदियाणं मिच्छतजदण्णह्िदीए द्॑षणमोहक्खचणाए

लद्धमिच्छत्त जहण्णड्विदिसंतकम्मइ्ठाणेहि ऊणाए अंतोमृहुत्तब्भद्दियसम्मत्तचरियुव्वेक्ण

जहण्णफालिं मिच्छ त्ते खबिदे सम्मत्तेण लड्धडाणेहि परिदीणमबणिदे जत्तिया समया

६३५ शुंकाकितने अधिक हैं १

समाधानकोधके उदयसे क्षपक श्रेणीपर चढ़े हुए जीवके दो समय कम आवलि दीन

लोभवेदकालछप्रमाण अधिक हैं ।

इनसे अनन्तानुबन्धीचतुष्कके स्थितिसत्कर्म स्थान विशेष अधिक हैं ।

६३६ क्योंकि आठ कषायोंसे छेकर छोभसंज्वलनतक इन कर्मोके क्षपणाकालसे

अनन्तानुबन्धीका विसंयोजनाकाल संख्यातगुणा है ।

शंकावह संख्यातगुणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है १

समाधानस्थितिसत्कर्मस्थानोंके अल्पबहुत्वके ज्ञान कराने के छिये कहे गये काल

सम्बन्धी अल्पबहुत्व विषयक सूत्रसे जाना जाता है ।

इनसे मिथ्यात्वके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक है ।

६३७ क्योकि एक सागरके सात भागोंमेंसे कुछ कम चार भाग कम चालीस कोड़ाकोड़ी

खागरप्र माणअनन्तानुबन्धी चतुष्कके स्थितिसत्करमेस्थानोंके ऊपर एक सागरके साध भागोंमेंसे

तीन भाग कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण स्थितिसत्कर्म अधिक पाये जाते है ।

9 इनसे सम्यक्त्वके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं ।

६३८ शंकाकितने अधिक हैं १

समाधानदशनमोहकी क्षपणाके समय जो भिथ्यास्वके स्थितिखरकमेस्थान प्राप्त

होते हैं उन्हें एकेन्द्रियों सम्बन्धी मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिमेंसे कम करके जो शेष बचे उनमेंसे

मिथ्यात्वके क्षय होनेपर सम्यक्त्वके साथ प्राप्त दोनेवारे स्थानोंसे हीन अन्तमुहूते अधिक

समयस अन्तिय उद्देलना फालिकों कम करके जितने समय शेष रहें उतने स्थितिसत्कर्म

स्थान होते है ।

Page 353:

३३४ अथधक्छसद्िदैः कसायपाहुडे हिदिविद्ती ३

तत्तियमेत्तद्िदिसंतकम्पटणिहि । मिच्छत्तचरिमफालीदो 0 जा चरिम

फाली सा कि सरिसा विसेसाहिया संखेजगुणा अनया वा र्लेजयगा तति

त्थ एलाइरियवच्छयस्स णिच्छओ। कदो १ मिच्छत्तचरि ०गुण

अणंताणुवंधिविसंजोयणाचरिमफालीदो मि सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणघरुव्वेन्लणाचरिम

फालीए असंखे ० गुणत्तस्स हिदिवंक्मपपाबहुअइसिदादो

सम्मामिच्छत्तस्स दिदिस तकम्मठाणाणि विसेसाहियाणि ।

६३९ केत्तियमेत्तेण सादिरेयसम्मामिच्छतचरियुव्ेन्नणफारीए ऊणसम्मत्त

चरिसृव्वेन्नणफालिमेत्तेण । संपहि दिदिसंतकम्मे भण्णमाणे विदियाए पुढबीए सम्मत्त

चरियुव्वे्टणकंडयादो सम्मामिच्छत्तचरिथव्वे्टणकंडयं विसेसाहियमिदि भणिदं । तदो

पुव्वावरविरोहेण दूसियाणं ण दोण्डं पि सुत्तइमिदि १ ण एस दोसो इढत्तादो । किंतु

जहवसदहाइरिएण उवलद्धा बे उवणसा । सम्मत्तचरिमफालीदो सम्मामिच्छत्तचरिमफाली

असंखे ०गुणहीणा त्ति एगो उवएसो । अवरेगो सम्मामिच्छतचरिमफाली तत्तो विसेसा

हिया ति । एत्थ एदेसि दोण्ह पि उवएसाणं णिच्छयं काउमसमत्थेण जइवसदहाइरिणएण

एगो एत्थ विलिदिदो अवरेगो हिदिसंकमे । तेणेदे मे षि उषदेसा थप्पं कादण

वत्तव्वा ति ।

शंकांसम्यक्त्वकी उद्देलनाकी जो अन्तिम फालि है वह भिथ्यात्वकी अन्तिम फालिके

क्या समान है या विशेष अधिक है या संख्यातगुणी है या असंख्यातगुणी है

समाधानअसंख्यातगुणी है इस प्रकार इस विषयमे एलाचार्यके शिष्य हमारा

निश्चय है क्योंकि मिथ्यात्वकी अन्तिम फालिसे अनन्तानुबन्धी विसंयोजनाकी अन्तिम फाठि

असंख्यातगुणी दै । तथा उससे भी सम्यक्त्व ओर सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्देलनाकी अन्तिम फालि

असंख्यातगुणी है यद् बात स्थितिसस्कर्मके अल्पबहुत्व विषयक सूत्रसे सिद्ध है ।

इनसे सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्करमस्थान विशेष अधिक है ।

९३९ ्ंका कितने अधिक हैं।

समाधानसाधिक सम्यग्मिथ्यात्वकी अन्तिम उद्देलनाफालिसेंसे सम्यक्स्वकी अन्तिम

उद्देलनाफालिको घटा देनेपर जितना शेष रहे तत्प्रमा स्थितिखत्कर्मस्थान अधिक हैं ।

शंकास्थितिसत्कमंका कथन करते समय दूसरी प्रथिवीमें सम्यक्स्वके अन्तिम

उद्धेलनाकाण्डकसे सम्यग्मिथ्यात्वका अन्तिम उद्देलनाकाण्डक विशेष अधिक है ऐसा कहा दैः

अतः पूर्वापरविरोधसे दूंषित होनेके कारण दोनोंका हौ सूत्रर्व नहीं बनता ९

समाधानयह कोई दोष नहीं है क्योंकि यह बात हमें इष्ट है । किन्तु यतिवृषभ

आचायेंको दो उपदेश प्राप्त हुए। सम्यक्त्वकी अन्तिम फालिसे सम्यग्मिथ्यात्वकी अन्तिम फालि

असंख्यातगुणी दीन है यह पहला उपदेश है । तथा सम्यम्मिथ्यात्वकी अन्तिम फालि उससे

विशेष अधिक दै यह दूसरा उपदेश हे । यहाँ इन दोनों ही उपदेशोंका निदच य करनेमें असमे

यतिवृषभ आचायेने एक उपदेश यहाँ लिखा और एक उपदेश स्थितिसंक्रममें लिखा अतः इन

दोनों दी उपदेशोंको स्थगित करके कथन करना चाहिए ।

Page 354:

जा० २२ डटिवदिविशत्तीए ट्विदिसंतकम्मद्ठाणपरूबणा ३३५

६ ६४० संपदि पडिवक्खबंधगद्भाओ अस्सिदूण अव्भवसिद्धियपाओग्गड्टाणाण

सप्पाबहुअं वत्तहस्सामो त॑ं जहासव्वत्थोवाणि सोलसकसायभयदुमुंछाणं ट्विदिसंब

कम्मड्टाणाणि । केत्तियमेत्ताणि रूवृूणेइंदियजदृण्णट्दिदीए परिदीणचत्तारीस सागरो

वमकोडाकोडीमेत्ताणि । तेसिं पमाणं संदिद्वीए बारहोत्तरपंचसदमिदि घेत्तव्व॑ ५१२।

णबुंसयवेदद्टिदिसंतकम्मइ्ञाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण इत्थिपुरिसवेदबंध

गद्घामेत्तेण ५२२ । अरदिसोगद्धिदिसंतकम्मडा विसे० । के०मेत्तो विसेसो इत्थि

पुरिसवेदबंधगद्धाहि ऊणहस्स रदिबंधगद्धामेत्तो ५४४ । हस्सरदीणं हविदिसंतकम्मद्दा०

विसेसा० ६४० । के०मेत्तेण हस्सरदिबंधगद्धाए ऊणअरदिसोगबंध गद्धामेत्तेण ॥

इच्थिवेदसंतकम्महाणाणि विसेसादियाणि ६६४ । केत्तियमेत्तेण अरदिसोगवंध

गद्धाए ऊणपुरिसणवुंसयवेदवंधगद्धामेत्ेण । पुरिस वेदसंतकम्महाणाणि विसेसाहियाणि

६७० । केत्तियमेत्तेण १ पुरिसवेदबंधगद्धार ऊणइत्थिवेदबंधगद्घामेत्तेण

बंधगद्धाओ खबणद्धाओ च अस्सिदृण हाणाणमप्पाबहुजपरूबणा किमह ण

कीरदे१ ण णोकसायवंधगद्धाणं खवणद्धाणं च॒ अंतरविसयअवगमाभावादो ।

६४० अब प्रतिपक्षभूत बन्धकालोकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य स्थानक अल्पबहुखका

कथन करते हैं। जो इस प्रकार द्वैसोलह कपाय भय और जुग़॒प्साके स्थितिसत्कमेस्थान

सबसे थोड़े हैं। वे कितने हैं एकेन्द्रियकी एक कम जघन्य स्थितिसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ी

सागर प्रमाण है । उनका प्रमाण अंकसंदष्टिकी अपेक्षा पाँच सौबारद्द ५१२ लेना चाहिए।

इनसे नपुंसकवेदके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं स्वेद और

पुरुषवेदके बन्धकाख्प्रमाण अधिक हैं। अंकसंष्टिसे उनका प्रमाण ५२२ होता हे ।

इनसे अरति और शोकके स्थितिखत्कमैस्थान विशेष अधिक हैं। कितने विशेष अधिक

हैं हास्य और रतिके बन्धकालमेसे खीवेद और पुरुषवेदके बन्धकाकको घटा देनेपर जितना

शेष रहे तत्नमाण विशेष अधिक हैं । अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा इनका प्रमाण ५४४ होता है । इनसे

हास्य और रतिके स्थितिसत्कर्मस्थान विशेष अधिक हैं। अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा इनका प्रमाण

६४० होता है । वे कितने अधिक हैं अरति और शोकके बन्धकालमेंसे हास्य और रतिके बन्ध

कारको घटा देनेपर जितना शेष रहे तत्ममाण विशेष अधिक हैं। इनसे ख्रीवेदके स्थितिसत्कर्म

स्थान विशेष अधिक हैं । अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा इनका प्रमाण ६६४ होता है। वे कितने अधिक हैं

पुरुषवेद और नपुंसकवेदके बन्धकालमेंसे अरति और शोकके बन्धकालके घटा देनेपर जितना

शेष रहे उतने अधिक हैं । इनसे पुरुषबेदके स्थितिसत्कमेस्थान विज्ञे अधिक हैं। अंकसंदष्टिकी

अपेक्षा इनका प्रमाण ६७० होता दै । कितने अधिक हैं खीवेद्के बन्धकालमेंसे पुरुषवेदका

बन्धकाल घटा देनेपर जितनाशेष रहे तस्प्रमाण विशेष अधिक हैं।

शंंकाबन्धफाल और क्षपणाकालकी अपेक्षा सत्कर्मेस्थानोंके अल्पबहुत्वका कथन

किसलिये नहीं किया ९

समाधाननहीं क्योकि नोकषायविषयक बन्धकाल और क्षपणाकालके अन्तरका

ज्ञान नहीं होनेसे नहीं किया ।

Page 355:

३६६ उजयधवलासहिदे कसायपाहुडे द्विदिजिहसी हे

एदमप्पाबहुअं सब्बमग्गणासु जाणिदृण जजेयच्वं । एवं तह हिंदीए ति जं पदं

तस्म अत्थपरूवणा कदा । एवं कदाश् ह्िदिविहत्ती समत्ता।

हिद्विद्दत्ती समत्ता।

इस अल्पबहुत्वकी सब मार्गणाओंमें जानकर योजना करनी चाहिए। इस प्रकार गोथा

मर में जो तह ट्विदीए पद आया है उसको अर्थप्ररूपणा की। इस प्रकार करने पर

स्थितिविभक्ति समाप्त होती हे ।

स्थितिनिभक्ति समाप्त

Page 356:

श १ द्िदिविह्तिच् णिणसृत्ताणि

पुस्तक ३

उद्िदिविहत्ती दुबिहामूरुपयटिडटिदिविहत्ती चेव उत्तरपयडिट्डिदिविहत्ती

चेव । तत्थ अपदं । एगा हिंदी ट्विदिविहत्तो अणेगाओ हिदीओ ट्विदिविहत्ती ।

तत्थ अणियोगदाराणि । सव्वविहदत्ती णोसव्वविहत्ती उकस्सविहत्ती अणुकस्सविहत्ती

जहण्णविहत्तो अजहण्णविहत्ती सादियविहत्तो अणादियविहत्ती धुवविहत्ती अद्धुवविहत्ती

एयजीवेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविच्रओ परिमाणं खेत्तं पोसणं कालो

अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं च श्ुुजगारो पदणिक्खेवो वड़ी च । एदाणि चेव उत्तर

पयडिट्टिदिविहत्तीए कादव्वाणि ।

उत्तरपयडिट्टिदिविहत्तिमणुमग्गइस्सामो । त॑ जहा । तत्थ अद्डपदं । एया

हिंदी द्विदिविहत्ती अणेयाओ द्विदीओ हिद्विहत्ती । एदेण अहपदेण । पसाणाणु

गमो मिच्छत्तस्स उकस्सहिंदिविहत्ती सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीभो पडिबुण्णाओ ।

एवं सेम्मच्सम्मामिच्छन्ताणं । णवरि अंतोमुहत्तणाओ । सोलसण्दं कसायाणयुकस्स

दिदिषिहक्ती चत्तालीससागरोचमकोडाकोडीओ पडिवुण्णाओ एवं णवणोकसायणं ।

णवरि आवलिऊणाओ । एवं सव्वासु गदीसु णेयव्वो ।

१ शत्तो जहण्णयं । मिच्छत्तसम्मामिच्छत्तबारसकसायाणं जहण्णदिदिविहत्ती

एगा हिंदी दुसमयकालट्विदिया । सम्मत्तलोहसंजलणइत्थिणबुंसयवेदाणं जदण्णषठिदि

विहत्ती एगा हिंदी एगसमयकालदिदिया । कोहसंजलणस्स॒ जहण्णहविदिविहत्ती

वेमासा अंतोगुहू्णा । माणसंजलणस्स जहण्णड्विदिविहत्ती मासो अंतोम्नइत्तणों।

मायासंजलणस्स जहण्णद्विदिविहत्ती अद्धमासो अंतोमुहुत्तणो पुरिसवेदस्स जह्ण

ट्विदिविहत्ती अहवस्साणि अंतोहुत्ृणाणि । छण्णोकसायाणं जहण्णहिंदिविहत्ती

संखेजाणि वस्साणि गदीसु अशुमग्गिदन्बं

१ ए० २।२ ए०५१३ ए०७। ४ ए०८। ५४० १६१। ६

प १8३ । ७ ए० १४७४ । ८ ए० १६७। ६ ४० १६७। १० ४० १६६ । ११

भू० २०२। १२ ४० २०३॥ १३ ए० २०५॥ १४ ए० २०७। १५ ए० रण ।

१६ ० २०६ । १७ ए० २३० १८ छ० २१३ ।

Page 357:

रे परिखिद्राणि

एयजीवेण सामित्त । मिच्छन्तस्स उकस्सद्धिदिनिहत्ती कस्स १ उकस्सद्विदिं

बंधमाणस्स। एवं सोलसकसायाणं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमुकस्सट्टि दिविहत्ती

कस्स मिच्छत्तस्स उकस्सहिदिं बंधिदृण अंतोम्नहुत्तद्ं पडिभग्गो जो ट्विदिघादमकादूण

सब्वलहु सम्मत्तं पडिवण्णो तस्स॒पटमसमयवेदयसम्मादिद्िस्स । णवणोकसायाण

सुकस्सट्टिदिविहत्ती कस्स कसायाणमुकस्सहिदिं बंधिदूण आवलियादीदस्स ।

एत्तो जहण्णयं । मिच्छत्त स्स जहण्णद्िदिविहत्ती कस्स मणुसस्स वा मणु

सिणीए वा खविजञमाणयमाबलियं पवि जाघे दुसमयकालहिदिगं सेसं ताथे ।

ससुम्मत्तस्स जहण्णहिदिविहत्ती कस्स १ चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस् ।

ज्यस्मामिच्छत्तस्स जहण्णहि दविविहत्ती कस्स । सम्मामिच्छन्तं ख बिजञमाणं वा उच्बेल्लिज

माणं वा जस्स दुसमयकारुद्टिदियं सेसं तस्स अणंताणुबंधीणं जदण्णष्िदिविहत्ती

कस्स अणंताणुवंधो जेण विसंजोहदं आवलियं पविद्रं दुसमयालदिदिगं सेसं तस्स

अद्रण्णं कसायाणं जदण्णदिदिविहनत्ती कस्स १ अकसायक्खवयस्स दुसमयकालट्टिदियस्स

तस्स । कोधसंजलणस्स जहण्णद्विदिविहत्ती कस्स खवयस्स चरिमसमयअणिल्केविदे

कोदसंजलणे । एवं माणमायासंजलणाणं । लोहसंजलणस्स जहण्णहिंदिविहत्ती

कस्स १ खवयस्स॒चरिमसमयसकसायस्स । इत्थिवेदस्स जहण्णटि दिविहत्ती कस्स १

चरिमसमयदस्थिवेदोदयखवयस्स । पुरिसवेदस्स जहण्णटि दि विहत्ती करस १ पुरिसवेद

खवयस्स चरिमसमयअणिल्लेविदपुरिसवेदस्स । णबुंसयवेदस्स जहण्णट्विदिविहत्ती

कस्स चरिमसमयणबुंसयवेदोदयक्खबयस्स । छण्णोकसायाणं जहण्णद्िदिविहत्ती

कस्स १ खवयस्स चरिमे द्िदिखंडए वइमाणस्स

ग्णिरयगईैए ऐेरइएसु सम्मत्तस्स जहण्णट्विदिविहत्ती कस्स चरिमसमय

अक्खीणदंसणमोहणीयस्स । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णद्विदिविहत्ती कर्प १ चरिम

समयउव्वेललमाणस्स । अग॑ताणुबंधीणं जहण्णट्विदिविहत्ती कस्स जस्स विसंजोश्दे

दुसमयकालहिदियं सेसं तस्स । सेसं जहा उदीरणाए तहा कायच्वं । एवं सेसासु

गदीसु अणुमग्गिदन्वं ।

कालो । मिच्छन्तस्स उकस्सद्धिदिसंतकम्मिओ केविचरं कालादो होदि

जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण अंतोहृतं । एवं सोलसकसायाणं । णबुंसयवेद

अरदिसोगमयःदुगुंछाणमेवं चेव । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमुकस्सट्ठि दिविहक्तिओ

१ ए० २२६। २ प्रण २३० ३ ए० २३१। ४ ए० २३३।

५ ० २४१। ६ ४० २४३। ७ घपृ० २४७। ८ ए० २४७५। ६ ए० र७८।

१० ए० २४९। ११ ए० २५० १२ ए० २५१॥ ३३ प रणर२। १४ ए० २८५३॥

१५ ४० र७४। १६ ए० रण७। ३७ ए० २५९। त षन रणप।

१९ ४० २६६ । २० ४० २६७ ॥ २१ ए० २६८। २२ घ० २६६ । २३ १० २७०

Page 358:

परिसिद्यणि डर

केविचरं कालादो होदि । जहण्णुकस्सेण एगसमओ । इत्थिवेदपुरिसवेदहस्सरदीण

मुकस्स ट्विदिविहात्तिओ केवचिरं कालादो होदि जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण

आवलिया । एवं सव्वासु गदीसु ।

ज्जहण्णट्विदिसंतकम्मियकालो । मिच्छत्तसम्भत्तसम्मामिच्छत्तसोलसकसाय

तिबेदाणं जदृण्णुकस्सेण एगसमओ । छण्णोकसायाणं जदण्णहिदिसंतकम्मियक्षारो

जहण्णुकस्सेण अंतोम्नहुत्त ।

अंतरं । मिच्छत्तसोटसकसायाणयुकस्सटिदिसंतकम्मिगं अंतरं जहण्णेण

अंतोगुहत्तं । उकरसमसंखेजा पोग्गलपरियद्ा । एवं णवणोकसायाणं । णवरि जहण्णेण

एगसमओ । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमुकस्साणमुकस्स डि दिसंतकम्मियंतरं जहण्णेण

अंतोयुहुत्त उकस्स ुवहपोग्गलपरियदधं ।

एत्तो जहण्णयंतरं । मिच्छ्तसम्मत्तबारसकसायणवणोकसायाणं जहण्ण

द्िदिविहत्तियस्स णत्थि अंतरं । सम्मामिच्छत्तअणंताणुबंधीणं जदण्णह्िदि विहक्तियस्स

अंतरं जहृण्णेण अतोहं । उकस्सेण उबड्डपोग्गलपरियईं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ । तत्थ अद्ड पद । तं जदाजो उकस्सियाए द्िदीए

विहृत्तिओं सो अगुकस्सियाए ट्विदीए ण होदि विहत्तिओ । जो अणुकस्सियाए ट्विदीए

विहत्तिओ सो उकस्सियाए द्िदीए ण होदि विदहत्तिओ । जस्स मोहणीयपयडी अत्थि

तम्मि पयदं । अकम्मे बबहारो णत्थि । देण अद्धपदेण मिच्छत्तस्स स्वे जीवा

उकस्सियाए ट्विदीए सिया अविहत्तिया सिया अविदत्तिया च विहत्तिओ च

सिया अविहत्तिया च विहत्तिया च । ३ । अणुकस्सियाएं ट्विदीए सिया सब्बे जीवा

विहत्तिया । सिया विहत्तिया च अवित्तिओ च । ऽभ्सिया विहत्तिया च अविहत्तिया

च । एवं सेसाणं पि पयडीणं कायव्बो ।

जहण्णए भंगविचए पयदं त॑ चेव अद्कपरदं । णदेण अहपदेण मिच्छततस्स

सब्बे जीवा जहण्णियाएं ट्विदीए सिया अविहत्तिया सिया अविहत्तिया च विहर्तिओ

च। सिया अविहत्तिया च विहत्तिया च । अजहण्णियाए ट्विदीए सिया सब्बे जीवा

विहत्तिया सिया विहत्तिया च अविहत्तिओ च । सिया विहत्तिया च अविद्दत्तिया

च । एवं तिण्णि भंगा। एवं सेसाणं पयडीणं कायव्वो ।

जधा उकस्सट्विदिबंधे णाणाजीवेहि कालो तथा उकस्स ह्िदिसंतकम्मेण

१ ए० २७१ २ १०२७२ ३ ० २९० । ४ ह० २६१ । ५ ए० ३१६।

६ प्र० ३१७ ॥। ७ ए० इ१८। ० ४० ३३०। ६ ४० ३३१। १० प्र ३३२।

११ ए० ३४५ १२ ए० ३४६। १३ ए० ३४७। १४ ४० ३४८। १५ प्र ३४७६

१६ प ३०७० । ७ ए० ३५१। १८ ए० ३८७।

Page 359:

च परिज्द्राणि

कायव्वो । णवरि सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणयुकस्सह्टिदी जहण्णेण एगसमओ ।

उक्षस्तेण आवलियाए असंखेजदिभागो ।

स्जहण्णए पयदं । भिच्छत्तसम्मत्तबारसकसायतिवेदाणं जहण्णट्टिदिविहत्तिएहि

णाणाजीबेहि कालो केवडिओ । जहण्णेण एगसमभो । ज उकस्सेण संखेजा समया ।

सम्मामिच्छत्तअणंताणुबंधीणं चउकस्स जहण्णद्टिदि विहत्तिएदि णाणाजीवेहि कालो

केवडिओ । जदण्णेण एगखमओ । उकस्सेण आवलियाए असंखेजदिभागो छण्णो

कसायाणं जहण्णद्विदिविदत्तिएहि णाणाजीवेहि सालो केवडिओ जदण्णुकस्सेण

अंतोम्नहुत्त ।

णाणाजीवेदि अंतरं । सब्वपयडीणमुकस्सट्टिद्विहत्ति याणमंतरं केवचिरं

कालादो होदि जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण अंगुलस्स असंखेजदिभागो ।

एत्तो जहण्णयंतरं । भिच्छत्तसम्मत्त अटकसायछण्णोकसायाणं जहण्णहिदि

विहत्तिंतरं जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण छम्मासा। सम्मामिच्छत्तअणंताणु

बंधीणं जहण्णड्धिदिविहत्ति अंतरं जरण्णेण एगसमओ । उकस्तेण चउबीसमहोरत्ते सादि

रेगे। तिण्ह॑ संजलणपुरिसवेदाणं जदण्णद्टिदि बिहत्तिअंतरं जदण्णेण ए गखमओ ।

उकस्सेण वस्सं सादिरेयं । लोभसंजलणस्स जदण्ण्िदि विहत्तिअंतरं जहण्णेण

एगसमओ । उकस्सेण छम्मासा । इत्थिणबुंसयवेदाणं जहष्ण्धिदिषिदत्तिअंतरं जह्णेण

एगसमओ उकस्सेण संखेजाणि वस्साणि । ऽणिरयगईए सम्मामिच्छत्त अणंताणुबंधीणं

जदण्णद्िदिविहत्ति अंतरं जदण्णेण एगसमओ । उ कस्सं चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

सेसाणि जहा उदीरणा तहा णेदव्वाणि ।

सब्णियासो मिच्छत्तस्स उकस्पियाए ट्विदीए जो विहत्तिओ सो सम्मत्त

सम्मामिच्छताणं सिया कम्मंसिओ सिया अकम्मंसिओ जदि कम्मंसिओ णियमा

अशुकस्सा । उकस्सादो अशुकस्सा अंतोमहुत्तणमादिं कादूण जाव एगा हिदि त्ति ।

ग्णवरि चरिस॒व्वेन्लणकंडयचरिमफालीए उणा । सोलसकसायाणं रिञकस्सा अणु

कस्सा १ उकस्सा वा अणुकस्सा वा । उकस्सादो अणुकस्सा समयुणमादिं कादण

पलिदोवमस्स असंखेजदिभागेणणा त्ति । दत्थपुरिसवेदःदस्सरदीणं णियमा

अशुकस्सा। उकस्सादो अणुकस्सा अंतोम॒हुत्तणमादिं कादूण जाब अंतोकोडाकोडि सि

१ प्र इ८्८। २ प्रृ० ३९४। ३ प्रज ३५९ । ४ ए० ३९६।

५ प्र० ७०६। ६ प्रू० ७०७ ७ पृ० ४१० म पर ४११ ३ प्रृ० ४१२।

१० प्ृ० ४१३ ३३ प्रृ० ४१५। ३२ पृ ४२५ । १३ प ४२६ १४ प्रृ० ७३१ ।

१७ ए० ७४७७ १६ प्र ४४८ । १७ प्रृ० ४७७६ १८ प्रू० ७७०

Page 360:

परिखिद्राणि ५

णवुंसयवेद्अरदिसोगमयदुगुंकाणं ट्विदिविहत्ती किसुकस्सा किमणुकस्सा १ उकस्सा

वा अणुकस्सा वा। उकस्सादो अणुकस्सा समऊणमादिं कादूण जाव वीससागरोवम

कोडाकोडीओ पलिदोबमस्स असंखेजदिभागेण ऊणाओ त्ति। सम्मत्तस्स

उक स्सट्टिदिविदत्तियस्स मिच्छ तर ट्विदिविहत्ती किमुकस्सा किमणुकस्सा णियमा

अणुकस्सा । उकस्सादो अणुकस्सा अंतोयुहुत्तणा । णत्थि अण्णो वियप्यो । सम्मा

मिच्छत्तड्टिदिविहत्ती किगुकस्सा किमणुकस्सा । णियमा उकस्ा । सोलसकसाय

णबणोकपायाणं द्िदिविहत्ती किञुकस्सा अणुकस्सा १ णियमा अणुकस्सा ।

उक्षस्सादो अगुकस्सा अंतोञुहुतुणमा्िं कादूण जाव परिदोचमस्स असंखेजदि

भागेणूणा त्ति। ऽएवं सम्मामिच्छत्तसस वि। जहाः मिच्छत्तस्स

तहा सोलसकसायाणं । इस्थिवेदस्स ऊकस्सट्टिदिविहत्तियस्स मिच्छत्तस्स

ट्विदिविहत्ती किमकस्सा अणुक्स्ता १ णियमा अणुकस्सा । उकस्सादो अणुकस्सा

समुयूगमादिं कादृण जाव पलिदोबमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा त्ति । सम्मत्त

सम्मामिच्छन्ताणं ट्विदिविदत्ती किमुकस्सा अणुकस्सा। णियमा अणुकस्सा ।

उकस्सादो अणुकस्सा अंतोषहुत्तृणमादिं कादृण जाव एगा इदि ति । णवरि चरिः

मुव्वेल्लणकंडयचरिमफालोए ऊणा त्ति । सोरसकसायाणं हिदिविहत्ती किथ॒कस्सा

अणुकस्सा णियमा अणुकस्सा । उकस्सादों अगुकस्सा समऊणमादिं कादृण जाव

अवलियूणा त्ति। पुरिसवेदस्स हिद्विहत्ती किशुकस्सा अणुकस्सा णियमा

अणुकस्सा । उकस्सादो अणुकस्सा अंतोम्॒हुत्तणमादिं कादुण जाब अंतोकोडाकोडि

ति। हस्सरदीणं ट्विदिविहत्ती किसुकस्सा अणुकस्सा उकस्सा बा अणुकस्सा

वा । उकस्सादो अणुकस्सा समयुणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति ।अरदि

सोगाणं हिदिविहत्ती किम्ुुकस्सा अगुकस्सा उकस्सा वा अणुकस्सा वा । उकस्सादो

अगुकस्सा समयूणमादिं कादृण जाव बीससागरोवमकोडाकोडीओ पलिदोबमस्स

असंखेजदिभागेण णाओ त्ति । एवं णबुंसयवेदस्स । णबरि णियमा अणुकस्सा । भय

दुगुच्छाणं ड्विदिविहत्ती किछकस्सा अणुकस्सा णियमा उकस्सा । जहा इत्थिवेदेण

तहा सेसेहि कम्मेहि ।ग्णवरि विसेसो जाणियव्वो । णबुंसयवेदस्स उकस्सहिदि

विहत्तियस्स मिच्छत्तस्स ट्विदिविहत्ती किम्कस्सा अणुकस्सा १ उकस्सा वा अणुकस्सा

वा। उकस्सादो अणुकस्सा समयूणमादि कादृण जाव पलिदोवमस्स असंखेजदि

१ प्र ४५२८२ पु ७७३ । ३ पु ०५५। ७ पृ ४७६। ५ पुर ४४७।

६ पुर ४५८। ७ पूृ० छ७९। ८ पू० ४६१। 8 पु० ४६२। ३० पू० ४६७।

११ पू० द्द । १२ पृ० ४६७ ॥ १३ पु ४६८। १४ पृ० ४७० । १७ पृ० ४७१ ।

१६ पु० ४७७२। ३७ पू० ४७३ ३८ पूृ० ४७६।

Page 361:

हद परिसिद्णिं

भागेण ऊणा ति । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं ट्विंदिविहत्ती किसुकस्सा अणुकस्सा

णियमा अणुकस्सा १। उकस्सादो अणुकस्सा अ तोञहुत्ुणमादिं कादृण

जाव एगा दिदि त्ति। णवरि चरिसुव्वेल्लणकंडयचरिमफालीए ऊणा । सोलस

कसायाणं हिदिविहत्ती किमुकस्सा अणुकस्सा उकस्सा वा अणुक्षस्सा वा ।स्डक

स्सादो अणुकस्सा समयूणमार्दि कादूण जाब आवलिऊणा त्ति । इत्थिपुरिसबेदाणं

दिदिविहत्तौ किसुकस्सा अणुकस्सा णियमा अणुकस्सा । उकस्सादो अणुकस्सा

अंबोमहुत्तणमारदि कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति । हस्सरदीणं हिदिविहत्ती किमु

कस्सा अणुकरसा १ उकस्सा वा अणुकस्सा वा । उकस्तादों अगुकस्सा समऊणमादिं

कादूण जाब अंतोकोडाकोडि त्ति अरदिसोगाणं हिद्विहत्ती किरकस्सा अणुकस्सा १

ठकंस्सा वा अणुकस्सा वा। उकस्सादो अशुकस्सा समऊणमादिं कादृण जाव वीसं

सागरोबमकोडाकोडीओ पलिदोवमस्स असंखेजदिभागेण ऊणाओ । भयदुमुंछाणं

ड्विदिविदत्ती किमुकस्सा अणुकस्सा १ णियमा उकस्सा। एवमरदिसोगमय

दुयुंाणं पि । णवरि विसेसो जाणियव्यो ।

जहण्णहिदिसण्णियासो । मिच्छचजहण्णद्िदिसं्तकम्मियस्स अणंताणुबंधीणं

णत्यि । सेसाणं कम्माणं इदि विहत्ती कि जदण्णा अजहण्णा १ णियमा अजदण्णा ।

जहण्णादो अजहण्णा असंसेजञगुणन्भदिया । मिच्छन्तेण णोदो सेसेहि वि अशुमग्गि

यन्वो ।

गूञ्प्पावहु्थं । सव्वत्थोवा णवणोकसायाणश्चकस्सहटिदिविहत्ती । सोलस

कसायाणश्चुकस्सषटिदिविहत्ती विसेसहिया। सम्मामिच्छनत्स्स उकस्सहिदिविहत्ती

विसेसादिया । सम्मत्तस्स उकस्सद्विदिविहत्ती विसेसाहिया। मिच्छत्तस्स उकस्स ट्वि दि

विहत्ती विसेसाहिया। णिरयगदीए सब्वत्थोवा इत्थिवेदपुरिसवेदाणसुकस्स ट्टिदि

विहत्ती। सेसाणं णोकसायाणयुकरस ट्विदिविहत्ती विसेसाहिया । ऽसोलसण्डं कसायाण

मुकस्सट्विदिविहत्ती विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स उकस्सद्विदिक्हित्ती विसेसाहिया ।

सम्मत्तस्स उकस्सट्विदिविहत्ती विसेसाहिया । मिच्छत्तस्स उकस्सट्िदिविदत्तौ विसेसा

दिया । सेसासु गदीसु णेदव्वो ।

१ पु ७७७ । र पृ० ४७८ । हे पृ० ४७७९। ४ पु० ७८० । ७ पु० ४८१

६ पृ० श्मर। ७ पुर छतद। ८ पृ ४६४। ३ पृ ४९७। १० पृ ७२४।

११ पुर ७२५ । १२ पृ० ५२६ । १३ पु० ५२७।

Page 362:

परिसिद्याणि ७

जे युजगारअप्पदरअवहिदअवत्तव्वया तेसिमहपदं । स्जत्तियाओ अस्स

समए ट्विदिविहत्तीओ उस्सकाविदे अणंतरविदिक्कंते समए अप्पदराओ बहुद्रविहत्तिओ

एसो अजगारविहत्तिओो । ओसकाविदे बहुद्राओ विहत्तीओ एसो अप्पदरविहत्तिओ ।

ओसकाविदे उस्सक्ताविदे वा तत्तियाओ चेव विहत्तिओ एसो अवहिद

विहत्तिओः । अबिहत्तियादो विहत्तियाओ एसो अवत्तव्वविहत्तिओ । एदेण अहपदेण ।

सामित्तं। मिच्छत्तस्स॒भरुजगारअप्पदरअवद्िदविह्तिओ को होदि ९

अण्णद्रो णेरइयो तिरिक्यो मणुस्सो देबो बा । अवत्तव्वओ णत्थि । सम्मत्त

सम्मामिच्छन्ताणं श्रुजगारअप्यद्रविहत्तिओ को होदि अण्णद्रो णेरहयो तिरिक्ो

मणुस्सो देवो वा अवद्िदविदक्तिओ को होदि १ पृव्छप्पण्णादो समत्तादो समयुत्तर

मिच्छत्तेण से काले सम्मत्तं पडिवण्णो सो अवद्धिदविहत्तिओ । अवत्तव्वविदृत्तिओ

अण्णदरो । एवं सेसाणं कम्माणं णेद्व्वं ।

एगजीवेण कालो। मिच्छत्तस्स झ्ुुजगारकम्मंसिओ केवचिरं कालादो

होदि। जदण्णेण एगसमओ। उकस्सेण चत्तारि समया ४। अप्पदरकम्मंसिओ

केवचिरं कालादो होदि । जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण तेवहिंसागरोबमसदं

सादिरियं। अवहिदकम्मंसिओ केवचिरं कालादो होदि १ जह्णेण एगसमओ। उकस्सेण

अंतोघ्नहुत्त । एवं सोलसकसायणवणोकसायाणं । णवरि थजगारकम्मं सिओ उकस्सेण

एगूणवीससमया । अणंताणुबंधिचउकस्स अवत्तव्यं जहण्णुकस्सेण एगसमओ ।

गसभ्मत्तसम्मामिच्छ त्ताणं भज गारअवद्िद्अवत्त व्वकम्म॑सि ओ केवचिरं कालादो

होदि १ जदण्णुकस्तेण एगस मओ । अप्पदरकम्मंसिओ केवचिरं कालादो होदि १

जहण्णेण अतोहु्तं । उ कस्सेण वेछावद्विसागरोवमाणि सादिरेयाणि।

अंतर । मिच्छत्तस्स अज गारअवहिदकम्मंसि यस्स अंतरं जदण्णेण एग

समओ । उकस्तेण तेवह्िसागरोवमस दं सादिसेयं । अप्पदरकम्मंसि यस्स अंतरं केव

चिरं कालादौ होदि १ जदण्णेण एगस मओ । उकस्सेण अंतोमु हुत्त । सेसाणं पि णेदव्वं ।

णाणाजीबेदि भंगविचओ । संतकम्मिएसु पयदं । सब्बे जीवा मिच्छत्त

सोलस कस यणवणोकसायाणं शून गारष्िदिविहत्तिया च अप्पदरद्टिदिविहत्तिया च अब

ट्विदड्डिदिविहतिया च। अणंताणुबंधीणमवत्तव्वं भजिदव्वं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं

१पृ०१।२पु०२।३पृ०३। ४पु०६।५ पु०७।६ पु०९।

७ पु० १०। म पु १४ । 8 पु १५। १० पु० १८। ११ पुृ० १९।

१३ पु० २०। १३ पु० २३। १४ ए० २७। १५ ९० २५। १६ ए २६।

१७ ४० ४ । १८ ए० ४३। १९ परण ५०। २० ए० ५१

Page 363:

८ परिसिदटराणि

आुजगारअवड्टिदअवत्तव्वद्टिदिविहत्तिया भजिदव्वा । अप्पद्रट्टिदिविहत्तिया णियमा अत्थि।

णाणाजीवेहि कालो । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं शुजगारअव ट्विदअवत्तव्वद्ठिदि

विह्तिया केवचिरं कालादो होति जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेस आवलियाए

असंखेजदिभागो । अप्पदरष्टिदिविहत्तिया केबचिरं कालादो होति सब्बद्धा ।

वसेसाणं कम्माणं विहत्तिया सव्वे सव्वद्धा । णवरि अणंताण्बधीणमवत्तव्वद्धिदि

विहत्तियाणं जदण्णेण एगसमओ । उउकस्तेण आवलियाए असंखेजदिभागो ।

भ्अतरं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं श्ुनगारअग्द्टिद द्िदिविहत्तियंतरं केवचिरं

कालादो होदि नदण्णेण एगसमओ । उकस्सेण चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे ।

अवड्टिदट्टिदिविहत्तियंतरं केवचिरं कालादो दोदि १ जदण्णेण एगसमओ । उकस्तेण

अगुलस्स असंखेजदिभागो । अष्पदरदिदिविहत्तियंतरं केवचिरं कालादो होदि

णत्थि अतरं । सेसाणं कम्माणं सव्वेसि पदाणं णत्थि अतरं णवरि अणंताणु

ज॑धीणं अवत्त्चह्िदिविहत्तियं तरं जदण्णेण एगसमओ । उकस्सेण चउवीस

महोत्तरे सादिरेभे ।

सण्णियासो । मिच्छत्तस्स जो अजगारकम्मंसिओ सो सम्मत्तस्स सिया

अप्यदरकम्मं सिओ सिया अक्म्मंसिओ । एवं सम्भामिच्छत्तस्स बि । सेसाणं णेदव्वो ।

अप्पाबहुअ । मिच्छत्तस्स सब्बत्थोवा श्रुजगारहिंद्विहत्तिया । अवहिदद्विदि

विहत्तिया असंखेजगुणा । अप्पदरष्टिदिविहत्तिया संखेजगुणा । एवं बारस

कसायणवणोकसायाणं । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सव्व॒त्थोवा अवद्धिदह्टिदिविहत्तिया ।

युजगारषटिदिविहत्तिया असंखेजगुणा । अवत्तव्वद्ठिदिविहत्तिया असंखेझशुणा।

उअप्पदरहिदिविहत्तिया असंखेयुणा । अणंताणुबंधीणं सव्वत्थोवा अवत्तव्व

दिदिविहक्तिया । थुजगारहिदिविहत्तिया अणंतगुणा । अवष्िदद्िदिविहत्तिया असंखेज

गुणा । अप्यद्रद्िदि विहत्तिया संखेजगुणा ।

पत्तो पदणिक्खेवो । पदणिक्सेबे परूबणा सामित्तमप्पाबहुअ अ । अप्पा

बहुए पयदं । मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा उकस्सिया हाणी । डकस्सिया वही अबद्ार्ण

च सरिसा विसेसाहिया । एवं सब्वकम्माणं सम्मत्तसम्मामिच्छन्तवज्ञाणं । णवरि

णबुंसयवेदअरदिसोगभयदुगुंछाणशुकस्यिा। बड़ी अबद्धाणं थोवा । २ उकस्सिया

हाणी विसेसाहिया । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं सब्वत्थोवम्नुकस्समवट्टाणं ।उकस्सिया

१ ए० इ७। २ षएर० क । ३ ४० ६६॥ ४ १०७४॥। ५ ४० ७५।

प्र ७७। ७ १० ८३॥ ८४० ८७ ३ ४ए० ५। १० ४० ६।

११ ए० ७। १२ ए० ९८। १३ ४० १०१। १४ १०२। १५ १०५।

१६ ० ११०॥ १७ 0० १११ १८ ए० ११२। १६ ए० ११३।

Page 364:

परिसिंद्राणि हि

हाणी असंखेजगुणा । उकस्सिया बह्म विसेसाहिया। जहण्णिया वडी जहण्णिया

हाणी जहण्णयमवट्टा्णं च सरिसाणि ।

शत्तो बढ्ढी । मिच्छत्तस्स अस्थि असंखेजभागवह़ी हाणी संखेजभागवी हाणी

संखेजगुणबड़ी हाणी असंखेजगुणहाणी अबहाणं । एवं सब्बकम्माणं। णवरि

अपंताुंधणमवतव्वं सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणमसंखेजगुणवड्ढी अवत्तव्वं च अत्थि ।

एगजीवेण कालो । मिच्छत्तस्स तिविहाए बीए जहणोण एगसमओ ।

उकस्सेण वे समया । असंखेजभागहाणीए जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण तेवहि

सामरोबमसदं सादिरेयं । संखेजमागहाणीए जहण्णेण एगसमओ । ठकस्सेण

जहण्णमसंखेजयं तिरूवृणयमेत्तिर समए। संखेजगुणदहाणिअसंखेजगुणदाणीणं

जह्णुकस्सेण एगसमओ। अवड्डिद्टिदिविद्दत्तिया केवचिरं कालादो होंति।

जहण्णेण एगसमओ । उकस्सेण अंतोस॒हुत्त । सेसाणं पि कम्माणमेदेण बीजयदेण णेदव्वं ।

११एगजीवेण अंतरं । मिच्छत्तस्स असंखेजमागवडिअनट्ाणडिदिविहततियंतरं

केबचिरं कालादो होदि। जदण्णेण एगसमयं । उकस्सेण तेवहिसागरोबमसद तीहि

पलिदोबमेहि सादिरेयं । संखेजभागवड्डिदाणिसंखेजगुणवह्डिहाणिट्टिदिबिदत्तियंतर

जदृण्णेण एगसमओ हाणी० अंतोम॒हुत्त । उकस्सेण असंखेजा पोग्गलपरियड्टा ।

असंखेजगुणहाणिटिदिविहत्तियंतरं जहण्णुकस्सेण अंतोघ॒हुत्त । असंखेजमागहाणि

हिंदिविदत्तियंतरं जदण्णेण एगसमओ । उकस्सेण अंतोयुहुत्त। सेसाणं कम्माणमेदेण

बीजपदेण अणुमग्गिदव्ब ।

अप्पाबहुअं । मिच्छत्तस्स सब्वत्थोवा असंखेजगुणहाणिकम्मं सिया । संखेज

गुणदाणिकम्मंसिया असंखेजगुणा। संखेजभागहाणिकम्म॑सिया संखेजगुणा । संखेज

गुणवड्डिकम्मंसिया असंखेजगुणा । संखेज्ञमागवड्डिकम्मंसिया संखेजगुणा ।

असंखेजभायवड्डिकम्मंसिया अणंतगुणा । अविद्कम्मं सिया असंखेखयुणा ।

रअसंखेजमागहाणिकम्मं सिया संखेजगुणा । एवं बारसकसायणवणोकसायाणं ।

सम्मत्तसम्मामिच्छताणं सव्वत्थोवा असंखेजगुणहाणिकम्मंसिया । अबह्धिद्

कम्मंसिया असंखेजणुणा । असंखेजभागवड्डिकम्मंसिया असंखेजगुणा । असंखेज

ुणवहिकम्मंसिया असंखेजगुणा । संखेजगुणवड्डिकम्मंसिया असंखेजगुणा ।

संखेजमागवड्डिकम्मं सिया संखेजगुणा । ऽसंखेज्ञगुणहाणिकम्मं सिया संखेजगुणा ।

१ ९० ११६। २ ४० ११७। ३ ए० १४७० । ४ छए० १४१। ५ ० १५०॥

६ ए० १६७ । ७ ए० १६६ ८ ए० १६७। ३ ए० १६८। १० प्र० १६६ ।

११ ४० १8३ १२ ए० १६२। १३ ए० ३६४३ । १४ ए० १६४ ३५ छू० २७७।

१६ ए० २७७। १७ ए० २७८ । ३८ घृ० २८३। १६ पर २८७ २० पू० रघ८।

२१ ४० २८६ । २२ ए० २६० २३ छ० २९३ । २४ ए० २६४७। २५ ए० ९६६॥

२६ ए० २९८ । २७ ४० २६६ ।

Page 365:

१० परिसिद्राणि

संखेजभागहाणिकम्मंसिया संखेजगुणा । अवत्तव्वकम्मंसिया असंखेजगुणा । असंखेज

भागहाणिकम्मंसिया असंखेजगुणा । अणंताणुबंधीणं सब्वत्थोवा अवत्तव्वकम्मंसिया।

असंखेजगुणहाणिकम्मंसिया संखेजगुणा । । सेसाणि पदाणि मिच्छत्तमंगो ।

डट्विदिसंतकम्महाणाणं परूवणा अप्पावहुआं च । परूवणा। मिच्छत्तस्स

द्िदिसंतकम्मटाणाणि उकस्सियं ट्विदिमादिं कादूण जाव एहंदियपाओग्गकम्मं

जहण्णयं ताव णिरंतराणि अत्थि। अण्णाणि पुण दंसणमोहक्खवयस्स अणियद्डिपविहस्स

जम्दि ट्विदिसंतकम्मेहंदियकम्मस्स हेहदो जाद तत्तो पाए अंतोमनुहुत्तमेत्ताणि द्विदिसंत

कम्महाणाणि लब्भंति । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं ह्िदिसंतकम्महाणाणि सत्तरिसाग

रोवमकोडाकोडीओ अंतोमहुत्तूणाओ। अपच्छिमेण उव्वेररुणकंडएण च ऊणाओ

एत्तियाणि हाणाणि । जहा मिच्छत्तसस तहा सेसाणं कम्माणं ।

अभवसिद्धियपाओग्गे जसि कम्मंसाणमग्ग्िदिसंतकम्मं तुरं जदण्णगं

दिदिसंतकम्मं थोवं तेसिं कम्मंसाणं हाणाणि बहुञाणि ।

माणि अण्णाणि अप्पाबहुअस्स साहणाणि कायव्वाणि । तं जहासब्वत्थोवा

चारित्तमोहणीयक्खवयस्स अणियष्टिजद्धा । अपुव्वकरणद्धा संखेज़गुणा। चारित्त

मोहणीयठवसामयस्स अणियद्धिद्धा संखेजञगुणा । अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा ।

प्दुखणभोहणोयक्खवयस्स अणिय द्िअद्धा संखेजगुणा । अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा ।

अणंताणुब॑धीणं विसंजोएंतस्स अणियद्धि अद्धा संखेजगुणा । अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा।

र्द सणमोहणीयडवसामयस्स अणियद्दिअद्धा संखेजगुणा । अपुव्वकरणद्धा संखेजगुणा ।

पत्तो ट्विदिसंतकम्मड्डाणाणमप्पाबहुअं । सव्बत्थोवा अहृण्ह कसायाणं हिदिसंत

कम्महाणाणि । उइत्थिणवुंस्यबेदाणं हिदिसंतकभ्मटणाणि तुल्लाणि विसेसाहियाणि ।

ण्डृण्णोकसायाणं द्विदिसंतकम्महाणाणि विसेसाहियाणि । पुरिसवेदस्स दिदिसंत

कम्महाणाणि विसेसादिवाणि । कोधसंजलणस्स दि दिसंतकम्मटाणाणि विसेसाहि

याणि । माणसंजलणस्स द्िदिसंतकम्मङाणाणि विसेसादियाणि । मायासंजलणस्स

दिदिसंतकम्महाणाणि विसेसाहियाणि । रोभसंजलणस्स ट्विदिसंतकम्मद्ठाणाणि

विसेसाहियाणि । अणंताणुबंधीणं चदुण्टं ड्विदिसंतकम्मद्ाणाण विसेसाहियाणि ।

मिच्छत्तसस ट्विद्सिंतकम्मह्ाणाणि विसेसाहियाणि । सम्मत्तस्स ट्विदिसंतकम्मद्ठाणाणि

विसेसाहियाणि । सम्मामिच्छत्तस्स द्विदिसंतकम्मइाणाणि विसेसाहियाणि।

एवं तह दिदीए त्ति जं पदं तस्स अत्थपरूवणा कदा ।

ह १ ए० ३०० २ ४० ३०२। ३ ४० दे०्३े। ४ ए० ३१९। ५

९० ३२२। ६ ए० ३२३। ७ ४० ३२४। ८ ए० ३२५॥ ६ ए० ३२६। ५०

पू० ३२७। १३ ए० शेर्८। १२ १० ३२६ १३ ४० ३३० । १४ ४० बे३े३। १५

पू० ३३२ १६ ए० शेश३ । 4७ ४० ३३४

Page 366:

परिसिद्धाणि ११

२ ऐतिहासिकनामसची

पुस्तक ३

अ आचार्य सामान्य च॒ चिरतन आचार्य ५३४ वप्पदेव ३९८ ६

३२० ३६८ ४७४ चिरंतन व्याख्यानाचार्य इत्तिसूरकत्ां २९२ ला

५१० ५३२ व्याख्यानाचायं २१३

उ उच्चारणाचायं २१९१५२१२ य॒ यतिद्रषम आचार्य १२५ २६१ ५३५

२३४ रप्र २७२ 9 भद्यरक १९१

२९१ २९२ ३४८ १९९ २११ २२९

३५१५ ३८९१ ४०७ २३४ २४१ २५८

५२५ ५३५ २९१ ३४८ ३८९

३९६ ४०७ ४१५ हि

४५३ ४९५ ५२५

पुस्तक ४

ए एलचायं १६९ य यतिदृषमाचार्य है ९ १०० र दित उच्चारणा शर

प॒ परमगुरु ३०१ यतिद्ृषभ शि २६

५१६९७७२७९

२८४ २९९ ३०७

३ ग्रन्थनामोल्लेख

पुस्तक रे

अ अन्य पाठ ३८० । च चूर्णियूत्न १९३ २५८ ख लिखित उच्चारणा ३९६

२७२ २९२ ३१९ ४१५

३२० ३२३२ ३९८

४०७ ४१५ ४८५

४९५ ५२५।

उ उच्चारणा १९९ २११ म॒ महाबन्धसूत्र १९५५४७४ व वष्पदेव लिखित ३९८

३१९ ३२० २३२ बन्धसूत्र ४८० उच्चारणा

४८५१ ४९५ ५०० मूल उच्चारणा ६७ ३६६

५३२ ५३३।

पुस्तक ४

उ उच्चारणा १० १२ १३ च चिरउच्चारणा १२ में महाबन्धसत् ६६ १५७

२६ ४२ ५१ ६९ चूर्णिसूत्र महाबन्ध १६५ ३०२

७८ १०२ १०४ च व बेदना २८६

१०६ ११३ ११६ २६ स सुत्त ९४७

२५१ १५८ १६९ डरे ७७ ७८१०२

१९४ २६२ ३०३ १०३ १०४ ११३

३०६ ३११ ११६ १५१२७९

२९५ ३०३ ३०६

द दो उच्चारणा १३

कं कषायप्राश्त १६५ प॒ पाठ २७

Page 367:

श्र परिसिद्गाणि

४ चूणिसअगतशब्दस नी

पुस्तक ३

अ अकम्म ३४६ अविहत्तिय २४६ ३४७ उक्कस्सषिदि २२९ २३१

अकम्मंतिञ ४२५ २४८ ३५० २५१ २३३ ३८८

अजहृण्ण ४९४ असंखेज ३१७ उक्स्सद्धिदिबंघ ३८७

अजहण्णविहृत्ति ७ असंखेजगुणन्भदिय ४९४ उकस्सद्धिदिविहत्ति १९४५

अजदण्णिय ३५१ असंखेजदिभाग ३८८१३९५ १९७१ २२९ २३१५

अह २४८ ४०७ ४८८ ४५३ २३३ २७० ५२४

अहकसाय २४८१ ४१० ४५७ ४५९ ४७० ५२५ ५२६ ५२७

अह पद ५ १९१ ३४५ ४७६ ४८१ उक्कस्सद्विदिविहत्तिय ४०६

३४६ अहोस्त ४११ ४१५ ४५५ ४५९ ४७६

अदवस्स आ आदि ४२६ ४४८ ४५० उकस्सद्िदिसंत ३८७

अणादियविहत्ति ७ ४५३ ४५७ ४५९ उकस्सद्विदिसंतकम्मिअ

अणियोगदार ७ ४६१ ४६५ ४६६ २९७१ २९६ तकम्मियंतर

अणुकस्स ४२६ ४४७ ४६८ ४७० ४७६५ उकस्सद्विदिसं

४४८ ४४९ ४५० ४७७ ४७८ ४७९ २९८

५५२ ४५३१ ४५५५ ४८० ४८९१ उकत्सविदृत्ति ७ ५

४५६ ८५७ ४५९ आवलिऊण १९७ ४७८ कलम् ३४५ २४६

४६१ ४६५ ४६६ आवक्यि २४१ २४५

दण ४द८ ४७९ २७१ ३८८ ३९५ उत्तरपयडिह्विदिविहत्ति २

४७१ ४७२ ४७६५ आवलियादीद २३३ उदी २५६ ४१५

४७७ ४७८ ४७९ आवलियूण ४६५ उबड्डुपोग्गलपरियट्ट ३१८

४८० ४८१ ४८२ इ इत्थि ४१३ ४४८ ४७८ ध द्व

अणुकस््विहतति ७ इत्थिवेद् हि ५१ २५९४ उ्वेह्लिजमाण २४४

अणुक्रस्सिय ३४५ ३४६ । प्र ४५९१ ४७२ ऊण ४३१ ४४८ ४५३ ४५७

अणेग ५ उ उस २९८२०११

॥

अणेय ६९१ ३५० ३१७ ३१८ ३३२

३९५ ४०७ ४११ ए एगसमय २६७ २७०

अणंताणुबंधि २४५५ २५६ ४१२ ४१३ ४१५ २७१ २९० २९१

३३१ २९५ ४११ ४२६ ४४७ ४४८ । ३१७ ३८८ २९४

४१५ ४६४ ४५० ५५२ ४५३५ ४०६ ४९० ४६६१

अण्ण ४५५ ४५६५ ४५७ ४१२ ४१३ ४१५

अद्वमास २०९ ४५९ ४६१ ४६५ एगसमयकारद्िदिय २०५

अद्भू वविहत्ति ७ ४६६ ४६७ ४६८ एयजीव ७ २२९

अप्पाबहुअ ५२४ ४७० ४७२ ४७६ श्रं अंगुल ४०७

अरदि २६९ ४५२ ४७० ४७७ ४७८ ४७९ अंतर ७ ८ ३१६ ३३१

४८१ ४८२ ४८० ४८१ ४८२ है

Page 368:

परिखिष्ठाणि श

संतोकोडाकोडि ४५० चरिमसमयउव्वेल्कमाण ८ दिदि ५ १६१ २०३

४६६ ४६८ २५५ २०५ २४५ ३४६

अंतोमुहुत्त १६८ २९१ चरिमसमयणवंसयवेदोदय ३४७ ३५० ३५१

३१६ २१८ २३१ क्खवय २५३ ४२५ ४२६ ४६१

३९६ चरिमसमयसकसाय २५१ द्विदिखंडस २५३

अंतोमहुत्तूण १९५ २०७ चरिमुव्वेल््लणकंडयचरिम द्विदिघाद २३१

२०८ २०९ २३१ फालि ४३१ ४६२ दविदिविहत्ति २ ५ १६१

४२६ ४५० ४५५ ४७७ ४५२ ४५५ ४५६

४५७ ४६९१ ४६६ छ छण्णोकसाय २१० २५३ ४५७ ४५६ ४६१

४७७ ४७९ २६१ ३६६ ४१० ४६५ ४६६ ४६७

क कम्म ४७२ ४९५ छम्मास ४११ ४१३ ४७० ४७२ ४७६

कम्मंसिभ ४२७ ५२६ ज॒नहण्ण २६७२७१ ३१६५ ४७७ ४८० ४८२

कसाय १२७ २३२० २४८ २१७ ३१८ ३३२१ ४८२ ४६५

५२५ ३८८ ३६४१ ३६५ ण॒ णवणोकसाय १९० २३३

काल ७ ८ २६७ २७० ४८०६ ४१० ४११५ ३१७ ४५७ ५२५

क २५५ ४१२ ४१३ ४१५५ णवरि १६५ १६७ ३१७

केवचिर ५८ जहण्णिय ३५० ३८८ ४३१ ४६२

केबडिआ ३९४३९५३९६ स्यललम २७० २६६ बिक ४७३ ४७७

कोघसंजलूण २४९

कोइसंजलण कि २४९ जहण्णढिदिविद्दति २०३१ णबुंसयवेद २०५ २५३

ख॒ खबय २४९ २५१ २५३ २०५१ २०७१ २०८ २६६ ४१३ ४५२

खविजमाण २४४ २०६ २१० १४९ ४७१ ४७६

खविजमाणय २४१ २४२० २४५० २४८ णाणाजीव ७१२४५ ३८७

२४६ २५१ २५२

खेत्त ८ ३६४ १९५ रे६६

वि २५३१ २५४ २५५

ग गदि १९९ २११ २५८ २५६ ३३१५ ४०६

२७२१ ५२७ दिमिदसिश्र णियमा ४२६ ४४६१४५५

च चउक ३९५ जहण्णद्िदिविहृत्तिअंतर ४५६५ ४५७४६१

चउवीस ४११ ४१५ ४१० ४११ ४१२ ४६५४६६ ४७३

चत्तालोससागरोवमकोडा ४६१३ ४९५ ४७२ ४७७४७८

कोडि १६७ जहण्णडिदिविदृत्तिय ३६४ । ४८२ ४६४

चरिम २५३ ३६५ ३६६४ णिसयगड् २५४ ४१५

चरिमसभयञक्लीणदंसण जहण्णह्विद्सिण्णियास ४६४ णिस्यगदि ५२६

मोइणीय २४३ २५५ जहण्णड्िद्सिंतकम्मिअकाछ णेरइअ २५४

चारिसमवअणिल्लेबिद्२४९ २६० २६१ णोकसाय ५२६

चरिमसमयअफिल्केषिद जहृण्णय २० २४१ णोसन्ववि्ति ७

पुरिसवेद २५३ 7 ३४६ ३६४ त॒तिवेद् २६० ३६४

चरिमसमयहस्थिवेदोदय जहण्णयंतर ३२०५ ४१० द दुगुंछा २६६ ४५२ ४७२

खवय २५१ जीव ३४६ शे४७ ३५० ४८२

Page 369:

श्ट परिख्िद्नणि

दुसमयकालहिदिग २४१५ मिच्छच १९४ २०३ सम्मामिच्छत्त १९५१ २०३५

२४५ २९८९०२३१ २४१ २३१२४४ २५५

दुसमयकारहिदिय २०३ २६७२९० ३१६ २९० ३१८०२२१

२४८४ २४८ २५६ ३५०३९४ ४१० ३८८ २९५४८१११

४२५ ४५५०४५९१ ४१५ ४२५४९५६

७

च॒ धवनिहसि ४७६ ४९५ ५२६ ४५८ ४६१४६७

प॒ पडिमभग्ग २३१ मिच्छत्तजहण्णडि दिसिंत ५२५

पडिबण्ण १६४ १६७ कम्मिय ४९४ सव्व १९९ २७२ ३४६

पटमसमयवेदयसम्मादिडि मूलपयडिद्िदिविदति २ ३४७ २५०१३५१५

२३१ व मीलन रे४६ सब्वत्योव ५२४ ५२६

१

पदणिक्लेब ८ बढ़ि ८ सब्वपयडि ४०६

पमाणाणुगम १९४ चवहार ३४६ सव्वलहु २३१

पयडि ३४८ ३५१ श २१० ४१२ ४३ सम्बविषत्ति ७

पयद् ३४६ २९४ वत्य ४९५ सागरोबमकोडाकोडि ४८१

परिमाण ८ विसेस ४७३ ४८३

विसेसाहिय ५२५ ५२६ सादियविदतति ७

पलिदोवम ४४८ ४५३ ५२७ सादिरेग ४११ ४१२

४५७१४८९ ४७०५ विसंजोइद २५६ ४१९

४७६ ४८१ विसंयोजिद २४५ सामित ८ ४

पवि २४१ बीससागरोवमकोडाकोडि च ४२५

स्वेद २०९१ २५२१ ५५३ ग र रेप

२७०४६१२ ४४९ । र रदि २७० ४४९ ४६७ ९

४६६ ४७८ ५२३ ४८० सेस २४१ २४४ २४५

क लोभसंजलछण २०५ ४१२ प्

पुरिसमेदखवय २५२ इसंजलण २९६ २५८३४४

लोहर २५१ ३५१ ४५५

पोग्गलपरियद्ध ३१७

बंधमाण २ स॒ सण्णियास ८ ४२५ ४७२४९४ ४९५

ब॒ बंधमाण २९९ सत्तरिसागरोबमकोडाकोडि ५२६ ५२७

बारसकसाय २०३ ३९४ १९४

भ भय २६९ ४५२ ४७२ समय ३६५ सोग २६९ ४५३ ४७०

४८१ ४८२

४८२ 3

सप्रऊण ४६५ ४८०

भुजगार ८ ५८१ सोल्सकसाय २३० २६८

भंगविचम ८ ३४५ ३४९ समयुण ४४८४५३४५९ २९० रे४६४४७

सि ४६८ ४७०४७६ ४७८ ४५७ ४५९४६५

म॒ मणुसिणि २४१ सम्मत्त १६५ २०५२३१ ४७७ ५२५

मणुस्स ९४६ २४३ २५५२६० संखेज्ज २१० ३९५४१३

माणमायासंजडण २५० ३१८१३८८ ३६४ ह॒ हस्स २७० ४४६ २६७

माणसंनल्ण २०८ ४१० ४२५१४५५ ४८०

मायासंजलण २०९ ४६१ ४६७१५२५

मास २०७ २०८ ५२७ ॥

Page 370:

परिसिद्वाणि १५

ह पुस्तक ४

अ अकम्मंसिभ ८३ उवद्धिदविदहत्तिभ ६ ७ असंखेजमागहाणिद्िदि

अग्गदिदिसंतकम्म ३२४ अवत्त्व १ २३१५० १५० बिद्त्तियंतर १९३

अ ३२९ अवत्तव्वअ ३ अहोरत्त ७४ ७७

अद्वपद् १ हे अबवत्तव्वकम्मंसिसभ २४ आ आदि ३१९

अणियद्धिअद्धा ३२६ ३२७ अवनत्तव्वकम्मंसिय ३०० आवलिय ६७ ६८

३२८ ३०२ इ इत्थि ३३०

अणियदधिपविद्धि ३२२ अवत्तव्वझिदिविदत्तिय ५१ उ उक्कस्स १५१ १९ २०१

अणंतरुण १०२ २८७ ६७ ६८ ७७ ९८ १०२ २६ ४२ ४२

अणंतरविदिक्कंत र् अवत्तव्बद्ठिद्विद्दत्तियंतर ७४ ६७ ६९ ७४ ७५

अणंताणुबंधि ५०६८ ७७ ७७ ७७ ११२ ९६४

१०२ १५० ३०२ अवत्तम्बविहत्तिम ३ ९ १६६ १६८ १६९

३२८ रेरेरे अविदत्तिय ३ १९१ १६२ १९४

अणंताणुबंबिचठक्क रर असंखेज १९द् उक्कस्तिय ११० १११

अण्ण ३२२ ३२६ असंखेजय १६८ ११२ ११३१ ३१९

अण्णद्र ६ ७ ६ असंखेजगुण९५९८१० १ उन्वेल्लणकंडअआ २२४

अपच्छिम २३२४ १०२ ११३ २७५ उस्सछकानिद 3

अपुव्वकरणद्धा ३२७ ३२८ २७८ २८७ २९० ऊण ३२४

अप्पदर २ २ ३ रहर २९४ २९३ ए एडंदिकम्म २२

अप्पद्रकम्मंसिअ १८ २५५ ३०० ३०२ एदंदियपाओोग्गकम्म ३१९

४३ ८३ असंखेजगुणह्धि १५० एगजीव १४ १६४ १९१

अप्पदरहिदिविहत्तिय ५० असंखेजगुणवह्धिकम्मसिय एगसमअ १४ १९ २३

५१ ६७ ९६ असंखेजगुणद्ाणि २९४ २४ ४२ ४३ ६७

१०२ १७३ ण हक ७४ ७५ १६४५

अप्पद्रद्विदिविद्तत्तियंतर ७७ ५ ९६८ १६६ १६७१ १६८

ति भ ७ असंखेजगुणहाणिकम्मंसिय १६९ १९१५ १९३

अप्पाबाहुअ ९५ १०५ २७४१ २८९ ३०२ एगूणवीससमय २०

११० २७४ ३१९ असंखेजगुणदाणिहिदि ओ ओसक्ाविद् र

३२६ ३२९ विहत्तियंतर १९३ अं अंगुलू ७५

अमवसिद्धियपाओग्ग ३२४ असंखेजदिभाग ६७ ६८ अंतर ४२ ४३ ७४ ७७

अरदि १११ ७५ १९१

अवह्मण १११११२ १४० असंखेजमागवद्कि १४० अंतोमुहुत्त २० २५ ४३

अवद्ञणद्विदिविद्दत्तियंतर १९१ १९१ १६९ १९१

अवद्िद १ २४ ५१ ६७ असंखेजभागवद्टिकम्मंसिय अंतोमुहुचूण ३२३

अवद्टिदकम्मंसिअ १९ ४२ २८७ अंतोम॒हृत्तमेत्त २२२

अवद्टिदकम्मंसियर ८७२९० असंखेजमागद्दाणि १६६ क कम्म ९ ६८ १९४ ३२४

अवद्धिदद्धिदिविहत्तिय ५० असंखेजभागङाणिकम्मंसिय कम्मंस ३२४ ३२५

९५ ९७ १०२ १६९ २८८ ३०२ कसाय ३२९

Page 371:

१६ परिखिष्प्यि

काढ ७ १४ १८ १९ णिरंतर ३१९ माणसंनरुण २३२

२४ २५ ४२ ६७ णेरइय ६७ मायासंनल्ण ३३२

७४ ७५ ७७ ते तिरिक्ख ६ ७ मिच्छत्त ६ १४ ४ ५०

१६४ १६९ १९१ तिरूदूण १६८ ८३ ९५ ११०

केवचिर १४ १८ १९ वत्त ३२४ ३३० १४० १६४ ७४

२४ २५१ ४२ तेबट्टिसागरोबमसद १९ ३१९ ३२४ ३३३

६७ ७४ ७५ ७७ ४२ १६६ १९१ मिच्छत्तभंग ३०२

१६६ १६१ थ॒ योव १११ १२५ क छोमसंजलण ३३२

कोघसंजलण ३३२ द॒ दुगुख १११ व॒ वद्धि १११ ११३ ११७

च चारित्तमोदणीयडवसामय देव ६ ७ १४० १६४

३२७ दंसणमोहक्खवय ३२२ विसेसादिय १११ २९२

चारितमोहणीयक्खवय३२६ दंसणमोहणीयउवसामय ११३ ३३० ३३१

छ छण्णोकसाय ३३१ ३२९ ३३२ ३३३ ३३४

न जहण्ण १४ १६९ २५ दंसणमोहणीयक्खवय ३२८ बिसंजोएंत ३२८

४२ ४३ ६७६८ प॒ पडिवण्ण ७ विहत्ि २

७४ ७५ ७७ पद् ७७ ११० । विहृत्तिय ३ ६८

१६४ १६६ १६७ पदणिक्खेव १०५ वेछाव्धिसागरोबम २६

१६८ पदय ५० ११० स॒ सण्णियास ८३

जहण्णग ३२५ परूवणा १०५ ३१९ सत्तरिसागरोबमकोडाकोडि

जहृण्णय ३१९ पलिदोवम १९१ समय भ १५ १६०

जहण्णुकस्स २३ २४ पुरिसवेद् ३३१ १६८

१६८ १९३ युच्धपण्ण ७ समयुत्तरमिच्छत ७

नोव ५० पोमाल्परिय ट्ट १६२ सम्म ७ २४ ५१ ६७

ट क्ण ३२४ ३२५ ब॒ बहुज ३२५ ७४ ८३ ९७

दि २१९ दर ११२ १५० २८९

द्विद्विहृत्त २ ऋुद्विढति र ३२३ ३३३

द्विदिविद्दत्तियंतर १९१ बारसकसाथ ९७ २८८ सम्मततसम्मामिच्छत्तवतज

ह्िदिसंतकम्म ३२२ ३२५ चीजपद् १६६ १९४ १११

दिदिसंत्कम्मह्ाणरे १९ भ भय १११ सम्मामिच्छत् ७ २४ ५१

३२२ ३२३ ३२९ भजिदन्व ५१ ६७ ७४ ८३ ९७

३३० २३१ ३३२ भुजगार १ ६ ७ ४२ ११२ १५० २८९

३३३ रेशे४ ५१ ६७ ७४ ३२३ ३३४

ण॒ णवरि २० ६८ ७७ भुजगारकम्मंसिअ १४ २० सरिस १११

१११ १५० ८ सव्व ५० ६८ ७७

णवणोकसाय २० ५० ुजगारिदिबिदत्तिय ५० सब्बकम्म १११ १४१

६७ २८८ ९५ ९८ १०२ सब्वत्थोबा ९५ ९७ १०२५

णबुसयवेद १११ ३३१ ुजगाःविहत्तिय २ ११० ११२ २७४

णाणाजोव ५० ६७ मंगविचम ५० २८६ ३०२ २२६

णियमा ५१ म मणुस्स ६ ७ ३२९

Page 372:

परिसिद्वाणि १७

सव्बद्धा ६७ ६८ सोलसकसाय २० ५० संसेजगुणदाणिकम्मसिय

सादिरेण ७७ संखेजगुण ९६५ १०२ २७५

सादिरेय १९ २६ ४२ २७५ २८१ २८८ संखेजभागवह्ि १४०

११६ १९१ २९८ २९९ २०० १९१

सामित्त ६ १०५ ३०२ ३२७ ३२८ संखेज मागवह्किकम्मंसिय

साहण ३२६ ३२९ २८१ २९८

सिया ८३ संखेज गुणवह्धि १४० संखेजभागहाणि १६८

सेस ९ ४३ ६८ ७७ १९१ संखेज भागदाणिकम्मंसिय

४ १९६ १९४ संखेजगुणवद्टिकम्म॑सिय २७५ ३००

३०२ ३२४ २७८ २९६ ह॒ हाणि १११ ११२ ११३

सोग १११ संखेजगुणदहाणि १६८ १९१

जयधवरागतविशेषशषब्ददची

पुस्तक हे

अ अणिओगद्दार ७ ट द्वाण १९३ पुरिसवेद २५३

अद्धाच्छेद २१९ दिदि १९२ २०४ २४८ म॒ मूहूपयडिविदि ३०६

भा आचाहाकंडअ ४४९ दविदिविहत्ति ५५ ६ १९१ ब॒ ते १९३

उ उकछस्सटिदि २६७ २९१ १९२ विसेसपच्चय ४५८

उक्छस्सहिदिभद्च्छेद २९१ ण॒ णीद ४९५ विसंजोएंत रद

उत्तरपयडि १९२ प॒ पडिभग्ग २३१ विसि ५

उत्तरपयडिद्विदि ४ १९२ पदणिक्खेब १९३

ज जदण्णहिदिअद्धाच्छेद २६७ पयडिद्वि दि हम

पुस्तक ४

अ अहृपद् १ ख खल्लविल्लसंजोग ९९ स॒ सद्धणवड्डि ११८

अद्धा १५ छ केदभागहार १२२ समभागदार १९३

अद्धाक्वअ १५ ८ हिदिअणुमाग २४० सासणपरिणाम ५

अल्पतरविभक्ति २ ध घुवद्विदि श्र संकिलेस १५

अवद्वाण १११ प॒ परत्थाणव १२१ संकिलेसक्खअ ९८

अबवद्विद्विहत्तिभ ३ म॒ भुजगारविभक्तिक र् संखा १२३

अवत्तव्वविहत्ति ३ व वड़ि १११ ११७

विसोदि २७५

Page 373:

Page 374:

र्य ध 3२६४ १779 है 4 ट ५ शत ७

त ६ ६ ष ८ च 3

7 हु 53 05 अ 7 3 मा

3 स 2 इ ई १ 3 ड न प्ट

क क न रा

ए स 5 ् गत क ॐ

225 र र क ठ न

५ न्र् भ २० 43

पैनल ब 2६ २4 0०८८५ ४ टेप ध र 9

हैः 5 ४७५ ५ 9688 ५ 5 ८ 2 इ त